कैन्सर

हारने लगा है

कैन्सरमुक्त
होकर
खुशहाल
जिन्दगी में
वापसी
अब
एक सचाई है

एक सौ चिकित्सकीय दस्तावेज

डी. एस. रिसर्च सेण्टर, १४७ ए, रवीन्द्रपुरी कालोनी, वाराणसी-२२१००५

चिकित्सा विज्ञान के एक नये युग, नयी दिशा
और नये अभियान का घोषणा-पत्र

कैन्सर हारने लगा है

प्रस्तुति

डी. एस. रिसर्च सेण्टर

निदेशक : प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी

147–ए, लेन नं. 8, रवीन्द्रपुरी कालोनी, वाराणसी–221005
फोन–0542-276098, 315365 फैक्स–(0542) 276097

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इकाइयों के पते :–

वाराणसी : 154 रवीन्द्रपुरी कालोनी, लेन नं. 10, वाराणसी–221005, फोन : 91 542 2276098, 6457644/51 फैक्स : 91 542 2276097
वेब : www.dsresearchcentre.com/cancercurative.org ई–मेल : dsrcvaranasi@gmail.com

कोलकाता : पी–26, सी.आई.टी. रोड, स्केम – 6एम, कोलकाता – 700 054
फोन : +91 33 4016 4141 फैक्स : +91 33 4016 4146 ई–मेल : dsrckolkata@gmail.com

बेंगलुरु : 53, शिरडी साई मन्दिर रोड, कैमब्रिज ले–आउट, बेंगलुरु – 560008
फोन : +91 80 4341 4141 फैक्स : +91 80 4341 4143 ई–मेल : dsrcbangalore@gmail.com

गौहाटी : 1 ए, अमृत इनक्लेव, एम आर डी रोड, बामोनी मैदान, गौहाटी – 781021
फोन : +91 361 2654140, 2654144 फैक्स : +91 361 2654151 ई–मेल : dsrcguwahati@gmail.com

मुम्बई : 1बी – 32 कारपोरेट ऐवेन्यू, ऑफ महाकाली केव रोड, अंधेरी ईस्ट, मुम्बई – 400093 फोन :

❑ कैन्सर हारने लगा है

❑ प्रस्तुति
डी. एस. रिसर्च सेण्टर
निदेशक : प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी

❑ द्वितीय संस्करण (संशोधित) : सितम्बर 2001

❑ This book is meant only for Scientists, Physicians and Persons who are attached to Science & Medical Science.

❑ सचेतन प्रकाशन
डी. एस. रिसर्च सेण्टर
160, महात्मा गांधी रोड
पहली मंजिल
कोलकाता – 700 007
फोन : 2305378, 2307292

❑ मुद्रक
थॉमसन प्रेस इण्डिया लि.
मथुरा रोड
फरीदाबाद

आवरण–सज्जा : डॉ. सुरेश्वर त्रिपाठी
आवरण–चित्र : मुरारी गुप्त
पृष्ठ आवरण–चित्र :
कुमारी नमिता श्रीवास्तव और फणिभूषण त्रिवेदी

ISBN 81-900702-0-11

समर्पण

परख की कड़ी आँच पर खरी उतरी यह क्रान्ति

- कि कैन्सर पर धाराबद्ध विजय दर्ज होने लगी है।
- कि असाध्य होना किसी रोग का स्वभाव नहीं, बल्कि चिकित्सा की कमजोरी है।
- कि प्रकृति के पास रोगों के भय और भोग से निकालने के पक्के रास्ते मौजूद हैं।

यह क्रान्ति समर्पित है उन सबको

- जो इस व्यावहारिक सन्देश को आन्दोलन में बदलने का दमख़म रखते हैं।
- जो विश्वास कर सकते हैं कि कैन्सर दूर किया जा सकता है।
- जो उस भविष्य के निर्माण में सहभागी होना चाहते हैं, जब कैन्सर इन्सानी जिस्म में जन्म लेने का साहस नहीं कर सकेगा।

—डी. एस. रिसर्च सेण्टर

यह नया संस्करण

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के पास कैन्सर से 'क्योर' होने वालों की सूची लम्बी होती जा रही है। इन कैन्सर विजेताओं को अथवा उनके प्रसंगों को सामने लाना इसलिए बहुत जरूरी है कि कैन्सर से डरे हुए लोगों के मन से भय दूर किया जा सके।

जब किसी को पता चलता है कि उसे कैन्सर हो गया है, तो उसे भय कैन्सर से नहीं होता, बल्कि कैन्सर के असाध्य होने के कारण होता है। ऐसे में कैन्सर रोगी भयभीत होकर अपने जीवन का अन्त पास आते हुए देखता रहता है। इस भय को दूर करने के लिए किसी कैन्सर रोगी को यह बताना बहुत जरूरी है कि अब कैन्सर असाध्य नहीं रह गया है। सेण्टर की ओर से 'कैन्सर हारने लगा है' प्रकाशित करने का कारण भी यही है। प्रश्न यह भी उठ सकता है कि सेण्टर की औषधि से कैन्सर पर विजय पाने वाले हजारों लोगों को पुस्तक में जगह क्यों नहीं दिया जा सकता ! जब कैन्सर पर विजय पाने वालों की संख्या दहाई, सैकड़ा और हजार पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ रही हो तो सबको पुस्तक में जगह देना संभव ही नहीं है। इसीलिए सेण्टर ने यथासंभव कैन्सर विजेताओं को ही पुस्तक में जगह दिया है।

दूसरे संस्करण में हमें कई कारणों से कुछ परिवर्तन करना पड़ा है। जिन कैन्सर विजेताओं की कथा हमने 'कैन्सर हारने लगा है' के प्रथम संस्करण में दी थी, उनमें से कई लोग स्वाभाविक मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं। इन लोगों की कथा के स्थान पर कुछ नये कैन्सर विजेताओं की कथा दी जा रही है। 'कैन्सर हारने लगा है' में प्रकाशित कुछ कैन्सर विजेता ऐसे हैं, जिनके परिजनों को तरह-तरह की जिज्ञासा रहती है। इन जिज्ञासाओं में कुछ असामान्य जिज्ञासाओं का उत्तर इस सेण्टर के पास नहीं होता अथवा हम उन जिज्ञासाओं का समाधान करने में असमर्थ होते हैं। ऐसे लोगों की कथा भी हटा दी गयी है। नये संस्करण में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि लगभग हर प्रकार के कैन्सर विजेताओं की कथा देने की कोशिश की गई है। कुछ प्रकार के कैन्सर रोगियों की कथा पहले संस्करण में नहीं थी जो इसमें जोड़ दी गयी है। इस सम्बन्ध में लोग तरह-तरह के प्रश्न उठाया करते थे इसीलिए नये संस्करण में हमने प्रयास किया है कि लगभग हर प्रकार के कैन्सर विजेताओं की कथा प्रतिनिधि के रूप में इस पुस्तक में मौजूद हो। पहले संस्करण से लगभग २५ कथाओं को हटाकर उनके स्थान पर नयी कथाएँ दी गयी हैं। पुस्तक प्राप्त करने वाले यह भी प्रश्न उठाते थे कि दवा मंगाने और कैन्सर रोगियों के पथ्य-परहेज से सम्बन्धित कुछ बातें भी पुस्तक में आनी चाहिए। हमने उसके समाधान का भी प्रयास किया है। पुस्तक के अन्त में जितना संभव हो सका है पथ्य-परहेज से सम्बन्धित बातें और 'सर्वपिष्टी' मंगाने की विधि बता दी गयी है। आशा है इस नये संस्करण से कैन्सर रोगियों और उनके परिजनों को और भी सहायता मिलेगी।

...पहुँचते-पहुँचते भी देर हो गयी

सैकड़ों वर्षों से चर्चित घटना है आर्कमिडीज वाली। तालाब में स्नान कर रहे थे, तभी उन्हें विज्ञान की एक जटिल पहेली का समाधान सूझ गया और वे भीगे वस्त्र ही दौड़ पड़े बस्ती की ओर। वे व्यग्र थे कि जल्दी-से-जल्दी अन्य लोग भी समाधान की इस समझ में साझेदारी कर लें। लोगों ने खुले दिल से साझेदारी की भी। वैज्ञानिक समझ का दायरा एक कदम आगे बढ़ गया। इस बात का विचार नहीं किया गया कि आर्कमिडीज भीगे वस्त्र ही क्यों भाग आये।

ऐसा आर्कमिडीज के साथ ही नहीं घटित हुआ है, न ऐसा घटित होना विज्ञान के क्षेत्र तक ही सीमित है। कतार लम्बी है। हजारों वर्षों पूर्व भगवान बुद्ध के साथ भी ऐसा ही घटित हुआ था। उन्होंने सत्य की खोज के लिए वैराग्य लिया था, घर-संसार छोड़कर निकल गये थे। जब उन्हें बुद्धत्व की प्राप्ति हुई, तो यात्रा पूरी हो जानी चाहिए थी, क्योंकि अभियान वैयक्तिक था। किन्तु वह विन्दु ठहराव का अन्तिम विन्दु नहीं बन सका। वहीं से एक नये अभियान की कोंपल फूटी। बुद्ध 'तथागत' बनकर लौट आये, अपने सहजीवियों को उपलब्धि के विराट् उत्सव में भागीदार बनाने के लिए। इतिहास बताता है कि लोगों ने खुलकर भागीदारी की। बुद्ध को कौपीनी पहनावे के कारण दूर नहीं खड़ा होना पड़ा। उधर बुद्ध भी सीधे जन-धारा के बीच आ गये। उन्होंने शास्त्रीय पगडण्डी से आने को प्राथमिकता नहीं दी थी।

डी.एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की इस लम्बी अनुसन्धान-यात्रा में भी ऐसे अनेक अवसर आये। पोषक ऊर्जा द्वारा रोग-चिकित्सा के परिणामों से जब पहला साक्षात्कार हुआ, तो वे भी उतावले हो गये थे आप तक यह सन्देश और इस नये किस्म के समारोह में भागीदारी का निमंत्रण पहुँचाने के लिए।

फिर जब १६२१ भोज्य पदार्थों से प्राप्त पोषक ऊर्जा ने अस्सी वर्षीया श्रीमती मूँधड़ा की कैन्सर से पूर्ण-मुक्ति का परिणाम सामने ला दिया और चिकित्सा के इतिहास को एक अपूर्व सफलता प्राप्त हुई, तब भी वे उतावले थे आप तक यह सन्देश पहुँचाने के लिए। विचित्र हिलकोर उठी थी डी. एस. रिसर्च सेण्टर के इन वैज्ञानिकों की अन्तरात्मा में। आपके पास पहुँचाने के लिए यह सन्देश-मंत्र भी उसी दिन जन्मा था, ''आइए, अपनी दुनिया को कैन्सर से बचा लें।'' परिणाम अपूर्व और ऐतिहासिक तो था, किन्तु अभी कुछ प्रतीक्षा भी आवश्यक थी और यह भी आवश्यक था कि परिणाम की वैज्ञानिक नियति का समीचीन अध्ययन कर लिया जाय। अभी वैज्ञानिक तरीके से आँकना शेष था कि यह किसी मन्दाकिनी का उद्गम-केन्द्र है, अथवा आकस्मिक रूप से प्राप्त सुपरिणाम की सीमित मात्रा। परीक्षण की गाड़ी आगे बढ़ायी गयी। जब परिणामों में एक धाराबद्ध स्रोतस्विनी की झलक मिली, तब उत्साह के हिलकोरों ने कितनी ऊँचाई छू दी थी, आप कल्पना करें ! इच्छा हुई कि वे पूरी धारा के साथ आपके दरवाजे तक आ जायँ।

ऐसा नहीं है कि डी.एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने दौड़ नहीं लगायी। दौड़ लगी, किन्तु संयोग से दौड़ की दिशा ऐसी चुन ली गयी, जो सीधे आपकी बस्ती में नहीं पहुँचती। उन्होंने विज्ञान की शास्त्रीय पगडण्डी पकड़कर दौड़ लगा दी। उन्हें लगा कि परिणामों पर अगर उन हाथों की मुहर लग जाय, जो विज्ञान की लीक खींचते हैं, तो आपके लिए सुविधाजनक रहेगा। उत्साही लोगों का जत्था परिणामों की साक्षियाँ बटोरकर पहुँच गया उन केन्द्रों पर। वहाँ से ताजा मुहरें लगवाकर सीधे आप तक आने की योजना थी। किन्तु वहाँ ऐसा कुछ हुआ, जिसका उन्हें अनुमान नहीं था। वस्तुतः वहाँ पर इनके विज्ञान और चिन्तन दोनों को ही 'अनफिट' घोषित कर दिया गया।

इससे झटका अवश्य लगा। गनीमत इतनी ही थी कि इस झटके से इस केन्द्र के वैज्ञानिकों का उत्साह नहीं बिखरा और अनुसन्धान-रथ की चूलें नहीं टूटीं। पुनः चलने लगी परीक्षण की गाड़ी। गति मन्थर थी, किन्तु उसमें निरन्तरता थी। कैन्सर से मुक्ति पाकर स्वस्थ जीवन में वापस आनेवालों की संख्या बढ़ती गयी। मार्ग नहीं सूझ रहा था कि उन ऐतिहासिक उपलब्धियों के साथ आप तक सीधे कैसे पहुँचा जाय। मजबूर होकर परिणामों को हिदायत दे दी गई कि वे मौन भाव से कतारबद्ध खड़े होकर समय की प्रतीक्षा करें। वे अभिशप्त पाषाण-खण्डों की तरह कतार में खड़े होते गये।

दौड़ जाने का एक अवसर फिर आया। 'केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसन्धान परिषद्' ने डी.एस. रिसर्च सेण्टर को निमन्त्रित कर दिया। प्रसंग आ गया कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' के एक संगीन केस पर 'सर्वपिष्टी' के प्रभावों की परीक्षा होगी। औषधि दी जाने लगी। उसके सुप्रभाव चिकित्साविदों के अनुभवों और आशंकाओं को लाँघकर आगे बढ़ गये। उनकी अपेक्षा के विरुद्ध वह बच्ची (वह केस) क्रमशः स्वस्थ होने लगी। दस महीने बाद परिषद् के निदेशक ने अपना उत्साह प्रगट किया, ''वर्तमान स्थिति अगर आगे बनी रही (अर्थात् वह बच्ची एक्यूट ल्यूकेमिया लिये हुए भी कुछ समय और जीवित रही), तो खुद में एक आश्चर्य होगा।'' डी.एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों को विश्वास हो गया कि बच्ची अवश्य रोग-मुक्त होगी। हुआ भी यही। वह बच्ची रोग-मुक्त और स्वस्थ हो गयी, आज भी वह उतनी ही स्वस्थ है।

आशा और अपेक्षा बढ़ी कि अब परिषद् का सशक्त माध्यम इन उपलब्धियों को अपने रथ पर बिठायेगा और रथ तेजी से चलकर आपके बीच पहुँच जायेगा। लेकिन ऐसा कुछ हो नहीं सका। निदेशक महोदय ने प्रोफेसर त्रिवेदी को लिखा, ''मेरी व्यक्तिगत इच्छा है कि आपकी औषधि 'सर्वपिष्टी' का कैन्सर की बीमारी से रक्षा के निमित्त वैज्ञानिक मूल्यांकन हो, परन्तु सरकारी नियमावली और विधिपरक प्रक्रिया को ध्यान में रखकर इस कार्य को पूरा करना बड़ा कठिन लग रहा है।'' अपेक्षा का ज्वार बैठ गया।

'अब नहीं, तो फिर कब' वाली संस्कृति

कैन्सर से मुक्ति के परिणाम आते रहे। तब (अर्थात् पुस्तक-प्रकाशन की तिथि से कुछ महीने पहले) एक पूर्व परिचित सवाल फिर आ खड़ा हुआ और झकझोरकर

उकसाने लगा, "अब नहीं कहोगे, तो कब कहोगे ? किस मुहूर्त की प्रतीक्षा करते रहोगे? इन जगमगाती उपलब्धियों का अभिशप्त पत्थरों की तरह खड़ा रहना कब तक सहन करोगे ? इन्हें उनके सामने क्यों नहीं पहुँचाते, जो इन्हें गले लगाएँगे ?" ऐसे जीवन्त सवाल की उपेक्षा संभव नहीं हो सकी। इसी की प्रेरणा से सैकड़ों में से एक सौ परिणाम और साढ़े पाँच सौ से अधिक साक्ष्य साथ में लिये गये, साक्ष्यों के अंश छाँटे गये और उन्हें पुस्तक के कलेवर में स्थापित करने योग्य बनाया गया। अभियान के नाते सामान्य और संक्षिप्त परिचय स्वरूप कुछ और भी लिखा गया। इस पुस्तक ने आप ही के लिए आकार ग्रहण किया—अब आपके सामने है। विचार नहीं किया जा सका कि भाषा कितनी समर्थ और शैली कितनी सटीक है। आप उधर ध्यान न दें। सँभालिये अपनी उपलब्धियों को, मूल्यांकन करिये विषय-वस्तु का और तैयारी करिये एक अभियान में भागीदारी करने की। अभियान का स्वरूप आप तय करेंगे, मिलजुल कर तय किया जायेगा। लक्ष्य हमारे सामने है, साफ दिखाई दे रहा है—

आज की सचाई है : सैकड़ों लोग कैन्सर-मुक्त होकर खड़े हो चुके हैं।

आनेवाले कल की सचाई है : कैन्सर पर पूर्ण विजय अंकित कर दी जायेगी।

साथ ही : प्रतिषेध की वह व्यवस्था खड़ी कर दी जाएगी कि कैन्सर पर पूरी पाबन्दी लग जाय और भविष्य में वह इन्सानी बस्तियों में कदम रखने का साहस न कर सके।

आप योजना बनाएँगे। लक्ष्य-पूर्ति कितनी सरल होगी, आप स्वयं विचार कर सकते हैं। आपके सामने एक सौ दस्तावेज रखे जा रहे हैं, और उनके साथ साढ़े पाँच सौ से अधिक अकाट्य साक्ष्य हैं। इतनी गवाहियाँ बड़ी बुलन्दी से प्रस्तुत हैं ताकि आप जान सकें कि कैन्सर की अभेद्य समझी जानेवाली चट्टानों की पेशियाँ दरक गई हैं। बस जरूरत है एक संगठित अभियान और आन्दोलन की। इस पुस्तक को आप नये युग का घोषणा-पत्र भी मान सकते हैं। संभव है बात बड़बोलेपन की लगती हो, स्वर में कुछ अधिक तेजी हो, लेकिन, समारोह के स्वर को आज तक व्याकरण की शास्त्रीयता बाँध भी तो नहीं सकी है ! अब मानव का तेवर बदलेगा। धरती में मुर्दा गाड़कर आनेवाले समूह और बीज दबाकर लौटते किसान की आवाज में अन्तर तो सदैव कायम रहेगा।

कितनी हँसी आयेगी आपको, डी. एस. रिसर्च सेण्टर की प्रयोगशाला को देखकर! आप सुखद आश्चर्य से भर जायेंगे, यह देखकर कि जिसके विध्वंसक चरणों की धौंस से भूगोल सदा से काँपता रहा, उसके रुतबे को कच्चे घरौंदों की तरह उखाड़ फेंकने की भूमिका इस प्रयोगशाला में खड़े आदिम उपकरणों ने निभाई है। देखिये, इन सिल-लोढ़ों, खरल-इमामदस्तों और सामान्य-सी शीशियों-बोतलों को ! इस सुखद सचाई के दर्शन करिये और कल्पना करिये भविष्य के उस महा अभियान की, जब इन आदिम उपकरणों की बगल में खड़े हो जायेंगे अत्याधुनिक वैज्ञानिक उपकरण और उपस्कर। इतने मात्र से ही आनेवाले कल की सचाई का दृश्य मूर्तिमान-सा होकर उपस्थित हो जाएगा। पूछिये अपने आप से—क्या कैन्सर मुकाबले में खड़ा रह सकेगा ? और यह भी पूछिये कि क्या कैन्सर का कोई भविष्य रह पायेगा ?

क्यों नहीं इसी अन्दाज में देख लिया जाय, उस नन्हें-से अभियानी जत्थे को भी, जिसने समर्पित भाव और एकाग्रता से कई युग गुजार दिये। आपके चेहरे पर सचमुच सुखद हँसी फिर खिल जायेगी कि क्या कहीं ऐसा रिसर्च-अभियान किसी पारिवारिक संस्थान के बूते की बात है ! कल्पना कीजिये आगामी अभियानी जत्थे की, जिसमें असंख्य लोग संघबद्ध होकर आगे बढ़ेंगे और उसका नेतृत्व करेंगे प्रखर मेधावी वैज्ञानिक।

''अब नहीं, तो फिर कब'' वाली बात तो जैसे डी.एस.रिसर्च सेण्टर की संस्कृति बन चुकी है। सेण्टर के वैज्ञानिकों के मन में प्रचलित चिकित्सा-पद्धतियों द्वारा अपनाये गये विष-सिद्धान्त के प्रति एक असन्तोष, एक अनास्था ने जन्म लिया था। चार-पाँच वर्षों तक समीक्षात्मक चर्चाएँ चलती रहीं। १६६५-६६ में कुछ करने की बेचैनी अंकुरित होने लगी। उन्होंने विष-सिद्धान्त की ओर अनास्था की तर्जनी उठा दी, ''जब विष स्वभाव से ही विष हैं, तो उन्हें मानव-स्वास्थ्य के मोर्चे पर क्यों और कब तक खड़ा रखा जायेगा? रासायनिक विष हों अथवा वानस्पतिक; ये रोगकारक हैं, स्वास्थ्य-प्रतिरक्षा का क्षय करने वाले हैं, स्वभावतः जीवन-विरोधी हैं। फिर इनसे सकारात्मक परिणामों की अपेक्षा भी कैसे की जायेगी ? विषों की दिशा में बढ़ते कदम रोग-उन्मूलन की क्षमता तो कभी नहीं देंगे। 'विष-विज्ञान' विकसित होते-होते 'अमृत-विज्ञान' तो नहीं बन जाएगा ! विकास द्वारा इस सिद्धान्त की नस्ल तो नहीं बदल जायेगी !

मोटा-मोटी यही असन्तोष था, जो नये क्षितिज की तलाश के लिए तेजी से उकसाने लगा था। परिवेश की आत्मीयता जोखिम में नहीं पड़ने का सुझाव दे रही थी। अपने और हितैषी कहे जाने वाले लोगों ने समझ देने की हर संभव चेष्टा की, ''बिना साधन जुटाये, बिना दिशा तय किये छलांग लगा देना अच्छा नहीं रहेगा।''

तब भी यही सवाल गूँजा था, ''अब नहीं, तो कब प्रस्थान करोगे ? किस घड़ी, मुहूर्त, सहयोग और साधन की प्रतीक्षा में बैठे रहोगे ?'' और अभियान ने आकार ग्रहण कर लिया, कदम उठ गये—उधर जाने के लिए, जिधर चला नहीं गया था; वह तलाशने के लिए, जिसे देखा नहीं गया था; उस क्षेत्र से कुछ लाने के लिए, जो अब तक निषिद्ध जैसा था।

पोथियाँ पढ़ते और डिग्रियाँ बटोरते हुए बुद्धत्व तक तो नहीं पहुँचा जा सकेगा ! स्वास्थ्य की माँग विषों की विशेषज्ञता तो नहीं है ! यह गली तो दलदलों तक ही ले जाएगी। जरूरत है एक बदलाव की। किसी-न-किसी को साहस जुटाकर आज या कल एक नयी दिशा की तलाश में तो निकलना ही होगा। फिर आज ही क्यों न निकलें, फिर हम स्वयं ही क्यों न निकलें !

अभी उम्र ही क्या है इस नये विज्ञान की !

आपके द्वार पर कैन्सर-मुक्ति के खरे परिणामों की अपूर्व, अकल्पित और ऐतिहासिक दीपावली लेकर उपस्थित यह अभियान अभी नितान्त अंकुरावस्था में है, एकबारगी

शैशवावस्था में। अभी उम्र ही कितनी है इस विज्ञान की ! उम्र और कोशिशों की अथक शताब्दियाँ और सहस्राब्दियाँ पूरी करनेवाली चिकित्सा-पद्धतियों के सामने खड़ा करें, तो यह कितना अबोध दिखाई देगा ! किन्तु इसकी झोली भरी है अपूर्व उपलब्धियों से। बात केवल कैन्सर-मुक्ति की ही नहीं है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर कोरा 'कैन्सर रिसर्च सेण्टर' नहीं है। इस अभियान ने अबतक कैन्सर के साथ-ही-साथ ऐसे अनेक रोगों के सकारात्मक समाधान का मार्ग ढूँढ़ लिया है, जो आज की तारीख तक 'असाध्यता' का रुतबा पहनकर ऐसे बेफिक्र बैठे थे, जैसे उन्हें कभी कोई चुनौती दी ही नहीं जा सकेगी। कैन्सर के समाधान की चर्चा से तो अभियान का परिचय इसलिए शुरू किया जा रहा है कि वह मानव-अस्तित्व के समक्ष सबसे घातक चुनौती बनकर खड़ा है, इसलिए भी कि इसके खरे परिणामों को परखने के साथ ही अन्य असाध्यताओं के समाधान के प्रति विश्वास जीवित हो उठेगा।

सामान्यताओं पर ध्यान दें

एक बार फिर उठाएँ सामान्यताओं के प्रसंग। इसलिए नहीं कि इनकी पूजा करनी है, इसलिए कि इन्हें पृथक करने पर ही उस विज्ञान की सही क्षमता के दर्शन होंगे, जिसे समझना, सँभालना और आगे बढ़ाना है। पूजा-स्थल अन्तिम पड़ाव होता है। यहाँ तो प्रस्थान की तैयारी का प्रश्न है। अगर साधारणताओं को बरकाया नहीं गया, तो भय है कि कहीं 'विज्ञान' के बदले 'चमत्कार' का चिन्तन न उठ खड़ा हो। कौन नहीं जानता कि चमत्कार की प्रतीक्षा के साथ ही वैज्ञानिक दृष्टि बुझ जाती है। हमें अपनानी है वैज्ञानिक दृष्टि। वैज्ञानिक दृष्टि जीवन और प्रकृति के सत्य का उद्‌घाटन करती है, चमत्कार की प्रतीक्षा आशीर्वाद का जुगाड़ बिठाने के लिए की जाती है।

तलाशें उसे, जो असाधारण है

चिकित्सा के पोषक ऊर्जा विज्ञान का जन्म मात्र कुछ ही वर्ष पूर्व हुआ। इसके वैज्ञानिक भारतीय परिवेश से उठे सामान्य प्रतिभावाले लोग हैं। एक साधारण भारतीय पारिवारिक संस्थान के गिने-गिनाये लोगों के सामने खड़ी हुई थीं शोध-अनुसंधान की नानाविध जरूरतें। अनुसंधान-उपकरणों के रूप में आदिम सिल-लोढ़ों, खरल-इमामदस्तों और शीशियों-बोतलों को स्वीकार करके आगे बढ़ना पड़ा। बेतरतीब रही यात्रा। कभी प्रयोग चलाये जा रहे हैं, तो कभी साधन कमाये जा रहे हैं। कभी चिन्तन करना, और चिन्तन को माँज-तराशकर प्रयोग में उतारना है, तो कभी परिणामों के आकलन के लिए परीक्षण में उतरना है। सब कुछ करना है उन्हीं लोगों को। रिसर्च की बहुआयामी व्यस्तताओं और दबावों के बीच ही पाँवों से अपरिचित जमीन को टटोलते हुए कदम बढ़ाने हैं। चिन्तन, विज्ञान और सिद्धान्त की एकदम अपरिचित भूमि है यह। न कोई पगडण्डी है, न ऐसा प्रमाण कि इधर से कोई खोजी मानव कभी गुजरा था। अधिक समय तो पाँव रखने की जमीन टटोलने में लग जाता है। फिर पारिवारिक और

सामाजिक दायित्वों की भी चुनौतियाँ हैं। यह पूरी यात्रा स्वयं ही एक गहन अनुसन्धान की विषय-सामग्री है—एक ओर गहनतम चुनौतियाँ, दूसरी ओर अपर्याप्तता में उलझे लोग !

यह ब्यौरा इसलिए प्रस्तुत है कि आपको इन गिने-चुने अभियान-वर्षों से उन सघन महीनों का गणित निकालने में सहूलियत हो, जो वस्तुतः इस विज्ञान के विकास में लगे। कुछ महीने हो सकते हैं, अथवा कुछ वर्ष। यह रही समय के मोर्चे की अपर्याप्तता। इस अपर्याप्तता को महत्व देने से 'चमत्कार' के उपजने का खतरा है। हमें विज्ञान को देखना है, अतः इन साधारणताओं और अपर्याप्तताओं को बीन-बरकाकर अलग कर देना है। मोह-ग्रस्त नहीं होना है। अभियानियों का यह जत्था न तो दया माँगता है, न सहानुभूति; न सम्मान, न अनुदान। वह चाहता है कि मानव-जाति इस वैज्ञानिक अभियान को अपना ले। दान-अनुदान के लिए कतार में खड़े होने की उम्मीद उन हठी लोगों से कैसे की जा सकती है, जो यह मानकर कर्मधारा में उतरे हैं कि अब तो संसार का अपूर्व और बेमिसाल खजाना उन्हीं के पास है। शायद इसीलिए वे गर्व से कहते हैं, "हमारी सम्पदा हैं वे सैकड़ों हँसते-बोलते इन्सान, जिन्हें 'सर्वपिष्टी' ने कैन्सर से मुक्त करके स्वस्थ जीवन के धरातल पर ला खड़ा किया है।"

बड़ा संकट है धन्यवाद की परिपाटी के निर्वाह में। यहाँ तो सर्वत्र ही उसके प्रति अस्वीकृतियों का पहरा है। समर्पित कर्मयोगी डॉ. एस. पी. सिंह को कतई स्वीकार नहीं कि उनके अप्रतिम योगदान को धन्यवाद की खरोंच भी लगे। पुस्तक की गुणवत्ता कायम रखने के लिए शब्द-शब्द को तोलने, कम्प्यूटर से एक के बदले दस बार कवायद करनेवाले प्रखर साहित्यकार मित्र डॉ. सुरेश्वर त्रिपाठी और प्रूफ-संशोधन को अपनी साहित्यिक अभिरुचि से सप्राण बनाते चलनेवाले श्री प्रकाश उदय हाथ उठाकर खड़े हैं कि धन्यवाद-ज्ञापन की परम्परा को स्थगित रखा जाय। सतत् कर्मशील श्री भरत तिवारी, मनस्वी श्री अशोक कुमार त्रिवेदी और विवेकशीला श्रीमती सविता त्रिवेदी के भरोसे पर तो केन्द्र अपने अभियान-उपअभियान प्रारम्भ ही करता रहा है। इस आयोजन में भी वे अविचल भाव से लगातार तैनात रहे। वे तो कार्य-दायित्व को ही अपने लिए सही पुरस्कार मानेंगे।

प्रिय शशिशेखर त्रिवेदी, पंकज त्रिवेदी और कुमारी नमिता श्रीवास्तव ने डी.एस. रिसर्च सेण्टर की प्रगति के लिए अपनी कॉलेज की पढ़ाई और डिग्रियों की लिप्सा तक का त्याग कर दिया था। पुस्तक के हर पृष्ठ पर उनके उत्साहपूर्ण परिश्रम की छाप है। चि. अवधकिशोर चौधरी 'भुवना' के परिश्रम को भुलाया नहीं जा सकता। पुस्तक-प्रस्तुति की कार्यशाला को कुमारी स्मिता श्रीवास्तव और चि. सौरभ त्रिवेदी की अनुपस्थिति दर्ज करने का कोई अवसर ही नहीं मिला। ये धन्यवाद नहीं, आशीष पसन्द करेंगे।

शिवाशंकर त्रिवेदी

(शिवाशंकर त्रिवेदी)
निदेशक : डी.एस. रिसर्च सेण्टर

अनुक्रम

खण्ड : एक

खण्ड : दो

खण्ड : तीन

खण्ड : चार

खण्ड : एक

- ❑ खौफ और खतरे का ऊपर उठता ग्राफ
- ❑ आइए, अपनी दुनिया को कैन्सर से बचा लें
- ❑ 'सर्वपिष्टी' की परीक्षण-यात्रा
- ❑ धाराबद्ध परिणाम और उनकी स्थापनाएँ
- ❑ इस पुस्तक के प्रयोजन

यह पुस्तक अंग्रेजी और बंगला में भी

इस पुस्तक को अंग्रेजी में **CANCER IS CURABLE NOW** तथा बंगला में 'कैन्सर पराजित आज' नाम से प्रकाशित किया गया है; अंग्रेजी पुस्तक ५६५ पृष्ठों की है जिसका मूल्य ८०० रुपये है और बंगला की पुस्तक ५८१ पृष्ठों की है जिसका मूल्य ६०० रुपये है। सेण्टर से पंजीकरण कराकर 'सर्वपिष्टी प्राप्त करने वाले रोगियों के लिए उनकी रुचि के अनुसार पुस्तक की कोई एक प्रति निःशुल्क दी जाती है। यदि कोई केवल पुस्तक मंगाना चाहता है तो पुस्तक के मूल्य की राशि का बैंक ड्राफ्ट 'सचेतन प्रकाशन' (कोलकाता में देय) के नाम से भेजना पड़ेगा। पुस्तक भेजने का खर्च सेण्टर वहन करता है।

इस सम्बन्ध में कोलकाता अथवा वाराणसी कार्यालय से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

अभी तक मोर्चा है—इन्सान बनाम कैन्सर। होना चाहिए था—कैन्सर बनाम चिकित्सा। देखें कि आदमी, चिकित्सा और कैन्सर में कौन किस हाल में है...

खौफ और खतरे का ऊपर उठता ग्राफ

इन्सानी जिन्दगी में खौफ है। क्यों नहीं हो खौफ! आपकी घड़ी जबतक एक मिनट पूरा करती है, तबतक कैन्सर हममें से दस आदमियों को मार चुका होता है। घड़ी चूककर रुक भी सकती है; आदमियों के मरने का यह सिलसिला नहीं रुकता—दिन हो या रात हो। 'प्रति मिनट दस' का मतलब है 'प्रति वर्ष पचास लाख से ऊपर' अर्थात् आबादी का उतना बड़ा भाग, जिससे एक महानगर बसता है। लेकिन यह भी इस खतरे का चरम विन्दु नहीं है, ठहराव नहीं है। ग्राफ की रेखा निरन्तर आदमी की जिन्दगी के खिलाफ और कैन्सर के पक्ष में उठती जा रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन परेशान है कि सन् २०१५ तक खतरा दुगुना हो जायेगा, अर्थात् तब प्रतिवर्ष दो महानगरों की आबादी के बराबर आहुतियाँ लगा करेंगी कैन्सर के मोर्चे पर।... और तब भी ग्राफ की रेखा में ठहराव नहीं आ पायेगा—दुगुनी के दुगुनी के दुगुनी, वह बढ़ती जाएगी। ग्राफ बोलता है कि कैन्सर मानव-जाति के अस्तित्व पर खतरा बनता जा रहा है। पूरा गणित कैन्सर की मर्जी और मनमानी का है। मन में आए, तो अधिक मार सकता है, मर्जी हो तो कम भी।

और कहाँ खड़ा है आदमी ? ग्राफ के दूसरे कोण पर बिछायी जाती है आदमियों की संख्या। गणित जानने वाले समझते हैं कि ग्राफ के उतार-चढ़ाव में दूसरे पक्ष की कोई भूमिका नहीं होती। वह पहलू निष्क्रिय और निरुपाय होता है। आदमी भी संख्या में गिना जाता है और ग्राफ के दूसरे पहलू पर बिछ जाना उसकी सपाट मजबूरी है। न तो उसके पास प्रतिरोध के हाथ हैं, न प्रतिकार के शब्द, न भाग निकलने की गुंजाइश। कैन्सर मारता है, और आदमी मरता है—कैन्सर मारता जाएगा; और आदमी मरता जायेगा। विश्व स्वास्थ्य संगठन के वैज्ञानिक ग्राफ बना रहे हैं। उनसे यह छिपा नहीं है कि चिकित्सा-विज्ञान की आज की हैसियत क्या है, और आनेवाले दिनों में क्या हो सकेगी। वे हमारी वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं को बारीकी से देखते हैं; इसीलिये वैज्ञानिकों के बयानों की परवाह किये बगैर ही वे ग्राफ खींचते चले जा रहे हैं। कुछ हो पाने का थोड़ा भी भरोसा होता, तो ग्राफ बनानेवाली पेंसिल रुक-रुककर चलती। वैज्ञानिक उठाव के इस युग में वे बीस-बीस वर्षों की छलांग नहीं लगा पाते। मन रुकता और हाथ थथमते। किन्तु, ऐसा नहीं है।

कैसी विडम्बना है, इतनी सहूलियत से तो भूगोल के विद्यार्थी नदी-नालों के मार्गों के नक्शे भी नहीं बनाते !

'कैन्सर बनाम आदमी' से तो ग्राफ ही बनेगा, मोर्चा नहीं

आदमी में आक्रोश है, व्यग्रता है, किन्तु इनसे कोई प्रतिरोध आकार ले नहीं सकता। वह कैन्सर का निरीह शिकार हो रहा है, तो इस कारण नहीं कि कैन्सर बहुत गठीला है; आदमी हार रहा है, इसलिए कि उसके पक्ष में कोई जलती मशाल नहीं खड़ी है। इसीलिए वह ग्राफ की सामग्री बना हुआ है; मोर्चे पर खड़ा नहीं हो पाता।

उसका विज्ञान बैठा नहीं है। दुनिया अन्तरिक्ष-अनुसन्धान पर सर्वाधिक खर्च करती है, किन्तु दूसरे नम्बर का सर्वाधिक खर्च कैन्सर-अनुसन्धान का ही है।

सन् १९८२-'८३ से जेनेटिक-विज्ञान में शोध का एक विराट अभियान शुरू हुआ। संसार के नौ हजार वैज्ञानिक, बीस रोबोटों और हजारों अति संवेदनशील उपकरणों के साथ मैदान में उतरे थे, 'जीन्स' के उत्खनन द्वारा मानवी जिनोम का सही मानचित्र उतारने के लिए। कैन्सर-चिकित्सा के क्षेत्र में भी बड़ी आशाएँ लगी थीं। लगता था कि कैन्सर के सही स्वरूप और बुनियाद का नक्शा मिलने से उसे समझ लेना और उसका इलाज ढूँढ़ना सरल हो जायेगा। अभियान दस वर्षों से अधिक समय तक अनवरत सजगता के साथ चला। सफलता भी मिली। मानवी जिनोम का नब्बे प्रतिशत सही मानचित्र प्राप्त करने में सफलता मिल गयी, जो इससे पहले दो प्रतिशत से भी नीचे थी। 'ह्यूमन जिनोम सेण्टर, साल्क इन्स्टीट्यूट, सान दियागो' के वैज्ञानिक निदेशक डॉ. ग्लेन ए. इवान्स ने पहले कहा था, ''आज तक रोगों के स्थान पर रोग-लक्षणों की चिकित्सा होती रही है। अब कुछ ही वर्षों में रोगों का इलाज शुरू हो जायेगा। जिनोम का मानचित्र देखकर वैज्ञानिक रोगकारक जीन्स को पहचान लिया करेंगे, और अनुकूल ड्रगों की तलाश करके उनका समाधान कर दिया करेंगे।'' डॉ. इवान्स को कुछ किस्म के कैन्सरों के इलाज तक पहुँचने का रास्ता मिल जाने की उम्मीद थी। अबतक केवल बीस रोगों की जानकारी थी, जिनकी जड़ें 'जीन्स' पर अवस्थित हैं। इनमें स्तन-कैन्सर भी एक है। दिसम्बर १९९३ में अभियान पूरा हुआ। किन्तु कैन्सर के क्षेत्र में निराशा ही हाथ लगी थी। कैन्सर की बुनियाद की जानकारी नहीं हो सकी थी। इन्सान की आशाएँ फिर सिमटकर अदृश्य हो गयीं।

वर्ष १९९७ के अन्तिम दिन अर्थात् ३१.१२.९७ को 'इन्दौर कैन्सर फाउण्डेशन' की ओर से एक व्याख्यान आयोजित हुआ। आमंत्रित थे, न्यूयार्क के कैन्सर विशेषज्ञ डॉ. भद्रसेन विक्रम। उन्होंने भी कोई ऐसा सन्देश नहीं दिया, जिससे पता चले कि कैन्सर के मुकाबले के लिए कुछ ठोस आश्वासन आनेवाला है। उन्होंने यही चेतावनी दी कि इक्कीसवीं सदी आरम्भ होते-होते भारत में मुँह और गले के कैन्सर महामारी का रूप धारण कर लेंगे। इसके कारण रूप में उन्होंने तम्बाकू-सेवन के कुव्यसन को दोषी

ठहराया। बस, चेतावनी केवल ! कोई सकारात्मक सन्देश नहीं । फिर ग्राफ का उठाव रुकने की आशा कहाँ है ?

कैन्सर का सबसे दर्दीला पहलू 'खौफ', जो ग्राफ पर नहीं उतर पाता

ग्राफ गणित से खड़ा होता है। खौफ गणित का विषय नहीं है, अतः ग्राफ का विषय भी नहीं है। ग्राफ मौन है, कैन्सर-रोगी की उस मर्मान्तक पीड़ा के प्रति, जो उसकी रगों में बिजली की तरह कौंधती है, जिसके सामने दर्दहर (पेन किलर) रासायनिक विष भी थोड़ी दूर चलकर पक्षाघातग्रस्त हो जाते हैं, अपना धर्म छोड़ देते हैं। वह तड़पन ऐसी होती है, जो रोगी, उसके मित्रों और कुटुम्बियों की छाती ही नहीं, परिवेश की हवा और दीवारों तक को दहला देती है। दुनिया के संवेदनशील प्रबुद्धों ने समय-समय पर आवाज उठाई है कि सरकारों को कैन्सर-रोगियों के लिए 'सकरुण हत्या' का कानून बना देना चाहिए। अर्थात् 'पीड़ा' का विकल्प 'मृत्यु'। विज्ञान अपनी सशक्त बाँहें नहीं बढ़ाएगा, तो कौन रोकेगा इस निरीह विकल्प की परम्परा को ?

ग्राफ की रेखाओं में कैन्सर का वह 'खौफ' कहाँ प्रगट होता है, जो अपनी संक्रामकता में पूरे समाज को समेटता जा रहा है ? वंशानुगत बनता जा रहा है खौफ। आदमी उस दुनिया को नहीं पसन्द करता, जिसमें कैन्सर के डेरे पड़े हुए हैं।

आदमी अब आश्वासनों के प्रति संवेदनशील नहीं है

पिछले दिनों चिकित्सा-विज्ञान ने एक नयी सफलता हासिल कर लेने की पेशकश की है। उसका दावा है कि अगर भ्रूणावस्था (नितान्त प्रारम्भिक अवस्था) के कैन्सर की जानकारी हो जाय, तो उसे पछाड़ने का इन्तंजाम किया जा सकता है। कल तक यही आदमी इतना आश्वासन पाते ही पैमाना उठाकर नयी-नयी दूरियाँ माप देता था। उसका आशावादी गणित तत्काल आगे बढ़ जाता था—आज कैन्सर के भ्रूण पछाड़े जायेंगे, तो कल उसके नवजात शिशु पछाड़े जायेंगे, दो दिन बाद उसके बच्चे और किशोर पछाड़े जायेंगे, और कुछ ही दिनों बाद उग्र कैन्सरों के पछाड़े जाने की बारी आ जायेगी। किन्तु आज आदमी उस आशावादी पैमाने को उठाते-उठाते ऊब गया है। वह तो बस ग्राफ की ओर देखता है, ग्राफ बनानेवाले की ओर देखता है।

वह भ्रूणों से चलनेवाले युद्ध की पेचीदगियों को भी समझता है। पहली कठिनाई है कि भ्रूणों की जानकारी देनेवाली जाँच-व्यवस्था सबको उपलब्ध कैसे हो। दूसरी कठिनाई है कि चिकित्सा तक पहुँच रखनेवाली लम्बी-लम्बी आर्थिक बाँहें सबको कहाँ हासिल होंगी। कैन्सर-रोगी बन जाने की योग्यता से ही चिकित्सा पाने का अधिकार तो नहीं मिल जाता ! तीसरी कठिनाई होगी कि चिकित्सा तक जाते-जाते ही उस भ्रूण के अंग-उपांग विकसित हो सकते हैं, तब चिकित्सा का उत्तर होगा, "तुमने देर कर दी।"

❑

देख लिया गया कैन्सर के ऊपर उठते ग्राफ को, देख लिया गया उस ग्राफ के दूसरे कोण पर संख्या में गिनकर बिछाये जाते निरीह इन्सान को, और देख लिया गया 'चिकित्सा' को, जो एक शब्द तो है, किन्तु उसका कोई अर्थ नहीं है। अतीत देखा जा चुका, वर्तमान भी सामने है। लेकिन यह न तो मानव-जाति का अटल भाग्य है, न नियति का कुल विधान। आइये, अब इस दीप-दीर्घा में। कैन्सर की निरंकुशता और ग्राफ की विवशता से मुक्ति का पहला आयोजन है यह !

आइये, अपनी दुनिया को कैन्सर से बचा लें

अगर आपको असुविधा न हो, तो आप इस पुस्तक को एक पाठक बनकर नहीं, बल्कि एक दर्शक तथा अन्वेषक बनकर स्वीकार करें। उस तैयारी के साथ उतरिये इसमें, जिसके साथ किसी चित्र-दीर्घा में, किसी दीप-दीर्घा में उतरते हैं।

यहाँ जिन लोगों से आपका परिचय होगा, वे इन्सान भी हैं, और इन्सान के रूप में कैन्सर पर विजय के प्रतीक भी हैं। इन्हें छू-टटोलकर देखियेगा, जाँचियेगा, परखियेगा और एक-एक शिकन की छानबीन करियेगा। जाँच-परखकर वस्तुतः इनको उत्तीर्ण अथवा अनुत्तीर्ण नहीं करना है। जाँच करने से आपका अपना संशय धुलेगा, आपका अपना विश्वास खड़ा होगा। इसकी बहुत जरूरत है। इनकी कथाएँ तो निहायत साफ़-सुथरी हैं। इस प्रकार के परिणामों से इतिहास की इससे पहले मुलाकात नहीं है, अतः परिचय कर लेने के बाद भी ये अजनबी जैसे लग सकते हैं। लग सकता है कि भाषा और भाव के बीच पूरा तालमेल नहीं है।

संशय की जड़ें बहुत पेचीदा होती हैं। जाल में फँसा हरिण अगर संयोगवश जाल से मुक्त हो जाय, तो बेतहाशा भागता है। भागता ही चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। जाल टूट जाने पर भी जाल का अहसास शरीर और मन को जकड़े रह जाता है। विश्वास नहीं हो पाता कि जाल टूट गया है। फिर, सदियों ने जिस जाल को गाँठें दे-देकर कसा हो, मन पर उसके निशान गहरे रह सकते हैं। परीक्षण के दौरान डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक भी इस संशय से ग्रस्त थे। इसीलिए निर्धारित परीक्षण-काल दस वर्षों का तय किया गया था। कैन्सर दूर हो जाने के बाद भी वर्षों तक प्रतीक्षा करनी थी। यहाँ कई ऐसे लोग भी हैं, जिनका कैन्सर तो चला गया है, किन्तु उसका अहसास नहीं मरा है। वे चिकित्सा से जुड़े रहना चाहते हैं।

कई ऐसे व्यक्तियों से भी मुलाकात हो सकती है, जो सोचते हैं कि उन्हें इस दीर्घा में व्यर्थ ही खड़ा कर दिया गया है। यद्यपि उनके कैन्सर होने की पुष्टि और चिकित्सा देश के नामी-गिरामी अस्पतालों में चली थी, कैन्सर की पीड़ाओं को उन्होंने खूब भोगा भी था, किन्तु जब रोगमुक्त हो गए, तो पूछते हैं, ''क्या हमें सचमुच कैन्सर था ? कैन्सर से तो कोई बचता नहीं। फिर हम कैसे बच गये !'' उनका तर्क कहता है कि उन्हें अन्य कोई रोग रहा होगा। स्थिति पेचीदा है। कैन्सर को मानते हैं, तो स्वयं को नकारना होगा। स्वयं को स्वीकारते हैं, तो कैन्सर को नकारना ही सही लगता है।

कुछ प्रसंग साक्षी हैं कि संशय की यह गहरी छाप पढ़े-अनुभवी चिकित्सकों के मन पर भी पड़ी हुई है। चिकित्सा की संभव कोशिशों से गुजारने के बाद उन्होंने निराश होकर जिन रोगियों को वापस किया, वे ही कभी कैन्सरमुक्त होकर, अनुमान से अधिक आयुष्य पाकर अथवा लाभान्वित होकर उनके पास जाँच के लिए जा खड़े हुए, तो उन्हें देख-जाँचकर चिकित्सकों के आश्चर्य और प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा। संयोग और चमत्कार को श्रेय देने में वे भी बहुत उदार हैं। किन्तु बातचीत के दौरान ऐसे लोग यदि कह दें कि वे किसी चिकित्सा से लाभान्वित हुए हैं, तो चिकित्सक स्वभावतः यही सोचते हैं कि उस व्यक्ति को यहाँ न आकर पागलखाने जाना चाहिए था। अपने चिकित्सा-विज्ञान की क्षमता के प्रति इतना गहरा अविश्वास लेकर जीना पड़ रहा है चिकित्सकों को ! मानव-मेधा के सामने कैन्सर-रोगियों को मृत्यु से बचाने की चुनौती तो है ही, चिकित्सा के प्रति विश्वास को फिर से जिन्दा कर लेने की चुनौती भी है। नयी बात को लम्बे समय तक कठघरे में खड़ा रहना पड़ता है। मात्र सही होने की योग्यता से नयी बात होने का अजनबीपन तत्काल नहीं टूट जाता।

दीर्घा में चलकर छानबीन करते समय कई और पहलू भी सामने आएँगे, जो चिन्तन को विचलित कर सकते हैं। कैन्सर-विजय के प्रतिनिधि रूप में यहाँ उपस्थित लोग बताएँगे कि वे इस बार चिकित्सा के लिए न तो अस्पताल गये थे, न किसी चिकित्सक के सामने खड़े हुए थे। इन्होंने तो घर बैठे ही औषधि-सेवन किया है, और उसीसे इन्हें यह नतीजा हासिल हुआ है। यहाँ अचानक मुलाकात हो जाएगी रोग-चिकित्सा के नये युग से। अचानक खड़ा होना पड़ जायेगा युगान्तर के सामने। अब तक जमाने ने काय-चिकित्सा को जिया है, जहाँ रोगी की काया को लाकर उसकी केमिस्ट्री में आए हुए बदलाव की छानबीन की जाती है और रोग के लक्षणों का लेखा-जोखा तैयार किया जाता है। फिर औषधीय साधनों द्वारा बिगड़ी हुई केमिस्ट्री को व्यवस्थित करके लक्षणों का शमन किया जाता है। इस चिकित्सा को काय-चिकित्सा अथवा लाक्षणिक चिकित्सा कहा जाता है। आज की तारीख तक रोग और चिकित्सा कभी आमने-सामने खड़े ही नहीं हुए, रोगों पर औषधीय चिकित्सा चली ही नहीं। किन्तु इस दीर्घा में उपस्थित प्रतिनिधि 'रोग की चिकित्सा' कराकर आये हैं। रोग 'कैन्सर' था, तो उसकी औषधि थी 'सर्वपिष्टी'। यह एक नये युग का प्रारम्भ है, इससे आगे रोगों के अनुसार औषधियाँ

तैयार होने लगेंगी। काया-केमिस्ट्री की सीमा को पार करके सार्थकता के विस्तीर्ण धरातल पर आ जाना होगा।

शुरू-शुरू में तो रोग-चिकित्सा की इस दीर्घा में उपस्थित प्रतिनिधियों का चिन्तन भी बिदक उठा था। बात उस समय की है जब अस्पताली चिकित्सा से उन्हें जवाब मिल गया था। उन्हें बिना किसी बाहरी मदद या आश्वासन के कैन्सर की उग्रावस्था से सीधी लड़ाई के लिए अखाड़े में छोड़ दिया गया था। तभी उनके सामने रखी गयी थीं पोषक ऊर्जा की खूराकें। उनकी चेतना भन्ना उठी थी। लगा था, जैसे उन्हें फुसलाया जा रहा हो, या इस संगीन हालत में भी उनसे मजाक किया जा रहा हो। बहुत मनाने-समझाने पर उन्होंने पोषक ऊर्जा की सहायता स्वीकार की। फिर क्रमशः क्या घटित हुआ उनके साथ, भीतर से बाहर तक क्या बदलाव आये, और कैसे-कैसे आये, यह बात आप प्रतिनिधियों के मुँह से ही सुनेंगे।

एक विन्दु और भी है, जिसके प्रति पहले से ही सामान्य मानसिक तैयारी कर लेनी है। इस विन्दु ने और इससे जुड़े सवालों ने दीर्घा में उपस्थित इन प्रतिनिधियों को भी उलझाया था, डी. एस. रिसर्च सेण्टर के सहयोगियों और वैज्ञानिकों को भी उलझाया था। यह सीधा-सपाट सवाल इतना चिकना है और भारत में इसकी फर्श पर इतनी फिसलन भरी है कि आपके सामने भी फिसलने का संयोग खड़ा हो सकता है। वह नितान्त सीधा सवाल होगा कि जब कैन्सर की पहेली को समझने और उसका समाधान ढूँढ़ने की दिशा में एकजुट होकर चलनेवाले हजारों-हजार प्रबुद्ध वैज्ञानिकों के जत्थे भी सफलता का दावा नहीं कर सके—जिनके पास आधुनिकतम यंत्रों की फौज है, जिनके पास अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ हैं, जिनके इशारों का इन्तजार करती रहती हैं करोड़ों डॉलरों की सहयोग-राशियाँ—तब डी. एस. रिसर्च सेण्टर की सफलता की इस आवाज पर विश्वास किया जा सकेगा ? खास तौर पर तब कैसे, जब आप यहाँ प्रत्यक्ष देख सकते हैं, कैन्सर से मोर्चा लेने के लिए जूझते खरल-इमामदस्तों, सिल-लोढ़ों, शीशियों-बोतलों जैसे आदिम उपकरणों को; ऐसी प्रयोगशालाओं को, जो आधुनिक यंत्रों-उपकरणों और अनिवार्यतम साधनों से भी वंचित हैं। क्या जवाब ढूँढ़ेगी आपकी मानसिकता ? आप सहसा अनुमान लगा सकते हैं कि देश की चिकनी धरती पर स्केटिंग खेलने की जो धूम मची है, उसी का करतब दिखानेवाली एक नयी टीम सामने खड़ी की गयी है। अगर अनुमान ने थोड़ी भी झपकी ली, तो ऐतिहासिक विजय के ये प्रतिनिधि बहुरूपिये जैसे लग सकते हैं।

एक अन्य विचित्रता से भी पाला पड़ेगा। आपने धारणा बना ली है कि कैन्सर के अनेक प्रकार होते हैं—सैकड़ों। यहाँ एक नयी बात सुनने को मिलेगी कि कैन्सर मूलतः एक ही व्याधि है, चाहे वह शरीर के जिस किसी भी क्षेत्र अथवा संस्थान में उत्पन्न हो। अगली बात सुनने को मिलेगी कि एक ही औषधि से हर प्रकार का कैन्सर ठीक होता है। इतना ही नहीं; लीवर कैन्सर, अस्थि कैन्सर, लिम्फोमा आदि से मुक्त लोग गवाही में एक साथ उठ खड़े होंगे, और बताएँगे कि उन्होंने एक ही औषधि की मदद से यह

सफलता अर्जित की है। यह बात वे जबानी नहीं कहेंगे, प्रामाणिक सूचना देंगे कि देश के किस प्रतिष्ठित अस्पताल में उनके रोग की पुष्टि हुई और इलाज चला। और भी कि रोग के बे-सँभाल होने पर उन्हें घर जाने की छुट्टी दी जा चुकी थी। इन गवाहियों से आपको सन्तोष भी होगा और आपका दायित्व भी बढ़ जाएगा। दायित्व होगा कि आप गहराई से छानबीन करें। एक ही औषधि के प्रयोग द्वारा विभिन्न नाम-गुण वाले कैन्सरों की सफल चिकित्सा हो जाने की बात को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। एक मकान में आग लगती है तो लकड़ी, सिमेण्ट, कागज और प्लास्टिक आदि के जलने से अलग-अलग प्रकार की राख बनती है। वह आग एक ही दमकल से लाये गये एक ही तरह के पानी से बुझ जाती है। अगर यह स्वीकार करने में अड़चन नहीं है कि आग का प्रकार एक है और उसे बुझाने के लिए लाये गये पानी का प्रकार भी एक ही है, तो इन परिणामों के अध्ययन के दौरान वर्गों की बात को छोड़कर आगे बढ़ना भी सरल हो जाएगा। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने बहुत पहले अपनी अवधारणा प्रस्तुत की थी कि कैन्सर वस्तुतः एक ही रोग है, और उसका एक ही उपचार संभव है।

सन्देह और अविश्वास अपनी पोशाक के निरन्तर बदलाव के लिए सुपरिचित हैं। अविश्वास वैज्ञानिक और गणितीय पोशाक में रहना अधिक पसन्द करता है। कई लोग पूछ बैठते हैं कि शोध, अनुसन्धान और परीक्षण के दौरान परिणाम कितने प्रतिशत का रहा। लगता है, यह सवाल वैज्ञानिक कम है; व्यग्रता से प्रेरित अधिक है। कैन्सर-मुक्ति के परिणाम आने का सिलसिला शुरू हुआ है, चिकित्सा में एक नयी क्रान्ति और नये युग का बीजारोपण हो चुका है। बस, एक बार इतना ही स्वीकार करने की तैयारी कर लेनी है। यहाँ सृष्टि की सबसे बड़ी क्रान्ति का जिक्र कर लेना अनुचित नहीं होगा। करोड़ों अथवा सैकड़ों करोड़ वर्ष पहले जब पृथ्वी के तल की हलचल कुछ शान्त हुई, तो जीवन की पहली इकाई के रूप में एक 'अमीबा' अस्तित्व में आया। असीम जड़ता की गोद में जीवन की एक इकाई का आगमन निश्चित ही सबसे बड़ी क्रान्ति थी। कोई भी समझदार व्यक्ति उस क्रान्ति को प्रतिशत वाले गणित के पैमाने से मापना न्यायसंगत नहीं मानेगा। उस अत्यन्त सूक्ष्म जीवन-इकाई के उद्भव के पीछे सृष्टि का वह विराट् संकल्प व्यक्त था, जिसे बाद के करोड़ों वर्षों ने देखा और जिया है, जो आपके और हमारे सामने गतिमान है। उस 'अमीबा' के अवतरण को गणित के नहीं, बल्कि संकल्प और संभावना के फलक पर ही तोला जा सकता है।

विनम्रतापूर्वक यही निवेदन है कि 'सर्वपिष्टी' द्वारा कैन्सर-मुक्ति के परिणामों को वैसे ही परिप्रेक्ष्य में देखा जाय। हजारों वर्षों के चिकित्सकीय परिणामों की नितान्त विफलता के बाद कुछ सकारात्मक परिणाम तो हाथ आये ! एक बार इतने से ही सन्तोष करके आगे बढ़ा जाय। आगे बढ़ने से यह हल्का दिखायी देता सिलसिला एक विस्फोट और फिर एक नियंत्रित प्रगति का रूप ले सकता है। देखिये, करोड़ों शून्यों के बीच खड़ी इन इकाइयों को। फिर इकाइयों ने दहाइयों और फिर सैकड़ों में उतरकर आश्वस्त कर दिया है कि संभावनाएँ बहुत आकर्षक हैं। एक शुरुआत हुई है, एक

सिलसिला चल पड़ा है और एक संख्या प्राप्त हुई है, जिसके विस्फोटित हो जाने का भविष्य सुनिश्चित है। बीज की परीक्षा तत्परता से करनी है, यह मानकर कि इसमें विस्फोट की संभावनाएँ तो हैं ही !

हाँ, वैज्ञानिक प्रगति की यही विधि और परिपाटी है—एक छोटी संख्या की प्राप्ति और फिर उसका विस्फोट। गणितीय शून्य का विस्फोट नहीं होता। विज्ञान विस्फोट के मुहूर्त की प्राप्ति के लिए जूझता रहता है। सफलता के एक क्षण के विस्फोट से सफलता के युग खड़े हो जाते हैं, सफलता की शताब्दियाँ बिछ जाती हैं।

विज्ञान के क्षेत्र से एक दृष्टान्त लें। वैज्ञानिक स्टीफेंशन ने भाप का इंजन बनाकर अपनी प्रयोगशाला की मेज पर उसे सरकाने में सफलता प्राप्त की। यह एक छोटी इकाई की उपलब्धि थी। उस इकाई का विस्फोट हुआ, और संसार में रेलों का जाल बिछ गया, मानव जाति की सेवा में विशालकाय शक्तिशाली इंजन दौड़ने लगे। अनुसन्धान और विज्ञान में सर्वत्र यही होता है।

ऐसे विस्फोट पर भी ग्राफ वाला वह गणित नहीं लागू होता। मानव की वैज्ञानिक मेधा जब कमर कसकर खड़ी होगी, तब इन्सान ग्राफ के चबूतरे पर बिछाया जाने वाला निरीह प्राणी नहीं रह जाएगा। उस क्षण उसके पास एक मशाल होगी, एक रोशनी होगी और सामने खड़ा होगा दीपावलियों का मुहूर्त। अब ग्राफ की जगह एक मोर्चा उभर आया है। शताब्दियों से हताशा फैलाते लाख-लाख श्मशानों के बीच खड़ी इस नन्ही-सी दीप-दीर्घा को नयी निगाह से देखना होगा। वह निगाह, जो एक अमीबा के अवतरण के पीछे सृष्टि की विकास-यात्रा का दृश्य देखने में सक्षम होती है।

समय आयेगा, पोषक ऊर्जा की गुणवत्ता में विस्फोट होगा, खरल-इमामदस्तों वाली संस्कृति की सामर्थ्य में विस्फोट होगा, इन्सान की आशा में विस्फोट होगा। बस, सजगता चाहिए कि विस्फोट का वह क्षण हाथ से छूटकर गिर न जाये, मन की कोई दुर्बलता उस मुहूर्त को हाथ से गिरा देने की शिक्षा न दे दे। दीपों को भलीभाँति जाँचने-परखने वाले स्वयं बदल जायेंगे। उनके ऊपर इन्हें बचाने और बढ़ाने का दायित्व आ जायेगा। चिकित्सा विज्ञान ने घुटनों के बल चलकर शताब्दियाँ तय की हैं। अब बात वही नहीं रह जाएगी। औषधियाँ अब निरापद बनेंगी। उन पर 'जहर' का लेबल नहीं लगा करेगा। अब पोषक ऊर्जा का युग प्रारम्भ होगा।

यहाँ एक विष-सिद्धान्त के समानान्तर दूसरा विष-प्रयोग नहीं खड़ा हो रहा है। यहाँ विकल्प (अल्टरनेटिव) नहीं, बल्कि समग्र-सिद्धान्त खड़ा हो रहा है। आज नहीं, तो कल, किन्तु साइड एफेक्ट्स का जोखिम टल ही जायेगा और चिकित्सा निर्द्वन्द्व हो जायेगी।

इतनी विराट हैं अपेक्षाएँ

इन दीपों की रोशनी को युग में अवतरण का मौका दीजिये। जाँच और परख में कोताही किसी प्रकार नहीं करनी है। जो अविश्वस्त लगे, उसे बेझिझक चुनौती दीजिये; विश्वस्त को आगे बढ़ाने के लिए बेझिझक आगे आइए। प्रकाश की गति बहुत तेज है,

किन्तु दीपक को हाथ में लेकर चलना पड़ता है।

अन्धकार चाहे जैसा भी हो, उसमें प्रवेश से पूर्व प्रकाश की किरणें आपसे रास्ते का नक्शा नही माँगती। वे आपसे नहीं पूछती कि अन्धकार की गहनता, गहराई और विस्तार क्या है, उसकी उम्र और वंशावली क्या है, उसके स्वभाव और संरचना की केमिस्ट्री क्या है। प्रकाश की किसी किरण ने कभी झिझककर ऐसा नहीं कहा है कि उसे अमुक गोत्र के अन्धकार में प्रवेश का अनुभव और प्रशिक्षण नही मिला है। वे तो अपने स्वभाव से आगे बढ़ती हैं।

ठीक वैसा ही स्वभाव है पोषक ऊर्जा का। वह भी आपसे कैन्सर का नक्शा और वंशावली नहीं माँगेगी। वह यह भी नहीं पूछेगी कि कैन्सर कार्सिनोमा गोत्र का है अथवा ब्लास्टोमा गोत्र का, अथवा कि वह किस क्षेत्र और संस्थान का क्षत्रप है। यह सारा विश्वास आपको हासिल हो जायेगा इन परिणाम-दीपों की छानबीन से।

सृष्टि के उद्भव और विकास का समग्र सिलसिला पोषक ऊर्जा की धारा से खड़ा हुआ है। सृष्टि गतिमान है, क्योंकि पोषक ऊर्जा गतिमान है। वह मार्ग नहीं भूलती। वह भौतिक ऊर्जा नहीं, सचेतन ऊर्जा है।

लीजिये, कैन्सर पर विजय के ये जगमगाते दीये और इन्हें सँभालकर रख दीजिये कैन्सर के अन्धे समुद्र के तट पर। फिर सब कुछ करेंगी प्रकाश की ये किरणें। वे अन्धकार के रेशों को रौंदती-मिटाती पहुँच जाएँगी कैन्सर रोगियों के सिरहाने। वे मौन-भाव से उनके रोम-रोम में संवेदना का जीवन-सन्देश उड़ेल देंगी, "तुम्हारी ही रगों में आसन जमाकर, तुम्हारी ही कोशिकाओं का भक्षण करके अपना चट्टानी कलेवर बढ़ाते जानेवाले कैन्सर का जवाब आ गया है। समय आ गया है, जब इन्सानी जिस्मों से उसकी पड़ावबन्दी तोड़ दी जायेगी। बस, आँखें खोलकर देख लो चिकित्सा के इतिहास में पहली बार जले-जगमगाये दीपों की इन कतारों को। गौर से देखो, दीपों की संख्या बढ़ती जा रही है, दीपावली मजबूत होती जा रही है।"

सब कुछ करेंगी प्रकाश की किरणें। वे ही सारी बस्ती में हिलकोर पैदा कर देंगी कि अब—इन्सान जीतने लगा है, और कैन्सर हारने लगा है।

जबतक तैरना नहीं आये, तबतक पानी की गहराई से सम्बन्धित विचार बड़ी तेजी से उपजते हैं, वे नाना प्रकार की शंकाएँ गढ़कर सामने रखते हैं। मालूम होता है कि सबको तैरने का साहस जुटाना पड़ेगा। लगता है डुबोनेवाली शंकाओं की गठरी पीठ पर लादकर ही तैरना सीखना होगा।

यदि तैरना आ जाय, तो ? उसी क्षण गहराई से सम्बन्धित सवाल भी तिरोहित हो जाते हैं और शंकाएँ भी। अब यह पूछा जाना भी बेतुका लगने लगता है "कितने गहरे पानी में तैरना आ गया ?" अब तो तैराकी की गति की बात ही अनुकूल लगती है। ये परिणाम बताते हैं कि तैरने की कला हासिल हो गयी है। अब तो समुद्र को चुनौती दे देने की बारी है।

कहा जाता है कि अन्धविश्वास बहरा भी होता है और विज्ञान बहरा नहीं होता। किन्तु एक दर्जा है 'वैज्ञानिक अन्धविश्वास' का, जो विज्ञान की ऋचाएँ पढ़कर आँखें बन्द कर लेता है। वह पूरी तरह बहरा होता है। अब उसके पास विज्ञान की भी सुनवाई नहीं होती। वैज्ञानिक युग की मध्यम ऊँचाई पर वैज्ञानिक अन्धविश्वास का ही कब्जा है।

'सर्वपिष्टी' की परीक्षण-यात्रा इस बहरे वैज्ञानिक अन्धविश्वास की घाटियों से गुजरकर आगे बढ़ी है। यात्रा के संक्षिप्त विवरण के साथ ऐतिहासिक उपलब्धियों की व्याख्या पर विचार आवश्यक है।

'सर्वपिष्टी' की परीक्षण-यात्रा

परिणाम-संकलन की प्रचलित विधि

औषधियों के परिणाम-परीक्षण की एक सुनिश्चित वैज्ञानिक पद्धति है। औषधियाँ प्रायः विषों और ड्रगों से बनती हैं, अतः पहला परीक्षण किया जाता है कि वे स्वास्थ्य और जीवन को खतरे में तो नहीं डाल देंगी। आश्वस्त हो जाने पर कि मानव-शरीर पर उनका खतरनाक असर नहीं पड़ेगा, उनका परीक्षण रोगियों पर किया जाता है। गिने-चुने रोगियों के स्वास्थ्य और उनकी रोग-स्थिति की जाँच करके उन पर औषधि का प्रयोग शुरू किया जाता है। समय-समय पर वैज्ञानिक जाँच द्वारा उसके सुप्रभावों तथा दुष्प्रभावों की परीक्षा की जाती है। तीसरा चरण होता है यह नोट करने का कि कोई अनुकूल लगता परिणाम कितने समय तक टिका रहता है।

प्रयत्न के बावजूद यह संभव नहीं हो सका

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की भावना थी कि इसी विधि से 'सर्वपिष्टी' के परिणामों का भी संकलन कर लिया जाय। प्रयत्न किये गये, किन्तु ऐसा संभव नहीं हो सका।

नयी परीक्षण-नीति का निर्धारण और परीक्षण-अभियान की शुरुआत

'सर्वपिष्टी' के पक्ष में एक विन्दु बहुत सहायक और उत्साहवर्द्धक था। मानवीय भोज्य पदार्थों में सन्निहित पोषक ऊर्जा को प्राप्त करके उसके आधार पर विकसित ये औषधियाँ मानव-स्वास्थ्य और जीवनी-शक्ति के लिए सर्वथा अनुकूल थीं। निर्माण के प्रारम्भिक विन्दु से लेकर अन्तिम विन्दु तक इन्हें अभोज्यता और विषत्व के संसर्ग से बचाया गया था। यहाँ तक कि औषधि-सेवन का माध्यम भी दुग्ध-शर्करा को चुना गया था, जो एक मानवीय भोज्य है और स्वास्थ्य पर इसका कोई भी प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता है।

अनुसन्धान-प्रगति के विभिन्न चरणों में पोषक ऊर्जा वर्ग के कई सूत्रों का परीक्षण करके देखा जा चुका था। सर्वत्र यह बात सामने आयी थी कि यह ऊर्जा निरापद होती है, जीवनी-शक्ति का विकास करती है, स्वास्थ्य का विचलन दूर करती है और शरीर की प्रतिरोध-क्षमता का विकास करती है।

पृष्ठभूमि में एक ही परिणाम था

गुलाब बाग, जिला-पूर्णिया की अस्सी वर्षीया महिला को कैन्सर था। पटना में जाँच से रोग की पुष्टि हुई थी। महिला का स्वास्थ्य अत्यन्त क्षीण था और अधिक उम्र भी कैन्सर की पारम्परिक चिकित्सा के लिए अनुकूल नहीं थी। वे न रेडियेशन झेल सकती थीं, न ऑपरेशन। किमोथेरापी देने का तो साहस ही नहीं जुट पाया था। अन्त में उन्हें लक्षणगत चिकित्सा लेते हुए जीवन के शेष दिन घर में ही व्यतीत करने के लिए चिकित्सकों ने छोड़ दिया था।

कष्टों की लक्षणगत होमियोपैथिक चिकित्सा डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक डॉ. उमाशंकर तिवारी ने प्रारम्भ की। साथ में उन्होंने पोषक ऊर्जा से निर्मित 'सर्वपिष्टी' को भी देना शुरू किया। महिला के स्वास्थ्य में विस्मयकारी विकास हुआ, कष्ट घट गये और कुछ ही महीनों में कैन्सर के चिन्ह भी समाप्त हो गये।

एक मार्ग दिखाई पड़ा कि क्यों नहीं इसी प्रकार के, निराधार छोड़ दिये गये कैन्सर-रोगियों पर ही 'सर्वपिष्टी' का परीक्षण किया जाय। उक्त महिला श्रीमती मूँधड़ा तथा अस्पतालों की चिकित्सा के उपरान्त छोड़े गये रोगियों के बीच एक अन्तर तो अवश्य पाया जाता। प्रारम्भिक चरण में ही चिकित्सा की ओर से उत्तर मिल जाने के कारण श्रीमती मूँधड़ा का शरीर विषौषधियों के दुष्प्रभावों से मुक्त था। अस्पतालों द्वारा छोड़े गये रोगियों की शरीर-संरचना तो विषौषधियों द्वारा रौंद दी गयी रहती है।

फिर भी अभियान के लिए एकमात्र क्षेत्र यही था।

अस्पताली धर्मकाँटे से उतारे गये रोगियों की तलाश

परीक्षण के लिए प्रारम्भ से ही नीति बनी कि केवल ऐसे रोगियों की तलाश की जाय, जिन्हें अस्पताली चिकित्सा के धर्मकाँटे ने चिकित्सा के लिए अयोग्य मानकर

अन्तिम रूप से छोड़ दिया हो। ऐसे रोगियों का स्वास्थ्य रोग की उग्रता और सेवन की गयी विषौषधियों के दुष्प्रभाव के कारण निरन्तर विघटित तथा क्षयीभूत हुआ रहता है, और आम व्यक्ति भी निकट भविष्य में आ खड़ी होनेवाली दुर्घटना के प्रति संवेदनशील होता है। यह बात व्यावहारिक लगती थी कि अगर पोषक ऊर्जा डूबती हुई जिन्दगी को कुछ भी संबल देगी, तो रोगी की अनुभूतियाँ और हरकतें उसे प्रगट अवश्य कर देंगी। जहाँ जीवन और मृत्यु के बीच सीधा संघर्ष है, वहाँ जीवन के पक्ष में आनेवाला थोड़ा उठाव भी स्वतः सूचित कर देता है कि विघटनकारी तत्वों की मनमानी पर अंकुश लग रहा है।

ढूँढ़-तलाशकर इस प्रकार के रोगियों तक पोषक ऊर्जा की खूराकें पहुँचाई जाने लगीं। उन्हें कह दिया जाता था कि अपने कष्टों के लिए और स्वास्थ्य के विकास के लिए जो भी औषधियाँ वे लेते रहे हैं, उन्हें लेते रहें।

सेण्टर के वैज्ञानिक डॉ. उमाशंकर तिवारी के निर्देशन और देख-रेख में परीक्षण-अभियान चलने लगा।

रोगी तथा उनके परिजन औषधि के प्रभाव नोट करते और बताते थे। उनके अनुभवों ने परीक्षण-अभियान तथा अभियान में नियुक्त रिसर्च सेण्टर के प्रतिनिधियों के मन में आस्था और उत्साह का संचार किया। पोषक ऊर्जा की खूराकें रोगियों की स्वास्थ्य-स्थिति के सकारात्मक बदलाव का संकेत कुछ ही दिनों में दे देती थीं। रोग और कमजोरी के जकड़े-बुझते संस्थानों में जीवन का संचार होता, वे पुनः जीवित हो उठते। पाचन-संस्थान के जीवन्त होते ही भूख और पाचन में सुधार आता, स्नायु-मण्डल ओजस्वी होने लगता, मन का तनाव समाप्त होने लगता और नींद आने लगती। एक खुलेपन का अहसास होता और रोगी स्फूर्ति का अनुभव करते। कई रोगी कुछ ही दिन औषधि-सेवन के बाद चारपाई छोड़कर घूमने-टहलने लगते। जहाँ स्वास्थ्य के विघटन की प्रक्रिया बहुत तीव्र रहती, वहाँ भी स्पष्ट हो जाता कि विघटन की गति धीमी पड़ रही है।

कुछ महीने औषधि-सेवन करके कई रोगी पुनः अपने दैनिक कार्यों में जुट जाते। इस स्टेज पर तो कैन्सर और जिन्दगी की लड़ाई साफ दिखायी दे रही थी, अतः जिन्दगी का उठाव स्वतः सूचित कर देता था कि रोग की जकड़ में शिथिलता अवश्य आ रही है।

और फिर 'सर्वपिष्टी' की सफलता और उसके प्रभाव-परिणाम की सकारात्मकता, मरीजों के अपने अनुभवों तक ही सीमित नहीं रही, वह जाँच-रिपोर्टों से भी प्रमाणित हुई और पारम्परिक चिकित्सा के सूत्रधारों को अक्सर विस्मित करती रही।

अनुभूतियों पर निर्भरता की विवशता

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इच्छा थी (आवश्यकता भी थी) कि स्वस्थ होनेवाले रोगी पुनः कैन्सर-अस्पताल जायें और अपनी रोग-स्थिति की वैज्ञानिक जाँच की रिपोर्ट प्राप्त

करें। किन्तु प्रायः लोगों को जाँच की यह प्रक्रिया आकर्षित नहीं करती थी। कई रोगी अपनी जीवन्त अनुभूतियों पर किसी जाँच-रिपोर्ट का नया मानसिक दबाव नहीं डालना चाहते थे। कई उन अस्पतालों की ओर मुँह नहीं फेरना चाहते थे, जहाँ से उन्हें निराशा की स्थिति में छोड़ दिया गया था। वे अपनी राहत से ही सन्तुष्ट थे। प्रायः लोग जाँच के चक्र पर चढ़ना ही नहीं चाहते थे।

कई रोगियों ने एक जैसी भाषा में अपनी भावना व्यक्त की, "मुझे अपने स्वस्थ होने के अनुभव पर पूरा विश्वास है। शुरू-शुरू में जब मुझे रोग हुआ था, तब उसे मैंने ही अनुभव किया था। जाँच तो बाद में हुई थी। आज मेरा अनुभव कह रहा है कि मैं स्वस्थ हूँ। आप लोग इस अनुभव पर अविश्वास क्यों कर रहे हैं ?"

सोच के टकराव को बारीकी से नोट करें

आधुनिक वैज्ञानिकों और चिकित्सकों का वैज्ञानिक जाँच-रिपोर्टों में अधिक विश्वास होने का कारण केवल यही नहीं है कि वे इस वैज्ञानिक जाँच के प्रति बहुत अधिक आस्थावान हैं। यह मानसिकता उनके अपने उस व्यापक अनुभव पर खड़ी है, जहाँ कैन्सर से पूर्ण मुक्ति के केस देखने को नहीं मिलते। कैन्सर से पूर्ण मुक्ति एक सचाई है, किन्तु उनका ऐसी सचाई से पाला नहीं पड़ा है। दूसरी ओर उन लोगों का सोच, जिन्होंने कैन्सर पर पूर्ण विजय प्राप्त कर ली है, एक पृथक धरातल पर खड़ा है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि वैज्ञानिकों के अनुभवों की पुष्टि करनेवाले उदाहरण करोड़ों की संख्या में हैं, जबकि इस महारोग से पूर्ण मुक्ति के सबूत के रूप में मात्र कुछ सौ गिने-चुने लोग हैं। चिकित्सकों के अनुभव की बुनियाद संख्या-बल है, जबकि इन प्रतिनिधियों के चिन्तन की बुनियाद परिणामों की गुणवत्ता है।

इन प्रतिनिधियों में से हर व्यक्ति कह सकता है, "मैं कैन्सर पर विजय का एक जीता-जागता सबूत हूँ। मैं स्वयं में ही पर्याप्त हूँ।"

यह आवाज अभी धीमी तो अवश्य है, किन्तु यह युग अब इन्सानियत के उस द्वार पर खड़ा है, जहाँ से यही आवाज विश्वस्त लगने लगेगी। कभी तो हम अपने आपसे पूछेंगे, "जिस व्यक्ति को वैज्ञानिक जाँच ने कभी कहा था कि वह मात्र कुछ दिन अथवा कुछ महीने जिन्दा रह सकेगा, आज वह यदि दो-चार-पाँच या आठ वर्षों से स्वस्थ जीवन-धारा में उत्साहपूर्ण दिन बिता रहा है, तो इसे 'असत्य' कहकर कबतक टाला जा सकेगा ? क्या यह कैन्सर पर विजय और उसकी सफल चिकित्सा का ज्वलन्त सबूत नहीं है ?

दीर्घा के प्रतिनिधि साक्ष्य और सबूत के साथ उपस्थित हैं

इस दीर्घा में उपस्थित प्रतिनिधि जाँच-रिपोर्टों और साक्ष्यों से भी लैस हैं। इनका परिचय इतना पूर्ण है कि आपको आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक है। इनके

पास प्रतिष्ठित अस्पतालों के प्रमाण हैं कि वे कैन्सर-रोगी थे, चिकित्सा चलने के प्रमाण भी हैं, अन्तिम साक्षी के रूप में तो वे स्वयं भी खड़े हैं।

संयोग कि अब तक प्रायः निराश केस ही मिले

इसे संयोग ही कहा जाय कि आज तक 'सर्वपिष्टी' के करीब पारम्परिक चिकित्सा से निराश लोग ही पहुँच सके। इसमें कोई अस्वाभाविकता भी नहीं है। कैन्सर तो जीवन के अस्तित्व और सुख के विरुद्ध अबाध चुनौती है। जो लोग इसके घेरे में आ जाते हैं, वे जल्दी-से-जल्दी चिकित्सा और विज्ञान के सबसे जाने-माने सुरक्षा-कवच में जाकर खड़े हो जाना चाहते हैं। उधर से निराश होने के बाद ही उनके परिजन और शुभेच्छु अन्य दिशाओं में ताक-झाँक शुरू कर पाते हैं।

परिदृश्य में बदलाव

'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के अन्तर्गत आनेवाले प्रायः सभी रोगियों की योग्यता एक जैसी ही थी—"जिन्दगी अब अपने अस्तित्व की अन्तिम लड़ाई लड़ रही है। कैन्सर की दलदली बाँहें कसती जा रही हैं और जीवन बुझता जा रहा है।" अगर ऐसी बुझती हुई जीवनी-शक्ति भी पोषक ऊर्जा को आत्मसात् कर लेती, तो जीवन के पक्षवाली हरकतों में थोड़ी रोशनी बढ़ने लगती थी। क्रमशः जीवनी-शक्ति का विकास होने लगता और संस्थानों में उसकी हलचल दिखायी देने लगती थी। हमारी प्रयोगशाला रोगी की ओर से इसी को औषधि के प्रति 'रेस्पान्स' कहती है। खूराकें चलतीं और जीवन सशक्त होने लगता। जीवनी-शक्ति के विकास का गणित सभी रोगियों में एक समान नहीं लागू होता था।

मात्र इतने से हमारा मन सन्तुष्ट नहीं होता था। इससे इतना स्पष्ट होता था कि जीवन का पक्ष प्रबल हो रहा है, किन्तु यह आभास नहीं मिलता था कि कैन्सर कमजोर हो रहा है। जीवन के इस उद्‌भव से हम सन्तुष्ट तो थे, रोगी भी प्रत्यक्ष रूप से थोड़ी राहत अनुभव करते थे और उन्हें आयुदीर्घता भी प्राप्त होती दिखायी देती थी, किन्तु इसे हम केवल इसी रूप में समझ पाते थे कि मृत्यु की प्रक्रिया थोड़ी नरम पड़ी है। कैन्सर पर विजय की आशा तब जाग पाती, जब कैन्सर के कमजोर होने के स्पष्ट प्रमाण मिलते।

एक गणित था, जो आशावाद को पाँव रखने की जमीन नहीं दे पाता था। मान लें कि शुरू में पोषक ऊर्जा का अनुदान जुटाने के समय कैन्सर अस्सी की ताकत से जीवन को तोड़ रहा था, और जीवन मात्र पाँच की शक्ति से अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहा था। अगर पोषक ऊर्जा की खूराकों ने मौका पाकर जीवन की शक्ति को पचास तक पहुँचा दिया, तो अब लड़ाई अस्सी बनाम पचास पर आ खड़ी होती थी। किन्तु प्रश्न उठते थे कि कुछ महीने पूर्व ऐसा भी तो रहा होगा, जब जीवन की शक्ति अस्सी रही हो और कैन्सर की शक्ति पाँच रही हो। उस समय जीवन ने कैन्सर को क्यों नहीं परास्त कर दिया ? ऐसा क्यों हुआ था कि जीवन का पक्ष कमजोर होता चला गया और

कैन्सर अधिकाधिक उग्र और सशक्त होता चला गया ? फिर अस्सी बनाम पचास वाली लड़ाई यह कहाँ संकेत कर रही है कि कैन्सर हार रहा है, टूट रहा है ? फिर तो पोषक ऊर्जा का प्रयोग मात्र इतना ही परिणाम दे पायेगा कि मरने की प्रक्रिया थोड़ी मद्धिम होगी और जिन्दगी कुछ हद तक जिन्दगी जैसी दिखायी देगी।

मेटास्टेसिस पर नियंत्रण का साक्षी

कैन्सर के सबसे खतरनाक पहलुओं में से एक है मेटास्टेसिस। अबतक की पारम्परिक चिकित्सा इसके सामने प्रायः निरुत्तर है। मेटास्टेसिस का अर्थ है कैन्सर का शरीर के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में और एक संस्थान से दूसरे संस्थान में बढ़ते जाना। कई परीक्षण-परिणामों के सूक्ष्म अध्ययन ने स्पष्ट गवाही दे दी कि पोषक ऊर्जा की खूराकें मेटास्टेसिस को तोड़ देती हैं, अर्थात् यदि कैन्सर-रोगी को लगातार कुछ सप्ताहों तक पोषक ऊर्जा की खूराकों का अनुदान प्राप्त हो जाय, तो कैन्सर का शरीर के एक क्षेत्र अथवा संस्थान से दूसरे क्षेत्र अथवा संस्थान में बढ़ना रुक जाता है। कैन्सर-चिकित्सा के क्षेत्र में यह एक बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। यह तो कैन्सर की पराजय का प्रत्यक्ष और बेबाक सबूत था।

घटना का वैज्ञानिक विश्लेषण

प्रश्न था कि कैन्सर की उग्रता में यह ह्रास आया कैसे ? मानवीय भोज्यों से प्राप्त पोषक ऊर्जा कैन्सर-कोशिकाओं को न तो मार सकती है, न उन्हें कमजोर बना सकती है। यह कोई कोशिका-संहारक विष तो है नहीं, न इसे कैन्सर-कोशिकाएँ प्राप्त करती हैं। इसे तो सीधे सामान्य मानवीय कोशिकाएँ प्राप्त करती हैं। सीधा अर्थ था कि कैन्सर-कोशिकाओं के विरोधी ध्रुव पर घटित होनेवाली किसी घटना ने इनके बढ़ाव पर अंकुश लगा दिया है।

ऐसा भी नहीं था कि सामान्य कोशिकाओं की संख्या में तीव्र बढ़ाव आया हो, और एक बड़ी फौज ने कैन्सर-कोशिकाओं के वेग को रोक दिया हो। सीधी बात थी कि प्रत्येक कैन्सर-रोगी के शरीर में इससे पूर्व भी सामान्य कोशिकाओं का संख्या-बल ऊँचा था। वह बल मेटास्टेसिस को क्यों नहीं रोक सका था ? अतः दो बातें स्पष्ट हो जाती थीं कि बदलाव सामान्य कोशिकाओं के गुण-धर्म में आया था और यह बदलाव ही कैन्सर का सही उत्तर था। यह तो सामान्य वैज्ञानिक समझ की बात है कि स्वस्थ-सामान्य कोशिकाओं में रोग-प्रतिरोध की क्षमता अधिक होती है। स्वस्थ होकर कोशिकाएँ प्रतिरोध में अधिक तत्पर हो गयीं, इतना तो अवश्य हुआ। किन्तु इतना ही उग्र मेटास्टेसिस को तोड़ने के लिए पर्याप्त नहीं था। इसके समानान्तर कुछ और भी घटित हुआ था। कैन्सर-रोगी की सामान्य कोशिकाओं में भी कैन्सर के पक्ष में कार्य करनेवाला कोई तत्व अवश्य था, और यहाँ उसकी बुनियाद अवश्य टूटी।

अवधारणा वैज्ञानिक तथ्य बनकर खड़ी हो गई

डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने अपने वैज्ञानिकों की कैन्सर-अवधारणा के विषय में दुनिया के कैन्सर-अनुसन्धान केन्द्रों को पहले भी लिखा था। लगता है कि उन अनुसन्धान केन्द्रों के वैज्ञानिकों का मानस किसी नयी और अपरीक्षित अवधारणा को प्रोत्साहन देने के मूड में नहीं था। मजबूरी थी कि प्रयोगों-परीक्षणों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार अकेले ही प्रारम्भ कर देना पड़ा। ये परिणाम उस अवधारणा को वैज्ञानिक सत्य प्रमाणित कर रहे थे। यहाँ उस अवधारणा का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक लगता है–

"चयोपचय के विचलन से सामान्य कोशिकाओं का सचेतन कोशिका-द्रव्य विचलित हो जाता है। जब विचलन अधिक हो जाता है, तो कोशिका-द्रव्य और केन्द्रक की केन्द्रीय संरचना के बीच का साम्य और सामंजस्य शिथिल हो जाता है। इससे कोशिकाओं के बँटकर बहुगुणित होने में बाधा आती है। विचलन के आत्यंतिक हो जाने पर केन्द्रक की संरचना पर तीव्र दबाव पड़ने लगता है और अन्ततः उसकी संरचना में ऐसा बदलाव आ जाता है, जिसका विचलित कोशिका-द्रव्य से सीधा सामंजस्य बैठता है। यह एक नये सन्तुलन की स्थापना है। एक नयी जाति की कोशिका का आविर्भाव हो जाता है, जो मानव-शरीर की सामान्य कोशिकाओं के लिहाज से तो असामान्य और अनियमित होती है, किन्तु स्वयं में सामान्य और नियमित होती है। नयी जाति की यह कोशिका ही कैन्सर-कोशिका होती है।

"इस प्रकार सामान्य कोशिका में स्थापित आत्यंतिक विचलन ही कैन्सर है, वही कैन्सर-कोशिका को जन्म देता है। कैन्सर-कोशिका तो इस आत्यंतिक विचलन (अर्थात् कैन्सर) का परिणामी उत्पाद है। कैन्सर सामान्य कोशिकाओं के आत्यंतिक विचलन की वह परिस्थिति है, जो सामान्य कोशिकाओं को कैन्सर-कोशिकाओं में बदलती है। कैन्सर कोई पदार्थगत सत्त्व नहीं है, न ही कैन्सर-कोशिका कैन्सर है।

"जीवन की प्रत्येक इकाई को अपना अस्तित्व बनाये रखने और अपने जैसी अन्य इकाइयों को जन्म देने के लिए आहार की आवश्यकता होती है। सृष्टि और प्रकृति का यह शाश्वत क्रम है कि जिस आहार-सामग्री से जीवन की इकाई का जन्म होता है, वही उसका प्राकृतिक आहार भी होती है। कैन्सर-कोशिकाओं का निर्माण सामान्य कोशिकाओं के विचलित कोशिका-द्रव्य से होता है, अतः यह विचलित कोशिका-द्रव्य ही उनका नैसर्गिक आहार है।

"विचलित सामान्य कोशिकाएँ तो अपने विचलन के कारण ही अस्तित्व-संघर्ष की अर्द्धचेतन लड़ाई लड़ती हैं और इस कारण उनमें आन्तरिक दुर्बलता होती है। स्वस्थ कैन्सर-कोशिकाएँ इन्हें सरलता से परास्त करके अपना आहार वसूल करके बढ़ती और सबल बनती जाती हैं।

"ड्रग और विष पदार्थों के प्रयोग से विचलन बढ़ता है और विचलन का यह बढ़ाव कैन्सर के पक्ष में कार्य करता है। मानव-शरीर की सामान्य कोशिकाओं का विचलन तो सहज मानवीय आहार में सन्निहित पोषक ऊर्जा द्वारा ही दूर हो सकता है। अतः कैन्सर का समाधान अनिवार्यतः पोषक ऊर्जा में होता है।"

अवधारणा अपने तीनों चरणों में प्रमाणित हो रही थी–

१. चयोपचय के विचलन के कारण सामान्य कोशिकाओं में स्थापित घोर विचलन ही वस्तुतः कैन्सर है।

२. इस विचलन को दूर करने का एकमेव साधन प्राकृतिक आहार से प्राप्त पोषक ऊर्जा है।

३. यह विचलन ही कैन्सर है, अतः कैन्सर वस्तुतः एक ही है, प्रकारों में बाँटकर उसका अध्ययन आवश्यक नहीं है। विचलन के प्रकार नहीं हैं, अतः कैन्सर के भी नहीं हैं।

मेटास्टेसिस पर अंकुश लगने की बेलाग गवाहियों ने बहुत आश्वस्त किया। आश्वासन मिल गया कि कैन्सर के विरुद्ध लड़ाई अब सही जमीन पर पाँव जमाकर सही तरीके से लड़ी जाने लगी है। साफ जाहिर हो गया था कि कैन्सर के उत्पादों से जूझने के बदले अब चिकित्सा-विज्ञान सीधे कैन्सर से लड़ने के स्तर पर उतर आया है। फिर तो कैन्सर के पूरी तरह परास्त हो जाने और जीवन के पूर्णतः कैन्सर-मुक्त हो जाने के परिणाम भी आने लगे। बहुत हल्के-धुँधले अक्षरों में ही सही, पोषक ऊर्जा ने समय की शिला पर लिख दिया, "अब कैन्सर के हारने की वैज्ञानिक शुरुआत हो गयी है, अब तो कैन्सर का अस्तित्व ही खतरे में आ जायेगा।"

आप ही बताइये ! कितनी सदियाँ बीत चुकी हैं एक ऐसे क्षण की प्रतीक्षा में, जो कैन्सर के अन्धे-अथाह समुद्र के किनारे विजय का एक जलता हुआ चिराग रख जाता। सदियों के जी-तोड़ वैज्ञानिक संघर्ष ने हमें सदैव उतावला बनाए रखा–वह क्षण अब आयेगा, बस, आने ही वाला है। आज वह क्षण आ खड़ा हुआ है। इतना ही हुआ है। शून्य के स्थान पर संख्या का अवतरण हुआ है, एक नये दृष्टिकोण, एक नयी दिशा और एक नये युग का अवतरण हो चुका है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने आपको विराट संभावनाओं के मनोरम उद्यान के सामने तो नहीं ला खड़ा किया है, किन्तु विराट संभावनाओं के कुछ जीवित बीज आपकी मुट्ठी में अवश्य रख दिये हैं। यह संस्थान विनम्रता से कह रहा है–हम मात्र

दो मुट्ठी बीज ही उपजा सके। अब आपकी मुट्ठी में ये स्वस्थ-जीवन्त बीज हैं और सामने खड़ी है संकल्प और उत्साह की भूमि। क्यों नहीं एक बार फिर से प्रतीक्षा में उतरें। क्यों नहीं प्रतीक्षा करें उस क्षण की, जब पोषक ऊर्जा विज्ञान इतना सशक्त हो जायेगा कि कैन्सर पर विजय के छिटपुट दीपों का यह सिलसिला जगमगाते दीपों की बाढ़ के रूप में उमड़ पड़ेगा, कैन्सर के होने पर पूर्ण पाबन्दी लग जायेगी और वह दृश्य से ओझल होकर केवल चर्चा का विषय रह जायेगा !

❑

'सर्वपिष्टी' की परीक्षण-यात्रा ने कैन्सर-मुक्ति के धाराबद्ध परिणामों की थाती आपके सामने रख दी है। सबकुछ पारदर्शी है। स्थापनाएँ भी उजागर हो रही हैं और भावी अभियान का मार्ग भी रोशन है। संभावनाओं की भूमि तैयार है, प्रतीक्षा है समवेत संकल्प की।

धाराबद्ध परिणाम और उनकी स्थापनाएँ

इतिहास में यत्र-तत्र अनेक बार कैन्सर-रोगियों के पूरी तरह कैन्सरमुक्त होकर पूर्ण स्वस्थ हो जाने की घटना घट चुकी है। कभी ऐसा लगा कि इन परिणामों के पीछे किसी औषधीय माध्यम की भूमिका है, तो कभी लगा कि रोगी की जीवन-शैली में किसी बदलाव के कारण ऐसा हुआ है। बड़ी सजगता के साथ उसी औषधीय माध्यम अथवा उसी जीवन-शैली के अन्तर्गत अन्य रोगियों को रख-रखकर आजमाया गया, किन्तु परिणामों की पुनरावृत्ति नहीं हो पाई। पुनरावृत्ति होने लगती, तो एक धारा का जन्म हो जाता। पुनरावृत्ति और धाराबद्धता ही विज्ञान की व्यावहारिक रीढ़ हैं। छींटों और विन्दुओं तक ही सीमित रह जानेवाले परिणामों का भी महत्व है। वे स्पष्ट आश्वासन तो दे ही जाते हैं कि कैन्सर पर विजय पाई जा सकती है। आवश्यकता है अनुसन्धान को अधिकाधिक व्यापक बनाने और तराशते जाने की। वैज्ञानिक प्रयासों की असफल शताब्दियों के बावजूद धाराबद्ध परिणामों की तलाश चलती जा रही है।

आपके हाथ में है, यह पुस्तक। इसमें कैन्सर की सफल चिकित्सा के धाराबद्ध परिणामों का वैज्ञानिक ब्योरा है। सौ व्यक्तियों के वृत्तान्त हैं। ये लोग कैन्सर के घोषित मरीज थे। इनकी जाँच और चिकित्सा का कार्य देश के एक अथवा दूसरे कैन्सर अस्पताल में हुआ था, प्रतिष्ठित अस्पतालों में।

चिकित्सा के निढाल हो जाने तथा रोग के बेकाबू हो जाने की हालत में इनसे अस्पतालों की चारपाइयाँ खाली कराई गई थीं। कैन्सर की उस रोमांचक उग्रता से इस औषधि के परीक्षण की यात्रा शुरू हुई, और ये कैन्सर से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीने लगे। यह यात्रा एक ही औषधीय माध्यम के सहारे पूरी हुई। यही है, परिणामों की धाराबद्धता।

इस धाराबद्धता की वैज्ञानिक परख और पुष्टि के पाँच विन्दु

१. औषधीय माध्यम का एक होना

सभी की कैन्सर-मुक्ति के साथ एक ही औषधीय माध्यम की भूमिका है। यह औषधीय माध्यम आकस्मिक रूप से प्राप्त साधन नहीं है। इसका विकास एक वैज्ञानिक तथा व्यावहारिक सिद्धान्त के अन्तर्गत वर्षों में पूरा हुआ है। चिन्तन नया है, सिद्धान्त नया है, दृष्टिकोण नया है और फिर परिणाम अभूतपूर्व हैं। किसी चिकित्सा-प्रयास ने इससे पूर्व कभी इस प्रकार के परिणाम नहीं दिये थे। आधुनिक कैन्सर-चिकित्सा एक ठहराव पर आकर खड़ी है, औषधीय चिकित्सा अपनी जगह से आगे एक इंच भी नहीं सरक सकी है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने एक नयी दिशा और नयी पगडण्डी की तलाश की है। वैसे तो प्रगति का अर्थ ही है कि हर कदम नयी जमीन पर हो, किन्तु यहाँ बात दिशा और मार्ग दोनो को बदल देने की है। एक बार सब कुछ अजनबी लग सकता है, किन्तु अगर कोई सशक्त विज्ञान उपस्थित है, तो हमें बेझिझक अजनबीपन का वह अहसास तोड़ना होगा और आगे बढ़कर उससे परिचय करना होगा।

२. कैन्सर की इकहरी बुनियाद की अवधारणा

पहली बात रही औषधीय माध्यम की एकता की, अब दूसरी बात है कैन्सर की इकहरी बुनियाद की। रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने बहुत पहले हाँक लगाकर कहा था कि कैन्सर वस्तुतः एक ही व्याधि है, प्रकारों का भ्रमजाल टूट जाना चाहिए। यह भ्रम चिकित्सा-प्रयासों को भी खण्डों में बाँट दे रहा है। आज एक ही औषधीय माध्यम से प्रायः हर प्रकार के कैन्सर की सफल चिकित्सा ने भ्रम और भ्रान्ति की वह बुनियाद तोड़ दी है। यह जाहिर हो गया है कि कैन्सर एक ही है, उसका प्रभाव-क्षेत्र चाहे जो भी हो।

३. रोग-चिकित्सा के युग में प्रवेश

चिकित्सा-विज्ञान अबतक काय-चिकित्सा के दायरे में बँधा रहा है। एक-एक रुग्ण काया (शरीर) की केमिस्ट्री का अध्ययन करना और भिन्न-भिन्न औषधीय उपायों द्वारा उसे व्यवस्थित करते जाना, यही हमारे सोच की परिचित पगडण्डी है। काय-चिकित्सा द्वारा अर्जित परिणामों को एक सीध में खड़ा करके एक लम्बी कतार बनायी जा सकती है। हम ऐसी कतारों से परिचित भी हैं। किन्तु एक कतार के बनने से धाराबद्धता नहीं आ जाती। यहाँ एकरूपता का घोर संकट है। धाराबद्धता तो काय-चिकित्सा का स्वभाव ही नहीं है। दूसरी ओर डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने चिकित्सा-विज्ञान को एक नये धरातल पर ला खड़ा किया है। हमारे सामने एक नया युग उपस्थित है। यह युग है रोग-चिकित्सा का। रोग-चिकित्सा का अटल स्वभाव है धाराबद्धता। कैन्सर की औषधि 'सर्वपिष्टी' ने भी परीक्षणों के दौरान धाराबद्ध परिणाम दिये हैं।

४. रोगी नहीं ढोये गये, औषधि ने जाकर रोग दूर किया

रोग-चिकित्सा हो, तो रोगी अपनी जगह पर रहेगा और उसके रोग की औषधि चलकर उसके पास पहुँचेगी। इसके विपरीत काय-चिकित्सा में चिकित्सकीय उपाय चिकित्सा-केन्द्रों पर प्रतीक्षा करते हैं, और रुग्ण शरीर वहाँ ढोकर लाये जाते हैं। 'सर्वपिष्टी' के परीक्षणों के दौरान औषधि रोगियों के पास पहुँचाई गयी है, उनके शरीर को ढोकर औषधि के पास नहीं लाया गया है। लोगों ने औषधि घर बैठे ही प्राप्त की है और उसका सेवन किया है। रोग-चिकित्सा का लक्ष्य रोग-उल्मूलन होता है, काय-चिकित्सा का लक्ष्य होता है काया का समीकरण अस्थायी तौर पर व्यवस्थित करना। अस्थायी इसलिये कि बुनियाद में रोग तो कायम रह जाता है, चिकित्सा उसे छू भी नहीं पाती। बुनियाद में बैठा रोग शरीर की केमिस्ट्री को बार-बार बिगाड़ता है, और चिकित्सा उसे उतनी बार व्यवस्थित कर लेती है, जितनी बार संभव हो पाता है। रोग-चिकित्सा में रोग का ही उल्मूलन हो जाता है। अतः उसके निश्शेष हो जाने पर शरीर की केमिस्ट्री भी स्थायी तौर पर व्यवस्थित हो जाती है।

यह स्वीकार करने में किसी को भी आपत्ति नहीं होगी कि अभी परीक्षण में उतारी गयी औषधियों को लम्बी विकास-यात्रा करके ओजस्विता प्राप्त करनी होगी, पोषक ऊर्जा सिद्धान्त को निखरना होगा और अभी अनेक नयी शाखाओं-उपशाखाओं का प्रस्फुटन होगा। यह तो एक सकारात्मक विज्ञान का अंकुरण मात्र है। किन्तु इसके आर-पार विराट सम्भावनाओं का भविष्य देखा जा सकता है। बीज के अंकुरण को ही 'स्फोट' कहा जाता है। वह कार्य पूरा हो चुका है। अब बारी है इसके विस्फोट और विस्तार की। स्वास्थ्य-संकटों के दबाव में फँसी मानव-चेतना से अपेक्षा यही है कि वह इसे एक गतिमान प्रक्रिया से सप्राण कर लेगी।

५. परिणामों की सार्वभौमता

'सर्वपिष्टी' का परीक्षण अब भी चल रहा है और समय के साथ नये-नये लोग कैन्सरमुक्त होते जा रहे हैं। परिणामों में सार्वभौमता है, अतः यह स्पष्ट हो जा रहा है कि धाराबद्धता अविच्छिन्न रहेगी।

वैज्ञानिक दायित्व

विज्ञान के क्षेत्र में न तो खींच-तानकर कुछ स्थापित कर देने की बेचैनी होती है, न यहाँ बुनियादहीन द्वीप टिक पाते हैं। तथ्यों को बार-बार प्रयोग और परीक्षण की खराद पर चढ़ाया जाता है, उनका निष्पक्ष मूल्यांकन किया जाता है। यहाँ भी कठोर निष्पक्षता के साथ परिणामों को देखा-परखा गया है। फिर भी दो विन्दुओं पर भूल हो जाने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। इनमें से एक विन्दु तो रिसर्च सेण्टर के उन वैज्ञानिकों से सम्बन्धित है, जिन्होंने प्रयोग और परीक्षण का कार्य किया है, और दूसरा विन्दु उनसे सम्बन्धित होगा, जिनके सामने ये परिणाम मूल्यांकन के लिए

रखे जा रहे हैं।

वैज्ञानिक भी एक संवदेनशील प्राणी है और चिकित्सा-सम्बन्धी वैज्ञानिक प्रयास तो सीधे मानवीय संवेदना से जुड़ते हैं। फिर कैन्सर का आतंक तो इस क्षेत्र का सर्वाधिक चिन्ताजनक पहलू है। अतः यह संभव हो सकता है कि वैज्ञानिक भी संवेदनात्मक उत्साह के चलते परिणामों का आकार बड़ा करके आँक लें। विज्ञान-जगत में भी ऐसी भूलें होती रही हैं, जिन्हें व्यापक परीक्षण द्वारा सही आकार में बिठाना पड़ा है।

दूसरा पक्ष जुड़ा है उन लोगों से, जिन्हें परिणामों के मूल्यांकन का दायित्व सँभालना है। कैन्सर ने अबतक के सभी वैज्ञानिक प्रयासों को झिड़ककर हाशिये पर फेंक दिया है। दीर्घकाल तक साथ चलनेवाली स्थिति मानव के सोच को हाशियेवाली संस्कृति में आबद्ध कर चुकी है। ऐसी संस्कृति निराशा और सन्देह की दृष्टि को ही विवेक मान लेती है। कैन्सर ने लाखों लोगों को मारा है, तो लाखों चिकित्सा-प्रयत्नों को भी मारा है। आदमी चिकित्सा-प्रयत्नों की मृत्यु से भी निराश है। भय है कि वह निराशा इन उपलब्धियों को उपेक्षित न छोड़ दे। फिर ? एक युगान्तरकारी उपलब्धि भी मुट्ठी से छूट सकती है। पता नहीं समय ऐसी भूल के परिमार्जन का मौका कभी देगा अथवा नहीं। अतः यहाँ भी सजगता रखी जानी चाहिए।

एकान्त परीक्षण की विवशता

विज्ञान-जगत की अपनी उदारता है कि वहाँ वैज्ञानिक किसी उपलब्धि के परीक्षण और फिर उसके विकास का कार्य मिल-जुल कर करते हैं। इस उदारता का संरक्षण डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों को उपलब्ध नहीं हो सका। इसके कारण थे। इनकी अवधारणाएँ, इनका सिद्धान्त, इनके द्वारा अपनाये गये औषधीय माध्यम—सब-के-सब केवल नये ही नहीं, अबतक की परम्परा के सर्वथा विपरीत थे। इनकी अवधारणा थी कि कैन्सर के प्रकार नहीं होते, साथ ही यह भी कि कैन्सरीय कोशिकाएँ स्वयं ही कैन्सर नहीं, बल्कि कैन्सर का उत्पाद होती हैं। औषधीय माध्यम के लिए ड्रगों के विपरीत इन्होंने पोषक ऊर्जा को स्वीकार किया था। इनकी सिद्धान्त-भूमि भी अलग थी। ऐसी हालत में स्वाभाविक था कि चिन्तन के धरातल पर समझौता नहीं हो सके। बिना समझौते के उदार सहयोग की अपेक्षा नहीं की जा सकती। फलतः इन वैज्ञानिकों को प्रयोगशाला से निकलकर परीक्षण के क्षेत्र में स्वयं आना पड़ा। इससे चिन्तन और प्रयोग की एकलयता को ठहराव झेलने पड़े। किन्तु लगता है कि ये परिणाम इस क्रान्ति को भी सुरुचिपूर्ण और सुपाच्य बना देंगे। फिर तो पोषक ऊर्जा विज्ञान भी व्यापक स्वास्थ्य-सेवाओं के महा अभियान में एक सूत्र के रूप में समावेश पा जायेगा।

सामने उपस्थित दृश्यों द्वारा आश्वासन

कैन्सर की सफल चिकित्सा के जो परिणाम हमारे सामने हैं, वे इस बात की पुष्टि कर देते हैं कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की अवधारणाएँ पूर्णतः वैज्ञानिक

हैं। उपलब्धियों की इस ऊँचाई पर बैठकर निम्न तथ्यों को स्वीकार किया जा सकता है—

१. कैन्सर अब असाध्य नहीं रह गया, उसके बाजू चरमरा उठे हैं।
२. कैन्सर-कोशिकाएँ और कैन्सरीय अर्बुद स्वयं ही कैन्सर नहीं हैं, बल्कि ये कैन्सर नामक व्याधि के उत्पाद हैं। चूँकि कैन्सर-कोशिकाएँ, जीवित कोशिकाएँ होती हैं और ये अपनी संख्या बढ़ाती जाती हैं, अतः कैन्सर के साथ-साथ इनका उपचार भी आवश्यक रहेगा। अन्य रोगों के उत्पाद स्वयं नहीं बढ़ते।
३. चयोपचय का विचलन ही कैन्सर-कोशिकाओं को जन्म देता और उन्हें पोषण देता है। वस्तुतः चयोपचय का आत्यन्तिक विचलन ही कैन्सर है।
४. चयोपचय का विचलन समाप्त करके ही कैन्सर, कैन्सर-कोशिकाओं के जन्म और उनके बढ़ाव पर काबू पाया जा सकता है। यहाँ आकर प्रत्यक्ष हो जाता है कि यही कैन्सर की चिकित्सा का वैज्ञानिक मार्ग है और यही मार्ग है उसके प्रतिषेध का। रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने यह बात बहुत पहले स्पष्ट कर दी थी कि प्रतिषेध और चिकित्सा दोनों एक ही मार्ग के दो विन्दु हैं। जो औषधि किसी रोग का प्रतिषध नहीं करती, वह उस रोग की सफल चिकित्सा का साधन कदापि नहीं बन सकती। अबतक का विज्ञान किसी भी रोग की सफल औषधि इसलिए नहीं दे सका कि रोग-प्रतिषेध का सकारात्मक चिन्तन उसके पास नहीं था।
५. विष और ड्रग पदार्थ स्वभाव से ही चयोपचय का विचलन बढ़ाते हैं, अतः वे रोगों की स्थापना की बुनियाद तो रख सकते हैं, उनका निराकरण नहीं कर सकते। यह बात कैन्सर पर भी लागू होती है।
६. चयोपचय के आविर्भाव, उसके विकास, उसके स्वास्थ्य के निर्माण का तथा उसके विचलन को दूर करने का एकमेव साधन जीवों के अपने नैसर्गिक-भोज्यों में सन्निहित पोषक ऊर्जा ही है। अतः रोगों की चिकित्सा तथा उनके प्रतिषेध के औषधीय माध्यम प्राकृतिक भोज्य पदार्थ ही हो सकते हैं। जहाँ अन्य अनेक रोगों के कारक विचलन में आश्रय पाते हैं, वहाँ कैन्सर तो इस विचलन के अलावा अन्य कुछ है ही नहीं।
७. कैन्सर के कारणों और कारकों की पहचान की दिशा भी स्वतः सुष्पष्ट और प्रकाशित हो जाती है। जो कारण चयोपचय को विचलित करते हैं, वे ही कैन्सर की बुनियाद रखते हैं।
८. जो भोज्य रासायनिक या अन्य कारणों से स्वयं विचलित हो चुके हैं, वे भोज्यों की सूची में शामिल होने की योग्यता रखते हुए भी विचलन बढ़ाने का कार्य करते हैं।

कैन्सर का प्रतिषेध एक सरल कार्य होगा

प्रतिषेध के सामने इकहरी चुनौती होती है। कैन्सर-प्रतिषेध के सामने भी वही सीधी-सपाट इकहरी चुनौती है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने कैन्सर-चिकित्सा

और उसकी समझ की दिशा में जो कार्य किया है, उसने स्पष्ट कर दिया है कि यदि शरीर के चयोपचय और सामान्य कोशिकाओं के गुण-धर्म में आत्यन्तिक विचलन नहीं आये, तो कैन्सर-कोशिकाओं का प्रादुर्भाव और उनका पोषण सम्भव ही नहीं होगा। अतः कैन्सर के होने पर पाबन्दी लगाने का सीधा-सरल उपाय है कि इस विचलन को जड़ नहीं जमाने दिया जाय। इसका उपाय होगा कि चयोपचय तथा सामान्य कोशिकाओं के गुण- धर्म को सामान्य पर कायम रखा जाय। विचलन को घटाते रहा जाय। न वह आत्यन्तिकता की ओर बढ़ेगा, न कैन्सर होने की परिस्थिति बनेगी। इन वैज्ञानिकों की स्पष्ट स्थापना है कि घोर विचलन स्वयं ही कैन्सर है, चाहे वह कैन्सर-कोशिकाओं को जन्म दे सके अथवा नहीं।

प्रयोगों और परीक्षणों ने सिद्धान्त और व्यवहार में तय कर दिया है कि नैसर्गिक मानवीय भोज्यों से प्राप्त पोषक ऊर्जा इस विचलन को अचूक रूप से कम करती है। कम करते-करते उसे निश्चयात्मक रूप से समाप्त किया जा सकता है। इसके लिए विराट संकल्प के साथ एक विराट और व्यापक अभियान चलाने की आवश्यकता होगी। आतंक की वर्तमान स्थिति पर काबू पाया जा सकता है। हिदायतों की फेहरिश्त बाँटकर कैन्सर से बचाव के लिए जो उपाय किये जा रहे हैं, वे बे-असर साबित हो रहे हैं। पोषक ऊर्जा की खूराकें अचूक और असरदार साधन बन जायेंगी। आवश्यक होगा कि—

१. पोषक ऊर्जा विज्ञान को पर्याप्त विकास दिया जाय।
२. ऐसी व्यवस्था हो कि लोगों को जरूरत पर ये खूराकें उपलब्ध हों।
३. चयोपचय और कोशिकाओं के गुण-धर्म में स्थापित विचलन को मापते रहा जाय।

कैन्सर की चिकित्सा का कार्य जटिल रहेगा

जब चयोपचय और सामान्य कोशिकाओं का गुण-धर्म आत्यन्तिक रूप से विचलित होता है, तब किसी नयी जीवन-व्यवस्था (कोशिका-व्यवस्था) को वह न केवल आवास की स्वीकृति प्रदान कर देता है, बल्कि स्वयं उसे जन्म देता और उसके पोषण और बढ़ाव-विकास को खुला प्रोत्साहन देने लगता है। उसका झुकाव नयी अर्थात् असामान्य जीवन-व्यवस्था के पक्ष में हो चुका रहता है। यह एक बहुत बड़ी घटना है, क्योंकि जीवन तो अपने हर सचेतन अणु पर अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए अजोख संघर्ष करने का स्वभाव रखता है। ऐसी स्थिति (अर्थात् आत्यन्तिक विचलन और नयी जीवन-व्यवस्था के पोषण) में से उसे पुनः वापस लाना एक कठिन चुनौती का कार्य है। चिकित्सा की गुंजाइश तो केवल इसी आधार पर कायम रह पाती है कि विचलन के बावजूद चयोपचय और कोशिकाओं में अपनी पूर्व सामान्य स्थिति में लौट आने की प्रेरणा अवश्य जीवित रहती है। पोषक ऊर्जा द्वारा कैन्सर से पूर्ण मुक्ति के ज्वलंत दृष्टांत इस मोर्चे पर भी एक विराट संभावना का आश्वासन दे रहे हैं। न तो असामान्य चयोपचय को सामान्य चयोपचय में बदला जा सकता है, न असामान्य कोशिकाओं को सामान्य कोशिकाओं में तब्दील किया जा सकता है।

विचलन चाहे जिस सीमा तक का हो, जहाँ सामान्यता अभी कायम है, वहाँ चिकित्सा के लिए पर्याप्त भूमि है। इस आशावादी भूमि पर ही कैन्सर पर विजय का ध्वज फहराया जा सकता है।

किन्तु कैन्सर-चिकित्सा का कार्य बहुत जटिल है। इस जटिलता को सिलसिले से इस प्रकार समझा जा सकता है—

१. चयोपचय और सामान्य कोशिकाओं को घोर विचलन से वापस सामान्य भूमि पर लाना अपने आप में एक कठिन कार्य है।
२. विचलित चयोपचय और सामान्य कोशिकाएँ दिग्भ्रमित और डँवाडोल रहती हैं, अतः प्रतिरोध-क्षमता का दुर्ग खरभरा चुका रहता है। इस सतत बिखरती प्रतिरोध-क्षमता का बिखराव रोकना और उसे पुनः सन्तुलन पर ला खड़ा करना एक पेचीदा कार्य है।
३. घोर विचलन और प्रतिरोध-क्षमता के अन्धेपन की स्थिति अन्य-अन्य रोगों को जन्म, आवास और संरक्षण देने लगती है। अतः लड़ाई केवल कैन्सर के विरुद्ध ही सीमित नहीं रह जाती, बल्कि इन उपद्रवों पर काबू पाना एक दुष्कर कार्य हो जाता है। इसीलिए पुराने समय से अनुभवी कैन्सर-चिकित्सकों ने अनुभव किया है कि कैन्सर का रोगी कैन्सर के अतिरिक्त बाह्य उपद्रवों के खतरे में घिर जाता है।
४. कैन्सर-कोशिकाएँ यद्यपि कैन्सर नहीं हैं, कैन्सर रोग की उत्पाद हैं, तो भी अन्य रोगों के उत्पादों से एकबारगी भिन्न हैं। अन्य रोगों के उत्पाद तो पदार्थ-रूप में होते हैं, जबकि कैन्सर का उत्पाद जीवित कोशिकाएँ हैं। इन कोशिकाओं का आहार शरीर की विचलित सामान्य कोशिकाएँ हैं। अतः अगर शरीर में कैन्सर-कोशिकाओं की संख्या अधिक हो, तो शरीर की सामान्य कोशिकाओं को बड़ी तादाद में इनके आहार के लिए कुर्बान होते रहना पड़ता है। कितनी भयावह पेचीदगी है कि कैन्सर की उग्रावस्था में कैन्सर-कोशिकाओं का आक्रमण भी तीव्र होता है और सामान्य शरीर का विघटन भी बड़ी तेजी से होता है। इन स्थितियों में ढहती हुई सामान्यता अपने विचलन को झाड़-पोंछकर खड़ा करने का मौका भी नहीं पाती है।
५. असह्य दर्द की हालत में दर्दनाशक औषधीय विषों का प्रयोग करना पड़ता है, जबकि इनकी प्रत्येक खूराक विचलन को और अधिक बढ़ाती जाती है।
६. इसके अतिरिक्त अलग-अलग क्षेत्रों के कैन्सर अपनी अलग-अलग विपत्तियाँ उछालते रहते हैं।

कैन्सर पर विजय के लिए दुहरी लड़ाई आवश्यक होगी

हमारे सामने कैन्सर के विरुद्ध चलायी गयी लड़ाई के दो दृश्य एकदम साफ हैं—

१. कैन्सर-कोशिकाओं तथा ट्यूमरों के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई कैन्सर के विरुद्ध लड़ाई है ही नहीं। अतः उधर से कैन्सर पर स्थायी जीत का विज्ञान खड़ा

नहीं हो सकता। परम्परागत चिकित्सा के अन्तर्गत सैकड़ों वर्षों से तथा करोड़ों रोगियों पर किया गया काम और सामने आयी असफलता सबूत के लिए पर्याप्त है।

२. दूसरी ओर आज पोषक ऊर्जा के प्रयोग द्वारा कैन्सर पर पूर्ण विजय के सैकड़ों दृष्टांत सफलता का असंदिग्ध आश्वासन दे चुके हैं।

किन्तु चिकित्सा को प्रभावी बनाने के लिए दोनो मोर्चों पर लड़ना होगा। यहाँ उत्पादों की जीवित फौज को भी नियंत्रित करना होगा और कैन्सर की बुनियाद को भी समाप्त करना होगा। कैन्सर-कोशिकाओं का घनत्व कम करने के लिए परम्परागत चिकित्सा से सहयोग लेते रहना होगा; ऐसी चिकित्सा से, जो विचलन को कम बढ़ाए, प्रतिरोध-क्षमता को कम तोड़े और नयी-नयी स्वास्थ्य-समस्याओं को कम या नहीं के बराबर जन्म दे। यदि सामंजस्य का सम्मिलित आयोजन हो सके, तो निश्चित ही चिकित्सा के परिणाम मानव के पक्ष में उमड़ पड़ेंगे।

वैसे तो 'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के लिए प्रायः ऐसे ही रोगी उपलब्ध हो सके, जो पारम्परिक चिकित्सा के चाक से अन्तिम रूप से उतार दिये गये थे, फिर भी यत्र-तत्र यह देखने को मिला कि दोनो मोर्चों पर लड़ाई के विवेकसम्मत संयोग के परिणाम बहुत उत्साहवर्द्धक आये।

❑

'अब नहीं, तो फिर कब ' वाली प्रेरणा से आपके लिए तैयार की गयी है यह पुस्तक। किन्तु सबकुछ अन्धाधुन्ध नहीं हो गया। विज्ञान की प्रस्तुति वैज्ञानिक होनी चाहिए। जो कुछ रखा गया है, उसका एक प्रयोजन है। अन्य संभावनाएँ भी उजागर हो सकती है, किन्तु प्रयोजन के विषय में रिसर्च सेण्टर के अभियान की अपनी जीवन्त अवधारणाएँ हैं। प्रस्तुत है उनका संक्षेप। उसके बाद है पुस्तक का दूसरा खण्ड, अर्थात् युगान्तर की दीप-दीर्घा।

इस पुस्तक के प्रयोजन

१. जीवन-बोध की पुनः स्थापना

जिन्दगी के कार्यकलापों में व्यस्त किसी व्यक्ति के विषय में अचानक कोई यांत्रिक जाँच बोल देती है, "तुम्हें कैन्सर हो गया है"। उसी क्षण एक कौंध के साथ, एक ही झटके में उसका जीवन-बोध लुप्त हो जाता है, और वहाँ आ बैठता है मृत्यु का बोध। जीवन-बोध की मृत्यु एक दर्दीली घटना है, और मृत्यु के बोध को जीना बड़ा वीभत्स होता है। अब वह व्यक्ति एक मृत्यु की प्रक्रिया को जीना शुरू करता है। यह प्रक्रिया कम समय में पूरी हो, अथवा अधिक समय में, बोध के स्तर पर इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

बोध के स्तर पर घटित यह बदलाव शारीरिक प्रक्रियाओं की यांत्रिक अथवा रासायनिक जाँच से आँका नहीं जा सकता। संभव है उसकी जाँच का यांत्रिक निरूपण कभी भी नहीं हो सके। जीवन का परिचय तो हरकत वाली प्रक्रियाएँ हैं, और मृत्यु तो शून्यता है, हरकत-विहीनता है। पहले तो शून्य की माप नहीं हो पायेगी, फिर शून्य का बोध तो और भी जटिल है। आवश्यक नहीं कि मृत्यु के प्रत्यक्ष रूप से निकट आ जाने से ही मुत्यु का बोध प्रारम्भ हो जाय।

जो जन्मता है, वह मरता है। किन्तु प्रायः वृद्ध-जर्जर लोग भी जीवन-बोध को जीते हुए ही मृत्यु के क्षण को छूते हैं। उन्हें मृत्यु की प्रक्रिया के बोध को नहीं जीना पड़ता। उनका जीवन-बोध अन्त तक कायम रहता है, और वे रसात्मक संघर्ष करते रहते हैं। कैन्सर-रोगियों के साथ ऐसा नहीं होता। जीवन के प्रति उनका रसात्मक लगाव तो कैन्सर हो जाने की सूचना के साथ ही ढीली मुट्ठियों से सरक कर छूट चुका होता है। एक ललक कौंधती है—काश, यह जाँच-रिपोर्ट गलत होती। किन्तु कैन्सर की चिकित्सा शुरू होते ही यह ललक भी लुप्त हो जाती है।

आप देख सकते हैं कि वह व्यक्ति 'बॉयोलॉजिकली' सुरक्षित है। वजन स्थिर रह सकता है, रक्त की रिपोर्ट नॉर्मल हो सकती है, हृदय की धड़कन सामान्य रह सकती है, साँस सम पर कायम रह सकती है। आप सोच सकते हैं कि वह व्यक्ति खतरे से बाहर है। किन्तु कैन्सर-रोगी के विषय में ये रपटें सतही हैं। घटना तो बहुत गहराई पर घटित हुई है—वहाँ, जहाँ से बोध के अंकुर फूटते हैं; वहाँ, जहाँ तक लक्षण-जाँच और लक्षण-चिकित्सा की पहुँच सम्भव नहीं है। जाँच की सारी कोशिशें, भले ही बहुत महत्वपूर्ण हों, सतही हैं। मृत्यु की प्रक्रिया के बोध को जीना क्या है, इसे भुगतने वाली जिन्दगी ही जानती है। इसे समझने-समझाने में वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक उपकरणों की कोई भूमिका संभव नहीं है। जीवन का सहजायी प्रकाश किताब से नहीं समझा जाता।

बड़ा वीभत्स होता है मृत्यु की प्रक्रिया के बोध को जीना। कोई नहीं चाहता कि इस वीभत्सता को वह स्वयं जिये अथवा उसका कोई स्वजन जिये। मौका मिलने पर प्रायः सभी लोग (अतिपढ़ से अनपढ़ तक) अपने स्वजनों से छिपाने का प्रयास करते हैं कि उन्हें कैन्सर हो गया है। रोगी के बोध के आगे वे एक पर्दा ताने रहना चाहते हैं। वे रोग के अमंगल परिणाम का सामना करने के लिए तैयार तो रहते हैं, किन्तु 'मृत्यु की प्रक्रिया को जीने' के बोध की वीभत्सता से एकबारगी परहेज चाहते हैं। वे चाहते हैं उनका रोगी जितने दिन भी जिये, जीवन-बोध के साथ जिये।

जीवन पर प्रत्येक बोध के अचूक प्रभाव हैं। जीवन का बोध जीवन से तालमेल बैठ जाने की आशा लेकर खड़ा रहता है। वहाँ विवेकसम्मत चिकित्सा के प्रयास कारगर होते हैं। मृत्यु के बोध से रोगी का मनोबल टूटता है और जिन्दगी उसकी पकड़ से छूटने लगती है। अबोध बच्चों में मृत्यु-बोध जन्म ही नहीं लेने पाता। वे जीवन का संघर्ष करते हैं और कष्टों से छुटकारा चाहते हैं।

लोग अपने रोगियों को जीवन-बोध पर वापस लाने के लिए कितने उपक्रम करते हैं। केवल चिकित्सा सन्तोष नहीं दे पाती। मनोवैज्ञानिक संदेशों, धार्मिक उपाख्यानों, घटित-अघटित चमत्कारिक प्रसंगों और वैज्ञानिक आश्वासनों को जोड़-गूँथकर रस्सियाँ तैयार की जाती हैं। मृत्यु-बोध की अन्धी गर्तों में लटकाई जाती हैं वे रस्सियाँ। कोशिश की जाती है कि रोगी की चेतना उन्हें पकड़कर अपने बोध को पलट दे। यह बात तो रोगी की मनःस्थिति पर निर्भर करती है कि वह इन रस्सियों को कितनी आस्था से पकड़ता है अथवा उन्हें छूता भी है कि नहीं।

आज करोड़ों लोग जी रहे हैं मृत्यु की प्रक्रिया के इस वीभत्स बोध को, और प्रति वर्ष लाखों लोग इस बोध के शिकार बन रहे हैं।

बोध के इस विन्दु पर खड़े होकर पचास परिणामों के हवालों के साथ खड़ी इस पुस्तक के पहले प्रयोजन पर विचार करें। क्या ये परिणाम कैन्सर-रोगी के सिरहाने खड़े होकर यह सकारात्मक सन्देश ध्वनित नहीं कर देंगे, "कैन्सर पर स्थायी जीत दर्ज करके स्वस्थ जीवन में वापसी का सिलसिला शुरू हो गया है। परिणाम धाराबद्ध हो चुके हैं और नये-नये लोग इस जुलूस में शामिल होते जा रहे हैं। एक नया युग खड़ा है

तुम्हारी चारपाई की बगल में, एक नया विज्ञान आ खड़ा हुआ है !'' विश्वास है कि बरबस श्मशान की ओर घसीटे जाने का बोध धुँधला होता जायेगा, और कैन्सर-रोगी जुलूस की जिन्दगियों से अपने अस्तित्व का तालमेल बिठाना शुरू कर देगा। मृत्यु की प्रक्रिया में असहाय बहते जाने का बोध लुप्त हो जायेगा और वहाँ आ खड़े होंगे जीवन-बोध, जीवन-संघर्ष और जिजीविषा के उद्घोष।

इस विराट् सार्थकता की अपेक्षा के साथ प्रकाशित की जा रही है यह किताब।

२. जीत दर्ज करनेवालों की संख्या में विस्फोट का विश्वास

ऐसा नहीं होगा कि बोध के बदलाव के साथ ही रास्ते में पूर्ण विराम आ खड़ा होगा। यह तो इस महान् क्रान्ति का प्रथम परिचय मात्र होगा। बोध ग्रहण करनेवाले अनेक लोग कैन्सर पर जीत दर्ज करते हुए इस जुलूस में शामिल भी तो होते जाएँगे। व्यावहारिक क्रान्ति का दस्तावेज ऐसी पोथी नहीं होता, जिसे निकालकर पाठ किया जाय, और फिर बेठनबद्ध करके रख दिया जाय। यहाँ तो क्रान्ति का अंकुरण हो रहा है। बीज मुट्ठी में बन्द रह सकता है, पौध गमले में बन सकती है, किन्तु पौधे में अगर विराट वृक्ष बनने की संभावनाएँ हैं, तो वह आकाश, प्रकाश और जमीन माँगना शुरू कर देता है। फिर तो नये बीज जन्मेंगे, बीज का भण्डार बढ़ता जायेगा और फसल का अम्बार लगता जायेगा। आज मात्र कुछ सौ लोग कैन्सर पर विजय की गवाही देने निकले हैं। शून्य के स्थान पर इकाई आई। हल्के विस्फोट के साथ दहाई बनी, फिर सैकड़े हुए। हजारों, और फिर लाखों होंगे। जो कुछ आज डी. एस. रिसर्च सेण्टर की प्रयोगशाला में घटित हुआ, वह विश्व के धरातल पर लहलहा उठेगा।

ऐसे ही परिणाम की लालसा से तो बीज का अनुसन्धान हुआ और उसके अंकुरण की विधि विकसित की गयी। यह सारा आयोजन संकल्प के धरातल पर कैन्सर की विदाई का आयोजन है, उसके अस्तित्व के उन्मूलन की तैयारी है।

इस पुस्तक में एक सौ वृत्तान्त प्रस्तुत किये जा रहे हैं। इसे कई सौ वृत्तान्तों का प्रतिनिधि माना जाय। वृत्तान्तों के अतिरिक्त पूरी सामग्री यथावत ही रखी गयी है। वैसे, यह तो कैन्सर-विजय के वृत्तान्त हैं—पाँच भी बहुत हो सकते थे और डी. एस. रिसर्च सेण्टर एक सौ से अधिक भी प्रस्तुत करने की स्थिति में है।

इतने परिणामों द्वारा कम-से-कम इतना तो लिखा ही जा सकता है, ''कैन्सर हारने लगा है, और इन्सान जीतने लगा है।'' थोड़ी स्याही से अक्षर तो कम लिखे ही जायेंगे। किन्तु विशालकाय भाष्य लिखने की जरूरत भी नहीं है। इतने शब्द लिखने में अगर स्याही का सीमित कोष समाप्त हो जाय, तो भी अफसोस नहीं है। इस मुहूर्त पर इतनी ही लिखावट से सन्तोष है। यह पुस्तक आपके हाथों में रखकर हम अपेक्षा के साथ प्रतीक्षा करेंगे कि मानव-जाति की ओर से कैन्सर-उन्मूलन के लिए घण्टे-घड़ियाल बजने लगें। तब इस पुस्तक का दूसरा प्रयोजन अपनी पूर्णता की ओर चल पड़ेगा।

३. जीवन की गुणवत्ता (क्वालिटी ऑफ लाइफ) में उन्नयन

भाषा को मनोहर लहजों से समृद्ध बनाने में चिकित्सा-जगत ने कलाकारों और साहित्यकारों को बहुत पीछे छोड़ दिया है। चिकित्सा-अभियान तो ऐसे अल्फाजों का जगमगाता खजाना बन गया है। ऐसे लहजे एक ओर तो चिकित्सा की निरर्थकता पर सुन्दर पर्दा डाल देते हैं, और दूसरी ओर सुननेवालों का सुख-संवर्द्धन करते हैं। वैज्ञानिक ढंग से यह कहने के बदले कि ''रोग दूर करना चिकित्सक के बूते की बात नहीं है'', अच्छे चिकित्सक कलात्मक ढंग से यह कहते आये हैं कि ''इलाज मैं करता हूँ, रोग ईश्वर दूर करता है (आई ट्रीट, ही क्योर्स)।''

आजकल पश्चिम का चिकित्सा-जगत कहता है कि चिकित्सा द्वारा उग्र कैन्सर को दूर करना तो संभव नहीं है, किन्तु रोगी के जीवन की गुणवत्ता (क्वालिटी ऑफ लाइफ) सुधारने की कोशिश की जा सकती है। आशय किसी मूल्य पर रोगी के लिए कुछ राहत जुटा देने से है। वैसे तो आतुर को राहत पहुँचा देना भी चिकित्सा का एक महान् प्रयोजन है, लेकिन बड़ी उलझनभरी है यह बयानबाजी !

सवाल है जीवन की गुणवत्ता में सुधार का। बात मनोहर जितनी भी हो, वास्तविकता नहीं है और विज्ञान के धरातल पर सही नहीं है। वास्तविकता है कि कैन्सर होने की जानकारी के साथ ही 'जीवन-बोध जीने' की बात रोगी की चेतना से झड़ जाती है और वह मृत्यु की प्रक्रिया को जीने लगता है। ऐसी हालत में कोई भी चेष्टा केवल मृत्यु की प्रक्रिया के ही उठाव-गिराव का इन्तजाम कर सकती है। जीवन की गुणवत्ता में सुधार की बात नहीं की जा सकती। गुणवत्ता तो जीवनबोध पर आयेगी। वही नहीं रहेगा, तो यह गुणवत्ता खड़ी कहाँ होगी !

हम जब परिणामों के दस्तावेजों से भरी पुस्तक के सन्दर्भ में जीवन की गुणवत्ता के उन्नयन की चर्चा कर रहे हैं, तो हम एक अन्य धरातल की बात भी कर रहे हैं। असलियत है कि कैन्सर को केवल कैन्सर-रोगी ही नहीं भोग रहा है। कैन्सर के आतंक के साये से पूरा मानव-समाज गुजर रहा है। इस साये ने मानव-जीवन की गुणवत्ता में सिहरन पैदा कर दी है। कैन्सर आज मानव समाज की बहुत वजनी चिन्ता है। प्रायः हर समझदार आदमी कैन्सर के अहसास से पीड़ित है। यह जीवनबोध की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष ह्रास है।

यह पुस्तक जब समाज में उतरकर ठोस सबूतों के साथ सन्देश देगी कि कैन्सर की सफल चिकित्सा भी सम्भव है और उसके प्रतिषेध की भी विपुल संभावनाएँ हैं, तो पूरे समाज की चिन्ता और कैन्सर के नाम पर होने वाले आतंक का बोझ सिर से उतर जाएगा। प्रत्येक विज्ञान कहेगा कि अस्तित्व की चिन्ता का बोझ उतरना जीवन की गुणवत्ता का सीधा उठाव और उन्नयन है। पुस्तक के प्रकाशन में इस प्रयोजन की भी प्रेरणा है।

सरकारों तथा सदाशयी संस्थानों द्वारा कैन्सर के प्रति सावधानी और जागरूकता पैदा करने के लिए अभियान और कार्यक्रम संचालित किये जाते रहे हैं। देखने में यह

आ रहा है कि इनसे जागरूकता के बदले आतंक पैदा हो जा रहा है और सावधानी बरतने की अपेक्षा लोग संशय और भय के शिकार होते जा रहे हैं। इससे सामाजिक जीवन की गुणवत्ता का क्षय हो रहा है। उधर दिन दूनी रात चौगुनी गति से कैन्सर का बढ़ाव होते जाना ऐसा सूचित नहीं कर पाता कि इन अभियानों का कुछ प्रभाव भी है। अभियान चलानेवालों के पास स्वयं ही दिशा-भ्रम है। जिनके दृष्टिकोण में स्पष्टता नहीं रहती, वे कोई रचनात्मक प्रभाव नहीं छोड़ सकते। यदि इन सदाशयी लोगों के पास सुलझा हुआ दृष्टिकोण होगा और जो कुछ वे कहना चाहते हैं, उसके पक्ष में कुछ ठोस सबूत देने की हालत होगी, तो उनकी बात गौर से सुनी और मन से मानी जाने लगेगी। हजारों वर्षों के इतिहास ने गवाही दे दी है कि मानव-मन 'निषेधों' के व्यवसायियों से अलग हटकर चलना चाहता है। संभव है यह पुस्तक उनके सदाशयी अभियान को भी संबल प्रदान करे और कैन्सर के विरुद्ध कुछ करने का धरातल भी दे दे।

४. कैन्सर को समझ और चिकित्सा के दायरे में लाना

कैन्सर-चिकित्सा का विज्ञान भी उस राही की तरह इधर-उधर भटक रहा है, जिसका दिशाबोध खो गया है। आज की तारीख तक कैन्सर न तो संगठित वैज्ञानिक अभियानों की समझ के दायरे में आ सका है, न चिकित्सा के दायरे में। पहला चरण होगा उसे समझ के दायरे में लाना। जो समझ के दायरे में आ जाएगा, उसे चिकित्सा के दायरे में समेटने की सही और वैज्ञानिक कोशिश शुरू की जा सकती है। अधिकांश रोगों को चिकित्सा के दायरे में इसलिए नहीं लिया जा सका कि वे वैज्ञानिक समझ के दायरे से बाहर ही रहे। रोग समझ के दायरे में आ जायँ, तो चिकित्सा-प्रयत्नों को नेत्र-ज्योति मिल जाती है, दिशाबोध प्राप्त हो जाता है, उनमें गति आ जाती है और दायरे का विस्तार शुरू हो जाता है।

यह पुस्तक बताएगी कि कैन्सर-मुक्ति के धाराबद्ध परिणामों तक पहुँचा जा चुका है। ऐसे परिणाम स्वयं गवाही देते हैं कि कैन्सर का रत्ती-रत्ती अध्ययन भले ही शेष हो, उसे समझ के सामान्य दायरे में अवश्य ले लिया गया है। पोषक ऊर्जा विज्ञान उसके समाधान का दिशाबोध देगा।

५. कैन्सर के प्रतिषेध के पुरुषार्थ को जगाना

कैन्सर ज्यों ही समझ के दायरे में आयेगा, उसके कारणों की समीचीन व्याख्या संभव हो जायेगी। कारणों के सही बोध से प्रतिषेध और बचाव का सकारात्मक पुरुषार्थ खड़ा होने लगेगा। अभी बचाव का मोर्चा नकारात्मक है। हम अभी निषेधों के युग में हैं। अभी हम इतनी ही कुशलता लेकर चल रहे हैं कि किन-किन पगडण्डियों से होकर नहीं जाना चाहिये। सकारात्मक प्रतिषेध कहता है कि अमुक पगडण्डी पर अमुक तैयारी के साथ चलना चाहिए। लोगों ने बड़ी निष्ठा के साथ प्रचारित किया है कि कैन्सर से बचाव के लिए क्या किया जाना चाहिए, और क्या-क्या करना रोक देना चाहिए। अगर उनकी

सारी सावधानियों और निषेधों को एकत्र कर दिया जाय, तो जिन्दगी की हरकतों को ही बन्द करना पड़ेगा। फिर तो यही लगेगा कि सृष्टि का सारा आयोजन कैन्सर के पक्ष में ही है। ऐसा क्यों हो जाता है ? केवल इसलिए कि सटीक समझ नहीं रहने पर भय और आशंका ही विवेक का रोल अदा करने लगते हैं। लोग डरे हुए हैं और कैन्सर समझ में आया नहीं। फिर तो स्वाभाविक है कि सर्वत्र उसीका आतंक दिखायी दे।

प्रतिषेध का पुरुषार्थ जीवन की प्रतिरोध-क्षमता के सकारात्मक विकास से आयेगा। निषेध का मार्ग विज्ञान का मार्ग नहीं है। वह तबतक के लिए होता है, जबतक विज्ञान अपनी मशाल लेकर हाजिर नहीं हो जाता। झलकने लगा है कि पोषक ऊर्जा विज्ञान प्रतिरोध-क्षमता के सकारात्मक विकास के लिए दिशा और वातावरण देगा।

५. समूचे माहौल में बदलाव को संभव बनाना

अभी तक माहौल कैन्सर के पक्ष में और इन्सान के विरुद्ध है। इन्सान हताश है, किन्तु हताशा न तो उसकी माँग है, न उसके साथ कोई ऐसा स्थायी समझौता है कि आदमी उसे तोड़ने की पेशकश ही नहीं करेगा।

प्रस्तुत पुस्तक की सामग्री माहौल को बदल सकती है। संभव है कुछ लोग कुतूहलवश डी. एस. रिसर्च सेण्टर की कार्यशाला तक आ जायें और देखें, खरल-इमामदस्तों और सिल-लोढ़ों जैसे आदिम उपकरणों को, जिनमें कैन्सर के परखचे उड़ाने वाली 'सर्वपिष्टी' की ढलाई होती है। संभव है, वे यह देखकर भी चौंकें कि यहाँ औषधियाँ तैयार करने के लिए घातक विषों का संग्रह नहीं किया गया है, बल्कि उनके दैनिक जीवन के व्यवहार में लायी जाने वाली आहार-सामग्रियों से ही पोषक ऊर्जा तैयार की जा रही है और उसे रोगों के उन्मूलन का सटीक माध्यम बनाया जा रहा है।

अधिक संभव है, वे ललकार कर बोल उठें "आततायी कैन्सर, यही थी तेरी औकात !" और फिर नूतन विज्ञान के नये अंकुरों को उद्यान के रूप में विकसित कर लेने का अभियान चल पड़े। परिणामों की गवाही चुनौती के साथ बढ़ने की प्रेरणा दे सकती है। अभी तक तो लगता रहा कि कैन्सर के बढ़ाव को कभी लगाम ही नहीं लग पायेगी। आदमी का अस्तित्व ही हिलता दिखायी देता था। "कैन्सर नहीं है" का एक गुंजायशी विन्दु मिलेगा, तो "कैन्सर नहीं है" तक की पगडण्डी खींच देने का उत्साह जगेगा ही।

❑

खण्ड : दो

- कैन्सर-मुक्ति के वृत्तान्त
  एक से लेकर एक सौ तक

औषधि-परीक्षण-नीति

आविष्कृत औषधियों का परीक्षण–कार्य भी डी. एस. रिसर्च सेण्टर की प्रयोगशाला का ही कार्य है, क्योंकि परीक्षण द्वारा औषधियों के प्रभाव और परिणाम का अध्ययन होता है और प्रयोगशाला उसके आधार पर विकास और बदलाव का कार्य करती चलती है। प्रयोगों से सीधे जुड़ने के कारण न तो परीक्षण बाजार से जुड़ता है, न औषधियों का सीमा से अधिक निर्माण किया जा सकता है। इसीलिए परीक्षण में उतारी गयी औषधियाँ रिसर्च सेण्टर की निर्धारित इकाइयों से ही रोगियों के लिए सीधे उपलब्ध कराई जाती हैं और परिणाम–प्रभाव की रिपोर्ट भी सीधे केन्द्र की उन निर्धारित इकाइयों के पास ही पहुँचाई जाती है। प्रारम्भ में रोगी/रोगिणी के नाम का पंजीयन पूर्व जाँच और चिकित्सा के आधार पर किया जाता है और हर अगली किश्त प्राप्त करने के लिए प्रगति की रिपोर्ट देनी पड़ती है, ताकि रिसर्च सेण्टर उसका अध्ययन करके पोषक ऊर्जा की खूराकें तय कर सके, तैयार कर सके। औषधि प्राप्त करने के लिए डाक अथवा कूरियर सेवाओं का भी उपयोग किया जा सकता है अथवा कोई प्रतिनिधि भी भेजा जा सकता है।

परीक्षण की शर्तों और स्वैच्छिक समझौतों के अन्तर्गत डी.एस.रिसर्च सेण्टर यह दायित्व वहन करता है कि वह औषधियों का मात्र अनुसन्धान एवं विकास लागत सहयोग स्वरुप प्राप्त करे ताकि प्रयोगशाला का परीक्षण–कार्य विधिवत चलता रहे और यह सहयोग–राशि सहयोग स्वरुप रोगी के स्वजन–परिजन एकत्र कर लें, ताकि रोगी की सेवा–संभाल का मानवीय कार्य अबाध रुप से चलता रहे।

वर्तमान में डी. एस. रिसर्च सेण्टर की निम्न दो इकाइयों से ही परीक्षण में उतारी गयी औषधियाँ उपलब्ध होती हैं–

1. 147–ए, रवीन्द्रपुरी कालोनी, गली नं०–8, वाराणसी–221005 (यू.पी.), फोन नं०–(0542) 313318, 315365, फैक्स नं०–(0542) 312587. (154, लेन नं० 10, रवीन्द्रपुरी कालोनी, वाराणसी–5)
2. 160, महात्मा गाँधी रोड़, प्रथम तल्ला, कलकत्ता–700007 (प. बंगाल). फोन नं०–(033) 2305378

–डी. एस. रिसर्च सेण्टर

१

एक्यूट ल्यूकेमिया (A.L.L.)

मास्टर गौरव अवस्थी, ५ वर्ष
पुत्र : श्री यू. सी. अवस्थी
ए-२००, बी. इ. एल. कॉलोनी
चन्द्रानगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

जाँच एवं मेन्टिनैन्स थेरापी : ए. आई. आई. एम. एस. (सी. आर. नं. एच. सी. पी. ३६६७)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १३.६.८७

प्रसिद्ध अंग्रेजी पत्रिका 'द वीक' (The Week) के पत्रकार ने मास्टर गौरव अवस्थी के साथ घटित घटना के विषय में वैज्ञानिक टिप्पणी तो तैयार कर ली, किन्तु दो विन्दुओं पर उलझाव आ खड़े हुए।

१. **पहला उलझाव था** कि उस टिप्पणी को शीर्षक क्या दिया जाय। यह वह घटना थी, जिसे 'द वीक' के उस अंक की 'कवर स्टोरी' के रूप में प्रतिष्ठित करना था। बात यह थी कि मास्टर गौरव अवस्थी 'एक्यूट ल्यूकेमिया' से मुक्त होकर स्वस्थ-खुशहाल जीवन में वापस आ गया था। 'एक्यूट ल्यूकेमिया' को मृत्यु से जोड़ने की ही परिपाटी है। सामान्य व्यक्ति भी मृत्यु को ही इसका उपसंहार मानता है, और अनुभवों की दुनिया में आँख खोलकर खड़े चिकित्सक और चिकित्सा वैज्ञानिक भी यही मानते और बोलते आये हैं। जब 'एक्यूट ल्यूकेमिया' से ग्रस्त चार वर्षीय बालक मास्टर गौरव को इलाज के लिए अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नयी दिल्ली (एम्स) लाया गया, तो एक अनुभवी चिकित्सक ने बच्चे के पिता को एकान्त में ले जाकर स्पष्ट कह दिया था कि इस रोग के साथ मृत्यु ही नहीं, बल्कि 'शीघ्र मृत्यु' की बात की जाती है। उक्त चिकित्सक ने सहानुभूति के लहजे में अपने पढ़कर जाने हुए, सुने हुए और प्रत्यक्ष देखे हुए अनुभव की बात की थी। *(सन्दर्भ-१)*

> But his heart sank when one doctor said as an aside that no child had ever survived the disease.
>
> THE WEEK ■ AUG. 30, 1992

(सन्दर्भ-१)

किन्तु मास्टर गौरव के साथ जो घटित हुआ, उसने चिकित्सा के इतिहास तथा अब तक के अनुभव की दीवार को बीच से ही दरकाकर फाड़ दिया था। मास्टर गौरव के जीवन ने 'एक्यूट ल्यूकेमिया' को पछाड़ दिया, 'एक्यूट ल्यूकेमिया' हारकर झड़ गया था और सामने खड़ी थी, मास्टर गौरव अवस्थी की बेदाग जगमगाती जिन्दगी। अनुभवों के सामने एक दृश्य था, जो अपने आप में मोहक भी था और अभूतपूर्व भी।

इस अभूतपूर्व घटना को कौन-सा सार्थक शीर्षक दिया जाय ? पत्रकार ने शीर्षक बिठा दिया 'पुनर्जन्म' (Born Again)। एक वैज्ञानिक टिप्पणी के लिए यह शीर्षक अवैज्ञानिक लगता था, क्योंकि 'पुनर्जन्म' के विषय में विज्ञान अभी स्पष्ट रूप से कुछ कह पाने में असमर्थ है। दूसरी बात थी कि 'पुनर्जन्म' का अर्थ होता है—एक शरीर छोड़कर उसी मानवीय चेतना का दूसरे नये शरीर में अवतरित होना। मास्टर गौरव के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ था। यहाँ तो उसके शरीर में मृत्यु का एक अटल-सा कारण प्रगट हो गया

COVER STORY

BORN AGAIN

THE WEEK ■ AUG. 30, 1992

(सन्दर्भ-२)

था, और वही फिर लुप्त हो गया था। किन्तु पत्रकार ने लाचारी में 'पुनर्जन्म' शीर्षक लगाकर अपनी बात कह दी। *(सन्दर्भ-२)*

२. दूसरा उलझाव था, इस घटना की वैज्ञानिक व्याख्या को लेकर। व्याख्या ही वैज्ञानिक प्रयत्नों की रीढ़ है। इस रीढ़ के अभाव में केचुए की तरह रेंगा तो जा सकता है, तनकर चला नहीं जा सकता। व्याख्या की रोशनी में ही विज्ञान अतीत की घटनाओं को समझता है, और इसी के प्रकाश में वैज्ञानिक शोध का भविष्य भी निर्धारित होता है। पत्रकार घटना की व्याख्या तलाश रहा था एक व्याख्या जो विज्ञान-सम्मत हो।

व्याख्या क्यों नहीं मिल रही थी

पारम्परिक चिकित्सा के अन्तर्गत अधिकांश रोगों की चिकित्सा के औषधीय साधन नहीं हैं। 'एक्यूट ल्यूकेमिया' भी उसी वर्ग का रोग है। अतः रोगों की चिकित्सा नहीं की जाती। रोग से मुक्ति (क्योर) तो केवल रोग की चिकित्सा से ही सम्भव है। 'एक्यूट ल्यूकेमिया' के मामले में अस्पतालों में 'मेन्टिनैन्स थेरापी' चलायी जाती है। यह थेरापी रोग और उसकी बुनियाद को नहीं छूती। रोग के कारण शरीर की जैव केमिस्ट्री में जो उथल-पुथल आती है, उसे ही बाह्य केमिस्ट्री की सहायता से सन्तुलित करने की कोशिश की जाती है। 'एक्यूट ल्यूकेमिया' तो 'मेन्टिनैन्स थेरापी' के अनुशासन को बड़ी तेजी से

उखाड़ फेंकता है। इसीलिए वह तीव्र, घातक और मारक होता है। जीवन-व्यवस्था के केन्द्र में 'एक्यूट ल्यूकेमिया' बैठ जाय, तो शरीर की जैव केमिस्ट्री को मेन्टेन किए रहना कठिन हो जाता है।

'एम्स' के चिकित्सकों ने मास्टर गौरव के 'एक्यूट ल्यूकेमिया' की (अर्थात मूल रोग की) कोई चिकित्सा नहीं की थी। चलायी गयी थी केवल 'मेन्टिनैन्स थेरापी'। 'मेन्टिनैन्स थेरापी' ही पारम्परिक चिकित्सा में चलायी जाती है, और ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि संसार में कोई रोगी 'मेन्टिनैन्स थेरापी' से रोग-मुक्त हो गया हो। चिकित्सा विज्ञान भी यही मानता है कि मेन्टिनैन्स द्वारा रोग नहीं हटाया जा सकता। इसीलिए न तो वह रोग के उन्मूलन की उम्मीद करता है, न कोई दवा पेश करता है।

'एम्स' के चिकित्सक भी विज्ञान की स्थापित अवधारणा के विपरीत न तो चल सकते थे, न बोल सकते थे। वे भी दावा नहीं कर सकते थे कि उनके द्वारा चलायी गयी चिकित्सा ने ही मास्टर गौरव को रोग-मुक्त कर दिया था। उधर 'द वीक' का पत्रकार एक वैज्ञानिक व्याख्या चाहता था ''आपने जिस रोग की चिकित्सा ही नहीं की, वह रोग उन्मूलित कैसे हो गया ?''

कारण की तलाश आवश्यक थी

विज्ञान मानता है कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता। कोई-न-कोई कारण अवश्य होगा, जिसने मास्टर गौरव के 'एक्यूट ल्यूकेमिया' का उन्मूलन किया था। दूसरी बात थी कि वह कारण 'मेन्टिनैन्स थेरापी' के बाहर था। उसे तलाशने के लिए मास्टर गौरव की जीवन-शैली, उसकी दिनचर्या आदि की ओर देखना जरूरी था। यह जानकारी भी ली जानी चाहिए थी कि क्या उसे किसी अन्य चिकित्सा के माध्यम से भी गुजारा गया था। अगर यह वैज्ञानिक चेष्टा हो जाती, तो कारण का पता अवश्य लग गया होता और फिर संसार में फैले 'एक्यूट ल्यूकेमिया' के रोगियों के लिए एक जीवन-सूत्र प्राप्त हो गया होता। मात्र पत्रकार को उत्तर देने के लिए ही नहीं, अभूतपूर्व परिणाम को उठते-उठाते देखकर ही वैज्ञानिक चेतना को आँखें खोलकर आगे बढ़ना चाहिए था।

किन्तु ऐसा संभव नहीं हो सका। इसका कारण है भारतीय चिकित्सकों की व्यस्तता का बोझ। इस व्यस्तता के चलते ही उन्हें अपने कार्यानुभव और पूर्व अर्जित ज्ञान को ही सीमा स्वीकार करके चलना पड़ता है।

व्याख्या का कामचलाऊ बेठन : (बेठन उस वस्त्र को कहते हैं, जिसमें पुस्तक लपेटकर रखी जाती है) व्यस्तता के चलते कई बार वैज्ञानिक विषयों को अर्द्धवैज्ञानिक व्याख्याओं के बेठनों में लपेट देना पड़ता है। एक ऐसा ही बेठन चढ़ाकर माथापच्ची से अवकाश ले लिया गया। अगर कह दिया जाता कि यह मेन्टिनैन्स थेरापी की उपार्जना है, तो उसी क्षण सवाल घेर लेते कि ऐसी घटना दुनिया में इससे पहले क्यों नहीं घटित

हो गयी ? इलाज के पक्ष से कोई व्याख्या नहीं जुटाई जा सकती थी। अब दूसरा पक्ष था रोगी का। क्यों नहीं रोग के ऊपर ही यह व्यवस्था लपेट दी जाय ! एक सीधा-सरल मार्ग मिल गया। 'द वीक' के पत्रकार को समझा दिया गया कि ''रोग प्रारम्भिक अवस्था में ही पहचान में आ गया था, इसलिए ऐसा घटित हो गया।''

इसके आगे तहकीकात का द्वार बन्द था। इलाज करने वालों का उत्तर मिल गया। अब शेष रह गया कि रोग से तहकीकात की जाय, जो सम्भव नहीं है।

पत्रकार के लिए यह सुपाच्य था अथवा नहीं, वह जाने। उसने इतना ही पर्याप्त माना कि विज्ञान जानने वाले चिकित्सकों द्वारा दी गयी व्यवस्था ही वैज्ञानिक है। उसने 'अर्ली डिटेक्शन' के आधार-फलक पर ही कहानी गढ़ दी।

> The most commonly found cancers in India are oral, breast and uterine. But according to Dr Krishnan Nair, director of the Regional Cancer Centre, Trivandrum, "these are the easiest ones in terms of early detection". For instance, a doctor can easily detect the whitish patch inside the mouth which is the first symptom of oral cancer. "But in our country, the doctors are not sensitised to do this simple checking of the mouth while treating patients," he admits.
>
> 34 THE WEEK ■ AUG. 30, 1992

(सन्दर्भ-३)

इसमें सन्देह नहीं कि पत्रकार ने अपना लेख तैयार करने के लिए गहन छानबीन की थी। वह सुन चुका था कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' की आँधी के साथ 'अर्ली' और 'एडवान्स' का वर्गीकरण नहीं लागू होता। रिजनल कैन्सर सेण्टर, त्रिवेन्द्रम के निदेशक डॉ. कृष्णन नैयर ने मुँह, स्तन तथा गर्भाशय के कैन्सरों जैसे सरल कैन्सरों के साथ ही 'अर्ली डिटेक्शन' का प्रसंग उठाया था। *(सन्दर्भ-३)*

किन्तु पत्रकार के सामने मास्टर गौरव के पिता श्री यू. सी. अवस्थी ने एक अन्य चिकित्सा का प्रसंग उठाया था, जो मेन्टिनैन्स के समानान्तर चली थी।

अधिक संभव है श्री अवस्थी ने इसकी जानकारी 'एम्स' के चिकित्सकों को नहीं दी हो। संभव है इसी कारण वे 'अर्ली डिटेक्शन' पर जा खड़े हुए हों। पत्रकार इस छानबीन से अलग रहना चाहते होंगे, क्योंकि उन्हें कैन्सर के विषय में लिखना था, मास्टर गौरव के केस के बारे में ही नहीं। उद्धृत है श्री यू. सी. अवस्थी के पत्र का अंश, जिसमें सूचना है कि उन्होंने पत्रकार के सामने डी. एस. रिसर्च सेन्टर और 'सर्वपिष्टी' की बात रखी थी। *(सन्दर्भ-४)*

रोग का जन्म और इतिहास- बच्चे गौरव को टायफॉयड से बचाव करने वाला वेक्सीनेशन (वेक्सीन का इंजेक्शन) दिलाया गया, जिसने जीवन की चलती गाड़ी को दुर्घटना की पटरी पर ला दिया। वेक्सीनेशन के बाद जो बुखार चढ़ा, उसने किसी भी चिकित्सा-प्रयत्न से पीछा नहीं छोड़ा। स्थानीय नरेन्द्र मोहन अस्पताल में व्यापक जाँच की गयी। चिकित्सकों को ल्यूकेमिया का सन्देह हुआ। इसी बीच दाहिने अण्डकोश में सूजन आ गयी। चिकित्सकों ने 'एम्स' जाकर जाँच और इलाज का परामर्श दिया। A. L. L. होने की वैज्ञानिक पुष्टि हुई और मेन्टिनैन्स थेरापी शुरू कर दी गयी।

आदरणीय डाक्टर साहब।

वृज विहार
गाजियाबाद

सादर नमस्कार दिनांक [illegible]

मैंने [illegible] पत्रिका वालों को सभी कुछ बता दिया है। नरेन्द्र मोहन अस्पताल ने A.I.I.M.S. उनका [illegible] Research Centre का हवाला दिया था और जो ल्यूकेमिया सर्वपिष्टी के गुण आपने बताये थे। जिस आधार पर आपकी दवाई काम करती है सभी कुछ मैंने पत्रिका वालों को बताया था परन्तु पत्रिका ने किसी भी डाक्टर का नाम [illegible] का नाम क्यों नहीं दिया। यह मैं नहीं जानता हूँ। धन्यवाद

इति आपका [illegible]

(सन्दर्भ-४)

गले में भी एक गाँठ पाई गयी। गले तथा अण्डकोश की रेडियोथेरापी की गयी। जाँच से वहाँ भी ल्यूकेमिया पाये जाने की पुष्टि हुई थी।

'एम्स' के एक अनुभवी चिकित्सक ने मास्टर गौरव के पिता को अलग ले जाकर रोग की नियति और सम्भावित भविष्य की सूचना दे दी थी, " इस रोग की गिरफ्त में आने के बाद कभी भी किसी बच्चे को नहीं बचाया जा सका है।" अन्यत्र भी ऐसा ही सुनने को मिला था। श्री अवस्थी की चेतना चिन्ता और बेबसी के अन्धेरे में टकरा रही थी।

इसी बीच कहीं से डी. एस. रिसर्च सेण्टर एवं पोषक ऊर्जा विज्ञान के विषय में चर्चा सुनने को मिली। श्री अवस्थी ने पहले पत्र लिखा और फिर 'सर्वपिष्टी' लेने के लिए स्वयं रिसर्च सेण्टर के कलकत्ता केन्द्र पर पहुँच गये।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ- ११.६.८७

११.६.८७ को 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ की गयी। रिसर्च सेण्टर के परामर्श के मुताबिक श्री अवस्थी ने १४.६.८७ को ही बच्चे की एक रक्त-परीक्षा करा ली, ताकि नोट किया

वृज विहार
दिनांक [illegible]

नमस्कार! डाक्टर साहब मैं आपके यहाँ से आपकी दवाई लेकर [illegible] को अपने घर आया था। आपकी दवाई देने से पहले बच्चे का Hb [illegible] ग्राम व T.L.C. [illegible] दिनांक [illegible] की रिपोर्ट थी। आपकी दवाई [illegible] से शुरू की। दवाई शुरू करने के बाद की [illegible] की Blood Report Hb [illegible] ग्राम व T.L.C. [illegible] थी। इसके बाद [illegible] की Blood Report Hb [illegible] ग्राम व T.L.C. [illegible] है। बच्चा देखने में पहले से अच्छा है व भूख लगती है।

(सन्दर्भ-५)

ॐ   कूज बिहार
दिनांक- २६-१०-८९ ई०

आदरणीय डाक्टर साहब।

सादर नमस्कार

विदित हो कि कल All India Institute के डाक्टर श्री L S Arya साहब ने बताया कि सिम्पलिन अब बिल्कुल ठीक है। पहले आ बढ़ी थी यह बढ़ी नहीं है। परन्तु [illegible] २०-१०-८९ को ब्लड टेस्ट अस्ट्रेलिया एन्टीजिन कराया था। वह पाजिटिव आया है। उसके लिये डाक्टर साहब ने बताया कि अस्ट्रेलिया एन्टीजिन की वजह से (liver Infection) सिम्पलिन बढ़ी थी। अब इसमें करना कुछ नहीं है। बच्चे को भूख सही लगती है। आंख नाक में कभी ब्लड आता था वह नहीं आता है।

इति
आपका हितैषी
U.C. Awasthi

मेरे बच्चे का नाम मास्टर गौरव अवस्थी है। बच्चा देखने में सही लगता है।

(सन्दर्भ-६)

जा सके कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' और 'मेन्टिनैन्स थेरापी' के कारण उतरते-चढ़ते स्वास्थ्य-घटकों में 'सर्वपिष्टी' की भूमिका किस रूप में दिखायी देती है।

'मेन्टिनैन्स थेरापी' में 'सर्वपिष्टी' के जुड़ने से बच्चे के सामान्य स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव परिलक्षित हुआ।*(सन्दर्भ-५ और सन्दर्भ-६)*

क्रमशः पोषक ऊर्जा अपना प्रभाव कायम करती गयी। बच्चा रोग को भी झेलता गया और औषधियों के दुष्प्रभाव को भी। शुरू से ही लगने लगा कि यदि कोई आकस्मिक दुर्घटना नहीं हो, तो 'एक्यूट ल्यूकेमिया' को अन्त में परास्त होना है।

नोट : श्री यू. सी. अवस्थी चिकित्सा के हर मोर्चे पर निष्ठा और तत्परता के साथ लड़ रहे थे। डी. एस. रिसर्च सेण्टर को भी नियमित प्रगति-सूचना देते रहे। जो भी जाँच होती उसकी प्रति के साथ हवाले का पत्र अवश्य देते रहे। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के रिकार्ड में जमा पत्रों और रिपोर्टों की संख्या लगभग दो सौ है। वैज्ञानिक अध्ययन के लिए यह एक मूल्यवान सामग्री है। उतने का हवाला देना संभव नहीं है।

'एम्स' ने मेन्टिनैन्स में बड़ी तत्परता और सावधानी बरती। अन्तःसलिला के रूप में 'सर्वपिष्टी' चलती रही। मई १९९० की जाँच-रिपोर्ट ने प्रगट कर दिया कि मास्टर गौरव

के शरीर से 'एक्यूट ल्यूकेमिया' निर्मूल हो चुका है। अण्डकोश की बायाप्सी की रिपोर्ट से भी इसी बात की पुष्टि हुई। *(सन्दर्भ-७ और सन्दर्भ-८)*

Shri Mool Chand Kharaiti Ram Hospital

LAJPAT NAGAR, NEW DELHI-110021

ULTRASOUND DIAGNOSTIC CENTRE

Ref. No. 2678 Date 25/11/88

Name Mast. Gaurav Avasti Age 7 yrs.

Ref By Dr. C/O A.I.I.M.S.

Clinical Diagnosis: Abd U/S. c/o A.L.L. ē splenomegaly in remission.

ABDOMINAL INVESTIGATION

Spleen is normal in size and echotexture. It measures 36mms from dome to hilum - size being within normal limits.

Remarks:

CONCLUSION:- Normal Study.

Consultant in Ultrasonics

DEPARTMENT OF PATHOLOGY
ALL-INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

NEW DELHI-110029. TEL: 661123/227. GRAM: MEDINST

NAME OF THE PATIENT: Gaurav					HISTOPATHOLOGY REPORT
HOSP. REG. NO. 5648	AGE 8	SEX M	CLINICAL UNIT P/surg	WARD/OPD OPD	NATURE OF MATERIAL SENT: Testicular biopsy (Right and left.)
PATH. ACC. NO. 90-7540	RECEIVED ON 11.5.90		LESIONAL INDEX/CODE		

REPORT

Specimens sent as right and left testicular biopsy both show fibrous tissue only, with an infiltrate of monomorphic cells having round to oval vesicular nuclei and indistinct cytoplasm, suggestive of leukemic infiltrate. Immunohistochemistry is being done to confirm the nature of these cells, and a supplementary report will follow.

18.5.90

DATE

For M. Vijayaraghavan
DR.

Supplementary report:

Immunohistochemistry for leukocyte common antigen is negative, indicating that the cells are possibly young fibroblasts and not a leukemic infiltrate.

23.5.90

DATE REPORT

For Dr. M. Vijayaraghavan

REPORTED BY

(सन्दर्भ-७ और सन्दर्भ-८)

२

हाँ, यही हैं अनिल श्रीवास्तव, जिनसे हाथ मिलाते हुए कलकत्ता के एक पत्रकार ने कहा था, "अनिल जी, चन्द्रयात्रा से सकुशल वापस आये थे यूरी गागरिन, तो मैंने उनसे हाथ मिलाया था। आपसे हाथ मिलाना उससे भी बड़ी बात है। यूरी गागरिन के लिए प्रायः तय था कि वे सकुशल वापस आएंगे। उन्हें जमीन पर उतारने की तैयारी की गई थी और स्वागत की भी। एक्यूट ल्यूकेमिया से सकुशल वापस आने की बात तो कभी सुनी अथवा सोची भी नहीं गयी थी। अतः इस शिखर पर ध्वज फहराकर आपने तारीख को गौरव दे दिया है।"

एक्यूट ल्यूकेमिया
(A.M.L.)

अनिल कुमार श्रीवास्तव,३० वर्ष
भारतीय स्टेट बैंक,
अमेठी, जिला-सुल्तानपुर (उ. प्र.)

पूर्व चिकित्सा- टाटा मेमोरियल कैन्सर अस्पताल, बम्बई, केस नं. बी. डी. १७१२१।

'सर्वपिष्टी' द्वारा चिकित्सा- ७-२-६२ से।

भारतीय स्टेट बैंक, अमेठी (उ. प्र.) के ३० वर्षीय युवा (उस समय) लिपिक अनिल कुमार श्रीवास्तव (निवासी—कोरारी हरीशाह, जिला—सुल्तानपुर, उ. प्र.) २६ मई, १६६२ को जाँच कराने के लिए टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई के चिकित्सकों के सामने चुस्त-दुरुस्त रूप में उपस्थित हो गये। चिकित्सकों को पहले तो अपनी आँखों पर विश्वास करने में दिक्कत का सामना करना पड़ा, फिर जब रक्त और बोन मैरो की जाँच-रिपोर्ट सामने लायी गई, तो अपनी जाँचशाला पर भी अविश्वास ही हुआ। प्रयोगशाला को भी तहकीकात से गुजरकर समझाना पड़ा कि रिपोर्ट वास्तव में अनिल श्रीवास्तव की ही है। रिपोर्ट बता रही थी कि अनिल श्रीवास्तव एक्यूट ल्यूकेमिया से पूर्ण मुक्त हैं। ऐसा परिणाम उनके सामने पहली बार आया था। आश्चर्य तथा अविश्वास के पीछे एक कारण था। इन्हीं चिकित्सकों ने छह माह तक एक्यूट ल्यूकेमिया की चिकित्सा चलाने के बाद (केस नं० बी० डी०/१७१२१) चार महीने पहले अनिल को

अस्पताल से छुट्टी दी थी।

उन्हें अनिल के केस का कुछ-कुछ स्मरण भी था और बाकी कहानी सामने पड़ी उसकी फाइल बोल रही थी—५ सितम्बर १६६१ को केस टाटा मेमोरियल अस्पताल लाया गया। जाँच की गयी, फिर इलाज चलाया जाने लगा। *(सन्दर्भ-६ और सन्दर्भ-१०)*

TATA MEMORIAL HOSPITAL

17121

Name MR ANIL (First) R. (Middle) SHRIVASTAV (Last)

Date 5/9/91 Case No. BD

(1) Permanent Address : Room No. ______ Floor ______

Ref. to Dr. S.K. Mani

UNIT/SEAT DR. R. GOPAL

DR. K S. NADKARNI DR. M. R. PAL

DR. T. K. SAIKIA DR. P. M. PARIKH

MEDICAL ONCOLOGY (-C-U U-I)

Age : 30 Sex : M S/M/W/D. M

Occupation Service

Education GRAD

Income Rs.

Diagnosis : AML Histology :
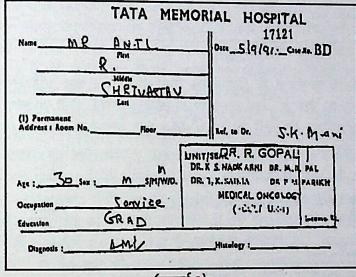
(सन्दर्भ-६)

रोग इतना उग्र था और बार-बार इस प्रकार के आपात संकट खड़े करता था, जो चिकित्सा के तटबन्धों को तोड़ देता था।

नवम्बर, १६६१ में फेफड़ों में तीव्र फंगल इनफेक्शन हो गया था। *(सन्दर्भ-११)*

जनवरी तक चिकित्सा की हर संभव कोशिश की गयी थी। ११ जनवरी, १६६२ को ए. एम. एल. क्लीनिक में केस के विषय में चिन्तन और गम्भीर चर्चा की गयी। वास्तव में इस एक्यूट ल्यूकेमिया ने अबतक के चिकित्सा-प्रयत्नों पर पानी फेर दिया था और आशा की हर रेखा को पोंछकर उसी तेवर में आ खड़ा हुआ था, जहाँ से चिकित्सा शुरू की गयी थी। उधर अब तक प्रयोग किये गये रासायनिक विषों ने शरीर-रचना की केमिस्ट्री को ध्वस्त कर दिया था, जिससे उनके प्रयोग द्वारा किसी प्रकार के सुफल की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। अब रास्ता यही रह गया था कि रक्त चढ़ाते रहा जाय, और रोग की चिकित्सात्मक छेड़-छाड़ से अलग हटकर रोगी के बाह्य कष्टों के लिए लक्षणगत दवाएँ चलायी जायँ।

TOD-0

Admission	Discharge
CTW 11/9/91	OTWd 7/10/91
CTWd 23/10/91	[illegible]
CWd 30/10/91	CTW 2/11/91
CTW 11/11/91	CTW 16/11/91
CTW 12/1/92	OTWd 20/1/92

(सन्दर्भ-१०)

BD 17121 6.11.91 (Reported by Dr.Patange)
Xray Chest PA View: Fluffy nodular opacities are seen in right mid zone and left mid and lower zones. Right CP angle is obliterated with an air fluid level in right lower zone. Left CP angle is obliterated with track fluid along left lateral wall. Heart and mediastinum are within normal limits.
IMP: Bilateral bronchopneumonia with right side hydropneumothorax with left pleural effusion.

(सन्दर्भ-११)

तय हुआ कि रेलवे कन्सेशन के लिए लिख दिया जाय और एक सर्टिफिकेट देकर कि ब्लड कैन्सर का केस है, अतः रेल-यात्रा ही अनुकूल रहेगी, रोगी को छुट्टी दे दी जाय। लिख दिया गया कि रोगी को अगली जाँच और इलाज के लिए २०.०४. १९९२ को ९ बजे अस्पताल लाया जाय।*(सन्दर्भ-१२)*

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Form No. 4

NAME Anil

CASE No. B.D. 17121

Physician's Follow up Notes

10.1.92 Discussed in AML clinic
c/o RAEB-T 24% blasts
Rx on Idarubicin protocol
Completed 1 cycle
Prolonged fungal infection
Now BM shows 18% blasts
Morpho identical c̄ original disease
(Discussed c̄ Dr Chopra/ Dr Nair)

Δ – Relapsed disease

Adv: Symptomatic Rx
SOS Blood transfusions

Ry concess
give letter
certificate Δ blood cancer fit to travel by rail
R/s 20/4/1992 at 9 am.

(सन्दर्भ-१२)

अनिल के श्वसुर श्री पी. एन. श्रीवास्तव (प्राचार्य, एस. आई. सी. एस. नेशनल इण्टर कालेज, भदोही, उ. प्र.) को अलग ले जाकर अन्तिम रूप से बता दिया गया कि चिकित्सा

अब कुछ कर पाने में असमर्थ है, और उनका रोगी मुश्किल से दो अथवा तीन महीने बच सकता है।

आज चिकित्सकों की बुद्धि को चक्कर में डाल देने के लिए इतना ही पर्याप्त था कि अनिल उनके सामने सोलह आने जीवित खड़ा था। फिर वह तो एकदम चुस्त-दुरुस्त भी दिखायी दे रहा था। उससे भी बढ़कर थी उन्हीं की परीक्षणशाला से आयी जाँच रिपोर्ट कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' समाप्त हो चुका है, और अनिल एक पूर्ण स्वस्थ युवक है। अब तक तो ऐसा न देखा गया था, न सुना गया था, विज्ञान ऐसा घटित हो जाने की कल्पना को खड़े होने की जगह नहीं देना चाहता था। चिकित्सकों ने भी कल्पना नहीं की थी कि किसी दिन ऐसे परिणाम के सामने खड़ा होना पड़ेगा।

कैन्सर और फिर उसमें भी एक्यूट ल्यूकेमिया से मर जाना ही चिकित्सकों को पूर्ण वैज्ञानिक और विश्वसनीय लगता है। एक्यूट ल्यूकेमिया हो जाने के बाद भी जिन्दा बच निकलना तो अविश्वसनीय, अवैज्ञानिक और अप्राकृतिक ही लगता है। मजबूरी थी कि उनके अस्पताल ने ही अनिल के एक्यूट ल्यूकेमिया की जाँच की थी, इलाज किया था और फिर इलाज से रिहा करके रेलगाड़ी में लेटकर घर जाने की सलाह दी थी। मजबूरी का दूसरा पहलू था कि उन्हीं की लेबोरेट्री उसे रोग-मुक्त और पूर्ण स्वस्थ बता रही थी। किसी छोटे-मोटे चिकित्सा-केन्द्र से जुड़ी घटना होती, तो ''एक्यूट ल्यूकेमिया नहीं रहा होगा'' कहकर बात को बस्ते में सरका दिया जा सकता था।

अनिल के आत्म-विश्वास और प्रसन्नता की सीमा नहीं थी।

चिकित्सकों ने जानना चाहा कि टाटा मेमोरियल अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद उसने कहीं कोई चिकित्सा ली थी क्या। अनिल तो ऐसे ही प्रसंग के लिए उतावला था। वह सोच रहा था कि जिस औषधि ने उसे स्वस्थ बनाया है, उसमें चिकित्सकों और वैज्ञानिकों की गहरी रुचि होगी।

कहता है अनिल, ''मैने डी. एस. रिसर्च सेण्टर तथा कैन्सर की औषधि के विषय में बताया। यह भी कहा कि इस औषधि से अनेक लोग कैन्सर-मुक्त हो चुके हैं, 'एक्यूट ल्यूकेमिया' के भी। ऐसे कई रोगियों से तो अब मेरा व्यक्तिगत परिचय हो चुका है।''

अनिल आगे भी कुछ कहना चाहता था, किन्तु एक चिकित्सक द्वारा बीच में ही नया सवाल उपस्थित कर देने से उसने समझ लिया कि बड़े चिकित्सकों के पास बड़ी सचाई का सामना करने का समय नहीं होता। उसके उत्साह को धक्का लगा। अन्तरात्मा अपनी आवाज को पी गयी—''कैसे हैं ये भारतीय चिकित्सक !''

चिकित्सक का प्रश्न था, ''कैसी है वह 'सर्वपिष्टी' औषधि ? अनिल ने बताया कि पोषक ऊर्जा की सुस्वादु खूराकें पाउडर के रूप में होती हैं और पुड़ियों में प्राप्त होती हैं। उन्हें निर्धारित समय पर खाया जाता है। औषधि का स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ता।

यहीं आकर बात को रुक जाना था। चिकित्सक ने अनिल की जाँच-रिपोर्ट पर लिख दिया ''कम्प्लीट रेमिशन'' और उसकी फाइल पर घसीट दिया, ''कोई पाउडर खा रहा

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Ref. No. : 10692013 BONE_MARROW_EXAMINATION_REPORT Date : 29/05/92
Case No. : 80/17121 . Lab. No. : C/7436
Name : ANIL K SHRIVASTAVA Age : 30 Sex : M
Cellularity : NO [Normal(N)/Hypo(HO)/Hyper(HR)/Diluted(D)] M/E Ratio: ..0/C1
Erythropoesis : NR [Normal(N)/Suppressed(S)/Hyper(HR)/Dyserythro(D)]
NO [Normo(NO)/Megalo(ME)/Dimorph(DI)] Ring Sideroblast :
Myelopoesis : N [Normal(N)/Suppressed(S)/Hyper(HR)/Dysmyelo(D)]
Maturation :
Blast : % Auer Rod(Y/N) : Promyelo : : Promonor Mono: %
Lymphopoesis Blasts : % Prolymphocytes : Lymphocytes: %
Poorly Diff. Lympho : % Plasma Cell/Myeloma Cell : %
Megakaryopoesis : A [Adequate(A)/Reduced(R)/Increased(I)] Micromegakor(Y/N):
Abnormal Cells :
Cytochemistry : SSB : MPO : CAE : NSE :
PAS : AP : LAP : TDT :
Surface Marker :
Diagnosis : Complete Remission
Comment :
Reported BY : MC Entered By : SS

(सन्दर्भ-१३)

था।" (सन्दर्भ-१३) अनिल का उत्साह जैसे धँस गया। चिकित्सा के चक्र में दबे वे चिकित्सक उसे बड़े विचित्र लगे—जिस पाउडर से कैन्सर के रोगी मृत्यु के द्वार से वापस आने में सफल हो रहे हों, उस पाउडर के विषय में कुछ करने, सोचने और सुनने का भी अवकाश उन चिकित्सकों के पास नहीं है !

अनिल श्रीवास्तव की चिकित्सा-कथा उनके श्वसुर प्राचार्य पी. एन. श्रीवास्तव से सुनी जाय, "पाँच महीने तक चिकित्सा चली थी टाटा मेमोरियल में। चार लाख रुपये खर्च हुए। जिन्दगी बचाने के लिए आदमी क्या नहीं करता ? जब चिकित्सा की ओर से असमर्थता बताकर घर ले जाने की सलाह मिली, तो अनिल को यह भी सोचना था कि कौन-सा घर ! बैंक के एक अदना लिपिक का घर चार लाख खर्च करने के बाद बचता ही कहाँ है, खैर ! एक फ्लैश के रूप में ही दीख गयीं कैन्सर-चिकित्सा में डूबती टूटी-बिखरी गृहस्थियाँ—अस्पताली चिकित्सा के चलते जिन्हें जीवन का एक बुलबुला भी हाथ नहीं आता। लेकिन गृहस्थी लुटने का दर्द जीवन के अस्तित्व पर खड़े खतरे की आड़ में अचानक ही छिप गया।

"६ फरवरी, ६२ को हम हताश-निराश से बम्बई से वाराणसी लौटे। सिर पर एक टाइम बम जकड़ा हुआ था, जिसका विस्फोट डाक्टरों के कहने के अनुसार, दो-तीन महीने के भीतर किसी भी दिन होना था। वाराणसी में मानो एक संयोग हमारी प्रतीक्षा

कर रहा था। उसी दिन एक मित्र ने एक पता सँभला दिया -डी. एस. रिसर्च सेण्टर, १४७-ए, रवीन्द्रपुरी, न्यू कॉलोनी, वाराणसी।''

''मित्र ने बताया कि इस केन्द्र ने कैन्सर की एक सफल औषधि का आविष्कार किया है, जिसने अनेक रोगियों को कैन्सर-मुक्त किया है। एक केस के तो वे प्रत्यक्ष साक्षी थे। कपसेठी, जिला-वाराणसी के बाबू अनन्त प्रसाद सिंह की पुत्रवधू रीता सिंह के ब्रेन ट्यूमर का केस इतना उग्र था कि बी. एच. यू और लखनऊ की चिकित्सा ने हारकर जवाब दे दिया था। इस केन्द्र की औषधि का सेवन करके वह महिला पूर्ण स्वस्थ तो हो ही गई हैं, जाँच में भी आ गया कि उसके ब्रेन के छहों ट्यूमर समाप्त हो गये हैं।''

''कैन्सर-रोगियों के महातीर्थ टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई के वातावरण ने हमें बता दिया था, कैन्सर होने का अटल अर्थ। ब्रेन कैन्सर ठीक हुआ होगा, लेकिन यहाँ तो एक्यूट ल्यूकेमिया का सवाल था। एक्यूट ल्यूकेमिया जिस घाट पर उतारता है उसे कैन्सर विशेषज्ञों के मुँह से भी सुन लिया था। यहाँ तो इतिहास भी कोई आशा रखने की मनाही करता है।''

''हमने केन्द्र पर पहुँचकर उसी दिन 'सर्वपिष्टी' प्राप्त की। मैंने एक्यूट ल्यूकेमिया के विषय में प्रो. त्रिवेदी से अपनी शंका प्रगट की, तो उन्होंने बताया कि एक्यूट ल्यूकेमिया के भी दो रोगी 'सर्वपिष्टी' द्वारा कैन्सरमुक्त हुए हैं। उन्होंने कहा कि रिसर्च सेण्टर कोई व्यावसायिक संस्थान नहीं है, न उसे अपनी दवा चलाने की बेचैनी है। आपको दोनो फाइलें इसलिए दिखा दे रहा हूँ कि आप हताशा छोड़कर इलाज का प्रयत्न करें। उन्होंने फाइलें मँगाकर दिखाईं, तो वास्तव में खड़े होने की जगह दिखाई पड़ने लगी। प्रो. त्रिवेदी ने बताया कि एक्यूट ल्यूकेमिया में आपात संकट बहुत आते हैं, जिनके निराकरण के साधन किसी अच्छे अस्पताल अथवा नर्सिंग होम में ही उपलब्ध होंगे। केन्द्र तो केवल औषधि दे सकता है।

''उनके सुझाव पर हमने बी. एच. यू. अस्पताल के एक कुशल चिकित्सक से सम्पर्क किया और उन्होंने हमें सहायता का आश्वासन दे दिया। ७-२-६२ से औषधि आरम्भ कर दी गई। अनिल के स्वास्थ्य पर 'सर्वपिष्टी' ने जादू जैसा काम किया। दिन-प्रतिदिन की प्रगति साफ झलक जाती थी और समय-समय पर जाँच कराने पर जो रिपोर्ट मिलती वह भी प्रगति की पुष्टि करती थी। विचित्र बात रही कि अनिल को किसी आपात् संकट के मुकाबले के लिए न तो किसी अस्पताल की सहायता लेनी पड़ी, न और कोई चिन्ता की स्थिति ही बनी। 'सर्वपिष्टी' पर हमारा भरोसा बढ़ता गया।

''इस बीच एक दिन चिन्ता हो गई। अनिल ने मोटर साइकिल से एक लम्बी यात्रा कर ली, सैकड़ों किलोमीटर की। हम घबरा गये और हिदायत देकर उससे वचन लिया कि आगे कभी ऐसा नहीं करेगा। हम अनिल को रोगी मान रहे थे, लेकिन वह अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव करता था। दो महीने बाद ही जाकर वह अपनी नौकरी में जुट गया।''

''२६ मई १६६२ को ही टाटा मेमोरियल ने उसकी जाँच करके उसे एक्यूट ल्यूकेमिया से पूर्णतः मुक्त घोषित कर दिया। अब तो खतरे की स्थिति जैसे बीते युग का इतिहास

Amethi
29.1.97

Respected Doctor Sahab,

Thank you very much for greetings. Also accept my best wishes for success and development to this centre and you all.

This is a matter of great pleasure for me for asking about my health and care.

I have to say, about my health that I need no any check-up also. Platelet count, although are not sufficient yet within normal range.

I can never forget this centre and no doubt I am much more obliged of Prof. Trivedi & this centre.

Yours
Anil Kumar

(सन्दर्भ-१४)

बन गई।"

"अब अनिल जाँच कराने की जरूरत नहीं समझता। दवाएँ भी नहीं लेता, 'सर्वपिष्टी' भी वर्षों से बन्द है। पूर्ण स्वस्थ है। खटकर काम करता है, गृहस्थी की गाड़ी खींचता है, जीवन के समारोहों का जीवन्त भागीदार है।"

अपने पत्र, दिनांक २६.०१.६७ में अनिल श्रीवास्तव ने लिखा (अंग्रेजी पत्र का हिन्दी अनुवाद)—"शुभकामनाओं के लिए बहुत धन्यवाद। साथ ही मेरी ओर से केन्द्र की सफलता और विकास के लिए शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

मेरे लिए बहुत प्रसन्नता की बात है कि मेरे स्वास्थ्य और कुशल की खोज-खबर ली जा रही है। अपने स्वास्थ्य के विषय में मुझे कहना है कि अब मुझे चेक अप कराने की जरूरत नहीं पड़ती। प्लेटलेट काउण्ट पर्याप्त तो नहीं है किन्तु नार्मल है।

मैं इस केन्द्र को कभी भी भूल नहीं सकता, और अधिक कृतज्ञ तो मैं प्रो. त्रिवेदी और इस केन्द्र का हूँ।" *(सन्दर्भ-१४)*

किसी सन्दर्भ में श्री प्रमोद नारायण श्रीवास्तव ने भी अनिल की रोग-मुक्ति के विषय में एक पत्र दिनांक ०६.०६.६७ को लिखा। *(सन्दर्भ-१५)*

यह कहने में कोई संकोच नहीं कि कैंसर संस्थान बम्बई द्वारा घोषित तीन माह का जीवन के बन्धन को तोड़ कर डाक्टर त्रिवेदी द्वारा ईश्वर की कृपा से उन्हें जीवनदान मिला। उसी तीन माह में स्वस्थ होकर वे अपने बैंक की सेवा में चले गये और अब तक पूर्ण स्वस्थ है और दो बच्चों के पिता भी हैं। रोग मुक्त होने की पुष्टि बाद में टाटा कैंसर संस्थान बम्बई ने भी कर दिया।

(प्रमोदनारायण श्रीवास्तव)

(सन्दर्भ-१५)

३

एक्यूट ल्यूकेमिया (A.M.L.)

श्री सुनील सिंघल, २५ वर्ष
एम. सी. फ्लावर मिल्स
गाँधी गंज,
शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

रोग की जाँच और पुष्टि : ०३.०८.९४ को लखनऊ में।

चिकित्सा : टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल, बम्बई (केस नं. बी. एच. १५२५६, दिनांक १०.०८.९४)।

दिनांक २१.०८.९६ को युवक सुनील सिंघल डी. एस. रिसर्च सेन्टर के कक्ष में उपस्थित हुआ—पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त, स्वस्थ-फुर्तीला और ओजस्वी। स्वास्थ्य-सम्बन्धी कोई समस्या नहीं, और समय के साथ अधिकाधिक सशक्त होता हुआ। अब काम-धाम सँभालने लगा है, दूर-समीप की यात्राएँ भी बेखटके करने लगा

आज दिनांक 21-8-96 को D.S Research Centre पर आकर मैंने अपने पूर्णतः रोग-मुक्त और स्वस्थ होने की रिपोर्ट प्रस्तुत की।
अगर D.S. Research Centre मेरे Acute Leukemia से पीड़ित और फिर उससे पूर्ण मुक्त हो जाने की रिपोर्ट सरकार, अनुसंधान केन्द्रों, मान्यताप्राप्त संस्थाओं तथा जनसाधारण को भेजें तो मैं इसका सहर्ष स्वागत करूँगा।

21/8/96

भवदीय
[signature]
(सुनील सिंघल)

(सन्दर्भ-१६)

है। पोषक ऊर्जा की कुछ खूराकें (स्वयं के लिए) लेने आया है। चूँकि 'सर्वपिष्टी' परीक्षण के अन्तर्गत है अतः प्रत्येक रोगी के विषय में प्रगति-रिपोर्ट देने पर ही औषधि प्राप्त होती है। सुनील भी लिखता है अपनी रिपोर्ट—

रिपोर्ट है, " पूर्णतः रोग-मुक्त और स्वस्थ"। *(सन्दर्भ-१६)* स्वस्थ व्यक्ति के लिए तो इतने ही शब्द लगते हैं। आदमी जब तक रोग-ग्रस्त रहता है, उसकी रिपोर्ट में कई पहलुओं का हवाला अनिवार्य होता है।

सुनील एक सुलझे चिन्तन का युवक है। बोलता और लिखता है, जैसे उसके विचार में आगा-पीछा वाली सलवटें हों ही नहीं। अगर उसका केस प्रकाश में आता है, तो वह सहर्ष स्वागत करेगा।

रोग का इतिहास : युवा सुनील को ज्वर आया और एलोपैथिक चिकित्सा शुरू हुई। महीनो बीते, ज्वर काबू में नहीं आया। लखनऊ ले जाकर जाँच कराने पर 'एक्यूट ल्यूकेमिया' का पता लगा। परिवार के लोग स्तब्ध रह गये। चिन्ता के बीच ही इलाज का निर्णय लेना था। बिना देर किये उसे दिनांक १०.०८.६४ को टाटा मेमोरियल अस्पताल में दाखिल करा दिया गया। जाँच से रोग की तीव्र उग्रता का ज्ञान हुआ। मेण्टिनैन्स थेरापी शुरू की गयी। रोग जितना उग्र था, मेण्टिनैन्स के कदम भी उतने ही जटिल और जोखिम भरे थे।

दिनांक १६.०८.६४ को गले के क्षेत्र में केथेटर लगाना था। इसमें अति रक्त-स्राव

TATA MEMORIAL HOSPITAL

NAME Mr Sunil

CASE No. BH

4

Physician's Follow up Notes

Consent

I have been explained in my language and now I understand the procedure and complication of Hickman catheter. I understand that the risk is very high of complication like bleeding, infection etc. I give full free and willing consent taking full responsibility for any consequences.

witness

Signature

(सन्दर्भ-१७)

से जीवन को खतरा हो सकता है। दूसरी ओर सुनील का ब्लड काउण्ट बहुत नीचे था, अतः रोग-संक्रमण का खतरा भी था। साहस करके, हस्ताक्षर कर दिया गया ''.... मैं मुक्त रूप से और इच्छापूर्वक सहमति व्यक्त करता हूँ कि परिणामों का सारा दायित्व हमारा होगा।'' *(सन्दर्भ-१७)*

और कैथेटर लगा, किमोथेरापी का पहला चक्र अगस्त के अन्त में और दूसरा सितम्बर के अन्त में लगा।

चिकित्सा में 'सर्वपिष्टी' शामिल की गयी- दि. १६.११.६४

कहीं से जानकारी मिलने पर कि डी. एस. रिसर्च सेन्टर की औषधि 'सर्वपिष्टी' ने 'एक्यूट ल्यूकेमिया' के कई मामले पूरी तरह ठीक कर दिये हैं, और उसे एलोपैथी की मेण्टिनैन्स थेरापी के साथ चलाया जाता है, परिजनों ने व्यवस्था करके १६.११.६४ से 'सर्वपिष्टी' की खूराकें प्रारम्भ कर दी। उन्हें जानकारी मिल गयी थी कि पोषक ऊर्जा की खूराकें किमोथेरापी के दुष्प्रभावों से स्वास्थ्य की रक्षा भी करती हैं। सुनील का रोग रेमिशन में आ गया था। (टाटा मेमोरियल अस्पताल की बोन मैरो रिपोर्ट, दिनांक २१. ११.६४, लैब नं. ०-६०१५)

सुनील सिंघल के पिता श्री रामचन्द्र सिंघल ने दि. ०६.१२.६४ को पत्र लिखकर डी. एस. रिसर्च सेण्टर से राय माँगी कि क्या किमोथेरापी बन्द करके केवल 'सर्वपिष्टी' पर निर्भर रहा जाय। रिसर्च सेण्टर ने जाँच और मेण्टिनैन्स थेरापी नियमित और विधिवत चलाने की राय दी। आपात स्थितियाँ आती रहीं और उनके मुकाबले में चिकित्सा खड़ी रही। पोषक ऊर्जा की अन्य खूराकें भी समय-समय पर दी जाती रहीं।

सुनील अब बड़ी तेजी से सन्तुलित स्वास्थ्य की दिशा में लौटने लगा था। प्रारम्भ में

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Ref. No. : 170595013   BONE MARROW EXAMINATION REPORT

Case No. : 9H/15256   Date : 16/05/95

Name : SINGHAL SUNIL RAMCHANDRA   Lab. No. : E-1120

Cellularity : Hypocellular   Age : 22   Sex : M

Erythropoesis : Dyserythropoesis   M/E Ratio: 3.3/01

Myelopoesis : Normal

Surface Marker :

Diagnosis : IN REMISSION

Comment

Reported BY : RG   Entered By : MN

(सन्दर्भ-१८)

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Ref. No. : 7029600: BONE_MARROW_EXAMINATION_REPORT
Case No. : BH/13256
Date : 06/07/96
Name : SINGHAL SUNIL RAMCHANDRA
Lab. No. : E-6379
Cellularity : Diluted
Age : 22 Sex : M
Erythropoesis : Suppressed
M/E Ratio:
PAS : AP : LAP : TDT
Surface Marker :
Diagnosis : REMISSION
Comment :
Reported BY : SMAT

(सन्दर्भ-१९)

स्वास्थ्य के मेण्टिनैन्स के लिए मेण्टिनैन्स थेरापी की जो चिकित्सा दी गयी थी, वह कम होते-होते प्रायः रुक गयी। सुनील अब 'सर्वपिष्टी' पर ही निर्भर कर गया। स्वास्थ्य सुधर गया, वजन भी बढ़ गया। फिर भी सावधानी के बतौर नियमित जाँच चलायी जाती रही। वैसे प्रायः सुनिश्चित है कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' अब विदायी ले चुका है। अगर उसका कोई रोयाँ-रेशा शरीर में कहीं शेष रहा हो, तो वह भी अब निर्मूल हो चुका होगा। टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई की बोन मैरो जाँच रिपोर्ट, दिनांक १६.०५.६५, लैब नं. ई.-११२०)। *(सन्दर्भ-१८)*

I am sending my C.B.C. Report done on 30/8/96 as you have asked. I am quite well. Love Rest is o.k.

31/8/96

Your's

(सन्दर्भ-२०)

इसी प्रकार दिनांक ०६.०२.६६ की बोन मैरो जाँच रिपोर्ट (लैब नं. ई-४३७६) ने भी उसे 'रेमिशन' में ही दर्शाया। *(सन्दर्भ-१६)*

रोग-मुक्ति का सबसे बड़ा साक्ष्य देता है सुनील का विकासमान, शक्तिसम्पन्न, तेजोमय, समस्याविहीन स्वास्थ्य।

दि. ३०.०८.६६ को सुनील की सी.बी.सी. जाँच हुई। सब कुछ नॉर्मल पाया गया। उसने केन्द्र को अपने पूरी तरह ठीक और स्वस्थ होने का पत्र लिखा (दि. ३१.०८.

६६)। *(सन्दर्भ-२०)* दिनांक २६. ०४.६७ को सुनील सिंघल की बहन वृत्तिका (अर्चना) जिन्दल ने केन्द्र को पत्र लिखकर सुनील के पूर्ण स्वस्थ होने की रिपोर्ट दी। *(सन्दर्भ-२१)*

डाक्टर साहब नमस्कार

आपने सुनील सिंघल की दवाई के लिये कहा है। मैं उनकी बहन वृत्तिका जिंदल (निवासी वाराणसी) हूँ। आपकी तथा ईश्वर की कृपा से वह अब बिल्कुल ठीक है।

धन्यवाद

वृत्तिका (अर्चना)
२१।५।९७

(सन्दर्भ-२१)

ड्रगौषधि-भण्डारों में बेहोश और अचेतन बनानेवाली दवाएँ हैं, किसी बेहोश व्यक्ति को होश में लाने और सचेतन बनानेवाली दवा नहीं है। यह है विषों-उपविषों की प्रकृति। ठीक इसके विपरीत, पोषक ऊर्जा से किसी बेहोश व्यक्ति को सचेतन बनानेवाली दवाएँ तो बन सकती हैं, बेहोश करनेवाली दवाएँ नहीं बन सकतीं। यही है पोषक ऊर्जा की प्रकृति।

कैन्सर दैत्य है; आतंक उसकी परछाईं है।

दैत्य से सैकड़ों गुनी बड़ी है उसकी परछाईं !

दुनिया में कैन्सर से करीब एक करोड़ लोग ग्रस्त हैं, उसके आतंक से चार सौ करोड़।

कैन्सर न तो मातृक-पैतृक रोग है, न छुआछूत का रोग है। किन्तु उसका आतंक तो मातृक है, पैतृक है, छूत का है, पीढ़ी-दर-पीढ़ी दौड़नेवाला है, दिशाओं में छलांग लगाने वाला है।

कैन्सर की कोशिकाएँ होती हैं, ट्यूमर होते हैं, आतंक की कोशिकाएँ और ट्यूमर नहीं होते।

कैन्सर के इलाज के लिए अस्पताल हैं, आतंक लाइलाज पड़ा है।

वैज्ञानिक कैन्सर की दवा खोज रहे हैं, आतंक की दवा ढूँढ़नेवाली कोई प्रयोगशाला नहीं है।

किन्तु प्रतीक्षा एक विश्वस्त संदेश की है कि 'कैन्सर का जवाब मिल गया है'। फिर कैन्सर भले ही धीरे-धीरे मिटे, आतंक उसी क्षण मिट जाएगा।

४

एक्यूट ल्यूकेमिया
(A.L.L.)

कुमारी पी. सिन्हा, १५ वर्ष
दिल्ली।

'एक्यूट ल्यूकेमिया' में मेन्टिनैन्स (रोगी के शरीर की जैविक केमिस्ट्री को सन्तुलन में लाने) की तीव्र आवश्यकता होती है। चिकित्सकों को सतत सजग रहना पड़ता है। आपात संकटों में विचित्र आकस्मिकता और तीव्रता होती है। समय पर सँभाल नहीं लिया जाय, तो हर आकस्मिकता जीवन के लिए चुनौती हो सकती है। इलाज के नाम पर मेन्टिनैन्स ही किया जाता है। जीवन के दिन जुटा लेने की कोशिश की जाती है। अनुभव यही है कि 'एक्यूटल्यूकेमिया' मेन्टिनैन्स के बाँधों के काबू में नहीं आ पाता। फिर यह तूफान सँभलने-सँभालने का अवकाश भी तो नहीं देता। कितनी तेजी से पोंछ देता है जिन्दगी को ! संकटों की इस आकस्मिकता के चलते ही डी. एस. रिसर्च

LL 2793

Income Rs............ I.R.C.H. No............

INSTITUTE ROTARY CANCER HOSPITAL
A.I.I.M.S., Out Patients Ticket

Date | Dept. | Surgeon/Physician

O.P.D. No. | Name P. Sinha

Age 14 | Sex F | Diagnosis ALL

Date	Treatment
	Rx - 1) Tab methotrexate 27 mg P.O. once a week (11 tabs of 2.5 mg each) x2 wks
	2) Tab purinethol (6MP) 75 mg O.D. x2 wks (1½ tab of 50 mg each)
	3) Tab phenargen 1 S.O.S. x2d. end of methotrex.
	4) Tab crocine 1 S.O.S.
	5) Tab Vit C 1 O.D. 500 mg
	6) Cap becosule 1 O.D.
17/8/87	7) Boroglycerine locally if oral ulcers (+) 18/8/87
	8) TCC 27/8/87

(सन्दर्भ-२२)

सेण्टर ने 'एक्यूट ल्यूकेमिया' पर पोषक ऊर्जा वर्ग की औषधियों के परीक्षण का साहस नहीं किया था। ऐसा करने का न तो विचार था, न योजना थी। एक संयोग ने परीक्षण का पहला मौका दे दिया। यह भी कहा जा सकता है कि उस संयोग ने ही चिकित्सा की झोली में 'एक्यूट ल्यूकेमिया' से मुक्त होकर स्वस्थ, खुशहाल जिन्दगी में वापसी का अभूतपूर्व और पहला परिणाम दे दिया था।

उस संयोग का संक्षिप्त हवाला। बात १६८७ की है। किसी चर्चा के सन्दर्भ में केन्द्रीय आयुर्वेद एवं सिद्ध अनुसंधान केन्द्र ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से कैन्सर की सफल तथा प्रभावशाली औषधि का आविष्कार कर लेने सम्बन्धी कैफियत माँगी थी और दिल्ली के एक चिकित्सा सेमिनार में भाग लेने के लिए प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी को निमंत्रित कर दिया था। इस दौरान सी. सी. आर. ए. एस. के निदेशक महोदय प्रोफेसर त्रिवेदी को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (ए. आई. आई. एम. एस.) नयी दिल्ली ले गये और वहाँ कुमारी पी. सिन्हा नामक १४ वर्षीया बच्ची के सामने खड़ा कर दिया। उन्होंने प्रोफेसर त्रिवेदी से कहा " इस केस पर आप अपनी 'सर्वपिष्टी' की प्रभावशालिता प्रमाणित करें।" प्रो. त्रिवेदी ने बच्ची को देखा, जिसके शरीर पर केमोथेरापी और मेन्टिनैन्स थेरापी खूब चलायी गयी थी। उन्होंने फाइल का भी अध्ययन करके मन-ही-मन कहा "यह भी कोई केस रह गया है, परीक्षण की गुंजाइश कहाँ है ?" किन्तु यह देखकर कि ए. आई. आई. एम. एस. की ओर से जाँच और मेन्टिनैन्स की भरोसेमन्द व्यवस्था

HAEMATOLOGY UNIT, DEPTT. OF PATHOLOGY, A.I.I.M.S. (IRCH BUILDING)

BONE MARROW REPORT

Lab. B.M. No. B 1022/88 Hcsp. regd. No. 0070

Patint's Name P. Sinha Age 14 yrs Sex F

Clinical Unit MG Ward OPD

IRCH OPD

Normocellular marrow showing normal elements

No deposits are seen.

For Dr. A.K. Saraya

5.8.88

(सन्दर्भ-२३)

है, उन्होंने बात स्वीकार कर ली।

प्रो. त्रिवेदी द्वारा बात को उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लेने के पीछे उनकी एक और भावना भी कार्य कर रही थी। उन्होंने सोचा कि अगर इस बुझते दीये की रोशनी थोड़ी-बहुत भी बढ़ा देने का कार्य 'सर्वपिष्टी' कर देगी, तो वह परिणाम देश के बड़े चिकित्सकों तथा चिकित्सा-वैज्ञानिकों से छिपा नहीं रहेगा और सम्भवतः भारत सरकार

तथा भारतीय वैज्ञानिकों की ओर से सहयोग तथा सहानुभूति की सम्भावना का द्वार खुल जाएगा। सच पूछा जाय तो डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक इस दिशा में किए गए अपने प्रयत्नों में लगातार असफलता देखकर निराश हो गये थे और मानने लगे थे कि इस देश में नये विज्ञान के विकास का वातावरण नहीं है।

नोट : उक्त बच्ची के पिता के भावनापूर्ण आग्रह के चलते उसका पूरा पता आदि गोपनीय रख लिया जा रहा है। *(सन्दर्भ-२२)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १०.८.८७

दिनांक १०.८.८७ को 'सर्वपिष्टी' की पहली किश्त भेजी गयी, जो 'एम्स' के कुशल चिकित्सकों की मेण्टिनैन्स चिकित्सा के समानान्तर शामिल कर दी गयी। बच्ची अपने जीवन के सप्ताह और महीने पूरे करने लगी। एक्यूट ल्यूकेमिया के केस में एक नयी और अनोखी घटना घटित होती देखी जाने लगी। न तो जाँच में किसी प्रकार की लापरवाही थी, न मेन्टिनैन्स में किसी प्रकार की कोताही थी। बच्ची के पिता उसके स्वास्थ्य के विषय में डी. एस. रिसर्च सेण्टर को नियमित सूचना देते रहे। कुमारी पी. सिन्हा अपने हमउम्रों के साथ खेलने-पढ़ने लगी। इस केस की ओर जिनका-जिनका ध्यान था, वे सभी बेहद प्रसन्न और आश्वस्त होने लगे।

दस महीने 'सर्वपिष्टी' चलने के बाद सी. सी. आर. ए. एस. के निदेशक महोदय ने प्रोफेसर त्रिवेदी को पत्र लिखा, ''सिन्हा जी की बेटी (कुमारी पी. सिन्हा) का स्वास्थ्य पहले की अपेक्षा बहुत ठीक है। वर्तमान स्थिति आगे बनी रही, तो खुद में एक आश्चर्य

DEPARTMENT OF PATHOLOGY
ALL-INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
NEW DELHI-110029. TEL.: 661123/227. GRAM : MEDINST

NAME OF THE PATIENT	P. Sinha				HISTOPATHOLOGY REPORT
HOSP REG. NO.	AGE	SEX	CLINICAL UNIT	WARD/OPD	NATURE OF MATERIAL SENT
[illegible]	14	F	MC	IRCH	
PATH. ACC. NO.	RECEIVED ON	LESIONAL INDEX/CODE			BF Bx
88-11336	30.7.88				

REPORT

The bone biopsy shows a mildly hypercellular marrow.
No lymphoma diposits are seen.

5.8.88
DATE OF REPORT

For DR. U. L. [illegible]
REPORTED BY

(सन्दर्भ-२४)

DEPARTMENT OF RADIODIAGNOSIS
Institute Rotary Cancer Hospital
A.I.I.M.S. NEW DELHI-29

Name: P. Sinha 116/70.
Age/Sex: 15/F Clinic/No.
Investigation/Number: Date: 28/10/89
225

REPORT

CECT Abdomen & pelvis
No evidence of RP adenopathy seen.
Impression: Normal Scan.
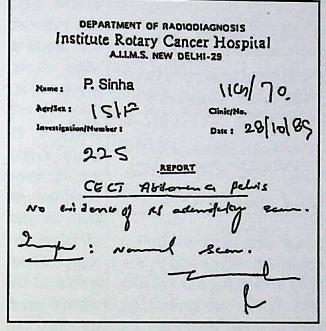
(सन्दर्भ-२५)

होगा। हम आपके अनुसन्धान के प्रति अविचल अभिरुचि के लिए हृदय से आभारी हैं।"

एक वर्ष बाद बोन मैरो की जाँच हुई और बोन बायाप्सी हुई, उसकी रिपोर्ट ने और अधिक आश्वस्त किया कि बच्ची खतरों से अलग और स्वस्थ जिन्दगी के समीप आती जा रही है। *(सन्दर्भ- २३ और सन्दर्भ-२४)*

अब बात दिनों का जुगाड़ करने की नहीं, बल्कि वर्षों के बीतने की आ गयी। एक वर्ष और बीतने चला। 'एम्स' की ओर से मेन्टिनैन्स की आवश्यकता तो पहले से ही घट गयी थी, अब दौड़-दौड़ कर जाँच कराते रहने की भी जरूरत नहीं रह गयी थी।

२८.१०.८६ की जाँच-रिपोर्ट ने एक निश्चिन्तता प्रदान कर दी। *(सन्दर्भ-२५)*

अक्टूबर ८६ से अंग्रेजी दवाएँ एकबारगी बन्द कर दी गयीं।(कुमारी पी. सिन्हा के पिता का पत्र दिनांक ३०.७.६०)।*(सन्दर्भ-२६)*

आदरणीय त्रिवेदी जी
30.7.90
अक्टूबर 89 से अंग्रेजी दवा सारा बन्द है। May 90 के आखरी महीने में बोन मैरो हुआ था, बोन मैरो और बोन-बाइआप्सी दोनों का रीपोर्ट ठीक था। ... पहले से काफी कम है

(सन्दर्भ-२६)

दिनांक २०.५.६२ को पुनः बोन मैरो जाँच और बोन बायाप्सी की गयी और रिपोर्ट एकदम सामान्य आया। अब चिकित्सकों ने छह-छह महीने बाद जाँच करने का निर्णय लिया।(बच्ची के पिता के पत्र दिनांक ३.६.६२ का अंश)।*(सन्दर्भ-२७)*

वर्ष १६६२ की नववर्ष-बधाई का उत्तर देते हुए कुमारी सिन्हा के पिता ने दिनांक ८.२.६२ को दवा के पूरी तरह बन्द हो जाने की सूचना दी। *(सन्दर्भ-२८)*

मई १६६२ में 'एम्स' के चिकित्सकों ने एक बार पुनः बोन मैरो जाँच की और बोन बायाप्सी करके देखा कि रोग का कोई अंश रह तो नहीं गया है। दोनो रिपोर्ट्स एकदम

No.

Dated 3-6-1992

मुन्डम

ठीक है। 89 के अक्टूबर से दवाई बन्द है। 22 मई 1992 को बोन मेरो और बोन बायप्सी हुई दोनो Report Normal है। 27 मई को Blood Test हुआ HB 11 point, W.B.C. 4600, प्लेटलेट्स 2080000 था यह भी रिपोर्ट ठीक है। staff ने 6 महीने पर Blood Test करा कर दिखाने की राय दिया है।

आपकी दवा तथा दुआ का प्रभाव का परिणाम अच्छा रहा। यदि आप यह अनुभव करते हैं कि अन्य कोई दवाई दी जानी चाहिये तो लिखेंगे और वोह दवाई भेजेगें।

आपका शुभचिन्तक

(सन्दर्भ-२७)

सामान्य आईं। उधर बच्ची अपनी स्वस्थ दिनचर्या को बेफिक्र जी रही थी। *(सन्दर्भ-२६)*

विशेष : इस प्रकार हासिल हुआ था 'एक्यूट ल्यूकेमिया' पर विजय का पहला ऐतिहासिक और अभूतपूर्व परिणाम। चुनौती थी कि जीवन के पक्ष में दस दिनो का जुगाड़ कैसे बिठाया जाय। दस महीने बाद बच्ची को स्वस्थ देखकर सी. सी. आर.ए.एस. के निदेशक महोदय अतीव चकित और प्रसन्न हो उठ थे और अब १६६७ में, जबकि दस वर्ष बीत चुके हैं, युवती हो चुकी पी. कुमारी स्वस्थ लोगों की धारा से कत्तई अलग नहीं है। वह 'एक्यूट ल्यूकेमिया' से उतनी ही मुक्त है, जितनी वे लोग, जिन्हें कभी यह रोग हुआ ही नहीं। उसके साथ रोग के इतिहास की चर्चा तो की जा सकती है, उसके अवशेष की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जरूरत है कि समाज और वैज्ञानिक

आदरणीय त्रिवेदी जी,
नमस्ते।

दिनांक
Dated 08/02/1992

नये वर्ष पर हम सभी का शुभ कामना स्वीकार करें।

दवा अक्टूबर- 89 से पूर्ण रूप से बन्द है और किसी प्रकार का दवा नहीं दिया जा रहा है। इस प्रकार दो साल चार महीने हो रहे हैं।---- पूर्ण रूप से स्वस्थ है और किसी किस्म की परेशानी या तकलीफ उसे नही है अपनी पढ़ाई कर रही है और इस वर्ष मार्च मे वह बारहवीं की बोर्ड परीक्षा देगी।

आपने बीमारी के समय जो लगभग दो साल तक दवा भेजी जिससे काफी फायदा हुवा। हम सभी इसके लिए आपके शुक्रगुजार है। आशा है कि भविष्य मे हम दोनो का स्नेह इसी प्रकार बना रहेगा। आप कभी दिल्ली आने का कष्ट करें।

आशा है कि पत्र का जवाब शीघ्र देंगे।

प्रो. एस-एन. त्रिवेदी

आपका,

(सन्दर्भ-२८)

DEPARTMENT OF PATHOLOGY
ALL-INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
NEW DELHI-110 029, TEL: 661123/237 GRAM: MEDINST

NAME OF THE PATIENT P. Sinha					HISTOPATHOLOGY REPORT
HOSP REGN.NO. SH 810410	AGE 15	SEX F	CLINICAL UNIT LRCR 070	WARD/OPD	NATURE OF MATERIAL SENT
PATH. ACC. NO. 92-8071		RECEIVED ON 12.5.92	LESIONAL INDEX/CODE		

REPORT

Bone biopsy Shows normocellular marrow with all haemopoietic elements. No lymphoma deposit is seen.

20.5.92

RP
for M. Vijayaraghavan

(सन्दर्भ-२६)

अपने परम्परागत चिन्तन का कोण बदलकर, इस परिणाम से प्रेरित होकर सोचना शुरू करें। परिणाम के सहीअध्ययन और उसकी सहज स्वीकृति से ही तो पराजित भाव से सोचने की परिपाटी की दीवारें टूटेंगी।

कितना कठिन है यह स्वीकार करना कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' भी दूर हो जाता है और आदमी को जीवित-स्वस्थ छोड़कर अदृश्य हो जाता है।

'एक्यूट ल्यूकेमिया' से रोगी के बच निकलने के सत्य को कबूल करना आम आदमी के लिए ही नहीं, सुयोग्य चिकित्सा वैज्ञानिकों के लिए भी कितना कठिन है, यह परिणाम एक उदाहरण प्रस्तुत कर देता है। चिन्तन के रोम-रोम में यह सपाट बात जम गयी है कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' है, तो रोगी को बचाया नहीं जा सकता, अगर रोगी बच गया, तो निश्चित ही 'एक्यूट ल्यूकेमिया' नहीं है।

उक्त कुमारी बच गयी, तो 'एम्स' के सुयोग्य चिकित्सकों ने भी उसी परिपाटी को पकड़ा। उन्होंने कुमारी के पिता को बताया कि वस्तुतः रोग की पहचान में ही कोई गलती

नई दिल्ली,
No. Dated 5/5/93 19
प्रिय अशोक जी, नमस्ते।
- - - - - - - - - - - - - चिन्ता
में रोग का सही पता न लगने से हम सभी परेशान थे। डा० ने अपनी गलती पर महसूस किया। - - - - - -
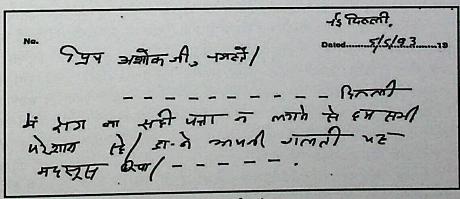
(सन्दर्भ-३०)

हो गयी है (यह विचार करना आपके विवेक पर है कि आखिर सैकड़ों बार आधुनिकतम जाँच उपकरणों ने गलत रिपोर्ट कैसे उगली और सैकड़ों बार केमिस्ट्री के अध्ययन ने भूलें कैसे कीं)। उक्त बच्ची के पिता का पत्र दिनांक ५.५.६३, जो डी. एस. रिसर्च सेन्टर के सहायक वैज्ञानिक श्री अशोक कुमार को सम्बोधित था, एक ज्वलन्त साक्षी है।*(सन्दर्भ-३०)*

प्रश्न है कि इन वैज्ञानिकों ने अपनी जाँच और मेन्टिनैन्स की चेष्टा की छाया में यह सीधी बात क्यों नहीं स्वीकार की कि 'एक्यूट ल्यूकेमिया' भी ठीक हो सकता है। क्या इस तलाश और स्वीकृति के साथ ही पीड़ित-आतंकित मानवता को एक जीवन्त आश्वासन नहीं मिल गया होता और विज्ञान के एक वरदायी पौधे को चिकित्सा-अभियान के विशाल उद्यान में थोड़ी सी जगह नहीं मिल गयी होती ?

प्रो. त्रिवेदी की विनम्र प्रतिक्रिया : "सी. सी. आर. ए. एस. के निदेशक महोदय ने मुझे लिखा था कि मुझे भारत सरकार के किसी मंत्री की सिफारिश और आशीष जुटाकर आगे बढ़ना चाहिए। डी. एस. रिसर्च सेण्टर एक नन्हा पारिवारिक संस्थान है और इन गिने-चुने लोगों को ही अनुसंधान के विस्तृत क्षेत्र में अपने को व्यस्त रखना पड़ता है। मुझे विश्वास है कि वह समय अवश्य आएगा जब ओहदे आँखें खोलकर आशीर्वाद देना शुरू करेंगे और गुणवत्ता को स्वीकार करेंगे।" ❑

रिजल्ट तो 'जीरो परसेण्ट' ही आना है

पश्चिम बंगाल के एक गाँव में प्रति मंगलवार रोगियों की बड़ी भीड़ लगती थी। कैन्सर के मरीज भी जुटते थे। कोई अस्पताली व्यवस्था नहीं थी। गाँव के कुछ लोग एक छोटे बच्चे के हाथ से रोगियों को कोई हरी घास बँटवाते थे। प्रति रोगी से मात्र एक रुपया लिया जाता था। रोगियों के लाभान्वित होने की चर्चा थी।

कलकत्ता के कुछ चिकित्सकों के बीच इस अन्धविश्वास को लेकर चर्चा हो रही थी। प्रायः सभी चिकित्सक आज के वैज्ञानिक युग में चलती इस अवैज्ञानिक मूढ़ता पर तरस खा रहे थे। खास चिन्ता कैन्सर-रोगियों को लेकर थी।

एक चिकित्सक ने व्यंग्यात्मक लहजे में कहा "मान लो, वहाँ जाने वाले सभी कैन्सर-रोगी मर जाते हैं, तो रिजल्ट क्या आएगा ? 'जीरो परसेण्ट' ही न ! आज तक तो सभी कैन्सर अस्पताल भी 'जीरो परसेण्ट' परिणाम ही देते आये हैं। एक रुपया प्रति सप्ताह लेकर वह बच्चा संसार के नामी-गिरामी कैन्सर-अस्पतालों के बराबर का रिजल्ट 'जीरो परसेण्ट' तो दे ही रहा है ! अन्तर तो केवल मृत्यु के दर्जे का होगा। अस्पताली चिकित्सा वाली मृत्यु वैज्ञानिक कही जायेगी, उस घास का सेवन करके मरना अवैज्ञानिक होगा।"

वहाँ भीड़ लगाते गरीब कैन्सर-रोगियों से ही पूछा जाना चाहिए कि वे अवैज्ञानिक मृत्यु क्यों स्वीकार करते हैं।

५

'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के लिए कैन्सर के केस तो संयोग से ही मिलते रहे। पहले 'एक्यूट ल्यूकेमिया' पर परीक्षण का साहस नहीं जुटता था। जब अस्पतालों की ओर से मेन्टिनैन्स का सहयोग कायम रह जाने की व्यावहारिक संभावना बन गयी, तो औषधि परीक्षणार्थ दी जाने लगी।

१९८७ के द्वितीयार्द्ध में ही तीन केस आ जुड़े। कुमारी पूनम सिन्हा और मा. गौरव अवस्थी की पंक्ति में ही श्रीमती इन्दु गुप्ता का केस भी शामिल हो गया। संयोग कि तीनों की मेंटिनैन्स थेरापी ए. आई. आई. एम. एस, नयी दिल्ली में ही चलती थी।समय ने तय किया कि तीनों ही एक्यूट ल्यूकेमिया से मुक्त होकर स्वस्थ जीवन-धारा में शामिल हो गये।

एक्यूट ल्यूकेमिया (AML)

श्रीमती इन्दु गुप्ता, २७ वर्ष
बसन्त कुन्ज
दिल्ली-६

रोग का इतिहास : १९८३ में प्रसव के समय श्रीमती गुप्ता को रक्त का स्राव अधिक हुआ। रक्ताल्पता के समस्त लक्षण उत्पन्न हो गये। जाँच हुई, दवाएँ चलती रहीं। दो वर्ष बाद डेढ़ महीने के लिए जयपुर के अस्पताल में भर्ती होना पड़ा। रक्ताल्पता के साथ ही पीलिया भी हो गया। चिकित्सा का कोई प्रभाव नहीं देखकर ए. आई. आई. एम. एस. में नये सिरे से व्यापक जाँच होने पर एक्यूट ल्यूकेमिया की जानकारी हुई। बुखार नहीं टूट रहा था, हेमोग्लोबिन मात्र ३ ग्राम रह गया था, हालत गम्भीर थी। १९ यूनिट रक्त चढ़ाया गया और किमोथेरापी शुरू की गयी। हालत सुधरी और बोन मैरो रेमिशन में आ गया।

एक्यूट मायलायड ल्यूकेमिया की जानकारी से परिजन और सम्बन्धी लोग बहुत चिन्तित थे। *(सन्दर्भ-३१)*

M.R. 2 Discharge Summary

ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, NEW DELHI-110029

DISCHARGE SUMMARY

C.R. no. 2323 IL 2420 | O.P.D.O. IRCH- 9458. | Date of Admission/Discharge. 21.1.86 27.1.86.

Name INDU GUPTA. | Age 24 yrs. | Sex Female.

History and condition on admission: A known case of AML diagnosed in November'85 in Medicine UNIT I(AIIMS) and was treated by them with daunomycin and cytosar (1-5) following which she had panytopaenia for 74 weeks. Bone marrow BX is not in remission and hence was given here a 2nd course of same regimen 27-12 to 31.12.85 following which bone marrow is in [illegible] bone remission.

Hospital Course Treatment given and Condition on discharge: Patient was admitted for consolidation therapy. At the time of discharge fexxxxpatient condition is good.
She received (1) Dauncmycin 21.1.86- 70 mg
(2) Cytosar 150 mg - for 5 days 21.1.86 - 25.1.86

DIAGNOSIS.

ACUTE MYELOID LEUKEMIA.

(सन्दर्भ-३१)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २६.१०.८७

श्रीमती गुप्ता के पिता श्री रामजी लाल ने अप्रैल १९८८ में लिखा, " अक्टूबर'८७ में आपके रिसर्च के बारे में लेख पढ़ा। आपको १००/- भेजकर वी. पी. से भगवान का नाम लेकर दवा मँगायी। दवा ने आशातीत लाभ दिखाया।.... इस दवा से कोई हानि या परेशानी नहीं पैदा हुई। भूख सामान्य है, नींद आराम से आती है। चुस्ती रहती है, कब्ज नहीं रहती। कोई भी परेशानी नहीं है। मार्च में एच बी १३.६ ग्राम और काउण्ट्स ७४०० था।.....दवा कब तक इस्तेमाल करनी है ?..."

०६.४.८८ को पुनः रक्त-परीक्षा हुई। हकीम रामजी लाल ने लिखा "दवा इस्तेमाल की जा रही है। नॉर्मल वे में हालात हैं। केवल फैटनेस महसूस होती है। कोई विशेष हालात नहीं है। सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा है।........दि. ६.४.८८ को काउण्ट्स १०,०००, एच बी ११.६ ग्राम था। यह रिकार्ड में आप रख लें।" *(सन्दर्भ-३२)*

11-4-88
दवा इस्तेमाल की जा रही है normal वे में हालात है केवल fatness महसूस होती है कोई विशेष हालात नहीं है सब कुछ ठीक चल रहा है।
दि० 9-4-88 को Counts 10000 H-B- 11-9 था यह रिकार्ड में आप रखलें।
धन्यवाद
भवदीय-
हकीम रामजीलाल
वैद्य
388 [illegible]

(सन्दर्भ-३२)

आदरणीय
अग्रिम राशी 325/- दवा के लिए भेज रहे हैं। तबियत ठीक है। H-b- 12.5 Counts 7000
दवा शीघ्र ही भेजने का कष्ट करें।
इन्दु गुप्ता
19/8.89

(सन्दर्भ-३३)

दिनांक १६.८.८६ को औषधि मँगाने के लिए अग्रिम राशि भेजते समय श्रीमती इन्दु ने मनीआर्डर फार्म की रसीद पर ही लिखा, "तबियत ठीक है। एच बी १२.५, काउण्ट्स ७००० है। "*(सन्दर्भ-३३)*

औषधि चली तब तक की रक्त-परीक्षा की रिपोर्ट्स का चार्ट सन्दर्भ-३४ में देखा जा सकता है। *(सन्दर्भ-३४)*

Smt. Indu Gupta
HB & W.B.C. (T.C.) Reports

Dated	H.B. gm.%	Total W.B.C. Count
19-11-87	10.5	2400
11-4-88	11.9	10,000
1-7-88	13.4	8,000
10-7-88	13.4	8,500
3-8-88	13.6	8,500
8-9-88	13.00	8,000
Jan. 89	11.3	5,800
Feb. 89	12.6	6,800
20.3.89	13.3	6,200
12-4-89	13.6	7,800
1-5-89	12.3	7,800
2-6-89	12.6	6,500
6-8-89	12.5	7,000
5-02-90	12.9	6,800

(सन्दर्भ-३४)

डी. एस. रिसर्च सेण्टर टेलिफोन और पत्राचार द्वारा उन रोगियों से सम्पर्क बनाये रखने, उनके स्वास्थ्य-सम्बन्धी कुशल-क्षेम जानने के लिए यथासंभव प्रयत्नशील रहता है। इसी क्रम में एक पत्र के उत्तर-स्वरूप प्राप्त श्रीमती इन्दु गुप्ता का दि. २७.२.६५ का पत्र उद्धृत है–

".....आपने मेरे स्वास्थ्य-सम्बन्धी जानकारी चाही, जो इस प्रकार है–ब्लड रिपोर्ट दि. २१.२.६४ : एच बी १०.२० ग्राम, डब्लू बी सी ६२००, प्लेटलेट्स ३,२०,०००। वैसे मेरे स्वास्थ्य में सुधार है लेकिन काफी समय से मेरा वजन काफी बढ़ गया है। तो इस दवाई के साथ क्या कोई दवाई है, जो कि मेरे वजन को कम करे। डाक्टर कहते हैं कि सब कुछ नार्मल है।"*(सन्दर्भ-३५)*

27.02.95
आदरणीय डा. साहब! नमस्कार!
आपका पत्र मिला आपने मेरे स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी चाही जो इस प्रकार है।
Blood Report HB — 10.20 gm.%
21/2/94 W.B.C — 6200 /cmm
Platelets — 3,20,000
वैसे मेरे स्वास्थ्य में सुधार है लेकिन मेरे को काफी समय से वजन काफी बढ़ गया है। तो इस दवाई के साथ क्या कोई दवाई है जो कि मेरे वजन को कम करे। क्योंकि डाक्टर कहते हैं कि सब कुछ नार्मल है।
भवदीया,
इन्दु गुप्ता।

(सन्दर्भ-३५)

६

रक्त कैन्सर क्रानिक
(क्रानिक मायलायड ल्यूकेमिया)
(C.M.L.)

श्रीमती राजमती देवी, ३० वर्ष
धर्मपत्नी- श्री विनोद कुमार यादव
ग्राम - देवसिया, पो. भागलपुर
जिला - देवरिया, उ.प्र.

पूर्व चिकित्सा- चितरंजन कैन्सर अस्पताल ,कलकत्ता।

रोग का इतिहास- १९८३ में पेट में दर्द रहने लगा, स्वास्थ्य में दिनो-दिन तेजी से गिरावट आने लगी और यदा-कदा बुखार आने लगा। बढ़ती हुई कमजोरी से चिन्तित होकर परिजनों ने देवरिया के कुशल चिकित्सक डॉ. जी. एन. गुप्ता को दिखाया। रक्त की परीक्षा से पता चला कि रोगिणी को रक्त-कैन्सर है। डॉ. गुप्ता ने कहा कि इन्हें चिकित्सा के लिए कलकत्ता अथवा बम्बई ले जाना उचित रहेगा।

विनोद यादव उन्हें कलकत्ता ले गये। चित्तरंजन कैन्सर अस्पताल में इलाज शुरु हुआ। आम तौर पर क्रानिक ल्यूकेमिया अचानक बहुत उग्र नहीं हो जाता। किन्तु राजमती के साथ बात विचित्र थी।

PATHOLOGY CLINIC

Dr. H. C. ARORA PATHOLOGIST	Clinic GORAKHPUR ROAD	Phone Clinic Resi.

Collected on 17.02.84

Report on TLC DLC Hb MP

of Smt. Rajawati Devi F. 30 yrs.

Ref. by Dr. G.N. GUPTA M.D.

HAEMATOLOGY

Haemoglobin(HICN method)	: 07.23 Gm%
Total Leukocyte Count	: 4,61,250/c.mm
Differential Leukocyte Count	
Neutrophils	: 52%
Metamyelocytes	: 07%
Myelocytes	: 26%
Promyelocytes	: 06%
Myeloblasts	: 01%
Eosinophils	: 04%
Basophils	: 04%
Lymphocytes	: Less than 1%
M.P.(Haemoparasite)	: NEGATIVE

INFERENCE : Picture is suggestive of Chronic Myeloid Leukaemia.

H. C. ARORA
Pathologist
17.2.84

(सन्दर्भ-३६)

औषधियाँ जैसे काम ही नहीं कर रही हों। १७.२.८४ को रक्त-जाँच की रिपोर्ट आयी,

तो चिकित्सकों ने औषधि बन्द कर दी। अब रोगिणी दवा बर्दाश्त कर पाने की हालत में भी नहीं थी। तिल्ली ने बढ़कर पूरा पेट ही जैसे छेंक लिया था। (डॉ. एच. सी. अरोरा पेथोलाजी क्लीनिक, देवरिया की १७.२.८४ की जाँच रिपोर्ट)। *(सन्दर्भ-३६)*

अस्पताल ने हाथ खड़े कर दिये तो दुनिया छूटने में सन्देह ही क्या था ! श्री यादव अपनी पत्नी को लेकर दुखी मन अस्पताल के गेट पर बैठे थे। दरवान जयनाथ, जो सिवान जिले का रहने वाला था, अपने क्षेत्र के लोगों के दुःख दर्द में मदद और सहानुभूति के लिये सदैव तैयार रहता था। उसने श्री यादव को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में बताया। उसने बताया कि वह प्रो. त्रिवेदी से परिचित है और 'सर्वपिष्टी' के प्रभाव के विषय में भी कुछ जानता है। 'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के शुरुआती दौर में प्रो. त्रिवेदी ऐसे रोगियों के विषय में पता लगाने चित्तरंजन अस्पताल आया करते थे, जिन्हें चिकित्सा की ओर से छोड़ दिया जाता था। उन्हीं दिनों जयनाथ से उनका परिचय हुआ था।

जयनाथ श्री यादव और राजमती को लेकर डी. एस. रिसर्च सेण्टर गये। औषधि प्रारम्भ हुई। दो सप्ताह के भीतर ही सबसे बड़ा लाभ यह दिखायी पड़ा कि तिल्ली सिमटकर छोटी हो गयी। रोगिणी हल्का-फुल्का खाने और थोड़ा बहुत चलने-फिरने लगी। रक्त-जाँच रिपोर्ट देखकर चितरंजन कैन्सर अस्पताल के चिकित्सकों ने बड़ी प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा,'' अब केवल जीवन का खतरा ही नहीं चला गया है, बल्कि रोगिणी प्रायः रोग-मुक्त है।'' श्री यादव बड़े प्रसन्न थे।

LOYAL PATHOLOGICAL LABORATORIES
ST. LENIN SARANI (1st Floor)
CALCUTTA-700 013

REPORT ON EXAMINATION OF BLOOD

NAME OF THE PATIENT: Mrs Rajmuti Debi
REFERRED BY DR: R K Mishra MD DT(RH (CAL) FICA (USA)

HAEMOGLOBIN VALUE
SAHLI HELLING METHOD: 9 GM 62 % of Normal (14.5 GM %)

TOTAL COUNT
R. B. C. 3·27 million PER CMM
W. B. C. 8,450 PER CMM
PLATELETS PER CMM

BLEEDING TIME
Duke's Method 2 MIN. 35 Sec

COAGULATION TIME
Capillary Tube Method 3 MIN 27 Sec

DIFFERENTIAL COUNT
Polymorphonuclear
Neutrophils 78 %
Eosinophils 6 %
Basophils 0 %
Lymphocytes 14 %
Monocytes 0 %
Abnormal Cells nil
PARASITES none found

E. S. R. (Westergreen Method)
1ST HOUR READING 25 MM
2ND HOUR READING 50 MM
MEAN E. S. R. 25 MM PER HOUR

PATHOLOGIST

DATE 10 9 84

(सन्दर्भ-३७)

१०.६.८४ की रिपोर्ट देखकर चिकित्सकों ने कहा कि अब रोग समाप्त हो चुका है। लाल रक्तकण कुछ कम हैं। लीवर और तिल्ली के पूर्ण स्वस्थ होते ही इसमें भी अच्छी प्रगति हो जायेगी। ऐसा ही हुआ भी। हेमोग्लोबिन १०.७ हुआ, फिर १२ ग्राम होता हुआ नॉर्मल आ गया (लॉयल पेथोलोजिकल लेबोरेट्रीज, कलकत्ता की दि १०.६.८४ की रिपोर्ट)। *(सन्दर्भ-३७)*

मृत्यु के द्वार से वापस आई पत्नी के पूर्ण कैन्सर-मुक्त हो जाने पर कृतज्ञ श्री विनोद कुमार यादव ने १२.११.८५ को केन्द्र को एक लम्बा पत्र लिखा, जिसके कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं-

अब श्रीमती राजमती देवी को रोगी नहीं कहा जा सकता। इधर एक वर्ष से उनके स्वास्थ्य की न तो परीक्षा कराई गई, न इसकी जरूरत मालूम हुई। उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है, किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं है, और अन्य औरतों की तरह, वे भी घर-परिवार का काम-काज देखती-करती हैं।
इस बीच 'सर्वपिष्टी' की खुराकें लम्बे अन्तराल से दी जाती रही हैं। विनोद कुमार यादव
१८/११/८६

(सन्दर्भ-३८)

''चितरंजन कैन्सर अस्पताल में पत्नी को रक्त-कैन्सर बताया गया और यह भी बताया गया कि हालत बहुत संगीन है। ...मेरे गाँव व इलाके के कई लोग कैन्सर से मर चुके थे। उन्हें दूर-दूर तक चिकित्सा के लिये ले जाया गया था। लोग कहते हैं कि कैन्सर का इलाज धरती पर नहीं है। ..... पाँच महीने इलाज चला, किसी प्रकार का सुधार नहीं हुआ। डाक्टरों ने मुझे बताया कि रोगिणी किसी भी समय मर सकती है।

"अस्पताल के एक कर्मचारी ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में बताया....प्रो. त्रिवेदी ने 'सर्वपिष्टी' देना शुरू किया। ....पत्नी की दशा में परिवर्तन होने लगा। जीवन के चिन्ह दिखने लगे। ....मात्र ४ महीने दवा करने के बाद रोगिणी को चितरंजन कैन्सर अस्पताल ले गया। रक्त की जाँच देख कर डाक्टरों ने बेहद प्रसन्नता जाहिर की और कहा कि रोगिणी हर प्रकार से स्वस्थ है, उसका कैन्सर समाप्त हो चुका है। ....मेरी प्रसन्नता की सीमा नहीं रही कि मेरी पत्नी अब कैन्सर मुक्त है।.... मेरे गाँव व इलाके के लोग इस घटना से आश्चर्य चकित हैं।''

मेरी पत्नि श्रीमती राजवती देवी वर्तमान समय में पूर्णतः स्वस्थ हैं। स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए घर का सभी काम भी करती हैं। उन्हें वर्तमान में कोई परेशानी नहीं है। विनोद कुमार यादव
६/१०/८६

(सन्दर्भ-३९)

पाँच महीने तक निरन्तर रिपोर्ट सामान्य आने पर दवा की खूराकें बढ़ते अन्तराल के साथ दी जाने लगीं।

श्री विनोद कुमार यादव अपनी पत्नी के स्वास्थ्य के विषय में नियमित रूप से रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखते रहे। इनके पत्र 'सर्वपिष्टी' के प्रभाव को समय-क्रम से अंकित करने वाले हैं। श्रीमती राजमती की दवा बन्द कर दी गयी, तब भी इन्होंने केन्द्र से सम्बन्ध बनाये रखा। उनके दो पत्र उद्धृत हैं।

पत्र दि. १६.११.८६ *(सन्दर्भ-३८)*

"पिछले वर्ष मैंने रोगी के स्वास्थ्य के विपय में विस्तृत विवरण दिया था। अब श्रीमती राजमती देवी को रोगी नहीं कहा जा सकता। इधर एक वर्ष से उनके स्वास्थ्य की न तो परीक्षा की गयी, न इसकी जरूरत मालूम हुई। उनका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है, किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं है। अन्य औरतों की तरह वे भी घर-परिवार का काम-काज देखती-करती हैं। इस बीच 'सर्वपिष्टी' की खूराकें लम्बे अन्तराल से दी जाती रही हैं।"

पत्र दि. ६.१०.८७ *(सन्दर्भ-३९)*

"मेरी पत्नी श्रीमती राजमती देवी वर्तमान समय में पूर्णतः स्वस्थ हैं। स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए घर का सभी कार्य भी करती हैं। उन्हें वर्तमान में कोई परेशानी नहीं है।"

दि. २६.८.८८ का पत्रांश *(सन्दर्भ-४०)*

"मेरी धर्मपत्नी श्रीमती राजमती देवी ब्लड-कैन्सर की रोगी थीं तथा डी. एस. रिसर्च सेण्टर के इलाज से पूर्णतः स्वस्थ हो गयी थीं। उनका २ फरवरी, १९८८ को डिसेन्ट्री व लकवा से ग्रस्त होने के बाद स्वर्गवास हो गया। अन्तिम दिनों तक उन्हें ब्लड-कैन्सर की शिकायत नहीं थी।"

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती राजमती देवी ब्लड कैन्सर की रोगी थी तथा डी. एस. रिसर्च सेन्टर के इलाज से पूर्णतः स्वस्थ हो गयी थी। उनका २-फरवरी १९८८ को डीसेन्ट्री व लकवा से ग्रस्त होकर स्वर्गवास हो गया। अन्तिम दिनों तक उन्हें ब्लड कैन्सर की शिकायत नहीं थी।

विनोद कुमार यादव
26/8/88

(सन्दर्भ-४०)

श्रीमती राजमती तो नहीं रहीं, किन्तु श्री विनोद यादव आज भी केन्द्र से आत्मीय सम्बन्ध बनाये हुए हैं। ☐

लीवर कैन्सर

पैनी निगाहें गुजारिये इन दस्तावेजों पर से, जो गाल ब्लैडर और लीवर कैन्सर के मामलों पर 'सर्वपिष्टी' के प्रभावों की बात करते हैं। आपका सहयोग चाहिए, एक स्पष्ट निर्णय तक पहुँचने में। मूल्यांकन करिये कि क्या इस मोर्चे पर भी आपकी 'सर्वपिष्टी' द्वारा सकारात्मक उपलब्धि हुई है। इन परीक्षण-परिणामों का सर्वेक्षण आपके चिन्तन को जहाँ पहुँचाता है, वहीं खड़े होकर मेल बिठाइये कि अबतक की चिकित्सा के धरातल से आपका चिकित्सकीय पुरुषार्थ कुछ बढ़ा है, आपको कुछ सकारात्मक हासिल हुआ है, अथवा नहीं। इस क्षेत्र में चिकित्सकीय धारणाएँ, वैज्ञानिक अनुभवों के आधार पर बेलाग रूप से स्थापित हैं। वे निर्णय लेने में आपकी मदद करेंगी।

स्थापित धारणा है, '' अगर कैन्सर गाल ब्लैडर अथवा/और लीवर को जकड़ ले, तो रोगी की उम्र के विषय में वर्षों की बात नहीं की जा सकती। बात दिनों में करना ही समीचीन रहेगा, अगर दिन जुड़ते-जुड़ते महीनों में उतरते जायँ, तो बहुत गनीमत है।'' ऐसे में अगर लीवर अथवा गाल ब्लैडर का कैन्सर लिए हुए कोई वर्ष-पर-वर्ष निकाल ले, तो वह पूरे वैज्ञानिक चिन्तन का ध्यान निमंत्रित करता है।

ऐसे रोगी का स्वास्थ्य रोज नये-नये उपद्रवों और उलझावों में फँसता जाता है। कोई भी उपद्रव शान्त नहीं होता और समस्याएँ क्रमशः जुड़ती और उग्र होती जाती हैं। चिकित्सा के कई उपाय तो उतारे ही नहीं जा सकते, रास्ता खतरनाक हो जाता है। रोग अगर बढ़कर एक सीमा को छू दे, तो कैन्सर-अस्पताल कोई सार्थक सेवा दे पाने में असमर्थता जाहिर करके परिजनों को परिणाम का संकेत देते हुए और रोगी को वापस घर ले जाने की सलाह दे देते हैं। यह उनकी निष्ठुरता नहीं, बल्कि विवशता है।

भारत में पहले लीवर कैन्सर के रोगियों की प्रतिशत संख्या कम थी। आज तो जैसे कैन्सर ने लीवर और गाल ब्लैडर को पकड़ने की ठान रखी है। उत्तर भारत में तो ऐसे रोगियों की प्रतिशत संख्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है। किन्तु फिलहाल हम इनके कारणों की समीक्षा नहीं कर रहे हैं। आपको तो इन परिणामों की समीक्षा करके कुछ तय करना है। तय करना है कि क्या ये परिणाम हमें कोई सकारात्मक प्रोत्साहन दे रहे हैं। देखना है कि हम धारणाओं की उन्हीं पुरानी स्थापनाओं में जकड़े रह गये हैं, अथवा इस प्रकार के कैन्सर के इलाज की दिशा में भी इन्सान की हैसियत कुछ बढ़ी है। अगर लगे कि लीवर कैन्सर की अन्धी चट्टानों को तोड़ने में पोषक ऊर्जा की ये छेनियाँ कुछ कारगर आक्रमण कर रही हैं, तो फिर एक दिशा मिल जाएगी और आश्वासन मिल जायेगा कि समवेत आन्दोलन द्वारा इस मोर्चे को भी अपने पक्ष में किया जा सकता है।

एक नैतिक मानवीय दबाव ने हमें परीक्षण में उतारा

'सर्वपिष्टी' का परीक्षण चला, तो हमारी दिलचस्पी गाल ब्लैडर और लीवर के मामलों में परीक्षण का साहस उसी प्रकार नहीं जुटा पाती थी, जैसे एक्यूट ल्यूकेमिया

के मामलों में। लीवर शारीरिक जीवन की जड़ है, और जब जड़ें और मूल ही चरमराकर उखड़-बिखर रही हों, तो किसी नवाविष्कृत औषधि के परीक्षण का जोखिम कैसे उठाया जा सकता है। हमारे पास ऐसे मामलों के पास फटकने की भी कोई योजना अथवा कल्पना नहीं थी।

किन्तु कई बार नैतिक और मानवीय दबाव निरुत्तर बनाकर अनोखे निर्णय करा देते हैं। बहुतों के साथ ऐसा हुआ होगा, हमारे साथ भी हुआ। किसी रोगी का परिजन आपके पास आकर कहे, ''अस्पताल हाथ खड़े कर दे और चिकित्सक भी, यह स्वीकार कर लिया जाय कि भविष्य बहुत भयंकर है, तो भी एक पहलू विचार के लिए शेष रह जाता है। बात महीनों, दिनों अथवा घण्टों की भी हो, स्वज़नों की मनःस्थिति पर तो विचार करना होगा। वे अपने आत्मीय को बिना किसी उपचार के घर में कैसे रख सकते हैं ? ऐसे क्रूर क्षणों से समझौता करके मौन बने रहना, कितना यातनादायक होगा, आप कल्पना तो करें। फिर आपकी खूराकें ड्रगों और विषों से तो बनी नहीं है, जिनका प्रतिकूल प्रभाव सुनिश्चित होता है। जीवनी-शक्ति बढ़ानेवाली निरापद पोषक ऊर्जा की खूराकें देने में क्या बाधा है ? ये कुछ नुकसान तो कर नहीं सकतीं। परिणाम जो भी हो, परिजन-स्वजन उसके लिए तैयार हैं। किन्तु ये खूराकें रोगी के निकट खड़े रहने का आधार तो देंगी। उन्हें यह तो लगेगा कि वे अपने प्रियजन के लिए कुछ कर रहे हैं। आप यही सोचकर हमें 'सर्वपिष्टी' दें।'' यह आग्रह था माहेश्वरी जी का, जो भरथना (इटावा) में रहनेवाली अपनी वृद्धा रिश्तेदार श्रीमती अन्नपूर्णा माहेश्वरी के लिए दवा प्राप्त करने के लिए भदोही से आए थे। श्रीमती माहेश्वरी को लीवर का कैन्सर था।

किन्तु इस नैतिक और मानवीय दबाव ने ऐसा सुन्दर परिणाम दिया, जैसे परिणाम की न तो हमें कोई अपेक्षा थी, न माहेश्वरी जी को आशा थी। श्रीमती माहेश्वरी स्वास्थ्य के मोर्चे पर सँभलने लगीं, कष्टों की तीव्रता में भी गिरावट आने लगी, आयुष्य बढ़ने लगा, और अब तो वे लीवर कैन्सर से मुक्त होकर कई वर्षों से स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही हैं। हम अपने हल्के क्षणों में चर्चाओं के दौरान दो-चार बार इस व्यंग्य का रस ले चुके हैं कि कहीं ये परिणाम 'सर्वपिष्टी' के न होकर माहेश्वरी जी की प्रेरणा के तो नहीं हैं। उनकी प्रेरणा से आया हुआ ब्रेन ट्यूमर (कैन्सर) का मामला भी कैन्सर-मुक्ति तक पहुँच गया है।

हमारी भी झिझक की बेड़ियाँ टूटीं। निराशाजनक स्थिति में आनेवालों के लिए भी परीक्षण का द्वार खोल दिया गया। आज हमारी स्मृति और रिकार्ड में वे सभी मामले हैं—वे, जो लीवर और/अथवा गाल ब्लैडर के कैन्सर से मुक्त हो गए, वे जिन्होंने राहत और स्वास्थ्य का अनुभव किया, वे जिन्हें स्पष्ट रूप से आयुष्य का अनुदान मिला, वे, जो पोषक ऊर्जा की रस्सी पकड़ कर धीरे-धीरे कैन्सर से तो बाहर आ रहे थे, किन्तु किसी छली उपद्रव ने उनके हाथों को झटक दिया, और वे भी जो बोलकर चले गये, ''काश, यह पोषक ऊर्जा कुछ पहले हाथ आयी होती।''

अब आप आगे आएँ, मूल्यांकन के लिए। ☐

७

लीवर का कैन्सर
(CA. LIVER)

श्रीमती अन्नपूर्णा माहेश्वरी, ६८ वर्ष
द्वारा : मेसर्स बालमुकुन्द भगवान दास
मोतीगंज, भरथना
जिला-इटावा (उ० प्र०)

SINGHAL ULTRASOUND & X-RAY CENTRE
Mamta Apartments, Khairabad Eye Hospital Lane, KANPUR-208002
Date. 24.2.93

Patient's Name : Annpurna   Sex F
Referring Dr. : DR. V. S. RAJPUT M.S.

SONOGRAPHY REPORT

SONOGRAPHIC FINDINGS ARE DUE TO CHOLELITHIASIS WITH MALIGNANCY GALL BLADDER WITH SECONDARIES LIVER.

Dr. Sunil K. Singhal

(सन्दर्भ-४१)

जाँच :

(१) सिंहल अल्ट्रा साउण्ड एण्ड एक्स-रे सेण्टर, ममता अपार्टमेण्ट्स, खैराबाद, आई हॉस्पीटल लेन, कानपुर, दिनांक २४.२.९३। (सोनोग्राफी) मेलिग्नैंसी गाल ब्लैडर विद सेकण्डरीज लीवर। *(सन्दर्भ-४१)*

(२) वही जाँच केन्द्र, सोनोग्राफी, दिनांक २४.२.९३, मेलिग्नैंसी गालब्लैडर विद सेकण्डरीज लीवर।

(३) मेडिकल एण्ड डायग्नोस्टिक्स प्रा. लिमिटेड, कानपुर, सी. टी. स्कैन, दिनांक २६.२.९३।

राइट लोब ऑफ लीवर मास गाल ब्लैडर फोसा। *(सन्दर्भ-४२)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ ४.३.९३

'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के इतिहास में श्रीमती अन्नपूर्णा माहेश्वरी का स्थान बहुत ऊँचा है। परिस्थितियों ने विवश किया और इनके लिए औषधि दे दी गयी। इसके पहले रिसर्च सेण्टर लीवर-कैन्सर के रोगियों पर औषधि का परीक्षण नहीं करता था। करने का विचार भी नहीं था। लीवर का केस बहुत जटिल होता है। दिन-प्रतिदिन स्वास्थ्य तेजी से गिरता है और नये-नये उपद्रव जिन्दगी को घेरने लगते हैं। इसी विन्दु पर श्रीमती माहेश्वरी ने एक द्वार खोला। औषधि का इन पर बहुत अच्छा प्रभाव रहा। इससे उत्साहित होकर केन्द्र ने लीवर-कैन्सर के रोगियों को औषधि देने से मनाही नहीं की।

SURAJ
MEDICAL & DIAGNOSTICS (P) LTD.
117/N/65, KAKADEO, KANPUR 208 005 - PHONE 246768 210179

Date... 26.2.93

Patient's Name..... Mrs. Annapurna ..... Age / Sex... 65 F

Ref. by..... Dr. V.S. Rajpur

REPORT

C.T. SCAN UPPER ABDOMEN WITH ORAL AND I.V. CONTRAST ADMINISTRATION WITH 10mm.SLICES.

LIVER: Liver is enlarged. Liver of moderate degree There is evidence of irregular area of mixed attenuation in the right lobe of liver. Intrahepatic billiary appratus is normal.

GALL BLADDER: G.B. fossa shows evidence of large irregular mass lesion. Portahepatic lymphnodes are also involved.

(सन्दर्भ-४२)

आज उसी घटना का परिणाम है कि दस से अधिक लोग (दिसम्बर ६७ तक) गाल ब्लैडर तथा लीवर के कैन्सर से मुक्त हुए हैं, कई लाभान्वित हो रहे हैं। कइयों ने जीवन की वैसी दीर्घता हासिल की है, जैसी लीवर-कैन्सर ने चिकित्सा को कभी मुहैय्या नहीं कराई।

आएँ उस प्रसंग पर।

जाँचों से जब गाल ब्लैडर और लीवर के कैन्सर की पुष्टि हो गयी, तो सवाल आया चिकित्सा का। लीवर के ऑपरेशन और रेडियेशन का प्रावधान नहीं था और रोगिणी इतनी कमजोर और अवस्था- प्राप्त थीं कि यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह किमोथेरापी झेल सकेंगी। चिकित्सा-सेवा का दरवाजा बन्द था- "घर ले जाइये और सेवा कीजिये"। परिवार के लोग उधेड़-बुन में लगे हुए थे कि कहीं से डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी के विषय में जानकारी मिली। भदोही (तब जिला वाराणसी था) में ही एक रिश्तेदार इंजीनियर थे। उन्हें समाचार दिया गया

Balmukund Bhagwandas
Rice & Dall Mill
Motiganj BHARTHANA (Etawah) 206 242

Dated 7.12.93

आदरणीय श्री त्रिवेदी जी;
सादर अभिवादन,
श्री मती अन्नपूर्णा देवी, अर्चना के Ultra Sound की दो Photo copy भेज रहे हैं।
- स्वास्थ्य सामान्य है।
- कभी - कभी- भोजन से अरुचि।

(सन्दर्भ-४३)

31-3-94
आदरणीय त्रिवेदी जी,
सादर प्रणाम,
श्री मती 'अन्नपूर्णा महेश्वरी भरथना' का पिछले माह 'Ultra Sound' कराया था, जिसकी Report के अनुसार लीवर में काफी सुधार है। परन्तु कभी-२ पैर में हल्का दर्द हो जाता है

(सन्दर्भ-४४)
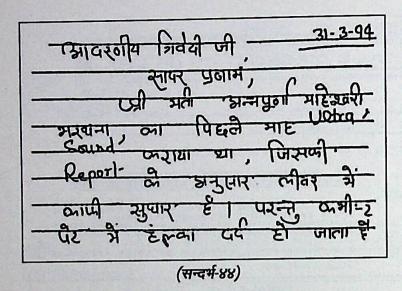
कि वे औषधि प्राप्त करके यथाशीघ्र पहुँचवा दें।

इंजीनियर साहब ४.३.६३ को केन्द्र पर आ गये। केन्द्र ने अपनी सीमाएँ बतायीं। इंजीनियर साहब के साथ एक सज्जन भदोही से आये थे। उन्होंने कहा कि केन्द्र का यह नियम तो एक्यूट ल्यूकेमिया के लिए भी था, किन्तु आपने हमारे प्रिंसिपल साहब के दामाद (अनिल कुमार श्रीवास्तव) को दवा देकर रोग-मुक्त कर दिया। फिर श्रीमती माहेश्वरी बिना दवा के रहें, इससे अच्छा है कि वे पोषक ऊर्जा की खूराकें तो लेती रहें। तय किया कि दवा दे दी जायेगी।

केवल दो सप्ताह के लिये दवा दी गयी। अनुमान किया गया कि यह पहली किस्त भी अन्तिम किस्त हो सकती है। किन्तु अनुमान गलत निकला। दो-दो सप्ताह के लिए दवा तीन बार देने के बाद सुधार को देखते हुए चार सप्ताह के लिए दवा दे दी गयी। श्रीमती माहेश्वरी क्रमशः स्वस्थ, तन्दुरुस्त हो गयीं। पेट-दर्द, गैस बनना, पित्त की उल्टी होना तथा भोजन से अरुचि के लक्षण धीरे-धीरे शान्त हुए।

जब चौबीसवें सप्ताह की दवा दी गयी, तब दवा लेने के लिए आये व्यक्ति ने बताया, ''उनके लिए तो कहा गया था कि एक महीने भी नहीं बचेंगी, आज छह महीने बाद वे हमारे बीच मौजूद हैं। और मौजूद भी चारपाई में पड़े-पड़े कराहते हुए नहीं, बल्कि स्वस्थ और कर्मठ महिला के रूप में। काम में हाथ बटाने लगी हैं, हँसती-बोलती हैं और आवाज में बुलन्दी आ गयी है।''

बार-बार जाँच कराने में परिजनों की कोई रुचि नहीं थी, ''जो देख रहे हैं, उसी से सन्तुष्ट हैं। क्या करेंगे रिपोर्ट का ?'' देखने के लिए जो चिकित्सक आते थे, वे बताते थे कि बहुत अधिक सुधार है। वैसे लीवर केस का सुधार छिपता नहीं है (श्री गोविन्द माहेश्वरी के ७.१२.६३ तथा ३१.३.६४ के पत्र)। *(सन्दर्भ-४३ और सन्दर्भ-४४)*

परिवार के लोग पोषक ऊर्जा की खूराकें देते गये, अस्सी सप्ताह तक। उनके एक रिश्तेदार बनारस में रहते हैं। विनोदी व्यक्ति हैं। उन्होंने एक बार कहा, ''साहब, यमराज का भैंसा हमारे दरवाजे पर आ खड़ा था। हमने उसे वापस घुमाया और भगाना शुरू कर दिया है। उसे बड़ी दूर तक खदेड़कर ही दम लेंगे।''

20.07.94
आदरणीय श्री तिवारी जी
सादर प्रणाम
श्रीमती अन्नपूर्णा माहेश्वरी
मरथरा जि. इटावा (मरीज लीवर कैंसर)
का स्वास्थ्य अब सामान्य है।
कृपया 2 माह की दवाई
देने की कृपा करें। सम्भव हो तो
दवा [illegible] कर देवें।
सधन्यवाद।
भवदीय
गोविन्द माहेश्वरी
20.7.94
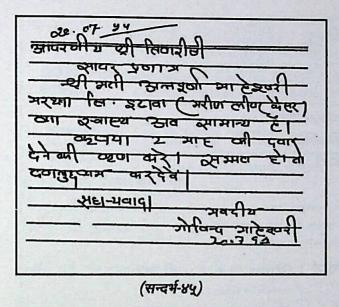
(सन्दर्भ-४५)

अस्सी सप्ताह बाद प्रो. त्रिवेदी ने कहा, " भैंसा तो अब सरहद के पार चला गया। अब तो बस कीजिये।"

आज भी श्रीमती माहेश्वरी बिल्कुल ठीक हैं, खाना-पीना, नींद, स्फूर्ति और शक्ति सब कुछ ठीक है। स्वास्थ्य निखर गया है। १३.२.९६ को फोन आया कि वे पूर्ण स्वस्थ हैं। सितम्बर, ९४ से 'सर्वपिष्टी' भी बन्द है (श्री गोविन्द माहेश्वरी का केन्द्र से अंतिम बार औषधि मँगाते समय २०.७.९४ को लिखा गया संक्षिप्त पत्र)। *(सन्दर्भ-४५)* ❑

गाल ब्लैडर और लीवर का कैन्सर

रोग तो भगवान दूर करता है

पुराने जमाने से ही कुशल चिकित्सक बात को दो फाँटों में बाँटकर रखते आये हैं। वे ड्रगों का स्वभाव भी जानते थे, उनकी पहुँच और क्षमता भी। उनके कक्ष में एक वाक्य टँगा हुआ देखा जाता था, "आई ट्रीट, ही क्योर्स" अर्थात् मैं चिकित्सा करता हूँ; रोग भगवान दूर करता है।" सीधा अर्थ था कि भगवान चिकित्सा करने नहीं आयेगा, वह डॉक्टर का काम है; और रोग डॉक्टर नहीं दूर करेगा, वह भगवान का काम है।

कैन्सर जब अत्यन्त उग्र और बेकाबू हो जाता है, तब चिकित्सक अक्सर रोगी के परिजनों से बोल देते हैं कि अब चिकित्सा के लायक कुछ नहीं है; भगवान करे तभी कुछ होगा।

अगर ऐसा रोगी ठीक हो जाय, तो लोग डॉक्टर के कहने के अनुसार ही सोचने लगते हैं। फिर ऐसे परिणाम का श्रेय सीधे कैपिटल लेटर वाले 'ही' अर्थात् भगवान के नाम ही क्यों न जाए !

८

(कैन्सर गाल ब्लैडर, सेकण्ड्रीज लीवर)

(CA. GALL BLADDER)
METASTASIS LIVER

श्री रामशंकर वर्मा, ५६ वर्ष
अजय ज्वेलर्स, तिलक रोड
भरथना, जि. इटावा।

श्री वर्मा की पहली रिपोर्ट : (दिनांक १३.१०.९५) श्री वर्मा स्वयं डी. एस. रिसर्च सेन्टर, वाराणसी आए थे।

"करीब दो माह पहले अचानक पेट में दर्द उठा, जो अंग्रेजी दवा लेने से बन्द हो गया। दस दिन बाद फिर तीव्र दर्द उठा, जो उसी दवा से ठीक हो गया। तीसरी बार दर्द उठा, तो दो डाक्टरों को दिखाया। उन्होंने अल्ट्रा साउण्ड कराकर पित्ताशय में पथरी बताया और ऑपरेशन की राय दी। ऑपरेशन कराने के लिए आगरा गया, तो सर्जन ने कैन्सर होने का सन्देह व्यक्त किया। कैट स्कैन से पित्ताशय और लीवर के कैन्सर की पुष्टि हुई। वहाँ के डॉक्टर ने एक इन्जेक्शन लगा दिया। आगे कोई दवा नहीं लेकर आपके डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी आया हूँ।"

१. आगरा के सीनियर लैपरोस्कोपी सर्जन डॉ. अजय बंसल द्वारा डॉ. लहरी के पैथॉलाजी सेण्टर में दि. १०.९.९५ को बायाप्सी की माइक्रोस्कोपिक जाँच नं. ९५-२८१६। *(सन्दर्भ-४६)*

२. डॉ. अजय बंसल द्वारा दिनकर निदान एवं अनुसंधान केन्द्र, आगरा में कराया गया एब्डोमन का ओरल तथा आई. वी. कन्ट्रास्ट सी. टी. स्केन, दि. २०.९.९५। *(सन्दर्भ-४७)*

DR LAHIRI'S
PATHOLOGY CENTRE
Sarkar Nursing Home Enclave
DELHI GATE AGRA
Phone : 68738 52687

Patient's Name: Shri Ram Shanker

Referred By: Dr. Ajay Bansal

10/9/95

Gross Features :

Specimen consisted of two pieces of tissue measured 0.4x0.4x0.3 cm. and 0.5x0.4x0.4 cm.

Microscopic Diagnosis :

95- 2816

Biopsy material showing inflammatory granulation tissue and fibrosis.

(सन्दर्भ-४६)

दिनकर निदान एवं अनुसंधान केन्द्र

७, बाग फरजाना (टोन का गिरजा), आगरा-२८२ ००२ ☎ ३२२१८७

DINKAR NIDAN EVAM ANUSANDHAN KENDRA

A UNIT OF : KAMAYANI PATIENTS CARE INDIA LTD.

C. T. SCAN REPORT

PATIENT'S NAME MR. RAM SHANKAR 55 YRS/M DATE OF SCAN

Ref. by Dr. DR. AJAY BANSAL M.S. (SENIOR LAPROSCOPIC SURGEON) 20-09-95

REPORT:

ORAL AND I.V. CONTRAST C.T. ABDOMEN

OPINION-FINDING OF-

MULTIPLE ENHANCING LOW DENSITY AREA IN LIVER INVOLVING COMPLETE-LEFT LOBE AND ANTERO-MEDIAL AND POSTERIOR PART OF RIGHT LOBE IS SUGGESTIVE OF-METASTATIC DEPOSITS.

DR. SUCHETA SHARMA
M.D.
RADIO DIAGNOSIS

DR. MUNISHWAR GUPTA
M.D.
CONSULTANT RADIOLOGIST

(सन्दर्भ-४७)

संयोगवश श्री वर्मा को केन्द्र पर दो ऐसे व्यक्ति मिल गये, जिनसे बात करके उन्हें लगा कि अभी भी स्वस्थ जीवन में वापसी संभव है। पहला केस एक लड़की थी, जिसको ब्रेन ट्यूमर था और अब केवल 'सर्वपिष्टी' के सेवन से रोग-मुक्त थी। उन्होंने लड़की की फाइल देखी और वे चित्र भी देखे, जो प्रगट करते थे कि किस प्रकार पहले ट्यूमर का बढ़ाव रुका, फिर धीरे-धीरे उसका आकार घटता गया, और अन्त में वह अदृश्य हो गया। बच्ची पूर्ण स्वस्थ और प्रसन्न थी। दूसरे व्यक्ति के पास भी इतना ही जीवन्त सन्देश था। उनका एक रोगी कैन्सर-मुक्त हो गया था, अब एक अन्य रोगी के लिए औषधि प्राप्त करने आये थे।

कहते हैं श्री वर्मा, ''मेरे पाँव जैसे जिन्दगी की धरती पर टिक गये। अबतक लगता था मैं कोई इन्सान नहीं, बल्कि निराशा और पीड़ा की एक धुन्ध भर हूँ, जो कुछ दिन और बेजान हवा में तैरकर लुप्त होने वाली है। लगने लगा कि मेरे श्वास वाली हवा प्राण वायु है, आस-पास के लोगों के स्वर जीवन के स्वर हैं और मैं भी इस जिन्दगी का अनिवार्य हिस्सा हूँ।...आगरा के डॉक्टर ने जब जाँच रिपोर्ट देखी थी, तो मुझे खुली हवा में घूम आने का सुझाव देकर मेरे स्वजनों से साफ-साफ कह दिया था कि ये दो से तीन महीने तक जीवित रह पायेंगे।

''अब मैंने अपने लड़के से दृढ़तापूर्वक कहा—तुम लोग जरा भी विचलित मत होवो। मैं इस कैन्सर से नहीं मरूँगा।...मेरे मन में तो बैठ चुका था कि अब मैं बच जाऊँगा। अब तो मुझे बार-बार अपने स्वजनों-परिजनों को सँभालना पड़ता था, जिनका मन उखड़ गया था।''

जब तीन महीने बीत गये और मैं स्वस्थ होता दिखायी देने लगा; कष्ट घटे, पाचन स्वस्थ हुआ, शरीर का वजन बढ़ने लगा, तब परिजनों को पूरा भरोसा हो गया कि धर्मराज का भैंसा उनके दरवाजे से भी वापस चला गया है।''

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १३.१०.६५

'सर्वपिष्टी' का सेवन शुरू किया, तो दस दिनों में ही ऐसा प्रगट हो गया कि रोज-ब-रोज आनेवाली स्वास्थ्य की गिरावट थमने लगी है, और कष्टों-उपसर्गों का बढ़ाव ढीला होने लगा है। धीरे-धीरे रोज घेरा डालने वाले ज्वर से पीछा छूटा, शरीर में थोड़ी जान आयी, पाचन तंत्र भी जागने लगा। दो महीने बाद परहेजयुक्त आहार भरपेट लेने लगे। पेट में गैस बन जाने और कब्ज रहने की समस्या महीनों तक बनी रही। केन्द्र से परामर्श करते तो कभी कुछ औषधियाँ प्राप्त हो जातीं और कभी धैर्य धारण करने का आश्वासन मिलता कि जब तक लीवर पूरी तरह रोग-मुक्त और स्वस्थ नहीं हो जाता, ये उपद्रव पूरी तरह शान्त नहीं होंगे। दिनों-दिन स्वास्थ्य के विकास और वजन में बढ़ाव को देखकर लगने लगा कि रोग की पकड़ शिथिल हो रही है। ऐसा नहीं होता तो यह विकास संभव कैसे हो पाता !

रामशंकर वर्मा — भरथना (इटावा)

दिनांक १८-११-९६

हमको बुखार आता था गला बैठ जाता था कमजोरी बहुत थी चलने में तथा कोई सामान भी लेकर नहीं चल पाता था।----
---------- हमारे पैर के तलवे सफेद हो गये थे। लीवर काम नहीं कर रहा था। हमारा शरीर काला तथा चेहरा काला पड़ गया था। हमारी नसें मोटी हो गयी थीं वजन घट गया था पतला दुबला हो गया था।------ हमको घबड़ाहट रहता था कि हम जल्दी ही मरने वाला हूँ।

अब जो फायदा है सर्वपिष्टी से ...
घबड़ाहट खतम, जलन पीठ में तथा पेट में बन्द हो गयी कमजोरी कम हुई। जो फिकर मुझे होता था कि हम जल्द मर जाऊंगा, वह बिल्कुल खतम हो गयी। मुझे विश्वास हो गया है कि हम अब जिन्दा रहूंगा।

(सन्दर्भ-४८)

'सर्वपिष्टी' लेते तेरह महीने बीत गये, तब उन्होंने रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखा (दि. १८.११.९६)।

''पहले मुझे बुखार आता था, गला बैठ जाता था, बेहद कमजोरी रहती थी। सामान लेकर कौन कहे, वैसे चलना भी असंभव लगता था। पैर के तलवे सफेद हो गये थे, लीवर काम नहीं करता था, शरीर काला पड़ गया था, चेहरा भी काला हो गया था, नसें मोटी हो गई थीं, वजन घट गया था, घबड़ाहट रहती थी, नींद नहीं आती थी, शरीर दुबला-पतला हो गया था, पेट और पीठ में जलन होती थी, गैस ज्यादा बनती थी, जी मिचलाता रहता था।.......बस एक ही बात मन में बैठी थी कि मैं मरने वाला हूँ।''

3-8-67

जब हम आपके पास आया था, उससे पहले हमारी हालत बहुत खराब थी। हमारा वजन भी कम हो गया था, हमको हर डाक्टर ने यही बताया कि आप का समय थोड़ा है, दो या तीन महीना में ही आपका देहान्त हो जाएगा। तो हमको आपके डी. एस. रिसर्च सेन्टर का पता भरथना के ही जो हमसे पूर्व आपके यहाँ से ठीक हो गये हैं, उन्होंने बताया।

आज हम पूर्ण रूप से ठीक हैं। हमारा वजन भी ठीक है तथा ताकत भी आई है। हम अपने को इस समय स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ तथा भयमुक्त भी। जो हमको हमेशा भय रहता था कि हम जल्द ही बस संसार से विदा होने वाला हूँ। यह सब चमत्कार आपकी दवा का हुआ। हम आपका तथा ईश्वर का आभारी हूँ जो हमको और जीने का अवसर दिये।

(सन्दर्भ-४६)

"अब तो बात एकदम जीवन के पक्ष में है। प्रायः सभी उपद्रवों से छुटकारा मिल चुका है। स्वस्थ होकर काम-काज में हाथ बटाने लगा हूँ।..... अब विश्वास हो गया है कि मैं जिन्दा रहूँगा। खाना खूब पचता है। परहेज भी कम करता हूँ।" ***(सन्दर्भ-४८)***

विभिन्न जाँच रिपोर्टों से जब विश्वास हो गया कि श्री वर्मा ने कैन्सर पर विजय दर्ज कर ली है तो २६.१.६७ से औषधि की मात्रा घटा दी गयी। दवा एक दिन छोड़कर दी जाने लगी। इसका कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ा। स्वास्थ्य का सर्वांगीण विकास जारी है।

दिनांक ३.८.६७ : वाराणसी केन्द्र पर स्वयं आकर श्री वर्मा ने रिपोर्ट की, "मैं आपका और ईश्वर का आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे और अधिक दिन जीने का अवसर दिया है। मेरा वजन भी ठीक हो गया है (७० किग्रा.) और स्वास्थ्य भी ठीक है। ताकत भी आयी है।" उक्त पत्र का अंश सन्दर्भ-४६ में उद्धृत है। ***(सन्दर्भ-४६)***

❑

६

लीवर का कैन्सर
(CA. LIVER)

श्रीमती सावित्री देवी श्रीवास्तव, ६६ वर्ष
सावित्री-सदन, दियरा कोट मार्ग
बड़ी देवकाली, फैजाबाद (उ. प्र.)

जाँच : (१) भुवन एक्स-रे ऐण्ड अल्ट्रासाउण्ड क्लिनिक, फैजाबाद- होल एब्डोमन अल्ट्रा-सोनोग्राम, "मल्टिपल सेकन्डरीज इन राईट लोब ऑफ लीवर"। *(सन्दर्भ-५०)*
(२) अल्ट्रा स्कैनिंग सेण्टर, फैजाबाद, दिनांक १२-४-६५ (होल एब्डोमन अल्ट्रा साउण्ड)। *(सन्दर्भ-५१)*
"मेटास्टैटिक लेजन्स इन लीवर"
रेफर्ड फार के. जी. एम. सी./एस. पी. जी. आई. लखनऊ।

लीवर कैन्सर से मुक्ति तक का यात्रा- वृत्तान्त श्रीमती सावित्री देवी के पुत्र श्री अवधेश कुमार श्रीवास्तव की कलम से ही लिया जाय।

BHUVAN X-RAY & ULTRASOUND CLINIC
All Kind of X-RAY Facility Available
Dr. D. Bhuwan
Alka Tower, Niyawan Road
Rekabganj, Faizabad
BUXC
Date 8/4/95.
Name of the Patient Mrs. Shavitri Devi. Ref. by Dr Arvind Kumar. MBBS, MD. 65/yrs/F
Ultrasonographic Report of Whole Abdomen / Upper Abdomen / Lower Abdomen / Screening
IMPRESSION :- 1. CHRONIC CHOLECYSTITIS WITH CHOLELITHIASIS.
C.B.D. .5 MM MILD DILATED.
2. SUSPECTED MULTIPLE SECONDRIES IN RIGHT LOBE OF LIVER.
REFED TO K.G.M.C./ S.G.P.G.I. LUCKNOW.
(Dr. D. Bhuvan)
MBBS. DMRE.

(सन्दर्भ-५०)

पहला पत्र

(दिनांक १५-३-६६)। (अंग्रेजी में लिखे गये पत्र से उद्धृत)

"माँ विगत पन्द्रह वर्षों से दमा और उच्च रक्तचाप की रोगिणी रही हैं। अप्रैल, ६४ और सितंबर,६४ में लीवर क्षेत्र में तीव्र दर्द हुआ तो चिकित्सकों ने गाल ब्लैडर में पथरी का अनुमान किया और ऑपरेशन की आवश्यकता बतायी। अल्ट्रा साउण्ड से इसकी

ULTRA SCANNING CENTRE
ULTRASONOGRAPHY

Dr. S. A. Ansari
M.B.B.S.G.I.M.S
Formerly Employed With
The Ministry of Health (IRAN)

आरा मशीन के पास
सम्राट होटल के सामने
सिविल रोड, फैजाबाद

NAME OF THE PATIENT Mrs. Savitri Devi AGE 63YRS SEX Female
DATE OF EXAMINATION 12/4/95 ADDRESS Faizabad.
REFERRED BY

Ultra Sound Examination Report Upper / Lower / Whole Abd / Obs Examination / K.U.B

IMPRESSION..METASTATIC LESIONS IN LIVER.///

(सन्दर्भ-५१)

पुष्टि भी हुई, किन्तु माँ का स्वास्थ्य इतना क्षीण था कि ऐसा करना केवल खतरनाक ही लगा। हम विवश होकर होमियोपैथिक इलाज कराने लगे। इस बीच उनका स्वास्थ्य बड़ी तेजी से गिरा और दमा आदि रोग भी उग्र हो गये। तीन महीने बाद तो वे हिलने- डुलने लायक भी नहीं रह गईं।

"८-४-९५ को पूरे पेट की अल्ट्रा साउण्ड परीक्षा हुई और एक्स-रे भी किया गया। सात चिकित्सकों ने रिपोर्ट का अध्ययन किया और सबकी एक ही राय थी 'लीवर में कैन्सर है और ये अब अधिक दिन जीवित नहीं रह सकतीं। इन्हें एलोपैथिक दवाएँ नहीं दी जा सकतीं, क्योंकि वे लीवर को और नष्ट कर देंगी। दमा के कारण ग्लुकोज भी नहीं चढ़ाया जा सकता।' इस प्रकार चिकित्सकों की ओर से वे मरने के लिए छोड़ दी गईं और हमारे सामने भी भगवान से उनकी जिन्दगी के लिए प्रार्थना करते हुए उनकी मृत्यु की प्रतीक्षा के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं रह गया।"

Re : Patient - Smt. Savitri Devi Shrivastava (66)
suffering from Cancer of the liver.

Thus from 18th. April, 1995 to till date we are marking contineous slow but steady improvement in her health. Now she can eat everything. Her digestion is improved. Asthamic condition is under controle. We are very happy and my whole family is very much thankful to all of you to save my mother's life.

Thanking you very much. Yours faithfully,

(Avadhesh Kumar Shrivastava)

(सन्दर्भ-५२)

"इसी बीच मेरी बड़ी बहन डॉ. रंजना वर्मा, प्राचार्य, राजकीय कन्या इण्टर कॉलेज, कादीपुर सुल्तानपुर, और उसके पति घर आ गये। उन्होंने आपकी महती उपलब्धियों की

चर्चा की।''

''१८-४-६५ को आपसे परामर्श और औषधि लेकर माँ का इलाज शुरू कर दिया गया। दिनो-दिन सुधार आने लगा। दो महीने बाद उनका पाचन व्यवस्थित हो गया और वे आहार लेने लगीं। उसके बाद तो दिन-पर-दिन और सप्ताह-पर-सप्ताह अधिकाधिक सुधार होता गया। अब तक हम विकास ही देख रहे हैं। उनका दमा भी नियंत्रण में आ गया है। हम बहुत प्रसन्न हैं और मेरा पूरा परिवार आपका उपकार मानता है कि आपने मेरी माताजी के जीवन की रक्षा कर ली।'' मूल अंग्रेजी पत्र के अंश उद्धृत हैं। *(सन्दर्भ-५२)*

पोषक ऊर्जा की खूराकों ने एक सुशिक्षिता माँ को लीवर के कैन्सर से मुक्त किया और उसने डी. एस. रिसर्च सेण्टर पर अपनी अमृत-आशीषों से बेटों को दुआएँ दीं, उनके लिए दुआएँ माँगी और संदेश भी दिया। यह माँ जानती है, लीवर का कैन्सर क्या होता है, उससे मुक्ति कितनी अमूल्य है और प्राप्त होने वाली नयी जिन्दगी क्या है। अनेक माताओं, अनेक भाइयों ने ऐसा कुछ कहा और संकेत किया। कइयों ने लिखा, कई लिख ही नहीं सकते थे। लगता है जैसे हमारी मातृभूमि बोल रही हो। फिर क्यों नहीं उद्धृत किये जायँ ये पत्रांश। दिनांक ११-४-६६ तथा ७-१-६७ के पत्रांश के रूप में एक माँ के वाक्य प्रस्तुत हैं-

प्रिय बेटा !
डॉक्टर साहब !
दि०-११-४-६६
फैजाबाद।
ईश्वर तुम्हें प्रगति-मार्ग पर यशस्वी बनावें।
तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी एवं सन्तोष हुआ-विशेषकर यह जानकर कि-
"तुम्हें अपने मरीजों का इतना ख्याल रहता है। ----------
उक्त [illegible] से अब ठीक हो गया। खांसी में भी पहिले से बहुत आराम है पर ठंडी हवा नहीं सही जाती! ------
तुम्हारी एक माँ
सावित्री श्रीवास्तव

(सन्दर्भ-५३)

प्रिय बेटा ! डॉक्टर साहब !

ईश्वर तुम्हें प्रगति-मार्ग पर यशस्वी बनावें। तुम्हारा पत्र पाकर मुझे बहुत खुशी एवं सन्तोष हुआ—विशेषकर यह जानकर कि ''तुम्हें अपने मरीजों का इतना ख्याल रहता है। आशा है भविष्य में अपनी इसी खोज के द्वारा प्रगति-मार्ग पर चलते हुए तुम भी हमारे राम भैया की तरह—जैसे उन्होंने वाराणसी में रामघाट पर कोढ़ियों का अस्पताल खोल

कर असंख्य दीन-हीन बेसहारा कोढ़ियों का इलाज किया और करवा रहे हैं, वैसे तुम भी......।

उच्च रक्तचाप तो अब ठीक हो गया। श्वास में भी पहिले से बहुत आराम है पर ठण्डी हवा नहीं सही जाती।

....पहिले किसी भी चीज की गन्ध नहीं सही जाती थी और अब महसूस ही नहीं होती।''

तुम्हारी एक माँ—सावित्री श्रीवास्तव *(सन्दर्भ-५३)*

दि० ७-१-६७
फैजाबाद ।

प्रिय, सम्माननीय डाक्टर साहब !
आप सभी के लिए नववर्ष मंगलमय हो ।
आप के अथक परिश्रम के फलस्वरूप, अब आप की एक माँ स्वस्थ हो गई यह आप के लिए खुशी की बात है ।
पर कभी कभी तो उत्कट लालसा होती है अपने जीवनदाता से मिलने की । बेटा !

(सन्दर्भ-५४)

दिनांक- ७.१.६७

''प्रिय सम्माननीय डाक्टर साहब !

आप सभी के लिए नववर्ष मंगलमय हो !

आपके अथक परिश्रम के फलस्वरूप, अब आपकी एक माँ स्वस्थ हो गयी, यह आपके लिए खुशी की बात है। पर कभी-कभी तो उत्कट लालसा होती है अपने जीवनदाता से मिलने की। बेटा ! दैव योग से अब तो जीवन के सभी जरूरी काम पूरे हो चुके हैं पर एक लालसा थी, परोपकार और लोक-सेवा करने की, दान और तीर्थ यात्रा करने की। इसीलिए जीवन और शक्ति चाहती थी....''*(सन्दर्भ-५४)*

अगले पत्र दिनांक १८.६.६७ से उद्धृत *(रोगिणी के पुत्र अवधेश का पत्र)*

''आपके इलाज से मेरी माँ अब कैन्सर-मुक्त हो चुकी हैं तथा वे स्वस्थ व सानन्द हैं। धीरे -धीरे शरीर भी भरता जा रहा है। अब उन्हें केवल बुढ़ापा की तकलीफें हैं।.. जनवरी, १६६६ से आपकी दवा बन्द करने के उपरान्त कोई ऐसी परेशानी नहीं हुई, जिससे आपको कष्ट देने की आवश्यकता होती।''

''फिलहाल इधर कोई तकलीफ न होने के कारण अल्ट्रासाउण्ड या अन्य कोई जाँच नहीं कराई गयी है। शेष शुभ है।''

श्रीमती सावित्री देवी का रक्तचाप का रोग इस इलाज के दौरान ही ठीक हो गया है। दमा में भी बहुत आराम है। ❑

१०

नान हाजकिन्स लिम्फोमा (N. H. L.)

श्री प्रकाश मिश्रा
उम्र २२ वर्ष
मकान नं. ६३,
स्टेट बैंक आफ इण्डिया कालोनी
दीघा घाट, पटना

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : टाटा मेमोरियल हास्पीटल, मुम्बई (केस नं. बी एम/०२३२२, दिनांक ०६.०२. ९८) *(सन्दर्भ-५५)*

उस समय मात्र उन्नीस वर्ष के नवयुवक प्रकाश को जब २०.०२.९८ को पता चला कि वह नान हाजकिन्स लिम्फोमा नाम के कैन्सर रोग से पीड़ित हैं तो जैसे आंखों के आगे अन्धेरा छा गया। अभी तो जीवन की शुरुआत भी ठीक से नहीं हो पायी थी और यह बज्रपात...।

प्रकाश के प्रसंग में कई बातें तरह-तरह के प्रश्न खड़े कर देती हैं। एक तो यह कि जब डाक्टर पूरी तरह आश्वस्त नहीं होते कि किसे कौन सी बीमारी है तो वे अनुमान से दवा खिलाना क्यों शुरू कर देते हैं ? प्रकाश को बार-बार टी. बी. की दवा चलायी जाती रही जबकि डॉक्टर असमंजस में थे कि उसे टी. बी. है या अन्य रोग ! डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने अपने शोध में पाया है कि तमाम रोगियों को कुचिकित्सा के कारण कैन्सर का शिकार होना पड़ा। दूसरी बात यह कि हमारे देश में किसी सामान्य व्यक्ति को आठ या दस लाख रुपये एकत्र करने के लिए कह दिया जाय, तो हर कोई जानता है कि जमीन-मकान बेचकर भी रकम पूरी नहीं पड़ सकती। ऐसे रोगियों के साथ बोन मैरो ट्रान्स्प्लान्टेशन भी बहुत सफल नहीं होता। भारत जैसे पिछड़े देश में तो बोन मैरो ट्रान्स्प्लान्टेशन में शायद ही सफलता मिलती हो, विदेशों में कुछ प्रतिशत बोन मैरो ट्रान्स्प्लान्टेशन सफल हो पाता है। जब इतनी बड़ी रकम जुटाना लगभग असम्भव होता है तो चिकित्सक किस आधार पर बोन मैरो ट्रान्स्प्लान्टेशन की बात करते हैं, समझ में नहीं आता।

प्रकाश के केस में सेण्टर की ओर से कुछ न कहकर प्रकाश द्वारा दिनांक १५.०६.२००१ को लिखे एक पत्र में जो बातें कही गयी हैं, उसीसे इस केस को समझ लिया जाय :

"मैं प्रकाश कुमार मिश्रा 'नान हाजकिन्स लिम्फोमा- ३ बी स्टेज' *(सन्दर्भ-५७)* का रोगी था।

TATA MEMORIAL HOSPITAL

10.2.98

BM2322 4310BM

Mr. Prakashkumar Mishra 19/M

7 Hodgkin's lymphoma II B

Dr. R.Gopal

4310BM: (R) cervical lymph node biopsy

Gross: Recd. specimen of lymph node meas 1.5x1x1cms. irregular, grayish white submitted entirely

MICR: There is a loss of lymphnode architecture. There are large cells few with polypoid nuclei and occasional binucleated cell.Hardly any ~~lymphocytes.~~ Plasma cells or eosinophils are seen.

IHC- CD20-tumour cells are positive.
CD3- other lymphocytes xx are positive in good number
CD30- background staing is seen.
CD15- An occasional large cell is faintly positive.
This is a T cell rich B cell lymphoma.

C. S. Soman
Dr.C.S.Soman 18.2.98 VJ

PATHOLOGY

(सन्दर्भ-५५)

मेरी चिकित्सा टाटा मेमोरियल अस्पताल, मुम्बई में २०.०२.६८ से प्रारम्भ हुई। शुरू में उन्होंने मुझे छह चक्र किमोथेरापी (CHOP-MINE-ESHAP-CHOP-MINE-ESHAP) चलायी। प्रत्येक चक्र के बीच में मुझे २१ दिन का अन्तर दिया जाता था। *(सन्दर्भ-५६)* मैंने किमोथेरापी की हर खूराक टाटा मेमोरियल हास्पीटल में लिया। छह चक्र के बाद उन्होंने एबडामेन का सी टी स्कैन कराया। डॉक्टर भ्रम में थे कि एबडामेन में नोड है या नहीं। उन्होंने गैलियम स्कैन कराने की सलाह दी। १८.०८.६८ को पी डी हिन्दुजा नेशनल हास्पीटल, मुम्बई में पूरे शरीर का गैलियम स्कैन कराया

TATA MEMORIAL HOSPITAL
(TATA MEMORIAL CENTRE)

Phone : 414 6750 (6 Lines)
Fax : 022-414 6937
E-mail : medrecd@tmcameth

DR. ERNEST BORGES ROAD
PAREL, MUMBAI - 400 012.

Ref: BM - 2322

27th March, 2000.

Dear Doctor,

Mr. Prakashkumar Mishra is a case of Non Hodgkin's Lymphoma with recurrence. He is advised Chemotherapy (CHOP Regimen) He has received 1 cycle over here. Kindly continue his treatment under your care for 3 more cycles. The schedule is as follows :

Schedule : Cycle 2 - 17/4/2000 Cycle 3 - 8/5/2000 Cycle 4 - 29/5/2000

Inj. Emeset	16 mg I.V. prior to Chemotherapy.
Inj. Decadron	4 mg I.V. prior to Chemotherapy
Inj. Endoxan	1300 mg I.V. slow on Day 1.
Inj. Adriamycin RD	90 mg as 20 mins drip on Day 1.
Inj. Vincristine	2.0 mg I.V. on Day 1.
	+ 1 units D/S.
Tab. Prednisolone	100 mg / day on Day 1 to 5

The TLC should be greater than 4000/cmm prior to starting the patient on Chemotherapy. Kindly follow the instruction sheet attached while the patient is on Chemotherapy. The patient is to follow-up with us on 12/6/2000 along with CT Scan of Abdomen.

Thanking you,

Dr. R. Nair, MD
Asst. Medical Oncologist

(सन्दर्भ-५६)

गया, जिसमें बताया गया था कि एबडामेन में छोटा सा नोड है। मेडिकल बोर्ड ने एबडामेन के रेडियेशन के लिए कहा। उन्होंने मुझे २६ चक्र रेडियेशन दिया। डॉक्टरों ने चार महीने बाद आकर चेकअप कराने की सलाह दी।

चार महीने पूरे हों इसके पहले ही मुझको लगा कि गले में दायीं ओर एक और गाँठ उभर आयी है। मैं फिर अस्पताल आया और चिकित्सकों को दिखाने पर उन्होंने बायोप्सी करायी। बायोप्सी रिपोर्ट में (FIBRO ADIPASE TISSUE AND SCANTY SKELETEL MUSCLE ONLY) बताया गया। लिम्फनोड नहीं पाया गया।

मेडिकल बोर्ड ने मेरे गले और हार्ट में रेडियेशन करने का निर्णय लिया। २७ चक्र रेडियेशन चलाया गया। मुझे चार महीने बाद

TATA MEMORIAL HOSPITAL, MUMBAI
DEPT. OF RADIATION ONCOLOGY
RADIATION THERAPY PRESCRIPTION

OPD/P. ____ WARD
Cert Protocol Y/N New Case Y/N

Name : Mr Prakash Kr Mishra Age/Sex 15/M Case No. B M 0 2 3 2 2
DIAGNOSIS Non Hodgkins lymphoma HISTOLOGY
STAGE ____ AGE ____ H ____ M ____

PATIENT PLANNED ___ Radical 1 Intent Radical 2 Palliative 3 Pre-Operative 4
Post Operative 5 Chemo + RT 6 Prophylactic 7 PreopsSsPostOp 8 Other 9
Telecobalt 1 Telecaesium 2 6MV LA 3 10MV LA 4 15MV LA 5
Electrons MeV 6 Photon + Electrons 7 Other

(सन्दर्भ-५७)

TATA MEMORIAL HOSPITAL
PATHOLOGY REPORT

BM/2322 | 16.3.2000 8936/BP

Mr. Prakash Mishra | 20/M

Requested by Dr. : R Nair

Clinical Diagnosis : NHL

Previous Path Nos. : 4310BM, 3916BM, 38294BM, F-5832BN

Material Sent : (Left)Axillary lymphnode biopsy

Gross : Received multiple nodal bits aggregating to 5x3x2cms.

MICR . Relapse of Non Hodgkin's lymphoma. T cell rich, B cell type
Immunohistochemistry results- Large atypical cells are immunoreactive to CD20 and Non reactive to CD15 and CD30. Background atypical lymphoid population is immunoreactive to CD3.

Dr. S.R.Desai 27.3.2000

PATHOLOGY

(सन्दर्भ-५८)

आने को कहा गया।

चार महीने बाद मैं फिर हास्पीटल आया। डाक्टरों ने कहा कि मैं कैन्सर से मुक्त हो चुका हूँ।

वे मुझे चार-चार महीने बाद नियमित जाँच के लिए बुलाते रहे। इसी दौरान मेरे बायें पैर में दर्द शुरू हो गया। जब मैंने इसकी शिकायत चिकित्सकों से की तो उन्होंने सोनोग्राफी करायी और कहा कि रेट्रोपेरिटोनियम..... में कुछ नोड्स हैं। मेरी एफ एन ए सी जाँच भी करायी गयी।.....

उन्होंने टी बी बताकर उसका इलाज शुरू किया और छह महीने बाद आने को कहा। इसी दौरान २२.०३.२००० को जाँच में मेरी बायीं काँख में नोड उभरी पायी गयी। *(सन्दर्भ-५८)* मैं फिर हास्पीटल आया और बायाप्सी जाँच के बाद डॉक्टरों ने नान हाजकिन्स लिम्फोमा बताया। इस केस में मेरी टी बी अभी तक नहीं ठीक हुई थी और कैन्सर ने फिर से कब्जा कर लिया था। मुझे एक ही समय में दोनों बीमारियाँ हो गयी

TATA MEMORIAL HOSPITAL
DEPARTMENT OF RADIODIAGNOSIS
C.T. SCAN

N? 010424

DATE : 19/6/00

Name: Prakash Mishra | Category: | CASE NO. BM 23222
Age: 20 | Sex: M | Unit:
Outpatient | Inpatient | Location
Amount charged ______ Receipt/Credit Bill No. ______

Relevant Clinical Data: NHL
Provisional Diagnosis
H/O. Previous Treatment
Refering Doctor's Sign

Examination Requested: abd & pelvis | Anatomical Site
Appointment on: 19/6/00 at a.m./p.m. | No. of 14 x 17" Films

BM: 23222 19/6/00 (Reported by Dr.Kulkarni)

CT SCAN OF ABDOMEN & PELVIS:

Post oral and IV contrast helical scans with 10mm and 8mm collimation were obtained from the domes of diaphragm to the ischial tuberosities.

Liver shows normal size and parenchymal density. No evidence of focal areas of altered density or enhancement seen. No evidence of dilatation of IHBR is seen. spleen shows normal size and parenchymal density. No evidence of focal areas or altered density or enhancement seen in the spleen. Both adrenals gall bladder, pancreas and both kidneys show no abnormality.

Urinary bladder, seminal vesicles and prostate show no abnormality. No evidence of ascites is seen. No evidence of retroperitoneal or pelvic lymphadenopathy is seen. The G.I. tract is unremarkable.

IMPRESSION:

In a known case of recurrent NHL on Rx; no abnormality is seen in the present study of abdomen & pelvis.

Kulkarni

(सन्दर्भ-५६)

थीं। डॉक्टरों ने कहा कि मेरी हालत ऐसी नहीं है कि किमोथेरापी की बड़ी खूराक दी जा सके। मैं पहले ही बड़ी से बड़ी खूराकें ले चुका था।

चिकित्सकों ने मुझे बताया कि अब केवल बोन मैरो ट्रान्सप्लान्टेशन का सहारा लेना ही शेष है जिसका खर्च आठ से दस लाख रुपये होगा। इस पर विचार करने के लिए मुझे चार महीने का समय दिया गया। इस बीच हल्की किमोथेरापी के चार चक्र लेने की सलाह दी गयी। डॉक्टरों ने यह बता दिया कि ये हल्की दवा बीमारी दूर करने के लिए नहीं बल्कि सोच-विचार करने के लिए दिये गये चार महीनों तक बीमारी पर नियन्त्रण रखने के लिए दी जा रही है।

इन्हीं दिनों मैंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में सुना और यहाँ से 'सर्वपिष्टी' का सेवन प्रारम्भ कर दिया। अस्पताल द्वारा दिये गये समय के बीत जाने के बाद मैं पुनः चेकअप के लिए पहुँचा। इस बीच करीब तीन महीने मैंने 'सर्वपिष्टी' का सेवन कर लिया था। चिकित्सकों ने एक्स-रे कराया और बताया कि मेरे दोनों लंग्स सामान्य हैं। सी टी स्कैन

प्रेषक – [illegible]
[illegible], पटना.

सेवा में – डी० एस० रिसर्च सेन्टर.
[illegible]

महाशय,

[illegible] (22 वर्ष) Non Hodgkins Limphoma के मरीज हैं। अप्रैल 2000 से [illegible] दवा सेवन करने के बाद [illegible] [illegible] हैं। [illegible] नहीं [illegible] हैं। [illegible] [illegible] [illegible] हैं।

[illegible] एक माह [illegible] दवा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दवा [illegible]।

[illegible] – [illegible] की दवा

[illegible]

(सन्दर्भ-६०)

रोगी का नाम- प्रकाश कुमार मिश्रा
पता - 93 स्टेट बैंक कॉलनी
दिघा घाट, पटना ।।

आदरणीय डाक्टर साहब,
मैं प्रकाश कुमार मिश्रा
NON HODKENS LIMPHOMA III B का मरीज था। जो कि आपकी दवा खाने के कारण [illegible] हो गया।। महीने पहले ही छूट गया। अब मैंने नव से 8 महीने तक लगातार आपका दवा लेता रहा। फिर तीन में तीन महीने एक दिन छोड़ कर के दवा लेता था। मुझे अब कोई Complication नहीं है।
डाक्टर साहब क्या अब मैं दवा दो दिन छोड़ कर के ले सकता हूँ आपकी क्या राय है।
डाक्टर साहब मैं एक बार आपसे मिलने को इच्छुक हूँ।
~~[illegible]~~
कृपया मुझे दो सप्ताह का दवा दे दें

आपका
प्रकाश कुमार मिश्रा
19/4/01

(सन्दर्भ-६१)

रिपोर्ट में नान हाजकिन्स लिम्फोमा का भी कहीं अता-पता नहीं है। एबडामेन और पेल्विस भी सामान्य पाये गये। *(सन्दर्भ-५६)*। एफ एन ए सी रिपोर्ट भी सन्तोषजनक थी। यह एक अप्रत्याशित रिपोर्ट थी।

मेरी रिपोर्ट को देखकर सभी डॉक्टर आश्चर्यचकित रह गये। उन्हें हैरानी हो रही थी कि मैं कैन्सर से मुक्त हो गया हूँ। वे पूछने लगे कि मैं क्या खाता हूँ। मैंने उन्हें डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि के बारे में बता दिया।

२६.०६.२००० से (आज १५.०६.२००१ तक) मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मैं कैन्सर से पूरी तरह मुक्त हो चुका हूँ। अब मैं एक दिन छोड़कर 'सर्वपिष्टी' का सेवन करने लगा हूँ। अब मुझे कोई समस्या नहीं है। ...।"

प्रकाश बड़े गर्व से बताता है कि कैसे उसे 'सर्वपिष्टी' ने मौत के मुंह से खींचकर निकाला है। समय-समय पर केन्द्र को भेजे पत्र में प्रकाश अपने स्वास्थ्य की जानकारी देता रहता। प्रायः सभी रिपोर्ट यही बताते हैं कि वह बिल्कुल सामान्य, स्वस्थ और उत्साहपूर्ण जीवन बिता रहा है। *(सन्दर्भ-६०, ६१, ६२)*

सेवा में,
डी० एस० रिसर्च सेन्टर
वाराणसी.

महाशय,
प्रकाश कुमार मिश्र (21 वर्ष) Non Hodgkin's Limphoma के मरीज [illegible]
[illegible]

[illegible]
23/7/2001.
93, स्टेट बैंक कॉलोनी
[illegible], पटना.

(सन्दर्भ-६२)

११

गाल ब्लैडर और लीवर का कैन्सर
Ca Gall Bladder and Liver

श्री बनवारी लाल शर्मा
उम्र : ७० वर्ष
ग्राम व पोस्ट जलालगढ़
पूर्णिया (बिहार)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : डॉ. पी. के. चौधरी, अल्ट्रासाउण्ड डायग्नोस्टिक सेण्टर, पूर्णिया, डॉ. पी राम केडिया, पूर्णिया, पंचदेवी सर्जिकल क्लिनिक, पूर्णिया।

पेट में दर्द रहने लगा। पहले दिन में एक एक-दो बार होता था फिर दर्द के साथ ही उल्टियाँ होने लगीं। उल्टी के बाद लार अधिक मात्रा में आने लगी थी। धीरे-धीरे समस्यायें बढ़ने लगीं।

पूर्णिया के ही चिकित्सकों को दिखाया गया। जाँच की गयी और गाल ब्लैडर तथा लीवर में कैन्सर पाया गया। *(सन्दर्भ- ६३)* अन्य कई जगह भी जाँच कराई गयी और हर

Dr. Devi Ram
MBBS, MD
MRCP,MBMUS (London,UK)
FICA , FCCP (USA)

MODERN CLINIC
LINE BAZAR,
PURNEA
BIHAR

Date :2-5-99

Patient's Name : Sri. Banwari Lal Sharma　　Age : 73 Yrs　　Sex :M.
Address : Jalalgar (Purnea)
Referred By : Dr.A.K.Gupta M.B.B.S. M.S. D.A.
Ultrasound Examination : UPPER ABDOMEN

ULTRASOUND REPORT

Liver : Mildly Enlarged (15.3 cm) with Reduced Echotexture,
Moreover Echogenic Mass measuring – 2.3x4.9 cm noted (2.3x1.9cm)
Intrahepatic biliary channels not dilated
Intrahepatic portal & hepatic venous system normal
Gall – Bladder : Contracted , Stones Noted (Chronic Cholecystitis)
? Associated Hypoechoic GB Mass (2.9 x 2.1 cm)
Common Duct : Diameter- 10 mm – Mildly Dilated ,However No Stones Seen in as much CBD Visualised
Pancreas : Normal
Spleen : Normal
Kidneys : Normal Size & Echotexture
No Calculi /Mass / Hydronephrosis
No Ascitis

IMPRESSION : GALL STONES- CHRONIC CHOLECYSTITIS
?ASSOCIATED GB MASS
MILDLY DILATED CBD
MILD HEPATOMEGALY WITH SMALL ECHOGENIC MASS
? HEALED CALCIFIED LESION ?HYDATID

Note; Excessive gas in Stomach / Gut did'nt allow satisfactory visualisation ,hence repeat Sonography after Purgatives,Antacids etc is suggested(No further charges)

With Thanks & Regards
(Dr. D.Ram)

4/5/99 Repeat U/S did'nt take us further and similar finds as before noted

(सन्दर्भ-६३)

...RIJAT SCANNING CENTRE
...BUILDERS, 1ST FLOOR
LINE BAZAR, PURNIA

ULTRASONOGRAM REPORT

BANWARI LAL. Age Sex M

Examined : UPPER ABDOMEN.

By DR.P.R.KEDIA.MD.(MED. Date 5.12.99.

LIVER Shape Normal. Size Lt. Rt. : Normal.
Echo Texture Homogenous parenchyma.
Biliary Ducts Normal.
Pathology No diffuse or focal pathology seen.
... Area Normal sub & supra diaphragmatic spaces.
GALL BLADDER Shape Contracted. Size Small.
Wall Thick Irregular. Lumen Calculi.
Pathology Thick Contracted GB with multiple calculi & normal sero-sal Interface. Hyperechoic area- Debris, Fibroids.

COMMON BILE DUCT - Normal & anechoic.

PANCREAS - Normal HYperechoic parenchyma. No TPD dilatation seen.
No mass or cyst seen.

KIDNEYS -	RIGHT KIDNEY	LEFT KIDNEY
Shape & Size	Normal.	Normal.
Parenchymal Pattern	Normal.	Normal.
... Differentiation	Normal.	Normal.
Pelvi Calyceal System	Normal.	Normal.
... Pathology	None.	None.

SPLEEN

IMPRESSION : Cholelithiasis with an Irregular thick walls - Induced by Recurrent Inflammation - mass ??. However histology of GB will be helpful.
No secondaries or any focal mass seen.
Thank you for reffering your case.

DR. RAKESH SHARMA.MS.

(THIS IS A PROFESSIONAL OPINION AND IT SHOULD BE CLINICALLY CORRELATED)

(सन्दर्भ-६४)

रिपोर्ट में कैन्सर की पुष्टि की गयी। *(सन्दर्भ- ६४)* घर के लोगों का चिन्तित होना स्वाभाविक था क्योंकि हर डॉक्टर और हर अस्पताल यही बताते थे कि गाल ब्लैडर और लीवर का कैन्सर बहुत ही कम समय जीने के लिए देता है। संयोग से डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में मालूम हुआ और वाराणसी से सर्वपिष्टी मंगायी गयी।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : २८.०८.९९ से।

श्री बनवारी लाल शर्मा के पुत्र श्री अशोक कुमार शर्मा डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वाराणसी केन्द्र पर पहुँचे और २८.०८.९९ को उन्होंने दो सप्ताह की औषधि प्राप्त की।

सर्वपिष्टी के सेवन के पाँच दिन बाद ही श्री शर्मा के पुत्र ने सेण्टर को पत्र लिखा, "...आपके यहाँ से मैं औषधि दो सप्ताह की लेकर आया था। गत सोमवार से दवा चालू

जलालगढ़
4/7/99

आदरणीय द्विवेदी जी

सादर सप्रेम नमस्कार

आगे समाचार यह है कि आपके पड़ोसी औषधि दो सप्ताह की लेकर आया था। गत सोमवार से दवा चालू है। आज छठा दिन है। दवा खाने से पहले, दूसरे एवं तीसरे दिन पेट में हल्का-हल्का दर्द रहा। फिर भी भोजन करते रहे। लेकिन बुधवार की रात बहुत जोरों से पेट में दर्द हुआ। और फिर उल्टी हुई तब आराम हुआ। बृहस्पतिवार और शुक्रवार को किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं हुई। भूख भी लगी। खाना भी खाये। पैखाना दोनों समय हुआ लेकिन पेशाब कुछ अधिक बार होने लगा। शनिवार को दिन में सुबह नास्ता करने के बाद जो दवा दी जाती है उसी के बाद से पेट में दर्द अनुभव होने लगा। पहले तीसरे दिन भी नास्ता के बाद की दवा लेने पर ही दर्द होने लगा था। वैसे देखने में स्थिति संतोषप्रद है। लेकिन बीच-बीच में दर्द होने से [illegible]

अशोक कुमार शर्मा
C/o पूर्णिमा मेडिकल हाल
P.O. लाइन बाजार, पूर्णिया
बिहार

इसके लिए आपका सदैव आभारी रहूंगा

[illegible]
[illegible] (बिहार)

आपका स्नेहभाजन
[illegible]

(सन्दर्भ-६५)

है। आज छठा दिन है। दवा खाने से पहले, दूसरे एवं तीसरे दिन पेट में हल्का-हल्का दर्द रहा। फिर भी भोजन करते रहे। लेकिन बुधवार की रात बहुत जोरों से पेट में दर्द हुआ और फिर उल्टी हुई तब आराम हुआ।

वृहस्पतिवार और शुक्रवार को किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं हुई। भूख भी लगी। खाना भी खाये। पैखाना दोनो समय हुआ लेकिन पेशाब कुछ अधिक बार होने लगा। शनिवार को दिन में सुबह नास्ता करने के बाद जो दवा दी जाती है उसी के बाद से पेट में दर्द का अनुभव होने लगा। पहले तीसरे दिन भी नाश्ता के बाद की दवा लेने पर ही दर्द होने लगा था। वैसे देखने में स्थिति संतोषप्रद है...।" *(सन्दर्भ-६५)*

दिनांक 28.10.99
जलालगढ़

आदरणीय द्विवेदी जी

प्रणाम,

आगे समाचार यह है कि मैं 25/10/99 को फैक्स किया था लेकिन उसका Confirmation Report नहीं मिलने के कारण पुनः दूरभाष से 26/10/99 को आपसे बातचीत करनी पड़ी. आपसे जानकारी मिली कि 26/10 को ही दवा भेज दी गयी है। इसके लिए आपको धन्यवाद। रोगी हालत अच्छी है। भूख खूब लगती है। पिछले सप्ताह जो दवा दी गयी थी उसके सेवन से रोगी अधिक राहत महसूस कर रहे हैं। पेट में दर्द नहीं होता है। साथ ही उल्टी भी नहीं हो रही है। रोगी अच्छी तरह से चल फिर रहे हैं। लेकिन मुंह में अधिक लार का बनना जो पहले स्वाभाविक तौर उस तरह से नहीं होता था अतः अब आप इस बिन्दु पर भी विचार करेंगे। शेष कुशल है विशेष मिलने पर।

आपका
[illegible] कुमार शर्मा

[illegible] (बिहार)

(सन्दर्भ-६६)

सर्वपिष्टी ने धीरे-धीरे श्री शर्मा को राहत देना शुरू कर दिया। दिनांक २८.१०.६६ को सेण्टर को भेजे पत्र में उनके पुत्र ने बताया, "...रोगी की हालत अच्छी है। भूख खूब लगती है। पिछले सप्ताह जो दवा दी गयी थी उसके सेवन से रोगी अधिक राहत महसूस कर रहे हैं। पेट में दर्द नहीं होता है। साथ ही उल्टी भी नहीं हो रही है...।" (सन्दर्भ-६६)

दिनांक ५.१२.६६ को श्री शर्मा की अल्ट्रासोनोग्राफी जाँच करायी गयी, जिसकी रिपोर्ट बहुत ही उत्साहबर्द्धक थी। श्री शर्मा और उनके परिजनों को सर्वपिष्टी पर अब अटूट विश्वास हो गया था। वे इसका परिणाम अपनी आँखों से देख रहे थे।

आशीष कुमार शर्मा
C/o पूर्णिया मेडिकल हॉल,
लाइन बाजार, पूर्णिया

To डी० एस० रिसर्च सेन्टर
रवीन्द्र पुरी, वाराणसी - 221005

(विषय - रोगी के स्वास्थ्य के संबंध में)

महाशय,

मेरी ओर से आपको कोटिशः धन्यवाद। आपका पत्र मिला जिसमें आपने अपने रोगी श्री बनवारी लाल शर्मा के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मांगी है। पिताजी श्री बनवारी लाल शर्मा पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं। चलते-फिरते एवं अच्छी तरह खाते-पीते हैं। अभी कोई दिक्कत नहीं है। पत्राचार में विलम्ब हुआ इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। आशा है कि इतना ही स्नेह और आशीर्वाद आपसे आगे भी मिलता रहेगा।

मैं अपने [illegible] रोगी की दवा के लिए आपके पास पूरे Documents के साथ [illegible] भेज रहा हूँ। आशा है आप इन्हें भी अपना मार्गदर्शन एवं दवा देकर कृतार्थ करेंगे। इसी [illegible] के जरिए हमें [illegible] की दवा के बारे पूरी जानकारी भेजने का कष्ट करेंगे। आपको निरन्तर पत्र द्वारा रोगी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलती रहेगी।

आपका स्नेहभाजन
आशीष कुमार शर्मा
23.5.2001

(सन्दर्भ-६७)

विभिन्न कारणों से श्री शर्मा के परिजन सर्वपिष्टी बिना सेण्टर की सलाह लिए ही बन्द कर चुके थे। परन्तु तब तक श्री शर्मा इतनी सर्वपिष्टी खा चुके थे कि अब खतरे की कोई बात नहीं थी।

सेण्टर ने श्री शर्मा का स्वास्थ्य जानने के लिए उनके यहाँ एक पत्र लिखा जिसके जवाब में दिनांक २६.०५.२००१ को प्राप्त पत्र में उनके पुत्र ने लिखा, "...मेरी ओर से आपको कोटिशः धन्यवाद। आपका पत्र मिला जिसमें आपने अपने रोगी श्री बनवारी लाल शर्मा के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मांगी है। पिताजी श्री बनवारी लाल शर्मा पूर्णरूपेण स्वस्थ हैं। चलते-फिरते एवं अच्छी तरह खाते-पीते हैं। अभी कोई दिक्कत नहीं है..."। *(सन्दर्भ-६७)*

१२

गाल ब्लैडर का कैन्सर
(CA. GALL BLADDER)

श्रीमती शारदा देवी, ५८ वर्ष,
द्वारा : श्री कल्पनाथ सिंह
श्री गांधी आश्रम
गढ़ रोड, मेरठ

जाँच : साइटॉलॉजी : पेपिलरी एडेनोकार्सिनोमा, गाल ब्लैडर, डॉ कुमुद गुप्ता पैथॉलॉजिकल लैब, मेरठ (दिनांक १५-६-९६), स्लाइड नं. १५०/९६। *(सन्दर्भ- ६८)*

पूर्व चिकित्सा :
कोई भी नहीं। साथ में भी नहीं, बाद में भी नहीं।

रोग का इतिहास

"जुलाई-अगस्त ९५ से ही सिरदर्द और बुखार होते रहने, भूख कम होते जाने और वजन गिरते जाने की समस्या थी। मऊ के डॉ. वशिष्ठ नारायण सिंह ने व्यापक वैज्ञानिक जाँच कराई। पित्ताशय में पथरी का ज्ञान हुआ। उन्होंने ऑपरेशन की राय दी।

DR. KUMUD GUPTA'S PATHOLOGY LAB.
417, CHHIPI TANK, BACHCHA PARK CROSSING, MEERUT

DR. KUMUD GUPTA
M.D. (PATHOLOGY)
CONSULTANT PATHOLOGIST

TIMINGS :-9 a.m. to 8 p.m.
SUNDAY CLOSED
TEL. : 643272

DATE : 15/06/96
PATIENT NAME : SHARDA DEVI
CLINICIAN I/C : DR.-

Computer Analyser system SEAC CH-100 (ITALY).

Slide No.:- 150/96

CYTOLOGY

FROM GALL BLADDER MASS : Smears show malignant cells forming papillae having core of fibrous connective tissue, clusters and sheets. Multinucleated giant cells and signet ring cells seen.

Impression - Papillary adenocarcinoma of gall bladder

(सन्दर्भ- ६८)

"मेरठ के डॉ. अनिल पवार ने जाँच द्वारा पित्ताशय में कैन्सर का भी पता किया। मेरठ के कई कुशल चिकित्सकों ने तुरंत ऑपरेशन की सलाह दी। लुधियाना के मोना देवी कैन्सर अस्पताल के सर्जन ने ऑपरेशन की राय दी। चान्स ५०-५० प्रतिशत बताया गया।...लम्बे खर्च की भी समस्या थी। २५ जून ६६ को वापस (मेरठ) चला आया।"

'सर्वपिष्टी' की ओर : बुलन्दशहर के एक व्यक्ति ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी दी। तभी 'अमर उजाला' में सेण्टर के विषय में लेख देखा। आशा बँधी।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ६-७-६६

प्रगति : (रोगिणी के पति श्री कल्पनाथ सिंह तथा औषधि प्राप्त करने के लिए आने वाले श्री हरि सिंह द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत रिपोर्ट, *सन्दर्भ-७० और सन्दर्भ-७० बी*)

पत्र दिनांक २५-७-६६

"आपके यहाँ की दवा का सेवन कराने पर अबतक मरीज की हालत निम्न प्रकार है–

(१) वजन ६-७-६६ को ६० किलो था। अब ६१ किलोग्राम है। बढ़ा है। (२) भूख नहीं लगती थी। बमुश्किल ३ रोटी ले पाती थीं। अब ५, ६ रोटी तक ले लेती हैं। इसके अतिरिक्त दूध, फल व जूस भी लेती हैं। (३) शरीर में शक्ति का संचार बढ़ा है। स्फूर्ति भी बढ़ी है। (४) देखने में शरीर का रंग साफ हुआ है। शरीर भरना शुरू हुआ है। (५) पहले ५, ७ दिन पर बुखार और सिरदर्द हो जाया करता था। दवा-सेवन के बाद बुखार और सिरदर्द नहीं हुआ।

कुल मिलाकर हालत पर्याप्त संतोषजनक दिखाई दे रही है। इसके लिए मैं आपको, आपके सहयोगियों को और सेण्टर को साधुवाद देता हूँ और आपलोगों के निरन्तर प्रगतिमय होने की कामना करता हूँ।"

२८-८-६६ की रिपोर्ट (पत्रांक व्यक्तिगत ६६-६७/७२२)

"मैं अपनी पत्नी श्रीमती शारदा देवी की दवा पहली बार दिनांक ५-७-६५ को आदमी भेजकर मँगाकर सेवन कराता रहा हूँ। इससे बहुत फायदा है। भूख बढ़ी है। अब तक आठ किलो वजन बढ़ा है। शक्ति का संचार हुआ है। स्फूर्ति आई है। आपके मौखिक तथा ३०-७-६६ के पत्रानुसार खान-पान में पूरी तरह सावधानी तथा संयम कराया जा रहा है।...श्रीमती जी बाहरी रूप से तो पहले की अपेक्षा काफी ठीक दिखाई देती हैं, पर मैं चाहता हूँ कि अल्ट्रा साउण्ड, सी. ई. टी. स्कैन या आप जैसी राय दें, उसके अनुसार जाँच कराकर भीतर की स्थिति की भी जानकारी हो जाय।"

२८-१०-६६ की रिपोर्ट : "ऊपरी तौर पर देखने से अब काफी स्वस्थ दिख रही हैं।. ..जुलाई से अब तक वजन भी १७ किलोग्राम बढ़ा है।

MEERUT SCAN CENTRE
NEAR EVES CROSSING
E. K. ROAD, MEERUT
PH. : 642235

Consultants :
Dr. VINIT NANDA
M.B.B.S., M.D. (Radio Diagnosis) PGI
Dr. Mrs. SANGEETA ANEJA
M.B.B.S., M.D. (Radio Diagnosis) LKO

Name SHARDA DEVI   Age/Sex 55 Yrs/F   Date 16.10.96

Ref. by DR. ANIL PANWAR MS.   Investigation ULTRA SOUND

IMPRESSION: GALL BLADDER MASS C CALCULII.

P.S. THE SURROUNDING MASS EFFECT AROUND GALL BLADDER APPEARS COMPARITIVELY LESS AS COMPARED TO LAST U/S DONE ON 15.6.96

(सन्दर्भ- ६६)

"१६-१०-६६ को अल्ट्रा सोनोग्राफी पुनः हुई थी। पित्ताशय में जो गाँठ थी, अब वह तो नहीं है।" *(सन्दर्भ- ६६)*

रिपोर्ट, दिनांक २५-७-६७ : "दवा करीब १४ माह से चल रही है। किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।

१६-७-६७ को एक्स-रे रिपोर्ट में लीवर, पैंक्रियाज, स्प्लीन और गुर्दे सभी स्वस्थ-सामान्य पाये गये हैं। गाल ब्लैडर पथरी के कारण सिकुड़ गया है।"

अब औषधि नित्य न देकर एक दिन के अन्तराल से दी जाने लगी है। क्रमशः अन्तराल बढ़ाते जाने और औषधि कम करते जाने की विधि है। वैसे खूराकें पोषक ऊर्जा

श्री गांधी आश्रम, प्र० का० मेरठ

पत्रांक व्यक्तिगत ६६-६७/५२०   दिनांक २५-७-६६

आपके यहां की दवा का सेवन कराने पर अब तक मरीज की हालत निम्न-प्रकार है :-

१- वजन ६-७-६६ को ४० किलो था। अब ६१ किलो ग्राम है। बढ़ा है।
२- भूख नहीं लगती थी। बमुश्किल २ रोटी ले पाती थी। अब ५,६ रोटी तक ले लेती है। इसके अतिरिक्त दूध, फल, एवं जूस।
३- शरीर में शक्ति का संचार बढ़ा है। स्फूर्ति भी बढ़ी है।
४- देखने में शरीर का रंग साफ हो रहा है, शरीर भरना शुरू हुआ है।
५- पहले ५,७ दिन पर बुखार और सिर दर्द हो जाया करता था। दवा सेवन के बाद से बुखार और सिरदर्द नहीं हुआ।

कुल मिलाकर हालत पर्याप्त सन्तोषजनक दिखाई देती है। इसीलिए मैं आपको, आपके सहयोगियों और सेन्टर को साधुवाद देता हूं और आप लोगों के निरंतर प्रगतिमय होने की कामना करता हूं।

पत्रांक व्यक्तिगत/96-97/- 722 -- दूसरी बार 25-7-96   दिनांक 26-8-96

सेवन करा रहा हूँ। इससे बहुत फायदा हुआ है, भूख बढ़ी है। अब तक 8 किलो वजन बढ़ा है। शरीर मे शक्ति का संचार हुआ है। स्फूर्ति आई है।

भवदीय
26/8
(कल्पनाथ सिंह)

(सन्दर्भ- ७०)

जुलाई ९६ से से दवा चल रही है, वजन भी 18kg
बढ़ा उन्हीं तौर पर देखने से बिल्कुल स्वस्थ लग रही हैं।
आती बार दि० 10.96 को — हरि सिंह
27.11.96

श्रीमती शारदा देवी w/o श्री कल्याणनाथ सिंह श्री गाँधी आश्रम मेरठ
दवा ... से चल रही हैं, वजन भी ... है। इस समय किसी
प्रकार की कोई परेशानी नहीं है — हरि सिंह
25.12.96

मरीज का नाम श्रीमती शारदा देवी ... जनवरी सन् 1996
से चल रही है, काफी फायदा हुआ, इस समय किसी प्रकार की कोई परेशानी
नहीं है।
21.3.97

इस समय उन्हें किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं
है। स्वास्थ्य भी इस समय अच्छा है — हरि सिंह
26.6.97

दवा करीब 14 माह से चल रही अब मरीज़ा अपने को एक दम
स्वस्थ महसूस कर रही है किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।
27-7-97

मरीज को किसी प्रकार की परेशानी नहीं है करीब तीन माह से
एक दिन के अन्तर पर दवा दी जा रही है। — हरि सिंह
27.10.97

(सन्दर्भ-७० बी)

मरीज़ का नाम श्रीमती शारदा देवी w/o श्री कल्याणनाथ सिंह मंत्री
श्री गाँधी आश्रम, मेरठ की दवा जनवरी सन् 1996 से चल रही है।
इस समय एक दम ठीक है चार माह से दवा एक दिन के अन्तराल
पर चल रही है। अभी दवा कितने दिन चलेगी। मरीज़ बहुत
स्वस्थ है।
— हरि सिंह
23-1-98

(सन्दर्भ-७० सी)

से तैयार होती हैं, जो स्वास्थ्य के लिए केवल गुणकारी हैं। स्वास्थ्य पर प्राकृतिक भोज्यों का प्रतिकूल प्रभाव तो संभव ही नहीं है।

२७-८-९७ की रिपोर्ट : "काफी फायदा है। इस समय किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।"

दिनांक २७.१०.९७ की रिपोर्ट : "मरीज को किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। करीब तीन माह से एक दिन के अन्तर पर दवा दी जा रही है।"

दिनांक २३.०१.९८ को श्री हरि सिंह ने श्रीमती शारदा देवी के स्वास्थ्य के विषय में रिपोर्ट देते हुए लिखा कि वे इस समय एकदम ठीक हैं और पिछले चार माह से दवा एक दिन के अन्तराल पर ले रही हैं। *(सन्दर्भ- ७० सी)* ❑

१३

गाल ब्लैडर और लीवर (दोनो लोब्स)
CA. GALL BLADDER (LIVER METASTASIS BOTH LOBES)

श्रीमती लीना होम चौधरी, ६५ वर्ष
द्वारा : श्री ए. एच. चौधरी
एच/३, जवाहर क्वार्टर
मेरठ कैण्ट (उ. प्र.)

जाँच : ऑल इण्डिया इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, नयी दिल्ली- २६ सी. आर. नं. ४२७११५, विभाग-सर्जरी। भर्ती-२६-५-६५, ऑपरेशन-६-६-६५, डिस्चार्ज-१४-६-६५।

रोगिणी का पेट खोलकर देखने से पता चला कि गाल ब्लैडर में कैन्सर का ट्यूमर है, लीवर के दोनों लोब्स में कैन्सर की मेटास्टेसिस पहुँच चुकी है, जलोदर नहीं है।

Fu no : 241/95 M. R. 2 Discharge Summary

All India Institute of Medical Sciences, New Delhi—110029

DISCHARGE SUMMARY

C. R. No. 427115 Deptt. Surgery Unit IV D. O. Ad. 29/5/95 D. O. Op. 9/6/95 D. O. Dis. 14/6/95

Name. Leena Hom Chaudhary Age 65 Sex. F Admitted from OPD/Casualty/Clinic No.
Address. [illegible] Western Road, [illegible]

DIAGNOSIS- SOJ — Ca GB

Hospital Course including Treatment Given and Operative Findings: Exploratory laparotomy and (L) hepatico jejunostomy done under GA on 9/6/95
Operative findings : - Growth in GB
Liver metastasis (+) both lobes
No ascites
Serosal surface (+)

Signature of Junior Resident [signature]

(सन्दर्भ- ७१)

रोगिणी को पेट-दर्द एक वर्ष से था और पीलिया लगभग बीस दिनों से था, जो क्रमशः बढ़ रहा था।

सर्जरी के अन्तर्गत और कुछ न करके केवल 'हेपाटिको जेजुनोस्टोमी' कर दी गयी ताकि शरीर से पित्त का बोझ कुछ कम हो जाय। *(सन्दर्भ- ७१)*

'सर्वपिष्टी' की ओर : कैन्सर की नियति, उसकी उग्रता और विस्तार, रोगिणी की आयु-अवस्था तथा स्वास्थ्य-स्थिति को देखते हुए किसी पारम्परिक चिकित्सा का समावेश संभव नहीं था। किसी अनुभवी चिकित्सक ने कह भी दिया, ''लीवर में पहुँचा हुआ कैन्सर वैसे भी अधिकतम चार-छह माह की जिन्दगी मंजूर करता है। यहाँ पर रोग और रोगिणी की हालत 'दिनों' की बात सोचने की मोहलत देगी।'' उन्होंने राय दी, ''रोगिणी को आराम दें, खाने-पीने की सावधानी बरतें और लक्षणों के आधार पर सामान्य दवाएँ दें, जब तक .....।'' किसी स्रोत से डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिलने पर 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ की गई।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ६-७-६५

६-७-६५ को रोगिणी की हालत

वजन ४५ किलोग्राम, भूख की अनुभूति भी नहीं, अम्ल बनना, नींद अच्छी नहीं, भीषण कमजोरी, शक्ति और स्फूर्ति का अभाव, पाखाना साफ नहीं, तीव्र दर्द का रहना। बाई पास सर्जरी होने से पीलिया उतर गया था।

प्रगति-विवरण : रोगिणी की हालत में दिन-ब-दिन सुधार होता गया। धीरे-धीरे भूख लगने लगी, पाचन ठीक होने लगा, कमजोरी दूर होती गयी, शक्ति और स्फूर्ति आई, दर्द शान्त हो गया। ज्यों-ज्यों समय बीता, स्वास्थ्य में सार्वत्रिक सुधार होता गया। रोगिणी का वजन भी बढ़ने लगा और दिनचर्या सामान्य होने लगी। वे चलने-फिरने लगीं और रोग को भूलकर पारिवारिक प्रसंगों में सहभागिनी बनती गयीं।

समय के साथ आशंका और भय मिटते जा रहे थे। श्रीमती चौधरी उत्साह और उल्लास का जीवन जीने लगी थीं। परिवार के लोग बहुत प्रसन्न थे। अगर लीवर का कैन्सर शान्त रहे, जीवन सुखमय रहे तथा पीड़ा और उलझाव से मुक्ति रहे, तो 'दिनों' में काटी गयी वृद्धावस्था से भी सन्तोष था। परिवार का वातावरण तनावमुक्त हो चुका था। दिन बीते, महीने बीते, अच्छे बीते और साल पूरा होने लगा। वे विचार कर रहे थे कि औषधि (सर्वपिष्टी) फिर भी कम-से-कम एक वर्ष चला दी जाय।

लगभग ग्यारह माह बाद की रिपोर्ट

दिनांक २८.०५.९६ को श्रीमती चौधरी के दामाद ने बारहवें महीने के लिए 'सर्वपिष्टी' का कोर्स प्राप्त किया। उन्होंने रोगिणी की स्वास्थ्य-दशा के विषय में यह रिपोर्ट दी,

Presently Appetite improved., energy improved,
interested in light house hold job. Cheerful
mind, sleeping improved overall improvement
satisfactory. Lot of progress on physical health.
Patient presently staying in Meerut (UP)

[signature] 28/5/96
Relationship with patient - Son in law.

(सन्दर्भ- ७२)

"वर्तमान समय में उनकी भूख सुधर गयी है, शक्ति और स्फूर्ति आ गयी है। वे घर-गृहस्थी की मनोरंजक बातों में खूब रुचि लेती हैं। मन से प्रसन्न हैं, नींद में भी सुधार हुआ है। शारीरिक स्वास्थ्य में अच्छा सुधार हुआ है। आजकल वे मेरठ में हैं। सुधार सन्तोषजनक है।" *(सन्दर्भ- ७२)*

रिसर्च सेण्टर द्वारा उन्हें सुझाव दिया गया कि औषधि तब तक चलायी जानी चाहिए, जब तक जाँच नहीं हो जाती कि कैन्सर की क्या स्थिति है। किन्तु क्या कुछ किया गया, इसकी जानकारी नहीं मिल सकी। केन्द्र की ओर से उनका समाचार प्राप्त करने के लिए जो पत्र दिये गये, उनके उत्तर भी नहीं आये।

इस कथा को कैन्सर से पूर्ण-मुक्ति की कथा का दर्जा डी. एस. रिसर्च सेण्टर भी नहीं देता। किन्तु लीवर के कैन्सर-केस के लिए इस कहानी में वर्णित हालात भी महत्वपूर्ण माने जाएँगे। रोगी के नौकरी पेशे वाले अभिभावकों के पते बदलते रहते हैं। वैसे श्रीमती चौधरी का कैन्सर-कष्ट यदि दुबारा बढ़ा होता, तो उनके अभिभावक डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क अवश्य करते, क्योंकि चिकित्सा के अन्य दरवाजों से तो वे पहले ही लौटा दिये गये थे।

❑

वैज्ञानिकों का कहना है कि सभी सर्प-जातियाँ जहरीली नहीं होती हैं। वैज्ञानिकों का ही कहना है कि ड्रगों से निर्मित सभी दवाएँ जहरीली होती हैं।

कुशल सँपेरे जहरीले सर्पों के भी विष-दन्त तोड़कर दंश से बचाव का इन्तजाम कर लेते हैं। ड्रगौषधियों को विष-दन्तों से मुक्त नहीं किया जा सकता। इनकी तो छोटी-से-छोटी मात्रा भी जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डालने से नहीं चूक सकती।

पेट का कैन्सर
(CA. STOMACH)

श्री घनश्याम दास तोलानी
उम्र : ६५ वर्ष
द्वारा डॉ महादेव प्रसाद तोलानी
स्टेशन रोड, भदोही

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : स्पेसियलटी रैनबैक्सी लिमिटेड, मुम्बई (एसेसन ०००२६एल०००७५६, दिनांक ०८.१२.६६) *(सन्दर्भ-७३)*, वाराणसी हास्पीटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सेण्टर, जवाहरनगर, वाराणसी। *(सन्दर्भ-७४)*

Specialty Ranbaxy Limited

CLINICAL REFERENCE LABORATORIES

Patient Name : [illegible]
Sex : Male
Age :
Patient ID :
Referring Physician : Dr. B. N. Prasad
Biopsy Date :
Specimen Type : Partial gastrectomy.
Block No. :

Client : Dr. B. N. Prasad	Account #	SRL Accession # [illegible]
	Received Date 03.12.99	Reported Date 08.12.99

HISTOPATHOLOGY REPORT

SPECIMEN Partial gastrectomy.

GROSS Stomach measuring 8 cms along lesser curvature and 20 cms along the greater curvature is received. On opening the stomach is seen a growth measuring 3 cms in length. On cut surface the growth is white, mucoid infiltrating half the thickness of the wall. The tumour is 1 cms from proximal cut margin and 5 cms from the distal cut margin. Pedicle is identified. No lymphnodes dissected from the adjoining fat.

MICROSCOPIC Ulceration of the gastric mucosa with presence of diffuse sheets of tumour cells is seen. The individual cells possess vesicular eccentric nuclei and clear to foamy cytoplasm. The tumour infiltrates half the thickness of the wall. The tumour is well away from both the cut margins. The pedicle is negative.

DIAGNOSIS SIGNET RING ADENOCARCINOMA.

Ramesh B. Deshpande, MD — Consultant Pathologist
Sital Bhatia, MD — Pathologist
C. S. Soman, MD — Consultant Oncopathologist

(सन्दर्भ-७३)

श्री घनश्याम दास तोलानी को किन परिस्थितियों ने कैन्सर का शिकार बना दिया उन्हीं के शब्दों में जानते हैं : ''पहले पेट में कुछ तकलीफ होने लगी। दिखाने के बाद डॉक्टरों ने अल्सर बताया। दवा खाने के बाद आराम हो जाता था। फिर कुछ दिनों बाद मैं कई डॉक्टरों से मिला। कई तरह के जाँच कराये गये, जैसे ब्लड, यूरिन, स्टूल जाँच के साथ ही एक्स-रे कराया गया। मुझे बताया गया कि पेट में इतना घाव बढ़ गया है कि उसके ऊपर

B-27/33-50 Jawahar Nagar Extension, Bhelupur, Varanasi-221010
Phone : 311271, 310596, 313432

DISCHARGE RECORD

Name Mr. Ghanshyam Das	Age/Sex. 65/M	H. N. 1324 Bed/Cabin 23
Date of Admission 30/11/95	Date of Discharge 13/12/95	Consultant Dr. [illegible] (FRCS)

COMPLAINTS & RELIVENT HISTORY: C/o. Malena · [illegible] on/off
H/o. Mild Pain in whole Abdomen on/off 3 year. Irregular bowel. 2 month.
Diabetic - [illegible] on medicine
Occasionally Burning Abdomen

EXAMINATION: O/E — Pallor (+) Pulse- 100/M
B.P.- 130/80 mmHg chest. B/L clear.
P/A · Soft ·

INVESTIGATIONS: 30/11/95 . Hb. 7.4 TC 10500. P-73. L.17. E.[illegible]. B.Sugar R [illegible] B.Urea - 40.8 S.Creatinine [illegible] Sodium 137. Potassium -3.7 Chlorides 100. 1/12/95 - B.Sugar-246.8(R) B.Urea. [illegible] S.Creat [illegible] Sodium 138. Potassium 2.8 Chlorides -96. 3/12/95 - B.Sugar - 124 · S.Creatinine 1. Sodium 140. Potassium 3.7 Chlorides 101 · 5-12-95 B.Sugar 70 · R · 7/12/95 - B.Sugar 108 (R) 11/12/95 - Hb - 11.1 B.Sugar . 82.5 (Fasting)

TREATMENT/ OPERATION.: Lap done Under G A [illegible] Ca Stomach [illegible] done. [illegible] given [illegible] Biopsy send · on 1.12.95.

RESULT: Improved.

BIOPSY REPORT: [illegible] . Signet Ring Adenocarcinoma

FINAL DIAGNOSIS: Ca Stomach.

ADVICE: [illegible]
[illegible]
Syp. [illegible] 1BD.
Syp. [illegible]
[illegible]

Signature [illegible]

(सन्दर्भ-७४)

पपड़ी की तह जम गयी है। मैंने गैस्ट्रोलाजिस्ट डॉ एन के यादव को दिखाया। उन्होंने इण्डो-स्कोपी करने के बाद बताया कि मुझे कैन्सर हो गया है और तुरन्त आपरेशन करने की सलाह दी।

मैं बी. एच. यू. के रिटायर्ड डॉक्टर प्रोफेसर जी. सी. पन्त के साथ डॉ एस. के. राय के घर जाकर मिला *(सन्दर्भ-७५)*। उन्होंने कहा कि आप किसी नर्सिंग होम अथवा हास्पीटल में भर्ती होकर हमें सूचित करिये, हम वहीं आपका आपरेशन कर देंगे। मुझे

Pramod Kumar Rai
Consultant Surgeon and
Laparoscopic Surgeon
R.K. Mission Hospital, Varanasi

Varanasi - 221005

(सन्दर्भ-७५)
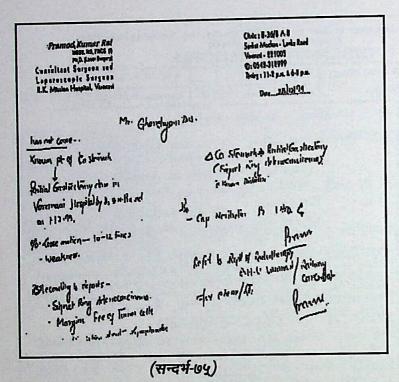
आपरेशन से डर लग रहा था। मैंने आपरेशन नहीं कराया।

पन्द्रह दिनों के बाद ही मेरी हालत ऐसी हो गयी कि खाना-पीना बिल्कुल बन्द हो गया। दिन भर में केवल दो-तीन चम्मच पानी ही पीते थे। जब मैं बहुत परेशान हो गया तो फिर डॉक्टर बैजनाथ, डॉ. जी सी पन्त और डॉ. एस के राय को दिखाया। इन लोगों ने हमें साफ जवाब दे दिया कि अब बचने की कोई उम्मीद नहीं है। हम लोग आपका आपरेशन नहीं कर पायेंगे। डॉक्टरों ने मेरे घरवालों से कहा कि आप लोग इन्हें लेकर तुरन्त टाटा मेमोरियल इन्स्टीट्यूट मुम्बई ले जाइये। हमारे घर वालों ने मुम्बई जाने के लिए हवाई टिकट भी मंगवा लिया और एयरपोर्ट ले गये। एयर पोर्ट पर हमसे कहा गया कि ऐसे रोगी को हवाई जहाज से मुम्बई नहीं ले जा सकते क्योंकि ये रास्ते में ही गुजर जायेंगे। हारकर हम लोग वापस वाराणसी अपने भाई के घर आ गये। मेरा छोटा भाई डॉक्टर बैजनाथ से मिला और बोला कि आप मेरे भाई का आपरेशन कर दीजिए, जो भी होगा हम उसे स्वीकार करेंगे। उनकी रजामन्दी के बाद डॉ. बैजनाथ के वाराणसी रिसर्च सेण्टर में भर्ती करा दिया गया। दूसरे दिन मेरा आपरेशन कर दिया गया। आपरेशन करके जो हिस्सा निकाला गया था, उसे जाँच के लिए मुम्बई भेज दिया गया। वहाँ से रिपोर्ट एक सप्ताह बाद आयी। डॉक्टर बैजनाथ एवं डॉक्टर जी सी पन्त ने कहा कि जब आप थोड़ा तन्दुरुस्त हो जायँ तो आपको किमोथेरापी करानी पड़ेगी। लगभग २० दिनों के बाद उन्होंने हमें डिस्चार्ज कर दिया।

लगभग ३-४ महीने वाराणसी में अपने छोटे भाई के मकान पर रहे और डॉक्टर जी सी पन्त को घर पर बुलाकर चेकअप कराते रहे। तीन महीने बाद उन्होंने कहा कि अब आप किमोथेरापी करा सकते हैं। उन्होंने मेरे छोटे भाई से यह भी कहा कि किमोथेरापी से रियेक्शन हो सकते हैं, जैसे पागल हो जाना, लकवा मार देना, सारे बाल साफ हो जाना। ये सारे रियेक्शन सुनकर मैं डर गया। मैंने कहा कि मैं किमोथेरापी नहीं लूँगा।

दि. 1-6-01

मरीज का नाम : घनश्याम दास तोलानी
डी. 12/112, बी-2 [illegible]
भेलूपुरा, वाराणसी
8 स्टेशन रोड, भदोही

मरीज की स्थिति :- B.P. - Normal
Sugar - 180
Liver - Normal
H.B. - 12.5
Wt. - 54 kg.

अन्य कोई भी तकलीफ नहीं है पहले से बहुत आराम है।

दवा : एक माह के लिये

Thanking you
Yours
[illegible]
1/6/01

(सन्दर्भ-७६)

मेरे भाई के मित्रों ने भाई से कहा कि अगर तुम्हारे भैया किमोथेरापी नहीं लेना चाहते तो डी. एस. रिसर्च सेण्टर जाकर अपने भैया के लिए दवा ले लो। हम लोगों ने आपस में सलाह करके डी. एस. रिसर्च सेण्टर से दवा मंगायी और मैंने खाना शुरू कर दिया।

दो महीने सेण्टर की दवा खाने के बाद हमको इतना आराम हो गया कि हम सब कुछ खाने-पीने लगे। वजन भी बढ़ गया। ब्लड टेस्ट कराने पर हमें पता चला कि हिमोग्लोबीन भी बढ़ने लगा। हमारा उत्साह भी बढ़ने लगा कि अब मैं ठीक हो रहा हूँ।

छह महीने दवा खाने के बाद डॉक्टर बैजनाथ के पास चेकअप के लिए गया। वहाँ उन्होंने हर प्रकार की जाँच, ब्लड, अल्ट्रासोनोग्राफी एवं अन्य जाँच की। सारी रिपोर्ट देखने के बाद हमें गहरी नजर से देखने के बाद हँसने लगे और उन्होंने कहा कि आप हमसे कोई बात छुपा रहे हैं। बगैर किमोथेरापी के आप स्वस्थ कैसे हो रहे हैं। मैंने उनसे सारी सचाई बयान कर दी कि लगभग आठ महीने से डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि का सेवन कर रहा हूँ। यह सुनकर डॉक्टर जी सी पन्त को उन्होंने बुलवाया एवं हमसे साक्षात्कार कराकर हमारी सारी रिपोर्ट उन्हें दिखायी। तब दोनों डॉक्टरों ने हमसे कहा कि तोलानी जी, अब आप वहीं की दवा करते रहिये, अब किमोथेरापी कराने की जरूरत नहीं है। आपको एक नया जीवन मिला है। हमारी भी शुभकामना आपके साथ है।

आज मुझे यह औषधि लेते हुए लगभग डेढ़ वर्ष हो गया। मैं हर छह महीने पर जाँच कराता रहा जिसमें रिपोर्ट नार्मल आती रही। *(सन्दर्भ-७६)* अब मैं अपने आपको पूर्ण स्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। अब तो सेण्टर एक दिन के अन्तराल पर औषधि लेने के लिए देता है।"

LABORATORY REPORT

CLIENT CODE : [illegible]

CLIENT'S NAME AND ADDRESS :
[illegible]
MAHMOORGANJ, LAXMI CINEMA COMPLEX,
VARANASI 221 010

UTTAR PRADESH, INDIA Ph. No .0542362584

Specialty Ranbaxy Limited
CLINICAL REFERENCE LABORATORIES
Plot 113, MIDC, 15th Street, Andheri (East), Mumbai 400 093.
Tel. : 690 3851 Fax : 690 3865

REFERRING DOCTOR PANT G C (DR)

DRAWN 29/05/2001 RECEIVED 31/05/2001 REPORTED 31/05/2001 16.20

PATIENT NAME DAS GHANSHYAM

ACCESSION No. [illegible]5929 AGE 66 Years SEX Male DATE OF BIRTH PATIENT ID

CLINICAL INFORMATION

TEST REPORT STATUS FINAL

	RESULTS			
	IN RANGE	OUT OF RANGE	REFERENCE RANGE	UNITS
CEA				
CEA (CHEMILUMINESCENCE)	0.98		SMOKERS < 5.0 NON-SMOKERS < 3.0	NG/ML

CEA
LESS THAN 10% OF DUKES A, 45% OF DUKES B,70% OF DUKES C AND D STAGE COLORECTAL CARCINOMA HAVE CEA CONCENTRATIONS MORE THAN 3.0 NG/ML. CONCENTRATIONS MORE THAN 20 NG/ML INDICATES AN 80% LIKELIHOOD OF DISEASE REOCCURANCE PARTICULABLY IF RAPIDLY RISING (MORE THAN 12.5% PER MONTH). CEA CAN BE ALSO ELEVATED IN PATIENTS WITH LIVER DISEASE AND ULCERATIVE COLITIS

Dr. SUMEDHA SAHNI, MD
Director-Central Clinical Lab Operations
Page 1 of 1

[illegible]

PARTIAL REPRODUCTION OF THIS REPORT IS NOT PERMITTED

(सन्दर्भ-७७)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १५.०१.२००० से।

सर्वपिष्टी के सेवन के बाद की कहानी आप श्री तोलानी के शब्दों में ही जान चुके हैं। श्री तोलानी का यह प्रसंग कई मामलों में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। किमोथेरापी के बारे में भी यह एक उदाहरण है कि किमोथेरापी न लेना उसे लेने से ज्यादा अच्छा होता है। जो रोगी साहस करके किमोथेरापी से दूर रहते हैं उन्हें स्वस्थ हो जाने की संभावना अधिक रहती है। श्री तोलानी जी के मन में सर्वपिष्टी के सेवन के बाद की जाँच रिपोर्टों को देखकर यह संभावना प्रबल हो गयी कि वे बिल्कुल ठीक हो जायेंगे और ऐसा ही हुआ। *(सन्दर्भ-७७)*

१५

गाल ब्लैडर का कैन्सर
(CA. GALL BLADDER)

श्रीमती देवदत्ती सिंह, ७२ वर्ष
श्री बी. एन. सिंह
वाराणसी

तब श्रीमती देवदत्ती सिंह ६८ वर्ष की थीं। स्वास्थ्य में कई उपद्रव थे, फिर गाल ब्लैडर का कैन्सर अलग से। अब वे वर्षों से कैन्सर-मुक्त हैं, जो गाल ब्लैडर के क्षेत्र में एक बड़ी घटना है। उनकी चिकित्सा में 'सर्वपिष्टी' के अतिरिक्त एस. एस. हॉस्पीटल, बी. एच. यू. वाराणसी की चिकित्सा भी चली। वहीं ऑपरेशन हुआ, और आगे किमोथेरापी भी चली। किमोथेरापी का लक्ष्य शरीर में उपस्थित कैन्सर-कोशिकाओं को नष्ट करना है। अतः स्पष्ट है कि ऑपरेशन से कैन्सर का पूरा उच्छेदन नहीं हो सका था।

श्रेय किस चिकित्सा को जायेगा, यह विवाद नहीं है। एक बड़ी विजय पायी गयी है, यह बहुत है। पोषक ऊर्जा एक नयी उपलब्धि है, और अन्ततः इसे चिकित्सा की व्यापक प्रयास-धारा में शामिल हो जाना है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के साथ यह संकीर्णता कभी नहीं रही कि चिकित्सा के अन्य प्रयासों की निन्दा की जाय। समय पर 'सर्वपिष्टी' शुरू करने के पूर्व अथवा बाद में भी चिकित्सा की आवश्यकता को ध्यान में रखकर हम सर्जरी अथवा रेडियेशन का सहयोग लेने के लिए परामर्श देते हैं, यदा-कदा हल्की किमोथेरापी के प्रति भी उदार रुख अपनाते हैं।

पूर्व चिकित्सा एवं जाँच

दिनांक २१-८-९३ को डॉ. एन. एन. खन्ना ने ऑपरेशन करके गाल ब्लैडर निकाल दिया।

बायाप्सी जाँच से 'पेपिलरी एडेनो कार्सिनोमा ऑफ गाल ब्लैडर' का पता चला (आई.एम. एस. एण्ड एस. एस. हॉस्पीटल, बी. एच. यू. के सर्जन प्रो. एन. एन खन्ना द्वारा कराई गयी माईक्रोस्कोपी जाँच नं. १-४४२७८/४२२८-९०,दि. ८.९.९३)। *(सन्दर्भ- ७८)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २०-९-९३ (ऑपरेशन जनित उपद्रवों के शान्त होते ही)।

प्रगति : उतार और चढ़ाव के बीच भी प्रगति साफ झलकती थी। किमोथेरापी चलती

1. 44278 / 4288-90

INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

AND

S. S. HOSPITAL

BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI

Laboratory Examination Report

Patients Name Mr. B. P. Singh

Age/Sex 65/M Ward / O.P.D. ? Bed No. / O.P.D. No. ?

Specimen Gall bladder Report No.

Ref. by Dr. [illegible] N. Sharma

MICROSCOPY

Diagnosis: Papillary Adenocarcinoma of Gall Bladder

Date of Receipt / Date of Despatch 21/8/93

8/9/93

Pathologist / Microbiologist

(सन्दर्भ- ७८)

और स्वास्थ्यगत शान्ति हिल जाती। धीरे-धीरे एक आश्वासन की ओर बढ़ा गया। कुछ महीने बाद प्रगति स्थिर दिखाई देने लगी। १-१-९४ को अल्ट्रासोनोग्राफी ने 'नॉर्मल स्टडी' बताई अर्थात् गाल ब्लैडर से शुरू कैन्सर की आँधी पर अंकुश लग गया था।

'सर्वपिष्टी' भी अन्तराल के साथ चलने लगी। १९९४ पूरा हुआ और जनवरी १९९५ के बाद से 'सर्वपिष्टी' चलाने की आवश्यकता भी नहीं समझी गयी। इसी संदर्भ में रोगी

Date 9.2.95

महोदय,

आपके पत्र दिनांक 30-12-94 के संदर्भ में आपको सूचित करना है कि आपका रोगी श्री [illegible] डी० सिंह इस समय स्वस्थ हैं तथा अपने दैनिक कार्य में सक्षम हैं। इस समय उन्हें कोई कष्ट नहीं है।

(सन्दर्भ- ७९)

Date 6.4.96

डी. एस. शोध संस्थान,

महोदय,

मुझे आपको सूचित करते हुए हर्ष होता है कि आपकी दवाई से श्रीमती [illegible] देवी कैंसर से पूरी तरह से मुक्त हैं तथा उस रोग की शिकायत अब नहीं है। परन्तु पिछले [illegible] मास में वे लकवा (Paralysis) की शिकार हो गई थीं, जिसका इलाज चल रहा है तथा उनकी स्थिति में काफी सुधार है। धन्यवाद सहित

(सन्दर्भ- ८०)

मरीज़ का नाम श्रीमती देवकी सिंह

मरीज जो कि Cancer से पीड़ित थी। उसका उन्मूलन पूर्णतः हो गया 1994 में। नवम्बर-95 में उनको paralytic attack हुआ जिसमें कि बहुत Blood pressure (High) था। Blood pressure की बीमारी पहले से थी। Blood pressure की दवा अभी भी चल रही है।

कैन्सर का उन्मूलन [illegible] का एकमात्र कारण है D.S. Research सेन्टर की दवा का प्रभाव

दि० 23/05/97

[illegible signature]

(सन्दर्भ- ८१)

के बारे में दि. ६-२-६५ तथा ६-४-६६ के पत्रांश यहाँ उद्धृत हैं *(सन्दर्भ- ७६ और सन्दर्भ-८०)।*

२३-५-६७ की रिपोर्ट :

"मरीज जो कि कैन्सर से पीड़ित थी, उसका (कैंसर का) उन्मूलन पूर्णतः हो गया। (उधर) १६६४ के नवम्बर में पक्षाघात का आक्रमण हो गया था, ब्लड प्रेशर भी ऊँचा था। वे समस्याएँ हैं।

कैन्सर उन्मूलन का एकमात्र कारण तो डी. एस. रिसर्च सेण्टर की दवा का प्रभाव ही है।" *(सन्दर्भ- ८१)* ❑

१६

गाल ब्लैडर व लीवर का कैन्सर
(CA. GALL BLADDER) LIVER

श्रीमती लीलावती दास, ८० वर्ष

द्वारा : डॉ. अमला पात्रा
फ्लैट नं. ३५१
बी. पी. टाउन शिप
कलकत्ता-८४

रोग का इतिहास : श्रीमती लीलावती दास केवल वृद्धावस्था का ही नहीं, वर्षों से अनेक स्वास्थ्य-समस्याओं और असाध्य रोगों का बोझ खींचती चल रही थीं। सभी समस्याएँ अपने-आप में जटिल थीं- श्वास-रोग, हृदय की

Medinova
DIAGNOSTIC SERVICES

MRS. LILABATI DAS | FEMALE | 78
5159771 | 18.11.94 | 19.11.94
CGHS

X-RAY CHEST PA

Cardiomegaly with unfolding of aorta is noted.

DR. TAPAN BHOWMIK
MD(CAL)
SR. RADIOLOGIST.

(सन्दर्भ- ८२)

प्रमुख धमनी का फैल कर तन जाना, *(सन्दर्भ- ८२)* अस्थि-शोथ (स्पान्डेलाइटिस), *(सन्दर्भ- ८३)* गाल ब्लैडर की पथरियाँ। सभी समस्याएँ कष्ट दायक थीं, किन्तु १९९४ में भूख समाप्त होने लगी, पेट में तीव्र वेदना रहने लगी, और कुछ महीनों बाद ही पीलिया (जान्डिस) उभर आया। *(सन्दर्भ- ८४)*

जाँच और चिकित्सा के लिए उनकी बेटी लेफ्टिनेन्ट कर्नल श्रीमती सुजाता दास उन्हें सैनिक कमाण्ड अस्पताल, अलीपुर ले गयीं। जाँच से पता चला कि गाल ब्लैडर अनेक

Medinova
DIAGNOSTIC SERVICES

MRS. LILABATI DAS

CT No 5300, dated 18/19.11.94

- 2 -

Retroperitoneum : Extensive calcifications seen in wall of abdominal aorta (Atherosclerosis).

There is no periaortic and porta lymphadenopathy.

Bones :: There is spondylotic changes in lumbar spine.

DR. S.L. KEDIA
MD PGI CHANDIGARH
SR. RADIOLOGIST.

(सन्दर्भ- ८३)

पथरियों से जकड़ दिया गया है। रोगिणी को पीड़ा से बाहर निकालने का एकमात्र मार्ग था, सर्जरी के द्वारा गाल ब्लैडर को निकाल देना। सावधानीपूर्वक (२६.८.६४ को) ऑपरेशन करके गाल ब्लैडर को तो निकाला गया, किन्तु वहाँ एक नयी और सबसे खतरनाक स्वास्थ्य-समस्या उपस्थित देखी गयी। वह समस्या थी, गाल ब्लैडर का

AOD 29/8/94
CONFIDENTIAL

CH (EC) CALCUTTA

LAB INVESTIGATION FORM (HAEMATOLOGY) — Ward/OPD: Off. Fam

Name : Lilabati Das — Age : 76 yrs — Relation : W/O

Name : W/o S. Das — Number: NR 15467 — Rank : Lt Col

Unit : 158 BH — Age : — Service :

Examination Required (Tick mark): USG (Abdomen, GB, CBD.)

Clinical notes / Provisional diagnosis : Calculus cholecystitis E Jaundice

Date : 22/8/94 — CONFIDENTIAL — (Sig of MOIC) Maj. S. Chaturvedi

USS Abdomen Shows!
1) MULTIPLE GALLSTONES

(सन्दर्भ- ८४)

COMMAND PATHOLOGY LABORATORY EASTERN COMMAND
CALCUTTA-700 027

Biopsy No. B/11121/94
Cytology No. C/—
FNAC No./ —

Hospital CH(EC) CALCUTTA-27 Ward OFFS FAM

PARTICULARS OF THE PATIENT

Patient's Name — Relationship M/O Age —

No. MR 15467 Rank LT COL Name MRS SUJATHA DASS

Unit 158 B.H

Nature of specimen GALL BLADDER

In 26.8.94 Out ____ No. of Blocks TWO

Impression :- Mucin Secreting Adenocarcinoma Gall Bladder - ? Primary ?? Metastatic.

(C R Bhangui)
Col
Sr Adv(Path)
Sep 94

(सन्दर्भ- ८५)

कैन्सर। कैन्सर के प्रारम्भिक विन्दु की जानकारी नहीं हो सकी। पता नहीं चल सका कि वही प्राइमरी है अथवा पेट, आदि के क्षेत्र में प्राइमरी है, जहाँ से मेटास्टेटिस ने गाल ब्लैडर को पकड़ा है। बायाप्सी जाँच से कैन्सर की पुष्टि भी हो गयी। *(सन्दर्भ- ८५)*

D. S. Research Centre
साप्ताहिक सूचना (Weekly Report)

Packet.No. 17 and 18 Dated 28.2.95 to 14.3.95 तक

रोगी का नाम
Name of the Patient Mrs Sujatha Das

(१) रोगी की वर्तमान समस्याएं
Present Problems No Problems.

(२) क्या प्रगति हुई
Improvement Improving, weight gained

हस्ताक्षर/Signature 13/3/95

दिनांक/Date 13/3/95

रोगी से सम्बन्ध
Relation with Patient

(सन्दर्भ- ८६)

खैर, चिकित्सा से इस बात का कम लेना-देना रहता है कि प्राइमरी कहाँ है। गाल ब्लैडर और लीवर यदि कैन्सर की गिरफ्त में आ गये, तो जीवन के विरुद्ध खड़ा खतरा अपने चरम पर माना जाता है।

अक्टूबर में हल्की किमोथेरापी दी गयी। गाल ब्लैडर के हटने से रोगिणी आराम अनुभव कर रही थीं, किन्तु परिजनों को तो खतरे के आगामी उभार को लेकर गहरी चिन्ता थी।

Name of the Patient — Mrs. Lilabati Das

W.e.f. 5.11.94 regularly medicine from the D.S. Research centre the patient is taking. No problem till today is arising. Appetite, digestion, sleep etc overall are good. Her appearance looks better than before. No problem of stone or urine also.

Nirupama Roychaudhury
Relation with the patient
— Daughter
dt. 4.4.96

(सन्दर्भ- ८७)

'सर्वपिष्टी' की ओर : वृद्धावस्था तथा अन्य रोगों के जंगल में कैन्सर की अन्य किसी चिकित्सा के लिए गुंजाइश नहीं के बराबर थी। अतः परिजनों ने रोगिणी को पोषक ऊर्जा की निरापद खूराकों द्वारा मदद देने का फैसला किया।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ दिनांक ५.११.६४

प्रगति : श्रीमती दास पर पोषक ऊर्जा के खूराकों ने इतना उत्तम प्रभाव देना शुरू किया जिसकी अपेक्षा नहीं की गयी थी। उनका स्वास्थ्य तेजी से सुधरने लगा- भूख और नींद नियमित हो गयी, शरीर में शक्ति आयी, वे प्रसन्न रहने लगीं और प्रसन्न दिखायी भी देने लगीं। केवल इतना ही नहीं उनके श्वास-कष्ट, अस्थि-शोथ और प्रमुख धमनी की जड़ता ने भी शान्त होते जाने के संकेत दिये।

चार माह बाद की रिपोर्ट : दिनांक १३.३.६५ को उन्नीसवें तथा बीसवें सप्ताह की औषधि के लिए आयी उनकी पुत्री ने रिसर्च सेण्टर को रिपोर्ट दी "कोई समस्या (स्वास्थ्य-सम्बन्धी) नहीं है। प्रगति हो रही है, वजन भी बढ़ा है।" *(सन्दर्भ- ८६)*

डेढ़ वर्ष बाद की रिपोर्ट : रोगिणी की पुत्री निरूपमा राय चौधुरी ने डेढ़ वर्ष बाद दिनांक ४.४.६६ को रिपोर्ट दी *(सन्दर्भ- ८७)*—

D. S.RESEARCH CENTRE,
147 - A, Ravindrapuri (New Colony),
Lane No. 8,
Varanasi -221 005, U.P.

Dated 21 November,1997

Dear Sir,

We are very happy to inform you that Smt. Lilabati Das is keeping reasonably good health. She complains regarding pain in the joints in leg, hand, waist and neck. This may be due to her old age and arthritis.

Smt.Lilabati Das is leading a normal life.

Thanking You,

Yours Sincerely

(S.P.Patra)

(सन्दर्भ- ८८)

अंग्रेजी पत्रांश का हिन्दी अनुवाद– "दिनांक ५.११.६४ से डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि नियमित रूप से ले रही हैं। आज की तारीख तक कोई समस्या नहीं खड़ी हुई। भूख, पाचन, नींद आदि में सार्वत्रिक सुधार है। देखने में भी पहले से अच्छी लग रही हैं। पाखाना और पेशाब के विषय में भी कोई समस्या नहीं है।

२१.११.६७ की रिपोर्ट : अर्थात् पिछली रिपोर्ट के पौने दो वर्ष बाद, अर्थात् गाल ब्लैडर के कैन्सर की जानकारी के तीन वर्ष बाद, अर्थात् तब जब श्रीमती लीलावती दास अपनी उम्र के ८२वें वर्ष में हैं, श्री एस. पी. पात्रा ने उनके विषय में लिखा, "उनका स्वास्थ्य उत्तम है।" पैरों-हाथों के जोड़ों तथा कमर आदि के बुढ़ापा-जनित कष्टों के हवाले के साथ श्री पात्रा ने लिखा, "वे सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं।" *(सन्दर्भ- ८८)*।

❑

स्वास्थ्य के दुर्ग की दीवारें छीजने लगें, तो उन्हीं की मरम्मत होनी चाहिए। उन्हें क्षयीभूत बनानेवाले मौसम के खिलाफ लड़ाई नहीं छेड़नी चाहिए। जीव-सृष्टि में बैक्टीरिया वायरस तथा जीवाणु-दण्डाणु सदा से उपस्थित रहे हैं। स्वास्थ्य में विचलन नहीं हो, तो ये उस पर आक्रमण नहीं करते। विचलित होकर अपने ताखे से झूली हुई जीवन-व्यवस्था के लिए पूरी प्रकृति ही शत्रु है। विचलित जीवन-व्यवस्था को ढाह देना प्रकृति का अपरिवर्तनीय स्वभाव है। मानव के स्वास्थ्य का शत्रु तो उसमें आया हुआ विचलन ही है, न कि चतुर्दिक ब्रह्माण्ड में व्याप्त जीवन-व्यवस्था अथवा प्रकृति।

१७

कैन्सर, गाल ब्लैडर (मेटास्टेटिक)
(CA. GALL BLADDER, METASTASIS)

श्रीमती सी. के. त्रिवेदी, ६५ वर्ष
ईस्ट बोरिंग कैनाल रोड
पटना

KURJI HOLY FAMILY HOSPITAL
PATNA 800 010
HISTOPATHOLOGY REPORT

Name Mrs. C.K. Trivedi Age 62 yrs. Sex F. PATH NO: S.93/1765

MICROSCOPIC:

DIAGNOSIS: ADENOCARCINOMA - POORLY DIFFERENTIATED - GALL BLADDER WITH METASTASIS - LYMPH NODE - NECK.

(सन्दर्भ- ८६)

जाँच : कुर्जी होली फेमिली हॉस्पीटल, पटना (पैथ. नं.- एस-६३/१७६५), दिनांक १६-१२-६३, हिस्टोपैथोलोजी रिपोर्ट- 'एडिनो कार्सिनोमा पूअरली डिफरेंशिएटेड- गाल ब्लैडर विद मेटास्टेसिस- लिम्फनोड नेक'। *(सन्दर्भ- ८६)*

त्रिभुवन कुंज
TRIBHUWAN HOSPITAL
Budha Colony, Patna-800001

Discharge Slip

Name – Mrs. C.K. Trivedi
Age – 62 years
Address – c/o Mr. D. N. Trivedi, West Boring Canal Road, Patna
Surgeon – Dr. S. K. Banerji, MNAMS, F.R.C.S.
Date of admission – 19-12-93
Date of operation – 19-12-93
Date of discharge – 25-12-93
Operation done – Cholecystectomy and urethral dilatation.
Final diagnosis – Poorly differentiated adeno-carcinoma of Gall bladder and urethral syndrome.

For TRIBHUWAN HOSPITAL
[signature]

(सन्दर्भ- ६०)

सर्जरी : त्रिभुवन हॉस्पीटल, बुद्ध कॉलोनी, पटना-१, सर्जन डॉ. एस. के. बनर्जी ने दिनांक १६-१२-६३ को ऑपरेशन किया। (डिस्चार्ज स्लिप, दिनांक २५-१२-६३)। *(सन्दर्भ- ६०)*।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ४-१-६४।

जाँच रिपोर्ट ने प्रगट कर दिया था कि इस कैन्सर की नियति मेटास्टेटिक है। इसके बहुत तेजी

Smt C.K. Trivedi Age-65
5.2.96

In Dec 1993, my mother was operated upon for removal of Gall Bladder stone After operation it was detected that she was suffering from Carcinoma of Gall Bladder In Jan 1994, I contacted D.S. Research Centre, Patna under under treatment of Dr V.S. Tewari. Medicine was started For $1\frac{1}{2}$ year Sarvapisti was given and from July 1995 only equaliser is being given. Till now she is alright with no major problem she can move freely and do all her necessary works. For this I thank D.S Research Centre and feel oblige towards Dr Tiwari who treating my mother so well.

(signature)
(D.N. Trived)

(सन्दर्भ- ६१)

से लीवर तथा शरीर के अन्य संस्थानों की ओर फैल जाने का भय था।

ऑपरेशन के मात्र पन्द्रह दिन बाद जब टाँका कटा और घाव भरा, 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी गयी। रोगिणी के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार आता गया। 'सर्वपिष्टी' लगातार कई महीनों तक चलती रही। जब स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य-लक्षणों में स्थिरता आ गयी और यह प्रगट हो गया कि मेटास्टेटिस शेष नहीं है और रोग सक्रिय नहीं रह गया है, तो यह औषधि रोक दी गयी। रोगिणी की कुछ सामान्य स्वास्थ्य-समस्याएँ थीं, जो वृद्धावस्था, गाल-ब्लैडर की अनुपस्थिति और एक बड़ा सर्जिकल कार्य होने पर आधारित थीं। कोई ऐसा लक्षण नहीं रह गया, जो कैन्सर की उपस्थिति सूचित करे। तब 'सर्वपिष्टी' रोक दी गयी। रोगिणी के सामान्य स्वास्थ्य को कायम रखने में उपयोगी पोषक ऊर्जा की खूराकें चलती रहीं।

प्रगति-विवरण : रोगिणी के पुत्र श्री डी. एन. त्रिवेदी समय-समय पर प्रगति-विवरण प्रस्तुत करते रहे।

दिनांक ५.०२.६६ की रिपोर्ट : वे (श्रीमती त्रिवेदी) जनवरी, ६४ से ही डॉ. यू. एस. तिवारी की चिकित्सा में रहीं। अब तक उन्हें किसी स्वास्थ्य-समस्या से परेशान नहीं होना पड़ा। हाँ उनका वजन (रोग से पूर्व के वजन से) कुछ कम है और कुछ दुर्बलता का अनुभव भी करती हैं। अब तो वे डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि 'इक्वेलाइजर' की खूराकें

Smt C.K Trivedi 28.12.96

मेरी माताजी का Treatment D.S. Research Centre में 4-1-94 से चल रहा है/ उन्हें Gall bladder का कैंसर detect हुआ था तथा Centre के Treatment से अभी तक वे लगभग स्वस्थ है तथा कोई Major Problem नहीं है/ मैं Centre को इसके लिये धन्यवाद देता हूँ और D.S. Centre के पुस्तक में प्रकाशित करने की सहमति देता हूँ /

D.N Trivedi
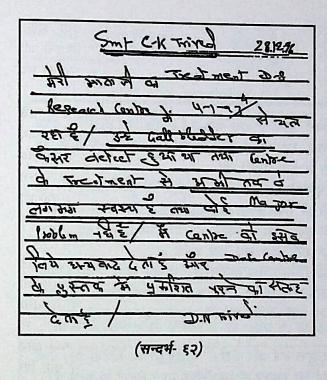
(सन्दर्भ- ६२)

केवल ले रही हैं। *(सन्दर्भ- ६१)*

दिनांक २८-२-९६ की रिपोर्ट : "मेरी माताजी अभी तक स्वस्थ हैं और उन्हें कोई खास रोग-समस्या नहीं है। मैं सेण्टर को इसके लिए धन्यवाद देता हूँ।

दिनांक २८-१२- ९६ की रिपोर्ट : "मेरी माताजी का इलाज डी. एस. रिसर्च सेण्टर में ४-१-९४ से चल रहा है। अभी तक वे लगभग स्वस्थ हैं।" *(सन्दर्भ- ६२)।*

❑

आगे औषधियाँ, पीछे प्रतिबन्ध

विगत पचास वर्षों में अनगिनत ड्रगौषधियों के व्यवहार पर प्रतिबन्ध लगाया गया है। इसका कारण है कि उन्हें आधे-अधूरे परीक्षण के बाद ही जल्दीबाजी में मानव-स्वास्थ्य के साथ खुला खेलने की छूट दे दी जाती है। उनके दुष्प्रभावों से जब हाहाकर मचता है, तब प्रतिबन्ध लगाने की गुहार की जाती है। बिना पूरी जाँच-परख के औषधीय विषों को व्यवहार में उतारना केवल अवैज्ञानिक ही नहीं, अमानवीय भी है। इस बीच ये औषधियाँ अगर व्यावसायिकता से समझौता कर लेती हैं, तो प्रतिबन्ध भी पूरी तरह प्रभावी नहीं हो पाता। प्रचलन से हटने के पूर्व ये ड्रग मानव-स्वास्थ्य की इतनी क्षति कर चुके रहते हैं, जिसकी पूर्ति कभी संभव नहीं होती। जिस धूम-धाम और जय-जयकार के साथ ये दवाएँ जीवन में उतारी जाती हैं, प्रतिबन्ध का प्रचार उतना ही तेज होना चाहिए, क्योंकि यहाँ जीवन-रक्षा का सवाल है। प्रायः ऐसा होते देखा नहीं जाता।

अगर धैर्यपूर्वक परीक्षा करके औषधियों के गुण-दोषों का निरूपण करने के बाद ही उन्हें व्यवहार में उतारा जाता, तो वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रतिबन्ध का अपमान नहीं झेलना पड़ता।

१८

चिकित्सा के लिए पहुँचने वालों के कुछ सधे हुए सवाल होते हैं, जिन्हें प्रायः अतिपढ़, कमपढ़ और अनपढ़, हर वर्ग के लोग प्रस्तुत कर देते हैं। इन्हीं में एक प्रश्न है, "दवा कितने दिन चलानी पड़ेगी ?"

प्रसंग था एक एक्यूट ल्यूकेमिया के केस का, जो आज रोगमुक्त होकर स्वास्थ्य के जीवन-जुलूस में शामिल हो चुका है। अभिभावक ने प्रो. त्रिवेदी से वही प्रश्न किया, "दवा कितने समय तक चलानी पड़ेगी ?" प्रो. त्रिवेदी ने कहा, "मान लीजिए दवा साठ वर्षों तक चले, तब आप क्या करेंगे ?"

अभिभावक महोदय बड़े चिन्तनशील व्यक्ति थे। उन्होंने कहा, "चिकित्सकों का कहना है कि रोगी अधिक-से-अधिक दो-तीन महीने बच सकता है। अगर औषधि-सेवन करता हुआ, वह वर्षों जीवित रहे, तो हमारी खुशी का कोई अन्त नहीं रहेगा।"

"बस, हम लोग प्रयत्न शुरू करें और देखें।" उत्तर था प्रो. त्रिवेदी का। जहाँ जिन्दगी के दिनों की कमाई का सवाल हो, वहाँ कई प्रश्न बेतुके हो जाते हैं।

पैंक्रियाज का कैन्सर
कार्सिनोमा विद सर्जिकल
आब्स्ट्रक्टिव जाण्डिस
(CA. PANCREAS WITH SURGICAL OBSTRUCTIV JAUNDICE)

श्रीमती श्यामा पाण्डेय, ४० वर्ष
शास्त्री नगर, कानपुर (उ. प्र.)

कुछ इसी प्रकार का केस था श्रीमती एस. पाण्डेय का। पैंक्रियाज का कैन्सर था और चिकित्सा के अनुबन्धों को नोचता-उखाड़ता लीवर-क्षेत्र को भी अपनी जकड़ में ले चुका था। पैंक्रियाज का कैन्सर होता ही ऐसा है। बहुत जल्दी ही वह शारीरिक अस्तित्व की दो महत्वपूर्ण व्यवस्थाओं को अपने वज्र-कुण्डल में दबोच लेता है। श्रीमती एस. पाण्डेय की जिन्दगी ऐसे ही मोर्चे पर खड़ी थीं।

Dr. (Mrs.) MANISHA DWIVEDI
M. D. (Medicine), D. M. (Gastroenterology)
A.I.I.M.S. New Delhi
Department of Gastroenterology

Dated [illegible]

Carcinoma pancreas with Surgical obstructive jaundice
— operated
Cholecystojejunostomy and gastrojejunostomy done

(सन्दर्भ- ६३)

पैंक्रियाज के कैन्सर के लिए ऑपरेशन हुआ, उस समय कैन्सर नये क्षेत्रों की ओर बढ़ चुका था (दिनांक २.१०.६१)। *(सन्दर्भ- ६३)*।

दिनांक ०२.१०.६१ की एफ. एन. ए. सी. की जाँच-रिपोर्ट स्पष्ट नहीं कर सकी कि लीवर में कैन्सर पहुँच चुका है। *(सन्दर्भ- ६४)*। दिनांक १४.१०.६१ की जाँच से लीवर के कैन्सर की नियति स्पष्ट हो गयी। *(सन्दर्भ- ६५)*।

जब लीवर कैन्सर की गिरफ्त में आ जाता है, तो चिकित्सा के कई पैतरे स्वतः ही अव्यावहारिक होकर तटस्थ हो जाते हैं। इस प्रकार चिकित्सा की सामर्थ्य घटती जाती है, साथ ही कैन्सर उग्र होता जाता है और लीवर की असमर्थता के चलते शरीर के अन्यान्य संस्थान भी अपोषित और बेसहारा होकर निढाल होते जाते हैं। ऐसी हालत में चिकित्सा के लिए आपाधापी मची हुई थी, आखिर रोगिणी की अवस्था भी तो बहुत अधिक नहीं थी।

MISRA'S
PATHOLOGY - LAB

CONSULTANT PATHOLOGIST
Dr. M. P. MISRA
M. B., B. S., M. D. (Path. & Bact.)

Patient Name: Mrs. Shayama Pandey
Investigation: FNAC LIVER
Ref. by Dr.: R. Sahai, M.D.

REPORT FNAC LIVER

FNA done from three sites.

Suggestive of Fatty Infiltration of Liver.

Advised:

- Guided FNAC or it may be possible that I would have failed to hit exact site.

2.10.91

CONSULTANT PATHOLOGIST

(सन्दर्भ- ६४)

पता लगने पर कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर द्वारा कैन्सर रोग पर परीक्षण के लिए उतारी गयी औषधि 'सर्वपिष्टी' आशावर्द्धक परिणाम देने लगी है,

MISRA'S
PATHOLOGY - LAB
CONSULTANT PATHOLOGIST
Dr. M. P. MISRA
M.B., B.S., M.D. (Path. & Bact.)
Date 14.10.91.
Patient Name Smt. Shyama Pandey
Investigation FNAC from the Liver
Ref. by Dr. M.M. Verma.MS.

REPORT

FNA done from the Liver.

DIAGNOSIS:

Hepatocellular Carcinoma (Well Differantiated Type)

CONSULTANT PATHOLOGIST

(सन्दर्भ- ६५)

'सर्वपिष्टी' का सहयोग प्राप्त किया गया।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ दिनांक २२.०१.६२।

दिनांक २२.०१.६२ से 'सर्वपिष्टी' शामिल की गयी। धीरे-धीरे रोग के नियंत्रण में आते जाने के संकेत मिलने लगे। रोगिणी ने कुछ अच्छा अनुभव करना शुरू किया। खान-पान के सुधार ने लीवर में जीवन आते जाने का संकेत किया। शरीर में शक्ति और स्फूर्ति आने लगी। जाँच से भी पता चलता था कि चिकित्सा कुछ सकारात्मक परिणाम ला रही है।

SURAJ
MEDICAL & DIAGNOSTICS (P) LTD.
117/N/65, KAKADEO, KANPUR-208 005 • PHONE : 246768, 210179

Patient's Name Smt.Shyama Pandey Age / Sax 25.F.
Ref. by Dr.S.Maithani Date 23.10.92

ULTRASOUND REPORT

UPPER ABDOMEN

IMPRESSION

Evidence of mild degree spleenomegaly.

DR.P.K.AGRAWAL (MD)
RADIOLOGIST.

(सन्दर्भ- ६६)

लगातार नौ महीने तक 'सर्वपिष्टी' की नियमित खूराकें चलाने के बाद पेट के ऊपरी भाग की अल्ट्रा साउण्ड जाँच करायी गयी। रिपोर्ट ने अच्छा सुधार व्यक्त किया, केवल स्प्लीन में शोथ और आकार-वृद्धि नोट की गयी। (रिपोर्ट दिनांक २३.१०.६२)। *(सन्दर्भ- ६६)।*

'सर्वपिष्टी' को और अधिक सावधानी और नियमितता का निर्वाह करते हुए चलाया जाने लगा। रोगिणी के रोग-उपसर्ग अब प्रगट नहीं होते थे। स्वास्थ्य सामान्य और ओजपूर्ण हो गया। सब कुछ नॉर्मल देखकर रोगिणी ने औषधि-सेवन से अनिच्छा प्रगट

आदरणीय डाक्टर साहब
सुल्तानपुर
2-2-93
सादर प्रणाम
मरीज की हालत ठीक है।
वे दवा नहीं खाना चाहती हैं परंतु
मैंने कहा कि डाक्टर साहब कहे हैं
दवा अभी खाइए।
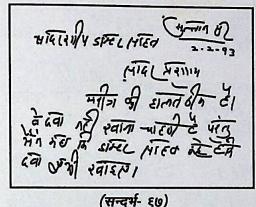
(सन्दर्भ- ६७)

की। किन्तु डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक संघातक रोग को बढ़ने और कायम रहने का कोई मौका नहीं देना चाहते थे। अभिभावक श्री राम अँजोर पाण्डेय ने ०२.०२.६३ को पत्र लिखा। (पत्रांश प्रस्तुत)

"मरीज की हालत ठीक है। वे दवा नहीं खाना चाहती हैं, परन्तु मैंने कंहा कि डाक्टर साहब कहे हैं कि दवा अभी खाइये।" *(सन्दर्भ- ६७)*।

फैजाबाद
7.3.96

आदरणीय डाक्टर साहब
डी.एस. रिसर्च सेन्टर वाराणसी
नमस्ते, आपका दि- 18.02.96 का प्रेषित पत्र मिला। श्रीमती श्यामा पाण्डेय को ठीक हुए दो वर्ष से ऊपर हो गया है। वे पूर्णरूप से स्वस्थ हैं। सम्भवतः उन्होंने दवा बन्द करते समय कोई सूचना नहीं दी। शेष कुशल है।
भवदीय
(राम अंजोर पाण्डेय)

(सन्दर्भ- ६८)

'सर्वपिष्टी' का प्रयोग जनवरी- फरवरी १६६४ तक किया गया। अब रोगिणी में एक भी रोग-लक्षण शेष नहीं था।

अपने पत्र दिनांक ७.३.६६ द्वारा श्री राम अँजोर पाण्डेय (क्षेत्रीय कार्यालय, यू. पी. कोआपरेटिव फेडरेशन लि., ८६१ खवासपुरा, फैजाबाद, उ. प्र.) ने रिसर्च सेन्टर को सूचित किया, "....श्रीमती श्यामा पाण्डेय को ठीक हुए दो वर्ष से ऊपर हो गया है। वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। सम्भवतः उन्होंने आपको दवा बन्द करते समय कोई सूचना नहीं दी।" *(सन्दर्भ- ६८)*।

एक बार कैन्सर के उपद्रवों से अवकाश मिल जाय, तो भी उसके पुनः आ धमकने की अशंका से जल्दी न तो रोगी मुक्त हो पाता है, न परिजन, न चिकित्सक। शुरू में तो उसके अहसास को जल्दी-जल्दी टटोला जाता है, फिर धीरे-धीरे आश्वस्तता बढ़ने

बहराइच
19-11-97

परम माननीय डाक्टर साहब
वाराणसी

आपका पत्र दि. 7-11-97 प्राप्त हुआ है। श्रीमती श्यामा देवी पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं जिसके लिए मैं और मेरा सम्पूर्ण परिवार आजन्म आपके केन्द्र का ऋणी रहेगा।

सधन्यवाद।
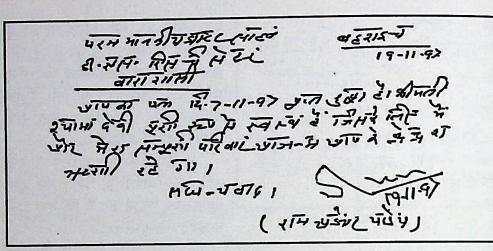
(राम अँजोर पाण्डेय)

(सन्दर्भ- ६६)

लगती है। और यदि कैन्सर पैंक्रियाज, लीवर आदि बहुत संवेदनशील क्षेत्रों को अपनी क्रीड़ा-भूमि बना चुका हो, तो कहना ही क्या। किन्तु श्रीमती श्यामा पाण्डेय के केस ने आश्वस्तता को स्थायित्व प्रदान कर दिया। वे कैन्सर से मुक्त हैं तो मुक्त हैं और स्वस्थ हैं तो स्वस्थ ही हैं।

पौने दो वर्षों के बाद उनके अभिभावक श्री राम अँजोर पाण्डेय ने बहराइच से १६.११.६७ के पत्र में लिखा है, "परम माननीय डाक्टर साहब, आपका पत्र दिनांक ७.११.६७ को प्राप्त हुआ है। श्रीमती श्यामा देवी पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, जिसके लिए मैं और मेरा सम्पूर्ण परिवार आजन्म आपके केन्द्र का ऋणी रहेगा। सधन्यवाद।" *(सन्दर्भ- ६६)* ❑

कितने युगों से चिकित्सा-वैज्ञानिकों के जत्थे मानव-स्वास्थ्य की रक्षा के उपायों की तलाश में अथक कोशिश कर रहे हैं। वे परिवेश और ब्रह्माण्ड में व्याप्त रोगकारक जीवाणुओं-दण्डाणुओं के स्वभाव और संरचना का अध्ययन कर रहे हैं। इतना ही नहीं, इन रोगाणुओं को दण्डित और विनष्ट करने में विज्ञान की सारी कूबत उतार दी गयी है। अभी तक कोई सकारात्मक समाधान तो नहीं मिला, किन्तु ये वैज्ञानिक न तो उम्मीद छोड़नेवाले हैं और न तलाश कभी रुकने वाली है। लगता है कि यह अभियान अनन्त काल तक चलता रहेगा।

मानव की स्वास्थ्य-समस्याओं का केन्द्र तो उसके स्वास्थ्य में आया विचलन है। यह विचलन ही आकर्षित करता है रोगाणुओं को। स्वास्थ्य-समास्याओं का समाधान तो इस विचलन की समाप्ति है। तलाश इसी दिशा में चलनी चाहिए थी। कस्तूरी तो कस्तूरी-मृग की नाभि में रहती है, किन्तु वह उसकी तलाश में घास सूँघते फिरने की अखण्ड-अनन्त यात्रा पर निकल पड़ता है। हालत कुछ वैसी ही है।

१६

कैन्सर पैंक्रियाज
(CA. PANCREAS)

श्री कमल सिंह शर्मा, ५१ वर्ष
२२५, पूरबी अम्बर तालाब
रुड़की, हरिद्वार (उ. प्र.)

दिनांक २५.२.६५ को श्री कमल सिंह शर्मा के लिए 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने जो प्रतिनिधि आये, उन्होंने जाँच-पत्रकों के साथ निम्न रिपोर्ट दी :

१. रोगी हार्ट (दिल के रोग) का मरीज है।
२. गहरी आब्स्ट्रक्टिव जाण्डिस रोकने के लिए एक ट्यूब डाली गई है, जो मात्र एक महीने कार्य करेगी।
३. स्वास्थ्य की इस संकटपूर्ण स्थिति में सर्जरी कत्तई संभव नहीं है।

Dr. Chawla's
ULTRA SOUND SCAN
& RESEARCH CENTER

ULTRA SCAN

डा. चावला
अल्ट्रा साउंड स्कैन एवं रिसर्च सेंटर

ULTRASONOGRAPHY REPORT

Name: KAMAL SINGH
Ref. By: DR. KARAN SINGH MS
Age & Sex:
Date: 14.01.95

IMPRESSION:- ? Ca. Lower End Of Common Bile Duct.
?? Choledocholithiasis.

DR.S.C.CHAWLA

(सन्दर्भ- १००)

४. चिकित्सकों की राय है कि पैंक्रियाज का कैन्सर है और अधिक संभव है कि अब वह लीवर तक पहुँच गया हो।
५. प्रत्येक जाँच कैन्सर होने का संकेत करती है किन्तु इस खतरे की स्थिति में बायाप्सी कर पाना भी समस्या ही है।
६. फेफड़े में दाहिनी ओर सामान्य फिशशर हैं और प्लूरल एफ्यूजन है।

जाँच का सिलसिला : (१) १४.०१.६५ की अल्ट्रा सोनोग्राफी रिपोर्ट के आधार पर डॉ. चावला ने सी. बी. डी. में स्टोन का संशय व्यक्त किया। *(सन्दर्भ-१००)*

एक्स-रे विभाग : सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली
X-RAY DEPARTMENT : SAFDARJANG HOSPITAL, NEW DELHI

रोगी का नाम Name of Patient	उम्र age	स्त्री/पुरुष Sex	वार्ड Ward	चारपाई संख्या Bed No.	यूनिट Unit	मासिक आय Monthly Income
Kamal Singh	45	M	ओ॰पी॰डी॰ OPD	13		रु॰ Rs.

भेजने वाले Referred by DR K.K. Pandey	ओ॰पी॰डी॰/एम॰आर॰डी॰ संख्या OPD No./MRD No. 4276	सी॰जी॰एच॰एस॰ टोकन नम्बर CGHS Token No.

किस अंग विशेष की जांच होनी है Exam part to be examined	CT Scan Abdomen	तारीख Date 20.1.95

Impression Obstructive Jaundice with obstruction at the ampullary level.
The possibility of a small periampullary growth should be considered as the first possibility

(सन्दर्भ-१०१)

(२) सफदरजंग अस्पताल, नयी दिल्ली (दिनांक २०.०१.६५) की व्यापक छान-बीन से आब्स्ट्रक्टिव जॉण्डिस के कारण रूप में एम्पुलरी लेवेल पर अवरोध माना गया। (सन्दर्भ-१०१)

Shri Mool Chand Kharaiti Ram Hospital & Ayurvedic Research Institut
Lajpat Nagar-III, New Delhi-110 024
EPABX-6835306, 6833404, 6833279, 6832461

Ref No.: 29733 — Date : 10/02/95
NAME : KAMAL SINGH — IP. NO. : 9501168
DOCTOR : MEHRA M.K. — BED NO. : CCUB
AGE : 50 — SEX : M — CLASS : SP CABI

X-Ray Report

X-Ray Registration No.: 14211

FINDINGS ARE SUGGESTIVE OF BILATERAL PNEUMONIA WITH PLEURAL EFFUSION ON THE RIGHT SIDE. Pl. Correlate clinically

Dr.(Brig.)V.P.SOBTI
D.M.R.D. , M.D. (Rad)
Senior Consultant & Head

(सन्दर्भ-१०२)

(३) दि. १०.०२.६५ को मूलचन्द खैरातीलाल अस्पताल ने न्युमोनिया और प्लूरल एफ्यूजन की जानकारी दी। (सन्दर्भ-१०२)

(४) दि. ०६.०५.६५ को पैंक्रियाज में कैन्सर का संशय व्यक्त हुआ (सी. टी. स्कैन जाँच)। (सन्दर्भ-१०३)

Phone : 6919367

SHRI MCKR C.T. SCAN & ULTRASONOGRAPHY CENTRE

Shri Mool Chand Kharaiti Ram Hospital & Ayurvedic Research Institute, Lajpat Nagar-III, New Delhi-24

PATIENT'S NAME : Mr. Kamal Singh. 50 Yrs/M. C.T. No.: 06

DOCTOR'S NAME : DR. M.K. Mehra. DATE OF SCAN: 6/5/95.

REPORT :

C.T. SCAN UPPER AEDOMEN WITH ORAL CONTRAST ONLY:

:OPINION:- THE FINDINGS ARE SUGGESTIVE OF A NEOPLASTIC LESION IN DYSTAL CBD, PERIAMPULARY REGION INFILTRATING INTO HEAD OF PANCREAS.
E.R.C.P.. SUGGESTED FOR FURTHER EVALUATION.

(DR. R.K. GOULATIA).

(सन्दर्भ-१०३)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : २७.२.९५।

२४.५.९५ की रिपोर्ट : "मेरा वजन ४६ से ५० किलो हो गया। भूख खूब लगती है, तथा नींद भी ठीक आती है। मेरी हालत में पहले से सुधार है। मैं डबल स्टोरी पर आसानी से चढ़ जाता हूँ। कालेज में ड्यूटी भी दे रहा हूँ। दर्द आदि नहीं है। खुजली भी नहीं है। इसका अर्थ है कि जाण्डिस प्रायः समाप्त है। मैं पहले से काफी राहत महसूस करता हूँ।"

८.६.९५ : "मैं आपकी दवा में पूर्ण आस्था रखता हूँ। मेरा वजन भी बढ़ा है और सेहत में भी सुधार हुआ है।"

२६.६.९५ : "ऑपरेशन का विचार बिल्कुल बदल दिया है। अब तो आपरेशन तब कराऊँगा, जब आप कहेंगे।"

रोगी के स्वास्थ्य का सर्वांगीण सुधार देखकर चिकित्सकों की राय बन रही थी कि अब उसका ऑपरेशन हो सकता है।

अगस्त १९९५ से 'सर्वपिष्टी' की खूराक मात्रा कम कर दी गई। अब खूराकें एक दिन के अन्तराल से दी जाने लगीं।

२६-९-९५ : "मेरा वजन पहले से बढ़कर ५३ किलो हो गया है। भूख खूब लगती है। कार्य ठीक प्रकार से कर लेता हूँ।"

१.२.९६ : "मैं ठीक चल रहा हूँ। कोई परेशानी नहीं है।"

4.8.97.

प्रेषक
कमलसिंह शर्मा
प्रवक्ता के०एल०डी० ए०वी० इ० कालेज रुड़की

सेवा में
माननीय डाक्टर साहब जी
कर बद्ध नमस्कार

आगे समाचार यह है कि मैं ईश्वर की कृपा और दवा और आशीर्वाद से पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मेरा शरीर ठीक है खाना-पीना ठीक है। शरीर की कार्यक्षमता ठीक है। तब यह आपका प्रताप है। आप की दवा ने मुझे पूर्ण रूप से ठीक कर दिया है। मैं जीवित हूँ और आपका आभारी हूँ। यह जीवन आप का दिया हुआ है।

(सन्दर्भ-१०४)
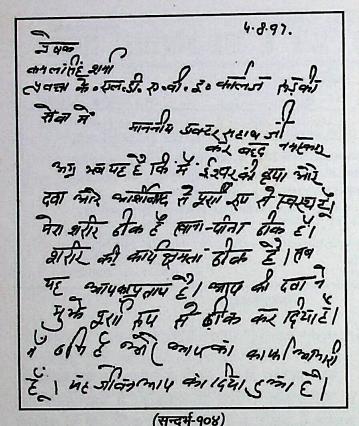
८.३.६६ : "आपके और मरीजों से भी बात होती है। मेरे शरीर को देखकर सब लोग आश्चर्य करते हैं।"

२२.५.६६ : "खाना-पीना ठीक है। सेहत ठीक है। किसी तरह का दर्द नहीं है। लीवर कैन्सर तो ज्यादा दिन मरीज को जिन्दा नहीं छोड़ता है। वैसे दवा आपकी, चमत्कार ईश्वर का, मैं तो दोनों का ही ऋणी हूँ।"

अन्तिम सूचना : श्री कमल सिंह शर्मा का स्वास्थ्य उत्तम है। अब भी (अर्थात जुलाई १६६७ तक भी) वे अन्तराल देकर पोषक ऊर्जा की खूराकें ले रहे हैं।

दिनांक ४.८.६७ को उन्होंने लिखा, "मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। शरीर ठीक है, खाना-पीना ठीक है, शरीर की कार्य-क्षमता ठीक है, वजन ६४ किलो है। .....मुझे जीवन-दान आपके द्वारा मिला है, यह जीवन आपका दिया हुआ है।" *(सन्दर्भ-१०४)*।

❑

भारतीय ऋषियों (वैज्ञानिकों) ने संक्रान्ति के दिन 'तिल', भादो कृष्ण अष्टमी को 'खीरा', भादो शुक्ल पंचमी को 'तिन्ना' चावल, कार्तिक शुक्ल एकादशी को 'आँवला' आदि ग्रहण करने का विधान बना दिया है। इनके सेवन से प्राकृतिक परिवर्तन-चक्र पर स्वस्थ रूप में आरूढ़ रहा जा सकता है। वस्तुतः भारतीय चिन्तन शरीर को नश्वर और आत्मा को अमर मानता है। केवल शारीरिक स्वास्थ्य के लिए इनके सेवन की अनिवार्यता बतायी जाती, तो लोग उनके नियमतः पालन में अधिक रुचि नहीं लेते, इसीलिए उन्हें धार्मिक अनुष्ठान के रूप में स्थापित कर दिया गया है ताकि लोग इन्हें अनिवार्यतः ग्रहण करें।

२०

"इस व्यक्ति ने दुनिया के बहुतेरे देशों को जाकर देखा है और गहरा अध्ययन भी किया है। जब इनका अन्तर्मन बोल गया कि यहाँ जो कुछ घटित-फलित हो रहा है वह अन्यत्र कहीं भी नहीं हो रहा है, तब रिसर्च सेण्टर के कार्यों में ही समर्पित हो गये।"

उस दिन मुलाकात के लिए वाराणसी से आगरा आ पहुंचे मेरे मित्र डा. एस.पी. सिंह काशी हिंदू विश्वविद्यालय में भूगोल के प्रवक्ता हैं। मुझे वे दिन भूले नहीं हैं, जब वे पत्नी की चिकित्सा को लेकर बहुत परेशान थे। 1989 में पत्नी को गर्भाशय का कैंसर हो गया था। रोग प्रथम चरण में ही पकड़ में आ गया था। उन्होंने तय कर लिया था कि ऊंची-से-ऊंची वैज्ञानिक चिकित्सा की मदद से पत्नी की प्राण-रक्षा कर लेंगे। सब कुछ लगा दिया था दांव पर— एक-एक क्षण से लेकर एक-एक पैसे तक। दिल्ली के बत्रा अस्पताल से लेकर न्यूयार्क के मेमोरियल स्लोन केटरिंग कैंसर अस्पताल तक चिकित्सा चली। तीन-तीन बार आपरेशन हुए। पहली बार गर्भाशय को भी निकालकर कैंसर का अधिकतम अंश साफ कर दिया गया। जब कैंसर आगे बढ़ा तो गाल ब्लैडर को निकाल फेंकने के लिए आपरेशन हुआ। इस बार देखा गया कि कैंसर गाल ब्लैडर से लेकर लीवर तक को जकड़े हुए है। तीसरी बार हुई बाइपास सर्जरी। इस बीच महंगी-से-महंगी प्रभावशाली औषधियां चलीं। किमोथिरेपी के अंतर्गत सिस्प्लाटिन जैसे तीव्र कोशिका-विध्वंसक विषों के छह चक्र पूरे किए गए, किंतु रोग बेकाबू ही रहा और इनकी पत्नी दिसंबर 1991 में चल बसीं।

दूसरी ओर आगरा में ही एक अनोखी घटना देखता हूं, जहां चौथे अर्थात अंतिम चरण में पहुंचा हुआ कैंसर घटते-घटते अंतिम रूप से निर्मूल हो गया। यह प्रसंग हमारे साथी प्रोफेसर डा. डी.एस. चौहान की 75 वर्षीय पत्नी श्रीमती सुशीला देवी के साथ घटा। वे तो वैसे ही अर्से से चार बड़ी बीमारियां— माइग्रेन, अतिसार, श्वांस रोग और गाल ब्लैडर की पथरी झेल रही थीं। वजन 40 किलो से नीचे ही रहा। छह वर्ष पूर्व उन्हें अन्न नली का कैंसर हुआ। संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में जांच से पता चला कि कैंसर चौथे चरण में पहुंच चुका है। डा. चौहान ने डी.एस. रिसर्च सेंटर (147-ए, रवींद्रपुरी कालोनी, वाराणसी) से मंगाकर सर्वपिष्टी देनी शुरू की और इसी अस्पताल में रेडियोथिरेपी करा दी। कैंसर के लिए अन्य किसी दवा की एक खुराक भी नहीं दी गई। प्रतिवर्ष दो-तीन बार लखनऊ के अस्पताल में रोगिणी की स्वास्थ्य परीक्षा होती है। उन्हें कैंसर का कोई चिन्ह भी नहीं पाया जा रहा है।

श्रीमती चौहान वाली घटना की अनदेखी नहीं की जा सकती। बताया जाता है कि अन्ननली का कैंसर गर्भाशय के कैंसर से अधिक घातक होता है। इन दोनों घटनाओं को सामने रखें तो आश्चर्य होता है। एक ओर प्रथम चरण का कैंसर बढ़कर शीघ्र ही प्राण-घातक बन जाता है, दूसरी ओर वृद्ध व जर्जर स्वास्थ्य में उतरा हुआ चौथे चरण का कैंसर मैदान छोड़कर भाग जाता है।

डा. सिंह तो वाराणसी में ही रहते हैं। औपचारिकताओं से निवृत्त होकर जब हम बातें करने लगे तो मैंने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अपनी पत्नी को सर्वपिष्टी नहीं दी। डा. सिंह ने बताया सर्वपिष्टी शुरू किया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। डी.एस. रिसर्च सेंटर के वैज्ञानिक प्रो. त्रिवेदी पत्नी की फाइल देखकर ही निराश हो गए थे। उन्होंने कहा कि किमोथिरेपी के इतने अधिक तीव्र विषों के प्रयोग के बाद चिकित्सा लायक कुछ बचता नहीं है। फिर भी सर्वपिष्टी दी जाने लगी और उसने अपना असर भी दिखाया। मेरी पत्नी, जो चारपाई नहीं छोड़ पाती थीं, एक बार उठ खड़ी हुईं, यात्राएं की और दूर-दराज के मित्रों-परिचितों से जाकर मिल भी आईं। उन्होंने सर्वपिष्टी को अपनी रगों में बोलते हुए सुना था, इसीलिए मरने से पूर्व मुझे कहा कि डी.एस. रिसर्च सेंटर का कार्य आगे बढ़ाना चाहिए। पत्नी की मृत्यु के बाद डा. सिंह ने वर्षों तक डी.एस. रिसर्च सेंटर का नजदीक से अध्ययन किया। औषधि लेने वाले रोगियों से भी पूछताछ की और कैंसरयुक्त रोगियों के साक्षात्कार भी लिए। इस व्यक्ति ने दुनिया के बहुतेरे देशों को जाकर देखा है और गहरा अध्ययन भी किया है। जब इसका अंतर्मन बोल गया कि यहां जो कुछ घटित-फलित हो रहा है, वह अन्यत्र कहीं भी नहीं हो रहा है, तब रिसर्च सेंटर के कार्यों में ही समर्पित हो गए। अब विश्वविद्यालय के कार्यों के बाद जितना भी समय बचता है, इसी सेंटर को देते हैं।

(हिन्दी दैनिक 'अमर उजाला' आगरा में दिनांक १.७.९६ को प्रकाशित श्री रोशन सिंह के लेख 'क्या यह कैंसर पर इंसानी जीत है ?' का अंश)

(सन्दर्भ-१०५)

अन्ननली का कैन्सर
(स्टेज-४)
(CA. DESOPHAGUS, STAGE- 4)

श्रीमती सुशीला देवी, ७५ वर्ष
धर्मपत्नी : डॉ. डी. एस. चौहान
१८१, सिविल लाइन्स, आगरा-२

पूर्व जाँच

(१) २१.८.९० की बेरियम मील एक्स-रे जाँच से अन्ननली के कैन्सर की शंका हुई। *(सन्दर्भ-१०६)*

(२) संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, लखनऊ में अन्ननली में चौथे स्टेज के कैन्सर होने की पुष्टि हुई (सी. आर. नं. ४१२४५/९०)। *(सन्दर्भ-१०७)*

(३) उक्त अस्पताल में ही दिनांक १.१०.९० से २४.११.९० तक रेडियोथेरापी दी गयी।

X-RAY CENTRE
Dr. SARKAR MARKET, DELHI GATE AGRA-2

Name: Mrs. Susheela Singh. Age & Sex: 62 Yrs F
Referred by: Dr. G.P. Gupta.
Part Examined: Barium Swallow.
S. No.: 801 Dated: 21.8.90

IMPRESSION ? Ca Oesophagus in its middle part.

(RADIOLOGIST)
Dr. M. B. JAIN

(सन्दर्भ-१०६)

अजीब लगती एक सचाई

लखनऊ में प्रति दो-तीन महीने पर जाँच होती है और पाया जाता है कि श्रीमती सुशीला देवी के शरीर में कैन्सर के कोई प्रमाण नहीं हैं। कैन्सर चौथे स्टेज पर था और सात वर्षों में उसका रेकरैन्स नहीं हो सका। लेकिन अजीब सचाई यह नहीं है।
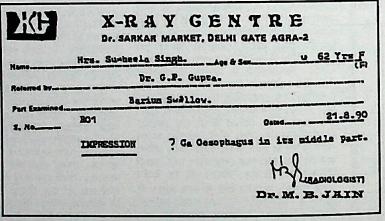
अजीब बात यह है कि इन सात वर्षों में 'सर्वपिष्टी' कभी बन्द नहीं की गयी। श्रीमती सुशीला देवी उसका नियमित सेवन करती जा रही हैं। सवाल है कि जब रोग नहीं है, तो औषधि क्यों चलायी जा रही है। और औषधि चलाते जाने का निर्णय लेनेवाले व्यक्ति भी तो असाधारण व्यक्तित्व वाले हैं। अस्सी वर्षीय पति डॉ. डी. एस. चौहान देश के एक

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW.
DEPARTMENT OF RADIO-DIAGNOSIS

SPECIAL REPORTING FORM

Pt. Name Mrs. Sushila Singh Chauhan Age/Sex 68F CR No. 41345/90
Referring Physician/Unit/OPD/Ward Radiotherapy O.P.D
Investigation C.T. Thorax & Abdo
Radiology No. C.T-924 Date 3.2.1993

CT. Thorax and abdomen.
Oral and iv contrast.

- There is growth in the oesophagus from D6-7 level to D9-10. with very minimal lumen left
- Aortic involvement seen.

Imp. Ca oesophagus stage IV.

(सन्दर्भ-१०७)

प्रसिद्ध विचारक और विद्वान हैं।

बौद्धिक समाधान चाहिए इस अजीब लगती बात का।

वस्तुतः जाँच होती है कैन्सर के सबूत की। कैन्सर होने के सबूत हैं कैन्सर-कोशिकाएँ और अर्बुद। चिकित्सा भी इन सबूतों की ही होती है। जाँच चलती रहती है। सबूत फिर दिखायी देते हैं, तो चिकित्सा की कोशिश फिर चालू होती है। यह चिकित्सा कैन्सर की हीं है, कैन्सर होने की संभावना की भी नहीं है।

और डॉ. चौहान कैन्सर होने की संभावना की चिकित्सा करा रहे हैं। डॉ. चौहान ने २१.०३.६३ को प्रो. त्रिवेदी को पत्र लिखा- "अभी तक रेकरैन्स का कोई प्रमाण नहीं मिला है...किन्तु मैं रिस्क नहीं लेना चाहता।" *(सन्दर्भ-१०८)*

So far there is no evidence of recurrence.
Your medicines are being administered as per instructions.
Kindly let me know the duration of the course.

However, I leave the matter to your best judgement with a belief that the patient is in safe hands. No risk is to be taken.

Yours faithfully,
D S Chauhan 21/3/93

(सन्दर्भ-१०८)

फिर अपने ३.६.६५ के पत्र में उन्होंने लिखा, "अब तो हमारी सबसे बड़ी चिन्ता रेकरैन्स की आशंका से है। आप इसका ध्यान रखें। अस्पताल के चिकित्सक केवल निगाह रख रहे हैं। उनकी ओर से रेडियोथेरापी की गयी। फिर नवम्बर १६६० से ही उनकी ओर से कोई दवा नहीं दी गयी..." *(सन्दर्भ-१०६)*

रोग का इतिहास : श्रीमती सुशीला देवी पिछले कई वर्षों से चार महाव्याधियों से ग्रस्त थीं—श्वास-रोग, अतिसार, माइग्रेन और गाल ब्लैडर की पथरी। पाँचवीं समस्या थी—वृद्धावस्था और रोगों द्वारा तोड़कर जर्जर बनाया हुआ स्वास्थ्य।

our greatest anxiety now is about recurrence, please take care of it. The hospital doctor treating her is simply watching. There has been no other medication by him after radio therapy which was over in the last week of Nov. 90. This Ayurvedic medicines, given by you, seem to help her very much. May God give you success.

Yours sincerely
D.S. Chauhan.
3/6/91

(सन्दर्भ-१०६)

अचानक अन्न निगलने में अवरोध आया और कैन्सर की शंका व्यक्त हुई।

चिकित्सा के लिए जल्दी की गयी, किन्तु टूटे हुए स्वास्थ्य पर कैन्सर इस प्रकार हावी हो रहा था कि जाँच हुई तब तक वह चौथे स्टेज पर आ गया था। रेडियोथेरापी शुरू की गयी।

संयोग और पोषक ऊर्जा सिद्धान्त का भरोसा : उन्हीं दिनों संयोग से पोषक ऊर्जा सिद्धान्त पर डॉ. चौहान ने एक लेख पढ़ा। बात उनके चिन्तन और विवेक को छू गयी। दि. ०४.१०.६० को ही उन्होंने एक पत्र लेकर एक व्यक्ति को वाराणसी भेजा।

लखनऊ
४.१०.९०

आपके रिसर्च सेंटर के बारे में अभी लखनऊ में मुझे [illegible] अखबार में देखने को मिला। पढ़कर कुछ आशा जगी। आपके सिद्धान्त से मैं पूर्ण रूपेण सहमत हूँ, और मुझे विश्वास है कि यदि आपकी औषधि (सर्पिष्टी) [illegible] से बनाई है, जिससे मुझे आप जैसे व्यक्ति से आशा है, वो अवश्य लाभप्रद होगी और रोगी को रोगमुक्त करेगी।

[illegible]
[illegible]

(सन्दर्भ-११०)

SANJAY GANDHI POST GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
DEPARTMENT OF CARDIOLOGY
DISCHARGE SUMMARY

Name Mrs. Susheela Singh Chauhan Age 75 yrs Sex F CR No. 41245
Date of Admission 19.2.97 Date of Discharge 21.2.97
Admitting diagnosis Ca oesophagus mid 1/3 (in 1990) Radiation [illegible]
Final diagnosis Pericardial effusion - Negative for malignant cells

(सन्दर्भ-१११)

S.G.P.G.I.M.S, LUCKNOW

NAME :SUSHEELA AGE: 0yrs. SEX:F

HOSPITAL :S.G.P.G.I.M.S.
REGISTRATION NO:41243 WARD:MICU BED:20

REFERRED BY :Dr.P.K.GOEL PAYMENT:C-II
SPECIMEN :PERICARDIAL FLUID

RECEIVED ON :19/02/97 LAB NO.:Cy 244/97

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

MICROSCOPIC:

CONCLUSION:

NEGATIVE FOR MALIGNANT CELLS.

(N. KRISHNANI)
PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-११२)

औषधि मँगायी गयी और दि. ०६.१०.६० को ही शुरू कर दी गयी। डॉ. चौहान को लगा कि रोगिणी की स्वास्थ्य-स्थिति जो भी हो, वह जितने भी महारोगों से जूझ रही हो, उसके कैन्सर का स्टेज जो भी हो, पोषक ऊर्जा अपना प्रभाव अवश्य दिखायेगी। उन्होंने रोगिणी को अन्य कोई भी औषधि नहीं दी। वे पूरी तरह पोषक ऊर्जा पर निर्भर कर गये। *(सन्दर्भ-११०)*

डॉ. चौहान के निर्णय को चुनौती नहीं दी जा सकती : चौथे स्टेज के कैन्सर पर विजय दर्ज कर दी गयी, सात वर्षों तक कैन्सर को रेकरैन्स का मौका नहीं मिल सका। श्रीमती सुशीला देवी कैन्सर-मुक्त हैं। वैज्ञानिक जाँच पाती है कि उनके शरीर में कैन्सर का कोई सबूत नहीं है। डॉ. चौहान मानते हैं कि अब कैन्सर ही नहीं है। कैन्सर ही नहीं है, तो उसके होने का सबूत कौन पैदा करेगा ? अब डॉ. चौहान भविष्य में कैन्सर होने की संभावना को मिटाने के लिए पोषक ऊर्जा की खूराकों का प्रयोग कर रहे हैं।

फरवरी १९९७ की जाँचों से भी कैन्सर के नहीं रहने की पुष्टि हुई है। *(सन्दर्भ-१११ और सन्दर्भ-११२)*

लखनऊ
२५/८/६७

case के बारे में, खासकर recurrence के, अपना विचार अवश्य लिखें। आपका पत्र हमें सांत्वना देता है।

भवदीय
देवीसिंह

(सन्दर्भ-११३)

श्रीमती सुशीला देवी अगस्त ६७ से स्नायु रोग की समस्याओं से ग्रस्त थीं और चिकित्सा तथा जाँच के लिए लखनऊ गयी थीं। सबको शंका थी कि कैन्सर सम्भवतः बढ़कर अस्थियों तथा शरीर के विभिन्न संस्थानों में पहुँच गया है। संभवतः डॉ. चौहान का मन भी आंशिक रूप से इस शंका में भागीदारी करने लगा था। दिनांक २५.०८.६७ को उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के डॉ. एस. पी. सिंह को लिखा। *(सन्दर्भ-११३)* इस सन्दर्भ में एक पत्र दिनांक ११.०६.६७ को उन्होंने आश्वस्त होकर लिखा कि मूल समस्या स्नायु-तंत्र की लगती है, कैन्सर की नहीं। *(सन्दर्भ-११४)*

Lucknow
11.9.97

मूल समस्या स्नायु-System की लगती है दोनों सब इसी से जुड़ी लगती हैं। Local vaidya वायु विकार बताते हैं। जो दवायें यहां अब तक दी हैं, उनमें कई आयुर्वेद की हैं जो Physiologist ने दी हैं।

आर. जुड़ अभी की reports संलग्न हैं।

आशा है सकुशल हैं। त्रिवेदी जी को मेरा नमस्कार कहिये।

आपका
देवीसिंह

(सन्दर्भ-११४)

श्रीमती सुशीला देवी नहीं रहीं

वृद्धावस्था और कई-कई रोगों के प्रहार से दुर्बल हो चुके शरीर के बावजूद श्रीमती सुशीला देवी ने कैन्सर को परास्त करके साढ़े नौ वर्ष की अवधि को कैन्सर-मुक्त रहकर बिताया। श्री देवी सिंह चौहान के पत्र (दि. १२.०१.६८ को भेजे गये) के अनुसार श्रीमती सुशीला देवी ने दिसम्बर ६७ के अन्तिम सप्ताह में दुर्बलता के कारण अपनी अनित्य देह में रहना अस्वीकार कर दिया। *(सन्दर्भ-११४ बी)* ☐

आगरा
12.1.98

परम प्रिय डा० एस० पी० सिंह जी,

अशुभ सूचना, जिसे सुन आपको भी शोक दुःख होगा, है कि मेरी धर्मपत्नी का देहावसान दिसम्बर के अंतिम सप्ताह में हो गया। अंतिम औषधियों का प्रयोग न होने के कारण वापिस कर दी हैं। मैं आप और प्रो० [illegible] का अत्यंत आभारी हूँ, कि औषधि ने 9½ वर्ष का जीवन दान उन्हें दिया। उनकी मृत्यु कैंसर से नहीं, शारीरिक दुर्बलता से हुई। भगवान आपको इस रोग को जीतने और सफल इलाज करने में सहायक हो।

आपका देवीसिंह

(सन्दर्भ-११४ बी)

जब यह चर्चा होती है कि कैन्सर और एड्स दूर करनेवाली दवाएँ नहीं होने से चिकित्सा-जगत में बड़ी चिन्ता व्याप्त है, तो साधारण आदमी यही अर्थ ग्रहण करता है कि अन्य सभी रोगों को दूर करनेवाली दवाओं का पुख्ता इन्तजाम चिकित्सा-विज्ञान के पास है।

वास्तविकता यह है कि अभी रोग दूर करनेवाली दवाओं की तलाश तो गैस्टिक और एसिडिटी के स्तर से ही शुरू करनी है, जिन्हें दुनिया की आधी आबादी अपनी कमीज के पीछे बटनबन्द किये निराश घूम रही है।

ड्रगों से तो रोग-निवारक दवाएँ बन ही नहीं सकतीं। वैज्ञानिक ड्रग-नियमावली रोगों के ऐसे बावन वर्गों (जिनमें प्रायः सैकड़ों रोग आते हैं) का हवाला देती है, जिन्हें दूर करने अथवा जिनकी रोक-थाम करनेवाली दवाएँ ड्रगों से कभी भी (अर्थात् अनन्त काल तक भी) बनायी ही नहीं जा सकतीं।

अन्ननली का कैन्सर
(CA. DESOPHAGUS)

श्रीमती आनन्द कुमारी शर्मा, ५३ वर्ष
द्वारा : डॉ. पी. एल. शर्मा
४/१, विजय नगर
बदायूँ-२४३६०१

जाँच : दिनांक २७-२-९५ को 'केशलता कैन्सर एण्ड जनरल हॉस्पीटल, बरेली' के डॉ. महेश गुप्ता ने ओसोफेगो-

Keshlata Cancer & General Hospital
DELAPEER, STADIUM ROAD, BAREILLY-243122

OESOPHAGO – GASTRO – DUODENOSCOPY REPORT

Patient's Name : Smt. Anand.Kumari Sharma   Date : 27.2.95

Age & Sex : 53 yrs, female

Consultant : Dr. Mahesh Gupta, M.D.

O.G.D. performed with Olympus OGF Fiberoptic endoscope.

Oesophagus : There is a large polypoid , ulcerated lesion in the middle oe sophagus at approx. 25 cms from insisor teeth It was bleeding on touch and causing severe narrowing of the lumen. Multiple biopsies were taken from this lesion. Proximal oesophagus shows normal appearance.

Stomach : Further exam was not possible due to severe obstruction.

Impression : LARGE POLYPOID ,ULCERATED LESION IN MIDDLE OESOPHAGUS ALONG WITH SEVERE DISTAL OBSTRUCTION.
(Histology report is awaited).

(ENDOSCOPIST)
डा० विपुल कुमार

(सन्दर्भ-११५)

गैस्ट्रो- ड्युडेनोस्कोपी द्वारा जाँच का प्रयत्न कराया किन्तु अवरोध (आब्स्ट्रक्शन) इतना जटिल था कि पूरी जाँच संभव ही नहीं हो सकी। रिपोर्ट में भी यही लिख दिया।

"...उस बीच इनका स्वाद और भूख फिर कम हो गयी। और वजन घट कर 38 kg रह गया। और इतनी कमजोर हो गयीं थीं टट्टी पेशाब भी बिस्तर पर होती थी। पूर्ण स्वस्थ (बीमारी से पहिले) दशा में वजन 80 kg था।..."

(सन्दर्भ-११६)

(सन्दर्भ-११५)

बाद में बायाप्सी से कैन्सर की पुष्टि हुई "स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा इन द मिडिल ऑफ इसोफेगस।"

पूर्व चिकित्सा और चिकित्सा की नीति

सर्जरी व्यावहारिक नहीं थी। अतः इस केस की चिकित्सा के लिए कुशल चिकित्सकों ने एक नीति तय की—एक किमोथेरापी के बाद एक महीने तक रेडियोथेरापी, फिर एक महीने का गैप और पुनः किमोथेरापी, एक-एक माह के गैप पर (केशलता अस्पताल, सी.

दिनांक: 14-10-95
स्थान: बदायूँ (यू.पी.)

प्रिय महोदय, मैं कैन्सर रोग से पीड़ित आपकी मरीज हूँ। प्रारम्भिक अवस्था में मैं खाना नहीं खा सकती थी, उल्टी हो जाती थी। और द्रवपदार्थ दूध, आदि भी लेने में बहुत कठिनाई होती थी। और बीच-2 में उपकाई तथा उल्टीयाँ होती थी। लेकिन जब से आपके केन्द्र की दवा का सेवन किया है। मुझे मेरे रोग में काफी सुधार है। मैं इस ईसोफेगस ट्यूब के कैंसर से पीड़ित हूँ। कल के Test से पता चला है। कि मेरी भोजन-नली का मार्ग कुछ साफ हो गया है और मैं अब खाना खाने लगी हूँ। छोटे-2 ग्रास आसानी से खा लेती हूँ। लेकिन बड़ा ग्रास खाने में अभी भी थोड़ी परेशानी होती है। मेरे सामान्य स्वास्थ में भी सुधार है। मेरा वजन अब बढ़कर 52 kg हो गया है। और अब मैं सुबह शाम टहल भी लेती हूँ।

पूर्ण स्वस्थ होने पर मैं आपके केन्द्र पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होने का प्रयास करूँगी।

कष्ट के लिये धन्यवाद। आपकी रोगी:

आनन्द कुमारी शर्मा,

(सन्दर्भ-११७)

आर. नं. १५१८/६५, आर. टी. नं. ११६/६५)।

आदरणीय डाक्टर साहब, 16. 4. 97
नमस्कार
मरीज कोई भी दवा पिछले 3 माह से नहीं ले रही है क्योंकि घर में परेशानी थी। मरीज पूर्ण रूप से ठीक है कोई भी किसी तरह की मरीज को स्वयं परेशानी नहीं है। खानपीने से भी किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं है। सब ठीक ठाक है।
श्याममनोहर शर्मा
कृते श्रीमती आनन्दकुमारी शर्मा
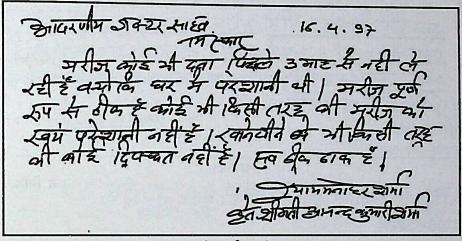
(सन्दर्भ-११८)

पहला चक्र चला

११-३-६५ से किमोथेरापी।

१५-३-६५ से २५-४-६५ तक ३० रेडियेशन।

२५-४-६५ से एक महीने तक गैप रखकर पुनः २५-५-६५ को किमोथेरापी की योजना।

पेचीदगी तो चिकित्सा का मोर्चा तय करने में थी ही, परिजनों की चिन्ता बढ़ रही थी। इसी बीच किसी स्रोत से जानकारी मिलने पर उन्होंने 'सर्वपिष्टी' शुरू करा दी।

'सर्वपिष्टी' शामिल : 'सर्वपिष्टी' २६-३-६५ से शामिल की गई, किन्तु डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की राय थी कि साथ-साथ चलने पर यह पता करना कठिन होगा कि किमोथेरापी का क्या असर है और 'सर्वपिष्टी' के प्रति रोगिणी की ओर से क्या रेस्पान्स है। अतः 'सर्वपिष्टी' बीच में रोक दी गयी और किमोथेरापी के तीन चक्र चलने के बाद केवल 'सर्वपिष्टी' ही चलायी गयी। जून के अन्त में किमोथेरापी के तीन चक्र पूरे हो गये। आगे किमोथेरापी लेने का विचार रोगिणी का भी नहीं था और उसकी स्वास्थ्य-स्थिति भी इसे झेलने लायक नहीं रह गयी थी। *(सन्दर्भ-११६)*

विशेष : परीक्षण-नीति के अन्तर्गत रोगियों के लिए 'सर्वपिष्टी' केवल तभी चलाई जाती है, जब दो-तीन सप्ताह चलाकर देखने से रोगी की ओर से पोषक ऊर्जा की खूराकों के प्रति 'रेस्पान्स' उजागर हो जाता है। यदि रेस्पान्स नहीं मिलता, तो रिसर्च सेण्टर निवेदन करता है कि इन्हें बन्द कर दिया जाय।

आनन्द कुमारी शर्मा अब पूर्णरूपेण ठीक हो गई हैं
खाने-पीने में कष्ट नहीं है भोजन हर प्रकार का खाती है और
पच भी जाता है। अपनी ड्यूटी (स्कूल में प्राध्यापक) भी
भली प्रकार कर रही हैं। यदि कुछ दिक्कत है तो केवल यही
कि वजन ज्यादा बढ़ गया है।

07/11/97
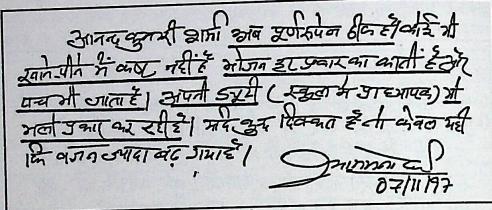
(सन्दर्भ-११६)

'सर्वपिष्टी' नियमित रूप से प्रारम्भ : दिनांक १३-७-६५ से।

प्रगति-विवरण

दिनांक ३-८-६५ की रिपोर्ट : "आपकी औषधि का सुप्रभाव दिनो-दिन दिखाई देने लगा है। जो मरीज चारपाई में भी उठने-बैठने में असमर्थ था, अब अपनी दैनन्दिन क्रियाओं के लिए स्वयं आने-जाने लगा है।"

४-६-६५ : (रोगिणी का पत्र) "मेरे स्वास्थ्य में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। अब मैं भोजन में रोटी भी खाने लगी हूँ और थोड़ा चलने-फिरने भी लगी हूँ। वजन भी बढ़ रहा है।"

दिनांक १४-१०-६५ : (रोगिणी का पत्र) "...लेकिन जबसे आपके केन्द्र की दवा का सेवन किया है मेरे रोग में काफी सुधार है... कल के टेस्ट से पता चला है कि मेरी भोजन-नली का मार्ग कुछ साफ हो गया है...छोटे-छोटे ग्रास आसानी से खा लेती हूँ, लेकिन बड़ा ग्रास खाने में अभी भी थोड़ी परेशानी होती है। मेरे सामान्य स्वास्थ्य में भी सुधार है। मेरा वजन अब बढ़कर ५२ कि. हो गया है और अब सुबह-शाम टहल लेती हूँ...।" *(सन्दर्भ-११७)*

१६-५-६६ की रिपोर्ट : "मैं इस समय तो पूर्ण रूप से ठीक हूँ।"

पूर्ण स्वास्थ्य के आश्वासन के बाद 'सर्वपिष्टी' बन्द करने का निर्णय लिया गया।

१६-४-६७ : श्रीमती शर्मा के अभिभावक ने १६-४-६७ को केन्द्र पर आकर मरीज के स्वस्थ होने की रिपोर्ट दी। *(सन्दर्भ-११८)*

दि. ०७.११.६७ की रिपोर्ट : अभिभावक श्री श्याम मनोहर शर्मा ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर आकर श्रीमती शर्मा के विषय में रिपोर्ट दी कि वे पूरी तरह ठीक हैं, स्वस्थ-सशक्त रहकर अपनी नौकरी में लगी हैं और निगलने (खाना) में किसी तरह का अवरोध नहीं है। *(सन्दर्भ-११६)* ☐

२२

अन्ननली का कैन्सर

(लेफ्ट पाइरीफार्म फोसा का कैन्सर)

(LEFT PYRIFORM FOSSA)

श्री पशुपति शी, ६० वर्ष
कोना, लिलुआ
हावड़ा (प० बंगाल)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : आर. जी. कर मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, कलकत्ता (रजि. नं. १६७/६३) बायाप्सी, रजि. ११-६-६३, 'हिस्टो पैथोलाजिकल, रिपोर्ट नं. एफ/३१८/६३। *(सन्दर्भ-१२०)*

Scientific Clinical Research Laboratory Pvt. Ltd.
2, RAM CHANDRA DAS ROW
(OFF 77, DHARMATALA STREET)
CALCUTTA-700013
Phone: 244-1098

Dr. Subir Kumar Dutta
MBBS, DCP, MD. (Path & Bact.)
Dr. Sunil Kumar Gupta
MBBS, DCP, MD, FACPath. (Eng.)

No. F/318/93.

Date 11-6-1993

REPORT ON THE EXAMINATION OF
Tissue from left pyriform fossa

Patient's Name Sri.Pashupati Shee.

Referred by Dr. D.K.Banerjee.

HISTOPATHOLOGICAL REPORT

Sections show histology of an infiltrating moderately differentiated squamous cell carcinoma.

[signature]
For Scientific Clinical Research Laboratory Pvt. Ltd.

(सन्दर्भ-१२०)

कई क्षेत्रों के कैन्सर-ट्यूमर अपने जन्मकाल से ही पीड़ित व्यक्ति को चिकित्सा में नियुक्त कर देते हैं। कंठ और अन्ननली के ट्यूमर इसी वर्ग में आते हैं। नमक मिले गुनगुने पानी के गरारे और कुंजल से शुरू होकर चिकित्सा की माँग पड़ोसी डाक्टर के दरवाजे पर खड़ा करती है, फिर बड़े अस्पताल ले जाती है। इन क्षेत्रों में रोग का उतार-चढ़ाव भी सीधे अनुभव में आ जाता है।

শ্রী পশুপতি শী তা- ১/৫/৯৫

গত ৩১/৩/৯৫ তারিখে [illegible] Sri Aurobinda Seva Kendra 1H, Gariahat Road (South) Jodhpur Park Cal-68. (An EEDF Medicine Centre) Dr. Goutam Bhattacharjee [illegible] Check up. [illegible]

[illegible]

১/৫/৯৫.

(सन्दर्भ-१२१)

श्री पशुपति शी को भी इसी पगडण्डी से गुजरना पड़ा, वह भी दौड़ लगा कर—थोड़ी असुविधा, फिर खाने में दर्द और रुकावट, फिर पानी पीने में भी। जब थूक निगलने जैसी सामान्य हरकत भी असह्य तो गयी, तो पहुँचे आर. जी. कर मेडिकल कॉलेज अस्पताल, कलकत्ता। बायाप्सी से कैन्सर की पुष्टि हुई। रोगी की ढलती उम्र और उससे अधिक जोखिम भरा उनका गिरा हुआ स्वास्थ्य, सर्जरी और किमोथेरापी की ओर बढ़ने की अनुमति नहीं दे रहे थे। एक रास्ता था कि रेडियेशन के द्वारा कुछ समय के लिए आराम दिया जाय। अतः २२-६-६३ को रेडियोथेरापी शुरू कर दी गई। किन्तु रेडियेशन की प्रतिक्रिया ने श्री पशुपति शी को और अधिक बेचैन कर दिया। उन्होंने रेडियेशन लेने से इन्कार कर दिया। चिकित्सक क्या करते ! मात्र तीन दिन सिकाई करने के बाद रेडियेशन बन्द कर देना पड़ा और श्री शी को उनके भाग्य के भरोसे छोड़ देना पड़ा।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दि. १५.७.६३ से

लगभग बीस दिनों तक वे घर में ही पड़े रहे। इसी बीच किसी पड़ोसी ने 'सर्वपिष्टी' की चर्चा की। डी. एस. रिसर्च सेण्टर से १५.७.६३ को औषधि लायी गयी। औषधि का प्रभाव दो-तीन दिनों में ही परिलक्षित होने लगा। दो सप्ताह बाद दर्द कम हुआ और खाने-पीने में भी सहूलियत आयी। तीन महीने बीतते-बीतते दर्द शान्त हो गया, खान-पान भी पूर्ववत हो गया।

आराम तो था, किन्तु डी. एस. रिसर्च सेण्टर रोग की स्थिति जानने को उत्सुक था। श्री पशुपति शी ३.११.६३ को जाँच कराने के लिए आर. जी. कर अस्पताल पहुँचे। जाँच के बाद चिकित्सकों ने बताया कि रोग बहुत नियंत्रित हो गया है, और अब ऑपरेशन किया जा सकता है। किन्तु श्री शी के तर्क के आगे न परिजनों की चली, न चिकित्सकों की, ''अब तो जो कुछ होना है 'सर्वपिष्टी' से ही होगा। इतना बदलाव अगर आया, तो आगे के लिए भी मैं उसी दवा पर निर्भर करूँगा। फिर आपरेशन से कैन्सर के चले जाने का आश्वासन भी तो नहीं है।''

Pashupati Shee.

14/03/96

মহাশয় -

– রোগী অত্যন্ত দুর্বল ছিল – শক্ত খাবার খেতে পারতো না। গলায় প্রচণ্ড ব্যথা হতো। কিছুদিন প্রায় বিছানায় শুয়ে দিন লিকুইড খাবার ছাড়া খেতে পারতো না। 25/3/93 তারিখ থেকে ঔষধ সর্বপিষ্টী খেতে শুরু করল, এক মাস পরে বেশ সুস্থ হয়েছে। আরও কিছুদিন খাবার পর আরও বেশী সুস্থ হয়ে উঠল। এখন পুনরায় আগের মত সুস্থ হয়ে উঠল – শক্ত খাবার, চলাফেরা, বাজার দোকান এমন কি সাইকেল চালাতে শুরু করল। দেখতে দেখতে তিন সাল ঔষধ খেয়ে গেলো –

Amal Kumar Shee/14/3/96.

(सन्दर्भ-१२२)

तीन-साढ़े तीन महीने और बीतते-बीतते लगने लगा कि अब रोग की उग्रता पर अंकुश अवश्य लग चुका है। ३१.३.६४ को अरविन्द सेवा केन्द्र, जोधपुर पार्क, कलकत्ता-६८ के डॉ. गौतम भट्टाचार्य ने अस्पताल में ही रोगी की विधिवत जाँच की और पाया कि रोग का कोई चिन्ह शेष नहीं है। (१.४.६४ का मूल बंगला पत्र, *सन्दर्भ-१२१)*

वैज्ञानिक तो रोगी के अनुभवों के आधार पर मिलने वाली रिपोर्ट को बहुत महत्व देते हैं। कैन्सर में तो जिन्दगी और मृत्यु के बीच सीधी लड़ाई होती है। इस क्षेत्र में जीवन की अनुभूतियों का खास महत्व है।

कैन्सर-रोगी अपने अनुभवों के विषय में जो रिपोर्ट देता है, विज्ञान-जगत में उसे यांत्रिक जाँच से कम महत्व नहीं दिया जाता। जहाँ लड़ाई जिन्दगी और मृत्यु के बीच हो, वहाँ रोगी की अनुभूतियाँ प्रायः साफ-साफ बोल जाती हैं कि कब जिन्दगी का पलड़ा भारी हो रहा है, और कब खतरे का।

श्री पशुपति शी ने एक विकट युद्ध-यात्रा की है। कैन्सर के खतरे ने कभी उन्हें चारपाई में निढाल छोड़ा है, तो कभी खतरे को पैरों से दबाकर वे साइकिल चलाते दिखाई देते हैं। उनके पुत्र ने दि. १४.०३.६६ को जो रिपोर्ट दी, वह युद्ध के दृश्यों का हवाला है। यदि श्री शी का शरीर वृद्ध-जर्जर नहीं होता, तो यह लड़ाई और भी प्रभावशाली रहती।

"तब रोगी बहुत दुर्बल थे। कोई गाढ़ी चीज खा ही नहीं पाते थे। गले में असह्य दर्द होता था। (सर्वपिष्टी) २५.०३.६३ से लेने लगे। एक महीने बाद बहुत स्वस्थ हो गये। पहले जैसे स्वस्थ, सब कुछ आराम से खा-पी लेना, चलना-फिरना और बाजार-दूकान चले जाना। यहाँ तक कि साइकिल चलाने लगे।....." *(सन्दर्भ-१२२)*

Pashupati Bhu. 03/06/97
Kona, Howrah-

① রোগী -এখন ভালো আছে। কিন্তু শরীর অতীব দুর্বল।
② খাওয়া দাওয়া স্বাভাবিক। কোনো কিছু খাইতে অসুবিধা হচ্ছে না।
③ রোগীর অবশ্যে অসুবিধা হলো রাত্রে ঘুমাবার সময় কষ্ট বোধ করিতেছে। সকালের দিকে কোনো অসুবিধা হচ্ছে না। ঘোরা ফেরা - বাজার দোকান সব করছে।
④ সকালের দিকে লক্ষ করা যাচ্ছে যে মুখ থেকে যে লালা নির্গত হচ্ছে তাহা খুব আঁঠার মতো, যেন জিভ থেকে বের হচ্ছে না.

Sd. Amal Bhu.

(सन्दर्भ-१२३)

दि. ०३.०६.९७ की रिपोर्ट
('सर्वपिष्टी' शुरू करने के चार वर्ष बाद)

श्री पशुपति शी के पुत्र अमल शी ने रिपोर्ट दी, (१) ''रोगी इस समय ठीक है, किन्तु शरीर बहुत दुर्बल है। (२) खाना-पीना स्वाभाविक। कोई भी चीज खाने (निगलने) में असुविधा नहीं होती। (३) रात में सोते समय कष्ट अनुभव करते हैं। सुबह कोई कष्ट नहीं रहता। घूमना-फिरना, बाजार-दूकान सब कुछ करते हैं। (४) सुबह मुँह से जो लार आता है, गोंद जैसा गाढ़ा होता है।'' *(सन्दर्भ-१२३)* ❑

आम, इमली, नीम, अमड़ा आदि वृक्ष गर्मियों में फल देते हैं। इनके बीजों को गर्मी और लू का मुकाबला करते हुए बढ़ना और विकसित होना होता है। अपने बीजों के पोषण और उन्हें गर्मी से सुरक्षा देने के लिए ये वृक्ष बीजों के इर्द-गिर्द जो गूदा एकत्र करते हैं, कच्चे रहने पर उनमें प्रायः स्वाद के विचार से खटास और कड़वाहट होती है। इन गूदा-पदार्थों में गर्मी झेलने की सचेतन क्षमता रहती है।

भारतीय लोक-जीवन में अति प्राचीन काल से लोग गर्मी और लू से अपने बचाव और इनके कुप्रभाव की चिकित्सा के लिए इन खटाइयों का प्रयोग करते रहे हैं। लोग नीम के फूलों का संग्रह करते हैं और लू के दिनो में उसे पीसकर शर्बत के रूप में प्रयोग करते हैं।

क्षण-क्षण परिवर्तनशील प्रकृति से पूर्ण सामंजस्य बिठाकर ही स्वस्थ रहा जा सकता है। जाहिर है कि इस सामंजस्य को स्थापित करने में वानस्पतिक जगत की वह ताजा आहार-सामग्री, जो उस समय की उन्मुक्त प्रकृति से सामंजस्य बिठाकर विकसित हुई हो, सहज ही समर्थ होती है। वह मनुष्य को पोषण और स्वास्थ्य-रक्षा की ऊर्जा प्रदान करती है।

२३
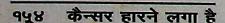
पेट का कैन्सर
(CA. STOMACH)

श्री लोकेश भट्टाचार्य, ४५ वर्ष
द्वारा : श्री हरिरंजन चक्रवर्ती
सुभाषग्राम, कोडलिया
जिला : २४ परगना (दक्षिण)
प. बंगाल

रोग का इतिहास : बारह वर्षों से ड्यूडेनल अल्सर, हाइपर एसिडिटी, अपच, पेट की जलन और समय-समय पर उभरने वाला भयंकर पेट-दर्द झेल रहे थे। चिकित्सा चलती रही।

८.१२.६४ से १२.१.६५ तक एस. एस. के. एम. अस्पताल, कलकत्ता में भर्ती रहे। ३०-१२-६४ को पेट और ड्यूडेनल का ऑपरेशन हुआ। वहाँ कैन्सर उपस्थित था, जिसकी पुष्टि बायाप्सी से हुई।

एस. एस. के. एम हॉस्पीटल, डिस्चार्ज सर्टिफिकेट नं. २६४६६- इनफिल्ट्रेटिंग एडेनो कार्सिनोमा। *(सन्दर्भ-१२४)*

Unit- A (Thurs)
Curzon - 2.

West Bengal Form No. 317.

DISCHARGE CERTIFICATE

No. 26499

I hereby certify that L. Bhattacharya S/o Sitnath Majumdar of 8. Krishna Chatterjee Lane, Bally, Howrah was under treatment in this Hospital from 8/12/94 to 12/1/95 suffering from ?CA stomach – lower [illegible] gastrectomy c gastrojejunostomy done on 30/12/94

SSKM Hospital Signature S. Sinha

The 11.1. 1995 Designation PGT

ACJP—A 134—1987-88—7,18,200

(सन्दर्भ-१२४)

Mr. Lokesh Bhattacharya is under treatment at DS Research Centre, Calcutta, since 26.01.1995. It may be noted that, the patient is not taking any other medicine, then prescribed by the M.O. In-Charge at this Centre.

As regard to the present condition of the patient, it has remained the same as it was at the time of discharge from S.S.K.M. Hospital. No deterioration or remarkable development in the condition is observed. He is attending to his office, as well as other duties quite normally and no trouble has been found so far.

Dated, Subhasgram,
PO : Kodalia,
Dist : 24 Pargs(S), W.B..
the 9th May-1996.

(B.J. CHAKRABORTY)
Brother In-Law of Mr.
Lokesh Bhattarya, Patient.

(सन्दर्भ-१२५)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २६.१.६५।

ऑपरेशन द्वारा उत्पन्न समस्याओं और उन समस्याओं को हल करने के लिए चलनेवाली अंग्रेजी दवाओं से ज्यों ही अवकाश मिला, श्री भट्टाचार्य ने 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी। उनका दृष्टिकोण था कि रोग का रेकरैन्स नहीं होना चाहिए। ऐसा करने की राय उनके मित्रों ने दी थी।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के बाद से उन्होंने अन्य किसी प्रकार की कोई औषधि नहीं ली। अब तक न तो किसी प्रकार का कोई उलझाव उत्पन्न हुआ, न रोग ने सर उठाया, न कोई कष्ट हुआ। उत्साहित होकर वे ऑफिस जाकर अपना कार्य

Sir,

In continuation to the previous report, it is to mention that the patient has not developed any problem or deterioration in the condition. No change has so far been noticed to remark. He is continuing his office duties and other work as well as the feedings as usual.

Yours faithfully,

Dated : 4/4/97

(B.J. CHAKRABORTY)

for Lo Bhattacharya

(सन्दर्भ-१२६)

रोगी का नाम
Name of the Patient Lokesh Bhattachrya

(१) रोगी की वर्तमान समस्यायें
Present Problems Nothing

(२) क्या प्रगति हुई
Improvement Ok

(३) इधर क्या नये उत्पात प्रगट हुये।
Any new problem NC

(४) जिन्द व्याप कष्ट के लिये क्या उपाय किया गया
Measures taken for other complains
Nothing

हस्ताक्षर Signature

दिनांक/Date 9.7.97

for Lokesh Bhattacharya 9/7/97

रोगी से सम्बन्ध
Relation with Patient
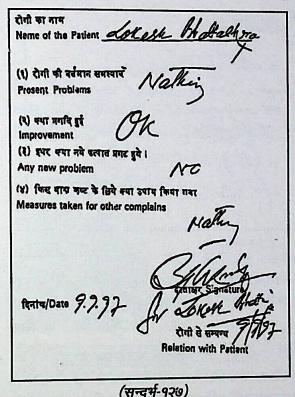
(सन्दर्भ-१२७)

करने लगे। वे एक सामान्य, स्वस्थ व्यक्ति की तरह वे अपने गृहस्थ जीवन के दायित्वों को भी सक्रिय रहकर पूरा करते हैं। इस शान्त-सक्रिय जीवन में अब तक रोग अथवा उसके लक्षण सम्बन्धी कोई बाधा नहीं आयी। *(सन्दर्भ-१२५)*

४.४.६७ की रिपोर्ट : श्री भट्टाचार्य के संबन्धी श्री बी. जे. चक्रवर्ती ने दिनांक ४-४-६७ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखा, जिसमें श्री भट्टाचार्य की वर्तमान स्वास्थ्य-स्थिति का ब्यौरा है। पत्र अंग्रेजी में है, जिसका हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है- "पिछली रिपोर्ट के आगे सूचना यह देनी है कि रोगी को न तो कोई समस्या उत्पन्न हुई है, न हालात में किसी प्रकार की गिरावट आयी है। कोई ऐसा परिवर्तन नहीं आया, जिस पर ध्यान दिया जाय। वे अपने कार्यालय का दायित्व तथा अन्य कार्य यथापूर्व कर रहे हैं और खान-पान भी उसी प्रकार है।" *(सन्दर्भ-१२६)*

विशेष : जब स्वास्थ्य की ओर से आश्वासन मिला कि कोई खतरा संभावित नहीं है, तो 'सर्वपिष्टी' की खूराकें बढ़ते हुए अन्तराल के साथ दी जाने लगीं। अब तो वे सप्ताह अथवा दस दिनों के अन्तराल से उतनी ही औषधीय मात्रा ले रहे हैं, जितनी रोग की सामान्य अवस्था में प्रतिदिन लेनी होती है।

दिनांक ०६.०६.६७ की रिपोर्ट

श्री लोकेश भट्टाचार्य के लिए दो सप्ताह का अगला औषधीय कोर्स (जिसे वे तीन महीनों में पूरा करते हैं) प्राप्त करने के लिए केन्द्र पर उपस्थित उनके साले श्री बी. जे. चक्रवर्ती ने उत्साहपूर्वक वही रिपोर्ट दी, जो पिछले वर्षों से चली आ रही थी—अर्थात् श्री भट्टाचार्य हर प्रकार से स्वस्थ, सक्रिय, सामान्य और प्रसन्न हैं। *(सन्दर्भ-१२७)*

विशेष : इनफिल्ट्रेटिंग प्रकृतिवाले पेट के कार्सिनोमा का तीन वर्षों तक पुनः अपने पेचीदे उपद्रवों तथा उग्रता के साथ उपस्थित नहीं होना अपने आप में एक महत्वपूर्ण एवं

Name : Lokesh Bhattacharjee

Present-Problems : Nothing (Normal)
(Patient has not developed any Problem or deterioration)

(B.J. Chakrabarty)
for Lokesh Bhattacharjee

dt. 6/12/97
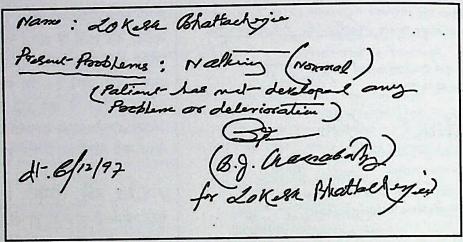
(सन्दर्भ-१२८)

उत्साहवर्द्धक परिणाम है। तब तो और भी इस परिणाम का महत्व है, जब श्री भट्टाचार्य लम्बे समय से एक सप्ताह के लिए पर्याप्त औषधि-मात्रा से छह सप्ताह निकालते हुए पूर्ण स्वस्थ चल रहे हैं।

दिनांक ०६.१२.६७ की रिपोर्ट : श्री बी. जे. चक्रवर्ती ने दिनांक ०६.१२.६७ को केन्द्र पर आकर बताया कि रोगी की स्वास्थ्य-स्थिति इतनी सामान्य है कि औषधि को कम अन्तराल से चलाने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। वे पूर्ववत ही स्वस्थ, सक्रिय और प्रसन्न हैं। उन्होंने रिपोर्ट दी, ''सब कुछ नॉर्मल है, कोई समस्या नहीं है। रोगी के स्वास्थ्य में न तो कहीं कोई गिरावट आयी है, न किसी समस्या ने सर उठाया है।'' *(सन्दर्भ-१२८)*।

❑

क्या चमड़े पर स्टील की चिप्पी कायम हो सकती है ? नहीं। कपड़े पर कपड़े की, धातु पर धातु की और चमड़े पर चमड़े की ही चिप्पी लगायी जाती है। हमारा शरीर जिस प्राकृतिक आहार (अन्न) से बना है, चिकित्सा में भी उसी आहार से प्राप्त ऊर्जा का व्यवहार प्रकृति-सम्मत है। आहार से प्राप्त पोषक ऊर्जा ही चिकित्सा का सही माध्यम है।

शरीर-निर्माण में सोना, चाँदी, पारा आदि की कोई भूमिका नहीं है। इनके द्वारा चिकित्सा के चमत्कारिक परिणाम निकालने की कोशिश की गयी है। किन्तु प्रकृति ने किसी चमत्कार को अपनी जीवन-धारा में स्थापित नहीं होने दिया है। अतः 'चमत्कार' किसी विज्ञान का विषय न तो कभी बन सके, न बन सकेंगे। चमत्कार का भरोसा लोग तभी करते हैं, जब विज्ञान हार जाता है।

२४

ब्रेन ट्यूमर
(इण्ट्रा सेरेब्रल लिम्फोमा)
(INTRA CEREBRAL LYMPHOMA)

श्रीमती रीता सिंह, २५ वर्ष
द्वारा : बाबू अनन्त प्रसाद सिंह
कपसेठी, वाराणसी।

जाँच और पूर्व चिकित्सा : इन्सटीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, बी. एच. यू. वाराणसी, न्यूरोसर्जरी विभाग, डिस्चार्ज समरी, हॉस्पीटल नं. १५०८, दि० ५.२.६१। *(सन्दर्भ-१२६)*

Consultant Neurosurgeons :
Prof. S. MOHANTY M. S. (Surg), M. Ch. (Neuro)
Dr. S. C. TONDON M. S. (Surg), M. Ch. (Neuro)

UNIVERSITY HOSPITAL
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI - 221 005

Δ Multiple periventricular tuberculoma or lymphoma ?

Name Reeta Singh, 25 yrs F. Age/Sex
Hospital No. 1508
Date of Admission 22-1-91, B. No. 2 Date of Discharge 5-2-91 Diagnosis

Referred to S.G.P.G.I. for stereotactic biopsy.

19/2/91
Malignant intracranial lymphoma (centroblastic lymphoma)

To consult Dr A. K. Asthana Radiotherapy Dept for further admission R.T. and for chemotherapy.

To come on Monday at 8.30 AM for Registration

(सन्दर्भ-१२६)

इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, बी. एच. यू. में पाया गया था कि रीता सिंह के ब्रेन में एक ट्यूमर है और समय से ही चिकित्सा शुरू कर दी गयी थी। कभी आराम तो कभी तकलीफ का सिलसिला चला, किन्तु कुल मिलाकर स्थिति सुधार की ओर नहीं थी। फरवरी, १६६१ की जाँच में पाया गया कि ट्यूमरों की संख्या बढ़कर छह हो गयी है। शारीरिक स्थिति भी शोचनीय ही हो गई थी—पाचन-तंत्र ने काम करना बन्द कर दिया था, शरीर पर स्नायुओं का नियंत्रण नहीं था। रोगिणी एक चम्मच पानी भी नहीं पचा पाती थी। पानी देने पर इतनी भयंकर उल्टियाँ होतीं कि पानी देना अपराध जैसा

SANJAY GANDHI POST GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, LUCKNOW

DEPARTMENT OF NEUROSURGERY

DISCHARGE SUMMARY

Ref.:PGI/Neurosurg/DS- /91 Date:18.2.91

Reeta Singh, 20yrs/F
C/O Sri Anant Singh
Village & Post Office: Kapgethi
Varanasi

C.R. No. 47850/91
D.O.A. 07.02.91
D.O.Op. 09.02.91
D.O.D. 18.02.91
Biopsy No. 285/91
X-ray No. NIL

Ref.By: Prof. S. Mohanty, Chief of Neurosurgery, Institute of Medical Sciences, Banaras Hindu University, Varanasi.

Diagnosis
. Malignant intracerebral lymphoma
. Biopsy : Centroblastic lymphoma

Treatment
. Stereotactic biopsy done under L.A. on 9.2.91.
Post Op - incident free.

Status on discharge - Status quo

Treatment advice
To attend Neurosurgery OPD on Thursday 4/4/91 at 9 A.M.

R. K. SHARMA)

(सन्दर्भ-१३०)

लगता था। आँखों की ज्योति चली गई।

चिकित्सकों से राय लेकर रोगिणी को लखनऊ अस्पताल ले जाया गया। वहाँ पता चला कि जो चिकित्सा वाराणसी में हो सकती है, उतनी ही यहाँ भी हो पायेगी। कोई चारा नहीं देखकर रोगिणी को घर लाया गया।

संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, लखनऊ, न्यूरोर्सजरी विभाग-सी. आर. नं. ४७८५०/९१, बायोप्सी नं. २८५/९१, दि. १८.२.९१ (डिस्चार्ज समरी)। *(सन्दर्भ-१३०)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २५.०२.९१

इसी बीच डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया गया। केन्द्र की दवा के साथ असुविधा थी कि वह खाने की दवा है। समस्या थी कि रोगिणी जब एक चम्मच पानी नहीं ले सकती, तो दवा कैसे दी जा सकेगी। फिर भी पहले सप्ताह की दवा ले ली गयी।

पहली खूराक पानी में घोलकर दी गयी। दवा की उल्टी नहीं हुई और दो-तीन खूराक दवा चलते-चलते तो उल्टियों का सिलसिला ही बन्द हो गया। रोगिणी को पानी, फिर फलों का रस और थोड़ा-थोड़ा दूध दिया जाने लगा। प्रत्यक्ष दिखायी देने लगा कि हर अगला दिन कुछ अधिक चेतना, स्वास्थ्य और शक्ति का दिन है। एक महीने बाद शरीर पर स्नायुओं का नियंत्रण कायम होने लगा। आँखों की ज्योति लौटी और रोगिणी थोड़ा-बहुत चलने-फिरने लगी।

Division of Neuroradiology & C. T. Scanning
Department of Radiology
Institute of Medical Sciences, B. H. U., Varanasi - 221005

CRANIAL COMPUTED TOMOGRAPHY — Plain / ENHANCED — Scan No. 10608

Name Smt. RITA SINGH — Ward / O.P.D. Radiotherapy

Age & Sex 22 yr. F — Referred by Dr. A. K. Asthana

Observations: Posterior fossa contents appear normal

The third & lateral ventricles are normal in size, shape & position, with septum in mid-line.

- The attenuation values of the brain parenchyma is within normal limits.
- There is evidence of a bony defect in the right frontal region. (? biopsy site)

17/1/92

Radiologist

(सन्दर्भ-१३१)

प्रो. त्रिवेदी भी सशंकित थे कि दिमाग के भीतर की बात है। उन्होंने अनन्त बाबू को अस्पतालों की मदद लेने का सुझाव दिया। अनन्त बाबू अडिग थे- ''अब तो जो भी होगा, 'सर्वपिष्टी' से ही होगा।''

तीन महीने बीते तो इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, बी. एच. यू. के अस्पताल में जाँच हुई। पता चला कि तीन ट्यूमर तो अदृश्य हो गये हैं, और शेष तीन का आकार भी घट गया है।

डॉ. ए. के. अस्थाना, रेडियोथेरापी विभाग द्वारा कराई गई जाँच, सी. टी. स्कैन नं. १०६०८, दि. १७.१.९२। *(सन्दर्भ-१३१)*

दवा नियमित रूप से चलती रही और रीता सिंह दिन-पर-दिन सामान्य तथा स्वस्थ होती चली गयी। रोग से सम्बन्धित कोई समस्या नहीं रह गई थी।

डॉ. अस्थाना द्वारा कराई गई अगली जाँच से पता चला कि अब कोई ट्यूमर शेष नहीं रह गया है। जाँच जब भी हुई, सब कुछ नॉर्मल पाया गया। जो किन्तु-परन्तु वाली बात स्वास्थ्य के साथ रह गयी, वह धड़फड़ में चली रेडियोथेरापी और किमोथेरापी के कारण है। ब्रेन का ट्यूमर भी नहीं रहा, कैन्सर के लक्षण भी नहीं रहे। कैन्सर भी नहीं रह गया।

बी. एच. यू. अस्पताल में समय-समय पर जाँच चलती रही। सात वर्ष बीते, तब तक रोग का उद्रेक नहीं देखा गया। असुविधा एक ही थी कि साल-छमाही कभी चक्कर आने लगा, जो अंग्रेजी दवा लेने से शान्त हो जाता। बी. एच. यू. अस्पताल के चिकित्सकों

Division of Neuroradiology & C. T. Scanning
Department of Radiology
Institute of Medical Sciences, B. H. U., Varanasi - 221005

COMPUTED TOMOGRAPHY — CRANIUM ✓
— PNS / ORBIT

PLAIN / ENHANCED
Scan No. 21280

Name Rita Singh
Age & Sex 24/m.

Ward / O.P.D. RT
Referred By Dr Asthana

Observations
Conclusion

Date 28/10/95
C. T. Films enclosed

Consultant Radiologist

(सन्दर्भ-१३२)

की राय थी कि लम्बे समय तक कैन्सर ट्यूमरों की उपस्थिति और रेडियेशन के कारण स्थापित दुष्प्रभाव से ब्रेन में सूजन आ जाया करती है। रेडियोथेरापी से कई स्नायुओं की क्षमता भी कम हो गयी थी।

बी. एच. यू. के अस्पताल में दि. २८.१०.६५ को सी. टी. स्कैन जाँच (नं. २१२८०) हुई। सब कुछ नॉर्मल पाया गया। जो १६६२ की जाँच में पाया गया, वही १६६३ में भी पाया गया और फिर १६६५ की जाँच में भी सब कुछ वैसे ही नॉर्मल पाया गया। *(सन्दर्भ-१३२)*

रीता सिंह की बड़ी बहन सुनन्दा बड़ी समझदार और धैर्यवान है। वह जो बात कहती है उसके आगे कहने लायक कुछ नहीं रहता। अपनी छोटी बहन के लिए कौन-सा कष्ट नहीं झेला उसने। एक बार बी. एच. यू. अस्पताल गयी थी। कोई स्तरीय सेमिनार होने जा रहा था। किसी चिकित्सक ने कहा, "रीता सिंह के सारे पेपर्स लाकर देना। सेमिनार में प्रस्तुत किया जाएगा, फिर सब तुम्हें वापस मिल जाएगा।"

सुनन्दा ने तपाक से कहा, "आप सेमिनार क्यों कर रहे हैं ? आपकी चिकित्सा ने तो हमारे हाथों में एक जिन्दा लाश सौंप दी थी। सेमिनार तो डी. एस. रिसर्च सेण्टर वालों को करना चाहिए।"

वैसा ही प्रभावी उत्तर देकर उसने प्रो. त्रिवेदी को भी निरुत्तर कर दिया था। दिनांक २२.०६.६७ को दोनों बहनें वाराणसी केन्द्र पर आयी थीं। रीता सिंह ने अपने स्वास्थ्य के विषय में एक संक्षिप्त रिपोर्ट दी, प्रायः यही कि "सब ठीक है।" प्रो. त्रिवेदी कुछ विस्तृत रिपोर्ट चाहते थे। सुनन्दा ने कहा, "अंकल, फरवरी ६१ को याद कीजिए। हम तरस रहे थे कि रीता इतना भी बोल देती कि 'मैं हूँ'। आज तो सात वर्ष बाद वह

आदरणीय अंकल जी यथा स्पर्श
समय ठीक हूँ थोड़ी कमजोरी हो गई है मेरी तबीयत इस और सब
ठीक है लेकिन हर दो चार रोज के बाद है ठीक
और क्या लिखूँ अंकल जी आप मेरे
लिए भगवान हैं।
शेष मिलने पर
22.9.97 Rita

(सन्दर्भ-१३३)

श्रीमती रीता सिंह - कपसेठी, वाराणसी
① इस समय स्वास्थ्य ठीक है, कोई शारीरिक एवं मानसिक परेशानी नहीं है
② भूख इतनी लगती है कि 1-2 बजे भोजन लेने में विलम्ब होने पर परेशान हो जाती हैं।
(3) अपने नित्य दैनिक क्रिया सम्पन्न करने के पश्चात् अन्य घरेलू कार्य सामर्थ्य अनुसार बराबर कर लेती हैं।
अनन्त
६.१०.९७

(सन्दर्भ-१३४)

बोल रही है कि 'मैं ठीक हूँ'। आप इन दोनों प्रसंगों को मिलाकर क्यों नहीं देखते ?" रीता सिंह की वह रिपोर्ट सन्दर्भ-१३३ में प्रस्तुत है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के पास श्रीमती रीता सिंह के श्वसुर अनन्त बाबू का पत्र दि. ६.१०.९७ को मिला जिसमें उसके स्वास्थ्य के विषय में सूचना दी गयी थी। (पत्रांश सन्दर्भ-१३४ में)

दिनांक २२.०१.९८ को श्रीमती रीता सिंह ने रिपोर्ट दी, "...मैं बी. एच. यू. के डॉ. अस्थाना से अपनी जाँच कराकर आ रही हूँ। उन्होंने जाँच करके बताया है कि मुझे ब्रेन ट्यूमर वाली बीमारी अब जरा भी नहीं है। मैं भी अपने को स्वस्थ अनुभव करती हूँ और घर के काम-काज बिना परेशानी के करती हूँ।" (सन्दर्भ-१३४ बी)

कपसेठी २२.१.९८,
सेवा में डायरेक्टर साहब डी. एस. रिसर्च सेन्टर
मैं बी. एच. यू. डा. अस्थाना से अपनी जाँच करा कर आ रही हूँ। उन्होंने जाँच कर के बताया है कि मुझे ब्रेन ट्यूमर वाली बीमारी अब जरा भी नहीं है
मैं भी अपने को स्वस्थ अनुभव करती हूँ और घर के सारे काम-काज बिना परेशानी के करती हूँ।
श्रीमती रीता सिंह
२२.१.९८

(सन्दर्भ-१३४ बी)

२५

ब्रेन ट्यूमर
(पीनियो साइटोमा)
BRAIN TUMOUR
(PINEO CYTOMA)

श्री श्रीराम वर्मा, ४० वर्ष
पुत्र : श्री छेदा लाल
ग्राम : बंजरगंज, पो. : रोशन नगर
जि. : लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा- संजय गाँधी पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज : (सी. आर. नं. ८४५०५/९२), बायाप्सी नं. १५६८२९२ दिनांक २२.७.९२। *(सन्दर्भ-१३५)।*

Department of Neurosurgery

Sanjay Gandhi Post-Graduate
Institute of Medical Sciences
RAE BARELI ROAD, UTTRATIA
LUCKNOW-225 002 INDIA

D. K. CHHABRA
V. K. JAIN
PIYUSH MITTAL
DEEPU BANERJI
ISHA TYAGI

PATIENT DISCHARGE SUMMARY

Sri Ram Verma
S/o Mr Chheda Lal
F-3/933 Sector I
Aliganj, Lucknow

CR No. 84505/92
DOA 08/07/92
DOOa
DOD 22.07.92
Biopsy No. 1568292

DIAGNOSIS OBSTRCTIVE HYDROCEPHLUS CAUSE POST 3RD VENTRICULAR PINEOCYTOMA.

(सन्दर्भ-१३५)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १६-१-९३

इन्स्टीट्यूट ने बीमारी का इतिहास नोट किया, "एक वर्ष से सर-दर्द होता और रोगी बेहोश होकर गिर जाया करता था। दर्द अधिकतर सबेरे होता। आँख की रोशनी चली जाती। कभी-कभी साथ में उल्टी होती। बेहोश होकर गिरने की घटना प्रायः टहलने पर होती। बेहोशी दिनचर्या बन गयी थी।"

जाँच में ट्यूमर की पुष्टि हुई और पाया गया कि केविटिंग में जल एकत्र हो जाने के कारण उपद्रव बढ़े हुए थे। ६.७.९२ को शण्ट डाला गया और फिर ऑपरेशन किया गया।

आपरेशन बाद लगभग दो महीने तक रेडियो थेरेपी की गयी तथा मरीज को हास्पिटल से छुट्टी मिल गयी। मरीज की हालत लगभग चार महीने तक ठीक रही परन्तु चार महीने बाद मरीज की हालत फिर खराब होने लगी तथा स्थिति पहले जैसी होने लगी इसी बीच मुझे D.S Research Centre वाराणसी का पता चला मैं प्रारम्भ में एक महीने की दवा ले गया दवा खाने के एक हफ्ते के बाद ही मरीज में सुधार आने लगा तथा मरीज अपने आपको स्वस्थ और चैतन्य महसूस करने लगा तथा दवाई निरन्तर पाँच महीने चलने के बाद पूरी तरह स्वस्थ हो गया तथा उसे अब किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।

Rakesh Kumar Verma
9.6.93

(सन्दर्भ-१३६)

एक बार रोगी सचेतन हो गया, आदेशों को समझने लगा, आँखों में भी पूरा तो नहीं, किन्तु अच्छा सुधार आ गया।

२७.८.९२ को पुनः आने के लिए कहकर रोगी को २२.७.९२ को छोड़ दिया गया।

श्रीराम वर्मा
(रिपोर्ट)

दिनांक
13/1/94

हमको पता चला कि बनारस में डी० एस० रिसर्च सेन्टर में इसका इलाज होता है तो हम लोगों ने रिपोर्ट के जरिये यहाँ से दवाई लेगये और खाखिलाई जिससे रोगी को फायदा हुआ। अब रोगी बिल्कुल ठीक होगये।

कुल मिलाकर रोगी रोग के पूर्व स्थिती में आ गया है सामान्य जीवन जी रहे हैं खेती कर रहे हैं किसी तरह की परेशानी नहीं है।

दिनेश कुमार वर्मा

(सन्दर्भ-१३७)

DIAGNOSTIC MEDICAL CENTER

B-52, J-Park, Mahanagar Extn., Near Kapurthala Crossing
Lucknow - 226006 Tel. : 77106

Date 7.3.94

Mr. Shri Ram Verma Age. 46yrs Sex M I.D. No. CT-0607034

Dr. Chhabra

REPORT

CT Head :- Plain & Contrast

Cerebral & cerebellar parenchyma shows uniform attenuation values. No area of altered attenuation is observed. Ventricular system is unremarkable. No midline shift is seen. Tip of the shunt is seen in the left lateral ventricle. Sulci, Sylvian fissures and basal cisterns are paominent. Occipital craniotomy is seen.

IMPRESSION :- Post of. case of Pineocytoma on RT. Findings are suggestive of cerebral cortical atrophy.

Dr. Nidhi Mittal.
Consultant Radiologist.

(सन्दर्भ-१३८)

इसी बीच किसी स्रोत से डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि 'सर्वपिष्टी' के विषय में सूचना मिली। विश्वस्त सूचना थी कि कपसेठी, वाराणसी की रीता सिंह के ब्रेन का एक ट्यूमर पारम्परिक चिकित्सा के चलते-चलते भी जब छह ट्यूमरों तक पहुँच गया था और रोगिणी का नर्व सिस्टम मूर्च्छित हो चुका था, उस हालत में भी 'सर्वपिष्टी' ने उसे छहों ट्यूमरों की समाप्ति और कैन्सर से मुक्ति तक पहुँचा दिया। परिजनों ने फैसला किया कि 'सर्वपिष्टी' का सहारा अवश्य लिया जाय।

१६.१.६३ को 'सर्वपिष्टी' प्राप्त की गई और उसका सेवन शुरू हुआ। प्रारम्भ से ही दवा का स्पष्ट प्रभाव उजागर होने लगा। वर्मा जी के पुत्र श्री राकेश कुमार वर्मा ने दि. ६.६.६३ के अपने एक पत्र में केन्द्र को सूचित किया- "...दवा खाने के एक हफ्ते के बाद ही मरीज में सुधार आने लगा और वह अपने को स्वस्थ और चैतन्य महसूस करने लगा। दवा निरन्तर पाँच महीने चलने के बाद मरीज पूरी तरह स्वस्थ हो गया। उसे अब किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।" उक्त लम्बे पत्र का अंश यहाँ मूल रूप से दिया जा रहा है *(सन्दर्भ-१३६)*।

महोदय, Lucknow 16-10-97

मेरे मौसा जी की तबीयत अभी बिल्कुल ठीक है मैं लगभग 15 दिन पहले उनसे मिला था किसी प्रकार की कोई शिकायत अभी वह नहीं बता रहे थे। वह इस समय गाँव में रह रहे हैं।

yours —
Rakesh Verma
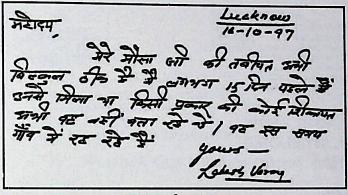
(सन्दर्भ-१३६)

औषधि नियमित चलती रही और श्रीराम वर्मा पूर्ण स्वस्थ होकर कर्म-धारा में शामिल हो गये। उनके पुत्र श्री दिनेश कुमार वर्मा ने दि. १३.१.६४ के पत्र में केन्द्र को लिखा- ''.....अब रोगी बिलकुल ठीक हो गये। कुल मिलाकर रोग से पूर्व की स्थिति में आ गये हैं, सामान्य जीवन जी रहे हैं, खेती कर रहे हैं। किसी तरह की परेशानी नहीं है।'' *(सन्दर्भ-१३७)*

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इच्छा थी कि अब औषधि बन्द कर देनी चाहिये। किन्तु इससे पूर्व एक बार जाँच करा लेना आवश्यक था।

७.३.६४ को डायग्नोस्टिक मेडिकल सेण्टर, लखनऊ में सिर का सी. टी. स्कैन किया गया। रिपोर्ट बहुत सही आयी। रोग का नामोनिशान नहीं पाया गया। अब औषधि को अन्तराल के साथ चलाया जाने लगा। *(सन्दर्भ-१३८)*

जून '६५ से 'सर्वपिष्टी' बन्द है और श्री वर्मा पूर्ण स्वस्थ और सामान्य हैं।

जनवरी, १६६८ में पाँच वर्ष पूरे हो गये 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के, और साढ़े तीन वर्ष कैन्सर के रेकरैन्स न होने के। ऐसी कोई बात न तो जाँच-रिपोर्टों में आयी और न रोगी की अनुभूतियों में, जो किसी तरह की शंका प्रगट करे।

दिनांक १६.१०.६७ को पत्र लिखकर श्री राकेश वर्मा ने अपने मौसा जी (श्री श्रीराम वर्मा) के विषय में लिखा कि वे इस समय गाँव में रह रहे हैं, पूर्णतः स्वस्थ हैं और स्वास्थ्य में किसी प्रकार की शिकायत नहीं है।*(सन्दर्भ-१३६)*

दिनांक ०५.०१.६८ को पत्र लिखकर श्री वर्मा ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को सूचना दी, ''मेरा स्वास्थ्य भली भाँति ठीक है।...'' *(सन्दर्भ-१३६ बी)*

यहाँ पर मैं कुशल पूर्वक हूँ। आप की कुशलता श्री शंकर भगवान से नेक मनाता रहता हूँ। अवगत समाचार यह है कि मेरा स्वास्थ्य भली भाँति ठीक है। कोई परेशानी होने पर मैं आपको अवगत करा दूँगा।

आपका
बन्जारगंज 5।1।98 श्री राम वर्मा

(सन्दर्भ -१३६ बी)
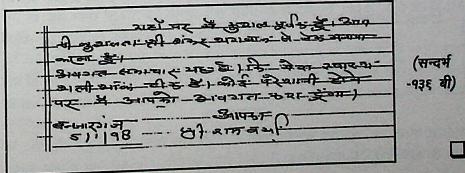
२६

ब्रेन ट्यूमर

प्लाज्मासेल माइलोमा, प्लाज्मा साइटोमा

(PLASMA CELL MYELOMA)
PLASMA CYTOMA

श्रीमती रानू भट्टाचार्य, ५५ वर्ष
द्वारा : श्री एन.सी. भट्टाचार्य
देवदास पल्ली, आनन्द आश्रम
पो. मध्यमग्राम
जिला- २४ परगना (प. बंगाल)

जाँच : १. बेले व्यू क्लीनिक, कलकत्ता, क्रमांक ३५६३८, दिनांक १४.३.८४। *(सन्दर्भ-१४०)*

K. AHUJA
Phone : 44-7723

BELLE VUE CLINIC
DEPARTMENT OF PATHOLOGY
9, Dr. U. N. BRAHMACHARI STREET,
CALCUTTA-700 017

Phone : 44-2321 (2 Lines) / 44-6925 / 44-7473

MRS. RANU BHATTACHARJEE -FEMALE -48 YRS : S No 35938
DR. A.K.BAGCHI :

Dated 9/14.3.84

ECTRADURAL SUBCUTANEOUS TUMOUR FOR
HISTOPATHOLOGICAL EXAMINATION :

MICROSCOPIC EXAMINATION :- Sections show the features of plasmacytoma.

FINAL DIAGNOSIS :- Plasmacytoma.

JP

DR.K.K.AHUJA.M.D.
DIRECTOR OF PATHOLOGY.

(सन्दर्भ-१४०)

२. कलकत्ता मेडिकल सेण्टर, १३.३.८४। *(सन्दर्भ-१४१)*
३. बोन मैरो, १२.४.८४।

DIRECTOR
DR. K. P. SEN GUPTA
M.B., D.PHIL., F.A.M.S., F.S.M.F.
EX-DIRECTOR-PROFESSOR, DEPT.
OF PATH. AND BACT., DIRECTOR,
I.P.G.M.E.R., AND SURGEON-SUPERINT.
S. S. K. M. HOSPITAL, CALCUTTA
RESI : 46-7428

CALCUTTA MEDICAL CENTRE
12. Loudon Street
Calcutta-700017
Dial. 43-2053,1233/1337/44-7330

Report On Pathological Examination

MATERIAL : TISSUE
NAME OF THE PATIENT : Mrs. Ranu Bhattacharya.
REFERRED BY Dr : A.K. Bagchi, FNS.,

.croscopically : Plasma cell myeloma.

DATE OF RECEIPT : 9.3.84.
DATE OF REPORT : 13.3.84..

For CALCUTTA MEDICAL

(सन्दर्भ-१४१)

चिकित्सा : चित्तरंतन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता के डॉ. एस. सी. डे के अन्तर्गत।

क्यों नहीं श्रीमती भट्टाचार्य की कथा एक विशेष प्रसंग के हवाले के साथ शुरू की जाय !

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की दृढ़ मान्यता है कि पोषक ऊर्जा कैन्सर (मूल रोग) की औषधि है, यह कैन्सर-कोशिकाओं तथा ट्यूमरों की ऊपरी चिकित्सा नहीं है। दोनों पक्ष स्वतः स्पष्ट हैं। एक, कि अगर कैन्सर-कोशिकाओं और ट्यूमरों को नष्ट करने भर का इन्तजाम किया जाय, तो मूल व्याधि (कैन्सर) रह जाती है, जो फिर से कैन्सर-कोशिकाओं तथा ट्यूमरों की नयी फसल खड़ी करती है। दो, कि अगर मूल रोग कैन्सर दूर हो चुका है, तो कैन्सर-कोशिकाओं तथा अर्बुदों के फिर उत्पन्न होने का सवाल ही नहीं पैदा होता। अगर ऐसे व्यक्ति में दुबारा कैन्सर-कोशिकाएँ तथा अर्बुद पैदा हों, तो यही माना जायेगा कि कैन्सर उसे नये सिरे से वैसे ही हुआ है, जैसे किसी ऐसे व्यक्ति को होता है, जिसे पहले कैन्सर नहीं था।

श्रीमती भट्टाचार्य को लेकर इन दो विपरीत मान्यताओं का टकराव हो गया। हुआ यह कि श्रीमती भट्टाचार्य को 'सर्वपिष्टी' द्वारा रोग-मुक्त करने के बाद डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक प्रो. त्रिवेदी ने मान लिया था कि वे कैन्सर से जीवन भर के लिए पूर्ण मुक्त हैं।

श्रीमती भट्टाचार्य कैन्सर से मुक्ति के बाद लगभग छह वर्षों से स्वस्थ-सामान्य जीवन व्यतीत कर रही थीं। अचानक उन्हें रक्त की उल्टी होने लगी। परिवार के लोग

उन्हें लेकर कैन्सर अस्पताल भागे। चिकित्सकों ने छह साल पहले की रिपोर्ट में जब दर्ज देखा कि रोगिणी को उग्र कैन्सर था, तो उन्होंने सीधे कह दिया कि कैन्सर पूरे शरीर में फैल गया है, अतः अब कुछ भी नहीं किया जा सकता। घरवाले डी. एस. रिसर्च सेण्टर भागे, तो पता चला कि प्रो. त्रिवेदी वाराणसी केन्द्र पर हैं। फोन पर सम्पर्क किया गया, तो प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि जाँच कराकर रोग को समझ लिया जाय, और उसके अनुसार चिकित्सा करा दी जाय। उन्हें लगता था कि उपद्रव कुछ और है, बुनियाद में कैन्सर नहीं होना चाहिए। उधर कलकत्ता के कैन्सर विशेषज्ञ अड़े हुए थे, जिनकी आँखों के सामने कई वर्ष पूर्व की रिपोर्ट थी और सामने रोगिणी खून की उल्टी कर रही थी। खैर, बात जाँच पर ही आकर उतरी और कलकत्ता के आर. जी. कर अस्पताल में पूरी जाँच हुई। कैन्सर का तो नामोनिशान नहीं पाया गया। चिकित्सकों ने सामान्य औषधियों द्वारा रोगिणी को ठीक करके घर भेज दिया। श्रीमती भट्टाचार्य के पति एन. सी भट्टाचार्य ने पत्र लिखकर दि. ३०.३.९३ को सूचना दी-

''श्रीमती रानू भट्टाचार्य की जाँच आर. जी. कर अस्पताल में डॉ. बी. एन. डे द्वारा की गयी, तो पाया गया कि वे कैन्सर से पूर्ण मुक्त हैं।'' *(सन्दर्भ-१४२)*

Mrs. Ranu Bhattacharya
has been tested by R.G.Kar.
Hospital by Dr. B.N. Dey
and told that she is
now free from Cancer
disease.
She was tested in
the month of Feby 1993.
Nimai Ch Bhattacharya
30.3.93.

(सन्दर्भ-१४२)

'सर्वपिष्टी' द्वारा चिकित्सा- दिनांक १८.११.८६ से श्रीमती भट्टाचार्य क्या थीं— चारपाई में पड़ा एक अस्थि-कंकाल। शरीर काला पड़ गया था। दर्द और यंत्रणा असह्य थी। देश से विदेश तक से चिकित्सा के साधन जुटाकर आजमाये जा चुके थे। चिकित्सा उन्हें छोड़कर अलग जा खड़ी थी। सिर के ऊपर उठ आया था एक डरावना ट्यूमर-लगता था, जैसे सिर के ऊपर एक छोटा-सा अतिरिक्त सिर बन गया हो।

उम्मीद तो नहीं थी कि उनके स्वास्थ्य में पोषक ऊर्जा के कार्य के लिए कोई गुंजाइश होगी। किन्तु औषधि को उत्तर मिलने लगा। घण्टे मंजूर हुए, फिर दिन और सप्ताह की चर्चा होने लगी। धीरे-धीरे रोग की बाढ़ उतरी और श्रीमती भट्टाचार्य करवट बदलने और चारपाई पर ही बैठने लगीं। दर्द का ज्वार भी उतरा। वे अन्न ग्रहण करने

लगीं। तीन महीने बाद तो वे परिजनों के साथ हँसने-बतियाने लगीं।

छह माह बाद वे पूर्ण स्वस्थ, सशक्त और नीरोग हो गईं। उन्होंने अपने पति से कहा कि एक बार उन्हें कलकत्ता ले चलें, वे रिसर्च सेण्टर देखना चाहती हैं। कुछ दिनों के बाद दोनों कलकत्ता आये और दो तल्ले चढ़कर प्रो. त्रिवेदी के कार्यालय में पहुँच गये। कुछ देर बाद प्रो. त्रिवेदी ने उनका परिचय पूछा। आगे क्या हुआ, प्रो. त्रिवेदी के शब्दों में ही सुनें—

''श्रीमती भट्टाचार्य कुर्सी से खड़ी हुईं और भाव-विह्वल होकर थिरकने लगीं। आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने मेरे लिए क्या कहा, महत्व उसका नहीं, महत्व उनकी वाणी और शरीर में हिलकोरें लेने वाले जीवन का है। मुझे तो आज ही सामवेद का संगीत सुनने को मिला, और मैंने जीवन-चेतना को अभिव्यक्ति पाते देखा। अन्धेरे से निकलती ऊषा इसीलिए हमारे ऋषियों के लिए वन्दनीय थी। मृत्यु को तोड़कर निकलने वाला जीवन कितना आकर्षक होता है !''

उसके बाद रोग का कोई लक्षण उभरा नहीं। छह वर्षों तक वे तीर्थाटन-देशाटन करती रहीं। पर्वतों, नदियों, सागर-तटों और मनोरम घाटियों से उनका स्वाभाविक लगाव था। अब वे उनके पास जातीं, जैसे गले मिलने आयी हैं। पूर्ण स्वस्थ, प्रसन्न, उल्लास से परिपूर्ण वर्ष रहे उनके। अवस्था पूरी करके उन्होंने जिन्दगी से विदा ली।

कैन्सर का क्या हुआ, यह उल्लेख तो पहले ही आ चुका है। ❑

शरीर के जटिल रोगों को दूर करने के लिए लोगों की भीड़ देव-स्थानों, समाधियों और साधु-फकीरों के सामने उमड़ती देखी जाती है। इस भीड़ में शिक्षित लोग भी रहते हैं, अशिक्षित लोग भी। वे यहाँ न तो अन्धविश्वास के कारण आते हैं, न उन्हें चमत्कार का शर्तिया आश्वासन मिला होता है, न यहाँ चिकित्सा की कोई व्यवस्था रहती है। बात अन्धविश्वास की होती, तो कम-से-कम अपढ़ लोग तो वहाँ अपनी घड़ी, रेडियो सेट अथवा पम्पिंग सेट ठीक कराने के लिए भी मनौतियाँ मानते ही। किन्तु ऐसा नहीं देखा जाता।

यह भीड़ न तो अन्धविश्वास का लक्षण है, न किसी पाखण्ड का। इस भीड़ का कारण चिकित्सा की विफलता और उससे उपजी निराशा है। विज्ञान से भरोसा उठ जाता है, तभी चमत्कार से अपेक्षाएँ की जाती हैं। मशीनों को दावे से ठीक करने वाले मिस्त्री मिल जाते हैं। चिकित्सा जब दावा करने की हालत में आएगी, यह भीड़ स्वतः छँट जाएगी।

२७

ब्रेन का ट्यूमर (कैंसर)

मेलिग्नैण्ट एस्ट्रो साइटोमा, ग्रेड-३
विद सिस्टिक चेंज
MALIGNANT ASTROCYTOMA
(GRADE-3 WITH CYSTIC CHANGE)

मास्टर शिशिर मोकाती, १३ वर्ष
द्वारा : श्री दिलीप कुमार मोकाती
बम्बई ट्रेडिंग
८६ गोडाउन स्ट्रीट, मद्रास

परिणाम ऐतिहासिक भले ही हो, सफलता अभी ताजा है। अभी उतार-चढ़ाव पर सतर्क निगाह भी रखनी है और चिकित्सा के प्रति भी सजग रहना है। कैन्सर की सफल चिकित्सा के विषय में कुछ और प्रतीक्षा करके कुछ कहना चाहिए था। फिर भी इन्सान द्वारा ब्रेन के खतरनाक कैन्सर पर इस तरोताजा जीत का वृत्तान्त यहाँ दिया जा रहा है। विज्ञान और इन्सान के बीच तालमेल बिठाने से बात अवैज्ञानिक नहीं हो जाती। विज्ञान के मोर्चे पर हमारे पाँव तो मजबूत हैं ही, इन्सान की भावनाओं के लिए भी थोड़ी जगह बना लें।

''.....हमें काफी चिन्ता है। डाक्टरों ने कहा है कि सिर्फ छह महीने से एक साल की अवधि संभव है। हम काफी चिन्तित हैं।.....'' चिकित्सक कोई बात शत्रुतावश भी नहीं कहते, अनर्गल प्रलाप भी नहीं करते। वे तो शरीर की जीवनी-क्षमता के साक्ष्य में कुछ बोलते हैं। वे रोग और रोगी को देखते हैं, चिकित्सा-विज्ञान की सामर्थ्य जानते हैं और उसी आधार पर कुछ कहते हैं।

१३ वर्षीय पुत्र मास्टर शिशिर के पिता ने १६.१२.६६ को यह पत्र डी. एस. रिसर्च सेण्टर को तब लिखा, जब छह महीने का समय पूरा हुआ था, और प्रतीक्षा अगले छह महीनों की दहलीज पर खड़ी थी। विवशता है जीवन की, भय और आशंका के अन्धे गलियारों में नहीं चाहते हुए भी उतरना ही पड़ता है।

किन्तु पूरा हो गया वह वर्ष भी, जिसके प्रत्येक दिन से परिवार डरा हुआ था। यद्यपि इस बीच शिशिर का रोग घटता चला गया था, स्वास्थ्य निखरता चला गया था, स्वास्थ्य-समस्याएँ शान्त होती गयी थीं और बच्चा सक्रिय तथा सशक्त होता चला गया था, फिर भी आशंका पूरी तरह मिट नहीं सकी थी। जाँच-रपटें भी जिन्दगी के पक्ष में बोल रही थीं। इसके बावजूद भय और चिन्ता एकबारगी मिट नहीं रही थीं। जब कभी

RADIOLOGY & IMAGING SCIENCES

Apollo Hospitals

QRF - RD - 0901 - 30.

Name : MAST SHISHIR MOKATI
Age : 14 Yrs. Sex : Male ☐ Female ☐ S.M.W.D.
Address :
Date : 21.3.97 MRI/CT No. 891/NM
Room No. : Out Patient ☐
Ref. Physician : DR J SINGH

Examination Performed
NUCLEAR BRAIN SPECT.

IMPRESSION:

Scan features are not suggestive of any residual / recurrence brain tumor.

(DR SHELLEY)
(DR RAMKUMAR)

(सन्दर्भ-१४३)

बड़े डाक्टरों की बातें याद आ जातीं, चेतना हिल जाती। यही लगता कि अचानक कहीं से कोई दुर्भाग्य आ खड़ा होगा, जिसके सामने जिन्दगी की ये सारी लहरें मिथ्या साबित हो जायेंगी।

मास्टर शिशिर के पिता चिकित्सकों से पुनः मिले कि देखें वे अब क्या कहते हैं। चिकित्सकों ने जिस दृश्य को देखकर छह महीने से एक साल तक की बात की थी, उन्होंने उस दृश्य को नये रूप में खड़े होते कदम-कदम पर देखा था। उनकी यह कल्पना भी तो नहीं थी कि कहीं से पोषक ऊर्जा की खूराकें आ धमकेंगी और मौत के अटल दिखायी देते साये को जीवन के समारोह में बदल देंगी।

दिनांक ११.६.९७ को कुमार शिशिर के पिता ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को लिखा—

''....अभी वापस डाक्टर को बताया था। डाक्टर काफी सन्तुष्ट हैं। उनका अन्दाजा है कि ट्यूमर खत्म हो गया है। यह सब भगवान की दया व आपके प्रयास से संभव हो पाया। तबीयत एकदम नॉर्मल है। डाक्टरों ने अक्टूबर से वापस दिखाने को बोला है।''

वर्ष पूरा होते समय परिजनों की मनःस्थिति बहुत डँवाडोल थी। यद्यपि अपोलो हॉस्पीटल ने दि. २१.०३.९७ को जाँच करके स्पष्ट कर दिया था कि न तो ब्रेन ट्यूमर का कोई अवशेष रह गया है और न रोग का रेकरैन्स हुआ है, *(सन्दर्भ-१४३)* फिर भी अनेक चिकित्सा-विशेषज्ञों से परामर्श लिया गया।

दिनांक ०७.०५.९७ को पिता श्री दिलीप मोकाती ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को लिखा, ''मेरे पुत्र शिशिर की तबीयत बिल्कुल ठीक है। अभी वह अपने मामा के यहाँ झाँसी गया हुआ है। उसके जाने से पहले न्यूरो सर्जन डॉ. राममूर्ति को बुलाया था। उनके अनुसार अब कैन्सर-सेल्स पूरी तरह खत्म हो चुके हैं। ट्यूमर अब नहीं है। ऐसी उनकी राय है।''

BOMBAY TRADERS
14, Godown Street, IInd Floor, Madras - 600 001

Date: 22-7-97

श्रीमान डाक्टरसाहब, नमस्कार

--------- [illegible] School [illegible] 10th. का Board Exam में First Division से [illegible]

------- [illegible]

Dilip Mokati

(सन्दर्भ-१४४)

परिजन पूरी तरह आश्वस्त हो गये कि अब शिशिर की जिन्दगी खतरे से बाहर है और ब्रेन ट्यूमर पर उनकी पुख्ता विजय हो चुकी है। दि. २२.०७.९७ को शिशिर के पिता श्री दिलीप मोकाती ने भाव-विह्वल होकर बेटे के बोर्ड-परीक्षा में पास होने की सूचना दी। *(सन्दर्भ-१४४)*

मास्टर शिशिर की चिकित्सा-यात्रा

जाँच

१. अपोलो हास्पीटल की न्यूरोसर्जरी यूनिट के प्रो. एस. कल्याण रमण ने गहन जाँच के बाद निर्धारित किया– ओलिगो डेण्ड्रो ग्लायोमा राइट थैलमिक सिस्टिक (ए. एल. एन. सी. नं. ७२३/९६,आई.जी.पी.नं.२२७३२, दि.१५.६.९६)।*(सन्दर्भ-१४५)*
२. वालुण्टरी हेल्थ सर्विस, न्यूरोसर्जिकल सेण्टर, मद्रास ने जाँच द्वारा निर्धारित किया–राइट थैलमिक सिस्टिक ओलिगो डेण्ड्रो ग्लायोमा (ए. एल. एन. सी. नं. ७२३/९६, आई. जी. पी. नं. २२७३२, दिनांक १५.६.९६)।
३. नेशनल हेल्थ आफ मेण्टल हेल्थ एण्ड न्यूरो साइन्सेज, बंगलोर ने निर्धारित किया 'एस्ट्रो साइटोमा (न्यूरो पैथ. नं. आई-२८३/९६, दि. २१.६.९६)।*(सन्दर्भ-१४६)*

DISCHARGE SUMMARY

UNIT : NERUOSURGERY I.D. NO. : 453731

NAME : MAST. SHISHIR MOKATI ROOM NO : "H"/361

ADDRESS : AF 858. 11TH MAIN ROAD AGE : 13 YRS.
H BLOCK 1ST STREET SEX : MALE
ANNA NAGAR MADRAS.

CONSULTANT INCHARGE : PROF. S.KALYANARAMAN, MS MS (Neuro) FRCS (Eng.) FRCS (Edin PH.D (Edin) FICS FACS FIAMS SIMMSA FAMS FASc.,

DATE OF ADMISSION : 01.06.96

DATE OF DISCHARGE : 08.06.96

DIAGNOSIS : OLIGODENDROGLIOMA (Rt) THALAMIC REGION

DISCHARGE ADVICE:

To get admitted in Apollo Neuro Hospital, under Prof.S.Kalyanaraman, for surgery and further manageme

DR.P.RAM RATHI REDDYY.
Resident in Neurosurgery.

PROF. S.KALYANARAMAN,
Consultant Neurosurgeon.

Apollo Hospitals

21, GREAMS LANE, MADRAS - 600 006.
PHONE: 8277447, 8274749

(सन्दर्भ-१४५)

चिकित्सा-जगत की निराशा : चिकित्सकों ने चिकित्सा के सभी पक्षों पर विचार किया। जाँच से रोग की प्रकृति और इसके विस्तार का पता लग गया। बायाप्सी ने कैन्सर प्रमाणित किया। चिकित्सकों की राय थी कि सर्जरी में केवल खतरा है, हाथ कुछ नहीं लगेगा। अब एक रास्ता था, 'रेडियोथेरापी' का, जिससे कुछ दिनों के लिए कुछ उपद्रवों के शान्त होने की उम्मीद थी। इसी स्तर पर चिकित्सकों ने रोगी के पिता को स्पष्ट समझा दिया था कि जीवन का विस्तार छह माह से लेकर एक वर्ष तक हो सकता है।

'सर्वपिष्टी' की ओर

आपाधापी के इन दिनों में ही इस खतरे और संकट की जानकारी श्री आर. के. माहेश्वरी को मिली, जिन्होंने ऐसी ही संगीन हालत में भरथना निवासिनी अपनी सास श्रीमती अन्नपूर्णा माहेश्वरी के लिए डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी की औषधि 'सर्वपिष्टी' का जुगाड़ किया था और रोगिणी अपने लीवर के कैन्सर से मुक्ति पाकर कई वर्षों से सामान्य जीवन व्यतीत कर रही थीं। उन्होंने स्वयं डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखा और जाँच रिपोर्ट्स की प्रतियाँ भेजकर मास्टर शिशिर के लिए

National Institute of Mental Health & Neuro Sciences, Bangalore—29
REPORT OF HISTOPATHOLOGICAL EXAMINATION

Neuropath No. X-283/96

Name: Shishir Mokati

Age: 13 Yr. Sex M

Neuro No.

Histopathology Report:

The features are characteristic of malignant astrocytoma (Protoplasmic type) - Gr.III with cystic change.

S.K. SHANKAR
Addl. Professor
21.6.96

(सन्दर्भ-१४६)

'सर्वपिष्टी' मँगवा ली। बायाप्सी रिपोर्ट की प्रतीक्षा थी, किन्तु 'सर्वपिष्टी' तो प्राप्त होते ही शुरू कर दी गई।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २१.६.६६

'सर्वपिष्टी' नियमित चलती रही और जुलाई/अगस्त में रेडियोथेरापी का कोर्स भी पूरा हो गया। अपोलो अस्पताल के चिकित्सकों ने कह दिया था कि रेडियोथेरापी के

RADIOLOGY & IMAGING SCIENCES

Apollo Hospitals

ORF - RD - 0901 - 25.

Name: MAST SHISHIR MOKATI | Date: 19.9.96 MRI/CT No. 689/MRI

Age: 13 Yrs Sex: Male ☐ Female ☐ S.M.W.D. | Room No.: Out Patient ☐

Address: | Ref. Physician: DR STUMPH.

Provisional Diagnosis/Clinical Data

Case of right thalamic glioma - post radiotherapy.

Examination Performed

M.R.I OF BRAIN WITH GADO.

IMPRESSION:

Followup MRI study of a case of space occupying lesion situated in the right basal ganglia showing significant reduction in the size of the space occupying lesion with no perilesional edema and no significant enhancement.

(DR K PRAVEEN KUMAR)
(DR N CHIDAMBARANATHAN)

(सन्दर्भ-१४७)

BOMBAY TRADERS
86, Godown Street, IInd Floor, Madras - 600 001.

Ref:

Date: 29-11-97

आगे शिशिर का स्वास्थ्य अब एकदम ठीक है। वह पूर्ण तरह से स्वस्थ है तथा बराबर स्कूल भी Attend कर रहा है। उसको एक माह पूर्व न्यूरो सर्जन को भी दिखाया था। उन्होंने भी एकदम Normal कहा है। तथा ४ से ६ माह में एक बार आकर रूटीन चेकअप करवाते रहने को कहा है। तथा डाक्टर की दवाएँ भी सब बन्द हो गयी हैं। यह सब आप लोगों के सहयोग से सम्भव हो पाया है। जिसके लिए हम ज़ीवन पर्यन्त आपके आभारी रहेंगे।

(सन्दर्भ-१४८)

अलावा वे और कुछ भी नहीं कर सकेंगे, और रेडियेशन भी अब आगे नहीं दिया जा सकेगा।

एक मात्र सहारा रह गया 'सर्वपिष्टी' का। उसे बड़ी तत्परता के साथ बिल्कुल नियमानुसार चलाया जाने लगा। रोग-लक्षणों के बिन्दु पर राहत साफ दिखाई दे रही थी। समय-समय पर रिपोर्ट्स इस प्रकार आयी—

६.६.६६ : "स्वास्थ्य में सुधार है। सिरदर्द अब नहीं होता है। बायें हाथ और पैर की कमजोरी में अभी सुधार नहीं है। मुँह का टेढ़ापन अब एकदम ठीक है...।"

१८.६.६६ : "सिर में कभी-कभी दर्द की शिकायत हो जाती है। बाकी सब ठीक है। स्कूल भी यदा-कदा चला जाता है। १६.६.६६ के एम. आर. आई. जाँच ने भी कुछ सुधार बताया है।" *(सन्दर्भ-१४७)*

अपोलो हॉस्पिटल के डॉ. स्टम्फ द्वारा दिनांक १६.६.६६ को ब्रेन की एम. आर. आई. (नं. ६८६/ एम. आर. आई.) जाँच कराई गई। लेजन के आकार में महत्वपूर्ण कमी पाई गई तथा तेजी से सुधार होना बताया गया। आकार घटा था किन्तु ट्यूमर अभी था।

१७.२.६७ : "४-५ दिन पूर्व न्यूरो सर्जन डॉ. राममूर्ति को दिखाया था। उन्होंने आँखों की तथा पेशाब की जाँच की, जिसे उन्होंने ठीक पाया और अभी एम. आर. आई. निकालना आवश्यक नहीं समझा।

११.३.६७ : "भगवान की दया से तथा आप लोगों के सहयोग से अब काफी हद तक सुधार है। अपोलो कैन्सर हास्पीटल के डाक्टरों ने २८ फरवरी को उसकी एम. आर. आई. करवाई है, जिसकी कापी मैं साथ में भेज रहा हूँ। वैसे डाक्टरों के अनुसार अब उसमें कैन्सर-सेल नहीं दीख रहे हैं।...."

मास्टर शिशिर अब अपने सहपाठियों और हमउम्रों के बीच उत्साहपूर्वक पढ़ता और खेलता है। देखकर उसे कोई कैन्सर का रोगी नहीं कह सकता, न तो उसमें कोई कैन्सर का कोई लक्षण ही है। आन्तरिक जाँच से भी उसमें कैन्सर का कोई चिन्ह नहीं मिलता है। पोषक ऊर्जा वर्ग की खूराकें बाद में भी चलती रहीं।

श्री दिलीप मोकाती ने अपने २६.११.६७ के पत्र में शिशिर के पूरी तरह स्वस्थ होने की सूचना दी–*(सन्दर्भ-१४८)* ❑

संभव है वैज्ञानिक विकास की एक शताब्दी और बिताकर भी हम शरीर में प्रवेश करने वाले रोगाणुओं की पहचान और उनसे मुकाबले की तैयारी उतनी तेजी से नहीं कर सकें, जितनी तेजी से और एकदम सटीक तैयारी जीवित शरीर की सचेतन प्रतिरक्षा कर लेती है। सचेतन व्यवस्था को ऐसे हानिकर जीवाणु को पहचान लेने, उसकी कमजोरियों की परख कर लेने और उस पर आक्रमण की तैयारी पूरी करके मैदान में उतर जाने में एक सेकेंड का समय भी नहीं लगता। प्रतिरक्षा की यह व्यवस्था ही शरीर की चिकित्सा-व्यवस्था है, और वह कीट-पंतगों के जीवित शरीर में भी उसी सजग सचेतनता से कार्य करती है। हमारे चिकित्सा-विज्ञान को वहीं से मार्ग-निर्देश लेना चाहिए। अतः चिकित्सा का तो अन्तिम लक्ष्य होना चाहिए–जीवन की सचेतन केमिस्ट्री को प्राकृतिक निर्देशों के अनुसार ही पोषक ऊर्जा प्रदान करना।

अबतक के चिकित्सा-सिद्धान्त इसके बिल्कुल विपरीत चले हैं। ड्रग और जड़ रसायनों को औषधीय स्वरूप देकर तो प्रतिरक्षा को रौंद दिया जाता है, और सचेतन विवेक को अन्धा बना दिया जाता है।

२८

एस्ट्रोसाइटोमा
(ASTROCYTOMA)

कुमारी मंजरी सिंह
उम्र : १२ वर्ष
द्वारा श्री राजीव सिंह
१/सी एच/१५, जवाहरनगर
जयपुर-३०२००४

SIR GANGA RAM HOSPITAL
New Delhi - 110060

SURGICAL PATHOLOGY LABORATORY REPORT.

PATH / CYTO PATH NO. .... R-4157/93 — REGISTRATION NO. 6187
AGE/SEX 13 YEARS /F
MANJARI SINGH
H. HOME SIR GANGA RAM HOSPITAL — OPD/WARD/BED 414D/
...TANT Dr.V.S.MADAN
...EN TUMOUR
...ED ON 12/04/93 — REPORTED ON 20/04/93

GROSS DESCRIPTION :
Specimen no I consists of tiny friable pale pink pieces of tissue aggregating to 0.2 cc.

Specimen no II multiple soft jelly like pale pink pieces of tissue aggregating to 1 cc.

ck/ss

Diagnosis:- Astrocytoma of the cerebellum.

Note:- In one of the tissue sections, possibly derived from the capsule, there are some markedly dilated vascular capillaries distended with polymorphs . There is also a meshwork of calcified branching structures, possibly calcifed vascular capillaries.

HNT/BB

Dr. H. D. TANDON
Director of Laboratories
Sir Ganga Ram Hospital

Note: Duplicate slides can be given only on advice of the referring consultant, after a minimum of 48 hrs.

(सन्दर्भ-१४६)

BATRA HOSPITAL & MEDICAL RESEARCH CENTRE
OF CH. AISHI RAM BATRA PUBLIC CHARITABLE TRUST
1, Tughlakabad Institutional Area, New Delhi-110062 Ph. 6443/47

DISCHARGE SUMMARY

NAME OF PATIENT	AGE	SEX	Admission No.	Ward/Bed	Service
Manjiri Singh	12	F	68028	506	Onco

DATE & TIME OF ADMISSION: 10/7/93

DATE & TIME OF DISCHARGE: 13/7/93 forenoon

HISTORY:

A diagnosed case of Astrocytoma, grade II Cerebellum (Rt); Diagnosed 3 months back. Operated (VP Shunt) — April, 93 — Tumour excision (Rt) lobe cerebellum.

HPE — Astrocytoma cerebellum.

MRI — Large heterogenous mass (Rt) cerebello-pontine angle.

Post op Radiotherapy given — 5500 Gy/27 fr completed on 25.6.93.

And chemo given in May, 93 (8/5/93 & 9/5/93) of Cisplatin (D1 & D2) Holoxan 2g (D1 & D2);

This time admitted for chemotherapy, 2nd cycle.

IT given — Cisplatin — 50 mg D1, D2 11/7/93, 12/7/93

Holoxan 2 gm

Mesna

Hb 11.5

TLC 3,800

Plt 1.4 lac.

Sr. Resident — CHIEF OF SERVICE/SPECIALIST: Dr Anand

NOTE: THIS IS AN IMPORTANT DOCUMENT. PLEASE KEEP THIS FOR FUTURE REFERENCE & BRING

(सन्दर्भ-१५०)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : लेडी रतन टाटा मेडिकल एण्ड रिसर्च सेण्टर (हास्पीटल नं. बी-२१०८, २५.०६.६३), बत्रा हास्पीटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सेण्टर, नई दिल्ली (एडमीशन नं. ६८०२८, दिनांक १०.०७.६३), टाटा मेमोरियल हास्पीटल, बाम्बे (पैथ नं. ६१७२ बी एफ, दिनांक १३.०५.६३), श्री गंगाराम हास्पीटल, नई दिल्ली (रजि. नं. ६१८७, साइटो पैथ नं. एस-२१३७/६३, दिनांक २०.०४.६३)

सिरदर्द, उल्टी, चलने-फिरने में परेशानी आदि समस्याओं के बाद हास्पीटल की
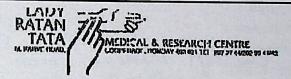
DEPARTMENT OF RADIATION ONCOLOGY

Dr. (Ms.) K. A. DINSHAW, DMRT (Lond), FRCR (Lond),
CONSULTANT RADIATION ONCOLOGIST,

DATE: 25th June 1993

MEDICAL REPORT

Name	: Ms. Manjiri Singh
Age	: 12 years
Hospital No.	: B-2100
Diagnosis	: R Cerebellar Astrocytoma Gr II
Referred by	: Dr. [illegible]

The young patient was referred following a near total excision of a R Cerebellar SOL in April 93.

The CT Scan and MRI Scans revealed a large heterogeneous mass in the R cerebello pontine angle and R Cerebellar hemisphere compressing the ventricles.

Anterior chemotherapy was delivered using Cisplatin, Haloxan and Mesna in May 93.

Post operative local radiotherapy was delivered using Co 60 rays 5500cGy/27fr/45days to the tumour bed with reducing fields from 12.5.93 to 25.6.93.

She is advised to continue with further chemotherapy and to return for follow up evaluation in 2 months.

Dr.(Ms) K.A.Dinshaw, DMRT(Lond), FRCR(Lond),
Consultant Radiation Oncologist.

Division of the INDIAN CANCER SOCIETY

(सन्दर्भ-१५१)

शरण लेनी पड़ी। लगभग हर जाँच ने इशारा किया कि बच्ची को ब्रेन कैन्सर (एस्ट्रोसाइटोमा) हो चुका है। लेडी रतन टाटा हास्पीटल, बत्रा हास्पीटल, श्री गंगाराम हास्पीटल आदि ने भी कैन्सर की पुष्टि कर दी। *(सन्दर्भ-१४६,१५०,१५१)*

जैसा कि प्रायः होता है मंजरी को किमोथेरापी और रेडियोथेरापी के अन्तर्गत आना पड़ा लेकिन बच्ची के पिता को बात बनती दिखायी नहीं दी। इस अस्पताल से उस अस्पताल और इस जाँच से उस जाँच तक उन्हें जाना पड़ता था। इसी बीच किसी सूत्र

9/11/93

Case Ref: MANJRI SINGH
- Patient of Brain Tumour

Respected Prof. Trivedi,

This is regarding my daughter Manjri Singh age 12 yrs for whom the treatment has been started from 28/9/93.

I had talked to you on phone on 22/10/93 and requested for a one month medicine to be sent to us by V.P.P. However, we have not received the same till date.
Kindly arrange to send them if not despatched already.

We would like to make a personal visit after the MRI test only.
Presently she is taking the '[illegible]' and CX-medicine which were in excess.
Kindly do the needful to send us the medicines. With Regards,

Yours Sincerely,
Rajeev Singh

RAJEEV SINGH
D-49, NTPC/NCPP
PO Vidyut Nagar
Distt. Ghaziabad. Pin 201008

(सन्दर्भ-१५२)

से उन्हें पता चला कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी के पास कैन्सर की ऐसी दवा है, जिसका परिणाम अभूतपूर्व है। वहाँ से दवा मंगाने का निर्णय लिया गया।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक २६.०६.६३ से।

श्री राजीव सिंह ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सर्वपिष्टी मंगा ली और बच्ची को देना शुरू कर दिया। दिनांक ०६.११.६३ को श्री राजीव सिंह ने केन्द्र को पत्र लिखकर सूचित किया, "मैंने आपकी दवा का सेवन कराना दिनांक २२.१०.६३ से शुरू कर दिया है। अब उल्टी नहीं हो रही है, सिरदर्द अथवा गले में दर्द की शिकायत भी अब नहीं है। अन्य परेशानियाँ भी अब नहीं हैं। बच्ची अब स्कूल जाने लगी है, खेलकूद में भी भाग लेने लगी है...."। (मूल अंग्रेजी पत्र का अनुवाद) *(सन्दर्भ-१५२)*

D.S. Research Centre
147-A, Ravindrapuri (New Colony)
Lane-8
Varanasi - 5

Dear Sir,

I have received your letter dated 16/5/97 reg my daughter MANJRI SINGH.
She is keeping good health and attending school also.
Occassionally she does suffer with neckpains which had been diagnosed to be due to fibrosis of muscles because of radiotherapy which she had undergone.
The pain gets cured in 3-4 days time with muscle relaxant tabs and ointments.
No other disorder has been observed.
She will be undergoing a MRI examination next month for further analysis.
Kindly let us know if any new/medicines have been developed at your end.

Thanking you,

yours faithfully,
[illegible]
(RAJEEV SINGH)
Father of Manjri Singh
1/ch/15, [illegible] Nagar
JAIPUR

(सन्दर्भ-१५३)

बच्ची के पिता समय-समय पर केन्द्र को पत्र लिखकर स्वास्थ्य के विषय में जानकारी देते रहते हैं। दिनांक २६.०६.६७ को उन्होंने पत्र में लिखा, ''...उसका (मंजरी) का स्वास्थ्य बहुत अच्छा है और वह स्कूल जाती है। कभी-कभी वह गले में दर्द की शिकायत करती है, जिसे डॉक्टरों ने रेडियोथेरापी के प्रभाव के कारण मांसपेशियों का फायब्रोसिस बताया है...''। (मूल अंग्रेजी पत्र का अनुवाद) *(सन्दर्भ-१५३)*

कैन्सरमुक्ति के करीब आठ वर्ष व्यतीत करने के बाद मंजरी स्वस्थ और सामान्य जीवन व्यतीत कर रही है। दिनांक २४.०४.२००१ को बच्ची के पिता ने केन्द्र को सूचित किया, ''... मंजरी सिंह का स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक है। कभी-कभी सिरदर्द की शिकायत करती है। वह बिल्कुल सामान्य जीवन जी रही है और अपना कम्प्यूटर अध्ययन जारी रखो हुए है...''। *(सन्दर्भ-१५४)*

Manjri Singh is keeping well.
The residual tumour does exist but it has reduced in size, since the Gamma knife Treatment undertaken in Dec 98.
Except for occassional headace or vertigo, she is keeping normal.
She is continuing her studies in computer from [illegible].

Thanks
[illegible]
(RAJEEV SINGH)

(सन्दर्भ-१५४)

२६

दिनांक ०५.०१.६८ को ७७ वर्षीया श्रीमती नीहार कना दास ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को फोन पर जीवन्त स्वर में बताया, "मैं सज्जन दा की माँ (बोल रही) हूँ। इन दिनो तो मैं दिल्ली वगैरह घूमकर आयी हूँ। बस, आपही लोगों की दया है। उम्र भी तो बहुत हो गयी। खाना-पीना-पाखाना सबकुछ ठीक है। पेट में दर्द वगैरह नहीं रहता है।"

दाहिने कोलोन और पेट के ऊपरी भाग को घेरकर खड़े वृहद् आकार के उपद्रवी ट्यूमर के कैन्सरस होने में किसी भी कैन्सर-चिकित्सक को सन्देह नहीं था। उधर रोगिणी की हालत इतनी नाजुक थी कि चिकित्सा का साहस एक जोखिम का काम था। फिर जाँच का प्रपंच क्यों ? इसलिए रोगिणी चिकित्सा के साथ-ही-साथ जाँच के प्रमाण-पत्र से भी वंचित रख दी गयीं।

'सर्वपिष्टी' चली और कुछ महीनों में ही ट्यूमर अदृश्य हो गया। श्रीमती दास स्वस्थ हुईं, और अब स्वास्थ्य के पाँचवें वर्ष में चल रही हैं। यदि ट्यूमर 'बिनाइन' था, तो भी यह पोषक ऊर्जा की सफलता का एक नये क्षेत्र में हस्ताक्षर है। इसीलिए यह केस भी मूल्यांकन माँगता है।

कोलोनिक मास्स
(दाहिने कोलोन का पिण्ड)
Rt. COLONIC MASS

श्रीमती नीहार कना दास, ७५ वर्ष
पत्नी : स्व. सुधीर कुमार दास
बिराज भवन, शिल्प समिति पाड़ा
जलपाईगुड़ी, (प. बंगाल)

जाँच : विमला इमेजिंग सेण्टर, कदमतल्ला, जलपाईगुड़ी में सोनोग्राफी जाँच, मार्फत डॉ. एस. एन. सिन्हा, एम. एस., दिनांक ०७.०६.६३। *(सन्दर्भ-१५५)*

रिपोर्ट से दाहिने कोलोन के ८.३५ से.मी. व्यास वाले बड़े ट्यूमर की जानकारी हुई। ट्यूमर के इर्द-गिर्द सूजन का क्षेत्र था, जिससे पेट का ऊपरी हिस्सा फूल गया था।

BIMALA IMAGING CENTRE
X-RAY, E. C. G
KADAMTALA :JALPAIGURI
Dr. Pradip Kundu MBBS. DMRD (Cal) Radiologist

Patient Name— Mrs Nihar Das Age— 72 F
Ref. by : Dr.— S. N. Sinha MS

Part of Examination— Upper Abdomen

ULTRA SONOGRAPHY REPORT Date— 7/6/93

Large mixed echo-genic solid mass, with ill-defined margins. (D : 8.35 cm) . Central echo-genic area, surrounded by peripherol rim of echolucency .
Mass situated over the Rt. hypochondrium .

Kidneys : Both Kidneys normal in size & shape Smooth margins . Parenchymal echo-pattern nor;

Remarks : ? Colonic mass , in the Rt. hypochondrium

Adv : Ba-Enema .

Radiologist—

(सन्दर्भ-१५५)

रोग का इतिहास और चिकित्सा की असमर्थता

वृद्धा नीहार कना दास कई महीनों से भूख की कमी, पाचन की गड़बड़ी, अम्लपित्त, कब्ज की समस्याओं से ग्रस्त थीं। फिर पेट में दाहिनी ओर दर्द रहने लगा। छूकर देखने से एक बड़ी गाँठ की जानकारी हुई। चिकित्सकों ने बताया कि कोलोन के अर्बुद के कारण ही सारे उपद्रव हैं। सोनोग्राफी जाँच से अर्बुद की पूरी रूपरेखा सामन आयी। सर्जन डॉ. एस. एन. सिन्हा ने ट्यूमर के कैन्सरस होने की शंका प्रगट की और किसी कैन्सर अस्पताल ले जाने की सलाह दी। कैन्सर अस्पताल के चिकित्सकों ने अर्बुद की कठोरता देखकर कैन्सर होने की बात कही, किन्तु बिना बायाप्सी जाँच के वे निश्चयपूर्वक कुछ कहने की हालत में नहीं थे।

बायाप्सी करना भी जोखिम का काम था। फिर अगर चिकित्सा होगी ही नहीं, तो जाँच का कोई उपयोग समझ में नहीं आता था। वृद्धा महिला इतनी कमजोर हो गयी

My mother is 72 years old and physically she is very weak. It is been adviced by the doctors that she is been attacked by cancer but I am not atall interested to make the operation. You are requested to give the medicine of one week.

-Sanja Kumar Das.
25/6/93.

रोगी से सम्बन्ध Relation with the patient.
(Mother)

(सन्दर्भ-१५६)

Name of the patient Nihar Kana Das
On all respect she is better
within that short period.
* Present problem (mild acidity)
* and she is feeling weakness

SL Agarwal
21/7/93

(सन्दर्भ-१५७)

थीं कि सर्जरी, रेडियोथेरापी अथवा किमोथेरापी कुछ भी झेल नहीं सकती थीं। परिवार के सदस्यों को भी चिकित्सकों के इस सुझाव से सहमत होना पड़ा कि रोगिणी को घर की सेवाओं और लक्षणगत चिकित्सा के अन्तर्गत ही रखा जाय।

'सर्वपिष्टी' की ओर :

जलपाईगुड़ी में ही डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली और रोगिणी के पुत्र श्री सज्जन कुमार दास दि. २५.६.६३ को 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने के लिए आये। जब उन्हें पता चला कि 'सर्वपिष्टी' औषधि बाजार की दवाओं की तरह नहीं प्राप्त होती और उसे परीक्षण के अन्तर्गत परिणाम -संकलन के लिए केवल उन्हीं रोगियों के निमित्त दिया जाता है, जिनके कैन्सर होने की पुष्टि हो चुकी होती है और जो पारम्परिक चिकित्सा द्वारा अचिकित्सेय मानकर छोड़ दिये गये हैं, तब श्री दास विचलित हुए। उन्होंने कहा कि उनकी माताजी पारम्परिक चिकित्सा की ओर से तो एकबारगी छोड़ दी गयी हैं, किन्तु कैन्सर चिकित्सक जाँच भी निरर्थक मानते हैं। श्री दास ने कहा कि जब कैन्सर-चिकित्सकों ने इसे कैन्सर का केस बताया है, तो वे कैन्सर की रोगिणी तो हैं ही। अन्ततः यह सोचकर कि पोषक ऊर्जा का स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव तो होगा नहीं, एक

Name of the patient — Nihar Kana Das
i) She is better than before in all respect.
ii) She is making sound sleep both at day time and night too
iii) Except weakness, she is better.

SL Agarwal
2/9/93

(सन्दर्भ-१५७ बी)

BIMALA IMAGING CENTRE
X-RAY, E. C. G
KADAMTALA : JALPAIGURI
Dr. Pradip Kundu MBBS. DMRD (Cal) Radiologist

Patient Name— Smt Nihur Kunn Das Age— 74 F
Ref. by : Dr.— M. N. Nundy

Part of Examination— Upper Abdomen

ULTRA-SONOGRAPHY REPORT Date— 18/4/94

Impression: Normal USG study of Upper Abdomen.

(सन्दर्भ-१५८)

सप्ताह के लिए 'सर्वपिष्टी' दे दी गयी। *(सन्दर्भ-१५६)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २६.०६.९३

प्रभाव : 'सर्वपिष्टी' ने रोगिणी के स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव देना शुरू कर दिया। कष्टों से आराम मिलने लगा, पाचन-तंत्र में नियमितता आने लगी, और शरीर में शक्ति-स्फूर्ति का विकास भी प्रत्यक्ष रूप से सामने आने लगा। धीरे-धीरे ही सही अनुभव में आने लगा कि श्रीमती दास खतरे से बाहर और जीवन की दिशा में बढ़ रही हैं। कुछ सामान्य कष्ट मौजूद थे।

दिनांक २१.७.९३ की रिपोर्ट : "इस अल्प समय के औषधि-सेवन के बावजूद वे प्रायः सब प्रकार से ठीक हैं। हल्का अम्ल है और कुछ कमजोरी अनुभव कर रही हैं।" *(सन्दर्भ-१५७)*

दिनांक ०२.०९.९३ की रिपोर्ट :

" दिन में और रात में भी उन्हें गहरी नींद आने लगी है। कमजोरी के अतिरिक्त सब प्रकार से अच्छी हैं।" *(सन्दर्भ-१५७ बी)*

ट्यूमर भी प्रायः अदृश्य हो चुका था। अनुभव से उसका पता नहीं चलता था।

दिनांक १८.०४.९४ की अल्ट्रा सोनोग्राफी रिपोर्ट

पेट का ट्यूमर तो अदृश्य था, किन्तु फिर भी आवश्यक समझकर १८.०४.९४ को अल्ट्रा सोनोग्राफी द्वारा जाँच करायी गयी। रिपोर्ट से पता चला कि रोग का कोई नामोनिशान नहीं है। *(सन्दर्भ-१५८)*

औषधि बन्द करने का निर्णय लिया गया, क्योंकि अब रोगिणी का स्वास्थ्य उत्तम हो चुका था। वे गृह-कार्यों में रुचि लेने लगी थीं। कष्टों का शमन हो चुका था और शरीर अवस्था के अनुसार शक्ति और स्फूर्ति से भरपूर था। बाद में भी रोगिणी के स्वास्थ्य के विषय में केन्द्र को रिपोर्ट मिलती रही।

Patient - Mrs. Nihar Kana Das.
(Jalpaiguri)

She is better now, but some weakness is there.
Sometime problem arises in digestion along with less appetite.

R.K. Bose
15.11.94.

(सन्दर्भ-१५६)

Now She is better. Sometimes She feels weakness and suffering from Skin erruption in head and leg.

P.K. Bose
25-8-95

(सन्दर्भ-१५६ बी)

दि. १५.११.६४ की रिपोर्ट

" अब वे बहुत ठीक हैं, किन्तु थोड़ी कमजोरी रहती है। कभी-कभी अपच और भूख की कमी की समस्या खड़ी होती है।" *(सन्दर्भ-१५६)*

दि. ०७.०२.६५ की रिपोर्ट

(श्रीमती दास के पुत्र श्री अनिल कुमार दास का पत्र) "कोई शारीरिक परेशानी नहीं है। खाना-पीना-पाखाना सब कुछ सामान्य है। किसी प्रकार की परेशानी होने पर अवश्य सूचित करूँगा।" *(सन्दर्भ-१५६ बी)*

9/2/95

To
M/s. D.S. Research centre,
Calcutta

[illegible]

(सन्दर्भ-१५६ सी)

दि. २५.०८.६५ की रिपोर्ट

"अब वे बेहतर हैं। कभी-कभी कमजोरी का अनुभव करती हैं और आजकल कुछ चर्म-रोग हो गया है सिर पर और पैरों में।" *(सन्दर्भ-१५६ सी)*

दि. ०५.०१.६८ की रिपोर्ट

दिनांक ०५.०१.६८ को श्रीमती दास ने फोन पर डी. एस. रिसर्च सेण्टर को बताया, "मैं सज्जन दा की माँ हूँ। खाना-पीना सब ठीक है। वैसे अब तो उम्र भी बहुत हो गयी। पेट में दर्द वगैरह नहीं रहता है। इधर तो मैं दिल्ली वगैरह चारो ओर घूमकर आई हूँ। बस, आप ही लोगों की दया से बची हूँ।" ☐

न्यूरो फाइब्रोमा
(NEURO FIBROMA)

श्री एस. के. कुशवाहा, २२ वर्ष
लखनऊ

जाँच

१. डॉ. के. डी. वर्मा के रेफरेन्स पर दि. २५.६.८७ को डॉ. के. एम. वहाल ने पैथॉलाजिकल जाँच की। न्यूरो फायब्रोमा पाया गया। *(सन्दर्भ-१६०)*

२. टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई (केस नं. ए.जेड.१२४६१) ने परीक्षण में न्यूरो फायब्रोमा निर्धारित किया। *(सन्दर्भ-१६१)*

रेडियोथेरापी : सन् १९८९ में हनुमान प्रसाद पोद्दार कैन्सर अस्पताल, गोरखपुर में रेडियोथेरापी दी गयी।

Dr. K. M. Wahal
M. D. (Path.) D. Sc. (Med.) F.C.A.P. (U.S.A.)
PROF. OF HISTOPATHOLOGY (RETD.)
K. G. MEDICAL COLLEGE
LUCKNOW

Report No. 7339
Patient Mr. S.K kushwaha
Referred by Dr. K. D. Verma MS, ACS FACS
Specimen Tumour Neck

PATHOLOGY EXAMINATION REPORT

Diagnosis FIBROMA (Neurofibroma).

Dated 25 9. 1987

(सन्दर्भ-१६०)

रोग का इतिहास : कॉलेज के अध्यवसायी विद्यार्थी के रूप में मित्रों के बीच जीवन-निर्माण कर रहा युवक। पुस्तकों-पत्रिकाओं और कक्षाओं से वह ज्ञान के सूत्र जुटा रहा था, जिनसे उसे उज्ज्वल भविष्य की भूमिका तैयार करनी थी। बात १९८७ की है।

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Requisition for Photography Service

(PRINT NAME IN FULL) OUT-PATIENT

FILING No.

CASE No. AZ 12497 IN-PATIENT FLOOR WARD

Path No. Artist No. Nationality

Details of photograph desired

DESCRIPTION OF TUMOUR :

PROVISIONAL DIAGNOSIS.

(सन्दर्भ-१६१)
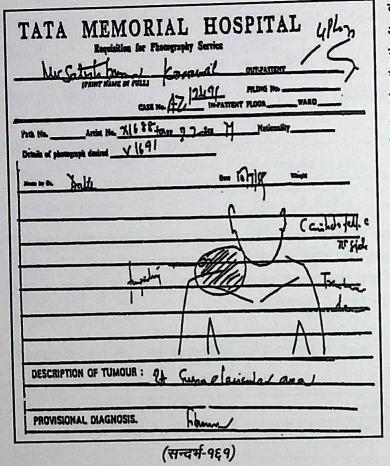
दाहिने कन्धे में कुछ असुविधा हुई। खेल में, काम में अथवा सहारा देकर बैठने में कभी-कभी अड़चन आने लगी, तो चिकित्सकों से मिला। उपचार का कोई असर नहीं दिखाई पड़ा। तब तक दाहिने कन्धे पर एक दर्दीला अर्बुद उभर कर न केवल अनुभव में आने लगा, बल्कि दिखाई भी देने लगा। के. जी. मेडिकल कॉलेज के डॉ. के. एम. वहाल ने बायाप्सी जाँच द्वारा अर्बुद की नियति तय की- न्यूरो फाइब्रोमा। लखनऊ मेडिकल कॉलेज के इ. एन. टी. सर्जन डॉ. के. डी. वर्मा ने ऑपरेशन शुरू किया, लेकिन विवश होकर बीच में ही हाथ रोक लिया। अर्बुद ने दिमाग तक रक्त पहुँचानेवाली धमनी को अपने कुण्डल में कस लिया था और उधर छेड़छाड़ का सीधा अर्थ था जीवन-लीला का खातमा।

युवक अपने कन्धे पर बैठे उस भविष्य से काँप उठा था। उसकी धारणा थी कि एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल तक दौड़ना एक खाना-पूर्ति भर है। फिर भी जीवन की लालसा और परिजनों के आत्मीय दबाव ने दौड़ में शामिल कर दिया। पिता विवेकवान व्यक्ति हैं। चिकित्सा की दौड़ में भी वे देख-समझकर चलने के पक्षपाती हैं। डा. के. डी. वर्मा की सलाह पर युवक रेडियेशन के लिए आगरा मेडिकल कॉलेज ले जाया गया, किन्तु वहाँ मशीन खराब थी। फिर वहीं से चले गए टाटा मेमोरियल कैन्सर अस्पताल, बम्बई। वहाँ जाँच चली और निर्णय किया गया कि दाहिनी बाँह को कन्धे के साथ ही सर्जरी द्वारा काट कर अलग कर दिया जाय। ब्रेन को रक्त पहुँचाने वाली धमनी के जकड़ जाने की पुष्टि हुई। बात सफल आपरेशन भर की थी, जीवन की रक्षा का स्पष्ट आश्वासन नहीं था।

पिता के मन में अतीत का एक दृश्य घूम गया। कैन्सर के कारण एक बच्चे की टाँग निकाली गई थी, कुछ महीने बाद दूसरी भी निकालनी पड़ी। फिर कैन्सर फेफड़ों में पहुँच गया। किमोथेरापी की सबसे खतरनाक सुइयाँ पहले ही लग चुकी थीं। बच्चे ने तकियों से घिर-दबकर बैठकी लगाए-लगाये ही अपनी पीड़ाभरी जिन्दगी से विदाई ली।

एस. के. कुशवाहा के पिता को किस्त-दर-किस्त अंग-भंग होते हुए लड़ने की बात उचित नहीं लगी। वे पुत्र को लेकर वापस घर आ गये।

गोरखपुर के कैन्सर अस्पताल में रेडियेशन हुआ। सिकाई से अर्बुद का आकार घटा, और मांस के टुकड़े कट-कटकर गिरने लगे। धीरे-धीरे घाव भर गया। केन्द्र भाग में एक गहरा दाग रह गया, जो दाहिने कन्धे पर आज भी शेष है।

रेडियेशन ने कुछ समय का आराम तो दिया, किन्तु बाद में पूर्व स्थान पर ही अर्बुद फिर बनने लगा। इस बार का उठाव अधिक उग्र, भयानक और दर्दीला था। अर्बुद ने फैलकर स्वर-यंत्र को भी दबोच लिया और बोली बन्द हो गयी। अब रेडियेशन भी नहीं हो सकता था, अतः चिकित्सा के द्वार बन्द थे।

'सर्वपिष्टी' आरम्भ : अगस्त,१९९१।

चिन्ता की इसी हालत में कहीं से डी. एस. रिसर्च सेण्टर और उसके वैज्ञानिकों द्वारा आविष्कृत औषधि 'सर्वपिष्टी' की जानकारी मिली। अगस्त' ९१ के अन्तिम सप्ताह से 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ की गई। तीन दिनों के अन्दर ही स्वर-यंत्र मुक्त हो गया। शायद वह क्षेत्र ग्रोथ से प्रभावित था और ग्रोथ में सिमटाव आ गया। केन्द्र पर आते-जाते युवक को कुछ ऐसे लोगों से मिलने का अवसर मिला, जिनकी आपबीती बहुत प्रेरक थी। कैन्सर के अत्यन्त उग्र हो जाने के बाद ही इन्होंने भी 'सर्वपिष्टी' शुरू की थी। इनमें कई कैन्सर से पूर्ण मुक्त थे, कई बेहद लाभान्वित होकर उत्साह पूर्वक जीवन की दिशा में बढ़ रहे थे। एक महीने में पीड़ा घटी। अर्बुद का बढ़ाव ही नहीं रुका, बल्कि वह स्पष्ट रूप से छोटा होता लग रहा था। एक माह और बीता। अब अर्बुद परास्त होता दिखायी देने लगा। शरीर में जान भी आ गई।

मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति चरमरा उठी थी। चिकित्सा का खर्च जुटाने के लिए युवक कुशवाहा ट्यूशन करने लगा और अपनी एम. एस. सी. की तैयारी भी शुरू कर दी। सात-आठ महीने बाद वह पूर्ण स्वस्थ और कैन्सर-मुक्त हो गया। उसने एम. एस. सी. की परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। आज वह कहता है कि उत्साह और लगन से जुटकर हर प्रकार के कैन्सर को हराया जा सकता है।''

अब तो कैन्सर-मुक्ति और स्वस्थ होने के सात वर्ष पूरे होने को हैं। युवक को जीवन, वाणी और सुदृढ़ शरीर मिल गया है। वह प्रशासनिक सेवा में नियुक्त है, हालाँकि उसे वे कड़वे अनुभव भूले नहीं हैं, जब नियुक्ति देनेवाले उसे केवल इसी आधार पर अस्वीकार कर रहे थे कि वह मेलिग्नैन्सी को पछाड़कर आनेवाला चर्चित केस है। शायद कैन्सर से बच निकलने को अयोग्यता माना जा रहा था।

आदरणीय डा० साहब,
सादर चरण स्पर्श।
चूँकि स्नान करने के बाद मुझे इतनी सर्दी लग रही थी कि मेरा हाथ काँप रहा था इसलिए यहाँ से एक फ्रेश। समरी लिखकर भेजा हूँ। अतः इसको आप प्रचार में देने की कृपा करें।

भवदीय

[illegible]
22/12/62

(सन्दर्भ-१६२)

लोग ऐसे भी हैं

बात १९६२ दिसम्बर की है। तीखी सर्दी थी और युवक के पिताजी सबेरे-सबेरे ही गंगा-स्नान करके केन्द्र पर पहुँचे थे। मन में बुलन्द प्रेरणा थी कि उनके बेटे का केस प्रचारित-प्रसारित किया जाय, ताकि अन्य कैन्सर रोगी भरोसे की जिन्दगी जी सकें। इस बात का खटका भी नहीं था कि लड़का अविवाहित है और उसे नौकरी में भी जाना है।

दि. २२.१२.६२ को लखनऊ से उन्होंने पत्र दिया, "चूँकि स्नान करने के बाद (उस दिन) मुझे इतनी सर्दी लग रही थी कि मेरा हाथ काँप रहा था। इसलिए यहाँ से एक फ्रेश समरी लिखकर भेजा हूँ। अतः इसे आप प्रचार में देने की कृपा करें।" *(सन्दर्भ-१६२)*

रिसर्च सेण्टर कोई व्यावसायिक संस्थान तो है नहीं। प्रचार तो नहीं किया जा सका लेकिन एक पिता की इच्छा को प्रस्तुत करने का अवसर तो इस पुस्तक ने दिया ही। ☐

जीवित शरीर के अणुओं की संरचना चेतना द्वारा इस प्रकार विकसित रहती है कि उन अणुओं में एक सचेतन विवेक-प्रक्रिया चलती रहती है। वे स्वयं निर्णय लेने और जीवन के पक्ष में कार्य करने में सक्षम होते हैं। चेतना की अवहेलना करके इनको जड़ पदार्थ के अणुओं की केमिस्ट्री से मापना जीवन पर सबसे घातक आक्रमण है। सचेतन अणुओं के पदार्थ-अंश को जड़ पदार्थों की केमिस्ट्री में उलझा लेने से चेतना का (जीवन का) दुर्ग टूट जाता है।

जड़ रासायनिक क्रियाओं के व्यामोह से भ्रमित होकर जो औषधियाँ जीवन की सचेतन संरचना में झोंकी जायेंगी, भला वे जीवन का विध्वंस क्यों नहीं करेंगी! चिकित्सा को वैज्ञानिक केवल तभी कहा जायेगा, जब वह जीवन और चेतना के पक्ष में काम करेगी। उचित यही रहेगा कि टेस्ट ट्यूब वाली अचेतन केमिस्ट्री के प्रहार से जीवित शरीर की सचेतन केमिस्ट्री को बचाया जाय।

३१

नेफ्राइटिक सिण्ड्रोम
या किडनी सिण्ड्रोम
(NEPHRITIC SYNDROME)

श्री मधुकर पारीक, २० वर्ष
५८-एम. आई. जी. गंगा विहार
जाजमऊ, कानपुर (उ. प्र.)

रोग का जन्म : टांसिलाइटिस के इलाज के लिए एण्टिबॉयोटिक का आठ-दस वर्ष तक प्रयोग। अभिभावक का कहना है कि सब अज्ञानतावश हो गया। बालक का विकास रुक गया। और अधिक एण्टीबायोटिक की गुंजाइश नहीं रही। आँखों के पास सूजन, वजन का नहीं बढ़ना, रक्ताल्पता, तीव्र ज्वर का आक्रमण, चेहरे और टखनों की सूजन का स्थायी जमाव देखकर चिन्ता हुई और संजय गाँधी इन्स्टीट्यूट, लखनऊ की जाँच से इस भयानक रोग का ज्ञान हुआ। एस. जी. पी. जी. आई पैथालॉजी रिपोर्ट रजि. नं. १३०६०३/९४। *(सन्दर्भ-१६३)*

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १-२-९५
एक महीने दवा चलने के बाद युवक के पिता ने १-३-९५ को रिपोर्ट दी–
१. एल्बुमिन घटकर +++ से ++ पर आ गया।

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW
DEPARTMENT OF PATHOLOGY

URINE / BODY FLUIDS REPORTING FORM

130603/94
MADHUKER PAREEK
19 yrs. M
Requisitioner

Nephritic Syndrome
Consultant I/C Dr R K Gupta
Department
☐ OPD ☐ Inpatient

TEST / PARAMETER	RESULT
Protein	+++
Sugar / Glucose	nil
MICROSCOPY	
Erythrocytes	nil
Leucocytes	25-30 / HPF
Total Cell Count	—
Differential Count	—
Epithelial Cells	nil
Casts	Granular & Cellular ++
Crystals	nil

REPORTING REMARKS :
Ghosh

(सन्दर्भ-१६३)

Name - Madhukar Pareek
Age - 20 years.

Following observations are made :- from urine test after taking medicine for one month
(i) Albumin is reduced from +++ to ++ (Protein loss in 24 hrs has not been carried out)
(ii) R.B.C are reduced from 15-20/H.P field to 3-4/H.P.field.
(iii) Pus cells are reduced from 80-100/H.P.field to 6-8/H.P.field.
(iv) No reduction in Epithelial cells
(v) Casts are absent.
(vi) Pain in the lumbar region is reduced

Ramesh Pareek
MIG-58
Ganga Vihar, Jajmau
Kanpur
1.5.95

(सन्दर्भ-१६४)

२. R. B. C. घटकर १५-२०/ H. P. FIELD से ३-४ H. P. FIELD तक आ गया।
३. मवाद (पस) का आना ८०-१००/ H. P. FIELD से घटकर ६-८/ H. P. FIELD तक आ गया।
४. एपिथेलियल सेल में गिरावट नहीं आई।
५. पेशाब की तलछट समाप्त हो गई।
६. कमर और जाँघ के हिस्से का दर्द कम हुआ। (सन्दर्भ-१६४)

२६-३-६५ की रिपोर्ट

१. R.B.C.3-4/H. P. F. से घटकर २-३/H. P. F. पर आ गया।
२. पस सेल्स घटकर २-३/H. P. F. आ गये। (सन्दर्भ-१६५)
३. वजन अभी नहीं बढ़ा है।
४. बहुत परिश्रम करने के बाद ही कमर में दर्द होता है।
५. सामान्य स्वास्थ्य और शक्ति में विकास है।

The Doctors' X-Ray & Pathology INSTITUTE P. LTD.
Westcott Building; Mahatma Gandhi Road, Kanpur-208 001

DIRECTOR & PATHOLOGISTS :- Dr. K. R. Agrawal
DIRECTOR & PATHOLOGIST :- Dr. (Mrs.) Chitra Agrawal

Date 27.1.95

URINE EXAMINATION

Name: Shri. Madhukar Pareek.
Ref. by Dr.: Anjana Misra.

PHYSICAL EXAMINATION
Quantity: 130 C. C.
Colour: Pale Yellow
Appearance: Clear
Deposit: Nil
Reaction: Acid
Sp. Gravity: 1008

CHEMICAL EXAMINATION
Albumin: Present (+++)
Sugar: Absent
Acetone: Absent
Bile Pigment: Absent
Bile Salts: Absent
Urobilinogen: Normal

MICROSCOPIC EXAMINATION OF CENTRIFUGED DEPOSIT
R. B. C.: Present (2-3/H.P.field).
Pus Cells: Present (2-3/H.P.field).
Epithelial Cells: Present (Squamous)
Casts: Occasional hyaline & granular casts seen.
Crystals: Absent
Amorphous material: Absent

(सन्दर्भ-१६५)

श्री रमेश पारीक ने अपने पुत्र मधुकर के स्वास्थ्य के विषय में जानकारी देते हुए दिनांक १६.५.६५, २२.६.६५ और २७.१.६६ को क्रमशः पत्र लिखा। (सन्दर्भ-१६६, सन्दर्भ-१६७ और सन्दर्भ-१६८)

---

१६४ कैन्सर हारने लगा है

KANPUR-208010
Dated 19.5.95

Respected Doctor Saheb,
As regards the present condition of my son, it may be summed up as under :-

(1) Appetite is increased but the weight is stable at 37 kg only.
(2) Feels pain in the lumber (back) region on bending or kneeling at times.
(3) Feels fatigue and streching in the lower extremities at times. (Is it due to restricted salt consumption?)
(4) General condition of mind and mood happy and gay.
(5) Wishes to play and run and therefore takes a short run with his pet dog. Should he continue or avoid?
(6) Shall I increase quantity of salt in his diet.

With regards.
Yours Sincerely
Ramesh Pareek

संक्षेप में मेरे पुत्र (रोगी) की हालत इस प्रकार है—
१. भूख बढ़ी है, किन्तु वजन स्थिर है, ३७ किलो।
२. झुकने या मुड़ने पर कमर में दर्द अनुभव करता है।
३. पैरों में खिंचाव और थकान का अनुभव करता है- क्या यह नमक पर नियंत्रण के कारण है?
४. सामान्यतः मन और भावना से प्रसन्न है।
५. खेलना और दौड़ना चाहता है। अपने पालतू कुत्ते के साथ दौड़ भी लेता है।— चालू रखे अथवा इसे बन्द कर दे ?
६. क्या उसके भोजन में नमक की मात्रा बढ़ा दूँ ?

(सन्दर्भ-१६६)

समीक्षा : युवक ने अन्य औषधियाँ बन्द कर दी थी। 'सर्वपिष्टी' पर ही निर्भर था। परिणाम बेहद उत्साहवर्द्धक थे और साफ नजर आने लगा कि संघर्ष जितना भी लम्बा हो, रोग निर्मूल हो जाना चाहिए।

औषधि चलती रही। रोग भी बड़ा था, ताकतवर था, अतः कभी-कभी गर्दन उठा लेता था- एक नियंत्रित सीमा तक ही। दवा नियमित चल रही थी, ध्यान भी रखा जा रहा था, किन्तु संभव है ऐसा इसलिए हो जाता हो कि युवा मन वर्जनाओं को कभी-कभी तोड़ देता है।

रोग नियन्त्रण में रहा। इस नियंत्रण से पोषक ऊर्जा की खूराकों को किडनी के नव-निर्माण की प्रेरणा मिली। धीरे-धीरे गति आशा और प्रकाश की ओर ही थी। दिन बीते, सप्ताह बीते और महीने बीतते गये। युवक अब अपने पालतू कुत्ते के साथ दौड़-धूप भी करने लगा। युवक के पिता खर्च के दबाव से निकलने के लिए औषधि कम करने अथवा बन्द करने का सुझाव भी माँगते रहे।

आखिर वह दिन आया, जब रोग ने विदायी ले ली, और दवा भी बन्द कर दी गई। २२-५-९६ को युवक के पिता ने लिखा—

''२०-५-९६ को पेशाब की जाँच कराई गई, जो बताती है कि हालत पूरी तरह ठीक है।''

Jajmau, Kanpur
PIN- 208010
Dated 22.9.95

Respected Dr. Trivedi,

Please find enclosed the latest photostat copy of urine test report dated 20.9.95 alongwith a copy of report of last month dated 19.8.95

I wish you please to study the whole case afresh and kindly let me know for how long the treatment is to be continued. I have marked a significant improvement in the reduction of Albumin, RBCs and pus cells. These tests have been carried out by the head of Deptt. of Pathology Kanpur Med. College, himself and hence, are genuine.

With regards,

Yours Sincerely
Ramesh Pareek

दि. २०.६.६५ की पेशाब की जाँच–रिपोर्ट और १८.८.६५ की जाँच रिपोर्ट प्राप्त करें। मेरी इच्छा है कि आप सारे केस का अध्ययन करके मुझे राय दें कि चिकित्सा कब तक चलायी जाय। मैंने एल्बुमिन की मात्रा में अच्छी गिरावट देखी है, लाल रक्त कण और मवाद की कोशिकाएँ भी घटी हैं। ये जाँच कानपुर मेडिकल कालेज के पैथॉलाजी के विभागाध्यक्ष द्वारा स्वयं करायी गयी है, अतः विश्वस्त हैं।

(सन्दर्भ-१६७)

दिनांक २०-८-६७ को युवक के पिता ने पत्र लिखा–

"आप चि. मधुकर के लिये चिन्तित हैं, इसके लिए मैं आपका आभारी हूँ। मधुकर इस समय पूर्ण रूप से स्वस्थ एवं प्रसन्न हैं, साथ ही उन्होंने स्नातक की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली है।

Respected Dr. Saheb,

As regard Shri Madhukar he appears to be perfectly fine and does not complain for anythi[ng]. During this period, I have been awfully busy and could not get his urine tested, anyway I will send you a report in the first week of February.

Kanpur-208021
Dt. 27.1.96

Yours faithfully
(RAMESH PAREEK)

जहाँ तक श्री मधुकर का प्रश्न है, वह पूर्णतः अच्छा दिखायी दे रहा है और किसी प्रकार की शिकायत नहीं करता। मैं अतीव व्यस्त रहा अतः पेशाब की जाँच नहीं करा सका। जो भी हो, फरवरी के प्रथम सप्ताह में जाँच कराकर रिपोर्ट अवश्य भेजूंगा।

(सन्दर्भ-१६८)

"आपकी चिकित्सा, जो लगभग एक वर्ष तीन माह चली, के द्वारा एक लम्बे समय से उनमें अब तक कोई लक्षण 'किडनी सिण्ड्रोम' के नहीं हैं तथा बाद की यूरिन रिपोर्ट भी सामान्य हो गई थी, अतः मैंने इलाज बन्द करने का निर्णय ले लिया था।

"शेष कुशल है। स्नेह के लिए आपका आभारी रहूँगा।" (सन्दर्भ-१६६)

दिनांक 20.8.97

आदरणीय डाक्टर साहब

आप चि० एम॰पी॰ के लिये चिन्तित हैं, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं। एम० पी० इस समय पूर्ण रूप से स्वस्थ एवम् प्रसन्न हैं साथ ही उन्होंने स्नातक की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण कर ली है।

आपकी चिकित्सा, जो लगभग 1 वर्ष 3 माह चली, के द्वारा एक लम्बे समय से उनमें अब कोई लक्षण "किडनी सिंड्रोम के नहीं हैं तथा बाद की यूरीनरिपोर्ट भी सामान्य हो गई थी अतः मैंने इलाज बंद करने का निर्णय ले लिया था।

शेष कुशल है, स्नेह के लिये आपका आभारी रहूंगा।

भवदीय

(सन्दर्भ-१६६)

३२

नेफ्रोटिक सिण्ड्रोम
NEPHROTIC SYNDROME

मास्टर सन्दीप (११ वर्ष १९८७ में)
बंगलोर-५६००८०

DEPARTMENT OF NEPHROLOGY
CHRISTIAN MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL
VELLORE - 632 004. S. India

Dr. M.R. Baliga
67, Serpentine Road
Kumara Park West Extension
Bangalore-560 020.

Our Ref: Doct/B/83
Date: April 21, 1983

Dear Dr. Baliga,

----patient Master Sandeep. The child was brought here for assessment of his nephrotic syndrome

As you can see from the investigation results, he has a classical nephrotic syndrome most probably of the minimal change type. As you know, the child had not respondad well to steroid theraoy.

I have suggested a trial of high dose alternate days steroid therapy for a period of one or two months. Accordingly we have put him on 4mg/kg body weight of Prednisolone on alternate days.

With best wishes,

Yours sincerely,

Encl:1

Dr.M.G. Kirubakaran, MD, DM
Acting Head, Dept.of Nephrology

(सन्दर्भ-१७०)

जाँच एवं पूर्व चिंकित्सा : क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, वेलोर। उक्त अस्पताल के चिकित्सक डॉ. एम. जी किरुबाकरण, जो उस समय नेफ्रोलोजी के

I would like to state that my son M. Sandeep is doing well after taking 'Sarvapishti' for a year. Then the medicine was discontinued. But due to the side effects of the Alopathic treatment he had taken he has become the victim of diabetes for which he is taking Insulin. If you have any remedial measure for this, kindly let me know and oblige.

Yours Sincerely
[illegible]

(सन्दर्भ-१७१)

कार्यकारी विभागाध्यक्ष थे, ने अपने पत्र दिनांक २१-४-८३ में सात वर्षीय मास्टर सन्दीप के लिए लिखा था, ''आप जानते हैं कि बच्चे की रोग-स्थिति पर स्टेरॉयड थेरापी का कोई असर नहीं हुआ। अतः हमने किडनी की बायाप्सी का निर्णय लिया, किन्तु सम्बन्धियों ने इससे अपनी सहमति नहीं जताई। मैंने ऊँची खूराक की स्टेरॉयड थेरापी का सुझाव दिया है.....।'' *(सन्दर्भ-१७०)*

चार से अधिक वर्षों तक यही चिकित्सा चलती रही। अन्त में कहीं से डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि 'सर्वपिष्टी' के विषय में सुन-समझकर मास्टर सन्दीप की माँ ने दिनांक १०-८-८७ को लिखा, ''मेरा पुत्र सन्दीप नेफ्रोटिक सिण्ड्रोम से ग्रस्त है। इस रोग का कोई इलाज एलोपैथी या अन्यत्र नहीं है। मैं अपने पुत्र पर 'सर्वपिष्टी' आजमाना चाहती हूँ। कृपया चार सप्ताह के लिए औषधि वी. पी. पी. द्वारा भेज दें।''

मेधाविनी माँ को अहसास हो गया था कि पोषक ऊर्जा की खूराकें उनके पुत्र के रोग पर काबू पा सकती हैं। यद्यपि 'किडनी सिण्ड्रोम' पर इस दवा के प्रभाव के विषय में उन्हें कुछ सुनने-पढ़ने को नहीं मिला था। अधिक संभव है कि रिसर्च सेण्टर भी अपनी ओर से ऐसे परीक्षण के लिए प्रस्तुत नहीं होता। ऐसे परीक्षण में उतरने की उसकी योजना भी नहीं थी।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २७-८-८७।

प्रगति-विवरण

माँ का पत्र दिनांक २-९-८७—

''मुझे २६-८-८७ को 'सर्वपिष्टी' मिली और उसे (अभी) एलोपैथिक दवाओं के साथ-ही-साथ दिनांक २७-८-८७ से अपने पुत्र को देना शुरू कर दिया है। एक सप्ताह

से भी कम समय में मुझे प्रगति दिखाई दे गई है। इस प्रगति को देखकर मैंने एलोपैथिक दवाएँ बन्द कर देने का निर्णय लिया है।..."

रिसर्च सेण्टर ने लिखा, "पोषक ऊर्जा वर्ग की खूराकें स्वास्थ्य में कोई विकार स्थापित नहीं कर सकतीं। हाँ, किसी-न-किसी रूप में स्वास्थ्य के विकास में योगदान अवश्य करती हैं। हमने 'किडनी सिण्ड्रोम' पर इन्हें आजमाया नहीं है। आप इनका प्रभाव स्वयं भी देखें और समय-समय पर जाँच कराकर भी देखें कि प्रगति वैज्ञानिक रूप से भी प्रत्यक्ष तो है।"

२८-६-८७ की रिपोर्ट : "मेरे पुत्र के स्वास्थ्य में प्रगति दिखाई दे रही है, यद्यपि विकास की गति धीमी है।"

२४-१०-८७ की रिपोर्ट : "मैं अपने पुत्र को विगत दो महीनों से 'सर्वपिष्टी' दे रही हूँ। इस महीने में उसके स्वास्थ्य में कुछ (प्रत्यक्ष) सुधार आया है।"

रिसर्च सेण्टर ने लिखा, "बड़े रोग के उलझावों तथा एलोपैथिक औषधियों के दुष्प्रभावों को काटकर अगर धीमे विकास के लक्षण भी दिखाई दे रहे हैं, तो बहुत आशा बँधती है। उलझाव और दुष्प्रभाव मिटेंगे तभी तो स्वास्थ्य की गिरावट रुकेगी और तभी तो मुक्त विकास दिखाई दे सकेगा। प्रगति के समाचार से केन्द्र का परिवार प्रसन्न है। हमारी शुकामनाएँ आपके साथ हैं।

२१-१२-८७ की रिपोर्ट : "विगत तीन महीनों से मैं अपने पुत्र को 'सर्वपिष्टी' दे रही हूँ। वह प्रगति करता प्रतीत होता है।"

छः महीने बाद की रिपोर्ट : "मेरा पुत्र (मास्टर 'स') छह महीनों से दवा ले रहा है। प्रगति प्रतीत होती है।"

'सर्वपिष्टी' एक वर्ष तक लगातार चलायी गई। उसके बाद यह देखकर कि बच्चे में अब रोग के लक्षण नहीं हैं, और उसके स्वास्थ्य का विकास अन्य बच्चों की तरह ही उत्साहवर्द्धक है, उसकी माँ ने दवा बन्द करके देखने का निर्णय लिया। वे देखना चाहती थीं कि रोग पूरी तरह समाप्त हो गया है अथवा छल करके कहीं थोड़ा-बहुत छिपा रह गया है।

रिसर्च सेण्टर ने मास्टर सन्दीप की माँ को लिखा, "अभिवादन। मास्टर सन्दीप आपकी इकलौती संतान है। हमें आपके अध्ययन और निर्णय की वैज्ञानिकता पर पूरा भरोसा है। 'किडनी सिण्ड्रोम' पर 'सर्वपिष्टी' के परीक्षण का निर्णय आपने लिया, आपने खूराक-दर-खूराक प्रगति और प्रभाव का सूक्ष्म निरीक्षण किया। एक प्रकार से इस परीक्षण में तो एक कुशल वैज्ञानिक की भूमिका आप ही की रही है। हम तो विश्वासपूर्वक आपके पीछे खड़े भर रहे हैं। आप जो कदम उठा रही हैं, उसमें हमारा विश्वास है। आपको तथा मास्टर सन्दीप को हमारी समग्र शुभकामनाएँ।"

लगभग साढ़े तीन वर्ष बाद औषधि (सर्वपिष्टी) बन्द किये जाने के बाद मास्टर सन्दीप की माँ ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र दिया (दिनांक २४-२-९२)–

"मैं कहना चाहती हूँ कि एक वर्ष 'सर्वपिष्टी' लेने के बाद से मेरा पुत्र मास्टर सन्दीप बिल्कुल ठीक है। उसके बाद दवा रोक दी गई थी। किन्तु आपकी औषधि शुरू करने से पहले बच्चे को जो एलोपैथिक दवाएँ दी गयी थीं, उनके साइड एफेक्ट के कारण बच्चा डायबेटीज का रोगी बन गया है। अगर आपके पास इस रोग की कोई औषधि हो, तो कृपया सूचना दें।" *(सन्दर्भ-१७१)*

To
The Director
D S Research Centre
Calcutta

Bangalore
2nd, Sept, 1987

I am in receipt of Ambrosia Sarvapisti medicine on 26 8 87 and started giving to my son M. Sandeep from 27 8 87 along with other Allopathic medicines. After a weeks treatment he appears to be improving. Following the program I am planning to stop the allopathic medicines.

Jayashree Muralidhar.
Sri K V. Ramaswamy

(सन्दर्भ-१७२)

अब तक तो हवाला दिया गया बच्चे के किडनी सिण्ड्रोम से मुक्ति का। अब अन्त में बच्चे की माँ द्वारा लिखे गये प्रारम्भ के तीन पत्रों के अंश प्रस्तुत हैं। इन्हें प्रस्तुत करने का आशय यह स्पष्ट कर देना है कि जहाँ पारम्परिक चिकित्सा के उपाय एक इंच भी आगे सरक पाने की गुंजाइश नहीं ढूँढ़ पाते, वहाँ भी पोषक ऊर्जा अपने सुप्रभाव के लिए गुंजाइश शीघ्र ढूँढ़ लेती है, सही दिशा में गति भी प्रदान कर देती है और यह रोग से मुक्ति तक पहुँचाने का दायित्व भी सँभाल लेती है।

पत्र दिनांक ०२.०९.८७ (हिन्दी अनुवाद)

"मुझे 'एम्ब्रोशिया सर्वपिष्टी' औषधि दिनांक २६.८.८७ को मिली और दिनांक २७.८.८७ से मैंने उसे अपने पुत्र को देना शुरू कर दिया। इसके साथ-ही-साथ एलोपैथिक दवाएँ भी चलती रहीं। एक सप्ताह की चिकित्सा से ही सुधार होने लगा है। इस प्रगति को देखकर मैंने एलोपैथिक दवाएँ बन्द कर देने की योजना बनाई है।" *(सन्दर्भ-१७२)*

पत्र दिनांक २८.०९.८७ (हिन्दी अनुवाद)।

" 'एम्ब्रोशिया सर्वपिष्टी' दूसरी किश्त मुझे १८.९.८७ को प्राप्त हुई। इसके लिए आपको बहुत धन्यवाद। मेरे पुत्र के स्वास्थ्य में सुधार परिलक्षित हो रहा है, यद्यपि

To
The Director
D.S. Research Centre
Calcutta

Mandya.
28th Sept, 1987

Respected Sir,

I am in receipt of Ambrosia Sarvapisti (2nd instalment) on 18.9.1987. and thank you very much for the same. My son appears to be improving though the progress is very slow

Thanking you

Yours faithfully
Jayashree R

(सन्दर्भ-१७३)

To
The Director
D.S. Research Centre
Calcutta

Mandya
24 10 1987

Due to my sons chronic illness I have been giving my son Sarvapisti for the last 2 months. There was slight improvement in his health

Yours faithfully
Jayashree R

(सन्दर्भ-१७४)

सुधार की गति धीमी है।" *(सन्दर्भ-१७३)*

पत्र दिनांक २४.१०.८७ (हिन्दी अनुवाद)।

"अपने पुत्र के असाध्य रोग की चिकित्सा के विचार से मैं उसे विगत दो माह से 'सर्वपिष्टी' दे रही हूँ। उसके स्वास्थ्य में थोड़ा सुधार है।" *(सन्दर्भ-१७४)*

विशेष : डी. एस. रिसर्च सेण्टर अतीव सम्मान के साथ इस ऐतिहासिक परीक्षण का सारा श्रेय मास्टर सन्दीप की विवेकशीला माँ को ही देता है। ❑

३३

नेफ्रोब्लास्टोमा
(NEPHRO BLASTOMA)

बेबी मामुनी चन्द, ३ वर्ष, ३ महीने
द्वारा : श्री ज्योति रंजन चन्द
जानू गंज
बालासोर-७५६०१६

पूर्व जाँच एवं चिकित्सा : रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान, ६६-शरत बोस रोड, कलकत्ता-७०००२६। क्र. सं. २२७, एम. आर. डी. नं. ओ. वी. ७८ डी ५, दि. १०.७.६७, बायाप्सी रिपोर्ट—नेफ्रोब्लास्टोमा। *(सन्दर्भ-१७५)*

कैन्सर को वृद्धावस्था का रोग माना जाता था। मान्यता थी कि जब शरीर की कोशिकाओं की प्रतिरक्षा का कवच टूट जाता है और उनकी विकास-क्षमता घट जाती है, तभी कैन्सर के उत्पन्न होने का वातावरण बनता है। यह वृद्धावस्था में ही सम्भव होता है। पिछले वर्षों में समय के साथ कैन्सर की बाहें बढ़ती ही चली गई हैं। आज तो संसार के हजारों बच्चे कैन्सर-अस्पतालों में चिकित्सा के लिए कतार में रखे गये हैं। ऐसी ही एक अबोध शिशु है, बेबी मामुनी चन्द, उम्र मात्र तीन वर्ष तीन महीने। उसे जो कैन्सर था, उसकी बुनियाद प्रायः गर्भावस्था में ही पड़ जाती है—नेफ्रो ब्लास्टोमा।

Serial No....... 227 ---90

10/7/92 Ramkrishna Mission Seva Pratishthan
86, Sarat Bose Road, Calcutta-700 026
HISTOPATHOLOGICAL REPORT 192/92
Biopsy No.

Name Baby Mamuni Chand Sex F Age 2¾ yrs
M.R.D. No. OUTSIDE Ward .... Bed/Cabin .... OPD Reg. No. ....

Growth - left kidney

About 10.0 cm ... [illegible] ... upper half of kidney. Growth shows small cyst.

Microscopically ... Nephroblastoma.

[signature] 10/7/92

M. ROY, BSc. MBBS

(सन्दर्भ-१७५)

'सर्वपिष्टी प्रारम्भ' : १५.७.६२।

घर वालों को 'सर्वपिष्टी' की जानकारी रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान में ही मिली, जहाँ दिनांक १०.७.६२ को रोग का

निरूपण हुआ और घबराहट का माहौल बन गया। उन्हें यह जानकारी भी मिल गयी कि नेफ्रोटिक सिण्ड्रोम से एक बालक को 'सर्वपिष्टी' ने रोग-मुक्त किया है। १४.७.६२ को प्राप्त करके १५ जुलाई ६२ से उन्होंने 'सर्वपिष्टी' का सेवन शुरू करा दिया। किमोथेरापी साथ में चलती रही। तीन महीने के बाद किमोथेरापी बन्द हो गयी और केवल 'सर्वपिष्टी' ही चलायी जाने लगी। दुबारा किमोथेरापी की ओर जाने की नौबत भी नहीं आयी, क्योंकि बालिका दिन-प्रतिदिन रोग-मुक्ति की ओर बढ़ने लगी। बच्ची के पिता श्री ज्योतिरंजन चन्द डी. एस. रिसर्च सेण्टर से लगातार सम्पर्क बनाये रहे। पत्रों के माध्यम से उन्होंने प्रगति-रिपोर्ट दी। प्रस्तुत हैं पत्रांश–

पत्र दिनांक ०१.०२.६३

"आपकी औषधि वह नियमित रूप से ले रही है। अब बिल्कुल ठीक है। नियमपूर्वक स्कूल जाने लगी है।" *(सन्दर्भ-१७६)*

बीच-बीच में बच्ची की स्वास्थ्य-परीक्षा होती रहती थी और प्रत्येक रिपोर्ट कुछ अच्छा ही बताती थी। बच्ची का उभरता स्वास्थ्य, निखरती सक्रियता तथा रोग- उपद्रवों का एकबारगी शान्त हो जाना, सब कुछ बताने के लिए पर्याप्त था, फिर भी 'सर्वपिष्टी' करीब डेढ़ वर्ष चलाने के बाद एक बार विधिवत वैज्ञानिक जाँच करा लेना जरूरी मालूम हुआ।

पहला भय था, मेटास्टेसिस के बढ़ाव से कैन्सर द्वारा अन्य अंगों के आच्छादित कर लिये जाने का। दिनांक १५.१२.६३ को कलकत्ता के पार्क एक्स-रे क्लीनिक द्वारा की गयी जाँच ने इस आशंका को निर्मूल कर दिया। कैन्सर के प्रमाण न तो चेस्ट में देखे

FROM MAMUNI CHAND Date 1.2.93
To, D. S. Research Center
Calcutta.

Dear Sir

Received your valuable letter regarding my daughter's health. Now she is ok. [illegible] Now she is going to school regularly. So also she is taking your medicines regularly. This is for my information to you [illegible] obliged

Thanking you
Yours faithfully
Jyoti Ranjan Chand
for Baby Mamuni Chand

(सन्दर्भ-१७६)

PARK X-RAY CLINIC

PARK NURSING HOME PREMISES
4 GORKY TERRACE
CALCUTTA - 700 017

NAME: MISS.MAMANI CHAND. AGE: 4YEARS.

PART X'RAYED: CHEST.P.A.(ERECT). DATE: 15.12.93.

REFD.BY:PROF.SUBIR K.CHATTERJEE. REF.NO.105DX/12/93

CHEST.P.A.VIEW(ERECT):-

Post-operative/post-chemotherapy follow-up patient of Nephroblastoma left.

No parenchymal metastasis or mediastinal lymphadenopathy shown.

(DR.ANUP SADHU)

(सन्दर्भ-१७७)

गये, न कोई ग्रन्थि ही उससे प्रभावित पायी गयी। *(सन्दर्भ- १७७)* इसी समय सोनो डायग्नोस्टिक्स, कलकत्ता ने अल्ट्रा सोनोग्राफी करके पेट के ऊपरी भाग की रिपोर्ट दी (दि. १६.१२.६३)। सब कुछ नार्मल पाया गया। *(सन्दर्भ- १७८)*

२१.०२.६४-

"अपनी बेटी मामुनी चन्द के फोटो की एक कॉपी भेज रहा हूँ, अब तो वह पूरी तरह ठीक है। आपके निर्देश के अनुसार आप की दवा चलायी जा रही है।" *(सन्दर्भ-१७६)*

चिकित्सा के प्रति भारी आश्वासन मिला और भविष्य में रोग के पुनः सर उठाने की शंका भी समाप्त हो गयी। अब 'सर्वपिष्टी' बढ़ते अन्तराल के साथ देकर बन्द कर दी गयी।

दिनांक २५.०२.६५ को बेबी मामुनी के पिता ने लिखा, "मेरी बेटी मामुनी बहुत ही अच्छी है। गत वर्ष (१६६४ में) कलकत्ता के पार्क नर्सिंग होम में ले गया था। वह अब एकदम ठीक है। वह नियमित रूप से स्कूल जा रही है। उसकी विद्यालयीय परीक्षा समाप्त होने पर फिर चेक अप के लिए कलकत्ता ले जाऊँगा। उस

SONO DIAGNOSTIX

AND RESEARCH KENDRA

Diagnostic Ultrasonography & Echocardiography Centre, 4 Gorky Terrace, Cal - 17, Ph: [illegible]

NAME: Miss Mamoni Chand • AGE:04Years SEX: F Dated : 16-12-1993

REFERRED BY: Dr.S K Chatterjee U S G No.93121359

Real-time Ultrasonography of the Upper Abdomen has been done in different planes and observations are :

IMPRESSION: Normal U S G study of the Upper Abdomen.

(DR.S.R.MONDAL)

(सन्दर्भ-१७८)

समय आपसे अवश्य मिलूँगा।..." (सन्दर्भ-१८०)

दिनांक २६.१२.६७ की रिपोर्ट :

बेबी मामुनी चन्द की ओर से डी. एस. रिसर्च सेण्टर को नये वर्ष की (१६६८ की) शुभ कामनाएँ देते हुए उसके पिता जी ने लिखा—

" अब वह ठीक है। स्वास्थ्य का विकास भी उत्तम है। वह नियमित स्कूल जा रही है।..." प्रस्तुत है मूल अंग्रेजी पत्र का अंश, सन्दर्भ-१८० बी में।

Ref .... Date 31.2.97

From J.R. Chand, Balasore Orissa

Dear Sir,

Am sending a photo copy of my daughter Mamuni Chand. Now she is all right & so also she is continuing your medicine as per your medical advice. Obliged. Thanking you

Yours faithfully

Jyoti Ranjan Chand.

(सन्दर्भ-१७६)

Date 25.2.95

From Baby Mamuni Chand. Balasore.
Mr Jyoti Ranjan Chand.

Dear Sir, I received your letter thanks for it. My daughter Mamuni now very fine. Last year i.e. month of May 94 I was checking her at Calcutta ... Park Nursing home. Now she is ok & fine & also she is going to school regularly. Yet again I will go to Calcutta for her checking after her school examination will be over. At that time I will definitely meet you. Obliged.

Thanking you
Yours faithfully
J. R. Chand.

(सन्दर्भ-१८०)

Ref ... Wish you happy New year Date 29.12.97

From, Baby Mamuni Chand.

Dear Sir,

Now she is OK in her health development. So also she is regularly going to school. Now she is studying Std. Sixth.

This is for my information to you regarding Mamuni health & obliged.

Thanking you
Yours faithfully
Jyoti Ranjan Chand.

(सन्दर्भ-१८०बी)

□

३४

युरिनरी ब्लैडर का कैन्सर
(CA. URINARY BLADDER)
(STAGE-2, GRADE-2)

श्री ज्योति रंजन सिन्हा, ५६ वर्ष
महामाया पाड़ा
गुमटी नं.-३
जलपाईगुड़ी (प. बंगाल)

Sebayan Pathological Laboratory

11, HAREN MUKHERJEE ROAD HAKIMPARA, SILIGURI

[illegible] Bladder Tumor

[illegible] Mr. Jyoti Ranjan Sinha Sarkar. 57 yrs. Sex Male

[illegible] Dr. P.K. Chatterjee. F.R.C.S., M.Ch. (Urology)

Microscopical Findings.

Sections show histology of a TransitionalCell Carcinoma (Grade - II). The tumor cells are seen infiltrating the muscle tissue (Stage - II).

Diagnosis. Transitional Cell Carcinoma.

No. 216 / 93.
Date 22.7.93

(सन्दर्भ-१८१)

रोग का इतिहास : यदि शरीर के अन्य संस्थान स्वस्थ रहें, तो जीवन को शक्ति मिलती रहती है, और किसी एक अंग अथवा संस्थान पर आने वाले बड़े-से-बड़े रोग का मुकाबला तथा चिकित्सा करने में बड़ा भारी सहयोग मिल जाता है। लेकिन श्री सिन्हा के रोग के इतिहास के पीछे तो अनेक रोगों तथा उन पर चली चिकित्सा के कतारबद्ध इतिवृत्त खड़े हैं।

१९८१ में पथरी निकालने के लिए दाहिने गुर्दे का ऑपरेशन हुआ। १९८८ में गाल ब्लैडर में पथरी होने के कारण जॉण्डिस से जूझते रहे। पथरी अब भी कायम है। २५ वर्षों से आर्थराइटिस के रोगी हैं। हार्ट बढ़ा हुआ है। हाइपरटेंशन है। कठोर कब्ज ने

Jyoti Ranjan Sinha Sarker

MAHAMAYA PARA
3 No. Ghumti
P.O. + Dist. Jalpaiguri, W.B.

(सन्दर्भ-१८२)

तो मानो कभी साथ ही नहीं छोड़ा। इतनी स्वास्थ्य-समस्याओं से लदी हुई जीवन की गाड़ी खींच रहे थे कि १९९३ में युरिनरी ब्लैडर का कैन्सर हो गया।

सर्जरी : नॉर्थ बंगाल मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पीटल, सिलीगुड़ी के कुशल सर्जन, युरोलॉजिस्ट डॉ. पी. के. चटर्जी ने दिनांक ७-७-९३ को ऑपरेशन द्वारा ट्यूमर को निकाल दिया।

जाँच- सेबायन पैथालॉजिकल लेबोरेटरी, सिलीगुड़ी ने बायाप्सी जाँच द्वारा (नं. २१६/९३) दिनांक २२-७-९३ को पुष्टि की- ट्रांजिशनल सेल कार्सिनोमा ग्रेड-२, स्टेज-२*(सन्दर्भ-१८१)*

नोट : जाँच से स्पष्ट हुआ कि ट्यूमर की कोशिकाएँ मस्सल टिशूज में इनफिल्ट्रेट कर गयी हैं।

'सर्वपिष्टी' की ओर : श्री सिन्हा ने ऑपरेशन तो सफाई के साथ झेल लिया। अब जरूरत थी किमोथेरापी की। उनके शरीर में खड़ी स्वास्थ्य समस्याएँ किमोथेरापी के लिए कत्तई अनुकूल नहीं थीं। उधर शारीरिक स्वास्थ्य भी बहुत दुर्बल था। अतः 'सर्वपिष्टी' का प्रयोग एक आकर्षक विकल्प लगा, क्योंकि पोषक ऊर्जा के साथ साइड एफेक्ट्स और दुष्प्रभावों की संभावना नहीं रहती।

समस्याएँ अब भी थीं : ऑपरेशन के बाद भी ऑपरेशन पूर्व वाली कुछ समस्याएँ अभी कायम थीं। पेशाब के साथ अब भी रक्त आता था और जलन तथा दर्द अभी भी कायम थे। उधर रेकरैन्स के जल्दी से उभरने की आशंका भी थी। अतः ऑपरेशन के मात्र सवा महीने बाद ही 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी गई।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ

दिनांक १८-८-६३ से।

प्रगति-विवरण

चार सप्ताह बाद

शरीर में स्फूर्ति और शक्ति का विकास हुआ। पेशाब से रक्त का आना रुक गया। दर्द और जलन कुछ कम होने से रोगी ने शक्ति और राहत का अनुभव किया।

(सन्दर्भ-१८३)
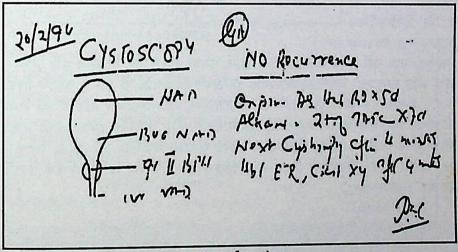
(सन्दर्भ-१८४)

तीन महीने बाद : अब न जलन ही रह गयी, न दर्द। पेशाब का रंग सामान्य हो गया। स्वास्थ्य में प्रत्यक्ष सुधार अनुभव होने लगा और दिखाई भी देने लगा। *(सन्दर्भ-१८२)*

छह महीने बाद :

श्री सिन्हा को भूख अच्छी लगती थी, नींद सामान्य थी। स्वास्थ्य अच्छी प्रकार सुधर गया। दर्द, जलन, रक्त-स्राव आदि तो बहुत पहले ही समाप्त हो चुके थे। *(सन्दर्भ-१८३)*

औषधि अब छह माह चल चुकी थी। रिसर्च सेण्टर ने भी राय दी कि एक बार जाँच कराकर आन्तरिक स्थिति की जानकारी प्राप्त कर ली जाय। दिनांक २०-२-६४ को

डॉ. पी. के चटर्जी के अन्तर्गत सिस्टोकोपी द्वारा जाँच हुई। परिणाम था—नो रेकरैन्स। *(सन्दर्भ-१८४)*

दिनांक २०.१०.९७ की रिपोर्ट

श्री सिन्हा स्वस्थ और कैन्सर मुक्त हैं। किसी प्रकार की स्वास्थ्य सम्बन्धी असुविधा नहीं है। परेशानी एक ही है कि हिमोग्लोबिन बढ़कर सामान्य (नॉर्मल) तक नहीं पहुँच पा रहा है। संभवतः इसके कारण की छानबीन और साथ में अन्य कोई उपयुक्त चिकित्सा आवश्यक है। अपने २०.१०.९७ के पत्र में उन्होंने लिखा है- "...आपके मूल केन्द्र पूर्णिया में डॉ. तिवारी (स्व. डॉ. उमाशंकर तिवारी) की शरण में जाकर चिकित्सा कराता रहा। अवस्था में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ। किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। लेकिन हिमोग्लोबिन आठ से ऊपर क्यों नहीं जा रहा है, समझ में नहीं आता। ....डॉ. तिवारी के निधन से मर्माहत हूँ। यह मेरे लिए व्यक्तिगत भाव से क्षति हुई है।" *(सन्दर्भ-१८५)*

Jalpaiguri: 20/10/97

মাননীয় ডাক্তার বাবু
[illegible] আপনাদের মূল Centre
Purnea-র Dr Tiwari-র [illegible]
[illegible] Cancer [illegible]
[illegible] থাকি। অবস্থার [illegible]
পরিবর্তন [illegible]। [illegible]
[illegible] Hemoglobin এর Percentage
8 (Eight) এর [illegible]
বুঝতে পারছি না।
Dr Tiwari-র মৃত্যুতে [illegible]
[illegible]
[illegible]

(सन्दर्भ-१८५)

> जड़ पदार्थों के अणुओं से जब चेतना का समझौता होता है, तो वहाँ चेतना का अनुशासन कायम होता है। इन अणुओं का संरचनात्मक विकास अब चेतना के अनुसार होता है। ऐसे सचेतन अणुओं को भारतीय ऋषि-चेतना (विज्ञान) 'अन्न' कहती है। यह अन्न अपने अस्तित्व को सुस्थिर बनाने के लिए एक सचेतन प्रक्रिया को जन्म देता है, जिसे चयोपचय अथवा मेटाबोलिज्म कहा जाता है। वस्तुतः मेटाबोलिज्म का जन्म ही 'जीव' का जन्म, उसका विचलन ही जीव की रुग्णता और उसकी मृत्यु ही जीव की मृत्यु है। जीव का नियामक अथवा पिता 'अन्न' है। यह बुनियादी संदेश भारतीय ज्ञान-ग्रन्थों में बार-बार दुहराया गया है- 'अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्' (अन्न ही प्राणियों का पिता है) तथा 'अन्नाद्भवन्ति भूतानि' अर्थात् अन्न ही प्राणियों को जन्म देता है।

३५

ए. एम. एल.
(A.M.L.)

मास्टर सुमित शर्मा
उम्र : ११ वर्ष
द्वारा श्री साधुराम शर्मा
३६, हाउसिंग बोर्ड कालोनी
सिरसा रोड, हिसार (हरियाणा)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : टाटा मेमोरियल हास्पीटल (केस नं. १८७४०, लैब नं.

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Ref. No. : 260994003 BONE MARROW EXAMINATION REPORT Date : 23/09/94

Case No. : BH-18740
Name : [illegible]

Lab. No. : D-5398
Age : 4 Sex : [illegible]

Cellularity : D [Normal(N)/Hypo(HO)/Hyper(HR)/Diluted(D)] M/E Ratio:

Erythropoesis : S [Normal(N)/Suppressed(S)/Hyper(HR)/Dyserythro(D)]
[Normo(NO)/Megalo(ME)/Dimorph(DI)] Ring Sideroblast :

Myelopoesis : [Normal(N)/Suppressed(S)/Hyper(HR)/Dysmyelo(D)]

Maturation :

Blast : 15 % Auer Rod(Y/N) : Y Promyelo : % Promono+ Mono: %

Lymphopoesis Blasts : % Prolymphocytes : Lymphocytes: 50

Poorly Diff. Lympho : % Plasma Cell/Myeloma Cell : %

Megakaryopoesis : [Adequate(A)/Reduced(R)/Increased(I)] Micromegakor(Y/N):

Abnormal Cells : VERY DIL.MAR.,MYEL:ABNORMAL PROMYELOCYTES-32%,MEG:SUPPRESSED

Cytochemistry : SSB : DIL. MPO : DIL. CAE : NSE :
PAS : DIL. AP : LAP : TDT :

Surface Marker :

Diagnosis : AML M3

Comment :

Reported BY : RG [signature] Entered By : MN

HEMATOPATHOLOGY

(सन्दर्भ-१८६)

Form No. 18-B

TATA MEMORIAL HOSPITAL
ROENTGEN DIAGNOSTIC DEPARTMENT
NEW GOLDEN JUBILEE BLOCK

NAME Sumeet SEX M AGE
INCOME Rs. Amount charged Rs. CASE No. HH-15740
Receipt No. & Date (Unit Chief) Dr. [illegible] Date 22/9/94

OUT PATIENT | IN PATIENT
Private | Private | Semi Private | Plastic Surgery (P.S.W.) | 7th Floor (C.I.W.)
Clinic ✓ | 8th Floor (M.S.W.) | 11th Floor (C.N.W.) | Male | Female | R.T.W.

Brief Clinical History Ac Leukemia
Provisional Diagnosis
Examination Required for X-ray Chest PA
Previously Xrayed or not Retaining Doctor's Signature

FOR USE OF X-RAY DEPARTMENT ONLY — Size of the films and technical data

14 x 17	12 x 15	10 x 12	8 x 10	6 x 8	7 x 17	K. V.
						Ma/MaS
14 x 14	5 x 7	M.M.R. No.	Occlu	Dental		Machine
						Radiographer's Signature

ROENTGENOLOGIST'S REPORT — Checked by T. O./A.T.O.

RH 15740 22.9.94 (Reported by: Dr. Merchant)
X-RAY CHEST PA VIEW :-
An ill defined area of ground glass density is seen in the left mid and lower zones. There is no loss of lung volume. The right lung is clear. There is no evidence of hilar or mediastinal lymphadenopathy. The heart size and configuration is within normal limits.
IMP:- The findings are suggestive of pneumonitis involving the left mid and lower zones.
Suggest :- Follow up x-ray after 7-10 days.

(सन्दर्भ-१८७)

८३६८, दिनांक २३.०६.६४) (सन्दर्भ-१८६, १८७)

सबसे पहले बच्चे को बुखार आया और उसके दो दिन बाद गला खराब हो गया। ४-५ दिनों के बाद बुखार ठीक हो गया। १५ दिनों के बाद फिर बुखार आया। खून की कमी हो जाने के कारण खून चढ़ाया गया। १५-२० दिन तक ठीक रहा, फिर बुखार हो गया। रोहतक मेडिकल में भर्ती कराया गया। वहाँ पहली बार जाँच करके बताया गया कि बच्चे को ब्लड कैन्सर हो गया है।

स्थानीय इलाज से लाभ न होता देखकर उसे टाटा मेमोरियल हास्पीटल, मुम्बई ले

September 9

डा. साहब नमस्कार

मैं सुमित शर्मा की मम्मी आपके पास पत्र भेज रही हूँ जितनी दवाई थी हमें मिल चुकी सुमित अब ठीक है खाना पीना ठीक टाइम पर करता है हाँ अगर थोड़ा सा भी ज्यादा खा लिया तो उल्टी हो जाती है वैसे ठीक है। [illegible]

H.B. - 13.9

T.C. - 6.7

नमस्कार

आपकी आभारी सुमित की

मम्मी राजा

1996

(सन्दर्भ-१८८)
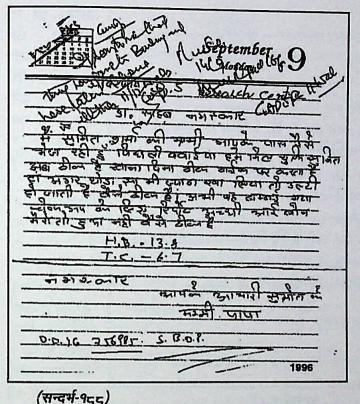
जाया गया। वहाँ बोन मैरा जाँच के बाद रिपोर्ट में आया, 'ए एम एल-एम ३'।

मास्टर सुमित का इलाज चलाया जाता रहा। इसी बीच डी एस रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली। वाराणसी के सेण्टर से दिनांक ०१.०५.६६ को दवा प्राप्त कर ली गयी।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक ०१.०५.६६ को 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करके दिनांक ०३.०५.६६ से मास्टर सुमित शर्मा को खिलाना शुरू कर दिया गया।

दवाई सेवन करने के बाद जल्दी ही बच्चे को लाभ समझ में आने लगा। सेण्टर को भेजे पत्र में बताया गया कि सुमित की हालत में सुधार होने लगा है।

D.S. Research Centre

सुमित अब ठीक है [illegible]

(सन्दर्भ-१८६)

दिनांक १४.०६.६६ को सेण्टर को भेजे पत्र में सूचित किया गया था, "...सुमित अब ठीक है। खाना पीना ठीक टाइम पर करता है। हाँ अगर

आदरणीय

D.S. Research Center

Varanasi

समाचार यह है कि आपका पत्र मिला

और सुमित शर्मा का हाल पूछने के लिए हम आभारी है

अभी हम 6/5/2001 को बोम्बे गये थे उसकी रिपोर्ट बिल्कुल

ठीक आई है व स्वास्थ्य से भी बिल्कुल ठीक है और

आगे भी जैसी रिपोर्ट आती रहेगी हम आपको सूचित

करते रहेंगे। आपका पत्र मिलने में देरी होने के कारण

आपका पत्र का जवाब देरी से दे रहे है और कोई गलती

हुई हो तो हमें सूचित करें

आपकी बड़ी कृपा होगी धन्यवाद

आपके आभारी सुमित शर्मा के माता पिता

Savitry

10.7.2001
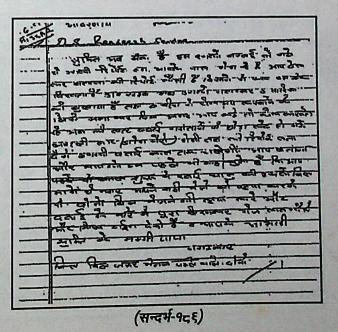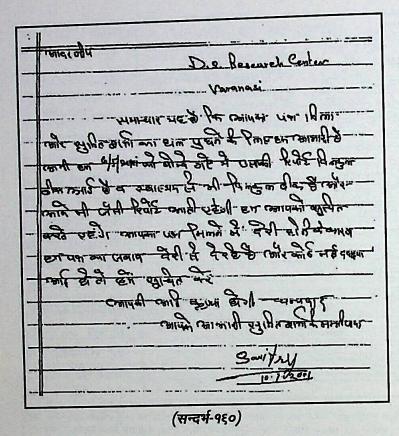
(सन्दर्भ-१६०)

थोड़ा सा भी ज्यादा खा लिया, तो उल्टी हो जाती है। वैसे ठीक है। अभी वह बम्बई गया था चेकअप के लिए। रिपोर्ट अच्छी आयी..."। *(सन्दर्भ-१८८)*

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की ओर से रोगियों और उनके परिजनों को पत्र लिखकर उन्हें प्रेरित किया जाता है कि वे पत्र द्वारा रोगी के स्वास्थ्य की जानकारी केन्द्र को भेजते रहें। सुमित की माँ जब भी औषधि मंगातीं, अपने बच्चे की रिपोर्ट जरूर देतीं। १०.०६.६७ को उन्होंने सूचित किया कि "...सुमित अब ठीक है। हम उसको बम्बई ले गये थे। उसकी रिपोर्ट हम आपके पास भेज रहे हैं, आप देख कर बताना कि रिपोर्ट कैसी है। दिखने में एकदम ठीक दिखता है..."। *(सन्दर्भ-१८६)*

जब सुमित का स्वास्थ्य चौतरफा ठीक होने लगा तो उसके माँ-बाप सेण्टर की औषधि बन्द करने की इच्छा जाहिर करने लगे। सेण्टर से आखिरी बार ०५.०८.६८ को सुमित के लिए औषधि मंगायी गयी। सेण्टर ने काफी दिनों के बाद सुमित का स्वास्थ्य जानने के लिए एक पत्र लिखा तो दिनांक ०६.०२.६८ को सुमित के पिता ने सेण्टर को पत्र लिखकर जानकारी दी, "...हमें खुशी है कि आप अपने मरीज की अच्छी तरह से देखभाल करते हैं..."।

सुमित शर्मा का हालचाल जानने के लिए सेण्टर की ओर से भेजे गये पत्र के जवाब में १०.०७.२००१ को उसकी माँ ने उत्तर दिया, "...सुमित शर्मा का हाल पूछने के लिए हम आभारी हैं। अभी हम ०६.०५.२००१ को बाम्बे गये थे। उसकी रिपोर्ट बिल्कुल ठीक आई है व स्वास्थ्य से भी बिल्कुल ठीक है..."।*(सन्दर्भ-१६०)*

३६

२४ जनवरी, १६६७ की बात है। रिसर्च सेण्टर के प्रांगण में यहाँ के वैज्ञानिक, सहकर्मी, परिवार के युवक तथा किशोर चाय पीने एकत्र थे। फोन की घण्टी बजी और डॉ. एस. पी. सिंह ने फोन उठाया। फोन रखने के बाद उन्होंने बताया, '' 'नूतन सबेरा' के लखनऊ ब्यूरो प्रमुख का फोन था। उन्होंने बताया है कि नाजिर अली का देहान्त हो गया है।'' यह समाचार सुनते ही वहाँ के वातावरण में शोक की लहर फैल गयी।

नाजिर अली और 'नूतन सबेरा' के ब्यूरो प्रमुख का सम्बन्ध जान लें।

कुछ ही दिन पूर्व 'नूतन सबेरा' के पत्र-प्रतिनिधियों के दल ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर की कैन्सर-चिकित्सा सम्बन्धी उपलब्धियों के विषय में प्रो. त्रिवेदी का एक साक्षात्कार लिया था। कैन्सर-मुक्ति के कतिपय परिणामों की जानकारी के सिलसिले में उन्हें नाजिर अली का भी नाम मिला था। छानबीन के दौरान पत्रकारों को कहीं से समाचार मिल गया था कि नाजिर अली का स्वर्गवास हो गया है।

समाचार से एक सदमा लगा और सब लोग चाय आदि की बात भूलकर नाजिर अली की ही चर्चा में लग गये।

भीतर यह माहौल था, तभी मुख्य द्वार से नाजिर अली ने प्रवेश किया। बुलन्द डीलडौल के ५७ वर्षीय नाजिर अली के प्रवेश ने माहौल को नया रंग दे दिया। सेण्टर के जो लोग नाजिर अली की मृत्यु की खबर से दुख में डूबे थे, खुशी से दौड़कर नाजिर अली के पास पहुँच गये। नाजिर अली को तो सेन्टर से आत्मीय व्यवहार सदैव मिलता था, परन्तु आज के इस वातावरण से वे अचकचा गये।

नाजिर अली को लोगों ने कुर्सी पर बिठाया। ठहाकों के बीच ही उन्हें उनकी मृत्यु की सूचना की जानकारी दी गयी। वे भी ठहाकों में शामिल हो गये। फिर तो चाय का दौर दुबारा चल पड़ा।

प्रोस्टेट से चलकर अस्थियों में फैला कैन्सर
(CA. PROSTATE, Stage D2)
BONE METASTASIS

मोहम्मद नाजिर अली, ५७ वर्ष
एन. सी. एल. दुधी चूना प्रोजेक्ट
सेक्टर- ए, कालोनी
क्वार्टर नं. बी- १/१, सिद्धी (म.प्र.)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : संजय गाँधी पी. जी. आई इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज (सी. आर. नं. १३६६४३/९४, एन. एम. नं. १२०५/९४)। *(सन्दर्भ-१६१)*
बोन स्कैन : वाइड स्प्रेड बोन मेटास्टेसिस।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : ४.४.९५

कष्टों की शुरुआत मूत्रावरोध से हुई। फिर पेशाब रुक जाने का एक सिलसिला-सा बन गया। पहले अपने जिला चिकित्सालय के डॉ. मिश्रा से इलाज लिया। बाद में पी. जी. आई. लखनऊ गये। वहाँ विधिवत जाँच हुई। पाया गया कि प्रोस्टेट ग्लैण्ड में एक अर्बुद के रूप में पैदा होने वाला कैन्सर हड्डियों में दूर-दूर तक फैल चुका है। इलाज चलने लगा, लेकिन हालत बिगड़ती ही गयी।

SANJAY GANDHI POST GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES, LUCKNOW
DEPARTMENT OF UROLOG
CASE SUMMARY

N.M. No 1205/94 — 3621

NAZIR ALI 55M
136643/94
Urology- 6

- R. LOW UP NO.:
- D.O.A.: 25.8.94
- D.O.D.: 29.8.94
- BLOOD GROUP:
- CONSULTANT I/C: DR, R, Ahlawat

FINAL DIAGNOSIS: CA prostate (stage D2)

LAB INVESTIGATIONS: Prostate biopsy. 23/9/94 - Adeno CA
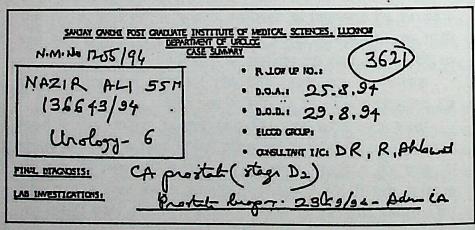
(सन्दर्भ-१६१)

एक दिन बैंक कर्मचारी अनिल कुमार श्रीवास्तव से मुलाकात हो गयी। उन्होंने अपने रक्त-कैन्सर की कथा बतायी और यह कहकर कि वे डी. एस. रिसर्च सेण्टर की दवा खाकर ही रोग-मुक्त और स्वस्थ हुए, उन्हें सलाह दी कि वहीं की दवा 'सर्वपिष्टी' खाएँ।

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES 769
LUCKNOW
DEPARTMENT OF NUCLEAR MEDICINE

NAME: Nazir Ali 55/M C.R. No. 136643/24
N.M. No. 1205/74
NAME OF THE STUDY/THERAPY: Skeletal System 20/5/25

REPORT

IMPRESSION:- Overall improvement in pattern of metestasis.

(सन्दर्भ-१६२)

दिनांक ४-४-६५ को श्री नाजिर अली ने 'सर्वपिष्टी' द्वारा अपनी चिकित्सा शुरु की। कुछ ही दिनों में लाभ और आराम अनुभव करने लगे। पी. जी. आई. लखनऊ में समय-समय पर जाँच कराते रहे। रिपोर्ट से भी प्रगट हुआ कि सुधार हो रहा है। २०.५.६५ की रिपोर्ट से ही सुधार सूचित हुआ (अर्थात् दवा शुरु करने के करीब डेढ़ महीने बाद)।

एस. जी. पी. जी. आई. लखनऊ की होल बॉडी स्कैन रिपोर्ट दि. २०.५.६५। (सन्दर्भ-१६२)

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW
DEPARTMENT OF NUCLEAR MEDICINE

NAME: Nazir Ali 57/M C.R. No. 136643/25
N.M. No. 1205/74
NAME OF THE STUDY/THERAPY: Skeletal System 4/11/25

REPORT

Whole body bone scan was done under the Gamma Camera 3 hours after intravenous injection of 20 mCi of 99mTc MDP. There is physiological

IMPRESSION:-1. No scintigraphic evidence of metastases in the skeleton.
2. Normal bone scan.

(सन्दर्भ-१६३)

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW
DEPARTMENT OF NUCLEAR MEDICINE

NAME: Mr. Nazar Ali   C.R. No. 136643/9
21-6-96
H.M. No. 1205/94
NAME OF THE STUDY/THERAPY: Bone Scan   URO / OPD

REPORT

Whole body bone scan was done under the Gamma Camera 3 hours after intravenous injection of 20 mCi of 99mTc MDP.

IMPRESSION:-1. No scintigraphic evidence of metastasis in the skeleton.

2. Normal bone scan.

Atul   Vikalnand

(सन्दर्भ-१६४)

बायोप्सी टेस्ट में मुझे (Bone Cancer) हड्डी का कैंसर बताया गया उसके बाद आपरेशन करके दोनों अण्डकोष निकाल दिया और कहा कि यह कोई गारन्टी नहीं है कि आप ठीक हो गये हैं। आप केवल २-५ महीने ही जीवित रह सकेंगे क्योंकि रोग आगे बढ़ रहा है। अचानक मुझे डी० एस० रिसर्च सेन्टर के बारे में पता चला। मैंने वहाँ से दवा शुरू किया (५.५.९५ को) तथा मुझे एक महीने में ही फायदा होने लगा। मैंने आपरेशन के बाद से कोई भी एलोपैथिक दवा या इन्जेक्शन नहीं लिया। केवल P.G.I. लखनऊ में छः-छः महीने पर मैं चेक अप कराने जाता हूँ। तीनों बार 100% कैंसर मुक्त का प्रमाण देते हैं।

नाज़िर अली
9.12.96

(सन्दर्भ-१६५)

४.११.६५ को बोन स्कैन की रिपोर्ट देखकर पी. जी. आई. के चिकित्सक भी बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा कि बोन स्कैन नार्मल है और अब रोग प्रायः समाप्त है। अस्थियों में मेटेस्टेसिस नहीं पाई गयी थी। *(सन्दर्भ-१६३)*

एस. जी. पी. जी. आई. की दि. २१.६.६६ की होल बोडी स्कैन रिपोर्ट भी ठीक उसी प्रकार की आई थी-*(सन्दर्भ-१६४)*

अब तो श्री नाजिर अली की जाँच भी मात्र एक औपचारिकता भर ही रह गई है। वह अपने को एकदम सामान्य महसूस करते हैं तथा डाक्टर भी कुछ ऐसा ही कहते

दोनों हाथों की उंगलियों में सूजन दर्द। मुट्ठी बाहें फटती हैं, झुनझुनाती हैं। गर्दन के पिछले हिस्से में दर्द एवं सूजन पैरों में भी सूजन एवं दर्द। पैर भी फटते हैं। नाजिर अली 18/6/97

(सन्दर्भ-१९६)

हैं। अप्रैल १९९५ से ही वह पूर्णतया 'सर्वपिष्टी' पर निर्भर रहे तथा अन्य किसी दवा की एक खूराक भी नहीं ली। *(सन्दर्भ-१९५)*

श्री नाजिर अली अब यात्राएँ कर लेते हैं, काम-काज देखते हैं। एक समस्या है, पूरे शरीर में स्थापित फुलावट। जोड़ों को

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW
DEPARTMENT OF NUCLEAR MEDICINE

NAME: Nazir Ali 55/M C.R.No. 136643/94

N.M. No. 1205/94 2.7.97

NAME OF THE STUDY/THERAPY: Bone scan

REPORT

Bone scan done in multiple planar views three hours after IV 99m Tc MDP injection.

IMPRESSION:

1— No scintigraphic features of bony metastasis.

2— Marked improvement in comparision to 10.6.94 & 13.8.94 (~~positive~~ bone scans), Previous bone scan on 4.11.95 and 21.6.96 also revealed improvement.

(सन्दर्भ-१९७)

मोड़ने, मुट्ठी बाँधने आदि में कठिनाई है।(सन्दर्भ- १९६) इन समस्याओं को अन्य चिकित्सा की आवश्यकता है। 'सर्वपिष्टी' का प्रभाव-क्षेत्र है कैन्सर, जिससे सम्बन्धित उत्पातों से वे पूर्णतः मुक्त हैं।

एस. जी. पी. जी. आई. ने दिनांक ०२.०७.९७ को पूरे शरीर का बोन स्कैन करके देखा। अब अस्थियों में कैन्सर का कोई लक्षण नहीं है। *(सन्दर्भ-१९७)*

श्री नाजिर अली को सूजन और दर्दवाली समस्या बरकरार है। उन्हें उसकी चिकित्सा करा लेने का सुझाव दिया गया है। ☐

प्रौस्टैट का कैन्सर (CA. PROSTATE)

श्री नारायण चन्द्र भट्टाचार्य, ७५ वर्ष
१२, पंचानन तल्ला
पो.- बाली, जि. हाबड़ा (प. बंगाल)

जाँच और पूर्व चिकित्सा : तुषारकान्त मैत्रा पैथ लेबोरेट्री, आर. नं. ७८७४/९४ दिनांक ७-१-९५, 'माडरेटली डिफरेंशिएटेड एडेनो कार्सिनोमा'। *(सन्दर्भ-१९८)*

चिकित्सा : डॉ. दीपक कुमार मुखर्जी द्वारा ऑपरेशन।

TUSHAR K. MAITRA
BSc. MBBS. DGO (Cal.)

PATH LABORATORY
4. BISHOP LEFROY ROAD. CALCUTTA-700 020

Ref. No. 7874/94
07.1.95

MR N C Bhattacharjee
DR D K Mukherjee

Report of surgical pathology:
Final diagnosis:
Moderately differentiated adenocarcinoma

(सन्दर्भ-१९८)

रोग का इतिहास : पेशाब-संबन्धी परेशानियों के संदर्भ में जाँच हुई तो प्रोस्टैट ग्लैण्ड बढ़ी हुई पायी गयी। डॉ. मुखर्जी ने रोग की नियति भाँपकर ऑपरेशन किया। बायाप्सी से प्रोस्टैट कैन्सर का पता चला।

सीधे 'सर्वपिष्टी' तक : डी. एस. रिसर्च सेण्टर की चर्चा सुनी हुई थी। रोगी ने स्वयं निर्णय लिया कि वह एलोपैथिक चिकित्सा नहीं लेगा और 'सर्वपिष्टी' के सहारे चलेगा।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २४-१-९५।

'सर्वपिष्टी' शुरू करने से पूर्व जो भी शारीरिक उपसर्ग थे, वे वृद्धावस्था-जनित थे। नींद कम और मुश्किल से आती थी और पेशाब कुछ अधिक बार होता था। पोषक उर्जा

(सन्दर्भ-२०२)

कुछ रिपोर्ट्स :

१२-५-६५ : "अब तक कोई परेशानी नहीं है।" *(सन्दर्भ-१९९)*

६-६-६५ : "पहले की तरह ही हैं। पाचन-तंत्र पूर्ण स्वस्थ नहीं है।"

२६-६-६५ : "पहले की तरह ही। पाचन कुछ कमजोर है।"

२४-८-६५ : "मोटा-मोटी ठीक हैं।"

२७-१०-६५ : "शरीर में किसी प्रकार का कष्ट नहीं। (स्वास्थ्य पूर्ववत)" *(सन्दर्भ-२००)*

२३-२-६६ : "स्वस्थ हैं। कोई परेशानी नहीं हैं।"

३-८-६६ : "स्वस्थ हैं। खाना-पीना सब ठीक है। कोई समस्या नहीं हैं।" *(सन्दर्भ-२०१)*

७-९-६६ : "स्वस्थ हैं। कोई नया उपसर्ग नहीं देखा गया।"

रिपोर्ट दिनांक ५-७-६७ : (बंगला-पत्र का हिन्दी अनुवाद) : "नियमित-औषधि खाकर श्री भट्टाचार्य आज भी पूरी तरह स्वस्थ हैं। खाना-पीना ठीक है। घूमना-फिरना भी ठीक है। स्वास्थ्य भी कुल मिलाकर ठीक चल रहा है। केवल पेशाब नियंत्रित नहीं है।" *(सन्दर्भ-२०२)।*

जो दवा किसी रोग का प्रतिषेध नहीं कर सकती, वह उस रोग का निराकरण भी नहीं कर सकती। प्रतिषेध और रोग-चिकित्सा एक ही सड़क के दो पड़ाव कहे जा सकते हैं। जीवित शरीर की स्वाभाविक प्रतिरक्षा पर जिन पदार्थों का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, उनसे न तो प्रतिषेध की योग्यता प्राप्त होगी, न रोग-चिकित्सा की।

३८

प्रोस्टैट का कैन्सर
(मूत्र की थैली तक फैला हुआ)
(CA. PROSTATE)
WITH INFILTRATION IN TO
URINARY BLADDER

श्री गुलाब चन्द्र दूबे, ७५ वर्ष
ग्रा. धरमपुर, पो. राधास्वामी धाम
जि. भदोही

जाँच : हेरिटेज हॉस्पीटल्स, वाराणसी ने रेलवे अस्पताल के डॉ. पी. सी. जोशी के रेफरेन्स पर दिनांक ८-४-९५ को सी. टी. स्कैन जाँच की। पाया गया—''कैन्सर प्रोस्टैट विद इनफिल्ट्रेशन इन टू युरिनरी ब्लैडर।''*(सन्दर्भ-२०३)*

RADIOLOGY REPORT

NAME: G. C. DUBEY AGE: 73 YRS. SEX: MALE
REF.BY : DR.P.C.JOSHI (RAILWAY HOSPITAL) DATE: 08.04.95
INVESTIGATION DONE : C.T. SCAN PELVIS

OPINION : ENLARGED PROSTATE WITH NONHOMOGENOUS PARENCHYMA AND HIGHLY THICKENED AND IRREGULAR URINARY BLADDER WALLS.BASE).
C.T.MORPHOLOGY SUGGESTIVE OF CA PROSTATE WITH INFILTRATION INTO URINARY BLADDER.

DR.(MRS)ARCHANA DIKSHIT
(RADIOLOGIST)

(सन्दर्भ-२०३)

संख्या J0298 भा० रे० कैं० सं० एवं अ० कें० I.R.C.I.&R.C.
Number

फालोअप कार्ड
FOLLOW UP CARD

Indian Railways Cancer Institute
&
Research Centre, Varanasi

नाम G. C. 73. M.
Name

निदान Ca Prostate
Diagnosis

(सन्दर्भ-२०४)

चिकित्सा : इण्डियन रेलवे कैन्सर इन्स्टीट्यूट, वाराणसी (संख्या जे. ओ. २९८) आर. टी. नं. १६५/६५, नंबर ऑफ फ्रैक्शन्स २७, रिजन ऑफ ट्रीटमेण्ट प्रोस्टैट, दिनांक ६-५-६५ से १६-६-६५ तक)। रोगी की उम्र और वृद्धावस्था के मद्देनजर न तो किमोथेरापी चलायी जा सकती थी, न पारम्परिक चिकित्सा के अन्य उपाय उपयोगी हो सकते थे। *(सन्दर्भ-२०४)*

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक १६-८-६५।

रोगी की उस समय की स्वास्थ्य दशा : २७ दिनों तक चलकर रेडियेशन दिनांक १६-६-६५ को पूरा हुआ था, किन्तु अभी तक पेशाब की जलन में आराम नहीं मिला था और पेशाब कष्ट के साथ रुक-रुककर ही हो रहा था। दिनांक १८-६-६५ को तो पेशाब एकबारगी रुक गया था, तब अन्यान्य चिकित्सा उपायों द्वारा पेशाब उतारा जा सका था।

ये तो शारीरिक कष्ट और उपद्रव थे। मूल चिन्ता थी कि प्रोस्टैट का कैन्सर अति शीघ्र ही वृद्ध शरीर की अस्थियों में उतर पड़ेगा। इस बात से विद्वान रोगी भी परिचित थे और उनके संबन्धी भी। शीघ्रातिशीघ्र 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर देने का निर्णय इन्हीं परिस्थितियों में लिया गया था।

गुलाबचन्द के
पिछले ४ दिन से पेट की हालत २५% ठीक है
पेशाब के जलन व बार-बार जाने में भी
काफी राहत लग रहा है / इसका दो
सप्ताह की दवा देने का कष्ट करें।
रजनीकान्त ...
१३. ६. ९५

(सन्दर्भ-२०५)

गुलाबचन्द दूबे

स्वास्थ्य काफी अच्छा चल रहा है
एक सप्ताह की दवा चाहिए।

रजनीकान्त दूबे
26-12-65
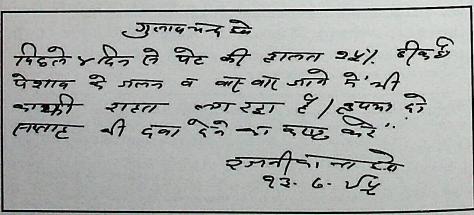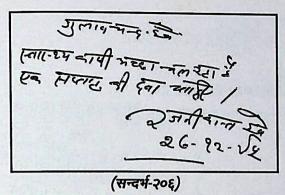
(सन्दर्भ-२०६)

प्रगति-विवरण

१३-७-६५ की रिपोर्ट : "पेट की हालत में २५ प्रतिशत सुधार है। बार-बार पेशाब और पेशाब की हाजत बने रहने तथा पेशाब में जलन होने के कष्टों से भी काफी राहत मिली है।" *(सन्दर्भ-२०५)*

१२-१२-६५ की रिपोर्ट : "पेट की पाचन-संबन्धी गड़बड़ी के अतिरिक्त शेष सबकुछ ठीक और सामान्य है।"

२७-१२-६५ की रिपोर्ट : "स्वास्थ्य काफी अच्छा चल रहा है। रोगी उत्साहपूर्वक अपने दायित्वों का निर्वाह करने लगे हैं।" *(सन्दर्भ-२०६)*

१२-३-६६ की रिपोर्ट : श्री दूबे ने स्वयं लिखकर सूचना दी "आपकी औषधि के प्रभाव से अब मैं रोगमुक्त हूँ। मेरा स्वास्थ्य भी उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर है। मैं अधिवक्ता हूँ, जिसका कार्य विशेष श्रमशील है। अपना कार्य सुचारु रूप से कर रहा हूँ। यह उचित स्वास्थ्य का द्योतक है। मूत्र की जलन (उतनी तीव्र नहीं) तथा अनियमितता को मैं कैन्सर इन्स्टीट्यूट के रेडियेशन का प्रभाव (दुष्प्रभाव) मानता हूँ। वह भी उत्तरोत्तर ठीक हो रहा है। शारीरिक क्षमता भी है। आयु के ७५ वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। वृद्धावस्था स्वयं एक रोग है, जो प्राकृतिक है। *(सन्दर्भ- २०७)*

(सन्दर्भ-२०७)

अन्तिम जाँच में पी. एस. ए. ०.४४ आया था।

३१

युरिनरी ब्लैडर का कैन्सर
(TRANSITIONAL CELL CARCINOMA GRADE II)

डॉ० अकील रहमत आज़मी

उम्र : ५६ वर्ष.

पताः निशान-ए-रहमत

एटलस टैंक, आजमगढ़ (उ०प्र०)

12. 2. 95

Sanjay Gandhi Post Graduate
Institute of Medical Sciences
P. B. 375, RAEBARELI ROAD, LUCKNOW

Rx

A.R.A
1549222.55
J-DR. M. Bhanda

CA bladder

21 F

CPE done

Bladder capacity

Papillary

lateral

Multiple

lateral wall

12-2-95

(सन्दर्भ-२०८)

DEPARTMENT OF PATHOLOGY

S.G.P.G.I.M.S, LUCKNOW

NAME :A.R AZMI AGE:56yrs. SEX:M

HOSPITAL :S.G.P.G.I.M.S.
REGISTRATION NO:154922 WARD:OPD. BED:

REFERRED BY :Dr.M.BHANDARI PAYMENT:C II
SPECIMEN :URINE

RECEIVED ON :17/02/95 LAB NO.:Cy 266/95

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

MICROSCOPIC:

DIAGNOSIS :POSITIVE FOR MALIGNANT CELLS.(SO/TRANSITIONAL CELL CARCI NOMA)

T 7X100

M 91203

(N. KRISHNANI)
PATHOLOGIST.

(सन्दर्भ-२०६)

पूर्व जाँच व चिकित्सा : एस. जी. पी. जी. आई. एम. एस., लखनऊ (रजि. १५४९२२/९५. दिनांक १२/२/९५, सी ए ब्लैडर), *(सन्दर्भ-२०८)* दिनांक १७.०२.९५ लैब नं सी वाई २६६/९५, पाजिटिव फार मेलिग्नेण्ट सेल-ट्रांजिशनल सेल कार्सिनोमा, और लैब नं ४६७/९५, पेपिलरी ट्रान्जिसनल सेल कार्सिनोमा, ग्रेड-II।

DEPARTMENT OF PATHOLOGY

S.G.P.G.I.M.S, LUCKNOW

NAME :A.R.AZAMI AGE:55yrs SEX:M

HOSPITAL REGISTRATION NO:154722 :S.G.P.G.I.M.S. WARD:OPD BED:

REFERRED BY :Dr.N.BHANDARI PAYMENT:[illegible]

SPECIMEN :BLADDER BX.

RECEIVED ON :17/02/95 LAB NO.: 467/95

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

GROSS:
Two small tissue pieces received. Both embedded.

MICROSCOPIC:
Sections show structure of a tumour comprising of papillary elements with a central fibrovascular core surrounded by 10-12 layer of cells with disturbed maturation and haphazard arangement of nuclei throughout the thickness of epithelium with increased nucleocytoplasmic ratio and hyperchromatic nujclei with coarse chromatin pattern. Nucleoli are seen in occasional cells. Muscle is not included in the biopsy.

DIAGNOSIS :PAPILLARY TRANSITIONAL CELL CARCINOMA.
Grade II

T :74310

P :1340

M :81303

(RAKESH PANDEY)
PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-२१०)

रोग का इतिहास :

पेशाब में खून जाता था और पेशाब के गुजरने में तकलीफ होती थी। १९९१ में जाँच से पता चला था कि पेशाब की थैली में दीवार से लगा हुआ एक पिण्ड है। जनवरी १९९५ के अन्तिम सप्ताह और फरवरी के दूसरे हफ्ते में भी खून आया। एस. जी. पी. जी. आई. के डॉ. भण्डारी ने व्यापक जाँच की और दूरबीन द्वारा सर्जरी की राय दी। (एस. जी. पी. आई. एस. एस.-पैथालोजी रिपोर्ट लैब नं. सी. आई. २९९/९५ तथा लैब नं. ४६७/९५, दि. १७/०२/९५)। *(सन्दर्भ-२०९)* एक रिपोर्ट आयी 'पाजीटिव फार मेलिग्नेण्ट सेल्स' और दूसरी रिपोर्ट में आया, 'पेपिलरी ट्रान्सिनल सेल कार्सिनोमा, ग्रेड-२' *(सन्दर्भ-२१०)*।

रोगी ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया। सेण्टर से भी परामर्श मिला कि वे सर्जरी करा लें और उसके बाद 'सर्वपिष्टी' का सेवन करें। ऐसा ही किया गया। २५/०४/९५ को ऑपरेशन हो गया।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक-१६/०५/६५.

चार सप्ताह बाद १६/०६/६५ की रिपोर्ट : "मैंने २५ अप्रैल (१६६५) को संजय गाँधी लखनऊ में टी. यू. आर. बी. टी. कराया। उन्होंने तीन महीने बाद चेक-अप के लिए बुलाया है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर की दवा १६ मई से खाना शुरू किया, कुछ ताकत महसूस कर रहा हूँ।" *(सन्दर्भ-२११)*

१४/०७/६५ को भी उसी प्रकार की प्रगति रिपोर्ट की गयी।

०३/०८/६५ को एस. जी. पी. जी. आई. एम. एस. में चेक-अप (व्यापक रूप से) हुआ। रिपोर्ट आयी :

Dr A. R. Azam
Allahabad Bank
Azamgarh
Age 68

मैंने 25 April को संजय गांधी लखनऊ में T.U.R.B.T कराया। उसके बाद उन्होंने तीन महीने बाद checkup के लिये बुलाया है। D.S. Research center की दवा 16 मई से खाना शुरू किया, कुछ ताकत महसूस कर रहा हूं।

[illegible]
16.6.95

(सन्दर्भ-२११)

A. R. Azam
S.G.P.G.I.M.S   3.8.95

Gross
Single very small tissue piece whole embedded.
Microscopic
Bladder biopsy shows hypertrophied lining epithelium and mild focal dysplasia. Subepithelial zone is unremarkable. There is no evidence of malignancy.

A. R. Azam
Check CPE 30% [illegible]
unhealthy area over left lateral wall. Biopsy taken
Impr — No recurrence
No obvious growth

(सन्दर्भ-२१२)

अ. मेलिग्नैन्सी का कोई सबूत नहीं है।

ब. रेकरैन्स नहीं है।

स. कोई ग्रोथ नहीं है।

(सन्दर्भ-२१२)

चौबीस सप्ताहों तक सर्वपिष्टी चलायी गई। पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगे। भूख, नींद, स्फूर्ति और शक्ति का सुन्दर विकास हो गया। सक्रिय और कर्मठ चिकित्सक का जीवन व्यतीत करने लगे।

Dr. AQIL RAHMAT AZMI
HEAD
Department of Physical Education
Shibli National P. G. College Azamgarh
&
Founder President (Bazm gango Jaman)
Azamgarh - 276001 (U.P.)

Resi :
NISHAN-E-RAHMAT
ATLAS TANK
Azamgarh (U. P.)
Phone : 05462/25924
28043
Date 3.4.2000

आदरणीय
पत्र के लिये धन्यवाद।
आप अपने मरीजों का जितना
खयाल रखते हैं उसकी दूसरी
मिसाल मुश्किल से मिलेगी
मैं ईश्वर की कृपा से
बिल्कुल स्वस्थ हूँ।
मैं आपकी और आपके संस्थान
को दिल से कद्र करता हूँ और
आशा करता हूँ कि आप भविष्य में
अपनी सेवाओं द्वारा मानव समाज
को रोशनी बख्शते रहेंगे
मैं आपकी खिदमत में अपना
सलाम पेश करता हूँ
आपके आयोजन को
शुभकामनाएं
आपका
डा. ए. आर. आजमी

(सन्दर्भ-२१३)

श्री आजमी समय -समय पर केन्द्र को पत्र द्वारा बताते रहे कि उन्हें हर जाँच में पूर्णतः रोगमुक्त और स्वस्थ पाया गया है। दवा बन्द करने के बाद से डॉ. आज़मी ने कभी भी अस्वस्थता और असुविधा की रिपोर्ट नहीं की। उतने ही तरोताजा, स्वस्थ और पूरी तरह कैन्सर मुक्त हैं।

५ वर्ष बाद दि. ०३/०४/२००० को उन्होंने केन्द्र को पत्र लिखा, ''आदरणीय महोदय, पत्र के लिए धन्यवाद। आप अपने मरीजों का जितना खयाल रखते हैं, उसकी दूसरी मिसाल मुश्किल से मिलेगी। मैं ईश्वर की कृपा से बिल्कुल स्वस्थ हूँ। मैं आपकी और आपके संस्थान की दिल से कद्र करता हूँ, और आशा करता हूँ कि आप भविष्य में अपनी सेवाओं द्वारा मानव समाज को रोशनी बख्शते रहेंगे। मैं आपकी खिद्मत में अपना सलाम पेश करता हूँ। आपका : डॉ. ए. आर. आजमी।'' *(सन्दर्भ-२१३)*

४०

मल्टिपल मायलोमा
(MALTIPAL MYLOMA)

श्री अवधेश कुमार उपाध्याय
उम्र ६५ वर्ष
४३, एन एम पी कालोनी
शिवपुर, वाराणसी-२२१००३

अद्भुत है 'सर्वपिष्टी' : ***मल्टिपल मायलोमा जैसे खतरनाक कैन्सर से ग्रस्त श्री उपाध्याय लगभग आठ महीने 'सर्वपिष्टी' का सेवन करते रहे। इस दौरान न केवल वे कैन्सर से मुक्त हुए बल्कि पोषक ऊर्जा के विस्तृत प्रभाव के साक्षी भी बने।***

केन्द्र का मानना रहा है कि 'सर्वपिष्टी' में ऐसी पोषक ऊर्जा होती है जिससे किसी को भी नुकसान होने का प्रश्न ही नहीं उठता बल्कि कुछ न कुछ लाभ ही होता है। कैन्सर के लिए श्री उपाध्याय ने इस औषधि का सेवन किया पर उन्हें कई आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त हो गये। श्री उपाध्याय के पुत्र श्री एस के उपाध्याय ने दिनांक २६.०६.२००१ को पत्र लिखा "....सर्वपिष्टी के प्रयोग के बाद से मेरे पिता जी के स्वास्थ्य में तथा शरीर में कुछ अति आश्चर्यजनक परिवर्तन

प्रेषक
एस. के उपाध्याय
मकान नं. ४३, एन.एम.पी.कालोनी
शिवपुर वाराणसी

Add. Report /29.6.2001

सर्वपिष्टी के प्रयोग के बाद से मेरे पिताजी के स्वास्थ्य मे तथा शरीर मे कुछ अति आश्चर्यजनक परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है जैसे कि नये बाल्ले का आना जो Chemotherapy के दौरान चले गए थे तथा उन्हे Cancer होने के पूर्व Stomach disorder की भी fortnightly or monthly Problem होती थी जो अब Rare है। अद्भुत है यह सर्वपिष्टी

S. K. Upadhyay

(सन्दर्भ-२१४)

U.G.C. ADVANCED IMMUNODIAGNOSTIC TRAINING & RESEARCH CENTRE
INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
BANARAS HINDU UNIVERSITY
VARANASI-221005

IMMUNOLOGY REPORT

Report No. 36772/98. Date of Receipt :
Patients Name : Mr. [illegible] Age : [illegible] Sex : M D419963
Ref. by Dr. : R. J. Singh O.P.D./Ward [illegible] Bed No. Private [illegible]
Specimens : Blood Test Required : Immuno Electrophoresis
Prov. diagnosis

Test :—
1. R. A. tests :—
2. C. R. P. test :—
3. A. S. O. test :—
4. A. F. P. test :—
5. HBsAg :—
6. L. E. Cell phenomenon :—
7. Anti-nuclear antibody :—
8. Anti D. N. A. antibody :—

Serum Immunoglobulins
1. IgG(mg%) :—
2. IgA(mg%) :—
3. IgM(mg%) :—
4. IgD(mg%) :—
5. IgE(mg%) :—
6. Serum Immune complex

Electrophoresis
1. Paper Electrophoresis : (Serum/other fluid).
Albumin is reduced.
There is mild increase in
α2 & β globulin
'M' peak is present
in γ globulin region
Features are highly in favour of multiple myeloma
Please send 24 hrs. urine & clinical detail of
the patient

Miscellaneous tests

Urine tests
1. Albumin :
2. Bence Jone's protein :
(a) Heat test :
(b) Chemical test :

Date of Reporting 26/12/98

Signature

(सन्दर्भ-२१५)

परिलक्षित हो रहे हैं। जैसे कि नये बालों का आना जो किमोथेरापी के दौरान चले गए थे तथा उन्हें कैन्सर होने के पूर्व स्टोमक डिसआर्डर (पेट खराब रहने) की भी फोर्टनाइटली या मन्थली (पन्द्रह दिनों या महीने में) प्राब्लम होती थी जो अब रेयर (शायद ही कभी) है। अद्‌भुत है यह सर्वपिष्टी''।(सन्दर्भ-२१४)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : इन्स्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज, बनारस हिन्दू

NS/K:MO/120

रेडियेशन समरी कार्ड
RADIATION SUMMARY CARD

पंजी सं. A1005
Regd. No.

आर० टी० नं०
R. T. No. 003/99

नाम SRI A. K. UPADHAYA
Name

आयु Age 65
लिंग Sex M

अभिभावक का नाम S/o (LATE) RAMJI UPADHAYA
Guardian Name

पता PLOT NO. 43, NAGAR MAHAPALIKA COLONY, SHIVPUR, VARANASI
Address

निदान
Diagnosis
MULTIPAL MYELOMA

Tumour Dose 30 Gy.

No. of Fractions: 10 #

Region of treatment: THORACIC SPINE < UPPER / LOWER

Field Size: (9 x 6) & (17 x 6) Cms

Tr. Technician:

Started on: 04/1/99

Completed on: 16/1/99

Comments: —.

Signature of Radiotherapist
(DR. T. LAXMI)

(सन्दर्भ-२१६)

विश्वविद्यालय (रिपोर्ट नं. डी ४१६६६३), रैनबैक्सी लिमिटेड (एसेसन नं. ६०१०१६५३, दिनांक १३.०१.६६)

श्री उपाध्याय के लिए सर्वपिष्टी प्राप्त करने जब २६.०७.६६ को उनके पुत्र श्री एस के उपाध्याय केन्द्र पर आये तो उन्होंने लिखकर अपने पिताजी की समस्या के बारे में बताया "श्री ए के उपाध्याय....नवम्बर १६६८ से निरन्तर बीमार चल रहे हैं। प्रारम्भ में उन्हें बुखार एवं श्वाँस की तकलीफ का अनुभव हुआ, किन्तु धीरे-धीरे यह रोग दर्द के रूप में परेशान करने लगा। करीब पूरा नवम्बर व दिसम्बर भर यह पीठ की दर्द से परेशान रहे तथा दिसम्बर में जब रीढ़ की (Spinal Chord) हड्डी का एक्स-रे लिया गया तब यह ज्ञान हुआ कि हड्डियाँ कोलैप्स की स्थिति तक डिस्टर्ब हुयी हैं तथा बी एच यू में टेस्ट कराने पर यह निकला कि उन्हें 'मल्टिपल मायलोमा' है *(सन्दर्भ-२१६)* जिसका कन्फर्मेशन कराया गया तथा रैनबैक्सी लैब, बाम्बे ने इसी बीमारी के होने को सत्य ठहराया *(सन्दर्भ-२१७)* । अब इनका इलाज कैन्सर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, लहरतारा में चल रहा है। डॉ. टी लक्ष्मी, आनकोलाजिस्ट इलाज कर रही हैं। आज तक उन्हें किमोथेरापी की छः खूराकें (जनवरी से जुलाई तक) दी गयी हैं। इसके अतिरिक्त इन्हें

BHOLA PATHOLOGY
73, JLN COMMERCIAL COMPLEX
73, NEHRU MKT. ENGLISHIA LN
VARANASI 221002
F/4340700
[illegible] L.LOXMI

Specialty Ranbaxy Limited

UPADHYAYA A.K.

ACCESSION NO	AGE	SEX	BIRTH DATE	PATIENT ID	COLLECTION DATE	LOG IN DATE	REPORT DATE
90101953	65	M			07/01/00	08/01/00	13/01/00

CLINICAL INFORMATION

PAGE 1

REPORT STATUS FINAL

TEST	IN RANGE	OUT OF RANGE		REFERENCE RANGE	UNITS
PROTEIN, TOTAL, SERUM					
TOTAL PROTEIN		9.6	H	6.3-8.3	GM/DL
ALBUMIN/GLOBULIN RATIO		0.5	L	1.0-2.1	
PROTEIN FRACTIONS					
ALBUMIN		3.39	L	3.6-5.2	GM/DL
ALPHA 1	0.26			0.15-0.40	GM/DL
ALPHA 2		1.13	H	0.50-1.00	GM/DL
BETA	1.02			0.60-1.20	GM/DL
GAMMA		3.79	H	0.60-1.60	GM/DL
MYELOMA BAND		DETECTED		NOT DETECTED	

PROTEIN FRACTIONS
SERUM PROTEIN ELECTROPHORESIS SEPARATES THE PROTEINS INTO FIVE ZONES - ALBUMIN, ALPHA-1, ALPHA-2, BETA AND GAMMA GLOBULINS. SERUM PROTEIN ELECTROPHORESIS IS USED TO SCREEN FOR VARIOUS DISEASE CONDITIONS. ALBUMIN CONCENTRATION IS DIMINISHED IN DISEASES AFFECTING VASCULAR PERMEABILITY. THE ALPHA-1 BAND IS MADE UP OF ALPHA-1 LIPOPROTEIN, ALPHA-1 ANTITRYPSIN (DEFICIENCY IS ASSOCIATED WITH JUVENILE PULMONARY EMPHYSEMA) AND ALPHA-1 ACID GLYCOPROTEIN (AN ACUTE PHASE REACTANT). THE PRINCIPAL PROTEINS OF THE ALPHA-2 BAND ARE ALPHA-2 MACROGLOBULIN, HAPTOGLOBIN AND ALPHA-2 LIPOPROTEIN. ALPHA-2 MACROGLOBULIN IS ELEVATED IN NEPHROTIC SYNDROME AND IN ACUTE INFLAMMATION. THE BETA FRACTION CONSISTS OF BETA-LIPOPROTEIN, TRANSFERRIN, PLASMINOGEN AND COMPLEMENT COMPONENTS. THE GAMMA REGIONS CONSISTS OF THE IMMUNOGLOBULINS AND PROTEIN ELECTROPHORESIS IS A GOOD SCREENING TOOL FOR MULTIPLE MYELOMA IN WHICH ONE OF THE IMMUNOGLOBULINS SHOWS A MONOCLONAL INCREASE MANIFESTING AS A 'M BAND'

Dr. RAJIV BORDAWEKAR, MD
Pathologist

(सन्दर्भ-२१७)

दस दिनों तक रेडियेशन भी दिया गया है। करीब छः माह से इन्हें **(Roferan A)** का इन्जेक्शन हफ्ते में तीन बार दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इन्हें चार माह तक **(Dronate os)** प्रतिदिन दो बार दी गयी है।

Name of the Patient - Sri A.K. Upadhyay, M/65
Address - Flat No. 43, First-floor
N.M.P colony, Shivpur
Varanasi-221003 (UP)
Ph. No. 382512 Dated 13-09-99

रोगी की स्थिति मे सुधार के कुछ लक्षण दिखाइ दे रहे हैं यद्यपि it is too early to say anything किन्तु सुधार तो है। आज 'सर्वपिष्टि' का सेवन करते हुए लगभग 7 सप्ताह हो चुके है अत: इसका प्रभाव अब परलक्षित होने लगा है। किन्तु वर्तमान मे कुछ क्षेत्र है जहां पर कोइ विशेष प्रभाव नही दिख रहा है।

1. Weakness - अभी भी बना हुआ है पहले से कुछ कम जरूर हुआ है किन्तु बहुत मामूली
2. Freshness - इस क्षेत्र मे सुधार गति बहुत धीमी है तथा dulness बनी हुयी है
3. Asthama - श्वास की तकलीफ पर अभी दवा ने कोई विशेष प्रभाव नही डाला है, जबकि

(सन्दर्भ-२१८)

वर्तमान में श्री उपाध्याय का स्वास्थ्य बहुत खराब है तथा उन्हें निम्नलिखित समस्यायें हैं।
(१) भूख न लगना तथा भोजन देखकर जी मिचलाता है। (२) पेट हमेशा खराब रहता है तथा पेट में गैस भरा रहता है। (३) जरा सा चलने फिरने पर श्वास की तकलीफ बढ़ जाती है। (४) बहुत ज्यादा कमजोरी है तथा बिना किसी के मदद के चलना फिरना मुश्किल है। (५) एक आँख में **(Cataract)** बहुत बढ़ गया है। (६) पूरे शरीर में सूजन है तथा पेट निकल गया है। (७) कभी-कभी बुखार आ जाता है तथा **(Chest Congestion)** भी हो जाता है।....स्वास्थ्य की समस्या जनवरी ६६ से निरन्तर बनी

फ्लैट नं० 43, न॰ भ॰ पा॰ कालोनी
शिवपुर, वाराणसी — दिनांक 27.9.97.

श्री एस. के. उपाध्याय के स्वास्थ्य मे सुधार के लक्षण दृष्टीगोचर हो रहे हैं। आपके ही दवा के सुफल से इस बार किमोथैरेपी (9th session) मे विशेष कष्ट नही हुआ. सभी स्थिति पूर्व की भाँति सामान्य बनी हुयी हैं। स्वास्थ्य कुल मिला कर स्थिर बना हुआ हैं एवं कोई नया कष्ट नही हैं। फिर भूख का ना लगना, कमजोरी लगना, चलने पर पाँव का लड़खड़ाना, झिनझिनी आना, थोड़ा कफ एवं खाँसी तथा श्वास की तकलीफ (Asthma) अपना प्रभाव बनाए हुए हैं तथा इस विषय मे आपकी मदद वांछनिय है। पेट मे गैस की तकलीफ व कभी-2 डायरिया का हो जाना जरूर हो जाता हैं।

कृपया सम्भव हो तो Diet, Exercise एवं अन्य विशेषयो पर अपना 'Expert Comment' प्रदान करें।

कृपया दो हफ्ते की 'सर्वपिष्टी' व अन्य दवाएं देने का कष्ट करें।

भवदीय
S.K. Upadhyaya
[illegible]

(सन्दर्भ-२१६)

हुई है तथा किमोथेरापी की दवाओं के साइड एफेक्ट के फलस्वरूप **Gastric Trouble, Dysentry, Loss of appetite** आदि डेवलप हो गया है।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : २६.०७.९६ से प्रारम्भ की गयी।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ करने के बाद किमोथेरापी के दुष्प्रभावों में सुधार दिखायी देने में समय लगा। १३.०६.९६ को केन्द्र को रिपोर्ट दी गयी "रोगी की स्थिति में सुधार के कुछ

लक्षण दिखायी दे रहे हैं...''। *(सन्दर्भ-२१८)* दिनांक २७.०६.६६ के पत्र में उनके पुत्र ने लिखा ''आपके ही दवा के सुफल से इस बार किमोथेरापी में विशेष कष्ट नहीं हुआ...''। *(सन्दर्भ-२१६)*

दिनांक २६.०६.२००१ को श्री उपाध्याय ने पत्र में सूचना दी ''...स्वास्थ्य लगभग सामान्य है। भोजन रुचिपूर्वक ले रहा हूँ। पाचन क्रिया भी लगभग सामान्य है...''। दिनांक ०२.०८.०१ के पत्र में श्री उपाध्याय ने पत्र में लिखा, ''...मेरा स्वास्थ्य लगभग ठीक है। नियमित सायंकाल टहलता हूँ। चलने-फिरने में कोई कठिनाई नहीं होती है। पाचन क्रिया लगभग ठीक है। भूख लगती है और इच्छानुसार भोजन भी कर रहा हूँ...''। *(सन्दर्भ-२२०)*

वाराणसी
२.८.०१

आदरणीय महोदय

निवेदन है कि मैं दो वर्षों से आपद्वारा निर्मित सर्वपिष्टि एवं सहयोगी दवाओं का प्रयोग कर रहा हूँ।
मेरा स्वास्थ्य लगभग ठीक है। नियमित सायंकाल टहलता हूँ। चलने फिरने में कोई कठिनाई नहीं होती। पाचन क्रिया लगभग ठीक है। भूख लगती है और इच्छानुसार भोजन भी कर रहा हूँ।
प्रोस्टेट कैंसर पहले से ठीक है।
खाँसी गया कफ कुछ हो जाता है
इसहेतु दवा देवें जिससे कफ ठीक हो जाय।

कृपा कर चार [illegible] (दवा) सर्वपिष्टि देने की कृपा करेंगे।

Comments:-
During the last visit I was told that now he has to take this medicine alternate day. Please throw some light on it also.
[signature]

भवदीय
इ. बी. उपाध्याय
43 एन. एम. पी कॉलोनी, शिवपुर,
वाराणसी.

(सन्दर्भ-२२०)

आस्टियोजेनिक सारकोमा
(दाहिनी टिकिया)
(SARCOMA OSTEOGENIC)

मास्टर प्रतीक बंसल, १० वर्ष
दिल्ली

पूर्व जाँच एवं चिकित्सा :

(१) बम्बई हॉस्पीटल एण्ड मेडिकल रिसर्च सेण्टर (ओ. ६८७६६७, दिनांक २३.१.६५), आस्टियोजेनिक सारकोमा। *(सन्दर्भ-२२१)*

(२) टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल, बम्बई, पैथोलोजी नं. बी. जे. २२४८ (बी. जे. १८७६, दिनांक २४.१.६५। हॉस्पीटल केस तथा टाटा मेमोरियल के सर्जन डा. जे. जे. व्यास द्वारा पैर काटे जाने (एमप्युटेशन) की सलाह, दि. ३१.१.६५। "हाई ग्रेड स्पाइरण्डेल सेल सारकोमा इन्वाल्विंग द बोन एण्ड साफ्ट टिश्शू।" *(सन्दर्भ-२२२)*

BOMBAY HOSPITAL
AND
MEDICAL RESEARCH CENTRE
DEPARTMENT OF GENERAL RADIOLOGY

DR. VIMAL SOMESHWAR
M.D., D.M.R., D.M.R.E.
HON. CONS. RADIOLOGIST
& HEAD OF DEPARTMENT

MAST. PRATEEK BANSAL — M / 10
Ref No : RP-9501623 — Date : 23/1/95
C/O :

REPORT

CHEST PA VIEW

IMPRESSION : NORMAL CHEST RADIOGRAPH

REPORT

RIGHT TIBIA FIBULA

IMPRESSION

Findings are suggestive of osteogenic sarcoma.

DR. PRITY RAVI
PRS: PFP 23/1/95 / 11:22

(सन्दर्भ-२२१)

(३) एन. एस. मेडिकल सेण्टर, बम्बई (सी. टी. स्कैन नं. ३८८४) दि. १.२.६५
''मल्टीपल लंग नोड्यूल्स मोस्ट लाइकली मेटास्टैटिक डिपाजिट्स।'' *(सन्दर्भ-२२३)*

डी. एस. रिसर्च सेण्टर कैन्सर-चिकित्सा के ताजा लाभान्वित केसों की जानकारी देने में रुचि नहीं रखता। जब केन्द्र आश्वस्त हो जाता है कि रोगी पूरी तरह कैन्सर-मुक्त है, तब भी अन्तराल के साथ पोषक ऊर्जा की खूराकें देता रहता है। अन्तराल बढ़ता जाता है, खूराकें घटती जाती हैं, तब दवा बन्द कर दी जाती है। जब रेकरैन्स की आशंका नहीं रह जाती तब मन पूरी तरह आश्वस्त हो जाता है।

भारत एक ओर गरीब देश है, तो दूसरी ओर यहाँ के लोग अपने प्रियजनों-परिजनों से इतने जीवन्त रूप में जुड़ने वाले हैं कि वे कई बार ऐसे निर्णय ले लेते है, जिन्हें देखकर कष्ट होता है। बेचैनी में विवेक की डोर कई बार छूट जाती है और भावनात्मक भटकाव कहीं-का-कही खींच ले जाता है।

प्रस्तुत केस में 'सर्वपिष्टी' अभी भी चल रही है। फिर विवरण क्यों दिया जा रहा है ? इसलिये कि यह कैन्सर आस्टियोजेनिक सारकोमा है, जो ज्वालामुखी की तरह विस्फोटित होकर अपने जलते लावा से स्वास्थ्य और शरीर की व्यवस्थाओं को तेजी से ढक लेता है। इस ज्वालामुखी का हारते जाना देखकर भी आपको सुख मिल सकता है।

TATA MEMORIAL HOSPITAL
(TATA MEMORIAL CENTRE)

Phone : 414 6750 (6 Lines) 415364
Telex : 011-73649 TMC IN
Fax : 022-4146937 TMC IN

DR. ERNEST BORGES ROAD.
PAREL, BOMBAY-400 012.

January 31, 1995
BJ 1876

Master Prateek A Bansal aged 10 years consulted me with fungating mass right tibial region. Bone biopsy was done on 24.1.1995 and the histopathology report revealed " High grade spindle cell sarcoma involving the bone and soft tissue." In view of this he is advised to undergo Mid-thigh amputation.

J. J. VYAS,
MS., FACS., SURGEON

(सन्दर्भ-२२२)

जनवरी,६५ में बच्चे के अभिभावकों ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया। उसे बम्बई ले जाकर पाँव कटवा देने की राय दे दी गयी थी। पूरा परिवार एक उभरती

N. M. MEDICAL CENTRE

Leaders in hi-tech diagnosis

MEHTA HOUSE, OPP BHARATIYA VIDYA BHAVAN,
38, PANDITA RAMABAI ROAD, CHOWPATTY,
BOMBAY-400 007.

CT NO : 3884
DATE : 01.02.95
NAME : MAST. PRATIK BANSAL
AGE : 10 YEARS
REF BY : DR. J.J. VYAS

C.T. SCAN OF ABDOMEN/PELVIS

CONCLUSION : Normal study.

C.T.SCAN OF CHEST

CONCLUSION : Multiple lung nodules most likely metastatic deposits.

DR. ANIRUDH KOHLI
M.D.,D.N.B,D.M.R.D

(सन्दर्भ-२२३)

जिन्दगी के पाँव कटवाने की कल्पना से ही विचलित था। बच्चे को भी यह जानकारी हो चुकी थी। वह पाँव काट लेने वाली चिकित्सा से भाग रहा था।

प्रो. त्रिवेदी ने राय दी कि जल्दी-से-जल्दी पाँव निकलवा दिया जाय और बच्चे के प्राण बचाने की कोशिश की जाय। उन्होंने फोन पर बात करके बच्चे को भी समझाया-बुझाया।

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Requisition for Surgical Pathology

Master Bansal

OUT-PATIENT

FILING No.

Case No. BJ 1376 B7

IN PATIENT ROOM No.

Date

Path No 3540BT

Age 10 y Sex Male Nationality Community

Dx (7/2/1951) – Osteosarcoma of soft tissues bone
C. Scan – Pulmonary metastases.
– Pulmonary metastasis.
Ad: Above knee amputation – be done.

(सन्दर्भ-२२४)

सी.टी. स्कैन, अल्ट्रासाउण्ड एवं एक्सरे सैंटर

(Unit of Hisar Medical Diagnostic & Hospitals Ltd.)
Commercial Urban Estate No.1 Red Square Market, Hisar-125001

Date : 3/04/95 Srl.: 2
Name : MST SONU   Age : 10Yr   Sex : M
Ref.by : DR.R.JINDAL   Lab Ref.: 4779

CHEST CT

IMP:- SMALL SATELLITE LESIONS IN BOTH MID ZONES
THE LESIONS ARE MUCH REDUCED IN SIZES AS
COMPARED TO PREVIOUS SCAN DONE ON 1/2/95

/MGR

sd/
DR. RAJINDER MALIK
M.D.
SENIOR CONSULTANT

(सन्दर्भ-२२५)

सारकोमा बढ़कर फेफड़े में पहुँच चुका था। घर वालों ने दृढ़ मन से पाँव कटवा दिया। (सन्दर्भ-२२४)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ :
दिनांक ०४.०३.६५

घाव भर जाने के बाद ४.३.६५ से 'सर्वपिष्टी' शुरू की गई। केवल 'सर्वपिष्टी' ही चली। परिजनों ने उसे किमोथेरापी नहीं दिलायी। बच्चे के स्वास्थ्य में उत्तरोत्तर सुधार आ रहा था। रोग-स्थिति में कोई सुधार आ रहा था या नहीं, इसे जानना आवश्यक था। एक महीने दवा चलने के बाद ३.४.६५ को सी. टी. स्कैन करायी गयी। रिपोर्ट आयी ''१.२.६५ वाले सी. टी. स्कैन से तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि लेजन्स घटकर बहुत छोटे आकार के हो गये हैं।'' परिजनों के मन को आश्वासन मिला। 'सर्वपिष्टी' चलती रही। (सन्दर्भ-२२५)

स्वामी जी Doctor Sahab   Delhi
D.S. Research Centre Varanasi.

[illegible] master Prateek Bansal [illegible]
[illegible] आपकी दवा लेने बाद प्रतीक काफी अच्छी हालत में है।
C.T. Scan [illegible]
[illegible] बीमारी नहीं है बिल्कुल ठीक है
[illegible] C.T. Scan [illegible]

[illegible]
master Prateek Bansal
Sh. Ashok Kumar Bansal.

[illegible] D.S. Research Centre [illegible]

(सन्दर्भ-२२६)

१५.६.६५ को मास्टर प्रतीक के विषय में घर वालों का समाचार मिला, ''आपकी दवा लेने के बाद से मास्टर प्रतीक काफी अच्छी हालत में है। बुखार नहीं है। जब पाँव का ऑपरेशन हुआ था, उस समय वजन ३६ किलोग्राम था, अब ५० किलोग्राम है। हिमोग्लोबिन आठ ग्राम था, अब पन्द्रह ग्राम है। शरीर काफी चुश्त है। खाना-पीना अच्छा है।......अप्रैल में जिसने सी. टी. स्कैन किया था, उसने

SARVODAYA MEDICAL RESEARCH CENTRE PVT. LTD.
C.T. SCAN CENTRE

GD-28, PITAMPURA, DELHI-110 034 TEL. 7229354, 7247087, 7132352, 7135332

NAME MASTER SONU (Partik Bansal) | C.T. NO 15345/95 | DATE 6.11.95
AGE 11YRS. SEX MALE | REF. CONSULTANT DR. PANKAJ ANEJA

CECT THORAX

IMP:- SIGNIFICANT RESOLUTION OF PARENCHYMAL NODULES AS COMPARED TO PREVIOUS CT STUDIES.

PLEASE CORRELATE CLINICALLY.

DR. RAKESH BHATIA M D
CONSULTANT RADIOLOGIST.

(सन्दर्भ-२२७)

कहा था कि फेफड़े में अब कोई रोग नही है। उसको बड़ा आश्चर्य हुआ।

पुनः कि

"पत्र आपका मिला, समाचार जाना। आपने मास्टर प्रतीक बंसल के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी चाही है। ईश्वर की कृपा तो है ही, साथ में आपकी दवा लेने के बाद प्रतीक काफी अच्छी हालत में है। सी. टी. स्कैन करवाये करीब पाँच महीने हो गये हैं, उसके बाद सी.टी. स्कैन नहीं करवाया है। आपकी दवा देने के बाद दिल को इतनी तसल्ली हो गयी है कि अब प्रतीक को कोई बीमारी नहीं है। वह बिल्कुल ठीक है। इसलिए सी. टी. स्कैन कराने की जरूरत नहीं समझी गयी।" (आशीष कुमार बंसल)

श्रीमान डाक्टरसाहब, नमस्कार। 1-11-96
दिल्ली
निवेदन यह है मैं आपके पास प्रतीक बंसल की C.T. Scan की रिपोर्ट भेज रहा हूं ------ और रिपोर्ट देखने के बाद यह लिखें कि आगे दवाई कब तक चलेगी प्रतीक का स्वास्थ्य अच्छा है खूब-खूब खाता है स्कूल भी जाता है और चुस्त भी है धन्यवाद
आपका
Rajesh Kumar

(सन्दर्भ-२२८)

"हमारी भगवान से यही प्रार्थना है कि आपका डी. एस. रिसर्च सेण्टर दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति करता रहे। जिससे सभी का मंगल होता रहे।" *(सन्दर्भ-२२६)*

पत्र के उत्तर में डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने लिखा कि सी. टी. स्कैन करा कर देख लिया जाय तो अच्छा रहेगा। २६.११.६५ को सर्वोदय मेडिकल रिसर्च सेण्टर, दिल्ली में सी. टी. स्कैन हुआ (सी. टी. १५३४५/६५)। रिपोर्ट बहुत उत्तम और उत्साहवर्द्धक आयी। *(सन्दर्भ-२२७)*

बच्चा अब स्वास्थ्य की उस स्थिति में है, जहाँ रोग के पुनः सर उठाने का भय समाप्त हो जाना चाहिए। लगता है कि रोग-मुक्ति के बाद स्वतः ही औषधि लेते जाने के सिलसिले से भी मुक्ति मिल जायेगी, किन्तु सतर्कता के बतौर औषधि चलाई जा रही है।

प्रतीक के चाचा श्री राजेशकुमार के दि. १.११.६६ के पत्र के अनुसार बच्चा एकदम स्वस्थ और चुस्त है। सामान्य रूप से स्कूल जाता है। औषधि भी अब अंतराल से ले रहा है। *(सन्दर्भ-२२८)*

चिकित्सा और नियंत्रण के उपायों-प्रयासों को धता बताकर आँधी के वेग से बढ़ता सारकोमा की भयंकरता को कौन नहीं जानता। प्रतीक के केस में वह फेफड़े तक अपने पाँव बढ़ा चुका था। वहाँ से वह समाप्त हुआ, और प्रतीक पूर्ण स्वस्थ रहकर जीवन-चर्याओं में बेफिक्र चल रहा है। महीने बीत रहे हैं और फिर वर्ष भी बीत रहे हैं। सब कुछ शान्त स्थिर और अनुकूल है। अब तो विश्वास करने में कोई हिचक नहीं हो

Sat Narain Ashok Kumar
अनाज, दालें व तिलहन के व्यापारी
3990, पहली मंजिल, नया बाजार, दिल्ली-110006

Ref No. ______ Dated 17/7/97

श्री ज्ञान डाक्टर साहब
नमस्कार
प्रतीक की तबीयत ठीक ठाक है अच्छी तरह से खा पी रहा है स्कूल भी जाता है शरीर भी ठीक है
धन्यवाद
Rajesh Kumar

(सन्दर्भ-२२६)

रही है कि खतरा टल चुका है और सारकोमा पर प्रतीक ने स्थायी जीत दर्ज कर दी है।

श्री राजेश कुमार ने अपने पत्र दिनांक १७.७.६७ में लिखा, "प्रतीक की तबीयत ठीक-ठाक है। अच्छी तरह से खा-पी रहा है। स्कूल भी जाता है। शरीर भी ठीक है।" *(सन्दर्भ-२२६)*

दिनांक १४.१२.६७ को श्री अशोक कुमार बंसल ने रिपोर्ट दी कि प्रतीक पूरी तरह स्वस्थ और प्रसन्न है, स्वास्थ्य में किसी प्रकार की कोई शिकायत नहीं है। ❑

४२

ऑस्टियोजेनिक सारकोमा
(SARCOMA OSTEOGENIC)

श्री एस. सारखेल, १६ वर्ष
हुगली (प. बंगाल)

रोग का इतिहास और जाँच : एक वर्ष पहले दाहिने कन्धे में हल्का दर्द अनुभव में आया था, जो होमियोपैथी की सामान्य खूराकों से ही ठीक हो गया। अब जनवरी, १६६४ में दर्द हुआ, जो बढ़ता ही गया। सामान्य दवाओं की सुनवाई नहीं होने पर जाँच की ओर बढ़ा गया। सूजन उभरी थी, वह भी बढ़ती ही जा रही थी। 'द हेल्थ साइकिल' के डॉ. राज वाजपेयी ने साइटोलॉजी जाँच से पता लगाया 'आस्टियोजेनिक सारकोमा' (लैब नं. १५४/६४, दिनांक २८-२-६४)।

कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर, कलकत्ता में हिस्टोपैथालॉजिकल जाँच हुई (रजि. नं. ६४/४२३८, नं. ६५०, ६५१, दिनांक १७-३-६४), जिससे पता चला 'आस्टियो सारकोमा'ऽ*(सन्दर्भ- २३०)*।

CANCER CENTRE
& WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD • THAKURPUKUR • CALCUTTA 700 063 • DIAL 77 ...

Histopathology
Report

Name Subhendu Sarkhel
Age 19yrs Sex M Reg no. 94/4238
Ward/OPD Bed no.
Clinician I/C

N 650, 651
17.3.94

Histopathology : Lump - Upper end of Rt humerus

Diagnosis : Osteosarcoma - Malignant Fibrous Histiocytic Variant

Sd/-
Pathologist

(सन्दर्भ-२३०)

8688/94

Rs. 1.-

TICKET FOR OPD PATIENTS

Date

No. 368711 94/770 Date of Issue 31/5

1.6.94

MEDICAL COLLEGE HOSPITAL, CALCUTTA

Name Suvimcu Sarkhel

Age 19 Caste ... Sex ...

Disease Osteogenic Sarcoma

Date | Treatment

Osteosarcoma(T)

Refd to RMO

31.5.94

APPOINTMENT

Machine Theratron 780

Please Come on 23/6/94
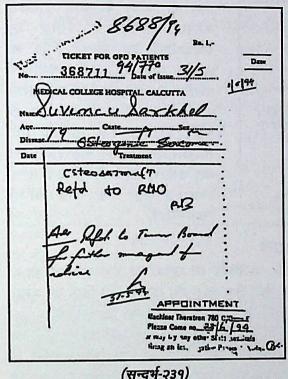
(सन्दर्भ-२३१)

मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, कलकत्ता में भी जाँच द्वारा 'ऑस्टियोजेनिक सारकोमा'' की ही पुष्टि हुई। (नं. ३६८७११, ६४/७७०, दिनांक, १-६-६४)। *(सन्दर्भ-२३१ और सन्दर्भ-३२)*

एक चिकित्सक के परामर्श से ऑपरेशन के लिए चितरंजन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता में भर्ती किया गया। तभी किसी बंगला पत्रिका से डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिलने पर मेधावी किशोर सारखेल अपने सुशिक्षित और बुद्धिमान बड़े भाई के साथ डी. एस. रिसर्च सेण्टर में उपस्थित हो गया। बातों से पता चल गया कि किशोर सारखेल तथा उसके बड़े भाई, दोनों ही 'आस्टियो सारकोमा' की आक्रामकता तथा भयंकरता से परिचित हो चुके थे। उन्होंने बताया कि वे चिकित्सा के अन्धेरों में भटक रहे थे, जहाँ से उन्होंने रोग की नियति, चिकित्सा की सामर्थ्य और रोगी के भविष्य के प्रति कुछ साफ जानकारी जुटा ली थी। बंगला लेख ने एक आशा जगा दी थी। 'सर्वपिष्टी' पर बेभटकाव निर्भरता उनका निर्णय और निश्चय था। ऑपरेशन के विचार को अन्तिम रूप से छोड़कर चित्तरंजन अस्पताल की चारपाई से उठकर यहाँ आए थे।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर पर उन्हें समझाया गया कि कुछ महीनों तक 'सर्वपिष्टी' चलाने के बाद रेडियोथेरापी करा लेना उनके व्यापक हित में होगा। इस बात पर बहुत झिझक के पश्चात किशोर सारखेल तब तैयार हुआ, जब उसकी समझ में आ गया कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर अपने रोगी के पक्ष में सोचता और चलता है, उपयोगी चिकित्सा के किसी भी उपाय से उसे नफरत नहीं है।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक ४-४-६४

प्रगति विवरण : धीरे-धीरे अर्बुद का बढ़ाव और विस्तार रुक गया। दर्द भी कम हुआ। अगस्त-सितंबर तक ट्यूमर मुलायम होता दिखा। उचित समय था कि रेडियोथेरापी

RADIOTHERAPY DEPT.
UNIT-II B
DR. KALYAN BHATTACHARYA
(সোম, বুধ, শুক্র)

Form No. 42
MEDICAL COLLEGE HOSPITALS
Department of Radiology (Therapeutic)
CALCUTTA TELECOBALT

Name Suvendu Sarkhel 19
Number 94/770
Date of 1st. Attendance 1/6/94

Osteogenic Sarcoma.

(सन्दर्भ-२३२)

करा दी जाय। कलकत्ता मेडिकल कॉलेज, हॉस्पीटल में पैंतीस दिन रेडियोथेरापी हुई, जिससे अर्बुद का आकार बहुत घट गया। 'सर्वपिष्टी' चलती रही। धीरे-धीरे कन्धे का आकार व बनावट दूसरे कन्धे के समान हो गयी। असुविधा एक रही कि युवा सारखेल अपनी दाहिनी बाँह उसी प्रकार और उसी ऊँचाई तक नहीं उठा पाता, जिस ऊँचाई तक बाईं बाँह।
(सन्दर्भ-२३३)

'सर्वपिष्टी' का बढ़ता अन्तराल

ज्यों-ज्यों आश्वस्तता आती गयी, 'सर्वपिष्टी' की खूराकों के बीच अन्तराल बढ़ाया जाने लगा। एक दिन के अन्तर से, फिर तीन, चार और क्रमशः पाँच दिनों का अन्तर देकर खूराकें दी जाने लगीं।

Dated - 26/8/97
[illegible]
... Medical college ... 35 দিন (35 days) ... Radiation ... Radiation ... 6 days gapping ... medicine ... [illegible]
Dated - 26/8/97.
[illegible]

(सन्दर्भ-२३३)

दिनांक २६-८-९७ को युवा सारखेल के बड़े भाई ने केन्द्र को पत्र लिखकर सूचित किया,

"इस समय रोगी मोटा-मोटी स्वस्थ है। पढ़ाई- लिखाई कर रहा है। वर्तमान समय में 'सर्वपिष्टी' छः दिनों का अन्तर देकर चलाई जा रही है। बस, अब तो एक ही छोटी-सी समस्या है कि दाहिना हाथ ज्यादा ऊपर नहीं उठ पाता।"

समय बताएगा कि रोग अथवा रेडियेशन द्वारा स्थापित यह

Name of the patient – Subhendu Sarkhel
Now patient is feeling quite ok.
But the right solder of the patient
is not rishes. The health of the patient
is ok. Nothing another problem is not
arises. I am surely say to you that
the patient is now far better before
6/1/98 Dibyendu Sarkhel.
Elder brother of
the patient

(सन्दर्भ-२३३ बी)

जकड़न टूटेगी अथवा नहीं।

दि. ०६.०१.६८ की रिपोर्ट

श्री दिव्येन्दु सारखेल ने रिपोर्ट दी कि रोगी का स्वास्थ्य एकदम ठीक है, कोई समस्या नहीं है। बस, दाहिने हाथ के पूरी तरह नहीं उठ पाने की स्थिति बनी हुई है। (सन्दर्भ-२३३ बी) ❑

संसार के विकसित देशों में, जहाँ चिकित्सा का सेवा-स्तर उन्नत है, किमोथेरापी रुटीन चिकित्सा नहीं बन पायी है और चिकित्सक इसके प्रयोग से पूर्व बहुत सोच-विचार करते हैं। विश्व के यशस्वी कैन्सर-चिकित्सक डॉ. थॉमस बी. हेक्स (मेमोरियल स्लोन केट्टरिंग कैन्सर सेण्टर, न्यूयार्क) तो यहाँ तक कहते हैं कि नुस्खा लिखते समय भी किमोथेरापी का निर्णय लेने से पूर्व विचार कर लेना चाहिए। एक नुस्खे में उन्होंने लिखा, "यद्यपि अभी तक ऐसा (एक भी) पुख्ता प्रमाण नहीं मिल सका कि कैन्सर की उग्रावस्था में किमोथेरापी देने से रोगियों की आयु थोड़ी भी बढ़ी हो, फिर भी किमोथेरापी द्वारा ऐसे रोगियों की चिकित्सा करना हमारी आदत बन गयी है, जो खतरनाक है।" प्रस्तुत है नुस्खे का अंश–

July 25 1983

RE: Mangala Devi Surana
MH# 91.26-34

Dear Doctor:

I was recently asked by Dr. Nori of this institution to comment on further therapy for Mrs. Surana. Although there is no firm evidence that chemotherapy in this setting prolongs survival it has been our habit to treat patients that are at risk.

Very truly yours,
Thomas B. Hakes
Thomas B. Hakes, M.D.

TBH:ig
cc: Dr. Nori

Memorial Sloan-Kettering Cancer Center
1275 York Avenue, New York, New York 10021

४३

बाएँ पैर का कैन्सर

केरेटेनाइजिंग स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा

(CA. LEG (Lt.) KERATINIZING SQUAMOUS CELL CARCINOMA)

अब्दुल अजीज, ५५ वर्ष
न्यू बंगाल रबर वर्क्स
५/२, तिलजला रोड
कलकत्ता-७०००४६

पूर्व चिकित्सा : चित्तरंजन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता रजि. नं. एस. ८७/८६१, दि. ५.३.८७। *(सन्दर्भ-२३४)*

मिलिये हट्ठे-कट्ठे मजदूर अब्दुल अजीज से। कारखाने में खटते हैं। १६६७ में देखकर कोई मान नहीं सकता था कि दस वर्ष पहले (१६८७ में) ये कैन्सर के मरीज थे।

अगस्त' ८६ में खेत में धान रोपते समय पैर छिल-सा गया था। एक घाव हुआ, जो सामान्य उपचार से ही ठीक हो गया। दो महीने बाद वहीं पर एक गाँठ बन गयी, आलू के बराबर। कलकत्ता में ऑपरेशन करवाकर निकलवा दिया

S. M. GHOSE

Pathological Report

Material— Section from mass from left leg (385/87)

Patient— Abdul Aziz

Date— 21-2-87

Doctor— A.K.Sahjehan. MS,DGO

Gross- about 2.5 cm. greyish firm mass with ulcerated skin.
Histology- Section shows features of well-differentiated keratinizing squamous cell carcinoma (Grade 1), with marked inflammatory reaction.

Government of West Bengal
CHITTARANJAN CANCER HOSPITAL
CALCUTTA-26

Name Abdul Aziz
Regn. No. S/827/87
Date of 1st attendance 5.3.87

(सन्दर्भ-२३४)

गया। कुछ दिनों बाद उसी स्थान पर एक गाँठ बनी, जो धीरे-धीरे काली पड़ गयी। २ फरवरी, ८७ को फिर ऑपरेशन कराया और बायाप्सी हुई। तभी कैन्सर का पता चला। इस बार घाव नहीं सूखा, बल्कि और बढ़कर फफसकर रिसने लगा। स्वास्थ्य में भी गिरावट आने लगी थी।

कैन्सर के इलाज के लिए तो कैन्सर-अस्पताल ही जाना होगा। सब परिचितों ने यही परामर्श दिया। आपको बताएँगे श्री अजीज–

''लोगों की सलाह पर चित्तरंजन कैन्सर अस्पताल में भर्ती हुआ। वहाँ जाँच चली। मुझे भनक मिली कि पैर कटवाना पड़ेगा। एक तो खर्च बर्दाश्त करने की हालत नहीं थी, दूसरे मैं पैर कटने की कल्पना से ही घबरा उठा। वापस घर लौट आया। कई लोगों

मैं लगभग सात माह से डी॰ एस॰ रिसर्च सेन्टर, कलकत्ता से अपने पैर के कैन्सर का ईलाज करा रहा हूँ। वर्तमान समय में मेरे पैर का घाव बिल्कुल ठीक है, घाव की जगह अब शरीर के रंग का चमड़ा आने लगा है। पहले वहाँ घाव का सफेद चिन्ह रह गया था। घाव की जगह पर किसी तरह का दर्द या परेशानी नहीं है। अब मैं अपने नौकरी का काम भी नियमित करने लगा हूँ। मुझे काम करने में पैर से कोई परेशानी नहीं अनुभव होती। शारीरिक शक्ति व उत्साह भी अच्छा है। भूख अच्छी लगती है। नीन्द भी अच्छी आती है किसी प्रकार की अस्वस्थता मैं अब महसूस नहीं कर रहा हूँ। पूर्णतः एक स्वस्थ व्यक्ति-सा जीवन व्यतित कर रहा हूँ। कभी कभी ज्यादा

श्री अब्दुल अजीज़
-कु॰ कौंगा रबर कम्पनी
5/2 तिलजला रोड
कलकत्ता - ४६

अब्दुल अजीज़
11.10.87

(सन्दर्भ-२३५)

ने राय दी कि मैं पैर कटवाकर जान बचा लूँ। मन इस कल्पना से ही सिहर उठता था कि दरिद्रता के चलते अपाहिज जिन्दगी के दिन फुटपाथ पर काटने होंगे और परिवार के लोग भूखों मर जायेंगे। उधर पैर का कैन्सर काल जैसा दिखाई दे रहा था।

''संयोग से मेरे पड़ोसी विनोद कुमार यादव से मेरी मुलाकात हो गयी। उनकी पत्नी के रक्त-कैन्सर हो जाने, अस्पताल की ओर से चिकित्सा-छुट्टी दे दिये जाने और फिर किसी चिकित्सा द्वारा कैन्सर-मुक्त हो जाने की घटना से मैं वाकिफ था। विनोद से आग्रह किया कि वे मुझे भी वहीं लिवा चलें। ३०.३.८७ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर, कलकत्ता जाकर हम लोगों ने 'सर्वपिष्टी' प्राप्त की। घाव देखने में भयंकर और दर्दीला हो गया था। दिन-रात स्राव होता रहता था। केन्द्र से केवल खाने की दवा मिली थी, लगाने की नहीं।''

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ३०.०३.८७।

"विश्वासपूर्वक औषधि लेने लगा। तीन सप्ताह बाद घाव में सुधार दिखायी देने लगा। घाव के पूरी तरह सूखने-भरने में तीन महीने लगे। एक सफेद चिन्ह-सा शेष था। वह भी धीरे-धीरे समाप्त हो गया। पैरों में जान आने पर काम पर चला गया। तब से कोई शिकायत ही नहीं हुई। पूरी तरह स्वस्थ हूँ और कठोर परिश्रम करता हूँ। दवा सात महीने लगातार चली थी, फिर अन्तराल दे-देकर चलने लगी।" *(सन्दर्भ-२३५)*

मात्र छः माह ही 'सर्वपिष्टी' लेकर, जीवट के इस व्यक्ति ने कैन्सर को पछाड़ दिया था। उसके बाद उसको औषधि एक दिन के अन्तराल से दी जाने लगी। अब्दुल अजीज की स्वास्थ्य-रिपोर्ट के कुछ अंश, जो उसने केन्द्र पर ११.१०.८७ को दी थी-

मैं डी० एस० रिसर्च सेन्टर (160, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता 7) से सम्भोवनीया सर्वपिष्टी का सेवन करने के बाद पूर्णत: स्वस्थ हूँ। मेरे पैर में अब किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है। मैं घन्टों बिना किसी परेशानी के अपनी कम्पनी में (न्यू बंगाल रबर फैक्टरी 5/2 तिलजला रोड, कलकत्ता 46) काम करता हूँ। मुझे किसी प्रकार की थकान नहीं अनुभव होती। मुझे भूख अच्छी लगती है, नीन्द भी ठीक है। मैं पूर्णत: स्वस्थ व्यक्ति की तरह अपना जीवन व्यतित कर रहा हूँ। मेरा स्वास्थ्य काफी अच्छा है।

श्री अब्दुल अजीज
न्यू बंगाल रबर फैक्टरी
5/2 तिलजला रोड
कलकत्ता - 46

अब्दुल अजीज
(बांया अंगूठा) 3.12.91
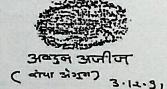
(सन्दर्भ-२३६)

"....वर्तमान समय में मेरे पैर का घाव बिल्कुल ठीक है, घाव की जगह अब शरीर के रंग का चमड़ा आने लगा है।... किसी तरह का दर्द या परेशानी नहीं है। अब मैं अपनी नौकरी का काम भी नियमित करने लगा हूँ। मुझे काम करते समय पैर से कोई परेशानी नहीं होती। शारीरिक शक्ति व उत्साह भी है।....पूर्णतः एक स्वस्थ व्यक्ति-सा जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।"

अब्दुल अजीज अब भी घूमते-फिरते केन्द्र पर आ जाते हैं। कुछ तो इस कारण कि केन्द्र से उनकी आत्मीयता जुड़ गयी है, और कुछ इसलिए कि शरीर में कहीं भी किसी प्रकार की असुविधा होने पर उन्हें शंका हो जाती है कि शायद कैन्सर फिर से उभर रहा है। समय के साथ यह आशंका भी कमजोर पड़ती जा रही है। आने पर अपनी

वाराणसी
14. 4. 97

आज स्वस्थ हुये मुझे दस वर्ष हो गये। मुझे किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। स्वास्थ्य अच्छा है। पैर में न कोइ परेशानी है न ही किसी प्रकार की कमजोरी। भूख अच्छी लगती है। नीन्द अच्छी आती है। आज डी० एस० रिसर्च सेन्टर वाराणसी, अपनी अन्य शारीरिक परेशानियों तथा अपनी पत्नी की दवा के लिये और प्रो० त्रिवेदी जी के दर्शन के लिये आया हूँ।

नि० अब्दुल अजीज
15|5|97

(सन्दर्भ-२३७)

राम-कहानी लिखकर दे भी जाते हैं, औषधि लेने के लिए केन्द्र पर आये किसी व्यक्ति से मुलाकात हो जाय, तो अपनी आपबीती सुना भी जाते हैं।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के रिकार्ड में उनकी ३.१२.६१ की रिपोर्ट अन्तिम रिपोर्ट है। बाद में किसी बयान की जरूरत नहीं समझी गई। न उनकी ओर से, न केन्द्र की ओर से। अब तो प्रायः यह खटका भी मिट गया है कि रोग का रेकरैन्स हो जाएगा। १३.१२.६१ की रिपोर्ट इस प्रकार थी—

"मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर (१६०, महात्मा गांधी रोड, कलकत्ता-७) से 'एम्ब्रोशिया सर्वपिष्टी' सेवन करने के बाद पूर्णतः स्वस्थ हूँ। मेरे पैर में अब किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है। बिना किसी परेशानी के अपनी कम्पनी में घण्टों काम करता हूँ। किसी प्रकार की थकान का भी अनुभव नहीं होता। पूर्णतः स्वस्थ व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।" *(सन्दर्भ-२३६)*

अप्रैल १६६७ में श्री अजीज अचानक वाराणसी केन्द्र पर आ गये। वैसा ही डील-डौल और वही स्वास्थ्य। देखते ही मन खुश हो जाय कि कैन्सर ने दुबारा छूने का साहस नहीं किया, और अभी बुढ़ापा भी नजदीक नहीं फटका। अपना हाल-चाल उन्होंने लिखित रूप में पेश किया। वे पढ़े-लिखे व्यक्ति नहीं हैं, अतः बोलकर बयान देते और अंगूठे का निशान देते हैं। *(सन्दर्भ-२३७)* ❑

बकरी-वर्ग के जानवरों का आहार पत्तियाँ हैं, गौ-वर्ग का आहार घास है, घोड़ा-वर्ग का आहार घास का वह भाग है जो जमीन से लगा रहता है, सूअर-वर्ग का आहार धरती में ढकी रहने वाली जड़ें और मूल हैं, हाथी-वर्ग का आहार छाल (छिलका) है, तोतों-सुग्गों का आहार बीजों का अंकुरित होने वाला भाग है, मानव का आहार अन्न है।

४४

एस्ट्रोसाइटोमा (ब्रेन)
LEFT FRONTAL GEMISTOCYTIC ASTROCYTOMA(BRAIN)

डॉ. डी. पी. मुखर्जी
उम्र : ६१ वर्ष
पता : बी. १/५४,
सेक्टर 'क' अलीगंज,
लखनऊ. उ. प्र.

पूर्व जाँच और चिकित्सा- : ए. आई. आई. एम. एस., नयी दिल्ली (एन. एस.

DEPARTMENT OF NEUROSURGERY
C.N. CENTRE
ALL INDIA INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES,NEW DELHI
D I S C H A R G E . S U M M A R Y

Name : Dr. D.P. MUKHERJEE
Age/Sex : 36 / M
Address
2/40, CARIAPPA VIHAR
DELHI CANTT.
DELHI.
PIN - 0

D.O.A. : 31/12/94
D.O.O.-1 : 02/01/95
D.O.O.-2 : / /
D.O.D : 07/01/95

N.S. No. 3482/94
S.No. : 34/95
C.R. No. 41946?
N.R. No.
E.E.G. No.
C.T.Scan No. MR/1462/94
BIOPSY NO. 95-122
Photograph No.
O.P.D. No. NS-5572/94

Diagnosis : LEFT FRONTAL GEMISTOCYTIC ASTROCYTO

(सन्दर्भ-२३८)

नं. ३४८२/६४) *(सन्दर्भ-२३८)* : एस. जी. पी. जी. आई., लखनऊ (सी. आर. नं. १३८५७६/६४). *(सन्दर्भ-२३६)*

स्वयं एक अनुभवी चिकित्सक डॉ. मुखर्जी जब समय-बेसमय की उल्टियों, धुँधली दृष्टि, सिरदर्द, बेहोशी के झटके और बोली में रुकावट से परेशान होने लगे, तो उन्हें भाँपते देर नहीं लगी कि बात अवश्य ही गंभीर है। वे जाँच और परामर्श के लिए एस. जी. पी. जी. आई., लखनऊ गये। जाँच के बाद चिकित्सकों ने रोग को नियत्रंण में लाने की हर संभव कोशिश की, किन्तु बाद में डॉ. मुखर्जी को चिकित्सा के लिए 'एम्स' नयी दिल्ली जाने की सलाह दे दी।

एम्स में ऑपरेशन हुआ। कुछ राहत मिली, किन्तु लाक्षणिक उपद्रव पूरी तरह शान्त नहीं हो सके। डॉ. मुखर्जी के अनुभव बताते थे कि जाँच और इलाज का यह सिलसिला अन्ततः एक नितान्त कष्टमय जिन्दगी तक पहुँचायेगा।

SANJAY GANDHI POST-GRADUATE INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
LUCKNOW.
DEPARTMENT OF RADIO-DIAGNOSIS

SPECIAL REPORTING FORM

Pt. Name Dr. R. Mukherjee .... Age/Sex 59/M .... CR No. 138579/94

Unit/OPD/Ward .... Balrampur Hospital

Investigation .... MR -Cranium

Radiology No. MR 3178 .... Date 5.7.94

Imp : ? Glioma.

for Dr. R. K. Gupta

(सन्दर्भ-२३६)

संयोग कि एक दिन एस. जी. पी. जी. आई में जाँच कराने आये कुछ लोगों ने डॉ. मुखर्जी के परिजनों को रीता सिंह के साथ घटित घटना का हवाला दिया, जिसका केस ब्रेन में छः ट्यूमर हो जाने पर अस्पताली चिकित्सा द्वारा छोड़ दिया गया, किन्तु उसने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से दवा कराया। अब वह पूर्णतः स्वस्थ और सामान्य है। जाँच से इस बात की पुष्टि हुई है कि उसके ब्रेन के छहों ट्यूमर गायब हो चुके हैं। सबने सहानुभूतिपूर्वक परामर्श दिया कि उन्हें वाराणसी से सम्पर्क करना चाहिए, जहाँ रोगी भर्ती नहीं किये जाते, बल्कि केवल औषधि दी जाती है।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दि० ०६/०३/९५ को परिजनों ने जाँच और इलाज के आधार पर डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी में डॉ. मुखर्जी का नाम रजिस्टर कराया और 'सर्वपिष्टी' प्राप्त की। अगले दिन से ही दवा शुरू कर दी गयी। डॉ. मुखर्जी ने स्पष्ट अनुभव किया कि पोषक ऊर्जा की खूराकें उन्हें धीरे-धीरे स्वस्थता की ओर बढ़ा रही हैं, और लाक्षणिक उपद्रव भी ढलते जा रहे हैं। चार माह बीतते-बीतते तो उन्होंने साफ अनुभव किया कि अब वे खतरों की दलदल से बाहर आ चुके हैं। उन्होंने दि. ०२/०८/९५ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर में रिपोर्ट दी-"मैं पूरी तरह ठीक हूँ। न सिरदर्द है, न उल्टी होती है, न बुखार रहता है। जनवरी १९९५ के ऑपरेशन के दौरान उनका वजन १० किलो कम हो गया था। वह अभी भी कायम है।" *(सन्दर्भ-२४०)*

दिनांक ०५/१२/९५ को डॉ. मुखर्जी ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को लिखा "मैं ठीक हूँ और क्रमशः स्वस्थ होता जा रहा हूँ।"

अब 'सर्वपिष्टी' चलते बारह महीने पूरे होनेवाले थे। डॉ. मुखर्जी अब न केवल स्वयं

I am fine and am progressing to betterment No headache., No vomiting, No signs of increased intracranial tension. Will be going to S.G.P.G.I. for check up on friday. Thanking you yours ~~Thankful~~ B. Mukerji 13/12/95

(सन्दर्भ-२४०)

को खतरों से बाहर अनुभव करते थे, बल्कि वे आश्वस्त थे कि अब रोग का कोई अंश जीवन से जुड़ा हुआ शेष नहीं रह गया है। उन्होंने प्रो. त्रिवेदी को दि० १३/१२/६५ को लिखा, "मैं ठीक हूँ और क्रमशः स्वास्थ्य की ओर बढ़ रहा हूँ। न सिरदर्द है, न उल्टी की शिकायत है, न दिमाग का भीतरी तनाव शेष रह गया है। (प्रो. त्रिवेदी के परामर्श के अनुसार कि औषधि का सेवन एक बार जाँच कराने के बाद ही रोका जाय) मैं

Dear Shri, I am absolutely fine. I am undergoing No treatment. In fact as the report of Biopsy was Benign I left all medicines. Yours faithfully D. Mukerji 28.3.2000.

(सन्दर्भ-२४० बी)

शुक्रवार को चेक-अप के लिए एस. जी. पी. जी. आई जाऊँगा।" *(सन्दर्भ-२४०)* पूरी तरह आश्वस्त हो जाने पर कि अब रोग का नामोनिशान नहीं है, फरवरी १६६६ से 'सर्वपिष्टी' बंद कर दी गयी।

डॉ. मुखर्जी अपने इस दायित्व को भलीभाँति समझते हैं कि उन्हें समय-समय पर डी. एस. रिसर्च सेण्टर को अपनी स्वस्थता का समाचार देते रहना चाहिए। २८/०३/२००० को जब सर्वपिष्टी बंद करने के बाद उन्होंने अपनी पूर्ण स्वस्थता के चार वर्ष से ऊपर का समय व्यतीत कर लिया है, केन्द्र को सूचित किया, "मैं उतना स्वस्थ हूँ, जितना स्वस्थ हुआ जा सकता है।(इस बीच)मैंने तो कोई चिकित्सा भी नहीं ली है। वस्तुतः जब जाँच रिपोर्ट से यह आश्वासन मिल गया कि अब कुछ भी मैलिगनैण्ट नहीं है, तो मैंने सारी दवाएँ बन्द कर दी थीं।" *(सन्दर्भ-२४० बी)*

४५

> *एक ओर इनकी कर्म-संकुल जिन्दगी बुढ़ापे पर विजय की सूचना देती है, दूसरी ओर कैन्सर पर विजय पाने का गर्व भी होता है। लिखते हैं श्री सुकाई, ''आपकी औषधि से मैं इस समय पूर्ण स्वस्थ हूँ।.... मेरी वर्तमान उम्र ७५ वर्ष है। इस उम्र में भी इतना स्वस्थ हूँ कि अपने घर की खेती के कार्य का सम्पादन मैं स्वयं करता हूँ। यही क्यों, मेदिनीपुर होकर सुदूर स्थित कलकत्ता हाईकोर्ट जाकर अपनी जगह-जमीन सम्बन्धित काम-धाम स्वयं सम्पादित करता हूँ। वह भी स्वयं ही, किसी व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती।''*

गुदा-मार्ग (एनल केनाल) का कैन्सर
(CA. ANAL CANAL)

श्री निरंजन सुकाई, ७५ वर्ष
द्वारा : श्री रॉबिन सुकाई
सेपोई बाजार
(प्लास्टिक फैक्टरी के पास)
मिदनापुर-७२११४६ (प. बंगाल)

जाँच एवं चिकित्सा- डिस्ट्रिक्ट हॉस्पीटल, कैन्सर डिटेक्शन सेण्टर, मिदनापुर (रजि. नं. एस/२५४/६३) और मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, कलकत्ता।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : ३०.१२.६३

हल्के पेट-दर्द, कब्ज और गैस बनने की कई महीनों से चलती शिकायतों को वृद्ध पाचनतन्त्र और बढ़ती उम्र की सामान्य परेशानी के रूप में लेकर कभी घरेलू नुस्खों तथा कभी पड़ोसी चिकित्सकों की दवाओं से नियंत्रित रखने का प्रयत्न चलता रहा। नवम्बर १९६३ में जब दर्द बहुत तीव्र होने लगा, रक्त-स्राव होने लगा, जलन ने परेशान किया और सामान्य दवाओं की सुनवाई बन्द हो गयी, तो परिवार के लोग १७.११.६३ को श्री सुकाई को लेकर डिस्ट्रिक्ट हॉस्पीटल, मिदनापुर पहुँचे। चिकित्सकों ने लक्षणों से रोग को भाँप लिया। अस्पताल में कैन्सर जाँच का केन्द्र भी है। दि. १.१२.६३ को जाँच से पुष्टि हुई ''स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा एनल केनाल'' की। उचित कदम के रूप में केस को उसी दिन मेडिकल कॉलेज, कलकत्ता को रेफर कर दिया गया। (सन्दर्भ-२४१)

DISTRICT HOSPITAL, MIDNAPORE.
CANCER DETECTION CENTRE

Name ... Niranjan Sukai
Age ... 70 ... Sex ... M ... Religion ... H
Address ... [illegible]
Date of first Attendance ... 17.11.93
Reg. No. S/2551/93

Date	
17.11.93	C/o Bleeding P/R – 3M P/R An ulcer from anal verge to upto 5cm [illegible]
1.12.93	SQ cell Ca anal canal. Refd to Dept of Radio therapy Medical College, Calcutta. for further advice CKR

(सन्दर्भ-२४१)
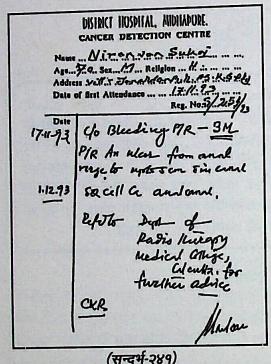
मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सामने भी गम्भीर चुनौती आ खड़ी हुई। महीनों के अव्यवस्थित पाचन-तंत्र के चलते श्री सुकाई का बूढ़ा शरीर प्रायः निढाल-सा हो गया था। समस्या थी कि क्या रोगी रेडियेशन, ऑपरेशन अथवा किमोथेरापी कुछ भी झेल सकेगा। मात्र इस नाते कि कुछ करना ही पड़ेगा, रेडियेशन का फैसला लिया गया। उम्मीद थी कि इससे एक तो रक्त-स्राव से अवकाश मिल सकता है और कुछ समय के लिए सुविधापूर्ण जिन्दगी भी प्राप्त हो सकती है।

रेडियोथेरापी प्रारम्भ हुई, किन्तु पूरा कोर्स नहीं चल सका। कुछ समस्याएँ हल हुईं तो कुछ नये उपद्रव शुरू भी हो गये। अस्पताल ने रोगी को छुट्टी दी कि वह मिदनापुर के जिला अस्पताल से ही लक्षणों के आधार पर दवाएँ लेता रहेगा। रोगी के परिजनों को बता दिया गया कि अस्पताल इससे आगे कैन्सर-चिकित्सा के लिए कुछ नहीं कर पाएगा।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ३०.१२.६३ से।

कहीं से जानकारी मिलने पर 'सर्वपिष्टी' मँगाई गयी और ३०.१२.६३ से दी जाने लगी। उत्तरोत्तर सुधार होने लगा- कष्ट कम होने लगा, शरीर स्वस्थ होने लगा और शक्ति आने से सामान्य क्रियाएँ नियमित चलने लगीं। छः महीना पूरा होते-होते रोगी ने अपना पहले जैसा स्वास्थ्य प्राप्त कर लिया भूख, पाचन, नींद सब सामान्य, शरीर और मन स्वस्थ, कष्ट कोई नहीं। वजन भी बढ़ गया।

(2) 18 MAY 1994 (5)

DISTRICT HOSPITAL, MIDNAPORE.
CANCER DETECTION CENTRE

Name ... Niranjan Sukai
Age ... 70 ... Sex ... M ... Religion ... H
Address ... Janardanpur P.S. KGP
Date of first Attendance ... 17.11.93
Reg. No. S/2551/93

Date	
18/5/94	Doing well. Continue monthly followup
27/6/94	Doing well 2 monthly followup
[illegible]	Doing well
26/11/94	Doing well
23/12/94	Doing well
29.3.95	Doing well.

(सन्दर्भ-२४२)

आश्चर्य की बात थी कि श्री सुकाई के साथ वैसा कुछ नहीं घटित हो रहा था, जिसका भय था। वे दिन-प्रतिदिन अधिकाधिक स्वस्थ और समस्या-मुक्त होते जा रहे थे। मिदनापुर
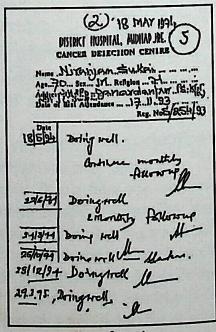
DISTRICT HOSPITAL, MIDNAPORE
CANCER DETECTION CENTRE
Name Niranjan Sukai
Age 70 yrs. Sex M Religion H.
Address
Date of first Attendance 13/4/93
Reg. No. S/254/93

Date	
7.2.96	F.U. case of Sq Cell Ca Anus. & No recurrence.

(सन्दर्भ-२४३)

के जिला अस्पताल में नियमित चेक अप होता, किन्तु आश्चर्य था कि चिकित्सकों को 'ठीक चल रहा है' (डूईंग वेल) लिखकर ही छुट्टी देनी पड़ती। प्रायः कोई दवा भी नहीं लिखनी पड़ती थी, क्योंकि स्वास्थ्य-समस्याएँ एकदम शान्त और नियंत्रित थीं। जहाँ सप्ताहों और महीनों का भय था, वहाँ श्री सुकाई सामान्य स्वास्थ्य के वर्ष बिताने लगे (जिला अस्पताल, मिदनापुर के कार्ड से)। *(सन्दर्भ-२४२)।*

स्वास्थ्य-लाभ के तीसरे वर्ष में श्री सुकाई ने बिना किसी स्वास्थ्य-समस्या के प्रवेश किया। दि. ०७.०२.९६ को जिला अस्पताल मिदनापुर में विधिवत जाँच करके देखा गया। रिपोर्ट आयी कि कैन्सर नहीं है। इससे परिजन भी बहुत प्रसन्न हुए। *(सन्दर्भ-२४३)*

अब 'सर्वपिष्टी' चलाते जाने की भी आवश्यकता नहीं समझी गयी। दि. १२.०३.९६ को श्री सुकाई के पुत्र रोबिन सुकाई ने अपने पिता के पूर्ण स्वस्थ और कैन्सर से मुक्त रहने की रिपोर्ट दी।

अपने १८.१०.१९९७ के (डी. एस. रिसर्च सेण्टर को लिखे गये) पत्र में श्री निरंजन सुकाई ने अपने रोग, उसके द्वारा उत्पन्न यन्त्रणा, फिर उस पर विजय की दास्तान प्रस्तुत की है। उन्हीं के शब्दों में प्रस्तुत है वृत्तान्त- *(सन्दर्भ-२४४)*

18.10.97

(सन्दर्भ-२४४)

(सन्दर्भ-२४४ के बंगला पत्र का हिन्दी अनुवाद—"सन् १९९३ में मुझे गुदा-मार्ग में दर्द का अनुभव हुआ। दिसम्बर (१९९३) तक यह दर्द बढ़कर असह्य हो गया। उसी समय मेदिनीपुर

আমার যে ক্যান্সার [illegible] ভুলে গেছি [illegible]
[illegible] যন্ত্রণা যে কেমন মনেই হয় না

(सन्दर्भ-२४५)

जिला अस्पताल के शल्य चिकित्सक डॉ. श्यामल सरकार से सम्पर्क किया। उन्होंने ऑपरेशन नहीं करके बायाप्सी की, जिससे कैन्सर प्रमाणित हुआ और उन्होंने मुझे रेडियोथेरापी (रंजन रश्मि) कराने के लिए मेडिकल कालेज (अस्पताल), कलकत्ता भेज दिया। रेडियोथेरापी चिकित्सा से भी मेरे दर्द का उपशमन नहीं हुआ। उन्हीं दिनों आने-जाने के क्रम में मार्ग में ही मुझे 'वर्तमान' पत्रिका के माध्यम से आपके कलकत्ता आफिस तथा चिकित्सा के विषय में जानकारी मिली। सम्पर्क करने पर आपकी ओर से नाना प्रकार की अन्य औषधियों के साथ ही दर्द उपशमन के लिए भी एक औषधि मिली। उसके सेवन से यंत्रणा सचमुच ही शान्त हो गयी। आपकी औषधि शुरू करने से पूर्व (अर्थात् १९९३ में) दर्द इतना तीव्र रहता था कि न तो नींद ले पाता था, न भोजन कर पाता था, न ही कोई काम-धाम ही कर पाता था। दिनोदिन कमजोरी बढ़ती जा रही थी। आपकी औषधि के सेवन के बाद दर्द शान्त हुआ, अन्य उपद्रव भी शान्त होने लगे, भोजन और नींद की दृष्टि से भी स्वाभाविकता आने लगी। इति")।

उसी पत्र में श्री सुकाई लिखते हैं, "अब तो मैं यह भी भूल-सा गया हूँ कि मैं कभी कैन्सर का रोगी था, और यह भी कि कैन्सर की तीखी यन्त्रणाएँ कैसी होती हैं।" *(सन्दर्भ-२४५)*

श्री सुकाई की गर्वोक्ति हमारे लिए भी अवश्य गर्व का विषय होगी। एक ओर इनकी कर्म-संकुल जिन्दगी बुढ़ापे पर विजय की सूचना देती है, दूसरी ओर कैन्सर पर विजय पाने का गर्व भी होता है। लिखते हैं श्री सुकाई, "आपकी औषधि से मैं इस समय पूर्ण स्वस्थ हूँ।.... मेरी वर्तमान उम्र ७५ वर्ष है। इस उम्र में भी इतना स्वस्थ हूँ कि अपने घर की खेती के कार्य का सम्पादन मैं स्वयं करता हूँ। यही क्यों, मेदिनीपुर होकर सुदूर स्थित कलकत्ता हाईकोर्ट जाकर अपनी जगह-जमीन सम्बन्धित काम-धाम स्वयं सम्पादित करता हूँ। वह भी स्वयं ही, किसी व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता नहीं पड़ती।" *(सन्दर्भ-२४६)*

আমার বর্তমান বয়স ৭৫ বছর,
আমি এই বয়সে এত পরিমাণ সুস্থ যে, আমার
নিজের বাড়ীর চাষাবাদের কার্য পরিচালনার সমস্ত
আমি নিজেই করতে পারি, এমনকি সুদূর
মেদিনীপুর হইতে কলিকাতা হাইকোর্টে নিজের জমি
জায়গার সংক্রান্ত কার্য অপরের সাহায্য ছাড়াই
নিজেই সম্পাদন করিতে পারি

18.10.97 শ্রী নিত্যরঞ্জন সুকাই
সাক্ষী - শ্রী [illegible]

(सन्दर्भ-२४६)

□

४६

ऑपरेशन दो बार करना पड़ा, किन्तु कुशल सर्जन ने वह सब कुछ निकालकर ही दम लिया, जो कैन्सरस था। रोगिणी और परिजनों ने चैन की साँस ली। कुछ महीने आराम करके रोगिणी ने ज्योंही स्वस्थ अनुभव करना शुरू किया कि बारहवें महीने के चेकअप से कैन्सर के पुनः उभर आने की पुष्टि हो गई। चिकित्सकों ने पुनः ऑपरेशन, रेडियेशन और किमोथेरापी की राय दी। किन्तु श्रीमती सेनगुप्ता का मन इस प्रकार की चिकित्सा के प्रति विद्रोही बन चुका था। उन्होंने चिकित्सा के इस चक्र पर चढ़ने से एकबारगी मना कर दिया। ५-६-६४ से उन्होंने 'सर्वपिष्टी' का सेवन शुरू कर दिया।

मलाशय का कैन्सर, एडवान्स्ड
(CA. RECTUM)

श्रीमती गौरी सेनगुप्ता, ७२ वर्ष
द्वारा : डॉ. एस. सेनगुप्ता
ए/६, गंगा हाउसिंग
बेहरमपुर, मुर्शिदाबाद (प. बंगाल)

रोग का इतिहास : २३-३-६३ से पाखाने के रास्ते खून आने लगा। दो महीने तक रक्तामाशय का इलाज चला। २-६-६३ को मलाशय के कैन्सर का पता चला और ६-६-६३ तथा २४-७-६३ को दो बार ऑपरेशन करके कैन्सरस भाग को निकाल दिया गया। कैन्सर मेटास्टेटिक बन चुका था।

(१) इको डायग्नोस्टिक, नं. एच/१३०५, दिनांक ८-६-६३
"माडरेटली डिफरेंशिएटेड इन्फिल्ट्रेटिंग एडेनो कार्सिनोमा रेक्टम" *(सन्दर्भ-२४७)*

(२) तुषारकान्त मित्रा पैथ लेबोरेटरी, नं. ४६६७/६३, दिनांक १५-६-६३ *(सन्दर्भ-२४८)*
ऑपरेशन के बाद रोगिणी ने आराम अनुभव किया। धीरे-धीरे स्वास्थ्य भी सुधरने लगा। तभी ७-७-६४ की जाँच से कैन्सर के पुनः उभर आने की पुष्टि हुई।

स्कैन रिपोर्ट

कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर, रजि. नं. सी. टी./६४/१२१, सी. टी. स्कैन नं. ५०८६, दिनांक ७-७-६४। *(सन्दर्भ-२४६)*

EKO DIAGNOSTIC
PATHOLOGY DIVISION

Name MRS. GOURI SENGUPTA
Ref. by Dr. DIPANKAR SENGUPTA
Lab no ; 1920
H/ 1305

Date
Sex FEMALE Age 67 yrs
Dt received 2.6.93
Dt reported 8.6.93

Designated biopsy from rectal tumour - consists of 4 -5 bits of tissue.

Final diagnosis :

Moderately differentiated infiltrating adenocarcinoma of rectum.

(सन्दर्भ-२४७)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : ५-६-६४
प्रगति का लेखा-जोखा : (रोगिणी के पुत्र एस. सेनगुप्ता द्वारा प्रस्तुत)

"रोगिणी के एक सम्बन्धी ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क करने की राय दी। दिनांक ५-६-६४ से 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ की गयी। उत्तरोत्तर सुधार होने लगा।

TUSHAR K. MAITRA
BSc. MBBS. DGO (Cal.)
MSc. & PhD (Path) (O.S. Univ. U.S.A.)

PATH LABORATORY
4, BISHOP LEFROY ROAD, CALCUTTA-700 020
PHONE : 40-1488/247-0461
4997/93
Ref. No. 15.6.93

Mrs Gouri Sengupta
Southern N Home
DR D Sengupta

Report of surgical pathology:

Final diagnosis:

1- Adenomatous polyp of rectum upper part.
2- Moderately differentiated mucin secreting adenocarcinoma with infiltration upto the muscle coat.
3- Pericolic lymph node showing metastatic mucin secreting adenocarcinoma.

(सन्दर्भ-२४८)

CANCER CENTRE & WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD, THAKURPUKUR, CALCUTTA 700 063, DIAL 77 3009/77 4433/4444

SCAN REPORT

Patient's Name : Mrs. Gouri Sengupta   Age : 69yrs   Sex : female
Reg. No : CT/94/121
Referred by : Dr Dipankar Sengupta/Calcutta   C.T. Scan No : 5086
Part Scanned : PELVIS: Date : 7/7/94

IMPRESSION: Post operative CT findings are suggestive of an oval soft tissue mass in left internal iliac area anterior and to the left of the rectosigmoid junction. ? Metastasis in lymphnode.

(सन्दर्भ-२४६)

"अब तो औषधि सेवन करते दो वर्ष बीत चुके हैं। श्रीमती सेनगुप्ता पूरी तरह स्वस्थ और सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं। भूख अच्छी लगती है, वजन कायम है। अब तो वे ७२ वर्ष की हुईं। सब मिलाकर उनकी हालत अच्छी है।

यह रिपोर्ट मई, १६६६ की है।

[illegible]

(सन्दर्भ-२५०)

दिनांक १६-८-६७

श्रीमती सेनगुप्ता ने १६-८-६७ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखकर अपने स्वास्थ्य के विषय में सूचित किया।

(सन्दर्भ-२५० के बंगला पत्र का हिन्दी अनुवाद)

माननीय डाक्टर बाबू,

आपको मेरा श्रद्धा सहित नमस्कार। सर्वप्रथम मैं आपको अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। आपकी चिकित्सा एवं भगवान की कृपा से मैं स्वस्थ हूँ। तीन माह पहले उन डाक्टर बाबू के पास चेकअप के लिए गई थी, जिन्होंने मेरा ऑपरेशन किया था। उन्होंने कहा "ठीक हो, फिलहाल कुछ भी नहीं करना है। इन्होंने ही एक बार मुझे ऑपरेशन (कराने) की बात कही थी। उसी समय मैंने अपने एक रिश्तेदार से आपका पता प्राप्त किया था और मैंने ऑपरेशन न कराकर आपकी चिकित्सा प्रारम्भ की। मैंने अत्यन्त निष्ठा के साथ नियमपूर्वक आपकी औषधि का सेवन किया।......मैं साधारण रूप से चलती-फिरती हूँ। अपना काम स्वयं करती हूँ।

मेरा श्रद्धा सहित नमस्कार। इति

(गौरी सेनगुप्ता)

MRS. GOURI SENGUPTA

Dieting, general health, and other problems remain same as before.

She is doing all the house keeping work her own.

Definitely she is doing well.

S Sengupta
13/12/97

Son of Mrs Gouri Sengupta.

(सन्दर्भ-२५१)

दिनांक १३.१२.६७ की रिपोर्ट : श्रीमती सेनगुप्ता के पुत्र श्री एस. सेनगुप्ता ने दि. १३.१२.६७ को उनकी अवस्था के अनुसार स्वस्थ और सक्रिय रहने की सूचना दी। उन्होंने बताया कि कोई नयी स्वास्थ्य-समस्या नहीं है और वे अपना धर्मनिर्वाह करने के अतिरिक्त गृहस्थी के कार्यों की भी देखरेख करती हैं। यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि वे ठीक-ठाक जीवन बिता रही हैं। *(सन्दर्भ-२५१)* ❑

सर्विक्स का कैन्सर
(CA. CX)

श्रीमती रामसवारी देवी
उम्र ४० वर्ष
श्री केदारनाथ सिंह
१३१, ई डब्लू एस, कबीरनगर कालोनी
दुर्गाकुण्ड, वाराणसी-२२१००५

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : निदान केन्द्र, गोदौलिया, वाराणसी (मई ९५/१९१, दिनांक ०१.०६.९५)

जनवरी ९५ से ही कमर में दर्द रहने लगा और श्वेत स्राव होने लगा। कुछ समय बाद ही पेट में बायीं ओर थोड़ी असुविधा और दर्द रहने लगा। इसके साथ ही नींद में कमी, भूख का ह्रास, सिर का दर्द और शरीर की जकड़न थी, अतः सब मिलाकर सामान्य कष्ट ही माना गया। जब कष्टों का सिलसिला छिटपुट दवाओं से नहीं रुका, तो वाराणसी जाकर डॉ. सुधा सिंह को दिखाया गया। उन्हीं के परामर्श से निदान केन्द्र, वाराणसी में दिनांक ०१.०६.९५ को बायाप्सी कराई और गर्भाशय ग्रीवा के कैन्सर की जानकारी हुई। (स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा-केराटिनाइजिंग टाइप) *(सन्दर्भ-२५२)*

NIDAN KENDRA
Godowlia, Varanasi

Name RAMESHWARI W/O. K.N. SINGH Age 40 yrs Sex female
Dr SUDHA SINGH M.D.
Provisional Diagnosis /
Tissue CERVICAL PAP SMEAR
Histopathology No. N. K. MAY 95/ 191 Date of Receipt 30.5.95
Date of Dispatch 1.6.95

Gross Description :
Three unstained smears received. One smear preserved for reference.

Microscopic Description & Diagnosis :
DIAGNOSIS: Squamous cell carcinoma. (Keratinising type).

S.M.D. GUPTA
B.Sc. M.B.B.S., D.C.P.
F.I.A.M.S.

Prof. I.M. GUPTA
M.D.FR.C. Path
(Lond.)

(सन्दर्भ-२५२)

VINAY PATHOLOGY CLINIC

Dr. V.K. Pathak
Ex. MBBS. MD. (Path)
Consultant Pathologist
V. S. Mehta Hospital,
Varanasi.

Nagari Pracharini Sabha
opp. Head Post Office
Visheshwarganj, Varanasi.
Ph. - 330008
Date ...13.1.1995

PATHOLOGY REPORT

Name Smt. Ram Sawari Devi Age ______

Referred by Dr. CPE IMA

Investigations Cx. Pap Smear

The Smear is suggestive of Squamous Cell Carcinoma. Cervix

(सन्दर्भ-२५३)

एक अन्य जाँच ने भी पुष्टि की कि सर्विक्स का कैन्सर है (सन्दर्भ-२५३)। बायाप्सी जाँच बी. एच. यू. में भी करायी गयी किन्तु रिपोर्ट नहीं प्राप्त की गयी क्योंकि रोगिणी का निर्णय एकदम दृढ़ और स्पष्ट था ''मुझे अंग्रेजी इलाज वाली लाइन पर जाना ही नहीं है। फिर दुनिया भर की रिपोर्टें जुटाने का प्रयोजन क्या है!''

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक १४.०६.६५ से।

कष्टों के बढ़ने और कम होने का सिलसिला चलता रहा। तीन महीने बाद रोगिणी ने स्वयं अनुभव किया कि उसका रोग अवश्य कम अथवा समाप्त हो गया होगा। उन्हीं के परामर्श से मऊनाथ भंजन के 'अल्ट्रा साउण्ड एण्ड पैथोलाजी सेण्टर' में अल्ट्रासाउण्ड कराया गया। रिपोर्ट में आया

Tel. : Hos. : [illegible]
Resi. : [illegible]

Dr. D. N. BHARTI
MBBS. MD. MIRIA.
Consultant Sonologist.
Mau.

Ultra Sound & Pathology Centre, Mau.

[illegible], Bypass Road, Maunath Bhanjan — [illegible] (U. P.)

Name Ram Sawari, Ref. by Dr. (Self) Date 9.9.95

ULTRASONOGRAM REPORT

Findings :-

(Uterus & adnexa)

Impression :- Normal Uterus

Advice :

(Dr. D. N. Bharti)

(सन्दर्भ-२५४)

आपकी संस्था से उपचार कराने के बाद हमारी पत्नी श्रीमती राम सवारी देवी। लगातार ठीक चल रही हैं। हर प्रकार के वातावरण व कार्यों में लगी रहती हैं। किसी प्रकार की कोई कमी नहीं ज्ञात होती। इस समय गाँव पर कटाई मड़ाई का कार्य देखने चली गयी थी।

आप सब निराश लोगों में जीवन के प्रति आशा का संचार करते हैं। इसके लिये बार बार धन्यवाद।

केदार नाथ सिंह

२-५-२००१

(सन्दर्भ-२५५)

'नार्मल यूटरस' *(सन्दर्भ-२५४)* तथा 'नो मास और एविडेंसिंग आफ सरवाइकल केनाल नोटेड'।

बड़ा अच्छा परिणाम था। फिर भी रिसर्च सेण्टर की ओर से बार-बार निवेदन किया गया कि किसी कैन्सर अस्पताल जाकर एक बार और जाँच कर ली जाय और तब औषधि कम करने तथा बन्द करने का निर्णय लिया जाय।

रोगिणी बी. एच. यू. के कैन्सर अस्पताल गयी भी, किन्तु जाँच सम्भव नहीं हो सकी।

दिसम्बर १९९५ में श्रीमती राम सवारी देवी बम्बई गईं। वहाँ जाँच कराकर समाचार किया कि रोग अब नहीं है और औषधि की आवश्यकता नहीं है। उन्हें कुल तीस सप्ताह अर्थात लगभग साढ़े सात महीने तक औषधि की जरूरत रही।

दिनांक ०२.०५.२००१ को श्रीमती सवारी देवी के पति श्री केदार नाथ सिंह ने केन्द्र को पत्र लिखकर सूचित किया "...आपकी संस्था से उपचार कराने के बाद हमारी पत्नी श्रीमती राम सवारी देवी लगातार ठीक चल रही हैं। हर प्रकार के वातावरण व कार्यों में लगी रहती हैं। किसी प्रकार की कोई कमी नहीं ज्ञात होती। इस समय गाँव पर कटाई-मड़ाई का कार्य देखने चली गयी हैं। ...आप सब निराश लोगों में जीवन के प्रति आशा का संचार करते हैं। इसके लिए बार-बार धन्यवाद"। *(सन्दर्भ-२५५)*

दिनांक ३१ जुलाई २००१ को सेण्टर के आमंत्रण पर श्रीमती रामसवारी देवी स्वयं वाराणसी आयी थीं। एकदम स्वस्थ, हँसती, बोलती, चलती-फिरती रामसवारी देवी को देखकर कोई कल्पना भी नहीं कर सकता है कि वे कभी क्रूर कैन्सर की मरीज थीं। सेण्टर को वे अपना जीवनदाता मानती हैं और कहती हैं कि जब कभी, जहाँ भी कैन्सर रोगियों के हित के किसी कार्य में सेण्टर मुझे आमंत्रित करेगा, मैं तुरन्त उपस्थित हो जाऊँगी।

४८

एस्ट्रोसाइटोमा
(ASTROCYTOMA)
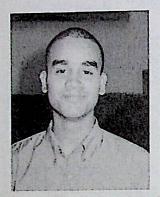
श्री प्रशान्त लकड़ा
उम्र : १७ वर्ष
द्वारा श्रीमती रीता लकड़ा
डी डी ए स्टाफ क्वार्टर नं. ४
शापिंग काम्प्लेक्स के ऊपर
राजौरी गार्डेन
नई दिल्ली-११००२७

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : होली फेमिली हास्पीटल, नई दिल्ली, राजीव गांधी कैन्सर इन्स्टीट्यूट एण्ड रिसर्च सेण्टर (सी आर नं. १६६०७, रिसिप्ट नं. ६८७६३४० दिनांक २५.०२.६६)

HOLY FAMILY HOSPITAL NEW DELHI - 110 025
CASE SUMMARY AND DISCHARGE RECORD

Date of Admission 8/4/99 Date of Discharge 16/4/99
Presenting Symptoms & Physical Findings: 17 yr old male
with h/o blurring of vision / images
in (L) visual fields.
Seizure 1 episode in Aug 98.
Relevent Investigations & X-Ray No: H/o fever on & off
Hb 12.3 gm% Blood gp (A+ve) BT - 0'30"
CT - 3'30" Na - 149 K - 4.6 Cl - 110
Operation/Treatment: HIV - 23 TLC - 5100/mm³
Urine RM - Occ. RBC/HPF
RBS - 82 Bu - 12 Creat 1.0

Operation/Delivery Findings:
(R) parieto-occipital craniectomy &
radical decompression of tumour
Course in Hospital: GA on 9/4/99.
Uneventful

Diagnosis:
Astrocytoma Gd I to II
(R) occipital region
Condition at Discharge:
Satisfactory

Treatment Advised at Home:
T. Eptoin 300 mg HS / x 1 month
T. Wysolone [illegible] / Rasul
Doctor's Signature
Review Sat at OPD - 9:30 am.

(सन्दर्भ-२५६)

प्रशान्त एक फुटबाल खिलाड़ी था। छात्रावास में रहकर आराम से लिखने-पढ़ने में लगा था। खेल कूद में भी आगे रहता। एक दिन वह फुटबाल खेल रहा था तो मैदान पर ही उल्टियाँ होने लगी। प्रशान्त ने सोचा कि अत्यधिक थकान के कारण या पेट खराब हो जाने के कारण ऐसा हो गया होगा। उसने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया।

इस घटना के करीब एक वर्ष बाद अजीब घटना घटी। प्रशान्त की आंखों के आगे झिलमिलाहट सी रहने लगी। खेलते समय भी उसे गेंद ठीक से नहीं दिखायी देती।

RAJIV GANDHI CANCER INSTITUTE & RESEARCH CENTR
Sector-V, Rohini, New Delhi-110 085 Phones : 7051011 To 7051030

INVESTIGATIONS REPORT

Name : PRASHANT LAKRA — Age : 17 — Sex : M
OP/IP : OP — C. R. No. :
Ref. By :
Reported On : 25/02/1999 — Receipt No. : 1876340

HISTO PATHOL.& CYTOLOGY

...psy No/FNAC No/... No : B/615/99
SPECIMEN: Biopsy ... Brain tumour — DATE SLIDE RECEIVED ... DATE REPORT DISPATCHED ...

GROSS EXAMINATION: Received 1 slide for review

MICROSCOPIC EXAMINATION: ... scanty material consisting ... tissue and normal white matter ... shows proliferation of astrocytic series of cells with ... pleomorphism ... No evidence of tumour ...

OPINION: ASTROCYTOMA (GRADE I - II)

DR. NEERAJ PRAKASH
SENIOR RESIDENT

DR. R.N. ...
MD, DCP, ... FCAM
CHIEF OF LABORATORY SERVICES

(सन्दर्भ-२५७)

प्रशान्त इस बात से परेशान रहने लगा। एक दिन तो आंखों के आगे के झिलमिलाहट के कारण गर्दन थोड़ी टेढ़ी की तो सारा शरीर टेढ़ा हो गया। आंख से पानी, नाक से पानी और मुंह से लार टपकने लगी। देखने वालों ने सोचा कि मिर्गी का दौरा पड़ा है। प्रशान्त के साथ इस तरह की घटना प्रायः घटने लगी।

उसे कभी-कभी बुखार हो जाता और उल्टियाँ भी होने लगतीं। हमेशा थकान बनी रहती और कुछ भी खाने-पीने की इच्छा नहीं होती। छात्रावास में रहने के कारण न तो उसने अपनी स्थिति पर गम्भीरता से सोचा और नहीं किसी अन्य ने ही इस ओर ध्यान दिया।

अपनी हालत के बारे में प्रशान्त ने अपनी माँ को पत्र लिखा। माँ बेटे की हालत जानकर चिन्तित हो गयी और उसे अपने पास ले आयी। होली फेमिली हास्पीटल, नई दिल्ली में प्रशान्त को भर्ती कराया गया। वहाँ के डॉक्टरों ने अगले ही दिन प्रशान्त के दिमाग का आपरेशन कर दिया। आपरेशन के बाद निकाले गये हिस्से की जब जाँच की गयी तो पाया गया कि 'एस्ट्रोसाइटोमा ग्रेड-१-२ है। *(सन्दर्भ-२५६)*

प्रशान्त की माँ कैन्सर का नाम सुनते ही घबड़ा गयी। होली फेमिली हास्पीटल से छुट्टी मिलते ही वह राजीव गांधी कैन्सर इन्स्टीट्यूट में प्रशान्त को ले गयी। वहाँ बायाप्सी करायी गयी तो एस्ट्रोसाइटोमा की ही पुष्टि हुई। *(सन्दर्भ-२५७)* राजीव गांधी इन्स्टीट्यूट के डॉक्टरों ने रेडियेशन की सलाह दी और प्रशान्त को २६.०२.६६ से ०७.०४.६६ तक रेडियेशन दिया गया।

इसी बीच प्रशान्त को कहीं से डी. एस. रिसर्च सेण्टर के बारे में पता चला और

९।९।९९

महोदय

पिछले एक महीने से मेरी तबीयत बिल्कुल ठीक है। थकान उल्टी या फिर सिर दर्द की शिकायत बिल्कुल दूर हो गई है। कृपया ये बतायें कि मुझे और कितने दिनों तक इस सर्वपिष्टी का सेवन करना पड़ेगा। क्या मैं तीन-चार माह की रकम एक ही साथ भेज दूँ तो कोई दिक्कत तो नहीं होगी। लिबोट्रिप अब भी ले रहा हूँ। आँखों के आगे दिन में 1-2 बार अंधेरा आ जाता है।

प्रशान्त लखेड़ा

(सन्दर्भ-२५८)
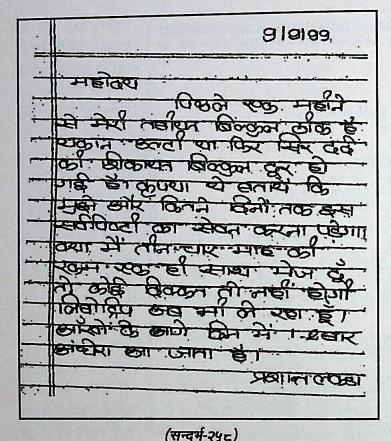
उसने तथा उसकी माँ ने सेण्टर की 'सर्वपिष्टी' का सेवन प्रारम्भ करने का निर्णय ले लिया।

सर्वपिष्टी प्रारम्भः १८.०६.९९ से।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर से १८.०६.९९ को 'सर्वपिष्टी' प्राप्त की गयी और २६ तारीख से प्रशान्त ने इसका सेवन प्रारम्भ कर दिया।

चूँकि ऑपरेशन के बाद ही प्रशान्त की माँ से डॉक्टरों ने कह दिया था कि यह रोग 'इनक्योरेबल' है, और प्रशान्त जितने दिन जी जाय भगवान की कृपा होगी। इस बात से प्रशान्त की माँ बहुत चिन्तित रहने लगी थी।

सर्वपिष्टी के सेवन के बाद प्रशान्त को लाभ समझ में आने लगा। समय-समय पर वह केन्द्र को पत्र लिखकर अपने स्वास्थ्य की जानकारी भी देता रहता। दिनांक ०६.०९.९९ को केन्द्र को भेजे पत्र में उसने लिखा, "...पिछले एक महीने से मेरी तबियत बिल्कुल ठीक है। थकान, उल्टी या फिर सिरदर्द की शिकायत बिल्कुल दूर हो गयी है..."। *(सन्दर्भ-२५८)*

प्रशान्त के साथ दिक्कत यह थी कि वह पत्र भेजते समय प्रायः दिनांक नहीं लिखता है। उसके बहुत से पत्र दिनांक के बिना हैं इसलिए उन्हें उद्धृत करने में समस्या है। फिर भी उन पत्रों का महत्व इसलिए है कि सर्वपिष्टी के सेवन करने के बाद उसके स्वास्थ्य में सुधार का क्रमवार उल्लेख है। प्रशान्त एक एलोपैथ दवा 'लिबोट्रिप' का सेवन करता था। वह इस दवा का इस कदर आदी हो गया था कि इसका पीछा ही नहीं छूटता था। दवा बन्द करते ही कुछ न कुछ समस्यायें सामने आ जाती थीं। एक और दवा जिसे डॉक्टरों ने छोड़ने से मना किया था, प्रशान्त ने छोड़ दिया तो उसे कोई विशेष हानि

समझ में नहीं आयी, इसीलिए उसने बहुत मेहनत करके लिबोट्रिप से भी पीछा छुड़ाया। एक पत्र में उसने लिखा, ''मेरी तबियत आजकल ठीक है। भूख भी लगती एवं लिबोट्रिप की गोली को भी दो हफ्तों से नहीं ली है...''।

दिनांक ०१.०८.२००१ को प्रशान्त अपनी माँ के साथ वाराणसी आया। एकदम प्रसन्न, स्वस्थ और जीवन की आशाओं से ओतप्रोत। उसकी माँ भी अपने बेटे का नया जीवन पाकर धन्य थी। प्रशान्त ने राजीव गांधी से एम आर आई की रिपोर्ट प्रस्तुत की, जो १६.०५.२००१ की है, प्रस्तुत किया जिसमें उसे बिल्कुल स्वस्थ बताया गया है। *(सन्दर्भ-२५८बी)*

F-74 A F/DIAG/02

RAJIV GANDHI CANCER INSTITUTE & RESEARCH CENTRE

SECTOR - 5, ROHINI, NEW DELHI - 110 085

IMAGING SCIENCES : X-RAY / US / CT / MRI / NM

TELEPHONE : 7051011 — 1030 Extn. 2026. 2142 (CT). 2143 (MRI). 2135 (NM)

NAME : PRASHANT LAKRA
AGE/SEX : 17 Y/M C.R. NO. :16607
REFERRED BY :DR.T.KATARIA
REPORTING DATE : 19/05/01 OPD/IP :OP
ROOM/RECEIPT NO.:126445 MR.NO :3422

MRI OF BRAIN

Non contrast Proton MRI of brain is done with T1 W SE, T2 W TSE & FLAIR (dark fluid) sequences in axial & coronal planes using CP head coil.
(A Follow up case of right occipital astrocytoma-post OP & RT status)

Right occipital craniotomy with post OP changes in the form of fluid collection is seen in the right occipital lobe. No evidence of mass effect or oedema seen in the adjoining brain parenchyma.
Cerebral hemispheres elsewhere reveal normal intensity pattern with no evidence of any focal or mass lesion. No evidence of focal white matter changes noted. Basal ganglia, thalami and internal capsular regions appear normal.
Brain stem and cerebellum appear normal with no evidence of any focal lesion or altered intensity pattern. Both CP angles are free.
Ventricular system and basal cisterns appear normal. No evidence of midline shift is seen.

Impression: Post OP changes with no recurrent disease.

DR. RAKESH OBEROI, MD DR. A.CHHABRA, MD DNB DR. A. JENA

(सन्दर्भ-२५८ बी)

४६

> *"हाँ, मुझे कैन्सर था, अन्तिम स्टेज पर था, और अब कैन्सर नहीं है, मैं हूँ।"*
> *-अर्चना सेनगुप्ता*

नान हाजकिन्स लिम्फोमा (NON-HODGKIN'S LYMPHOMA)

श्रीमती अर्चना सेनगुप्ता
ग्राम : चांदुरिया
पो.- सिमुराली, थाना- चकदा
जिला- नदिया (पं. बंगाल)

जाँच व पूर्व चिकित्सा

१. डॉ. ए. आर. राय की दि. २६.२.६० की माइक्रोस्कोपिकल जाँच (स्लाइड नं. १५५२/६०। *(सन्दर्भ-२५६)*

२. जे. एन. एम. अस्पताल, कल्याणी (प. बंगाल)। नं. ८०३, दि. ५.३.६०। *(सन्दर्भ-२६०)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : सेण्ट्रल मॉडल स्कूल, कल्याणी (प. बंगाल) की अध्यापिका श्रीमती अर्चना सेनगुप्ता उन मजबूत लोगों मे से हैं, जो खुले मंच से बेझिझक कहना चाहती हैं, "हाँ, मुझे कैन्सर हुआ था, और मैंने उस पर विजय पायी है।"

श्रीमती अर्चना सेनगुप्ता 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के लगभग एक वर्ष पश्चात ही अपने को पूर्ण स्वस्थ अनुभव करने लगी थीं। आइये, देखते हैं उनकी इस विजय-यात्रा का संक्षिप्त विवरण, उनके तथा परिवार के लोगों द्वारा समय-समय पर केन्द्र को भेजे गये कुछ पत्रों के अंशों से-

दि. १६.६.६० को श्री ए. के. सेनगुप्ता ने लिखा, "रोगिणी पूर्णतया ठीक है। आपने भी पिछले सप्ताह उसको देखा था। औषधि प्रत्येक दिन ही लेनी है अथवा अन्तराल से ? दवा कितने दिन और खानी है।....क्या अपनी सामान्य दिनचर्या....नौकरी पर पुनः वापस जा सकती हैं।" (मूल अंग्रेजी पत्र)

श्रीमती गुप्ता ने दि. २३.१२.६१ के अपने पत्र में लिखा "....अप्रैल १६६० से मैंने यह चिकित्सा आरम्भ की। प्रथम सप्ताह ही मुझे राहत अनुभव होने लगी, और धीरे-धीरे मैं ठीक हो गयी। अब मैं सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। ...मुझे यह सूचित करते हुए खेद हो रहा है कि मेरी बीमारी व इलाज से सम्बन्धित सभी कागज खो गये हैं।"
(मूल अंग्रेजी पत्र उद्धृत है)। *(सन्दर्भ-२६१)*

DRS. TRIBEDI & ROY
93, PARK STREET, CAL — 700 016
PHONES : 29-6643, 29-6789, 29-5961

DR. A.R. ROY M.B.PH.D. (CAL) D.T.M. & H. (L-POOL) D. PATH (ENG.)
FORMERLY ASST. PROF. OF PATHOLOGY
& ASST. BACTERIOLOGIST TO THE GOVT. OF W. BENGAL
RES : 46-0381

DR. SUBHENDU ROY M.B.B.S. (CAL) M.D. (P.G.I.)
RES : 47 2786

BRANCH :
48A, DIAMOND HARBOUR ROAD,
CAL-700 027 (3 AM — 3 PM)

MATERIAL Mesenteric Lymph Node

NAME Sm. Archana Sengupta (45 yrs.)

ADDRESS Kalyani J.N.M.Hosp.

PHYSICIAN Dr. A.K.Majumdar

Gross : One half of a lymph gland : The cut surface is greyish-white and homogeneous.

Microscopical Examination :-

Diagnosis :- Non Hodgkin's lymphoma - diffuse large cell type.

Date of receipt 22.2.90
Date of report 26.2.90
(Slide No.1352/90)
AG

S Roy

(सन्दर्भ-२५६)

इसी प्रकार दि. ७.३.९२ को उन्होंने केन्द्र को सूचित किया "...इस समय मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। मुझे किसी भी प्रकार की कोई असुविधा नहीं है। मन व शरीर को सशक्त अनुभव करती हूँ। इसलिए मेरा डी. एस. रिसर्च सेण्टर को धन्यवाद है।"

West Bengal Form No. 817.

DISCHARGE CERTIFICATE

No. 833

I hereby certify that Archana Sengupta, 45 yrs

was under treatment in this

Hospital from 19-1-90 to 5-3-90

suffering from non Hodgkin lymphoma

JNM Hospital,

The 5/3 1993

Signature

Designation

(सन्दर्भ-२६०)

From April 90 I came under your treatment. On the first week I felt relief gradually Indian came cure.
Now I am completely cured. though casually I feel pain on the spot operated. I again take your medicine twice or so a week.

90 80 (P.T.O)

I am sorry to inform you that I lost all the documents relating to my Disease. Thank you.

Archana Sen Gupta.
23.12.91

(सन्दर्भ-२६१)

श्रीमती सेनगुप्ता को याद हैं वे दिन, जब ऑपरेशन के बाद अस्पताल से छोड़ते समय उनके परिजनों को वहाँ के चिकित्सकों ने स्पष्ट रूप से कह दिया था कि अब आगे चिकित्सा के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। उन्हें घर ले जाकर रखने और सेवा कर लेने की हिदायत दी गई थी। दिनांक ०३.०६.६५ को श्रीमती सेनगुप्ता ने रिसर्च सेण्टर को लिखा—

"श्री श्यामल भट्टाचार्या नाम के एक सज्जन मेरे रोग (तथा चिकित्सा और अब की हालत) की जानकारी के लिए मेरे पास आये हैं। मैं लिखकर दे रही हूँ कि १६६० में मुझे कैन्सर हुआ था, जो एकदम अन्तिम स्टेज में था। मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर की चिकित्सा में आने के बाद धीरे-धीरे स्वस्थ हो गयी। लगातार छह माह औषधि का सेवन किया। सन् १६६१ में पुनः नौकरी में लग गयी। नौकरी कर रही हूँ, और पूरी तरह स्वस्थ हूँ।" (सन्दर्भ-२६२)

3.6.95

শ্রী শ্যামল ভট্টাচার্য্য নামক
এক ভদ্রলোক আমার কাছে
রোগ সম্বন্ধে আমার অনুসন্ধান
জানতে চাইলে, তাই আমি
লিখছি যে আমার ৯০ তে
Cancer হয়েছিল ও একদম
last stage এ ছিল। তারপর
আমি D.S. Research
Centre এর চিকিৎসাধীন
আসার পর আস্তে আস্তে
সুস্থ হই, একটানা ৬ মাস
ওষুধ খাবার পর আমি
সম্পূর্ণ সুস্থ হই, একবছর
ওষুধ খাবার পর আমি
সম্পূর্ণ সুস্থ, আবার চাকরী
করি, আমি ৯১ এ
চাকরীতে পুনরায় join করি
ও চাকরী করছি ও সম্পূর্ণ
সুস্থ আছি।

অর্চনা সেন গুপ্ত

(सन्दर्भ-२६२)

Om

Shimurali
21. 10. 97

শ্রদ্ধেয় ডাক্তারবাবু!

আপনি আমার বিজয়ার সশ্রদ্ধ প্রণাম গ্রহণ করবেন।

আপনি বাংলায় আমাকে চিঠি লিখেছেন, তাই আমিও বাংলাতেই চিঠির উত্তর দিচ্ছি, আপনি আমার স্বাস্থ্যের কথা জানতে চেয়েছেন, তাই লিখছি আমি ভাল

ইতি -
অর্চনা সেনগুপ্ত

(सन्दर्भ-२६३)

अभी तो कैन्सर के आतंक का माहौल है। परिवार के लोग कैन्सर-रोगियों को उनके वास्तविक रोग की जानकारी देने में हिचकते हैं। जो लोग कैन्सर से पूर्ण मुक्त हैं, उनके विषय में भी छिपाया जाता है कि वे कैन्सर के मरीज थे। किन्तु श्रीमती सेनगुप्ता समझती हैं कि कैन्सर पर विजय की घोषणाएँ ही निराशा के इस माहौल को तोड़ सकती हैं। वे बुलन्दी से कहती हैं, ''हाँ, मुझे कैन्सर था, अन्तिम स्टेज पर था और अब कैन्सर नहीं है, मैं हूँ।''

श्रीमती सेनगुप्ता का वर्षों पूर्व कैन्सर से पीछा छूटा। कैन्सर गया, उसके पुनः प्रगट होने का भय गया और फिर औषधि-सेवन की भी आवश्यकता नहीं रह गयी। अब जीवन स्वास्थ्य के सपाट धरातल पर गतिमान है। वे पथ्य-परहेज युक्त जीवन में विश्वास रखती हैं। यदा-कदा पाचन-सम्बन्धी कष्ट हो जाता है। वे जानती हैं कि यह तो वर्तमान जीवन की आम बात है। हो सकता है, उतने बड़े ऑपरेशन और अतीत में महारोग की उपस्थिति ने कुछ दुष्प्रभाव छोड़ दिया हो। दिनांक २१.१०.६७ को उनके द्वारा केन्द्र को लिखे गये पत्र का कुछ अंश प्रस्तुत है- ''आप विजयादशमी पर मेरा श्रद्धापूर्ण प्रणाम ग्रहण करें।....आपने मुझे पत्र बंगला भाषा में लिखा है, तो मैं भी उसका उत्तर बंगला भाषा में ही लिख रही हूँ। आप मेरे स्वास्थ्य के विषय में जानना चाहते हैं इसीलिए लिख रही हूँ कि मैं स्वस्थ हूँ।'' *(सन्दर्भ-२६३)* ❑

प्रत्येक जीव की चेतना पर प्रकृति ने एक ही सन्देश अंकित किया है, ''अपने आहार को पहचानो, केवल उसे ही ग्रहण करो। तुम्हारे प्राकृतिक आहार में ही स्वास्थ्य के विकास, प्रतिकूलताओं से उसकी रक्षा तथा रोग-निवारण के लिए आवश्यक पोषक ऊर्जा का कोष है।''

रोगी जिन्दगी और मौत
के बीच संघर्ष कर रहा था तभी रोगी को डी.एस. रिसर्च
सेन्टर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। तभी रोगी ने —
25-3-93 को इस सेंटर से सम्पर्क किया। और उसी दिन
से केवल सर्वपिष्टी का ही सेवन करना शुरू कर दिया।
उस दिन से आज तक (3-12-94) तक इसका सेवन
कर रहा है।

डी.एस. रिसर्च सेन्टर के करीब एक
साल उपचार मात्र से ही रोगी कैंसर मुक्त हो गया। तथा
रोगी के पिछले चार-पाँच माह से स्वास्थ्य के प्रति
कोई भी शिकायत नहीं है। मेरे को मौत के दरवाजे से
वापस लाने का एकमात्र श्रेय श्री डा. तिवारी तथा
डी.एस. रिसर्च सेंटर को है तथा मैंने माना कि
कैंसर जैसे महारोग का इलाज है। और वह है
डी.एस. रिसर्च सेन्टर के पास। मेरी यह जिन्दगी रूपी
धन उन्हीं की देन है। मैं अधिक क्या लिखूं लिखने
को तो बहुत कुछ है —

अवनीश कुमार द्विवेदी
दैनिक जागरण प्रेस
75 हजरतगंज
लखनऊ

(सन्दर्भ-२६४)

"रोगी जिन्दगी और मौत के बीच संघर्ष कर रहा था, तभी रोगी को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। रोगी ने २५.०३.९३ को इस सेण्टर से सम्पर्क किया। उसी दिन से केवल 'सर्वपिष्टी' का ही सेवन करना शुरू किया। तब से आज तक (३.१२.९४ तक) इसका सेवन कर रहा है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के करीब एक साल उपचार मात्र से ही रोगी कैन्सर-मुक्त हो गया। रोगी को पिछले चार-पाँच माह से स्वास्थ्य के प्रति कोई भी शिकायत नहीं है। मुझको मौत के दरवाजे से वापस लाने का एकमात्र श्रेय श्री डॉ. तिवारी तथा डी. एस. रिसर्च सेण्टर को है। मैंने माना कि कैंसर जैसे महारोग का इलाज है। और वह है, डी. एस. रिसर्च सेण्टर के पास। मेरी यह जिन्दगी रूपी धन उन्हीं की देन है।मैं अधिक क्या लिखूँ, लिखने को तो बहुत कुछ है।

—अवनीश कुमार द्विवेदी, दैनिक जागरण प्रेस, ७५ हजरतगंज, लखनऊ।

हाजकिन्स डिजीज लिम्फोमा

लिम्फोसाइटिक लिम्फोमा, स्टेज ३-बी

(HODGKIN'S DISEASE) LYMPH NODE

श्री अवनीश कुमार द्विवेदी, ३४ वर्ष
दि हिन्दुस्तान टाइम्स लि.,
(डी. टी. पी. विभाग)
२५, अशोक मार्ग, लखनऊ-२२६००१।

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा- डॉ. जनार्दन शुक्ला ने डाक्टर्स क्लीनिक में दि. २६.७.१९९० को जाँच करायी। *(सन्दर्भ-२६५)* गाँधी मेमोरियल एण्ड एसोसिएटेड हॉस्पीटल, लखनऊ के डा. एल. सी. मिश्र के अन्तर्गत। *(सन्दर्भ-२६६ और (सन्दर्भ-२६७)।* ओ. पी. डी. रजि. १३३५६; दि. ४.८.९०, तथा पैथोलोजिकल रिपोर्ट दि. २६.७.९७।

चढ़ती युवावस्था, कर्मठ जीवन, समस्याओं और चुनौतियों के घेरे में बैठा व्यक्ति अगर अन्यमनस्क हो जाये, थोड़ी शिथिलता अनुभव करे, तो अचानक भागकर कैन्सर अस्पताल कैसे पहुँच जायेगा ! लापरवाहियों में कतरब्यौंत करेगा, थोड़े विश्राम की सोचेगा, तबियत बदलने के लिए जगह बदलने की फुर्सत टटोलेगा—सामान्य दिनचर्या

DOCTORS CLINIC
PATHOLOGY CENTRE
A-15, NIRALA NAGAR, LUCKNOW

Name Sri Awinash Kumar Dwedi Age/Sex

Referred by Dr. Janardan Shukla, M.D.

PATHOLOGY REPORT

DIAGNOSIS: HODGKIN'S DISEASE LYMPHNODE (LYMPHOCYTES PREDOMINENT TYPE)

Dated: 29.7.1990

-PATHOLOGIST
Dr. (Mrs.) P. K. Agarwal
M.D. (PATH), M.I.A.C. (U.S.A.)

(सन्दर्भ-२६५)

GANDHI MEMORIAL & ASSOCIATED HOSPITAL
LUCKNOW

SL. No. 3437 Book No. 350 SURGICAL O.P.D.

O.P.D. Registration No. 18413

Date of Issue

Date of Validity

Name A.K. Dwivedi Age 29 Sex M

Address

Provisional Diagnosis Hodgkin's Disease

TREATMENT ADVISED Stage III B

(सन्दर्भ-२६६)
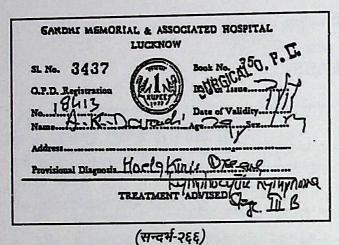
में ही कहीं कोई गलती तो नहीं।

ऐसा ही कुछ सँभाल रहे थे दैनिक जागरण प्रेस (बाद में हिन्दुस्तान टाइम्स लि.) के युवा कर्मी अवनीश कुमार द्विवेदी। किन्तु स्वास्थ्य की गिरावट जब तीव्र हुई और शरीर में एकाध गिल्टियाँ उभरीं तो जाँच के लिए जा खड़े हुए गाँधी मेमोरियल एण्ड एसोसियेटेड हॉस्पीटल के यशस्वी चिकित्सक डॉ. एन. सी. मिश्रा के सामने। जाँच हुई तो पाया गया, 'लिम्फोसाइटिक लिम्फोमा' और वह भी ३-बी स्टेज पर, अर्थात् जिन्दगी को उलट फेंकने के लिए भीतर से उग्र ज्वालामुखी की तरह टकराता हुआ। डॉ. मिश्रा ने स्थिति को बखूबी भाँप लिया। ४.१०.६० से शुरू कर के २०.०७.६१ तक किमोथेरापी के चौबीस इन्जेक्शन चलाये गये। एक बार रोगी चारपाई से इस प्रकार चिपक गया कि इन्जेक्शन नहीं दिये जा सकते थे, तो एक वर्ष तक सामान्य सावधानियों के सहारे उसे सँभलने दिया गया।

एक वर्ष बाद जाँच हुई तो पाया गया कि लिम्फोसाइटिक लिम्फोमा तो खड़ा ही था, साथ में किमोथेरापी के ड्रगों ने 'सेलेल्युटरी' समस्याओं को जोड़कर खतरे को बढ़ा दिया था। 'बड़े भूत के लिए बड़ा मंत्र' की जरूरत समझ कर इस बार २२.८.६२ से १४. ११.६२ के बीच एड्रियामाइसिन, ब्ल्युओमाइसिन और विनब्लास्टिन के बारह इन्जेक्शन दिये गये।

भीतरी लड़ाई का चित्र श्री अवनीश के शब्दों में ही देखिये ''रेडियोथेरापी हुई,
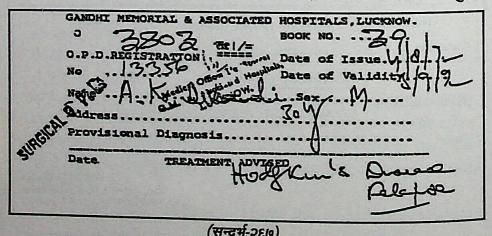
GANDHI MEMORIAL & ASSOCIATED HOSPITALS, LUCKNOW.

3802 BOOK NO. 39

O.P.D. REGISTRATION No. 13356 Date of Issue

Date of Validity

SURGICAL

Name A.K. Dwivedi Sex M

Age 30 y

Address

Provisional Diagnosis

Date TREATMENT ADVISED Hodgkin's Disease Relapse

(सन्दर्भ-२६७)

थकान व कमजोरी की स्थिति में शनैः शनैः सुधार ही हुआ। गर्दन में उभरी गिल्टी का आकार 50% कम हुआ। पेट के अन्दर से (न जाने क्या) कुछ अच्छा भी महसूस करने लगा। वैसे इस सप्ताह मैं टहलने अपने घर गया था।

(सन्दर्भ-२६८)

किमोथेरापी चली। रोगी उपचार की सभी यातनाओं को झेलता रहा। जिन्दगी और मौत के बीच संघर्ष जारी रहा, बिस्तर में पड़े रहना था।"

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ दिनांक २५.०३.९३

रोगी को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। २५.३.९३ को केन्द्र से सम्पर्क किया गया और 'सर्वपिष्टी' का सेवन शुरू किया गया। अन्य दवाएँ एकबारगी बन्द कर दी गयीं। रिसर्च सेण्टर मेण्टिनैन्स के लिए कभी एलोपैथिक दवाओं का सहारा लेने की राय देता, तो भी श्री द्विवेदी नहीं मानते। वे उधर न देखना चाहते थे, न सोचना।

रोग तो अभी अपने उठान पर था और रोगी का स्वास्थ्य टूट चुका था। प्रथम सप्ताह में 'सर्वपिष्टी' का कोई असर नहीं मालूम हुआ। दूसरे सप्ताह में गर्दन में बायीं ओर एक गिल्टी उभर आयी।

धीरे-धीरे औषधि ने असर दिखाना शुरू किया। पाँचवें सप्ताह की दवा पूरी होने पर रोगी ने अच्छी प्रगति की रिपोर्ट दी, "...थकान व कमजोरी की स्थिति में शनैः-शनैः

Provincial Pathology

Patient's name: Mr.A.K.Dwivedi
Referred by: Dr.N.C.Misra
Date of Receipt of Sample: 1.12.94
S. No.: 1612/I

Consultant Pathologist
DR. (Mrs.) D. CHANDRA
M.B.B.S., M.D. (PATH. & BACT.) LKO.
MEMBER: INTERNATIONAL ACADEMY OF PATHOLOGISTS

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

Test		Result
1. Haemoglobin	:	12.8 gm%
2. Total leukocyte count	:	8,950/mm3
3. Differential leukocyte count		
neutrophils	:	77%
lymphocytes	:	20%
eosinophils	:	02%
monocytes	:	01%
4. Platelet count	:	2.0 lakhs/mm^3

(D. Chandra)

(सन्दर्भ-२६९)

श्रीमान डा० साहब सादर चरणस्पर्श
समाचार विदित हो कि रोगी को तलवों में जलन होने व कभी-कभी उबकाई आने के अलावा कोई परेशानी नहीं है। रोगी पूर्णरूप से स्वस्थ है। शेष शुभ।

अनन्तकुमार द्विवेदी
13-8-97

(सन्दर्भ-२७०)

सुधार ही हुआ। गले में उभरी गिल्टी का आकार पचास प्रतिशत कम हुआ तथा अन्दर से (न जाने क्या ?) कुछ अच्छा भी महसूस करने लगा।" रोगी चारपाई और घर की चहारदीवारी से मुक्त हुआ। लिखा, "वैसे इस सप्ताह मैं ट्रेन से अपने घर गया था।" *(सन्दर्भ-२६८)* मात्र कुछ महीने ही लगे कि श्री द्विवेदी अपने प्रेस के कार्य में आ जुटे। इससे अपनी रोटी और पोषक ऊर्जा वाली सस्ती चिकित्सा के साधन उपार्जित करने लगे। बीच में होने वाली जाँचों से स्वास्थ्य की प्रगति और रोग के कमजोर होते जाने की पुष्टि होती थी। गर्दनवाली गाँठ अदृश्य हो चुकी थी और गाँठों के उभरने का सिलसिला भी टूट चुका था। श्री द्विवेदी ने तो एक वर्ष बाद ही स्वयं को रोग-मुक्त मान लिया था।

बीस माह औषधि चलने के बाद रक्त की परीक्षा ने पुनः सिद्ध कर दिया कि रोग विदा हो चुका है और उसके पुनः आने का अन्देशा नहीं है। औषधि अन्तराल के साथ चलने लगी। *(सन्दर्भ-२६९)*

पोषक ऊर्जा की खूराकें काफी समय तक चलती रहीं, किन्तु लम्बे अन्तराल के साथ, अर्थात् चार सप्ताह की औषधि सोलह सप्ताह तक चलती रही।

दिनांक १३.०८.९७ को श्री द्विवेदी ने केन्द्र पर अपने पूर्ण स्वस्थ होने की रिपोर्ट दी। *(सन्दर्भ-२७०)* ❑

जब तक एण्टीबॉयोटिक, एनल्जेसिक, स्टेरॉयड, एण्टी हिस्टामाइनिक तथा किमोथेरापी जैसी औषधियों की एक-एक खूराक के व्यवहार पर सजग विष-विशेषज्ञों की निगरानी का प्रबन्ध नहीं कर लिया जाता, तब तक इन्हें व्यापक व्यवहार में नहीं उतारा जाना चाहिए, और व्यवसाय से तो इन्हें नितान्त अछूता ही रखा जाना चाहिए। इनका अनियंत्रित व्यवहार वैसा ही दृश्य उपस्थित करने लगा है, जैसे चूहों की समस्या हल करने के लिए घर में साँपों को छोड़ा जाय और फिर घर छोड़कर भागने की नौबत आ जाय।

५१

हाजकिन्स डिजीज (नोडुलर स्क्लेरासिस)
HODGKIN'S DISEASE STAGE- IV B

श्रीमती मनोरमा एच. जैन, २८ वर्ष।
द्वारा श्री हरीश चन्द्र जैन
४०६/बी, वृन्दावन अपार्टमेन्ट
सिण्डिकेट मुरबाद रोड
कल्याण (प.), थाना, महाराष्ट्र

शुरुआती समस्या : शरीर में असह्य खुजली, फिर हल्का ज्वर। खुजली का बढ़ते जाना। एक्स-रे से सीने में इन्फेक्शन मिला और बायाप्सी से कैन्सर की पहचान हुई।

जाँच एवं चिकित्सा : टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल, बंबई (केस नं. बी. ई २३१२३)।

१. सितंबर १९९२ में चिकित्सा प्रारम्भ।
२. नवंबर १९९२ से मई १९९३ तक किमोथेरापी दी गयी।
३. सितंबर १९९४ से जनवरी १९९५ तक पुनः किमोथेरापी।
४. मार्च-अप्रैल ९५, रेडियोथेरापी।

रोग अधिकाधिक उग्र होता गया चिकित्सा चलती रही, रोग अधिक गहराता गया।

१९-११-९२ को टाटा मेमोरियल अस्पताल ने जाँच करके स्टेज १-बी लिखा।

TATA MEMORIAL HOSPITAL
(TATA MEMORIAL CENTRE)

Phone : 414 67-50 (6 Lines)
Telex : 011-73648 TMC IN
Fax : 022-4146937 TMC IN

DR. ERNEST BORGES ROAD,
PAREL, BOMBAY-400 012.

Ref : BE 23123 23 Jan., 1995

TO WHOMSOEVER IT MAY CONCERN

Mrs. Manorama H. Jain W/o Shri Harish Chandra Jain, residing at B, 406 Vrandavan Apartment, Sindicate, Murbad Road, Kalyan (W) was first seen in this hospital on 19/11/92. She is diagnosed as a case of Hodgkin's Disease, IV B and under treatment for the same at our hospital since then.

(DR. R. GOPAL)MD
PHYSICIAN & MEDICAL ONCOLOGIST

(सन्दर्भ-२७१)

शेष सब कुशल है श्रीमती मनोरमा स्वस्थ हैं एवं आनंद से हैं थोड़ी कमजोरी अवश्य लगती है अपना गृहकार्य बराबर करती हैं।
शेष शुभ समाचार की प्रतीक्षा में

आपका
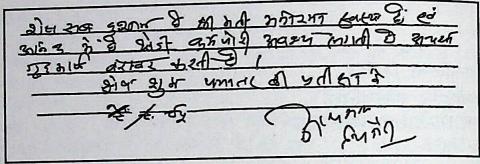
(सन्दर्भ-२७२)

२३-६-६३ को स्टेज ३-बी पाया गया। २३ जनवरी १६६५ में स्टेज ४-बी आ गया। मैलिग्नैंसी में ऐसी स्थिति आती ही रहती है। चिकित्सा न तो रोग की उग्रता का बढ़ाव रोक पाती है, न रोगी को स्वस्थता की दिशा में मोड़ पाती है। एक सवाल खड़ा हो जाता है परिजनों और चिकित्सकों के सामने कि आखिर चिकित्सा द्वारा किस प्रयोजन की सिद्धि होने जा रही है। किन्तु फिर उसी मार्ग पर बढ़ना पड़ता है।

मि. जैन ने अस्पताल से एक सर्टिफिकेट प्राप्त की। *(सन्दर्भ-२७१)* सर्टिफिकेट का हिन्दी अनुवाद "श्रीमती मनोरमा एच. जैन, धर्मपत्नी श्री हरिश्चन्द्र जैन, निवासी बी. ४०६, वृन्दावन अपार्टमेण्ट, सिन्दी कटरा, मुरबाद रोड, कल्याण (प.) की जाँच आदि इस अस्पताल में पहले-पहल १६.११.६२ को हुई। वे हाजकिन्स डिजीज, ४-बी की मरीज हैं और तबसे ही हमारे अस्पताल की चिकित्सा में हैं।"

कल्याण
07-10-1996

आदरणीय डॉ० सा० सप्रेम नमस्कार अत्र कुशलं तत्रास्तु
आशा है ईश्वर की कृपा से आप भी सपरिवार आनन्द से होंगे
आपके निर्देशानुसार श्रीमती मनोरमा का X-ray chest किया गया तथा आई ई रिपोर्ट की कापी आपको भेज रहे हैं जिसके अनुसार दांयी ओर का ... अर्थात ट्यूमर में कुछ कमी हुई है जो कि समयानुसार ठीक मानी जायगी एवम् ट्यूमर में वृद्धि नहीं हुई यह अपना सुधार माना जाए या नहीं यह आप बतावें।
इनके रोग में जब वृद्धि होती है तो छोटी 2 ग्रंथियां पेट के अंदर बनती हैं यदि वह नहीं हो तो इनके रोग की रोकथाम हो सकती है। इस प्रकार निर्णय आपको लेना है कि आगे किस प्रकार का इलाज चालू करना है। - - - - -

आपका

(सन्दर्भ-२७३)

'सर्वपिष्टी' की ओर

श्री जैन ने उक्त सर्टिफिकेट जनवरी के अन्तिम सप्ताह में प्राप्त की थी। रोग और रोगिणी के विषय में अन्य विवरण-पत्र उनके पास थे। वे देश से विदेश तक के

सम्मानित-सुस्थापित अस्पतालों और चिकित्सा-क्षेत्र के विशेषज्ञों से सम्पर्क करके किसी उपाय तथा आश्वासन की गुंजाइश ढूँढ़ना चाहते थे, जिससे रोग के बढ़ाव पर काबू पाया जा सके तथा परिस्थिति को मोड़ा भी जा सके।

इसी पूछ-तलाश के दौरान किसी स्रोत से उन्हें अपने ही देश की एक अचर्चित चेष्टा- डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली और उसकी वाराणसी इकाई का पता भी मिल गया।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ५-४-६५

श्री जैन ने 'सर्वपिष्टी' की पहली किश्त के रूप में चार सप्ताह की दवा मँगाई और रोगिणी को नियमानुसार सेवन प्रारम्भ कराया।

प्रगति-विवरण : अभी-अभी किमोथेरापी बन्द हुई थी, अतः 'सर्वपिष्टी' के प्रभाव को पृथक करके देखना सचमुच कठिन था। फिर श्री जैन भी अब अतिशय सतर्क हो चुके थे। अपने १८-५-६५ के पत्र में उन्होंने लिखा, "पहले किमोथेरापी लेने के करीब एक साल बाद रोग फिर बढ़ने लगा था। अतः अब ऐसी स्थिति न आवे तब समझें कि रोग से छुटकारा मिल रहा है। ......रेडियोथेरापी पूर्ण हो चुकी है, किन्तु उससे शरीर में कमजोरी व थकान रहती है।"

६-६-६५ की रिपोर्ट : श्रीमती (जैन) स्वस्थ हैं एवं आनंद में हैं। थोड़ी कमजोरी अवश्य लगती है अन्यथा गृह-कार्य बराबर करती हैं। *(सन्दर्भ-२७२)*

१-१२-६५ की रिपोर्ट : श्रीमती जैन स्वस्थ हैं, किसी प्रकार की परेशानी नहीं है। वजन भी बढ़ा है।"

२५-१-६६ की रिपोर्ट : "मैं किसी प्रकार की कोताही बरतने के लिए तैयार नहीं क्योंकि श्रीमती जी का स्वास्थ्य अच्छा है। परन्तु रोग फिर से नहीं उभरे इसके लिए हर संभव इलाज लेने के लिए तैयार हूँ।"

एक वर्ष का चक्र पूरा हुआ और श्री जैन ने लिखा "श्रीमती जैन स्वस्थ एवं सानन्द हैं। किमोथेरापी और रेडियोथेरापी के साइड एफेक्ट खत्म हो गये हैं।" (दिनांक १८-४-६६ का पत्र।)

विशेष : श्री जैन यह तो प्रत्यक्ष देख रहे थे कि किमोथेरापी के कोशिका-विध्वंसक विषों से झुलसी हुई जीवन की सचेतन केमिस्ट्री धीरे-धीरे जाग रही थी, फिर भी समझाने के बावजूद उनका मानस यह स्थायी तौर पर पकड़ नहीं पा रहा था कि कैन्सर के लिए कोई ऐसी दवा हो सकती है, जिसका साइड एफेक्ट नहीं हो। रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक समझते थे कि रोग और किमोथेरापी के कारण स्थापित चयोपचय का विचलन

कल्याण
१२-७-६७

माननीय डा० साहब सप्रेम नमस्कार,
अत्र कुशलं तत्रास्तु, आशा है ईश्वर की कृपा से
आप भी स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।
आगे श्रीमती मनोरमा की तबियत ठीक है। - - - - - -

[illegible]
१२ ७ ६७

(सन्दर्भ-२७४)

दूर कर लेने के लिए पोषक ऊर्जा की खूराकें अभी चलनी चाहिए।

११-७-६६ : "श्रीमती जैन स्वस्थ-सानन्द हैं।"

विशेष : अब श्री जैन और श्रीमती जैन को लगने लगा कि उनके पैर जीवन के ठोस धरातल से लग गये हैं। उन्होंने अन्य कैन्सर-रोगियों से 'सर्वपिष्टी' लेने के लिए कहना और डी. एस. रिसर्च सेण्टर से आग्रह करना प्रारम्भ कर दिया कि उन्हें औषधि अवश्य दी जाय। दिनांक १५-५-६६ को उन्होंने अपने चिन्तन की स्थिति स्पष्ट कर दी थी, "श्रीमती जैन स्वस्थ एवं सानन्द हैं। .....आपने फोन पर कहा था कि दवा धीरे-धीरे बन्द करेंगे।.....किसी प्रकार की रिस्क मैं नहीं लेना चाहता।"

७-१०-६६ की रिपोर्ट : श्री जैन रोगिणी के स्वास्थ्य की आन्तरिक स्थिति (जिसे वास्तविक स्थिति कहने की परिपाटी है) जानना चाहते थे। उन्होंने चेस्ट एक्स-रे कराया, तो प्रसन्नता उनकी सूझ और समझ को छू गयी," दाईं ओर का ट्यूमर घटा है। नये ट्यूमरों की वृद्धि नहीं हुई है।" *(सन्दर्भ-२७३)*

१२-७-६७ : "श्रीमती जैन की तबीयत ठीक है।" *(सन्दर्भ-२७४)*

दिनांक ४.११.६७ को श्रीमती जैन के पति ने पत्र लिखकर सूचित किया, "श्रीमती मनोरमा जैन स्वस्थ हैं। कुछ कमजोरी अवश्य है एवं शाम को थकानवश शरीर थोड़ा गर्म रहता है। वैसे विशेष परेशानी कुछ नहीं है। अब हम एक दिन छोड़कर एक दिन दवा दे रहे हैं। और कितने दिन इलाज चलना है लिखना, क्योंकि करीब ढाई वर्ष हो गये हैं।..." *(सन्दर्भ-२७५)*

शुभ दीपावली
कल्याण
दिनांक ४.११.६७

आदरणीय डा० साहब सप्रेम नमस्कार - - - -
श्रीमती मनोरमा जैन स्वस्थ है कुछ कमजोरी
अवश्य है एवं शाम को थकानवश शरीर थोड़ा
गर्म रहता है वैसे विशेष परेशानी कुछ नहीं है।
अब हम १ दिन छोड़कर १ दिन दवा दे रहे हैं
और कितने दिन इलाज चलाना है लिखना
क्योंकि करीब २½ वर्ष हो गये हैं। - - - -
[illegible]
[illegible]
आपका
[illegible]

(सन्दर्भ-२७५)

५२

अन्धान्त्र का कैन्सर
(लिम्फोसाइटिक लिम्फोमा)
(LYMPHOCYTIC LYMPHOMA)

श्रीमती सरोज देवी, ६५ वर्ष,
पत्नी : श्री रामसूरत मिश्रा
ग्रा. व पो. मिश्रौलिया
जिला-गोरखपुर

सर्जरी और जाँच

गोरखपुर के कुशल सर्जन डॉ. आर. के. पाण्डेय ने दिनांक ६-७-६५ को गाँठ निकाल दी और जाँच के लिए दो जगह भेज दिया। मेहरोत्रा पैथालॉजी, लखनऊ ने (सी. नं. ५४८७/६५) १६-७-६५ को रिपोर्ट दी- ''लिम्फोसाइटिक लिम्फोमा''। *(सन्दर्भ-२७६)*

प्रभात डायग्नास्टिक लैब, गोरखपुर ने १७.७.६५ को रिपोर्ट दी (नं. ४८७/६५), ''हाजकिन्स लिम्फोमा''। *(सन्दर्भ-२७७)*

किमोथेरापी : हनुमान प्रसाद पोद्दार कैन्सर अस्पताल, गोरखपुर (रजि. नं. १५०२/६५, दिनांक २०-७-६५) में किमोथेरापी की छः साइकिल दी गई। *(सन्दर्भ-२७८)*

MEHROTRA PATHOLOGY
B - 171, Nirala Nagar, Lucknow - 226 020
(1954)
PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

Patients Name : Smt. Saroj Devi
Referred by : DR. R.K. Pandey, MS,FICS
Specimen : Growth Caecum
Section No.: 5487/95
Received Dt:10/07/95

DIAGNOSIS : LYMPHOCYTIC LYMPHOMA.

(Anita Mehrotra) (Bandana Mehrotra) (R.M.L.Mehrotra)
NN

DATE :16/07/95

(सन्दर्भ-२७६)
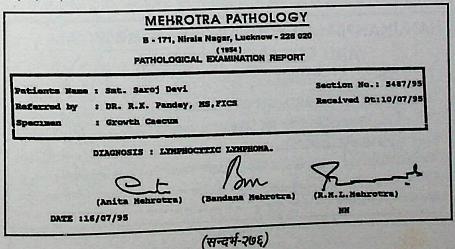
PRABHAT DIAGNOSTIC LAB

Date ...17.-7.-95

Name... Smt. Saroj Devi ... ... Age... 60 Yrs. F.

Ref. by Dr. R.K. pandey MS. (SURGERY). FICS ... ...

BIOPSY REPORT 487/95.

Nature of Specimen— Growth - Caecum. c appendix.

Findings - consistent c Hodgkin's Lymphoma.

CDR ... SINGH
PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-२७७)

रेडियोथेरापी : सर्जरी और किमोथेरापी ने पहले से ही कमजोर रोगिणी का स्वास्थ्य तोड़ दिया था। मात्र चार बार रेडियेशन के बाद रोगिणी की स्वास्थ्य-दशा बदतर हो गई। वह इस काबिल भी नहीं रही कि रेडियेशन देने के लिए अस्पताल ले जायी जा सके। अन्ततः रेडियोथेरापी चिकित्सा यह कहकर रोक दी गई कि रोगिणी का स्वास्थ्य सुधरे, तो देखा जायेगा। लाख प्रयत्नों के बाद भी स्वास्थ्य सुधरने के स्थान पर बद से बदतर होता गया।

इसी बीच किसी माध्यम से ड़ी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी के विषय में जानकारी मिली।

HANUMANPRASAD PODDAR CANCER HOSPITAL
AND RESEARCH INSTITUTE
Gitavatika, Gorakhpur
DEPARTMENT OF PATHOLOGY
Requisition Form for Laboratory Investigations

Name Saroj Devi ... Age ... Sex ...
Ward/O.P.D. ... Registration No. 1582/94
Clinical Diagnosis ...
Investigation required ...

(सन्दर्भ-२७८)

श्रीमती सरोज देवी (गोरखपुर) की वर्तमान स्थिति

अब मरीज की तबियत ठीक चल रही है। भोजन में रोटी चावल दाल, टमाटर की चटनी व दूध आदि लेती हैं। अब थोड़ा खटिया पर बैठ लेती हैं कभी कभी अपने आप बिना सहारे के उठ जाती हैं, कभी कभी उठाना पड़ता है।

सुबह शाम थोड़ा टहल लेती हैं। [illegible] टहलना भी हो जाता है। अभी कोई तकलीफ वर्तमान में नहीं है। खुराक अभी थोड़ा ही लेती हैं।

रामलाल मिश्र
19.9.96.
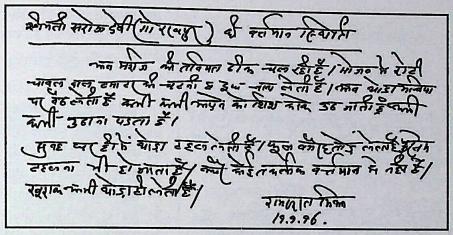
(सन्दर्भ-२७६)

'सर्वपिष्टी' शुरू करने से पूर्व की स्थिति :

रोगिणी के पति के शब्दों में, "दवा की खड़ी गोली या कैप्सूल नहीं निगल पाती हैं। स्वयं बिस्तर से न उठ सकती हैं, न ही करवट बदल सकती हैं। बोली मुश्किल से साँय-साँय बोल पाती हैं। रोटी, चावल, दाल तो दो-तीन महीने से नहीं ले रही हैं, अब तो दाल का पानी भी नहीं ले पा रही हैं। हाथ-पैर में दर्द तथा सूजन है। हाथ में लाल-काली 'क्लॉटिंग' पड़ गयी है। बार-बार उल्टी हो जाती है।"

सर्वपिष्टी शुरू हुई : २५-१-६६।

विकासक्रम : रोगिणी के पति द्वारा समय-समय पर लिखी गयी रिपोर्ट के अनुसार—

७-२-६६ : दि. २६.१.६६ को दस दिनों के बाद टट्टी हुई। उसके बाद ४.२.६६

श्रीमती सरोज देवी गोरखपुर

आपकी दवा खाने के बाद पाखाना (कान्स्टिपेटेड) हुआ है। [illegible] कोई व्यवधान नहीं उत्पन्न हुआ। [illegible] ज्वर रात में हो गया था जिसके लिए तुलसी पत्ता [illegible] गर्म करके दिया गया कोई अन्य दवा नहीं दी गई। [illegible] कभी कभी गले में जलन व कफ हो जाता है। भोजन दाल चावल खा रही हैं। अभी दर्द भी रहा है। थोड़ा टहलना घूमना भी कर रही हैं। खटिया पर बैठने पर स्वयं उठ जाती हैं।

रामलाल मिश्र
6/11/96

(सन्दर्भ-२८०)

श्रीमती सरोजदेवी

मान्यवर [illegible] साहब। [illegible]

[illegible]

गोरखपुर
दि. 22.8.67
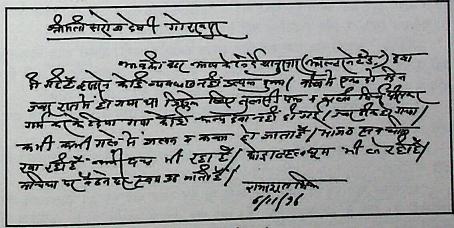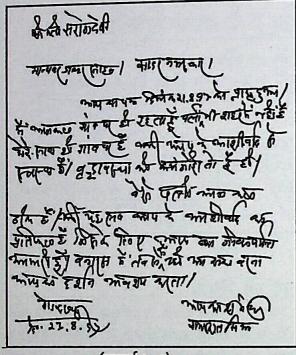
(सन्दर्भ-२८१)

तक नियमित टट्टी हुई। चेहरे पर थोड़ी-बहुत तब्दीली है। दवा लेने के बाद उल्टी नहीं हुई ।

१४-३-६६ : "इस बार दवा खिलाने के बाद मरीज को खाने की इच्छा प्रकट हुई। इस सप्ताह से यह स्पष्ट हुआ कि उन्हें अब भूख लगने लगी है। दूध पी लेती हैं। दूध के साथ कम्प्लान तथा कभी जी. आर. डी. भी दिया जाता है।

३०-४-६६ : "स्वास्थ्य में धीरे-धीरे प्रगति है। उठा कर बैठा देने पर अब एक घण्टा-आधा घण्टा बैठ लेती हैं। खाने में रोटी, दाल, सब्जी ले रही हैं। अनार का रस ले रही हैं। दूध पच जाता है।"

३०-५-६६ : "इस बार दवा ले जाने के एक सप्ताह बाद रोगिणी को खड़ा कर देने पर दीवार पकड़कर कुछ चलने-फिरने लगी हैं।"

१६-६-६६- "अब मरीज की तबीयत ठीक चल रही है। भोजन में रोटी, चावल, दाल, टमाटर की चटनी व दूध-चाय लेती हैं। अब मचिया पर बैठ लेती हैं। कोशिश करके अपने आप उठ जाती हैं। सुबह घर में टहलती भी हैं। पूजा के फूल तोड़ लाती हैं। वर्तमान समय में कोई तकलीफ नहीं है।" *(सन्दर्भ-२७६)*

६-११-६६- "अबकी बार दवा एक दिन अन्तर देकर दी गयी। इससे कोइ व्यवधान नहीं उत्पन्न हुआ। भोजन सब कुछ खा रही हैं, पचता भी है। टहल-घूम भी लेती हैं। मचिया पर स्वयं बैठ जाती हैं एवं स्वयं ही उठ भी जाती हैं।" *(सन्दर्भ-२८०)*

इसके बाद रोगिणी को पूर्णतः स्वस्थ देखकर रोगिणी के पति ने औषधि सेवन बन्द करा दिया।

औषधि-सेवन बन्द होने के आठ माह बाद २३-८-६७ को अपने पत्र में रोगिणी के पति ने लिखा—

"आजकल गाँव पर ही रहता हूँ। पत्नी भी मेरे साथ गाँव पर हैं। वृद्धावस्था की कमजोरी है। वैसे वे आजकल ठीक हैं। यह सब आपके आशीर्वाद का प्रतिफल है जिसके लिए मैं आपका जीवनपर्यन्त आभारी रहूँगा।" *(सन्दर्भ-२८१)* ❑

५३

सर्विक्स का कैन्सर
(CA. CX)

श्रीमती बैकुण्ठी देवी
उम्र : ६१ वर्ष
द्वारा श्री कन्हैया लाल वर्मा
४१-ए, कृष्णपुरी
मथुरा-२८१००१

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : सरोजनी नायडू हास्पीटल, आगरा (ओ पी डी नं. ८४१/९६), भटनागर पैथोलाजी सेण्टर, मथुरा।

Filmed 9/9/96 at 8.30 AM

SAROJINI NAIDU HOSPITAL, AGRA

X-RAY THERAPY FORM

Patient's Name Smt. Baikunthi Devi — F Y 61 years

Address 41 Krishna Puri Mathura

Referred by Prof. (Dr.) R. D. Sharma Ward K.P.R.I. OPD No 841/96

Disease Adenocarcinoma Ca Cervix

Clinical History Pt is a diagnosed case of Ca Cx & on biopsy it showed adenocarcinoma.

Biopsy Report Adenocarcinoma-
Whether previously treated by radiation therapy

Blood Examination
Total RBC. Hb - 9 gm%
WBC. TLC - 3400/cmm
HB. FC. DLC - P62 L32 E6
Blood Picture
W.B.

Radiological Examination Report

Whether operated and nature of operation

Treatment: Post or Pre-operative or Primary
EBRT to be started at least after 15 days
Dose to be decided later on

Note—Bed-Head Ticket Temperature Charts and Examination Reports should be sent with the patient every time he attends the Deptt. Female patients should be accompanied by a nurse.

Surgeon or Physician

Dated 10.8.96 197

PSUP—8. 2 Chik Hat (SNH)—761—1976—1,00,000.

(सन्दर्भ-२८२)

☎ 350444

X-RAY CENTRE

Dr. SARKAR MARKET, DELHI GATE, AGRA-282002

Name Mrs. Baikunthi Devi Age & Sex 60 Yrs. F.

Referred by Dr. M. Chandra

Part Examined K.U.B./D/D I.V.P.

S.No. R1 to R4 Dated 6.7

REPORT

K.U.B.

Small rounded phlebolith shadow is seen in the right side of the pelvis.

Lumbar spine is showing slight scoliosis.

Pelvic bones are normal.

Both S.I. and hip joints are normal.

IMPRESSION

-No radio-opaque calculus shadow is seen in K.U.B. region.

-Slight scoliosis lumbar spine.

D/D I.V.P.

2 Amp. of "CONRAY 420" is injected I.V. and skiagrams are taken with the interval of 7, 20 and P.M.

Both the kidneys are excreating the dye promptly.

Normal pelvicalyceal system of both the kidneys are seen.

(P.T.O.)

(RADIOLOGIST)
Dr. M.B. JAIN
M.B.B.S., D.M.R.E., M.D. (Rad.)

Time: 8.30 A.M. to 8.00 P.M. Sunday: 8 A.M. to 2.00 P.M.

Equipped With:
- Most Modern 800mA X-Ray plant with imported 30/30 x-ray tube.
- 300mA x-Ray unit.
- 60mA mobile x-Ray unit.
- 25 KVA three phase Generator Facility.

+ Not Valid for Medicolegal Cases +

(सन्दर्भ-२८३)

दिनांक १२.०६.९६ को श्री बैकुण्ठी देवी के पुत्र श्री मोहन जी अपनी माता जी के लिए 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने हेतु सेण्टर पर पधारे। उन्होंने उस समय अपनी माँ की समस्याओं के विषय में जानकारी दी, "(१) मेरी माताजी को लगभग दो वर्ष पूर्व में उल्टी तथा चक्कर आते थे। (२) सफेद पानी की काफी शिकायत रही है। (३) ब्लड भी कभी-कभी आता था जो उन्होंने गौर नहीं किया। (४) जून माह में भयंकर ब्लीडिंग हुई और वे मूर्छित हो गयीं। आगरा के डॉक्टर को दिखाने पर परीक्षण उस भाग का कराया गया। ज्ञात हुआ कि कैन्सर है। *(सन्दर्भ -२८२)* (५) डॉ. मुकेश चन्द्र से विचार-विमर्श कराने

Microscopic Diagnosis : 96-1875

Endometrium - Negative
Myometrium - Negative
Cervix - Adenocarcinoma
Vaginal Vault - Not infiltrated by malignant cells.
(A) Obturator lymph node - Reactive hyperplasia.
(B) External iliac lymph nodes - Metastatic carcinoma.
(C) Internal iliac lymph node - Reactive hyperplasia.
(D) Common iliac lymph node - Reactive hyperplasia.

All tests have technical limitations. Collaborative clinicopathological interpretation is indicated. In case of disparity test may be repeated immediately.

Pathologist
Dr. B. LAHIRI
M.D. (Path. & Bact.)
F.R.C. Path. (London)

(सन्दर्भ-२८४)

पर यूट्रस का आपरेशन कराने की सलाह दी। आपरेशन कराने के बाद जो हिस्सा

Dr. Mukesh Chandra M.S., Ph.D (Sch), F.I.C.M.U., F.I.C.O.G., F.I.C.M.C.H.
Assistant Professor, Dept. of Obstetrics & Gynaecology, S. N. Medical College, Agra

ULTRASOUND COLOR DOPPLER UNIT

MULBERRY HOUSE, 14/193, GHATIA, AZAM KHAN, (OPP. ST. PETER'S CHURCH) AGRA-282 003 PHONES : 3353102, 353100, 354300

Name: Baikunthi Devi Age: ______ Yrs. Date: 23.11.06 Ref: 3

Clinical Findings: FUE of wertheims.

Clinical Diagnosis: ______ LMP: ______

☐ GYNAECOLOGICAL ☐ OBSTETRICAL ☐ BREAST ☒ ABDOMEN

☐ TAS ☐ TVS ☐ CD ☐ TV CD

Vaginal vault shows radiation fibrosis.

No collection/ growth or abnormality seen in pouch of douglas.

Liver is normal in echotexture and there is no abnormal echogenicity seen.

Both kidneys are normal in size with no evidence of hydrorefhrosis or hydroueters.

Pouch of Douglas--- NAD

OBSTETRICAL BIOMETRY :		GEST. AGE BY DATES	W	D	GEST. AGE BY USG	W	D	EDD :
CRL	mm	= W	D	± W	GSD :			mm
BPD	mm	= W	D	± W	Present Foetal Weight			Gms.
FL	mm	= W	D	± W	Growth Pattern			
FAC	mm	= W	D	± W				

IMPRESSION : Pelvis and abdomen- NAD

ADVICE : Repeat scar after 6 months alongwith pap smear.

NOTE : Due to technical limitations, congenital birth defects may remain undetected by ultrasound

UNCLAIMED REPORTS SHALL BE DESTROYED AFTER 2 MONTH

NOT VALID FOR MEDICO-LEGAL PURPOSES

(सन्दर्भ-२८५)

निकला उससे ज्ञात हुआ कि रोग पूरे शरीर में फैल गया है *(सन्दर्भ-२८३, २८४)* । (६) डॉक्टर ए. के. शर्मा, एस एन हास्पीटल में इलाज कराया। वहाँ इन्जेक्शन लगाये गये और सिंकाई के लिए कहा गया। मेरी माँ कहने लगी कि वह न तो दवा खायेगी और न सिंकाई करायेगी। (७) जब भी आगरा में इन्जेक्शन लगते हैं, भूख मर जाती है। कुछ भी खाने का मन नहीं करता है। (८) इस समय चल फिर रही है। दिन में दो-तीन रोटी भी खा लेती है। कमजोरी बहुत हो गयी है।"

इन समस्याओं के बीच श्रीमती बैकुण्ठी देवी के लिए जीवन इसलिए और दूभर हो रहा था कि उन्हें कैन्सर जैसा रोग था। मानसिक रूप से कैन्सर का नाम ही आदमी को बीमार बना देता है। इसी दौरान डी. एस. रिसर्च सेण्टर का पता चला और वहाँ से औषधि मंगाने का निर्णय लिया गया।

ॐ

मोहन सिंह वर्मा
227 दलपत ...
मथुरा
दिनांक 7/10/96

आदरणीय डाक्टर साहब
सादर नमस्कार
अत्र कुशलम् तत्रास्तु।

आगे समाचार यह है कि मेरी माताजी (श्रीमती बैकुण्ठी देवी) की दवा दिनांक 12/13 सितम्बर माह में एक माह की ले गया था। जिससे उनके चेहरे की रौनक अच्छी हुई थी। तथा आपरेशन के बाद 1/2 दो रोटी खाती थी। लेकिन आप की दवा लेने से 3-4 रोटी तक खुराक हो गयी है।

शेष-धन्यवाद

भवदीय
मोहनसिंह वर्मा
8/10/96

(सन्दर्भ-२८६)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १२.०६.६६ से।

बैकुण्ठी देवी को 'सर्वपिष्टी' ने अपेक्षाकृत जल्दी और अच्छा प्रभाव दिखाया। औषधि का सेवन प्रारम्भ करने के एक महीने के बाद ही बैकुण्ठी देवी के पुत्र श्री मोहन ने पत्र लिखा, "...मेरी माता जी (श्रीमती बैकुण्ठी देवी) की दवा दिनांक १२/१३ सितम्बर माह में एक माह की ले गया था जिससे उनके चेहरे की रौनक अच्छी हुई थी। आपरेशन के बाद एक-आध रोटी ही खाती थी लेकिन आपकी दवा लेने से ३/४ रोटी तक खुराक हो गयी है..." *(सन्दर्भ-२८५)*। २३.१२.६६ को भेजे पत्र में सूचित किया गया कि बैकुण्ठी देवी को कोई समस्या नहीं है।

श्रीमती बैकुण्ठी देवी के स्वास्थ्य की सूचना समय-समय पर केन्द्र को प्राप्त होती रही। बाद के सभी रिपोर्ट में उनको सामान्य बताया गया। दिनांक २३.११.६६ को ही डॉ. मुकेश चन्द्र ने श्रीमती बैकुण्ठी देवी की जाँच करायी और उनको सामान्य बताया। *(सन्दर्भ-२८६)*

ॐ

Mohan Singh ...
227 Dalpat Khirki
Mathura (U.P.)
Date 25-?-97

आदरणीय डाक्टर साहब को मेरा नमस्कार
अत्र कुशलम् तत्रास्तु।
अपरंच यह कि आप का पत्र मिला मुझे बहुत शर्म महसूस हो रही है कि आप के पहले पत्र का जवाब नहीं दे सका जिसके लिए क्षमा चाहूंगा। एक कहावत है कि दुख में सबको याद करता है इनसान सुख में सभी भूल जाता है। ठीक यही हुआ भी।
अब आप ने मेरी माताजी श्रीमती बैकुण्ठी देवी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी चाही है सो वह बिल्कुल स्वस्थ दिखाई दे रही है। अच्छा खाना खाती है और घर का सारा कार्य भी करती है इसीलिए हमने दवा भी बन्द करदी थी।
सधन्यवाद

देरी के लिए क्षमा
आपका शुभचिंतक
मोहन सिंह

(सन्दर्भ-२८७)

काफी दिन बीत जाने के बाद केन्द्र ने श्रीमती बैकुण्ठी देवी के स्वास्थ्य की जानकारी के लिए उनके घर एक पत्र भेजा जिसके जवाब में उनके पुत्र ने आत्मग्लानि से भरकर लिखा, "...आपका पत्र मिला। मुझे बहुत शर्म महसूस हो रही है कि आप के पहले पत्र का जवाब नहीं दे सका जिसके लिए क्षमा चाहूँगा। एक कहावत है कि दुःख में सबको याद करता है इनसान, सुख में सब भूल जाता है। ठीक यही हुआ भी। अब आपने मेरी माता जी श्रीमती बैकुण्ठी देवी के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी चाही है। सो वह बिल्कुल स्वस्थ दिखायी दे रही हैं। अच्छा खाना खाती हैं और घर का सारा कार्य भी करती हैं। इसीलिए हमने दवा भी बन्द कर दी थी..."। *(सन्दर्भ -२८७)*

08

सेवा में, ——— २९७ : दलपत [illegible]
मथुरा
दिनांक 3/3/2000

डाक्टर सहाब,
डी० एस० रिसर्च सेन्टर
रवीन्द्रपुरी कॉलोनी वाराणसी।

महोदय,
मैं क्षमा चाहता हूँ कि आप को कोई पत्र नहीं डाल सका क्यू कि ऐसा प्राय: होता है काम के आने के पश्चात मनुष्य भूल जाता है। लापरवाह हो जाता है इस के लिये पुन: क्षमा चाहता हूँ।
मेरी माताजी आप की दवा से पूर्ण स्वास्थ्य हैं सब काम करती हैं लेकिन [illegible] महसूस होते हैं। आप के इलाज के बाद स्वास्थ्य ही [illegible] जगह जाती आती हैं [illegible] खाना खाने भी लगी हैं। अब किसी प्रकार की परेशानी नहीं है।

आप का शुभचिन्तक
मोहन [illegible]

(सन्दर्भ-२८८)

लगभग इसी तरह का एक पत्र दिनांक ३.३.२००० को श्री मोहन ने अपनी माता जी के स्वास्थ्य के विषय में लिखा और पत्र देर से भेजने के लिए क्षमा याचना की। *(सन्दर्भ-२८८)* दिनांक २६.०४.२००१ को श्रीमती बैकुण्ठी देवी की पुत्रवधु श्रीमती सुनीता वर्मा ने केन्द्र को पत्र लिखा, ''मेरी सासू माँ जी श्रीमती बैकुण्ठी देवी वर्मा का स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक है। आपकी वजह से ही उन्हें नया जीवन मिला है। हम सदा आपके आभारी रहेंगे....''। *(सन्दर्भ-२८६)*

26.4.01
मथुरा

Respected Sir. मेरी सासू माँ जी श्रीमति वैकुन्ठी देवी वर्मा का स्वास्थ्य अब बिल्कुल ठीक है। आपकी वजह से ही उन्हें नया जीवन मिला है। हम सदा आपके आभारी रहेंगे।
आपने कई बार उन्हें बनारस Meeting पर बुलवाया किन्तु किन्हीं कारणवश वे आ न सकीं। इसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। पर अब वो June में वहाँ आपसे मिलने आना चाहती हैं। धन्यवाद

Sunita Verma

(सन्दर्भ-२८६)

दिनांक ३१.०७.२००१ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के एक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए श्रीमती बैकुण्ठी देवी वाराणसी अपने पति के साथ आयीं। कहीं से नहीं लगता था कि वे किसी समय कैन्सर के जाल में फँस चुकी थीं। एकदम प्रफुल्लित, दमकता चेहरा लिए वे सामान्य महिला की तरह लग रही थीं। अब कैन्सर अथवा उसके भय से वे बिल्कुल दूर चली आयी थीं।

५४

"दरअसल आपके निमित्त से अब एक 'जीने का मकसद' मिल गया है।... .'आपकी औषधियों के माध्यम से लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना' (यही है नयी जिन्दगी का मकसद), आनन्द आ रहा है।"

श्रीमती शान्ति देवी को यह सहज बोध है कि 'सर्वपिष्टी' ने उन्हें जो जीवन दिया, वह नया जन्म है। २७.११.६७ को वे वाराणसी केन्द्र पर आईं थीं—चेहरे की आभा, भाव-उल्लास और बात-व्यवहार से ऐसा लगता था, जैसे वे अपने मायके आ गयी हों। नये जीवन का मायका यह केन्द्र ही तो है !

ओवरी का कैन्सर
(CA. OVARY)

श्रीमती शान्तिदेवी, ४७ वर्ष
पत्नी : श्री किशोरी लाल
मेजानाइन फ्लोर, 'अम्बर टावर्स'
(होटल चन्द्रविहार के सामने)
३६५, एवेन्यू रोड
बंगलोर-५६०००२

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा

१. बंगलोर में दि. २४.३.६३ को हिस्टोटोमी की गयी थी, पर उस समय कैन्सर नहीं पाया गया था।
२. अचानक पेट में दर्द होने पर बंगलोर में ही दि. १६.५.६४ को एक्सप्लोरेटरी लेपरोटोमी की गयी तथा हिस्टोपेथालोजिकल जाँच में "पेपिलरी सिस्टऐडिनो कार्सिनामा" पाया गया। साथ ही एपेण्डिस में 'एडेनो कार्सिनोमा' की मेटास्टेटिक ग्रोथ पायी गयी थी। किमोथेरापी के छह कोर्स चलाये गये। मेटास्टेटिक ग्रोथ भी पायी गयी थी।*(सन्दर्भ-२६०)*
३. मई १६६५ में फिर ऑपरेशन करना पड़ा तथा मणिपाल हॉस्पीटल, बंगलोर द्वारा दि. २५.५-६४ को की गयी हिस्टोपेथालाजी जाँच में (ओ.पी. नं. ८४३८१, बायाप्सी नं. १०५५/६४) "पेपिलरी एडीनो कार्सिनोमा" ओवरी पाया गया। *(सन्दर्भ-२६१)*

DISCHARGE SUMMARY . Date: 24/5/94

(Dictated By Dr.Renuka)/F

Name.Mrs. Shanthi Devi Age: 44 yrs IP.NO.94/ 15.5.94

W/o.Mr. Kishore Lal D.O.A: 15.5.94

EXPLORATOMY LAPAROTOMY FOR EXCISION OF OVARIAN TUMOR ? MALIGNANT DONE ON 16/5/94:-

HPE. Report:-

At places cystic cavities with papillary projections lined by malignant cells are seen - PAPILLARY CYSTADENOCARCINOMA-OVARIES-.

Sections from the appendix show foci of malignant tumour deposities in the muscular and subserosal layer - METASTATIC ADENOCARCINOMA-APPENDIX.

Sections from the tube show a indistinct foci of tumour deposits.

Advise on discharge:-

To admit on 26/5/94 for Chemotherapy.

-/ for Dr Subodhan Chowdhury /

(सन्दर्भ-२६०)

४. चार कोर्स किमोथेरापी के चलाये गये, किन्तु उसके बाद बीच में ही बन्द कर देना पड़ा क्योंकि रोगिणी की हालत खराब हो गयी और उसने इनकार कर दिया।

५. सन्तोष हॉस्पीटल बंगलोर द्वारा दि. ४.१.६५ को फिर हिस्टोपैथॉलोजिकल जाँच की गयी तथा 'पेपिलरी एडिनो कार्सिनोमा' पाया गया। *(सन्दर्भ-२६२)*

MANIPAL HOSPITAL, BANGALORE-560017

HISTOPATHOLOGY REPORT

Name of Patient Mrs. Shanti Devi

Age 44yrs Sex Female O. P. No 84381

I. P. No

Postal Address of Doctor and Hospital DR. RAGHAVAN

Biopsy No 1035/94

OON

MICRO: A-E - Multiple sections show a papillary adenocarcinoma with infiltration of the appendiceal wall from without. Fallopian tube is normal.

DP: Papillary Adenocarcinoma - Ovary.

Infiltration into appendix.

Date of the Report: 25.05.94

Suresh Chandra

DR: SURESH CHANDRA

CONSULTANT PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-२६१)

SANTOSH HOSPITAL
6/1, Promenade Road, Bangalore-560 005

Number	: 4	Date	: 04-01-1995
Name	: MRS. SHANTHI DEVI	Sex	: FEMALE
Age	: 45 YRS	IN-PATIENT (30)	
Referred By	: DR.B.S.SRINATH.MS.FRCS.		

HISTOPATHOLOGY REPORT

Specimen : 1. NODULE FROM LEFT PELVIC BRIM
2. OMENTUM

Clinical Diagnosis : PAST HISTORY OF OVARIAN CARCINOMA.

SURGICAL PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-२६२)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : ३०-३-६५ से।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ होने के लगभग पाँच महीने बाद श्रीमती शान्ति देवी के पति ने सेन्टर को दिनांक १२.६.६५ को पत्र लिखकर उनके स्वस्थ होने की सूचना दी। *(सन्दर्भ-२६३)*

लगभग आठ महीने 'सर्वपिष्टी' चल जाने के बाद श्रीमती शान्ति देवी के सुपुत्र श्री नेमीचन्द जी ने १५-१२-६५ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी को एक लम्बा पत्र लिखा, जिसमें रोग और चिकित्सा का पूरा विवरण है। उक्त पत्र के कुछ अंश प्रस्तुत हैं। *(सन्दर्भ-२६४)*

''मेरी माता जी श्रीमती शान्ति देवी को मई १६६४ में अचानक हल्का पेट-दर्द शुरू हुआ। जाँच कराने पर पता चला कि ओवरी में दो ट्यूमर हो गये हैं और काफी एडवांस स्टेज में हैं। ऑपरेशन हुआ किन्तु उसके द्वारा पूरा ट्यूमर नहीं निकाला जा सका। डाक्टरों के कहे अनुसार छह कोर्स किमोथेरापी के दिये गये, जिसकी वजह से सिर के सारे बाल झड़ गये, उल्टियाँ होती रहीं, पाँच बार रक्त की जरूरत पड़ी एवं सारे शरीर में असहनीय गर्मी महसूस होती थी। हिस्टोपैथालाजी रिपोर्ट के अनुसार कैन्सर अभी भी था। उन्होंने फिर से चार कोर्स किमोथेरापी लेने के लिए कहा। माता जी ने किमोथेरापी के लिए स्पष्ट मना कर दिया, क्योंकि एक तो वे काफी कष्टदायक थे और किमोथेरापी के बावजूद ठीक होने की गारण्टी नहीं थी।

ESVEE TRADING COMPANY
(Wholesale Stationers)

No. 37, 1st Floor,
Nanal Quarters, Mamulpet
Bangalore-560 053

Date: १२-५-९४
मंगलवार

Ref: औषधि हेतु ड्राफ्ट एवं प्रार्थना

श्रीमानजी वैद्यराजजी, बनारस

आपकी सेवा में और एक बार जानकारी देते हैं कि श्रीमतीजी अब स्वस्थ बन चुकी हैं। वैसे खून की जाँच कराकर आपको नतीजा भेजा जायेगा। आपका उपकार भुलाया नहीं जा सकता - ना ही कर्ज चुकाया जा सकता है। अगर कोई हुक्म तो अवश्य लिखें।

धन्यवाद,
[signature]
श्रीमती शान्तीदेवी बैंगलोर

(सन्दर्भ-२६३)

"उसी वक्त दिल्ली से बंगलोर हवाई-यात्रा के दौरान 'राष्ट्रीय सहारा' अखबार में डी. एस. रिसर्च सेण्टर के बारे में एक लेख पढ़ने को मिला, जिससे मैं काफी प्रभावित हुआ। बंगलोर आते ही तुरन्त माताजी को वाराणसी भेजकर औषधि लेनी प्रारम्भ की।

"औषधि के परिणाम तेजी से महसूस होने लगे। पूरे शरीर में जो गर्मी महसूस होती थी, वह खत्म हो गई। रक्त-जाँच के परिणाम तेजी से सुधरने लगे। (पहले तो) डाक्टरों के अनुसार माता जी के स्वस्थ होने की उम्मीद ३० से ४० प्रतिशत भी नहीं थी। परन्तु आज माता जी डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि की बदौलत पूर्णतया स्वस्थ हो चुकी हैं एवं बिल्कुल सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं। न केवल घर का सारा कामकाज करती हैं, बल्कि पूजा-पाठ वगैरह करने के लिए रोज मन्दिर (भी) जाती हैं।

"इन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि ये वही हैं, जिनको किसी डाक्टर ने रिपोर्ट देखकर सिर्फ एक साल और

----- जाँच कराने पर पता चला कि Ovaries में दो ट्यूमर हो गये हैं। तुरंत आपरेशन करवाना पड़ा। Histopathology रिपोर्ट से पता चला कि कैन्सर है एवं काफी advance stage में है। आपरेशन द्वारा पूरा ट्यूमर नहीं निकाला जा सका। डाक्टरों के कहे अनुसार 6 कोर्स Chemotherapy के छः महीनों के दौरान दिये गये।
----- बाद में डाक्टरों के कहने के अनुसार दोबारा आपरेशन करवाया गया।
- - - - - - - - - - - - - - -
औषधि के परिणाम तेजी से महसूस होने लगे। माताजी D.S. Research Centre की औषधि बदौलत पूर्णतया स्वस्थ हो चुकी हैं एवं बिल्कुल सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं। लिए रोज मंदिर जाती हैं। इन्हें देखकर कोई नहीं कह सकता कि ये वही हैं जिनको किसी डाक्टर ने रिपोर्ट देखकर सिर्फ 1 साल बताया था। ----
कैन्सर लड़ाई हार चुका है।"

15/12/95
Nemichand. K
S/o Smt. Shanthidevi.

(सन्दर्भ-२६४)

बंगलोर सिटी
ता० १५-२-१९९६

श्रीमान् वैद्यराजजी, काशी,

आगे शान्तीदेवी की तबियत एकदम ठीक है। दरअसल आपके निमित्त से अब एक "जीने का मकसद" मिल गया है, आगे भी आपकी औषधियों द्वारा लोगों को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना - आनंद आ रहा है।

धन्यवाद

श्रीमती शान्तीदेवी, 46 years, बैंगलोर

(सन्दर्भ-२६५)

जीने की बात बताई थी। इसके बाद हमने दूसरे भी कई कैन्सर के मरीजों को वाराणसी का पता दिया, जिनका स्वास्थ्य आश्चर्यजनक तरीके से सुधर रहा है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर की निःस्वार्थ मेहनत की बदौलत लगता है कि कैन्सर वाकई हार चुका है।"

जिन्दगी मिल गयी और 'जीने का मकसद' भी मिल गया। मान लिया 'सर्वपिष्टी' ने कैन्सर से मुक्त करके जिन्दगी तो दी किन्तु जीने का मकसद ? वह तो इन्सान के भीतर की जागृति है, आत्मा की गहराई तक पहुँची हुई आत्म-स्वीकृति है।

BANGALORE X-RAY CLINIC

Name : Mrs.Shanti Devi   Age : 46 years

Ref. by : Bangalore Inst. Of Oncology   No. : ......

Investigation : Abdominopelvic Scan   Date : 06.11.96

X-ray
U/S Scan
2D-ECHO

REPORT

Bladder : Is normal in wall thickness, capacity and outline.
No distal ureteric pathology or intravesicle filling defect seen

Uterus : Post - op.

Adnexais : No mass or pathology noted.

Others : No ascites or pleural effusion noted.
No demonstrable enlarged retroperitoneal lymph nodes seen.
Subdiaphragmatic areas are normal.

IMPRESSION: NORMAL STUDY.

DR. GIRISH R.

C.R. Sen M.T (ASCP) USA

REPORT

Patient ID : 00000808   Date : 06/11/96
SHANTHI DEVI.K.   FEMALE 46 Yrs 08 Months
Ref. Doctor :

INVESTIGATION	RESULTS	NORMAL VALUES
CA.125	0.30 ng/ml	< 35.0 NORMAL.

(सन्दर्भ-२६६)

SPURTHI DIAGNOSTICS PRIVATE LIMITED

(A CENTRE FOR RADIOLOGY AND IMAGING)

103/2, Blue Cross Chambers, Infantry Road Cross,
Bangalore–560 001. Phone: 5391947

ULTRASONOGRAPHY REPORT

Date : 16-03-1997

Ultrasound # : 438

Name : MRS. SHANTHI DEVI

Sex : FEMALE

Age : 46 YRS

Referred By : DR. SHEKAR PATEL

Sonologist : DR. SMRITA SWAMY

Scanned : ABDOMEN AND PELVIC SCAN

IMPRESSION : NORMAL STUDY OF ABDOMEN AND PELVIS

Rama Sen. C
Dr. Kanan J. Gharpure
Dr. V. Shrinivas MD,
Dr. Archana Agarwal MD,

Radiologist

REPORT

Patient ID : 00000888 Date : 16/03/97
SHANTHI DEVI.K. FEMALE 46 Yrs 08 Months
Ref. Doctor : SHEKAR PATIL

INVESTIGATION	RESULTS	NORMAL VALUES
CA.125	9.00 ng/ml	< 35.0 NORMAL.

Rama...C

(सन्दर्भ-२६७)

श्रीमती शान्ति देवी ने अपने जीने का मकसद तय किया है कि वे पोषक ऊर्जा की निरापद तथा गुणकारी औषधियों द्वारा पीड़ित मानवों की सेवा का एक क्षेत्र तैयार करेंगी।

श्रीमती शान्ति देवी के पति श्री किशोरी लाल जी ने १२-६-६५ के पत्र में लिखा- "आगे शान्ति देवी की तबीयत एकदम ठीक है। दरअसल आपके निमित्त से अब एक 'जीने का मकसद' मिल गया है। उसमें भी आपकी औषधियों द्वारा लोगों को स्वास्थ्य-लाभ पहुँचाना—आनन्द आ रहा है।" *(सन्दर्भ-२६५)*

विगत दो वर्षों से भी अधिक समय से श्रीमती शान्ति देवी पूर्ण रूप से स्वस्थ, सामान्य तथा रोगमुक्त हैं। समय-समय पर उनकी जाँच होती रहती है, जिसकी रिपोर्ट की कॉपी केन्द्र को भेजती रहती हैं।

यहाँ इसी प्रकार की छह-छह महीने के अंतराल की दो रिपोर्ट दि. ६.११.६६ तथा १६.५.६७ की दी जा रही है। *(सन्दर्भ-२६६ और सन्दर्भ-२६७)*

---

२६८ कैन्सर हारने लगा है

मे शान्ती देवी करिबन तीन साल पेले बनारस
कैंसर के इलाज के लीये यहाँ आइथी। इससे
पेले बिलाती इलाज तीन आपरेशन तथा
छ कोरश लीयथे। दो बडे कोरश लेनेके
लीये जब डाक्टरोने कहा तो सींता होरही थी
पर राश्ट्रीय साहारा पेपर को पडने से आपका
पता चला। आपके इलाज से शरिर की
खोटी गरमी मीट गयी। भुख बराबर लगने
लगी। नीद ठीक आने लगी। शीर के बाल
वापस आगये। शरिर का वजन पेले जेसा
हो गया। सब मिलाकर आराम ही आराम है।

शान्तीदेवी

27-11-1997

मैं शान्ति देवी करीब तीन साल पहले बनारस कैंसर के इलाज के लिए आयी थी। इससे पहले अंग्रेजी दवा का इलाज, तीन बार आपरेशन और छः कोर्स किमोथेरापी का हुआ था। दो बड़े कोर्स के लिए जब डाक्टरों ने कहा तब चिन्ता हुई। राष्ट्रीय सहारा अखबार पढ़कर आपका पता चला। आपके इलाज से गरमी मिट गयी, भूख बराबर लगने लगी, नींद ठीक आने लगी, शरीर के बाल वापस आ गये और शरीर का वजन पहले जैसा हो गया। सब मिलाकर आराम ही आराम है।

(सन्दर्भ-२६८)

दिनांक २७.११.६७ को श्रीमती शान्ति देवी स्वयं ही सपरिवार रिसर्च सेण्टर की वाराणसी शाखा पर आ गयीं। रोग से पूरी तरह मुक्त, पूर्ण स्वस्थ, प्रसन्न, विजय-गर्व चेहरे पर झलकता हुआ। अपनी उत्तम स्वास्थ्य-स्थिति की सूचना उन्होंने अपने हस्ताक्षर से और अपनी ही लिखावट में प्रस्तुत की। *(सन्दर्भ-२६८)*

❑

५५

पेपिलरी एडेनो कार्सिनोमा (PAPILLARY ADENO CARCINOMA)

श्रीमती फूलपती देवी, ५२ वर्ष
धर्मपत्नी : श्री कविनन्द जी सिंह
ग्रा. व पो. : वाजिदपुर
जिला : बलिया (उ. प्र.)

रोग का इतिहास : (कवि नन्द सिंह जी ने दिया)- १९९१ से ही रक्त-स्राव होता था। मिनोपाज के बाद के इस रक्त-स्राव से चिन्ता स्वाभाविक थी। एक-दो बार स्थानीय चिकित्सकों को दिखाया गया। विशेष लाभ नहीं होने पर छपरा के चिकित्सक का इलाज शुरू हुआ। दवा चलती तो रक्त-स्राव कुछ दिनों के लिए थम जाता, फिर शुरू हो जाता। श्रीमती फूलपती पेट में भारीपन और कड़ेपन की बात कहतीं, किन्तु चिकित्सा का ध्यान रक्त-स्राव रोकने वाली दवाओं पर था। स्वास्थ्य में गिरावट आती जा रही थी। जून ९२ में बहुत अधिक मात्रा में रक्त-स्राव हुआ और रोगिणी ने चारपाई पकड़ ली। लोगों ने अन्यत्र चिकित्सा की सलाह दी, तो लादकर रोगिणी को वाराणसी लाया गया।

L39 ≠03 / ०:90 / 255992

INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
S. S. HOSPITAL
BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI
Laboratory Examination Report

Patients Name: Phool pati
Age/Sex: 52 f. Ward/O.P.D.: Septic Bed No./O.P.D. No.:
Specimen: Uterus & O. fistula, ovary & omentum Report No.:
Ref. by Dr.: N. K. Agrawal
Date of Receipt / Date of Despatch: 1.9.
Pathologist / Microbiologist

(सन्दर्भ-२९९)

जाँच : दिनांक ८.७.९२ को बी. एच. यू. के अस्पताल में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों ने वस्ति-प्रदेश से लेकर ओवरी तक फैले हुए एक बड़े ट्यूमर की उपस्थिति

INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES & S. S. HOSPITAL, B. H. U.

CASE SUMMARY & DISCHARGE RECORD

Name of Patient: Phoolpati

Service & Unit

Hospital No. 9127

Date of Admission: 8/7/92

Date of Discharge: 26/8/92

Attending Physician/Surgeon: Dr. N. R. Agrawal

RESULT

INSTRUCTION TO THE PATIENT

Operation: on 17/7/92 by Dr. N. R. Agrawal.
Pre op Δ: - Benign Ⓡ ovarian cyst
Post op Δ: Malignant ovarian.

Signature

Date	Findings / Note
	A big Ⓡ ovarian cyst ⊕ c̄ haemorrhagic fluid & solid areas
	Ⓛ ovary - irregular growth involving the Ⓛ ovary & adherent to peritoneum
	Operation: TAH c̄ BSO
	Omentectomy also done

TO COME WITH HISTOPATHOLOGY REPORT as soon as available to start Chemotherapy

(सन्दर्भ-३००)

नोट की। उनका अनुमान था कि ट्यूमर 'बिनाइन' होना चाहिए। ऑपरेशन द्वारा इसे शीघ्र निकाल देना आवश्यक लगा।

रोगिणी के स्वास्थ्य में सुधार लाकर १७.७.६२ को कुशल सर्जन डॉ. एन. आर. अग्रवाल ने ऑपरेशन किया (हास्पीटल नं. ६१२७)। पेट खोलने पर डॉ. अग्रवाल ने मामले की जटिलता देखी। ट्यूमर ने ओवरी, ओमेन्टम, यूटरस, फेलोपियन ट्यूब सबको जकड़ रखा था और देखने से स्पष्ट 'मैलिग्नैन्ट' मालूम हो जाता था। डॉ. अग्रवाल ने ऑपरेशन द्वारा काटकर निकाले गये सभी भागों की विधिवत जाँच के लिए विशेष निर्देश दिया। *(सन्दर्भ-२६६)*

दिनांक २६.७.६२ को रोगिणी को अस्पताल से छुट्टी दी गयी। वे अभी भी कमजोर थीं। वजन साढ़े उन्तालीस किलो आ गया था। डॉ. अग्रवाल ने रोग की स्थिति को बारीकी से देखा था। अब रेडियोथेरापी के लिए कोई गुंजाइश नहीं थी। आवश्यक था कि कैन्सर की पुष्टि होते ही बिना किसी प्रकार का बिलम्ब किए किमोथेरापी प्रारम्भ कर दी जाय। उन्होंने कवि नन्दजी सिंह को बुलाकर स्पष्ट हिदायत दे दी कि हिस्टोपैथॉलॉजिकल रिपोर्ट मिलते ही वे उनसे मिलें और रोगिणी को वाराणसी में ही रखें ताकि किमोथेरापी

L39709

INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES 25-51-
S. S. HOSPITAL 21-5-9
BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI
Laboratory Examination Report
Patients Name............... Ph. [illegible]
Ward Bed No. 13/8/92

a half of ovary shows irregular internal surface & showing warty appearance.
outer surface smooth.
Microscopic Diagnosis:-
Mild chronic cervicitis with one [illegible]
follicle. Uterine canal is lined by
proliferative endometrium
ovary - Papillary adeno carcinoma-

(सन्दर्भ-३०१)

शुरू की जा सके। इसका हवाला उन्होंने डिस्चार्ज सर्टिफिकेट में भी दिला दिया कि ''हिस्टोपैथॉलॉजिकल रिपोर्ट मिलने के बाद बिना देर किये आ जायँ ताकि किमोथेरापी प्रारम्भ की जा सके।'' *(सन्दर्भ-३००)*

जाँच-रिपोर्ट रोगिणी को छुट्टी दिये जाने के १७ दिनों के बाद प्राप्त हो सकी। कवि नन्दजी सिंह का मन डॉ. अग्रवाल की आशंका को ताड़ गया था। बी. एच. यू. और अस्पताल का चक्कर लगाते-लगाते उन्होंने कैन्सर और किमोथेरापी-चिकित्सा के विषय में अच्छी जानकारी एकत्र कर ली थी। इस दौरान उन्हें डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में सूचना मिल चुकी थी और एक बार वहाँ होकर भी आ चुके थे। उन्होंने तय कर लिया था कि अगर कैन्सर निकला तो वे किमोथेरापी-चिकित्सा नहीं कराकर डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि पर निर्भर करेंगे। *(सन्दर्भ-३०१)*

१३.०८.९२ को कवि नन्दजी सिंह रिपोर्ट के साथ डॉ. अग्रवाल के सामने उपस्थित हुए। डॉ. अग्रवाल ने बताया कि कैन्सर ही है और किमोथेरापी अति शीघ्र शुरू कर देनी होगी। बताया गया कि वे तैयार हो जायँ। अगले दिन ही चिकित्सा शुरू कर दी जाएगी। कवि नन्दजी बी. एच. यू. कैम्पस से बाहर आये और सीधे डी. एस. रिसर्च सेण्टर पहुँचे। रिपोर्ट थी– 'पेपिलरी सेल एडेनो कार्सिनोमा'।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १५.०८.९२ से

ऑपरेशन से रोग का एक बड़ा बोझ तो उतर ही चुका था, कष्ट भी कम हो गये थे। रोगिणी ने पहले सप्ताह से ही पोषक ऊर्जा की खूराकों का लाभ अनुभव करना

अब पहले से ३ किलो ५०० ग्राम ५१-१ किलोग्राम हो गया है मुँह पहले नहीं थी भूख मालूम होती है
नींद अपने से लग जाती है पहले से ताकत ज्यादा है
स्फूर्ति है पैखाना भी ठीक हो गया है पेशाब भी
ठीक है दर्द जलन भी ठीक है कभी कभी [illegible] दर्द
हल्के दर्द रहता है कभी ठीक हो जाता है
कमर में दर्द अभी थोड़ा थोड़ा बना है और सब ठीक है

नन्दजी सिंह
६-११-६२

(सन्दर्भ-३०२)

शुरू किया। दिन बीते और महीने बीते, स्वास्थ्य क्रमशः सुधरता गया, कष्टों के डोरे टूटते गये, नये उपद्रव शुरू नहीं हुए। कविनन्द जी सिंह का पत्र दिनांक ६.११.६२ का बहुत उत्साहवर्द्धक था। *(सन्दर्भ-३०२)*

तीसरे-चौथे महीने श्रीमती फूलपती ने घर-गृहस्थी के कामों में हिस्सेदारी आरम्भ कर दी और अपने पति को बेफिक्र होकर नौकरी पर चले जाने के लिए छुट्टी दे दी, ताकि गृहस्थी की बिखरती गाड़ी आर्थिक मोर्चे पर भी सँभल जाय। कविनन्दजी सिंह का २४.६.६३ का पत्र सूचित करता है कि वे और रोगिणी खतरे के दलदल से बाहर निकल चुके थे।*(सन्दर्भ-३०३)*

चौबीस सप्ताह तक नियमित खूराकें चलीं। इस बीच बी. एच. यू. अस्पताल में दिखाया भी गया। स्वास्थ्य का विकास देखकर सामान्य जाँच द्वारा ही चिकित्सकों ने बताया कि वे खतरे से बाहर और ठीक-ठाक हैं। जब स्वास्थ्य, स्फूर्ति, शक्ति, भूख, नींद, सब ने गवाही दे दी कि भीतर कैंसर का नामोनिशान नहीं होना चाहिए, तब 'सर्वपिष्टी' बन्द कर दी गयी। कविनन्दजी सिंह ने केन्द्र से नियमित-पत्र-सम्बन्ध कायम रखा। श्री सिंह ने, जो अपने सुख की कथा बीते हुए दुख के वर्णन के बगैर अधूरी मानते हैं,
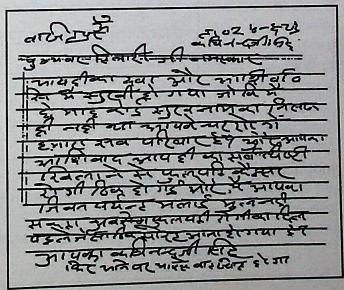
बाबा जी
[illegible] २४-६-६३
कविनन्दजी सिंह
आपकी दवा और आशीर्वाद से मैं खुशी हो गया जो कि मैं
[illegible]
[illegible]
हमारा सब परिवार है और आपका
आशीर्वाद आप ही का सर्वपिष्टी
खिलाने से फूलपति कैंसर
रोगी ठीक हो गई और मैं आपका
जिन्दगी पर्यन्त भलाई [illegible]
[illegible] फूलपति रोगी [illegible]
पहले [illegible] हो गया है
आपका कविनन्दजी सिंह
[illegible]

(सन्दर्भ-३०३)

रोगिणी फूलपति देवी
कविनन्दजी सिंह ग्राम [illegible]
पोस्ट दलनछपरा। जिला, बलिया।

मैं लिखे

डा॰ एस॰ रिसर्च [illegible] में आकर रिपोर्ट पंजी कृत कराया
और १८-६-६२ से दवा स्टार्ट किया गया रोगी की
धिरे-धिरे स्थिति सुधरती गई। पेट में दर्द होता था,
भूख नहीं लगती थी प्यास भी नहीं लगती थी। नाना प्रकार
की परेशानियां उठाया करती थी। सिर भारी रहा था
सभी सर्व [illegible]। खिलाने से ठीक हुआ। हास्पिटल से
निकलने पर ३८ किलो वजन था अभी ५१ किलो वजन है।
[illegible] घटना [illegible] स्वस्थ [illegible]

अभी वर्तमान समय में कोई तकलीफ नहीं हो रही है
मेरी पत्नी का रिपोर्ट और फोटो लोक कल्याण के लिए
छिमा जाय तो कोई आपत्ति नहीं है।

कविनन्दजी सिंह
ता० ११-५-६५

(सन्दर्भ-३०४)

दिनांक ११.५.६५ का पूरे इतिहास का वृत्तान्त देकर हालचाल लिखा। पत्रांश *(सन्दर्भ-३०४ में)* प्रस्तुत है।

आपरेशन के पाँच वर्ष बाद भी (१९६७ में) रोगिणी को कैंसर का रेकरैन्स नहीं हुआ और वर्तमान समय में भी वे पूर्ण स्वस्थ हैं।

उनके पति कवि नन्दजी सिंह परदेस में नौकरी करते हैं। श्रीमती फूलपती की रिपोर्ट वही लिखा करते थे। इस बार श्रीमती फूलपती ने स्वयं कलम उठाकर दिनांक ०२.१०.६७ को अपने स्वास्थ्य के विषय में लिखा। अपनी शिथिल वाक्य - रचना, बेढब लिखावट और शैली-शून्य अभिव्यक्ति के लिए उन्होंने क्षमा-याचना की है। किन्तु हम उनकी कैन्सर पर विजय और स्वस्थ-सशक्त जीवन, जिसके व्याकरण में कोई दोष नहीं है, पर ही गर्व करते हैं। पत्रांश है—"हम लोग यहाँ कुशलपूर्वक ('कुशल' कलम की पकड़ में नहीं आ सका है) रहते हुए आशा करता (करती) हूँ कि आप लोग भी अच्छे होंगे। और सब ठीक है। हमरा रोग नहीं है। और सब ठीक। कार्तिक में आएँगे। रोग दूर हो गया है।" *(सन्दर्भ-३०५)*

Dt. 2 10-67

आदरणीय सादर प्रणाम

हम लोग यहाँ पर पुर्कल रहते हुए आशा
करता हूँ कि आप लोग भी अच्छे
होगें। और सब ठीक है हमरा
रोग नहीं है। और सब ठीक
कार्तिक में आयेगे। रोग दूर हो
गया है।

फूलपति देवी

(सन्दर्भ-३०५)

५६

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. Cervix)

श्रीमती अनिमा धर, ५८ वर्ष
द्वारा : श्री बी. एन. धर
अमुलय प्रामाणिक रोड
पो. : राणाघाट
जि. : नदिया (पं. बंगाल)

पूर्व जाँच एवं चिकित्सा : ईस्टर्न रेलवे हॉस्पीटल, सियालदा में जाँच (नं. ६४२२ दिनांक १६-११-६४)। *(सन्दर्भ-३०६)*

चितरंजन नेशनल कैन्सर इन्स्टीट्यूट हॉस्पीटल (रजि नं. जी/६३/५३५४) में रेडियेशन दिया गया। *(सन्दर्भ-३०७)*

9422

EASTERN RAILWAY — Misc 331

Requisition For Histopathological Examination

B.R.S.H. Hospital, ______ Railway

Date 16/11 1994

Name of the patient: Anima — Age 56 — Sex, F

Ward No. — Bed No. 64 x3

Relation & Guardian: W/O B.N. Dhar

Designation: RELHS — Deptt. — Stn.

Clinical Information—

Complaint— Cx biopsy

BIOPSY REPORT

Squamous cell carcinoma.

[illegible]
ASSTT. DIV. MEDICAL OFFICER
(PATHOLOGY),
B. R. SINGH HOSPITAL SEALDAH

(सन्दर्भ-३०६)

CHITTARANJAN NATIONAL CANCER INSTITUTE (HOSPITAL)
CALCUTTA-26

Name Smt. Anima Dhar
Regn. No G/93/5354
Date of 1st attendance 3.12.93

BOARD

Radio Therapy

4/1/94

(सन्दर्भ-३०७)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : ३१-१-६४ से

श्रीमती धर नवम्बर १६६३ में चितरंजन अस्पताल पहुँचीं, उसके पहले ही रोग बहुत बढ़ चुका था और तेजी से बढ़ता जा रहा था। ३-बी स्टेज बताया गया। अस्पताल ने रेडियेशन करके एक उग्र ट्यूमर को जला दिया। रेडियेशन का कोर्स ४-१-६४ को पूरा हुआ।

अब बारी थी किमोथेरापी की। श्रीमती धर के सम्बन्धियों को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में पता लगा। उन्होंने किमोथेरापी की अपेक्षा 'सर्वपिष्टी' की ओर जाना उचित समझा। ३१-१-६४ से 'सर्वपिष्टी' आरम्भ कर दी गयी। पेशाब की जलन, बदबू, स्राव तथा दर्द से छुट्टी पाते-पाते तीन महीने बीत गये। ७-६-६४ की जाँच से पता चला कि रोग बढ़ा नहीं है, कोई नई ग्रोथ नहीं बनी है। औषधि चलती रही।

१-१२-६४ को चितरंजन नेशनल कैन्सर इन्स्टीट्यूट ने जाँचकर बताया कि कहीं भी कैन्सर का कोई चिन्ह शेष नहीं रह गया है। *(सन्दर्भ-३०८)*

Chittaranjan National Cancer Institute
(Hospital)
37, Shyamaprasad Mukherjee Road,
Calcutta-700 020
PRESCRIPTION

Name Smt Anima Dhar
Regd. No. G/93/5354 Bed No.
Date

A case of CA CX IIIB, treated c R.T.
At present on 1-12-94 she is clinically disease free

1.12.94

(सन्दर्भ-३०८)

अब तक श्रीमती धर कष्टमुक्त तो हो ही गई थीं, स्वास्थ्य में भी अच्छा सुधार आया था। घर का काम-काज बखूबी सँभालने लगी थीं।

१-६-६५ को उनकी पुत्री स्निग्धा धर ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को सूचित किया, "आज की तारीख तक कोई असुविधा नहीं है। हर तरह से वे अच्छी हैं। (मूल बंगला पत्र)। *(सन्दर्भ-३०६)*

1.6.95
Pt- Anima Dhar.
[illegible]

S. Dhar
1.6.95

(सन्दर्भ-३०६)

[illegible]
11/11/97
[illegible] Normal; [illegible]

(सन्दर्भ-३१०)

कैन्सर की प्रचण्ड-धारा जहाँ विशाल खण्डों को तोड़कर उनका अस्तित्व समाप्त करते देर नहीं करती, वहीं श्रीमती अनिमा धर के जीवन को स्पर्श देती हुई स्वास्थ्य की मन्दाकिनी प्रवाहित हो रही है। कोई शंका नहीं, कोई यंत्रणा नहीं। दिनांक ११.११.६७ को उनकी पुत्री श्रीमती स्निग्धा धर ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को सूचित किया, "अब तो पहले की तुलना में बहुत ही अच्छी हैं। इस समय कष्ट का तो नामोनिशान नहीं है। भोजन और निद्रा सब कुछ सामान्य है। (परिजन तो) उन्हें काम-काज से अलग रखना चाहते हैं, फिर भी समस्त गृह-कार्यों का संचालन करती हैं। इस औषधि से मेरी माँ पूर्णतः स्वस्थ हैं।" (सन्दर्भ-३१०)।

५७

स्तन कैन्सर

स्तन से बगल तक फैला हुआ डक्ट कार्सिनोमा
(MATASTIC CARCINOMA FROM BREAST)

श्रीमती समिता मित्रा

उम्र : २६ वर्ष

द्वारा : श्री सुबीर कुमार मित्रा।

पता : ग्राम व पोस्ट-कनुई बांका,

जिला-हुगली(प० बंगाल)

जाँच व पूर्व चिकित्सा : कलकत्ता मेडिकल सेण्टर (हिस्टोपैथ नं. ५७७/९४, दिनांक १६.०१.९४)।

कुछ समय से दाहिने स्तन में एक गाँठ थी और एक उसी ओर की काँख (बगल) में थी। पहले दर्द नहीं था। थोड़ी असुविधा होने पर दि. १२/१/९४ को ऑपरेशन द्वारा दोनों

DRS. TRIBEDI & ROY
93, PARK STREET, CAL- 700 016
PHONES : 29-6643, 29-8789, 29-5981

DR. A. R. ROY M.B., PHD. (CAL) D.T.M. & H. & POOL) D. PATH. (ENG)
FORMERLY ASST. PROF. OF PATHOLOGY
& ASST. BACTERIOLOGIST TO THE GOVT. OF W. BENGAL
RES. : 74-0541

DR. SUBHENDU ROY M.B.B.S. (CAL) M.D. (P.G.I.)
RES. : 475-6786

BRANCH :
48A, DIAMOND HARBOUR ROAD,
CAL-700 027 (8 AM — 3 PM)

HISTOPATHOLOGY/CYTOPATHOLOGY REPORT

NAME........Samita Mitra........AGE....29 yrs......SEX........F

ADDRESS.....Greenland N.Home & Poly Clinic   Hooghly

PHYSICIAN..........................DATE OF RECEIPT.....13.1.94

HISTOPATH. NO.......577/94..........DATE OF REPORT.....16.1.94

MATERIAL.......Tissue from Rt. breast

Diagnosis :- Infiltrating Duct carcinoma of breast.

(DR. SUDIPTA ROY)
MBBS (CAL) MD. (PGI), DIP. NBE, DRC PATH. (London)

(DR. SUBHENDU ROY)
MBBS. (CAL) MD. (PGI)

(सन्दर्भ-३११)

Calcutta Medical Centre

Report On Pathological Examination

MATERIAL : Axillary Lymphnode

NAME OF THE PATIENT : Ms Samita Mitra

REFERRED BY Dr. : N Mukherjee

DATE OF RECEIPT : 29.01.94 DATE OF REPORT : 04.02.94

Microscopically :

Sections show histology of a metastatic carcinoma.

Diagnosis : Metastatic carcinoma from breast.

DR. K. P. SEN GUPTA (M.B., D.Phil., F.A.M.S., F.B.M.F.)
(DIRECTOR)

DRS TRIBEDI .

(सन्दर्भ-३१२)

गांठों को निकलवा दिया गया। जाँच से जब पता चला कि यह मेटास्टेटिक डक्ट कार्सिनोमा है, *(सन्दर्भ -३११, ३१२)* जो दोनों गाँठों तक ही सीमित नहीं होकर पूरे क्षेत्र को आच्छादित किये हुए है, तो दुबारा ऑपरेशन द्वारा दाहिने स्तन के साथ ही पूरे क्षेत्र को सावधानी पूर्वक निकाल दिया गया। चित्तरंजन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता में बीस रेडियेशन चले। चिकित्सकों ने किमोथेरॉपी के छः चक्र देने का परामर्श दिया था। इसी बीच डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि सर्वपिष्टी प्रारम्भ कर दी गयी। सर्वपिष्टी शुरू करने तक रोगिणी को कोई कष्ट तो नहीं था, किन्तु कैन्सर मेटास्टेटिक स्वभाव का था, अतः उसके जल्दी ही अस्थियों में फैल जाने की आशंका थी।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक २६/०५/६४ से।

सर्वपिष्टी ने रोगिणी को शारीरिक स्वास्थ्य दिया, मनोबल बढ़ाया और उन्होंने एक नयी जिन्दगी का अनुभव किया। सर्वपिष्टी चलती रही। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के परामर्श से एक बार टाटा

Thank you for your letter 25.2.2000 and glad to know that you have kept me in mind even after 4/5 years. With the bless of God I am now in capital health. At present I donot feel any difficulties. I am absolutely leading my normal life.

Hope you are all keeping well. I pray to God for your good health and prosperity of your Organisation so that it can serve lot of people in future also. Thanking you.

yours faithfully.
Samita Mitra

[illegible] Letter

(सन्दर्भ-३१३)

20/5/2001

To
D.S. Research Centre
Varanasi

Attn - Dr. Trivedi.

Dear Sir,
I have received your letter dt 4.5.001. in which you wanted to know about your patient- Mrs Sumita Mitra. You will be glad to know that your patient is absolutely O.K. at present. She has no problem indeed. All medicine have been stopped by the Chittaranjan Cancer Hospital.
Hope you are all keeping well. I pray to God for your prosperity.
Thanking you.

Yours faithfully
Subir Kumar Mitra
Vill+P.O- [illegible]
Dist - Hooghly
W.B.
Pin - 712301

(सन्दर्भ-३१४)

मेमोरियल अस्पताल, बम्बई में जाकर पूरे शरीर की अस्थियों का स्कैन कराया गया। कहीं कैन्सर का नामोनिशान नहीं पाया गया, तो उत्साह और बढ़ा। सब कुछ सामान्य देखकर और यह आश्वासन मिल जाने पर कि अब रोग का पुनः उद्रेक नहीं होगा, जून १९९९ के बाद से सर्वपिष्टी बन्द कर दी गयी।

श्रीमती समिता मित्रा एक आदर्श स्वास्थ्य के साथ जीवन की कर्म-धारा में अन्य स्वस्थ लोगों की भाँति ही उत्साह एवं प्रसन्नता से चल रही हैं।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर द्वारा २५/०२/२००० को लिखे गये पत्र के उत्तर में उन्होंने लिखा है, "मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि आपकी औषधि का सेवन बन्द कर देने के चार-पाँच वर्ष बाद भी आपको मेरा स्मरण है। ईश्वर की कृपा से अब मैं एक बुलन्द स्वास्थ्य वाली पूरी तरह से स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही हूँ।....आपकी संस्था की उन्नति हो ताकि भविष्य में भी बहुतेरे लोगों की प्राण-रक्षा हो सके।" *(सन्दर्भ-३१३)* अंग्रेजी में लिखे पत्र का अनुवाद।

दिनांक २५.०५.२००1 को सेण्टर को लिखे पत्र में श्रीमती समिता मित्रा के पति श्री सबीर कुमार मित्रा ने लिखा है, "...आपने श्रीमती सुमिता मित्रा के स्वास्थ्य के विषय में जानना चाहा है। आपको यह जानकर अत्यन्त खुशी होगी कि वह एकदम स्वस्थ हैं, उन्हें किसी तरह की कोई समस्या नहीं है। चितरंजन कैन्सर अस्पताल की भी सभी दवाइयाँ बन्द हो चुकी हैं..."। *(सन्दर्भ-३१४)*

५८

ओवरी का कैन्सर
(CA. OVARY)

श्रीमती पी. मजूमदार, ६० वर्ष
पत्नी : बी. सी. मजूमदार
१२४/ए., परदेवन पुरवा
यूनाइटेड मॉडल स्कूल के सामने
लाल बंगला, कानपुर

पूर्व जाँच और चिकित्सा : डॉ. आर. एल. जैन मेमोरियल पैथालॉजी लैब में जाँच, २२-२-६४, (लैब नं. आर-४८४/६४) डॉ. बोरबंका द्वारा ऑपरेशन। किमोथेरापी का परामर्श किन्तु नहीं ली गयी। *(सन्दर्भ-३१५)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : ३-३-६४।

ऑपरेशन के समय डॉ. बोरबंका ने कैन्सर का विचित्र विस्तार नोट किया। योनि-मार्ग, गर्भाशय और ओवरी तक को पूरी तरह कैंसर बाँध चुका था। जैसे-तैसे एवं

Dr. R. L. JAIN MEMORIAL PATHOLOGY LAB.

Dr. K. C. SAMUEL

LAB. No. R-484/94
Date of Receipt 19. 2. 94
Date of Despatch 22. 2. 94

PATIENT'S NAME, AGE SEX: Mrs. Mazumdar 50
REFERRED BY Dr.: Dr. Radho Narain
CLINICAL DIAGNOSIS
SPECIMEN: Uterine curettings

HISTOLOGY REPORT

A- Tissue from cervix shows a small piece of do-differentiated squamous cell carcinoma mixed with blood clot.
B- Tissue from curetting shows several such pieces.

(Dr. K. C. SAMUEL)

(सन्दर्भ-३१५)

Dear Doctor. 1-7-94

Now I feel much better and stronger. I do all my house work. I eat well and feel hungry all the time. I was 44 kgs. in March '94, in April I was 45 kgs, in May 46 kgs & now I am just touching 47 kgs (not completed). There is no discharge at all

(सन्दर्भ-३१६)

सावधानी से सर्जिकल सफाई की गयी और तीन स्थानों पर टुकड़े लेकर बायाप्सी की गयी। इलाज का मोर्चा तय हुआ कि ज्यों ही आपरेशन का घाव सूखे, किमोथेरापी चालू कर दी जाय। किन्तु श्रीमती मजूमदार ने कैन्सर-रोगियों, उनकी चिकित्सा और अन्तिम यातनापूर्ण जिन्दगी के विषय में बहुत-कुछ देखा-सुना था। जो भी हो, उन्होंने किमोथेरापी की ओर नहीं जाने का निर्णय ले लिया था। अतः ३-३-९४ को ही 'सर्वपिष्टी' का सहारा ले लिया गया।

मई १९९४ में डॉ. बोरबंका ने आन्तरिक परीक्षा के बाद इस बात पर जोर डाला कि पन्द्रह दिनों के अन्तराल पर एक-एक चक्र किमोथेरापी चलानी चाहिए। किन्तु तब तक 'सर्वपिष्टी' ने श्रीमती मजूमदार को बहुत बल दे दिया था। उनकी भूख, नींद, स्फूर्ति, शक्ति सब सामान्य हो आये थे। वजन बढ़ कर सामान्य तक पहुँच गया था और स्राव भी पूर्ण रूप से नियंत्रित हो चला था। उन्होंने 'सर्वपिष्टी' का ही

This is to inform you that I feel fit and do a lot of work, all my house work I do without any problem. I eat well and sleep well. Only if I go by tempo too much or travel by rickshaw long often then I do feel a little pain on the left side gland. Not bad or something to worry about. I have put on 1 kg weight now I am 48 kgs.

Please advise further what I should do during this summer.

Thanking you

30-8-95 P. Majumdar

(सन्दर्भ-३१७)

P. Majumdar
361/10 Sanjay Market
New Sabzi Mandi
Lal Bangla - Kanpur
12-4-96

Respected Pandith ji

I am writing to you to let you know that I am doing well. I eat well and do all my house work as well as I look after my shop. My weight is 48 kgs.

Thanking you.

P. Majumdar

(सन्दर्भ-३१८)

भरोसा रखा। स्वास्थ्य में सतत् विकास हो रहा था। उन्होंने बाजार आना-जाना शुरू कर दिया था तथा वह अपना कारोबार भी सँभालने लगी थीं। उनके पत्र उनकी स्वास्थ्य-यात्रा का हवाला देते हैं।

अपने १-७-६४ के पत्र में श्रीमती मजूमदार ने केन्द्र को लिखा, "...मैं अब अपने को पहले से कहीं अच्छी हालत में तथा अधिक मजबूत महसूस करती हूँ। घर का सारा काम-काज करती हूँ। हर समय भूख महसूस होती है तथा अच्छी तरह से खाती हूँ। वजन ४४ किलो से ४७ किलो हो गया तथा स्राव की समस्या एकदम समाप्त हो गई है।" *(सन्दर्भ-३१६)*

इसी प्रकार दि. ३०.५.६५ के पत्र में वे लिखती हैं -".....मैं एकदम ठीक हूँ और बिना किसी परेशानी के अपने घर का तथा बाकी सभी काम करती हूँ।" "....बहुत अच्छी तरह खाती-पीती हूँ तथा वजन बढ़कर ४८ किलो हो गया है।" यह श्रीमती मजूमदार के मूल अंग्रेजी पत्र का अनुवाद है। *(सन्दर्भ-३१७)*

दि. १२ अप्रैल १९९६ के पत्र में श्रीमती मजूमदार ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को सूचित किया, ".....मेरा स्वास्थ्य बहुत ठीक है। वजन अब ४८ किलोग्राम का हो गया है। अपने सारे घरेलू कार्य मैं स्वयं करती हूँ और अपनी दूकान पर भी बैठती हूँ।" वे सोचती हैं कि अगर किमोथेरापी की ओर गयी होतीं, तो रोग तेज गति से लीवर आदि को भी पकड़ चुका होता और फिर जाने क्या हुआ होता। उन्हें सन्तोष है कि 'सर्वपिष्टी' ने उन्हें एक तरोताजगी, स्वास्थ्य और उत्साह दिया है। *(सन्दर्भ-३१८)*

Respected Pandith ji Recd: 25/2/4/97

I still have the diet which you have told me to take. My weight is 48 kgs. I do all my house work. I had gone out of station, that is why I have not written to you.

Thanking you
P. Majumdar.
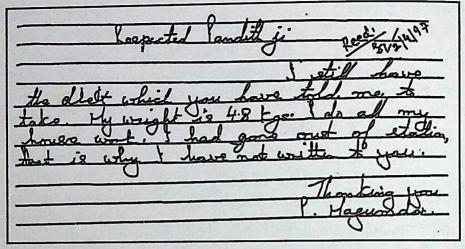
(सन्दर्भ-३१६)

श्रीमती मजूमदार अब भी कुछ अन्तर दे-दे कर पोषक ऊर्जा की कुछ खूराकें लेती रहती हैं। जाँच कराने के लिए जब कोई कहता है, उनका अकाट्य तर्क उसे निरुत्तर कर देता है , " किस बात की जाँच कराऊँ। जब मुझे कोई रोग ही नहीं है, न कोई समस्या है, तो मैं क्यों जाँच के पचड़े में पड़ूँ। बिना किसी स्वास्थ्य-समस्या के कोई जाँच कराता फिरता है क्या ?"

केन्द्र का यह प्रयास रहता है कि यथासम्भव अपने रोगियों से सम्पर्क बनाये रखे। श्रीमती मजूमदार को भेजे गये नववर्ष शुभकामना संदेश के उत्तर में उन्होंने दि. २.४. ९७ के अपने पत्र में पूर्ण रूप से स्वस्थ तथा सामान्य होने की बात दोहराई है, आपने सुझाव दिया, वही आहार ले रही हूँ। मेरा वजन ४८ किलो है। घर के सारे काम करती हूँ। बाहर चली गई थी, इसी कारण आपको पत्र नहीं लिख सकी। *(सन्दर्भ-३१६)*

❑

विजातीय पदार्थों से समझौता अगर जीवन का स्वभाव होता, तो शरीर रोग-काल में उत्पन्न होनेवाले विजातीय पदार्थों से ही समझौता कर लेता। किन्तु ऐसा नहीं होता। शरीर उन्हें अपनी व्यवस्था से बाहर निकालने के लिए निरन्तर लड़ता रहता है। चिकित्सा का कार्य इस लड़ाई में जीवन के पक्ष में खड़ा होना है। ड्रग और विष पदार्थ तो जीवन के अस्तित्व को एक नये संकट और संघर्ष में उलझा देते हैं।

५६

ओवरी का कैन्सर
(CA. OVARY)

श्रीमती चमेली देवी विश्वकर्मा, ५४ वर्ष
द्वारा : श्री एल. पी. विश्वकर्मा
सरस्वती भवन, कोहका रोड,
शान्तिनगर, भिलाई-४९००२३
जिला- दुर्ग (म. प्र.)

TATA MEMORIAL HOSPITAL
Requisition for Surgical Pathology

Mrs Vishwakarma
OUT-PATIENT
FILING No.
Case No. AT 14099 IN PATIENT ROOM No.
Date 20/7/93 Path No 16218 BF
Age 53 Sex F Nationality Community
Duration of illness
Clinical diagnosis and exact anatomical location of the disease
Ca ovary Retroperitoneal
Metastasis (if any and site) Retroperitoneal
Nature of Previous treatment (1) Panhysterectomy (2)
Previous path Nos. 17444 AT, 7774 BE
Requested by Dr. Date of Delivery
Nature of Material sent :
(1) Specimen of retroperitoneal mass

(सन्दर्भ-३२०)

टी.एस. रीसर्च सेन्टर
वारानसी

भिलाई
२/११/९४

श्रीमती जी की तबियत काफी अच्छी है, किसी तरह की तकलीफ नहीं है। स्वास्थ्य बिल्कुल नार्मल है।

— — — — — — — — — २३ नवंबर को वापस check-up के लिए ले जाऊँगा क्योंकि २४ नवंबर को संध्या ५ बजे Appointment है।

धन्यवाद

भवदीय
Vishwakarma
२/११/९४
(एल. पी. विश्वकर्मा)
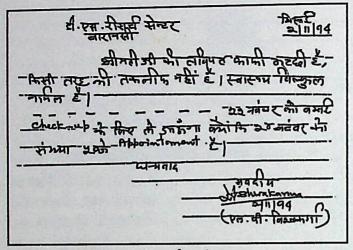
(सन्दर्भ-३२१)

पूर्व चिकित्सा-चक्र : १४-८-८५, जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र, भिलाई में ऑपरेशन द्वारा बच्चेदानी के ऊपर के ग्रोथ के साथ-साथ बच्चेदानी भी निकाल दी गयी।

तत्पश्चात् उक्त अस्पताल के निर्देश पर टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई में किमोथेरापी के छह कोर्स पूरे किये गये।

१२-२-६२ को जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसन्धान केन्द्र, भिलाई में दुबारा ऑपरेशन करके किडनी के पास का ग्रोथ निकाला गया।

तत्पश्चात्, उक्त अस्पताल के निर्देश पर टाटा मेमोरियल अस्पताल बंबई में रेडियोथेरापी के छह कोर्स दिये गये।

२०-७-६३ - टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई में ओवरी के ऊपर वाले हिस्से का ऑपरेशन करके नयी ग्रोथ निकाली गयी (AT-14099) (सन्दर्भ-३२०)।

U.S. on 29-9-95 at 10 a.m.
Full bladder.

भिलाई इस्पात संयंत्र
Bhilai Steel Plant

जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र

ULTRA-SOUND REQUISITION FORM

O & M
Med-35

Name of patient, Age, Sex: Chandrikadevi 54/F.
Regn. No. OPD No.: 13941-1
Ward, Bed No.

U. S. No.
Date 25/8/95
ENTITLED
Non-Entitled
N-I/N-II/N-III/N-IV

PREVIOUS U. S. No. DATE:

REPORT

CLINICAL NOTES: Ca. ovary / ... / Recurrence ...

U. S. EXAMN. REQD.: ... Liver, Renals

PROVISIONAL DIAGNOSIS: Ca. Ovary / ...
Sign. of Ref. M.O.
Date: 25/8/95

ULTRA-SOUND REPORT

U/s Abd + Pelvis

Seems negative for abnormal U/s findings.

CONCLUSION

SONOLOGIST
Date: 20/9/95

(सन्दर्भ-३२२)

२०/७/९५ को अल्ट्रा साउन्ड तथा २४/८/९५ को chest-X-ray Bhilai में हुआ, जो नार्मल है जिसकी फोटो कापी भेज रहा हूँ और २० मई को बम्बई में चेकअप के समय Blood CA-125 की रिपोर्ट (20/5/95 11 units) है, जो कि नार्मल है।

अतः श्रीमती जी को बम्बई में १ फरवरी को check up के लिए Appointment मिला है। वे स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त हैं। कोई शिकायत नहीं है।

भवदीय

L.P. Vishwakarma.
11/11/95
(L.P. Vishwakarma)

(सन्दर्भ-३२३)

इसके बाद टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई ने किमोथेरापी के छह कोर्स देने का अभियान चलाया। रोगिणी के शारीरिक स्वास्थ्य के मद्देनजर केवल चार कोर्स ही पूरे हो सके। किमोथेरापी बन्द की गयी।

मई १९९४ में टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई में जाँच से पाया गया कि मूत्र-थैली (यूरीनरी ब्लैडर) में दाहिनी और 7cm x 7 cm.का ग्रोथ है।

चिकित्सा की ओर से छुट्टी : रोगिणी ऑपरेशन, रेडियेशन, अथवा किमोथेरापी कुछ भी सहन करने की हालत में नहीं थी अतः जाँच के बाद घर ले जाने की सलाह दे दी गई।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : २७-६-९४

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई। उत्तरोत्तर सुधार होने लगा। भूख, नींद, वजन, शक्ति, स्फूर्ति में बढ़ोत्तरी शुरू हो गयी। आगे से जाँच टाटा मेमोरियल बंबई में ही चलने लगी। रिपोर्ट उत्तरोत्तर सुधार की आने लगी।

अपने दि. २.११. ९४ के पत्र में उनके पति श्री एल. पी. विश्वकर्मा ने केन्द्र को लिखा - "... श्रीमती जी की तबियत काफी अच्छी है, किसी तरह की तकलीफ नहीं है। स्वास्थ्य बिल्कुल नार्मल है। "...२२ नवम्बर को बम्बई चेक-अप के लिए ले जाऊँगा।" *(सन्दर्भ-३२१)*

डी.एस. रीसर्च सेन्टर, वाराणसी। Bhilai 8/10/97
प्रिय महाशय, नमस्कार!
आपका [illegible] का लिखा हुआ पत्र मिला, पढ़कर बड़ी खुशी हुई और मालूम हुआ कि आपलोग रोगी के प्रति जागरूक हैं। मेरी श्रीमती चमेली देवी सानन्द हैं। अगस्त में सोनोग्राफी हुई थी उसकी Report की Xerox copy भेज रहा हूँ। Cancer तो नहीं है।
टट्टी, पेशाब, भोजन, नींद सभी कुछ नार्मल ही है। शेष कुशल है।
धन्यवाद। भवदीय.—
एल.पी. विश्वकर्मा
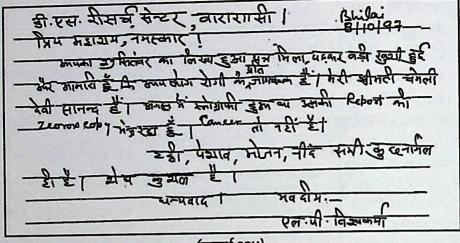
(सन्दर्भ-३२४)

टाटा मेमोरियल अस्पताल के डाक्टरों ने दि. २४.११.६५ की जाँच के बाद श्री विश्वकर्मा जी को बताया कि- "सभी कुछ सामान्य है।" उसके छह महीने बाद दि. २०.५.६५ को बम्बई में फिर जाँच कराई गयी और सब कुछ एकदम सामान्य पाया गया।

उसके बाद जवाहर लाल नेहरू चिकित्सालय एवं अनुसंधान केन्द्र, भिलाई के डाक्टरों द्वारा दि. २०.६.६५ को पूरे ब्लेडर की अल्ट्रासाउण्ड जाँच कराई गई, जिसमें सब कुछ नार्मल पाया गया।

भिलाई हॉस्पीटल ओ. पी. डी. नं. १३६४१ - १, दि. २०.६.६५ की जाँच रिपोर्ट। *(सन्दर्भ-३२२)*
उक्त जाँच रिपार्टों का हंवाला देते हुए श्री विश्वकर्मा ने अपने दि. ११.११.६५ के पत्र में केन्द्र को लिखा -"....२०.६.६५ की अल्ट्रासाउण्ड तथा २८.८.६५ के चेस्ट एक्स रे जो भिलाई में हुआ, वह नार्मल है।...२०.५.६५ की ब्लड सी. ए. रिपोर्ट भी नार्मल है।...वे स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त हैं। कोई शिकायत नहीं है।" *(सन्दर्भ-३२३)*

०८.१०.६७ की रिपोर्ट-

जाँच थक गयी, कैन्सर वापस नहीं आया। श्रीमती चमेली देवी के पति श्री एल. पी. विश्वकर्मा ने लिखा है "...मेरी श्रीमती चमेली देवी सानन्द हैं। अगस्त (६७) में सोनोग्राफी हुई थी।.....कैन्सर तो नहीं है।....टट्टी, पेशाब, भोजन, नींद सभी कुछ नार्मल ही हैं।" *(सन्दर्भ-३२४)* ☐

स्नानोपरान्त भीगे शरीर ही प्रातःकालीन सूर्य-किरणों के सामने अंग-प्रत्यंग को घुमाकर सूर्य-किरणों से पोषक ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है। इस विधि से प्राप्त की गयी धूप स्वास्थ्य को उत्तमता और निरोगता प्रदान करती है। एक-दो मिनट इसे रोज प्राप्त कर लेने का निर्देश गहन स्वास्थ्य-विज्ञान से सम्बन्धित है।

ब्रेस्ट कैन्सर
(CA. BREAST)

श्रीमती राजेश्वरी त्यागी
पत्नी : स्व. श्री दुष्यन्त कुमार
६६/८, साउथ टी टी नगर
भोपाल-४६२००३

श्रीमती त्यागी के लिए डी. एस. रिसर्च सेण्टर से औषधि कैसे शुरू हुई, इसकी भी रोचक कथा है। हिन्दी के वयोवृद्ध साहित्यकार देवेन्द्र सत्यार्थी के जन्म दिवस के अवसर पर उनके नई दिल्ली स्थित आवास पर हिन्दी साहित्य से जुड़े लोग एकत्र हुए थे। यह १९९८ की बात है। उस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार कमलेश्वर जी भी उपस्थित थे। डी. एस. रिसर्च सेण्टर से जुड़े वाराणसी के ही पत्रकार-कथाकार और साहित्यिक पत्रिका 'काशी प्रतिमान' के सम्पादक डॉ. सुरेश्वर भी उस समय वहाँ उपस्थित थे। संयोग से उस समय डॉ. सुरेश्वर के पास डी. एस. रिसर्च सेण्टर के लिए सचेतन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कैन्सर हारने लगा है'' मौजूद थी। उन्होंने कमलेश्वर जी को पुस्तक की एक प्रति भेंट कर दी। कमलेश्वर जी ने पुस्तक को उलटा-पुलटा और सुरेश्वर को अपने घर आने का निमंत्रण दे दिया।

दूसरे ही दिन हिन्दी के चर्चित कवि, कथाकार, आलोचक, पत्रकार श्री प्रकाश मनु के साथ सुरेश्वर कमलेश्वर जी के घर पहुँचे। वहीं पर कमलेश्वर जी ने बताया कि हिन्दी गजलों के

Phone 564100

Dr. Ram Singh
MD
PATHOLOGIST

No.506/97.

F 3/12, [illegible] Colony,
BHOPAL - 462 016
29-10-97.

Smt.R.Tyagi.
Age : 65 yrs.
Ref.by: Dr.G.Y.Rangnekar.M.S.
Specimen : Lump Rt.breast.
....

GROSS

Specimen consists of a single,grey, irregular piece of tissue measuring 2.5x1.7x1.2 cms. in size.

Cut section: 3 greyish white,firm nodular areas measuring 5 mms,7 mms and 1.2 cms.in diameter.

MICROSCOPIC

Neoplastic cells are present in sheets groups and columns.Scanty fibrous stroma is infiltrated by lymphocytes.

DIAGNOSIS: Invasive Ductal Carcinoma Grade III.

(सन्दर्भ-३२५)

Ram Singh
MD
OLOGIST No.517/97.
E 3/47, Arera Colony, BHOPAL
8-11-97.

Smt.R.Tyagi.
Age : 70 yrs.
Ref.by: Dr.G.V.Pongnekar,M.S.
Diagnosis: Invasive Ductal Carcinoma Grade III.Rt. (Biopsy No.506/97).
Specimen : Breast and Axillary lymph nodes.

GROSS

Specimen consists of breast and adipose tissue measuring 11x10.8x5 cms. Two skin flaps are attached on one side.One measures 6.5x2.5 cms. in size and bears a scar mark. The other,bearing nipple and areola, measures 4.1x3 cms.

Cut section: A cystic area,2.5 cms. in diameter, is present, 1 cm.below the skin(site of previous lumpectomy) Skin is not involved. Base of resection is 9 mms. away from the tumor area and is free from growth.

AxillaryLymph Nodes: 10 isolated.Diameter varies from 4 mms. to 1.8 cms. 6 enlarged nodes examined.

MICROSCOPIC

Breast : No residual tumor seen.
Axillary Lymph nodes: 6 examined. None reveal the the presence of metastasis.

DIAGNOSIS

Invasive Ductal Carcinoma Grade III Rt.breast.
Skin infiltration : Absent.
Base of resection : Tumor free.
Axillary Nodal Status: 0/10 no metastasis.
T.N.M : T2 NO.

(सन्दर्भ-३२६)

जन्मदाता विख्यात कवि स्वर्गीय दुष्यन्त की पत्नी श्रीमती राजेश्वरी दुष्यन्त जी को कैन्सर हो गया है। श्रीमती राजेश्वरी जी को कैन्सर की सभी दवाएँ आजमायी जा चुकी थीं और कोई लाभ समझ में नहीं आ रहा था। कमलेश्वर जी ने जब 'कैन्सर हारने लगा है' पुस्तक पढ़ी, तो उन्हें बहुत अच्छा लगा और एक नयी आशा उनके मन में जगी।

उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर से श्रीमती राजेश्वरी के लिए कैन्सर की औषधि चलाने की इच्छा व्यक्त की। और इस प्रकार श्रीमती राजेश्वरी दुष्यन्त की औषधि डी. एस. रिसर्च सेण्टर से भेजी जाने लगी थी।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर को भी इस बात की खुशी थी कि उसे दुष्यन्त कुमार जैसे महान कवि की पत्नी की सेवा का अवसर मिल रहा था।

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : जयश्री हास्पीटल, भोपाल (हास्पीटल रजि. नं. ६०८, दिनांक ०४.११.६७) : डॉ. रामसिंह, अरेरा कालोनी, भोपाल (नं. ५०६/६७, दिनांक २६. १०.६७, *सन्दर्भ-३२५)* तथा नं. ५१७/६७ दिनांक ...०८.११.६७, *सन्दर्भ-३२६)*।

श्रीमती राजेश्वरी को तरह-तरह की स्वास्थ्य समस्याएँ परेशान कर रही थीं। खाने-पीने में रुचि नहीं रह गयी थी, किसी चीज को खाने के बाद स्वाद समझ में नहीं आ रहा था। वजन भी काफी कम हो गया था। पेट में रह-रहकर दर्द उठता था और रात को नींद नहीं आती थी। कष्ट के कारण अक्सर रात जागते हुए बीत जाती थी।

दिनांक २६.१०.१९९७ को डॉ रामसिंह पैथालाजिस्ट, भोपाल द्वारा बायाप्सी कराने पर रिपोर्ट में आया **'Invasive Ductal Carcinoma GradeIII**।*(सन्दर्भ -२५२)* चिकित्सकों ने पहले उनके स्तन का आपरेशन किया फिर उन्हें किमोथेरापी की खूराकें दी गयीं।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक ०६.०६.९८ को सेण्टर से 'सर्वपिष्टी' भेजी गयी जिसे श्रीमती राजेश्वरी ने सेवन करना प्रारम्भ कर दिया।

चूँकि किमोथेरापी खत्म होते ही 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी गयी थी, इसलिए साइड एफेक्ट्स का असर भी कम हो गया।

दिनांक १५.०६.९८ को केन्द्र को भेजे पत्र में श्रीमती राजेश्वरी ने लिखा ''अपनी

13/1, [illegible]
[illegible] कॉलोनी
आगरा कैंट
आगरा-282001
5-7-97

आदरणीय डा० साहब,
नमस्कार।
पिछले महीने मैंने आपको पत्र लिखा था या यूं कहिए कि अपनी रिपोर्ट भेजी थी। आशा है आपको मिल गई होगी। आपका भेजा हुआ दवाइयों का पार्सल भी मुझे आगरे में ही मिल गया। इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आभार।
पिछले पत्र में मैंने लिखा था कि ऑपरेशन के बाद से जो मेरा पेट बढ़ा है तो वह अब वहीं का वहीं है बढ़ती नहीं रहा है। मैं इसके लिए बहुत सबेरे घूमने भी जाती हूँ। खूब चलती-फिरती हूँ।
मेरा वजन जब ऑपरेशन हुआ तो 50-51 kg. था किन्तु अब 58 kg. हो गया है। वैसे अब काफी दिनों से नहीं बढ़ा हुआ है।
6.7.97 को मैं भोपाल जा रही हूँ। वहां जाकर मुझे अपना चेक-अप कराना है। उसके लिए सारे टेस्ट होंगे। ईश्वर करे सब ठीक निकले। मुझे आपकी दवाइयों से शारीरिक और मानसिक दोनों ही लाभ मिले हैं। इसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ।
आपके अनुसार मेरी अब केवल एक महीने की ही दवाइयाँ रह गई हैं। उनका रीफिल आर्डर भोपाल के पते पर भेजिएगा। अब मैं कुछ महीने भोपाल ही रहूँगी। अगले महीने पत्र लिखूंगी।
आशा है आप स्वस्थ और सानन्द होंगे।
भवदीया
राजेश्वरी कुलवन्तकुमार

(सन्दर्भ-३२७)

किमोथेरापी खत्म होने के तुरन्त बाद ही मैंने आपकी दवाइयाँ खानी शुरु कर दी थीं। इन दवाइयों से मेरे स्वास्थ्य में तेजी से सुधार आया है। मेरा स्वाद और खाना-पीना जो सामान्य नहीं रहा था, वह ठीक हो गया है। मैं अब पहले की तरह खाने-पीने लगी हूँ और मेरा वजन भी बढ़ गया है। आपरेशन के बाद जब मेरी किमोथेरापी शुरु हुई थी, तो मेरा वजन ५०-५१ किलो था, अब ५ किलो और बढ़ गया है...''। *(सन्दर्भ-३२७)*

श्रीमती राजेश्वरी देवी के प्रसंग में उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों को बार-बार लगता था कि कैन्सर हड्डियों में फैल गया है। इसीलिए वे बार-बार श्रीमती राजेश्वरी देवी से बोन स्कैन कराने के लिए कहते थे। केन्द्र को भेजे गये एक पत्र में उन्होंने लिखा है ''...मेरे ब्रेस्ट कैन्सर की किस्म (प्रकार) इस तरह की थी कि मेरे डॉक्टर जिन्होंने मेरा ऑपरेशन किया था मुझसे कह रहे हैं कि बोन स्कैन कराओ''। 'सर्वपिष्टी' का सेवन करते रहने से श्रीमती राजेश्वरी देवी का कैन्सर बोन तक गया ही नहीं।

श्रीमती राजेश्वरी देवी को 'सर्वपिष्टी' के पोषक ऊर्जा ने किस तरह प्रभावित किया, यह उनके २३.११.९८ के पत्र से समझ में आता है ''...मैं पाँच महीने से आपकी दवाई खा रही हूँ। मेरा पाँच-छह किलो वजन

राजेश्वरी कुलवन्त कुमार
23-11-98
आगरा

माननीया डाक्टर साहब,
नमस्कार
आजकल मैं आगरा आई हुई हूँ। यहाँ आने से पहले मुझे आप द्वारा भेजी हुई दवाइयों का पैकेट मिल गया था। जब से आपकी ये दवाइयाँ मैंने खाई हैं मेरे स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है। इसे मैं विस्तारपूर्वक नीचे लिख रही हूँ।
नं.1. मैं पाँच महीने से आपकी दवाई खा रही हूँ। मेरा पाँच-छः किलो वजन बढ़ गया है। अपने भीतर अब काफी शक्ति का अनुभव करती हूँ। पहले बड़ी निराशा का अनुभव करती थी। इन दवाइयों के सेवन से मुझ में जीवन के प्रति का आत्मविश्वास आ गया है।
नं.2. मेरी भूख अब पहले जैसी, जब कि मैं पूर्णतया स्वस्थ थी, हो गई है। बल्कि पहले से भी बढ़ गई है। खूब अच्छी तरह खाने-पीने लगी हूँ जिसमें स्वाद आता है।
नं.3. मेरी नींद अच्छी sound हो गई है। पहले मैं रात में देर से सोती थी। कभी-कभी तो रात के तीन बजे जाते थे करवटें बदलते हुए। लेकिन अब लेटते ही थोड़ी देर में सो जाती हूँ। नींद अच्छी आने के कारण अब मैं उठते ही ताजगी का अनुभव करती हूँ। यह सब आपकी दवाई सेवन के कारण ही सम्भव हुआ है।
(मेरा भोपाल का पता:- [illegible] भोपाल - 462 003 [illegible]
फोन : [illegible])

(सन्दर्भ-३२८)

बढ़ गया है। अपने भीतर अब मैं काफी शक्ति का अनुभव करती हूँ। पहले बड़ी निराशा का अनुभव करती थी। इन दवाइयों के सेवन से मुझ में जीवन के प्रति बड़ा आत्मविश्वास और स्फूर्ति बढ़ गयी है।...'' *(सन्दर्भ-३२८)*

श्रीमती त्यागी को काफी आराम मिलने लगा। उनका वजन ५० किलो से बढ़कर ५८ किलो हो गया था। वे भोपाल जाँच कराने जाने से पहले केन्द्र को सूचना देना नहीं भूलीं। दिनांक ०५.०७.६६ के पत्र में उन्होंने अन्य बातों के अलावा लिखा, ''...मुझे आपकी दवाइयों से शारीरिक और

प्रति:
श्री यू. एस. तिवारी
डी. एस. रिसर्च
१५७-ए, सौरूपुरी, न्यू कॉलोनी
नागपुरी मेन ... भरत

राजेश्वरी दुष्यन्त कुमार त्यागी
९-३-९९

आदरणीय डा. तिवारी जी,
सादर नमस्कार।
काफी दिनों से आपको अपनी रिपोर्ट नहीं भिजवा सकी। आशा है इस देरी के लिए मुझे क्षमा करेंगे।
मैं आपको अपनी 'बोन-स्केन' की फोटो स्टेट कॉपी भिजवा रही हूँ। आप इसकी study करके देखिएगा। 'बोन-स्केन' वाले डाक्टर ने तो इस रिपोर्ट को clear बताया है।
आपकी दवाई से मैं अपनी सेहत को सुधार पाई हूँ, इसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ। धन्यवाद। कीमो-थेरेपी के बाद से, जब से मैंने आपकी दवाइयाँ खानी शुरू की हैं मेरा वजन आठ kg. बढ़ गया है। लेकिन अब दो महीने से स्थिर है। मैं अपना वजन हर महीने लेती रहती हूँ।
अब एक महीने से आपकी दवाइयाँ खानी बन्द हो गई हैं क्योंकि दवाइयाँ खत्म हो गई हैं। एक महीने से मेरे पास पार्सल नहीं आया। आप देख लीजिएगा कि मुझे अब आपकी दवाइयाँ खाने की जरूरत भी है या नहीं? अगर मुझे अभी और खानी चाहिए तो आप पार्सल भिजवा दीजिएगा। पत्र लिखकर मुझे बता दीजिएगा।
आभार-सहित।
भवदीया
रा. दुष्यन्त कुमार
(श्रीमती राजेश्वरी त्यागी)

63/8, ... टी.टी. नगर, भोपाल - 462 003 मध्यप्रदेश
दूरभाष 764661, 767367

(सन्दर्भ-३२६)

मानसिक दोनों ही बल मिले हैं। इसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूँ...'' *(सन्दर्भ-३२६)*।

दिनांक २५ मई २००० को केन्द्र को भेजे पत्र में श्रीमती त्यागी ने लिखा, ''...साल भर पहले मैंने अपना कैन्सर का पूरा चेकअप कराया था। इसमें सभी चीजें नार्मल निकली हैं। यह सब देखकर मन को बड़ा संतोष हुआ है।...आपकी दवाइयाँ खाकर मुझे नया जीवन मिला है। इसके लिए मैं आप लोगों का बहुत-बहुत आभार मानती हूँ।'' *(सन्दर्भ-३३०)*

राजेश्वरी दुष्यन्त कुमार
63/8, ... टी.टी. नगर, भोपाल - 462 003 (म.प्र.)
दूरभाष: 764661, 767367

२५ मई २०००

आदरणीय शौरंगर जी,
प्रणाम।
दिल्ली में कमलेश्वर जी के यहाँ आप से भेंट हुई थी। उसके बाद दूसरे ही दिन मैं आगरा चली आई थी। वहाँ मेरा ... मेरा ... मालिन है। उसके पास ... रही। वहाँ से मैंने आपको अपने स्वास्थ्य के बारे में पूरी details लिखी थीं। लेकिन वह पत्र मैंने आपके पुराने पते पर ही डाला था। मालूम नहीं आपको मेरा वह पत्र मिला भी कि नहीं। अब मैं भोपाल आ गई हूँ। यहाँ आने पर आपका नया पता प्राप्त हुआ। आप ही उसमें उत्तर के लिए लिफाफा भी संलग्न था। धन्यवाद।
आपकी भेजी हुई दवाइयाँ मैं निरन्तर खा रही हूँ। उन दवाइयों से मुझे बहुत आराम है। कैंसर के ऑपरेशन के बाद मेरा जो वजन बढ़ गया था वह तो कम नहीं हो रहा है, लेकिन अब वही रुका हुआ है। साल भर से अब मेरा वेट वहीं का वहीं है बढ़ा नहीं है। भूख और नींद नार्मल है। साल भर पहले मैंने अपना कैंसर का पूरा चेक अप कराया था। इसमें सभी चीजें नार्मल निकलीं। यह सब देखकर मन को बड़ा संतोष हुआ है।
आदरणीय डा. तिवारी जी को मेरा प्रणाम अवश्य कह दीजिएगा।
आपकी दवाइयाँ खा कर मुझे नया जीवन मिला है। इसके लिए मैं आप लोगों का बहुत-बहुत आभार मानती हूँ। धन्यवाद। भवदीया
रा. दुष्यन्त कुमार

(सन्दर्भ-३३०)

६१

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. CERVIX)

श्रीमती शान्ति देवी, ६१ वर्ष
पत्नी : श्री रामकिशोर तिवारी
ग्राम : भूलपुर, इटावा (उ. प्र.)

जाँच : कैन्सर हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च इन्स्टिटीट्यूट, ग्वालियर, बायाप्सी, नं. ६२६/६५, दिनांक ३०-३-६३। *(सन्दर्भ-३३१)*

Cancer Hospital & Research Institute
GWALIOR
Division of Laboratory Services, Department of Pathology
REQUISITION FORM FOR HISTO-PATHOLOGY

(Please write in block letters)
Surgical Biopsy No. 626/95 Free/Chargeable
Name Shanti bai Age & Sex 55/F O.P.D./Ward & Bed No.
Occupation Address
O.P.D./Ward Reg. No. UG-2760 Clinician I/c MK
Clinical Diagnosis Ca Cx
Microscopic—
Large cell focally keratinising (moderately differentiated) invasive squamous cell carcinoma with extensive areas of necrosis.

(सन्दर्भ-३३१)

रेडियेशन और उसका दुष्प्रभाव : ग्वालियर के उक्त अस्पताल में ही ३० दिन सिंकाई की गयी, फिर २४ घण्टे का डीप रेडियेशन दिया गया। डाक्टरों ने जाँच करके बाद में बताया कि रेडियेशन के कारण बच्चेदानी गल-जल गयी है। परिणामतः रोगिणी को अनवरत पेशाब

नाम — श्रीमती शान्ती देवी तिवारी

शिकायतें — ३० दिन रेडियम की सिकाई
दूसरी सिकाई - २५ घंटे लगातार
अब की स्थिति - खून का आना, भयंकर दर्द होना
लगातार पेशाब होते रहना / उल्टी आना
भूख नहीं लगना, बिस्तर पर ही
महीने से लगातार पड़ी हैं।

विपिन तिवारी
13-7-96

(सन्दर्भ-३३२)

होता रहता है। चिकित्सकों की राय है कि यह समस्या औषधि-प्रयोग से हल नहीं की जा सकती।

ग्वालियर अस्पताल ने दर्द-निवारण के लिये मोरफिन देते रहने की राय देकर चिकित्सा बन्द कर दी।

समस्याएँ, जब 'सर्वपिष्टी' शुरू की गयी : (दिनांक १५-७-९६) मूत्र-मार्ग से रक्त-स्राव, भयंकर दर्द, भूख का नहीं लगना, लगातार पेशाब निकलते रहना, कमजोरी इतनी अधिक कि रोगिणी महीनों से बिस्तर में भी हिल-डुल नहीं पाती थीं (श्री विपिन तिवारी द्वारा केन्द्र से 'सर्वपिष्टी' लेते समय दी गई जानकारी, १३-७-९६)। *(सन्दर्भ-३३२)*

पेशाब में अभी कोई कमी
या आराम नहीं हुआ, बाकी सब ठीक है
और किसी प्रकार की परेशानी नहीं है
सादर
विपिन कुमार

(सन्दर्भ-३३३)

प्रगति-विवरण : (पत्र दिनांक २-८-९६) दवा शुरू करने के एक सप्ताह बाद अर्थात् २४-७-९६ से दर्द और उल्टी की शिकायत नहीं हुई।

(पत्र दि. ७.१०.९६) "पेशाब में अभी कोई कमी या आराम नहीं हुआ, बाकी सब ठीक है और किसी प्रकार की परेशानी नहीं है।" *(सन्दर्भ-३३३)*

(पत्र दिनांक ३१-१०-९६) : "साढ़े तीन महीनों से आपके यहाँ की दवा चल रही है। वैसे देखने में उन्हें बहुत आराम व लाभ है। *(सन्दर्भ- ३३४)*

इटावा
श्रीमान डाक्टर साहब जी, ता० 31/10/96 ई०
अभिवादन/
निवेदन यह है कि हमारे माता जी श्रीमती
शान्ती देवी की दवा करीब साढ़े तीन महीनों
से आपके यहां से चल रही है। वैसे देखने में
उन्हें बहुत आराम व लाभ है
करीब चार महीने पहले इटावा के डा० के यहां
इन्हें पेशाब की नली लगवाने के लिए भेजा था, तब उनका
कहना था, कि इनकी बच्चादानी खराब हो गई है, अतः इनके
पेट में छिद्र (छेद) करके नली लगाई जायेगी, उसके
लिए इन्हें आगरा, ग्वालियर या अन्य किसी बड़े अस्पता-
ल में ले जाना पड़ेगा।

(सन्दर्भ-३३४)

शान्ति देवी ने ता० १५
जॉ० से दवा खाना शुरू किया था, इसके बाद
२४ जौलाई से २४ जौलाई तक उनके
पेट में दर्द हुआ। उसके बाद आज
तक किसी तरह की ऊपरी शिकायत
न हुई। वही पेशाब जो अनजाने में
निकलती रहती है उसमें कोई अभी
तक सुधार नहीं हुआ उसी से वह ज्यादा
परेशान रहती है

(सन्दर्भ-३३५)

"करीब चार महीने पहले इटावा की लेडी डाक्टर के पास इन्हें पेशाब की नली लगाने के लिए भेजा था। तब

उनका कहना था कि इनकी बच्चेदानी गल गई है। इनके पेट में छिद्र करके नली लगायी जायेगी और इसके लिये इन्हें आगरा, ग्वालियर या अन्य किसी बड़े अस्पताल में ले जाना पड़ेगा।"

(पत्र दिनांक २३-२-६७)

"१५ जुलाई से शान्ति देवी ने दवा खाना शुरू किया। २४ जुलाई को पेट में दर्द हुआ। उसके बाद से आज तक किसी तरह की ऊपरी शिकायत नहीं हुई। (स्वास्थ्य, शक्ति, स्फूर्ति में सुधार है)। पेशाब अनजाने में निकलता रहता है, उसमें अभी तक कोई सुधार नहीं हुआ। उसी से वह ज्यादा परेशान रहती है। *(सन्दर्भ-३३५)*

कैंसर से मुक्त : अब रोगिणी की पेशाब वाली समस्या ही है। वे कैन्सर से पूर्ण मुक्त हैं।

श्रीमती शान्ति देवी के पुत्र श्री विमल कुमार ने दिनांक १६.०६.६७ को पत्र द्वारा अपनी माँ के कैन्सर से मुक्त होने की जानकारी दी। *(सन्दर्भ-३३६)*

19.6.97
Etawah

आदरणीय डाक्टर साहब,
सादर सप्रेम अभिवादन समर्पित।
आपके कर कमलों द्वारा लिखा कृपा पत्र पाकर मैं आश्चर्य चकित रह गया। क्योंकि विमल कुमार की माता जी की दवा लगभग तीन माह से बन्द है, फिर भी आपकी अपने मरीज से इतनी सहानुभूति है, देखकर इस जमाने में महान आश्चर्य की बात है, क्योंकि मैं देखता हूँ आजकल इतना ध्यान लोग अपने सगे-सम्बन्धियों का भी नहीं रखते।.... मैं धन्यवाद के सिवा आपको क्या दे सकता हूँ। मेरी प्रभु से प्रार्थना है कि आप जैसे सपूत भारत को और मिलें, ताकि देश का कल्याण हो सके।
विमल कुमार की माताजी की तबियत अब ठीक है, फरवरी माह सन् ९७ में इटावा में कैम्प लगा था, जिसमें ग्वालियर के डाक्टर आये उन्होंने माताजी के कैंसर की जांच की थी, व डाक्टरों ने उन्हें कैन्सर से मुक्त घोषित किया था।
आपका
राजकिशोर नेपाली विमल कुमार

(सन्दर्भ-३३६)

६२

विचित्र ऊहापोह

अस्पताल हर दो-ढाई महीने बाद चेकअप करता है। न तो रोग पाया जाता है, न रोग-लक्षण। अतः अस्पताल की ओर से कोई दवा नहीं दी जाती। अब तीन वर्ष हो चले हैं किन्तु अस्पताल दुमाही-तिमाही जाँच को अनिवार्य बनाये हुए है। अस्पताल के कुशल कैन्सर-चिकित्सक का कहना है कि जाँच का यह सिलसिला अभी दो वर्ष और चलेगा, चाहे इलाज चले अथवा नहीं। अस्पताल में केवल जाँच ही चलती है, रोगिणी को कोई दवा नहीं दी जाती।

'रोगिणी' (शायद अब रोगिणी कत्तई नहीं) की रुचि न तो इस जाँच के दौर में है, न किसी इलाज या दवा में। उसका मन इस तर्क का कोई उत्तर नहीं पाता कि जब उसका स्वास्थ्य बोलता है कि उसे कोई परेशानी नहीं है, और अस्पताल भी चेकअप कर-करके वर्षों से कहता आ रहा है कि रोग़ नहीं है, फिर हर दो-ढाई महीने बाद अस्पताल की ओर ले पहुँचना कहाँ की बुद्धिमानी है।

इस ऊहापोह का प्रमुख कारण है कि परिवार के लोग संकोच और भय के कारण अस्पताल के चिकित्सक को यह नहीं बताते कि वे रोगिणी को 'सर्वपिष्टी' दवा खिला रहे हैं। उन्हें भय है कि ऐसा कह देने पर कहीं चिकित्सक अस्पताल की जाँच चलाने से भी मना न कर दें।

अस्पताल के चिकित्सक 'सर्वपिष्टी' के चलने और उसकी प्रभावशालिता के विषय में जानते नहीं हैं, अतः वे स्वयं चकित हैं कि रोग का रेकरैन्स क्यों नहीं हुआ। इस प्रकार बीत रहा है समय।

रेकरैन्स इसलिए संभव नहीं हुआ कि पोषक ऊर्जा की ख़ूराकों ने कैन्सर को बेबुनियाद कर दिया है।

और फिर ये यात्राएँ, अन्य परेशानियों के अलावा एक सामान्य मध्य-वित्तीय परिवार की आर्थिक रीढ़ पर भी तो चोट करती हैं। रोगिणी की रुचि उस औषधि (सर्वपिष्टी) में भी कम ही है, जिसे उसे लेना भी पड़ता है और परिजनों को उस हिदायत का पालन भी करना पड़ता है कि अस्पताली व्यवस्था के सामने ऐसी चर्चा भी नहीं करनी है कि वह कहीं से प्राप्त करके कोई औषधि लेती भी है।

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. CERVIX)

श्रीमती ललिता देवी, ५२ वर्ष
द्वारा : श्री शिवदान सिंह
पूरे बलवन्त सिंह, पो.- रहवाँ
जिला- रायबरेली (उ. प्र.)

'सर्वपिष्टी' सेवन के सवा वर्ष पूरे हुए (दिनांक १४-११-६४ से प्रारम्भ)। तभी श्रीमती ललिता देवी ने अपने को कष्टों से पूरी तरह मुक्त पाया और उनका स्वास्थ्य उनके भीतर बोलने लगा कि अब रोग का नामोनिशान भी शेष नहीं है। उन्होंने दिनांक २३-२-६६ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर को जो पत्र लिखा, उससे भी ध्वनित होता था कि दवा उन्हें बिना मन के लेनी पड़ रही है।

पत्रांश..."मैं इलाहाबाद बराबर दिखाती रहती हूँ। वहाँ पर अभी फरवरी में १२ तारीख को दिखायी। डाक्टर बोले कि आप बिल्कुल ठीक हैं।...दवा तो हम समय से खा रहे हैं। अभी दवा कब तक चलेगी ? आपको जब तक उचित लगे, तब तक दवा चलाते रहिए। अब हमें तो कोई परेशानी (रोग-संबन्धी) नहीं लगती है।" *(सन्दर्भ-३३७)*

श्रीमती ललिता देवी के पुत्र श्री एम. के. सिंह का दिनांक १३-८-६६ का पत्र परिजनों की मनः स्थिति को प्रगट कर देगा, "ललिता देवी को १०-८-६६ को डॉ. पाल से चेक कराया, जैसे कि पिछले दो सालों से हर दो महीने में चेक कराते आये हैं। उन्होंने हमेशा की तरह इस बार भी वही कहा कि सब ठीक है, अब कुछ नहीं है। लेकिन अभी एक-दो साल तक हर दो-तीन महीने में चेक करवाते रहना। उन्होंने कोई लिखित

मैं इलाहाबाद बराबर
दिखाती रहती हूँ। वहाँ पर अभी फरवरी में 12 तारीख
को दिखायी। डा॰ बोले कि सब आप बिल्कुल ठीक हैं।
दवा तो हम समय से खा
लेते हैं, अभी दवा कब तक चलेगी? आपको जब तक
उचित लगे, तब तक दवा चलाते रहिए। अब हमें तो के
परेशानी नहीं लगती है।

ललिता देवी
23/2/96

(सन्दर्भ-३३७)

KAMALA NEHRU MEMORIAL HOSPITAL
ALLAHABAD—211002 (U. P.)
CANCER UNIT
DEPARTMENT OF RADIATION ONCOLOGY

RT NO.
REGISTRATION NO. K K – 13.10/94

NAME LALITA DEVI
AGE M. F.

6/10/94

CONSULTANT Dr. B. Paul
SERVICE. UNIT Radiation oncology

H/P – Poorly differentiated invasive sq. cell Ca extending upto ... region

TREATMENT GIVEN AND RESPONSE

Ext R/T with Tele Co 60 with 50 Gy/ 25#/ 5wks/ ...
24/8/94 – 5/10/94

(सन्दर्भ-३३८)

रिपोर्ट नहीं दी है।''

कमला नेहरू मेमोरियल अस्पताल, इलाहाबाद के कुशल, अनुभवी और अपने दायित्व के प्रति सजग चिकित्सक डॉ. बी. पॉल जाँच करते रहना आवश्यक इसलिये मानते हैं कि वे श्रीमती ललिता देवी की गर्भाशय ग्रीवा पर उभर कर, गर्भाशय की दीवारों में फैलते जाने वाले कैन्सर की नियति को भली-भाँति समझते हैं। उन्हीं की देखरेख में ऑपरेशन और रेडियेशन भी हुआ था। उनका निर्णय केवल अध्ययन पर नहीं, बल्कि विस्तृत अनुभवों के आधार पर खड़ा था। वे हाथ से मौका नहीं जाने देना चाहते थे। वे सदैव सशंकित रहते हैं कि अपनी छली और क्रूर नियति के कारण कैन्सर फिर बड़े आक्रामक ढंग से प्रगट होकर खतरनाक बन सकता है। अगर उसके उद्रेक को सही समय पर पकड़ लिया जायेगा, तभी चिकित्सा को कुछ कर पाने का अवसर मिल पायेगा। यदि ऐसा नहीं हो सका, तो वह कुछ भी करने का अवसर नहीं देगा। यह बात श्रीमती ललिता देवी के परिजनों की जानकारी में भी आ गयी थी, अतः वे चेकअप का क्रम तोड़ने का साहस नहीं कर पाते। डॉ. पाल की आशंका अभी भी निर्मूल नहीं हो सकी है और परिजन भी रिस्क नहीं लेना चाहते। 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के पहले तथा रेडियेशन समाप्त हो जाने के बाद (दिनांक २४-८-६४ से ५-१०-६४ तक) कमला नेहरू मेमोरियल अस्पताल (कैन्सर युनिट), इलाहाबाद, के डॉ. बी. पी. पॉल द्वारा दिनांक ६-१०-६४ को दी गई रिपोर्ट। *(सन्दर्भ-३३८)*

वस्तुतः इस परिणाम और ऊहापोह के पीछे 'सर्वपिष्टी' खड़ी है

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई : दिनांक १४-११-६४

आपरेशन और रेडियेशन का काम ज्यों ही पूरा हुआ, संयोग से परिजनों को डी. एस. रिसर्च सेण्टर, पोषक ऊर्जा विज्ञान और 'सर्वपिष्टी' के विषय में जानकारी मिली

श्रीमती ललिता देवी

आदरणीय प्रोफेसर साहब सादर प्रणाम

डॉ. पाल ने बहुत सन्तुष्टि से आपकी दवा से [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नहीं करना चाहते जैसा आप उचित समझें।

[illegible]

13-2-96
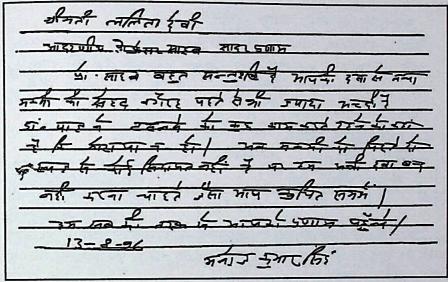
मनोज कुमार सिंह

(सन्दर्भ-३३६)

और 'सर्वपिष्टी' शुरू कर दी गयी।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने तो आश्वस्त होकर औषधि बन्द करने की कई बार पेशकश की, किन्तु परिजनों की मनः स्थिति इसके अनुकूल नहीं है। वे पोषक ऊर्जा की खूराकें चलाते रहना चाहते हैं, ताकि अपने प्रियजन को विश्वस्त सुरक्षा-कवच में कायम रख सकें। उनके पत्र के अंश उनकी मनः स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के चौथे महीने का पत्र (मनोज कुमार सिंह)

"१३ हफ्ते से आपकी दवा कर रहा हूँ। डॉ. पाल ने दो-दो महीने पर दो बार चेक किया। उनका कहना है कि अब सब ठीक हो गया है।...अपनी सन्तुष्टि के लिए मैं कम-से-कम दो महीने और (दवा) खिलाना चाहता हूँ।"

१३-६-६५ को प्राप्त पत्र (एक वर्ष दवा चलने के बाद)

"इस समय कोई तकलीफ नहीं है, पर मेरे ख्याल से दो-चार महीने कम-से-कम और दवा ले लेनी चाहिए, जिससे शंका भी मिट जाय कि (रोग) कहीं फिर न उभर आये। उभरने की संभावनाएँ जब खत्म हो जाएँगी, तभी दवा बन्द करूँगा।"

श्रीमती ललिता देवी का १६-१०-६५ का पत्र

"हमें कोई परेशानी नहीं है। हम सोचते हैं कि कुछ दिन और दवा चले, ताकि बीमारी बिल्कुल जड़ से समाप्त हो जाय।"

१३-८-६६ का पत्र (मनोज कुमार सिंह)

आदरणीय डाक्टर साहब नमस्ते
मेरा स्वास्थ्य. इस समय बिल्कुल ठीक है, मुझे इलाहाबाद
वाले डाक्टर 8 महीने पर बराबर बुलाते हैं, मैं समय २
पर जाकर उनसे चेक-अप कराती हूँ। वे कहते हैं कि
आप बिल्कुल ठीक हैं।
आपने मेरे स्वास्थ्य के विषय में जानकारी
लेनी चाही। धन्यवाद
(18.10.97 को प्राप्त) ललिता देवी

(सन्दर्भ-३४०)

"बहुत संतुष्टि है आपकी दवा से, तथा मम्मी की सेहत वगैरह पहले से भी ज्यादा अच्छी है। मम्मी को पिछले दो साल से कोई शिकायत नहीं है, पर अभी दवा बन्द नहीं करना चाहते।" *(सन्दर्भ-३३६)*

दिनांक १८.१०.६७ को श्रीमती ललिता देवी ने पत्र द्वारा केन्द्र को सूचित किया कि "मेरा स्वास्थ्य इस समय बिल्कुल ठीक है। मुझे इलाहाबाद वाले डाक्टर आठ महीने पर बुलाते हैं। मैं समय-समय पर जाकर उनसे चेक-अप कराती हूँ। वे कहते हैं कि आप बिल्कुल ठीक हैं।" *(सन्दर्भ-३४०)*

यह एक वैज्ञानिक दस्तावेज है, अतः इसका सही मूल्यांकन वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही संभव है। प्रत्यक्ष है कि इस सुन्दर परिणाम के पीछे पोषक ऊर्जा की खूराकों का ही कार्य है। इसकी पुष्टि के लिए ऐसे अनेक दृष्टान्त लिए जा सकते हैं कि लोगों ने पोषक ऊर्जा की खूराकें लेकर अपने स्वास्थ्य का विचलन इस प्रकार दूर कर लिया और अपनी प्रतिरोध-क्षमता का इतना विकास कर लिया कि कैन्सर को पुनः उभरने का अवसर ही नहीं मिला। उन सारे-के-सारे दृष्टान्तों को गवाही के लिए पेश करना आवश्यक इसलिए नहीं है कि सही वैज्ञानिक मूल्यांकन के लिए एक ही मामले का गहन अध्ययन पर्याप्त हो सकता है। ❑

ड्रगौषधियों द्वारा चिकित्सा का चक्र सैकड़ों वर्षों से निरन्तर गतिमान है। विषों-उपविषों के इन्धन से इसे घुमाया-चलाया जाता है। अगर इस चिकित्सा के आर-पार देखकर उपलब्धियों के चरित्र का अध्ययन करें, तो एक साथ तीन बातें दिखाई दे जाती हैं–

१. ऐसा एक भी रोग नहीं है, जिससे ड्रगौषधियों को भिड़ाया नहीं जाता हो।
२. ऐसा एक भी छोटा या बड़ा रोग नहीं हैं, जिसे ये औषधियाँ दूर कर देती हों।
३. ऐसा एक भी रोग नहीं है, जिसे ये औषधियाँ पैदा नहीं कर देती हों।

६३

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर, ३-बी (CA. CERVIX 3-B)

श्रीमती कमला नाग, ५७ वर्ष
द्वारा : श्री प्रणव कुमार नाग
ग्राम : बाचुर दोबा, पो. झारग्राम
जिला : मिदनापुर (प. बंगाल)

रोग का इतिहास : अप्रैल-मई १९९४ में अचानक रक्त-स्राव होने लगा, जो बढ़ता गया। इसके साथ ही कूल्हे और पैरों में दर्द होने लगा। स्थानीय चिकित्सक को दिखाया गया। मिनोपाज कई वर्ष बाद शुरू। इस रक्त-स्राव से चिकित्सक महोदय ने भाँप लिया कि इसकी पृष्ठभूमि में मेलिग्नैन्सी होने की संभावनाएँ प्रबल हैं। उन्होंने परामर्श दिया, "बिना समय गँवाए इन्हें ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल ले जाइये। हो सकता है कि रोग अभी प्रारम्भिक अवस्था में हो और कुछ कर लेने की गुंजाइश रहे।"

जाँच : बिना देर किये कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर ले जाया गया। वहाँ बायाप्सी से कैन्सर होने की पुष्टि हुई। किन्तु यह जानकर सबको अधिक आश्चर्य हुआ कि कैन्सर चुपके-चुपके बढ़कर बहुत उग्र हो चुका था। (रजि. नं. ९४/२९७१, दिनांक १८-५-९४)

'गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर' ३-बी। *(सन्दर्भ-३४१)*

दिनांक २-६-९४ को ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल के चिकित्सकों का बोर्ड बैठने वाला था, जिसे श्रीमती नाग की चिकित्सा के विषय में भी निर्णय लेना था। किन्तु परिजनों की रुचि ऑपरेशन,

Dr. S. K. BANERJEE
MRS. ARATI BASU (SEN GUPTA
CANCER CENTRE & WELFARE HOME
PROJECT: MAHATMA GANDHI ROAD THAKURPUKUR
CALCUTTA 700 063. DIAL 77 ...

Name — Smt Kamala Nag
H-F- 51
Outdoor Registration no. — 94/2971
Diagnosis — Ca-Cx III-B
18/5/94
Attending — Hospital
Date of Admission — WEDNESDAY

(सन्दर्भ-३४१)

Date | Investigation | Treatment | Instruction | Remarks

18/5/94 Board on 2-6-94

BOARD

(सन्दर्भ-३४२)

रेडियेशन और किमोथेरापी में नहीं थी। जिस समय बोर्ड निर्णय लेने बैठा था, उस समय परिवार के लोग 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने के लिए रिसर्च सेण्टर आ पहुँचे थे। यहाँ उन्हें समझाया गया कि रक्त-स्राव को रोकना आवश्यक है, अतः अगर बोर्ड रेडियेशन देने का निर्णय लेता है, तो रेडियोथेरापी अवश्य करा ली जाय। 'सर्वपिष्टी' शीघ्रता से रक्त-स्राव रोक नहीं सकती। परिजनों ने आश्वासन दिया कि वे कुछ समय बाद रेडियोथेरापी (अगर होनी है तो) करा लेंगे।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २-६-९४

प्रगति विवरण- दिनांक ७-६-९४ को रोगिणी के पति श्री पी. के. नाग ने सूचना दी कि रक्त-स्राव कुछ हल्का हुआ है, और रोगिणी कुछ ताजगी का अनुभव कर रही हैं।

विशेष : पता चल गया था कि कैन्सर अस्पताल के बोर्ड ने रेडियोथेरापी करने का ही निर्णय लिया है। रिसर्च सेण्टर की ओर से निवेदन किया गया कि रेडियेशन करा दिया जाय। रेडियोथेरापी दिनांक ६-७-९४ से दिनांक ३-८-९४ तक चली। चेकअप के लिए तीन माह बाद बुलाया गया। *(सन्दर्भ-३४२)*

Pt. Kamala Nag
On 7.12.94 Reported to C.C. Welfare Home. Thakurpur, Calcutta.
Advice as Review after 3 months.
(1) Patient is normal
(2) Health is alright
(3) Walking very smoothly.
(4) taking food two times.

(सन्दर्भ-३४३)

१७-११-९४ : ''रोगिणी की कमजोरी धीरे-धीरे दूर हो रही है।

Kamala Nag.

Present Condition of Patient allmost normal. She is now working her housework like a normal women. She is taking normal diet. We have checked her on 19.06.96. at Thakurpukur Cancer Hospital/Calcutta. According to, their doctor's view that She is as normal as normal women. They are given next Checking date after 6 months. Pranab Kumar Nag. 21.06.96.

(सन्दर्भ-३४४)

८-१२-६४ : "वर्तमान समय में रोगिणी पूर्णतः नॉर्मल हैं। स्वास्थ्य एकदम अच्छा है। घूमती-फिरती भी हैं। ७-१२-६४ को कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर ले जाया गया। तीन माह बाद पुनः आने का कहा गया। सुधार बताया गया।" *(सन्दर्भ-३४३)*

१३-३-६५ : "रोगिणी पूरी तरह नॉर्मल हैं और अच्छा महसूस कर रही हैं।"

२१-६-६६ : "वर्तमान अवस्था पूरी तरह नॉर्मल है। अब वह अपने घर का पूरा काम एक नॉर्मल औरत की तरह करती हैं। नॉर्मल भोजन लेती हैं। १६-६-६६ को ठाकुरपुकुर कैन्सर हॉस्पीटल में जाँच करायी गई। डाक्टरों के अनुसार पूरी तरह नॉर्मल हैं। पुनः जाँच के लिए ६ माह बाद बुलाया है।" *(सन्दर्भ-३४४)*

३-१-६७ : "अब वह पूरी तरह ठीक हैं। सब प्रकार के सामान्य कार्य करती हैं। रोज १/२ किलोमीटर टहलती हैं, कोई नई परेशानी नहीं है।"

४-४-६७ : "रोगिणी की स्थिति बहुत अच्छी है। कोई नई समस्या नहीं पैदा हुई। वह घर का सारा काम करती हैं। लगभग एक कि.मी. टहल लेती हैं। भोजन सामान्य है।"

वर्तमान समय में रोगिणी पूर्णतः स्वस्थ एवं सामान्य गृहिणी की तरह घर के काम सँभालती हैं। स्वास्थ्य अच्छा हो गया है। रोज एक कि.मी. टहलती भी हैं।

६-६-६७ की रिपोर्ट में श्री पी. के. नाग ने लिखा- "अब वह पूरी तरह ठीक हैं। वह सामान्य रूप से काम भी करती हैं। अपना सामान्य भोजन भी लेती हैं। कोई समस्या नहीं हुई है। रोज लगभग १ कि.मी. टहलती हैं।" *(सन्दर्भ-३४५)*

Kamala Nag. Report 6/6/97

Now she is allright. She is doing her normal work. She is taking her normal food. No new problem arise. Everyday she is walking about 1 Km.

Pranab Kumar Nag.

(सन्दर्भ-३४५)

६४

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. Cervix)

कुमारी जी. रानी, १६ वर्ष
मेरठ (उ. प्र.)

DEPARTMENT OF RADIO-DIAGNOSIS
A.I.I.M.S., NEW DELHI-29
CT & Ultrasound Report Form

Name G. RANI 18 yrs Sex F
Scan No. G.N.O 10482 3.5.89 Referred by
Hospital No. 9564 Indoor-Ward/Bed No.................. OPD........

REPORT: Plain & Enlarged scans pelvis

B/L Enlarged polycystic ovarian.
No other pelvic mass seen.

Imp.
B/L Enlarged polycystic ovarian.
Bulky uterus c̄ large endometrial cavity

Signature of Radiologist

(सन्दर्भ-३४६)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा- अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नयी दिल्ली, हॉस्पीटल नं. 9564, C. T. No. 10482/3-5-89. *(सन्दर्भ-३४६)*।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ २-२-६० से।

'तब रोगिणी, अब स्वस्थ' इस महिला के रोग और इलाज की जानकारी उसके दिनांक २६-५-६२ को लिखे गये उस पत्र से हो जाती है, जो उसने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को लिखा था।

"जब मैं १७ वर्ष की थी, मुझे महीना भी अधिक होता था, और टुकड़े भी जाते थे।

Brief history of disease and treatment (with documents) 29-5-92.

जब मैं 17 वर्ष की थी तब मुझे महीना बहुत अधिक और टुकड़े-टुकड़े में आते थे, और महीना लगातार चलता रहा जब डाक्टर को दिखाया और चेकअप कराया तो मुझे All India के डाक्टर ठक्कर ने कैंसर बताया और मेरा इलाज शुरू हुआ उससे पहले मैंने मेरठ में दिखाया था पर ठीक नहीं हुआ तब दिल्ली फिर मेरठ और फिर मेरे भाई साहब ने [illegible]विहार के बारे में बताया, और मेरा इलाज यहां से चला। फिर मेरी हालत में कुछ सुधार आया और मैं यहीं की दवाई खाती रही मेरे पूरे शरीर पर सूजन, दर्द, खून की कमी, कमजोरी, महीने का लगातार आना, टुकड़े आना, चक्कर आना, नींद अधिक आना थकान रहना आदि [illegible] रोगों से परेशान थी लेकिन यहां की दवाई लेकर मुझे इन सब रोगों से छुटकारा मिलना शुरू हो गया। अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। अब मुझे किसी भी रोग से परेशानी नहीं है। अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। आपके यहाँ से मेरी बुआ जी फूलवती जी का भी इलाज चल रहा है। जब वह ठीक होने लगी तब मेरा इलाज भी आपके पास से चला और मुझे पूर्ण आराम हुआ। जिससे मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं।

धन्यवाद

(सन्दर्भ-३४७)

डाक्टरों को दिखाया, चेकअप कराया। आल इण्डिया इन्स्टीट्यूट आफ मेडिकल साइन्सेज के डॉक्टर ने बताया कि कैन्सर है। इसी अस्पताल का इलाज छः महीने चला, लेकिन कुछ फायदा नहीं हो रहा था। पूरे शरीर में सूजन, दर्द, खून की कमी, कमजोरी, महीने का लगातार आना, टुकड़े आना, चक्कर आना, नींद अधिक आना, थकान रहना आदि शिकायतें हावी थीं। फिर, मेरे भाई साहब ने आपके विषय में बताया। आपके यहाँ मेरी बुआजी का भी इलाज चल रहा है। आपकी दवा चली, तो सारी परेशानियाँ अब दूर हो गयी है। मैं अब बिल्कुल ठीक हो गयी हूँ। मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ।'' *(सन्दर्भ-३४७)*

वैसे रोगिणी तो तभी पूर्ण स्वस्थ हो चुकी थी, जब महज सात-आठ महीने ही 'सर्वपिष्टी' चली थी। मेरठ मेडिकल कालेज के प्रो. एम. एल. मेहरोत्रा ने दिनांक ४-२-९१ को ही उसकी जाँच करके देख लिया था कि रोग की उपस्थिति का कोई लक्षण शेष नहीं है। *(सन्दर्भ-३४८)*

उक्त रिपोर्ट की कॉपी के साथ रोगिणी ने अपने को पूर्ण स्वस्थ व रोग-मुक्त बताते हुए दवा बन्द कर देने का आग्रह किया क्योंकि उसे अब दवा लेते रहने की कोई आवश्यकता ही नहीं रह गयी थी।

''....मैं अब बिल्कुल ठीक हूँ।...अपनी रिपोर्ट की कॉपी भेज रही हूँ। अब मुझे दवा की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपकी बहुत आभारी हूँ कि आपने इतने रोगियों के होते हुए भी मेरा पूरा ध्यान रखा।...भगवान से प्रार्थना करूँगी, भगवान आपको बहुत कामयाबी प्रदान करे।''

रोगी जब कैन्सरमुक्त घोषित हो जाते हैं और 'सर्वपिष्टी' का सेवन बन्द कर दिया जाता है, तब भी डी. एस. रिसर्च सेण्टर समय-समय पर उन व्यक्तियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए पत्र लिखता रहता है। उत्तरों से इस बात की पुष्टि होती

Dr. M. E. MEHROTRA M.D.
PROFESSOR & HEAD
DEPARTMENT OF PATHOLOGY

Resi. F-12
MEDICAL COLLEGE,
MEERUT.
Phone 77379

CONSULTANT PATHOLOGIST

4.2.91

G. RANI 19 F

Specimen - Endometrial tissue

Micro. Diagnosis -

Non-secretory Endometrium c pseudo decidual reaction and polypoidal transformation.

No evidence of hyperplasia of any type.

(signature)

(सन्दर्भ-३४८)

है कि रोग ने पुनः सर नहीं उठाया।

उक्त कुमारी का दिनांक २५-१-९३ का पत्र, केन्द्र के पास लिखा गया अन्तिम पत्र है। इसके बाद सम्पर्क इसलिए नहीं किया गया कि उसका विवाह हो गया। भारतीय चिन्तन कई बिन्दुओं पर बहुत अटपटा है। अगर कहीं हमारे पत्र के द्वारा उसकी ससुराल वालों को पूर्व काल से उसे कैन्सर होने की जानकारी मिल जाय, तो शायद कोई बखेड़ा खड़ा हो जाय। समाज के पास अभी यह सूचना नहीं पहुँच पायी है कि कोई व्यक्ति कैन्सर हो जाने के बाद भी जीवन भर के लिए पुनः कैन्सरमुक्त और पूर्ण स्वस्थ हो सकता है। अधिक नहीं तो एक दृष्टान्त हमारे सामने है। एक युवती ब्रेन के कैन्सर से मुक्त तो हो गयी, किन्तु परिवार के जिन लोगों ने लगन के साथ चिकित्सा कराकर उसे कैन्सरमुक्ति तक पहुँचाया वे बाद में उसे सँभाल नहीं सके। पति ने दूसरा विवाह कर लिया और वह छोड़ दी गयी।

"अब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। अपने दाखिले व कॉलेज के कार्य की वजह से आपको कुछ लिख नहीं सकी। मैंने बी. ए. कर लिया है और एम. ए. में एडमिशन ले लिया है। अब मैं हर महीने पत्र लिखा करूँगी।....मेरी शादी भी तय हो गई है। शादी का कार्ड भेजूँगी। आशा करती हूँ आप जरूर आएँगे।"

"मेरी बहुत तमन्ना है कि मैं आपको एक बार जरूर देखूँ। डाक्टर साहब आपने मेरा इलाज किया, लेकिन मैंने आपको एक बार भी नहीं देखा। आप आएँगे, तो आपको किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी।.....मुझसे गलती हुई हो, तो पिता समझकर माफ करना और यदि आपकी उम्र कम है, तो बड़ा भाई समझकर माफ करना।" *(सन्दर्भ-३४९)*

शादी का निमन्त्रण-पत्र भी समय से आ गया था। हम जानबूझकर न तो उपस्थित हुए, न शुभकामना संदेश भेजा गया, न बाद में कोई पत्र देकर कुछ पूछने का साहस

25-1-93

सेवा में,

आदरणीय डाक्टर साहब जी, नमस्ते,

डाक्टर साहब अब मैं बिलकुल ठीक हूं। डाक्टर साहब, मैं अपने दाखिले व कालेज के कार्य की वजह से मैं आपको अपने स्वास्थ्य के बारे में पत्र नहीं लिख पायी। डाक्टर साहब अब मैंने बी.ए. कर लिया है और एम.ए में Admission ले लिया है।

अब मेरी शादी भी तय हो गयी है और मेरी शादी 16 अप्रैल की है और मैं आपको शादी का कार्ड भी भेजूंगी। आशा करती हूं कि आप जरूर आएंगे। मेरी बहुत तमन्ना है कि मैं आपको एक बार जरूर देखूं। डाक्टर साहब, आपने मेरा इलाज किया, लेकिन मैंने आपको एक बार भी नहीं देखा। डाक्टर साहब आप आएंगे तो आपको किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी।

मुझसे गलती हुई हो उसे पिता समान समझकर माफ करना और यदि आपकी उम्र कम है तो बड़ा भाई समझकर माफ करना। आपको मेरी तरफ से नमस्ते।

आपकी रोगी

Geeta Rani

(सन्दर्भ-३४६)

हुआ। व्यावहारिकता का यही तकाजा था। उपस्थिति, संदेश अथवा पत्र अगर रोग की बीती कथा को सामने रख देते, तो हमारा चिन्तन कितनी करवटें बदल लेता, क्या पता ! समाज का चिन्तन अपनी रफ्तार से चलता है। इसी कारण जो लोग कैन्सरमुक्त हो चुके हैं, वे कहीं तो अजनबीपन झेल रहे हैं, कहीं किसी काल्पनिक कथा के सूत्रधार माने जा रहे हैं।

❑

६५

मेलिग्नैंट ओवेरियन ट्यूमर
(मेटास्टेटिक)
MALIGNANT OVARIAN TUMOUR (METASTATIC)

श्रीमती बिमला कौर, ५४ वर्ष
५०८/१५, आर. बी. एल. रोड
न्यू हैदराबाद, लखनऊ

रोग का इतिहास : रोगिणी को चिकित्सा-सुविधाएँ पर्याप्त थीं। किन्तु स्वास्थ्य-संबन्धी उपद्रव भी विविध प्रकार के थे। भूख कम हो गयी थी, पाचन अव्यवस्थित था, दुर्बलता बढ़ती जा रही थी, पेट के निचले भाग में दर्द रहता था, शरीर में हिमोग्लोबिन-मात्रा घटती जा रही थी। यह देखकर कि लक्षणों के अनुसार चिकित्सा चलाते जाना उचित नहीं है, स्वास्थ्य-परीक्षा शुरू करायी गयी।

Dr A K PANDEY
MD (RAD)
Specialist in CT Scanning and Ultrasonography

A P MEDICAL CENTRE
(Ultrasound, Pathology and X-Rays)
14, Hardoi Road, Chowk,
(Near Kali Charan Degree College)
LUCKNOW-226 003
Phone : 81622

JAN 25, 1992

MRS BIMLA KAUR
SURG OPD KGMC

PELVIC ULTRASOUND STUDY

There are multiple small solid masses [illegible] adnexa and cul de sac. The masses are [illegible] and fixed to the underlying structures including uterus. [illegible]

OPINION: [illegible] masses in pelvis

AKPandey MD

(सन्दर्भ-३५०)

जाँच : (१) ए. पी. मेडिकल सेण्टर, लखनऊ के डॉ. ए. के. पाण्डेय ने २५.१.९२ को वस्ति भाग के अल्ट्रा- साउण्ड का अध्ययन करके देखा कि वस्ति भाग में (पेल्विस) बहुत सारे पिण्ड (Masses) बन गये हैं। *(सन्दर्भ-३५०)*
(२) २६.१.९२ को चेस्ट एक्स-रे हुआ। फेफड़े

Charak X-Ray Clinic
202/6, TULSI DAS MARG.
CHOWK MANDI LUCKNOW.
Phone : 266212

Mrs. Bimala Kaur

Dr. Kulwant Singh

X-ray Chest P.A. View Shows

.Both hilar shadows are prominant.

.A linear radio-opacity seen in right lower zone.

.Right CP angle is obliterated.

Radiologist

29.1.92

(सन्दर्भ-३५१)

स्वस्थ और निर्दोष नहीं पाये गये। *(सन्दर्भ-३५१)*

(३) डॉ. चन्द्रावती ने मेलहोत्रा पैथॉलाजी क्लिनिक, लखनऊ में 'ओमेण्टल मास्स' की बायाप्सी करायी तो ओवेरियन कैन्सर की पुष्टि हुई। (सेक्शन नं. ७७६/९२, दिनांक ०७.०२.९२), मेटास्टेटिस फ्राम अनडिफरेंशियेटेड कार्सिनोमा। *(सन्दर्भ-३५२)*

चिकित्सकों ने सभी रिपोर्ट्स के अध्ययन, तेजी से भागती मेटास्टेसिस तथा रोग की 'अनडिफरेंशियेटेड' नियति को देखकर स्थिति को बहुत गम्भीर बताया।

चिकित्सा : श्री कुलवन्त सिंह स्वयं चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति हैं और उनके लिए न तो चिकित्सा-जगत अपरिचित है, न चिकित्सा का प्रभाव-क्षेत्र। गाँधी मेमोरियल एण्ड एसोसिएटेड हॉस्पीटल, लखनऊ के ख्याति प्राप्त सर्जन एवं चिकित्सक डॉ. एन. सी. मिश्र ने चिकित्सा का

MEHROTRA PATHOLOGY CLINIC

Consultant Pathologist and Owner of the Clinic Dr. R. M. L. Mehrotra

(1954) Dedicated to the memory of Smt. Kunti Mehrotra

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

Patients Name : Mrs. Bimla Kaur — Section No.: 779/92

Referred by : DR. Chandravati, DGO,MS,DFPA — Received Dt:04/02/92

Specimen : Omental mass

GROSS : An irregular soft tissue mass measuring 3x3x2 cms. It shows a few firm white areas. Three sections have been taken.

DIAGNOSIS : METASTASIS FROM UNDIFFERENTIATED CARCINOMA.

(Anita Mehrotra) (Bandana Mehrotra) (R.M.L.Mehrotra)

DATE :07/03/92

(सन्दर्भ-३५२)

GANDHI MEMORIAL & ASSOCIATED HOSPITALS
LUCKNOW

No. 44590 SURGICAL O.P.D
Book No. 446
O.P.D. Registration
No. 4995
Date of Issue
Date of Validity
Name Smt. Bimla kaur Age 52 yr Sex F
Address
Provisional Diagnosis CA Ov.
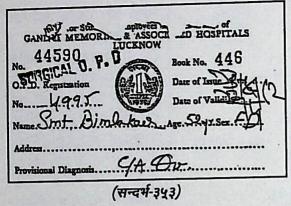
(सन्दर्भ-३५३)

दायित्व सँभाला था (ओ. पी. डी. रजिस्ट्रेशन नं. ४६६५, बुक नं. ४४६)। डॉ. मिश्र ने भी रोग की गंभीरता का संकेत दे दिया था। *(सन्दर्भ-३५३)*

'सर्वपिष्टी' की ओर : श्री कुलवन्त सिंह जानते थे कि जब मेटास्टेसिस तीव्र हो, तो सर्जरी, जो एक सीमित क्षेत्र पर ही लागू होती है, विशेष प्रभाव नहीं रखती। मेटा- स्टेसिस के जवाब में खड़ी की जाती है किमोथेरापी, जिसके साइड एफेक्ट्स खतरनाक हो सकते हैं। दूसरी बात कि किमोथेरापी मेटास्टेसिस को तोड़ भी नहीं पाती। इसी बीच उन्हें डी. एस. रिसर्च सेन्टर के विषय में जानकारी मिली और शीघ्र ही उन्होंने 'सर्वपिष्टी' शुरू कर देने का निर्णय ले लिया।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ :

दिनांक २२.०२.९२

श्री कुलवन्त सिंह ने रोगिणी को नियमपूर्वक विधि के साथ और पूरे विश्वास के साथ डॉ. एन. सी. मिश्र द्वारा चलाये जानेवाली अस्पताली चिकित्सा के समानान्तर ही 'सर्वपिष्टी' का सेवन प्रारम्भ करा दिया। पोषक ऊर्जा की

रोगी: विमला कौर
(सर्वपिष्टी लेते हुए समय ६ मास)
रोगी अपने को पूर्ण स्वस्थ महसूस कर रहा है।
Kulwant
23.11.92

(सन्दर्भ-३५४)

विमला कौर दिनांक 23.7.93
मैलिग्नेन्ट ओवेरियन ट्यूमर
चिकित्सक महोदय, डी. एस. रिसर्च सेन्टर
वाराणसी मेरे रोगी विमला कौर को कैंसर की औषधि
से काफी लाभ प्राप्त हुआ है। देखने से ... रिपोर्ट
... दोनों प्रकार से काफी सुधार है। ...
... के रूप में भी वह काफी स्वस्थ है। अब वह
पहले से काफी स्फूर्तिवान महसूस करती है।
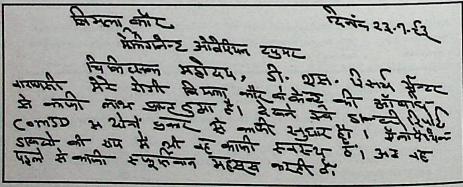
(सन्दर्भ-३५५)

खूराकों ने जीवन को एक बड़ा आधार दे दिया। रोगिणी का स्वास्थ्य सुधरने लगा। रोग तथा किमोथेरापी के कारण स्थापित उपद्रव भी शान्त होने लगे।

केन्द्र के इलाज के बाद रोगी के स्वास्थ्य में काफी सुधार है। रोगी को किसी भी प्रकार का शारीरिक एवं मानसिक कष्ट नहीं है।

दिनांक
२६-८-९२

बिमल कौर
C/o ठाकेन्द्र सिंह

(सन्दर्भ-३५६)

रिपोर्ट दिनांक २३.११.९२

श्री सिंह ने रिपोर्ट किया रोगिणी जहाँ देखने में कमजोर थी, अब तन्दुरुस्त है। भूख क्षीण हो गयी थी, वह ठीक है। कब्ज नहीं है। पाचन सामान्य है। पेट का भारीपन समाप्त है। *(सन्दर्भ-३५४)*

रोगी– बिमला कौर, लखनऊ का स्वास्थ्य अब ठीक है। मैं इतवार (२९.१.९५) को सुबह काशी विश्वनाथ से अपने घर वाराणसी आ रहा हूँ।

(सन्दर्भ-३५७)

रिपोर्ट दिनांक २३.०१.९३ : श्री सिंह ने रिपोर्ट दी– वजन बढ़ा है, चेहरा ओजस्वी है, भूख अच्छी है, पाचन ठीक है, नींद सामान्य है, शक्ति पहले से काफी ठीक है, शरीर और मन में स्फूर्ति आ गयी है, पाखाना-पेशाब सामान्य है, पेट के निचले भाग में रहने वाला दर्द अब नहीं है। हिमोग्लोबिन नौ ग्राम से बढ़कर १२.५ ग्राम आ गया है। डाक्टरों की राय में रोग बहुत गम्भीर था; अब उनकी राय है कि रोगी पहले से काफी स्वस्थ है। *(सन्दर्भ-३५५)*

G. M. & Associated Hospitals
Lucknow

Patient Bimla Kaur Age 55 yrs Sex F
Ward Self Bed ...... Unit ......
Doctor Incharge Prof. N.C. Misra
Specimen ...... Source ......
Time of collection ...... Date 6.1.95

CLINICAL DATA 33637

HAEMOGLOBIN 10.0 gm%
TOTAL LEUKOCYTE COUNT [illegible] /cumm
DIFFERENTIAL LEUKOCYTE COUNT [illegible]

(सन्दर्भ-३५८)

रोगी की स्थिति अब
12 ग्राम %. है
Recd
19.08.97

(सन्दर्भ-३५६)

रिपोर्ट दिनांक २६.०४.६३ : श्री सिंह ने रिपोर्ट दी—केन्द्र के इलाज के बाद रोगी के स्वास्थ्य में काफी सुधार है। रोगी को किसी प्रकार का एनीमिया एवं जॉण्डिस नहीं है। *(सन्दर्भ-३५६)*

२८.१०.६५ को पत्र द्वारा श्री कुलवन्त सिंह ने रोगिणी के स्वस्थ होने का समाचार भेजा। *(सन्दर्भ-३५७ और सन्दर्भ-३५८)*

अन्तिम सूचना : 'सर्वपिष्टी' अन्तराल के साथ दी जा रही है। अब (१६६७में) श्रीमती कौर की उम्र भी ५६ वर्ष है। दिनांक १६.०८.६७ को श्री कुलवन्त सिंह ने रोगिणी के स्वास्थ्य के विषय में रिपोर्ट दी। ''रोगी की स्थिति अब काफी ठीक है। पेट में किसी तरह का दर्द नहीं है। पाचन भी ठीक है। कभी-कभी कब्ज और गैस की शिकायत रहती है। अब बुखार नहीं आता है। हिमोग्लोबिन १२ ग्राम है। शेष सब ठीक है।'' *(सन्दर्भ-३५६)*

'सर्वपिष्टी' ने मेटास्टेटिस तो शुरू-शुरू में ही तोड़ दी थी, अतः कैन्सर किसी नये क्षेत्र को प्रभावित नहीं कर सका। अब तो श्रीमती कौर पूर्ण स्वस्थ हैं।

❑

लगातार चिकित्सा के बावजूद रोगों के क्रमशः जटिल होते जाने से व्यथित लोग पहले भाग्य और बीमारी के खाते में अपने उलाहने डाल देते थे। औषधियाँ उन्हें भरोसेमन्द जीवन-साथी, जीवन-रक्षक और निर्दोष कष्ट-निवारक ही मालूम होती थीं। किन्तु ड्रगों के दुष्प्रभावों तथा साइड एफेक्ट्स की बाढ़ ने घर-घर का माहौल बदल दिया है। ड्रगौषधियों का मायाजाल टूटने लगा है और लोग इनसे बचाव की ओर भागना चाहते हैं।

अब तो समझदार लोग सलाह देने लगे हैं, ''अगर जीवन पर जोखिम की बात न हो, तो औषधियों से परहेज रखकर चलो। 'पहले रोग' से समझौता करके जीना सीख लोगे, तो अन्य कई रोगों से बचाव हो जायेगा।''

६६

गर्भाशय-ग्रीवा का कैन्सर
स्टेज-२
(CA. Cx. Stage-2)

श्रीमती बीना झा, २८ वर्ष
पत्नी : श्री राजेन्द्र रंजन झा
डी-५१/१६०, सूरज कुण्ड
वाराणसी।

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा :

(१) कमाण्ड हॉस्पीटल, लखनऊ; एम. एफ. नं. ७३०/८/६१
(२) इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज एण्ड हॉस्पीटल, बी. एच. यू. (CT२२५४०, दिनांक २१.४.६२)।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : २८.८.६१।

१६८५ में श्रीमती बीना झा टी. बी. की बीमारी से ग्रस्त हो गईं। अब तो गाँव-गाँव और गली-गली में जानकारी हो गयी है कि टी. बी. जानलेवा मर्ज नहीं है, इसका इलाज आसान हो गया है। कभी होमियोपैथिक, कभी आयुर्वेदिक तो कभी ऐलोपैथिक चिकित्सा

डा० श्रीमती उषा गुप्ता
B. Sc., M. B. B. S.
भूतपूर्व इन्चार्ज, महिला विभाग
मारवाड़ी अस्पताल, वाराणसी

आशीर्वाद मेटरनिटी एवम् नर्सिंग होम
बी ३८/१-सी, बिरदोपुर,
महमूरगंज, वाराणसी

Date 23/7/91

Smt. Beena Devi
25 yrs

O/E
[illegible]
cervical biopsy
[illegible] Ca Cx.

(सन्दर्भ-३६०)

REQUEST FOR SPECIAL INVESTIGATION Ward - 7 30/8/91

Hospital: CH(CC) Lucknow

1. Ship/unit R/o RRC | 2. Service No 2x2772162 | 3. Rank/Rate | 4. Name w/o Rajendra Kumar

5. Age | 6. Service | 7. Nature of specimen and when collected

8. Examination required (Give reference to earlier report, if any) X-ray chest

9. BRIEF CLINICAL NOTES Ca Cx IIa (Routine)

Date: 30/8/91

Signature of M.O. SUR. GARG LT AMC

(सन्दर्भ-३६१)

चलते पाँचवाँ वर्ष होने लगा। कमजोरी अधिक थी, तभी अस्वाभाविक स्राव शुरू हो गया। हल्की-फुल्की दवाओं का असर नहीं देखकर महिला चिकित्सक डॉ. उषा गुप्ता को दिखाया गया। उन्होंने एक्सरे, रक्त, पेशाब, पाखाना की जाँच करके इलाज शुरू किया। इलाज का कोई प्रभाव नहीं देखकर व्यापक जाँच हुई। डॉ. गुप्ता ने बच्चेदानी में एक गाँठ नोट की और बायाप्सी करा दी। पाया गया कि कैन्सर है। श्रीमती गुप्ता ने बम्बई ले जाने की सलाह दी। *(सन्दर्भ-३६०)*

पति भूतपूर्व सैनिक थे। पत्नी को लेकर कमाण्ड हॉस्पीटल, लखनऊ गये (ओ. पी. नं. ७३०/८/९१)। चिकित्सकों ने राय दी कि किसी कैन्सर अस्पताल में जाकर इलाज करायें। *(सन्दर्भ-३६१)*

वाराणसी लाकर बी. एच. यू. के कैन्सर अस्पताल में दिखाया और रेडियोथेरापी शुरू हुई। जब पत्नी रेडियोथेरापी से उत्पन्न लक्षणों—उल्टी, अभूख, अनिद्रा से जूझ रहीं थीं, तभी भनक मिली डी. एस. रिसर्च सेण्टर की। २६-६-९१ से सर्वपिष्टी शुरू की गयी। उत्तरोत्तर सुधार होने लगा। २१-४-९२ को बी. एच. यू. के कैन्सर अस्पताल में जाँच हुई तो श्रीमती झा में कैन्सर के कोई चिन्ह शेष नहीं पाये गये। *(सन्दर्भ-३६२)*

दिनांक ७.५.९२ को आदित्य डायग्नॉस्टिक सेण्टर, वाराणसी ने साइटोलाजी जाँच से भी कैन्सर के नहीं होने की पुष्टि की। *(सन्दर्भ-३६३)*

श्री झा आज भी चर्चा कर देते हैं, "डी. एस. रिसर्च सेण्टर के प्रो. त्रिवेदी ने पहले-पहल आश्वासन दिया कि संकट में घबराना नहीं चाहिए। उन्होंने ही कहा था कि मेरी पत्नी बच सकती हैं।"

अपनी पत्नी की कैन्सर-मुक्ति की पूरी कहानी श्री राजेन्द्र कुमार देव रंजन झा ने केन्द्र को लिख भेजी थी। आइये देखते हैं उसके कुछ अंश—

CT 22880

INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

AND

S. S. HOSPITAL

BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI

Laboratory Examination Report

Patients Name........Beena devi..........

Age/Sex..37F..... Ward/O.P.D. ..ST...... Bed. No./O.P.D. No. ....

Specimen.............................. Report No..........

Ref. by Dr........AK Asthana...............

Inflammatory.
No malignant Cell Seen.

Date of Receipt / Date of Despatch .... Pathologist / Microbiologist

8/4/92

(सन्दर्भ-३६२)

"....फरवरी ६१ से मेरी पत्नी को जल-स्राव होने लगा जो गाढ़ा एवं बदबूदार था एवं पेट में पेसाब द्वार से ऊपर पेडू में दर्द होने लगा.....स्त्री रोग विशेषज्ञ की लगभग तीन महीने हमने दवा की। उनके दर्द एवं जल-स्राव के कम होने की कौन कहे दर्द अनवरत बढ़ता चला गया एवं जल-स्राव रक्त-स्राव में परिवर्तित हो गया। रक्त-स्राव एवं दर्द बढ़ता चला गया.... दोबारा चेक किया एवं बोलीं कि आपको इनकी बायोप्सी करवानी पड़ेगी।"

".....बायाप्सी हुई। दस दिन बाद रिपोर्ट मिली। मैं दिखाने ले गया। रिपोर्ट देखते ही डॉ. साहिबा ने कहा कि आप मरीज को लेकर टाटा मेमोरियल कैंसर अस्पताल ले जाओ। तुम्हारे मरीज को बच्चेदानी का कैंसर है। कैंसर बहुत ही तेजी से बढ़ रहा है....... मैं भूतपूर्व सैनिक हूँ, मैं अपने मरीज को लखनऊ कमाण्ड हॉस्पीटल ले गया। वहाँ पर डॉक्टरों ने देखा-सुना, फिर बोले आपकी मरीज को शायद अब कोई चिकित्सा नहीं मिल पाएगी, क्योंकि इसके छेड़ते ही मरीज कोलेप्स कर जायेगा। इसे घर ले जाओ एवं जितनी सेवा कर सको, करो....अगर तुमसे हो सके तो रेडियेशन करवा लेना, जिससे शायद कुछ लाइफ बढ़ जाए। मैं हार कर वापस वाराणसी आ गया।"

"...मैं बी. एच. यू. भी ले गया"......सैंकाई चालू हुई तो परेशानियों में बढ़ोत्तरी ही हुई"..."मैं बहुत ही अधिक परेशान था कि एक सज्जन के द्वारा मुझे डी. एस. रिसर्च सेण्टर की जानकारी मिली।"

"...डी. एस. रिसर्च सेण्टर के रिसर्च वैज्ञानिक प्रो. एस. एस. त्रिवेदी जी ने मरीज को एवं कागजों को देखा, उसके बाद हमसे हिस्ट्री पूछी। मैंने सब बयान कर दिया। सुनने के बाद उन्होंने कहा-"घबड़ाओ मत, तुम्हारा मरीज ठीक हो जाएगा।" मेरे कानों को विश्वास नहीं हुआ। किन्तु इसे मैंने ब्रह्म-वाक्य मान लिया। मेरी पत्नी भी कुछ

AADITYA DIAGNOSTIC CENTRE

1st Floor, Infront of Bota Shop, Lanka, Varanasi

Dr. S. K. Singh
M. D. (Path.) IMS. BHU

Dr. Dinesh Singh
M. D. (Path.) IMS. BHU

Dr. N. K. Singh
M. D. (Rad.) AIIMS

Patient's Name... Mrs. Beena Jha ... Age & Sex ... 31 yrs F.

Specimen ... Pap Smear of Vaginal ... Date 7/5/1992 ...

Examination Required... Cytology ...

Consultant Dr.... A. K. Asthana ...

Cytologic impression:-

Smear composed of plenty of neutrophilic admin with few lymphocytes and [illegible] squamous epithelium. No Malignant cell seen.

Dr. S. K. Singh
M. B. B. S., M. D. (Path) B. H. U.

Dr. Dinesh Singh
M. B. B. S., M. D. (Path) B.H.U.

(सन्दर्भ-३६३)

आश्वस्त नजर आने लगी। डॉ. साहब ने मेरी पत्नी से कहा "तुम खूब मन लगाकर नियमपूर्वक दवा खाओ। बिल्कुल ठीक हो जाओगी।"

"....मात्र एक सप्ताह की दवा खाते ही मेरी पत्नी को विश्वास हो गया कि वे ठीक हो जाएंगी। हमने सभी जगहों की दवा लेनी बन्द कर दी। सिर्फ डी. एस. रिसर्च सेण्टर की दवा पर ही रोगी को छोड़ दिया... समय के साथ-साथ हमारी पत्नी स्वस्थ्य होती चली गई। अब वह पूर्णतया कैंसर मुक्त है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर का यह ऋण शायद मैं इस जन्म तो क्या जन्म-जन्मान्तर तक नहीं चुका पाऊँगा.... मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर का आजन्म आभारी रहूँगा, क्योंकि इस केन्द्र ने पत्नी को दोबारा जीवन दिया है।" *(सन्दर्भ-३६४)*

दो वर्षों से श्रीमती झा को 'सर्वपिष्टी' अन्तराल के साथ दी जा रही थी। किसी प्रकार का उपद्रव नहीं देखकर जनवरी १९९६ से औषधि बन्द कर दी गयी। आशंका सदैव बनी रही कि दो महारोगों के उग्र आक्रमण द्वारा जर्जर बनाये गये उनके स्वास्थ्य का विचलन कभी भी बढ़ सकता है और कैन्सर पुनः उत्पन्न हो सकता है। किन्तु ऐसा नहीं हो सका है।

"चूँकि वह केन्द्र एक सैनिक की स्मृति में है। मैं भी भू. पूर्व सैनिक हूँ। मुझे वरीयता प्रदान की प्रो. एस. एस. द्विवेदी जी ने।"

"इस समय ऐसा आया जब मेरी पत्नी कैंसर रोग से मुक्त हो गयीं। अन्य महिलाओं की तरह जीवन व्यतीत कर रही हैं।"

[signature]

19.1.96

(सन्दर्भ-३६४)

लगभग दो वर्ष बाद अर्थात् ३०.११.६७ की रिपोर्ट :

श्री राजेन्द्र कुमार रंजन देव झा ने रिपोर्ट दी कि श्रीमती बीना झा को कैन्सर सम्बन्धी कोई शिकायत नहीं है। पूरी रिपोर्ट है, "श्रीमती बीना देवी झा, पत्नी : राजेन्द्रकुमार रंजन देव झा, डी-५१/१६०, सूरजकुण्ड, वाराणसी की निवासिनी है, कैन्सर से पीड़ित थीं। अनेक अस्पतालों का चक्कर लगाने के उपरान्त डी. एस. रिसर्च सेण्टर से औषधि चालू किया। जिसके फलस्वरूप, मन्थर गति से ही सही, निरन्तर सुधार की स्थिति बनती चली गयी।

"पिछले दो वर्षों से प्रायः औषधि (सर्वपिष्टी) नहीं दी जा रही है। इससे पूर्व प्रायः दो वर्ष तक अन्तराल से औषधि चली थी। वर्तमान समय में रोगिणी को कैन्सर से सम्बन्धित कोई कष्ट नहीं है।" *(सन्दर्भ-३६५)*

श्रीमती बीना देवी झा की रिपोर्ट   दिनांक :- 30.11.97

श्रीमती बीना देवी झा पत्नी- राजेन्द्र कुमार रंजन देव झा - डी. 51/190- सूरजकुण्ड - वाराणसी (उ.प्र.) की निवासिनी हैं; कैन्सर से पीड़ित थीं। अनेक अस्पतालों का चक्कर लगाने के उपरान्त डी. एस. रिसर्च सेण्टर से औषधि चालू किया। जिसके फलस्वरूप मन्थर गति से ही सही निरन्तर सुधार की स्थिति बनती चली गई।

पिछले दो वर्षों से प्रायः औषधि (सर्व-पिष्टी) नहीं दी जा रही है। इससे पूर्व प्रायः दो वर्षों तक अन्तराल से औषधि चली थी। वर्तमान समय में रोगिणी को कैन्सर से सम्बन्धित कोई कष्ट नहीं है।

[signature] 30.11.97

राजेन्द्र कुमार रंजन देव झा

(सन्दर्भ-३६५)

६७

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर ३-बी
(CA. CX. 3-B)

श्रीमती अफजलुम निशा, ४५ वर्ष
पत्नी : डॉ. सिकन्दर अली खान
जेड-१६८, डॉ. ए. के. रोड
कलकत्ता-७०००४४

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : कैंसर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर, कलकत्ता (नं. २/२३६३, दि. ७.५.६२) *(सन्दर्भ-३६६)*

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : २४-६-६२

श्रीमती निशा अस्वाभाविक रक्तस्राव से पीड़ित हुईं। इलाज चला किन्तु स्राव और दर्द में कोई कमी नहीं आयी। कुछ चिकित्सकों के परामर्श से कैन्सर अस्पताल ले जाई गयीं, किन्तु तब तक रोगिणी बहुत कमजोर हो गई थीं। उधर जाँच के बाद पता चला कि कैन्सर भी बड़ी तेजी से बढ़कर ३-बी स्टेज में पहुँच गया है। २०-७-६२ तक रेडियेशन तो पूरा हो गया, लेकिन आराम के स्थान पर कुछ नये उपद्रव भी शुरू हो गये। भीतर चिलकन और बाहर जननेन्द्रिय के क्षेत्र में इतनी खाज कि खाज करके खून निकाल लेने पर भी चैन नहीं मिलता। अस्पताल से छुट्टी मिली कि स्वास्थ्य सुधरे बगैर चिकित्सा के अगले चरण के विषय में कुछ विचार नहीं किया जा सकता।

CANCER CENTRE
& WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD
THAKURPUKUR • CALCUTTA 700 063
DIAL 77 4433/4444
DEPARTMENT OF RADIATION ONCOLOGY
NAME Afjalun Nesha
REGISTRATION NUMBERS F Islam-55

OPD92/2393	TT	BT4563

UNIT
Superficial X ray
Deep X ray
Telecobalt I
Telecobalt II
HDR Brachytherapy
Others

Ca - Cx - IIIB

(सन्दर्भ-३६६)

डी. एस. रिसर्च सेण्टर का पता चलने पर २४-६-६२ से वहाँ की दवा 'सर्वपिष्टी' शुरू की गयी। परेशानियों से धीरे-धीरे छुटकारा मिलने लगा और स्वास्थ्य में भी सुधार होने

P. Name :- Afzalun Nisha 16.12.93
W/o Dr. Sikandar ali Khan.
Z 165. Dr. A.K. Rd.. Cal.44

D. S. Research Centre. Cal. 700007

[illegible]

[illegible]

D. S. Research Centre [illegible]

24.2.92 [illegible] D.S. Research [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ডাঃ [illegible]

23.12.93

(सन्दर्भ-३६७)

लगा। तीन महीने में स्वस्थ होकर चलने-फिरने लगीं और अब कोई परेशानी शेष नहीं रह गयी।

समय-समय पर केन्द्र को रोगिणी के स्वास्थ्य की प्रगति के बारे में जानकारी मिलती रही। श्रीमती अफजलुम निशा जब पूरी तरह से स्वस्थ व सामान्य हो गयीं तो सिकन्दर अली खान ने अपने दिनांक १६.१२.६३ के पत्र में केन्द्र को लिखा—

"मेरी स्त्री को कैन्सर रोग था। ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल में बीस रे देने के बाद, डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया। दि. २४.२.६२ से डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने औषधि देना शुरू किया। आज तक रोगिणी पूरी तरह से स्वस्थ है, कोई परेशानी नहीं हो रही है। वजन बढ़ा है। मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर से अनुरोध करता हूँ कि मेरे रोगी की औषधि धीरे-धीरे कम कर दें तो अच्छा रहेगा। कारण मेरे घर के सब लोगों की धारणा है कि कैन्सर ठीक हो गया है।" *(सन्दर्भ-३६७)*

औषधि छह महीने चली। डी. एस. रिसर्च सेण्टर द्वारा बार-बार यह कहने के बावजूद कि एक बार अस्पताल ले जाकर रोग-स्थिति की जानकारी कर ली जाय, न तो रोगिणी ने उधर जाना स्वीकार किया, न घरवालों को ही उचित लगा। सर्वपिष्टी तो बन्द कर दी गयी किन्तु रोगिणी के स्वस्थ-सामान्य जीवन व्यतीत करने के समाचार मिलते रहे।

4.8.94

P.S. Afjalun Nisha

c/o Dr. Sikandar Ali Khan

(सन्दर्भ-३६८)

उनकी ओर से दिनांक ४-८-६४ के पत्र में श्री खान ने लिखा है, "रोगी अब तो बहुत अच्छा है। उसे किसी प्रकार की असुविधा नहीं है।" (मूल बंगला पत्र)। *(सन्दर्भ-३६८)*

श्रीमती निशा के पति डॉ. सिकन्दर अली खान स्वयं ही एक चिकित्सक हैं। उनका अनुभव है कि रोग के ३-बी स्टेज में पहुँच जाने के बाद इस प्रकार से कैन्सर-मुक्त होने का परिणाम उन्हें आश्चर्य में डाल देता है। उन्होंने ऐसा परिणाम देखा-सुना नहीं है। वे श्रीमती निशा को चेकअप के लिए ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल के चिकित्सकों के पास उनके दिये गये समय पर ले जाते हैं। चिकित्सक हर बार कहते हैं कि 'रोग नहीं है। चेकअप के लिए फिर लाना।' अब तो जाँच करने वाले चिकित्सक भी आश्वस्त हो गये हैं और इस बार उन्होंने एक वर्ष बाद आने के लिए कहा है।

डॉ. श्री सिकन्दर अली खान ने ०४.१२.६७ को लिखा है, "....मेरा सलाम व प्यार ग्रहण करें। इस बीच अपनी पत्नी श्रीमती अफजुल निशा को ठाकुरपुकुर (कैन्सर अस्पताल) में छह-छह माह बाद तीन बार दिखाया। अब तो उन्होंने एक वर्ष बाद आने के लिए कहा है। मैंने इस प्रकार के कैन्सर रोगी को ठीक होते बहुत कम देखा है।...गृहस्थी का बोझ पैसों की कमी से आपकी औषधि खिलाना बाद में बन्द कर दिया था। इस समय उन्हें कोई भी औषधि नहीं दी जा रही है। रोगिणी (अब रोगिणी नहीं) पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं।" *(सन्दर्भ-३६६)*।

(सन्दर्भ-३६६)

६८

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर २-बी
(CA. Cervix- II-B)

श्रीमती नारायणी पाल, ५८ वर्ष
द्वारा : श्री जयसेन पाल
४३, रामनिधि अवस्थी रोड,
बजबज, जि. २४ परगना (दक्षिण)
(पश्चिम बंगाल)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : नील रतन सरकार मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, कलकत्ता (नं. १३५०३), दिनांक-१६-११-६३। *(सन्दर्भ-३७०)*

Unit III B2

West Bengal Form No. 817

Discharge Certificate

N. R. S. Medical College Hospital

No. 13503

I hereby certify that Narayani Paul w/o. Jay Sen Paul 43-Ramnidhi Awasthi Rd. of PO - Budge Budge, 24 Pgs (S) PS - Budge Budge was under treatment in this Hospital from 19/11/93 to 16/12/93 admitted suffering from Bleeding P/V

NRSMC Hospital

The 16/12/ 1993

Signature [illegible]

Designation [illegible]

A case of [illegible] post-menopausal bleeding. P/C done & shows [illegible] carcinoma of Cx. [illegible] it is a case of Stage IIB - CA Cx. But the blood sugar level is very high (332 mg/l - PP & 192.6 mg/L (fasting) which can [illegible] properly controlled by Insulin (S-U) [illegible] done. Even she has IHD. So high anaesthetic risk. Patient refd. to Thakurpukur Hospital for Radiotherapy.

[illegible] 16/12/93

Refd. to Thakurpukur Hospital for Radiation. A PP [illegible] after 2 days & referred MCPP on Saturday [illegible] this report.

[illegible] 16/12/93

(सन्दर्भ-३७०)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : २४-१२-६३।

परिस्थितियों ने श्रीमती नारायणी पाल तथा उनके परिजनों को डी. एस. रिसर्च सेण्टर की 'सर्वपिष्टी' तक कैसे पहुँचाया यह अपने आप में एक रुचिकर प्रसंग है। विज्ञान तो नहीं पकड़ता किन्तु कुछ लोग प्रसंगों अथवा आकस्मिकताओं को अपनी सफल यात्रा से इस प्रकार जोड़ लेते हैं कि वे अपनी ओर से दोनों को पृथक करके नहीं देख पाते। लखनऊ की कुमारी बिन्दुरानी वर्मा 'सर्वपिष्टी' द्वारा ब्रेन ट्यूमर से मुक्त हो गयीं, यह एक वैज्ञानिक प्रसंग है। किन्तु बिन्दु के सुशिक्षित पिता जिन्होंने अपनी जिन्दगी साहित्य-पठन और शिक्षित समाज में बितायी है, बिन्दु की चिकित्सा-यात्रा को उस प्रसंग से अलग करके नहीं देख सकते, ''बिन्दु को अस्पताल में भर्ती कर देने की कार्यवाही चल रही थी, क्योंकि अगले दिन ही ऑपरेशन होना था। मैं, बिन्दु की माँ तथा दो-एक और परिजन बरामदे में बैठे थे। बिन्दु को लिटा रखा था। उसी समय एक विशालकाय लंगूर आया और उसने हमें घुड़ककर डराया। उतना विशाल लंगूर मैंने उससे पूर्व और उसके पश्चात कभी नहीं देखा। वह दाँत कटकटाकर हमारी ओर टूट पड़ता था ! .....बिन्दु की माँ का मन दहल गया। उसने हठ कर लिया, ऑपरेशन नहीं करायेंगे। हम बिन्दु को लिए-दिये अपने घर आ गये।...बड़ी चिन्ता में इधर-उधर भटकते हुए मैंने रेलवे स्टाल पर एक पत्रिका देखी जिसमें ब्रेन ट्यूमर रोग का 'सर्वपिष्टी' द्वारा ठीक हो जाने का प्रामाणिक हवाला था।'' वहीं से 'सर्वपिष्टी' के विषय में तथ्यात्मक जानकारी प्राप्त करने की यात्रा और फिर उसके द्वारा बिन्दु के ट्यूमर-मुक्त होने वाली यात्रा शुरू हुई।

श्रीमती नारायणी पाल के साथ भी वैसा ही एक प्रसंग जुड़ा है। नील रतन सरकार मेडिकल कॉलेज अस्पताल, कलकत्ता में जाँच हुई। गर्भाशय की ग्रीवा का कैन्सर था किन्तु इसका फैलाव ऐसा था कि पूरा गर्भाशय निकालने के बाद ही आगे कुछ सोचा जा सकता था। ऑपरेशन तय हो गया, किन्तु ऐन मौके पर रक्त की रिपोर्ट ने बताया कि ब्लड-शूगर बहुत ऊँचा (३३२/१६२) है और अभी ऑपरेशन का जोखिम नहीं उठाया जा सकता। सलाह दे दी गयी कि ठाकुरपुकुर ले जाकर रेडियोथेरापी कराई जाय और फिर आगे की चिकित्सा भी वहीं चले।

रोगिणी को घर वापस लाया गया। आगे का कार्यक्रम तय हो रहा था, तभी डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली। उसके बाद की सारी यात्रा 'सर्वपिष्टी' के साथ है। ८ अप्रैल, १९६४ को कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर ले जाकर रोगिणी की जाँच करायी गयी, ताकि रोग और स्वास्थ्य का सही चित्र सामने आ सके। जाँच के बाद बताया गया, ''खूब सुधार है, खूब अच्छी है।''

रोगिणी का पुत्र राजू पाल सेण्टर को पत्र लिखता है, ''अन्तिम रूप से केवल यही कहा जा सकता है कि मेरी माँ के स्वास्थ्य-सुधार में मुख्य भूमिका डी. एस. रिसर्च सेण्टर की ही है। हम इस केन्द्र के चिर कृतज्ञ रहेंगे।'' (दिनांक १८-५-६४)

अब श्रीमती पाल कैन्सर की ओर से बेफिक्र जिन्दगी जी रही हैं। प्रति छह माह पर ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल केवल चेक अप के लिए जाना पड़ता है। उनके पुत्र श्री

ডি.এস. রিসার্চ সেন্টার

মাননীয় মহাশয়, NARAYANI PAUL

আমার মার জরায়ুতে ক্যান্সার হয়েছিল। আপনাদের ঔষুধ খেয়ে বর্তমানে সুস্থ আছেন। কোনরকম অসুবিধা নেই। প্রায় ৫ (Five) বার ঠাকুরপুকুর হাসপাতাল থেকে চেক আপ করানো হয়েছে। March মাসের 2nd Week এ Last চেক আপ করানো হয়েছে। সব ঠিক আছে। আবার 6 Month পরে যেতে বলেছে।

সর্বশেষে আপনাদের প্রতিষ্ঠানের মঙ্গল কামনা করি এবং ভগবানের কাছে প্রার্থনা করি যে এই ডি.এস. রিসার্চ সেন্টারের কথা যেন পৃথিবী জুড়ে সবাই জানুক.

ধন্যবাদে — 13/4/96

শ্রী রাজু পাল

(सन्दर्भ-३७१)

राजू पाल का पत्र दिनांक १८.११.६६ का प्रस्तुत है–

"माननीय महाशय,

मेरी माँ के जरायु में कैन्सर हुआ था। आपकी औषधि खाकर वर्तमान समय में स्वस्थ हैं। किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। प्रायः पाँच बार ठाकुरपुकुर हॉस्पिटल में चेक अप कराया गया। मार्च १६६६ के दूसरे सप्ताह में अन्तिम बार चेक अप कराया गया। सब ठीक है। फिर छह माह बाद आने के लिए कहा है।

सबके बाद में आपके प्रतिष्ठान की मंगल-कामना करता हूँ एवं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर की चर्चा विश्वव्यापी बन जाय।

धन्यवाद, राजू पाल "

(उक्त पत्र मूलतः बंगला भाषा में है)। *(सन्दर्भ-३७१)*

D.S. রিসার্চ সেন্টারের ঔষুধ খেয়ে এখন আমি সুস্থ। সাত-আট মাস ঔষুধ খাবার পর আর কোন অসুবিধা নেই। প্রায় চার বছর হয়ে গেল আমি সুস্থ। সব কাজ কর্ম করি কোন অসুবিধা হয় না। সাড়ে তিন-চার বছর হলো আমার ঔষুধ বন্ধ আছে।

নারায়ণী পাল
18.12.97

(सन्दर्भ-३७१ बी)

दि. १८.१२.६७ की रिपोर्ट : अब श्रीमती नारायणी पाल वही नहीं हैं। वे स्वस्थ और उत्साहित हैं। दि. १८.१२.६७ को अपने स्वास्थ्य का हवाला देते हुए उन्होंने स्वयं लिखा, "डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि खाकर अब मैं स्वस्थ हूँ। औषधि तो केवल सात-आठ महीने खाई थी। अब किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। (औषधि सेवन के पश्चात्) अब तो प्रायः चार वर्ष पूरे हो रहे हैं। मैं स्वस्थ हूँ। औषधि (सर्वपिष्टी) बन्द किये तो साढ़े तीन-चार वर्ष हो गये हैं।" *(सन्दर्भ-३७१ बी)* ❑

६६

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर,
स्टेज ३-बी
(CA. CERVIX STAGE-3B)

श्रीमती शिप्रा कुण्डू, ५२ वर्ष
पत्नी : डॉ. दिलीप कुमार कुण्डू
वृन्दावन लेन
वर्क्स रोड, कुल्टी
बर्दवान (प. बंगाल)

रोग का इतिहास : मिनोपाज के वर्षों बाद अचानक रक्त-स्राव होने लगा। जब स्राव अधिक होने लगा, स्वास्थ्य तेजी से गिरने लगा और तीव्र दर्द होने लगा, तब परिजनों को जानकारी मिली। उन्होंने स्थिति की गंभीरता को भाँप लिया। उन्होंने देखकर ही कह दिया था कि कैन्सर है, बहुत एडवान्स है, और तेजी से फैल रहा है।

जाँच : आसनसोल की चिकित्सक डॉ. असीमा चक्रवर्ती ने जून १९९४ में बायाप्सी कराई, तो कैन्सर की जानकारी हुई। सावधानी के बतौर जाँच दो लेबोरेट्रीज से करायी गयी थी। दोनों ने ही कैन्सर होने की पुष्टि कर दी थी। एक की रिपोर्ट थी—

CLINITEST
G. T. ROAD, ASANSOL
PIN-713 301
Phone : Asn. 202243 (Lab.)
Asn. 202889 (Resd.)

NR-3185

REPORT ON EXAMINATION
OF BIOPSY CERVIX

Name Mrs. Sipra Kundu (49yrs) Dated 19th.June,1994

Sent by Dr. (Mrs) A.Chakraborty Recd. on 14.6.94.

MICROS : Sections show infiltrating moderately differentiated squamous cell carcinoma.

(DR. A. K. MITRA) (DR. D. K. MITRA)

(सन्दर्भ-३७२)

'इनफिल्ट्रेटिंग माडरेटली डिफरेंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा' *(सन्दर्भ-३७२)* दूसरी की थी— 'माडरेटली डिफरेंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा' *(सन्दर्भ-३७३)*

DIRECTOR
DR. K. P. SEN GUPTA
M.B., D.PHIL., F.A.M.S., F.S.M.F.

Calcutta Medical Centre

NR-3186

12, Loudon Street, Calcutta-700 017

Report On Pathological Examination

MATERIAL : TISSUE

NAME OF THE PATIENT : Sipra Kundu

Microscopically : Moderately differentiated squamous cell carcinoma of cervix.

Date of Receipt : 14.6.94

Date of Report : 20.6.94

For CALCUTTA MEDICAL CENTRE

(सन्दर्भ-३७३)

'सर्वपिष्टी' की ओर : बायाप्सी जाँच की तैयारी और उसकी रिपोर्ट प्राप्त होने से पूर्व ही परिवार के लोग 'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने के लिए ११.०७.६४ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर पहुँच गये। उनकी इच्छा थी कि पोषक ऊर्जा से निर्मित दवा 'सर्वपिष्टी' जिसका स्वास्थ्य पर केवल अनुकूल प्रभाव ही संभव है, शीघ्र शुरू कर दी जाय। उन्होंने डॉ. असीमा चक्रवर्ती की परख एवं चिकित्सा-कुशलता का हवाला देते हुए कहा कि कैन्सर तो अवश्य ही है। रोगिणी रक्ताल्पता से ग्रस्त हो चुकी थी। हिमोग्लोबिन मात्र ६.०५ ग्राम रह गया था। स्राव के कारण रक्ताल्पता बढ़ती ही जा रही थी। रिसर्च सेण्टर ने राय दी कि रक्त चढ़ाकर रक्ताल्पता पर काबू पाया जाय और अगर कैन्सर की पुष्टि होती है, तो ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल ले जाकर रेडियोथेरापी करा ली जाय। रेडियोथेरापी से रक्त-स्राव नियंत्रित हो सकता है। 'सर्वपिष्टी' १२.०७.६४ से ही शुरू कर दी गयी।
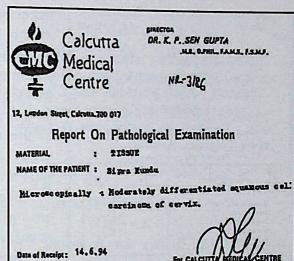
डॉ. असीमा चक्रवर्ती का अनुमान सही था। कैन्सर की नियति इनफिल्ट्रेटिंग थी, और वह ३-बी स्टेज में जा पहुँचा था। *(सन्दर्भ-३७४)*

Dr. S. K. BANERJEE
Dr. N. R. MONDAL

CANCER CENTRE & WELFARE HOME
PROJECT : MAHATMA GANDHI ROAD • THAKURPUKUR
CALCUTTA 700 063 • DIAL 77 4433/4444

Name Sipra Kundu
Hf 49

Outdoor Registration no. 94 / 5957

Diagnosis Ca Cx III b

Attending 28-6-94 Hospital

(सन्दर्भ-३७४)

रेडियोथेरापी : कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर में दिनांक १८.०७.६४ से १६.०८.६४ तक

CARD NO. :

DR. R. VAJPEYI

CANCER CENTRE
& WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD
THAKURPUKUR • CALCUTTA 700 063

Department of Radiation Oncology

NAME

REGISTRATION NUMBERS

OPD	T	B T

UNIT

Superficial X-ray
Deep X-ray
Telecobalt I
Telecobalt II
HDR Brachytherapy
Others

DIAGNOSIS
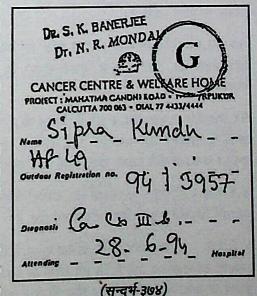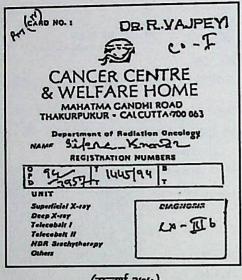
(सन्दर्भ-३७५)

रेडियोथेरापी दी गयी। एक डीप रेडियेशन भी दिया गया। रेडियेशन से रक्त-स्राव थम गया, किन्तु यह तो एक स्थानीय इन्तजाम (लोकल मैनेजमेण्ट) है। फैले हुए कैन्सर के लिए किमोथेरापी की आवश्यकता समझी गयी, जो स्वास्थ्य की अनुकूल हालत में ही दी जा सकती थी। रोगिणी को एक बार अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। *(सन्दर्भ-३७५)*

परिवार के लोग किमोथेरापी के पक्ष में नहीं थे, अतः उन्होंने 'सर्वपिष्टी' ही जारी रखी।

रेडियेशन से रक्त-स्राव तो बन्द हो गया था किन्तु दर्द वाली समस्या अभी यथावत थी।

प्रगति : धीरे-धीरे दर्द में कमी आने लगी और रोगिणी का स्वास्थ्य भी सुधरने लगा।

३.११.६४ की रिपोर्ट : पेट का दर्द कभी-कभी होता है, किन्तु उतना तीव्र नहीं है। पानी बहुत पीने पर भी पेशाब कम मात्रा में होता है। हिमोग्लोबिन ११.४ ग्राम है। पेशाब में जलन का भाव है। अब रक्त अथवा पानी का स्राव नहीं होता। कमजोरी अभी है। चलने से हाँफ जाती हैं।

१०.१२.६४ की रिपोर्ट : अन्य कोई असुविधा नहीं है। एक तो पूरे शरीर में दर्द और ऐंठन का भाव रहता है, दूसरे भोजन के प्रति स्वाभाविक रुचि नहीं आयी है। कमजोरी अभी है।

१६.०८.६५ : भूख ठीक लगती है, पाचन भी दुरुस्त है। शरीर में शक्ति आयी है, किन्तु कमर में भारीपन और अकड़न रहती है। ६.७.६५ को डॉ. असीमा चक्रवर्ती से चेक-अप कराया गया। उन्होंने हालत ठीक बताई और कहा कि रोग का प्रसार नहीं हुआ है।

४.६.६६ : दिनांक ४.६.६६ को डॉ. असीमा चक्रवर्ती ने पुनः चेक अप किया। रोगी की वर्तमान अवस्था बहुत ठीक और सन्तोषप्रद है।

४.६.६७ : रोगिणी के पति श्री अनिल कुण्डू ने लिखा "हार्दिक स्वागत। अभी तो सबसे आनन्द का समाचार यही है कि हम लोगों के विचार से रोगिणी एकदम स्वस्थ है। किसी प्रकार के कष्ट का भाव नहीं है। फिर भी आप आवश्यक समझें तो जिस प्रकार का कहें,

शिप्रा कुण्डु।

[illegible] Physically [illegible] [illegible] Check [illegible]

०५.०६.९७

अनिल कुण्डु।

(सन्दर्भ-३७६)

चेक करा लिया जा सकता है। हम आभारी हैं।" (सन्दर्भ-३७६)

अन्तिम सूचना मिलने तक : अन्तराल के साथ 'सर्वपिष्टी' चलाई जा रही है। रोगिणी को यदा-कदा पेशाब में जलन मालूम होती है। चेक अप करने वाले चिकित्सक का कहना है कि यह रेडियेशन का दुष्प्रभाव है, जो धीरे-धीरे ठीक भी हो सकता है और जिन्दगी भर कायम भी रह सकता है। उधर लम्बे समय से ली जाने वाली नींद की गोलियों का दुष्प्रभाव है कि रोगिणी को आलस-भाव बना रहता है और पूरे शरीर में ऐंठन और हल्का दर्द रहता है।

रोग के विचार से श्रीमती कुण्डू पूर्ण स्वस्थ हैं। रोगिणी के स्वास्थ्य की परीक्षा दि. २६.०६.६७ को डॉ. पी. के. राय ने की। उन्होंने बहुत सन्तोष व्यक्त करते हुए बताया कि रोगिणी की हालत ठीक है और खतरा टल चुका है। (सन्दर्भ- ३७७)

Dr. P. K. Roy
B. Sc. M.B.B.S. D.G.O. (Cal.)
Ex-HEAD DEPT. OF OBST. & GYNAE
Sanatoria Hospital, E.C.L.

RESIDENCE & CHAMBER
COLLEGE ROAD, [illegible]
EVENING : 4.00 to 6.00 P.M.
PHONE : 522163

Dated 26/9/97

Mrs Sipra Kundu

Follow up Case of Ca Cx Stage III B
Patient got Radiotherapy at Calcutta
Thakurpukur

C/o Weakness —
Anorexia —
Constipation —

O/E
Pulse - 7[illegible]
BP 135/90 mm Hg

P/A.
Liver 0
Spleen 0
Epigastric tenderness.
Colon Thickened

P/V
Vault healthy.
No APPY

1) Calamine Lotion.
2) Tab TOPCID - 40
1 tab MDAC O/C
x 15 days
3) Syp SCRABSINE
4TD [illegible] 6 AM
Syp AGLOZYME
2TD MDAC

[illegible]
26/9/97.

(सन्दर्भ-३७७)

पेपिलरी एवं वेजाइनल कैन्सर
(CA. PAPILLARY VAGINAL)

श्रीमती प्रतिभा शर्मा
उम्र : ५० वर्ष
धर्मपत्नी : श्री वेद प्रकाश शर्मा
पता : १३७/५६, तकिया गणेश गंज,
अमीनाबाद रोड, लखनऊ-२२६०४८

जाँच : मेहरोत्रा पैथालॉजी, लखनऊ में वेजाइन बायाप्सी और स्मीअर जाँच (सेक्शन नं० ५८०६/९६. दिनांक ०२/०७/९६) *(सन्दर्भ-३७८)*।

रिपोर्ट-पेपिलरी स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा।

सर्वपिष्टी से पूर्व रोग स्थिति : जब अनियमित स्राव प्रारम्भ हुआ, तो संशय हुआ कि मिनोपाज (मासिक बन्द होने की स्थिति) का समय हो गया होगा। किन्तु स्राव सफेद भी

MEHROTRA PATHOLOGY

B-171, Nirala Nagar, Lucknow - 226 020

PATHOLOGY EXAMINATION REPORT

Patients Name : Mrs. Pratibha Sharma . Section No.:5809/96

Referred by : DR. Chandravati, DGO,MS,DFPA Received Dt:02/07/96

Specimen : (A) Vaginal biopsy
(B) Smear

DIAGNOSIS : PAPILLARY SQUAMOUS CELL CARCINOMA.

(Anita Mehrotra) (Bandana Mehrotra) (R.M.L.Mehrotra)

DATE :04/07/96

MM

(सन्दर्भ-३७८)

KRISHNA MEDICAL CENTRE
1, RANA PRATAP MARG, LUCKNOW
Tele: 216084 / 226823
Dated 8/7/96

To, Radiotherapy I/c
SGPGI
Mrs Pratibha Sharma a case of papillary sqr cell carcinoma of middle vagina involving both lateral vaginal walls, ? bladder is referred to you for Radiotherapy.
Thanks
Chandra

(सन्दर्भ-३७६)

होने लगा, लाल भी और गाढ़ा चिपचिपा सफेद भी, जैसे मवाद हो। कष्ट भी तीव्र होने लगा। सामान्य औषधियाँ बेअसर प्रमाणित हो रही थीं। बाध्य होकर मेहरोत्रा पैथालॉजी में जाँच करायी गई। रिपोर्ट में कैन्सर आया और रोग एक बड़े क्षेत्र तक फैल चुका था *(सन्दर्भ-३७८)*।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक-१०/०७/६६।

१०/०७/६६ को सर्वपिष्टी दी गयी और कृष्णा मेडिकल सेण्टर से उन्हें परामर्श दिया गया कि भरसक रेडियोथेरॉपी करा ली जाय ताकि कुछ तो स्राव नियंत्रित हो और कुछ अन्य उपद्रव भी सामयिक रूप से शान्त हो जायँ *(सन्दर्भ-३७६)*।

सर्वपिष्टी से उत्तरोत्तर सुधार होने लगा। रोग-लक्षण भी दबने लगे और स्वास्थ्य भी सुधरने लगा। विशेष उपचार देखकर परिजनों ने जनवरी १६६७ के बाद सर्वपिष्टी का सेवन बन्द कर दिया।

लगभग तीन वर्ष बाद उनका समाचार लेने के लिए डी. एस. रिसर्च सेण्टर की ओर से भेजे गये पत्र ने श्री वेद प्रकाश शर्मा के मन को छू दिया। पत्रोत्तर में उन्होंने लिखा-

माननीय महोदय,

आपका दिनांक 15-3-99 का प्रेषित कृपा पत्र प्राप्त हुआ। आपने हम जैसे नगण्य प्राणियों के लिए भी सोचा, यह बात हमें पुलकित कर गई। परिणामतः हम सपरिवार आपके हृदय से आभारी हैं और आप तथा आपके संगठन की सुख शान्ति एवं समृद्धि के लिये भगवान श्री सीताराम जी से प्रार्थना करते हैं।

जहाँ तक श्रीमति प्रतिभा शर्मा जी के स्वास्थ्य का प्रश्न है वे आपकी शुभकामनाओं एवं सामयिक चिकित्सा के परिणाम स्वरूप प्रसन्न एवं स्वस्थचित्त हैं। आयु एवं इस बीमारी के झटके से कमजोर अवश्य हो गई हैं परन्तु इसके लिये बीमारी के अतिरिक्त हमारी [illegible] दूसरी समस्याएं अधिक जिम्मेदार हैं।

आपकी चिकित्सा पद्धति की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है। आपसे हमारा यही निवेदन है कि कृपया अपने संगठन के प्रचार प्रसार पर और अधिक ध्यान दें जिससे भारत के ही नहीं बल्कि संसार भर के दूर-दराज स्थानों पर रहने वाले लोगों तक यह जानकारी पहुँच सके कि भारतवर्ष में ही कैन्सर जैसे रोग की सफल एवं अचूक चिकित्सा उपलब्ध है और जरूरतमन्द लोग समय रहते इसका लाभ उठा सकते हैं।

हम आपके कृतज्ञ हैं। आभार सहित

दिनांक [illegible]-3-99

निवेदक
वेद प्रकाश शर्मा

(सन्दर्भ-३८०)

''आपकी शुभकामनाओं एवं सामयिक (एकदम समय से प्राप्त) चिकित्सा के परिणाम स्वरूप वे प्रसन्न एवं स्वस्थचित्त हैं। आपने हम जैसे नगण्य प्राणियों के लिए भी सोचा यह बात हमें पुलकित कर गयी। हम सपरिवार हृदय से आपके आभारी हैं। ... अपने संगठन के प्रचार-प्रसार पर अधिक ध्यान दें, ताकि पूरे संसार में यह जानकारी पहुँच सके कि भारतवर्ष में ही कैंसर जैसे रोग की सफल एवं अचूक चिकित्सा उपलब्ध है...'' *(सन्दर्भ-३८०)*।

अपने पत्र दिनांक ५/३/२००० में भी वेद प्रकाश शर्मा ने श्रीमती प्रतिभा शर्मा की पूर्ण स्वस्थता का हवाला दिया है *(सन्दर्भ-३८१)*। चार वर्षों की अबाध स्वस्थता सूचित करती है कि वे कैन्सर से मुक्त हैं।

सूचनार्थ निवेदन है कि श्रीमति प्रतिभा शर्मा स्वस्थचित्त हैं और अपने दैनन्दिन कार्यों को भलि भांति कर रही हैं।

इस उपलब्धि के [illegible] आपके संस्थान को हमारा कोटिशः [illegible]

आपका शुभेच्छु
वी.पी. शर्मा
5-3-2000
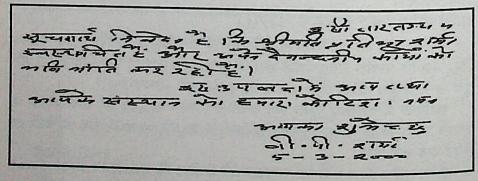
(सन्दर्भ-३८१)

अपने जीवन की बोली पर श्रीमती सुमित्रा देवी की बड़ी आस्था है। जब वे कैन्सर की जटिल पकड़ में आयीं, तो ऑपरेशन भी कराया, कोबाल्ट थेरापी भी ली। किमोथेरापी चलने लगी, तो उन्होंने अनुभव किया कि उनकी जिन्दगी उल्टी दिशा में चलायी जा रही है। वे इससे अलग हट गयीं और 'सर्वपिष्टी' का सेवन शुरू किया। पोषक ऊर्जा की खूराकें उन्हें अनुकूल लगीं। लगातार बारह महीने इनका सेवन करके स्वयं को कैन्सर से पूर्ण मुक्त और स्वस्थ मान लिया। डी. एस. रिसर्च सेण्टर तथा परिजनों का विचार था कि जाँच द्वारा कैन्सर-मुक्ति का पूर्ण आश्वासन मिलने पर ही 'सर्वपिष्टी' बन्द की जाय। श्रीमती सुमित्रा देवी अब जाँच की जरूरत भी नहीं समझती थीं। उनका सधा-सा जवाब था, "मैं स्वस्थ हूँ। मुझे कोई तकलीफ नहीं है। फिर जाँच किस बात के लिए ?"

जाँच के बार-बार के आग्रह से पीछा छुड़ाने के लिए 'सर्वपिष्टी' बन्द करने के आठ वर्ष बाद वे 'सोनोग्राफी' और स्कैन जाँच के लिए सहमत हो गयीं। जाँच रपटों ने बताया, "सब कुछ नॉर्मल है।"

ओवरी का कैन्सर
(CA. OVARY)

श्रीमती सुमित्रा देवी, ५६ वर्ष
द्वारा : श्री विश्वनाथ उमेश पान
जोड़ा वेस्ट न्यू कैम्प
कमरा नं. एस/२ आर/१४४
पो. : जोड़ा, जिला : केउन्झर (उड़ीसा)

(1) Name of patient
(2) Present complaint
(3) Past history
(4) History of present complaint
(5) Clinical finding
(6) Treatment given
Physician/CMO

(सन्दर्भ-३८२)

जाँच और पूर्व चिकित्सा

टिस्को अस्पताल नोवामुण्डी के डॉ. नटराज ने दिनांक १६.०२.८७ को पेट का ऑपरेशन करके दाहिनी ओवरी को निकाल दिया। बाईं
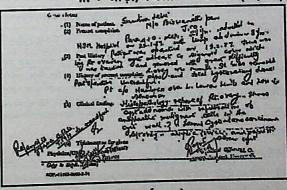
ओवरी नॉर्मल हालत में थी, किन्तु उसे भी निकाल दिया। सर्जन ने ऑपरेशन की ''ग्रेट डिफिकल्टी'' (बहुत कठिनाइयों) का हवाला लिखा। वस्तुतः कैन्सर-कोशिकाओं से आस-पास का क्षेत्र पूरी तरह ग्रस्त था।

जाँच से पता चला कि बाईं ओवरी, जिसे नॉर्मल माना गया था, भी कैन्सरग्रस्त थी। (सन्दर्भ-३८२ और सन्दर्भ-३८२ बी)

ऑपरेशन से रोगिणी की तकलीफें कम नहीं हुईं। दि. ०५.०४.८७ को केस टाटा मेमोरियल अस्पताल को आगे की चिकित्सा के लिए सौंप दिया गया। टी.एम.एच. में कोबाल्ट थेरापी और फिर किमोथेरापी चली। कैन्सर के प्रसार की रिपोर्ट से चिकित्सक गम्भीर थे। श्रीमती सुमित्रा देवी के परिजनों को चिन्ता हुई कि इस चिकित्सा से रोग-मुक्ति के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। उधर रोगिणी भी किमोथेरापी के प्रति अनिच्छा जाहिर करने लगीं। (सन्दर्भ- ३८३)

(सन्दर्भ-३८२ बी)

TISCO, JAMSHEDPUR : MEDICAL DEPARTMENT
Report of Patients' Discharge from TMH

(सन्दर्भ-३८३)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिसम्बर १९८७ से।

दिसम्बर १९८७ से 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई। दवा के सुप्रभाव प्रगट होने लगे। रोगिणी बिस्तर छोड़कर टहलने-घूमने लगीं। स्वास्थ्य में अच्छा सुधार आ गया। रोग-लक्षण अब प्रायः निश्शेष हो गये। एक परेशानी थी कि पेट में ऑपरेशन

(सन्दर्भ-३८४)

के क्षेत्र में यदा-कदा थोड़ी जलन होती थी। सर्वत्र आश्वस्तता तो थी कि रोग जिस जटिल गति से बढ़ रहा था, वह शान्त हो चुकी थी। बारह महीने चलाकर दवा बन्द कर दी गयी।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने बार-बार परामर्श दिया कि एक बार चेक अप करा लिया जाय, ताकि वस्तु-स्थिति की सही जानकारी हो जाय। परिजन भी ऐसा चाहते थे, किन्तु श्रीमती सुमित्रा देवी इसके लिए तैयार नहीं होती थीं। श्री त्रिवेणी पान ने २४.०५.६५ को इसी आशय का पत्र लिखा। (सन्दर्भ-३८४)

6.11.97

[illegible]

Campus.

(सन्दर्भ-३८५)

दिनांक ०६.११.६७ के अपने पत्र के साथ श्री विश्वनाथ उमेश पान ने दिनांक ०१.०५.६७ की जाँच-रपटों की प्रतियाँ भेजीं, जो सूचित करती हैं कि श्रीमती पान सब प्रकार से स्वस्थ हैं। (सन्दर्भ-३८५, ३८५ बी, और ३८५ सी)

श्रीमती सुमित्रा देवी अब तो कैन्सर-मुक्ति के दसवें वर्ष में हैं। अपनी अवस्था (६७ वर्ष) के विचार से वे पूर्णतः स्वस्थ, सशक्त और सक्रिय हैं।

BEAM DIAGNOSTICS
(X-RAY, WHOLE BODY CT SCAN AND ULTRASOUND SCAN CENTRE)

Dr. CHUDAMANI MEHER, M.D.
Formerly Consultant Radiologist, C.M.C. Hospital, Vellore.
Dr. OM PRAKASH AGRAWAL, M.D.
Consultant Radiologist & Ultrasonologist.
Dr. M. V. K. RAO, M.D.
Consultant Radiologist & Ultrasonologist

MRS. SUMITRA DEVI F/65 Dt. 01/05/96

SONOGRAPHIC EVALUATION OF ABDOMEN & PELVIS

IMPRESSION-NORMAL SONOGRAM OF ABDOMEN & PELVIS.

Radiologist
1.5.96

BEAM DIAGNOSTICS PRIVATE LIMITED ● MANGALABAG ● CUTTACK - 753001 ● PHONE : 614216, 614141

(सन्दर्भ-३८५ बी)

BEAM DIAGNOSTICS
(X-RAY, WHOLE BODY CT SCAN AND ULTRASOUND SCAN CENTRE)

Dr. CHUDAMANI MEHER, M.D.
Formerly Consultant Radiologist, C.M.C. Hospital, Vellore.
Dr. OM PRAKASH AGRAWAL, M.D.
Consultant Radiologist & Ultrasonologist.

CT SCAN REPORT

MRS. SUMITRA DEVI F/65 Dt. 01/05/96

CT SCAN OF PELVIS (PLAIN STUDY).

IMPRESSION- NORMAL CT SCAN OF PELVIS.

Radiologist

BEAM DIAGNOSTICS PRIVATE LIMITED ● MANGALABAG ● CUTTACK - 753001 ● PHONE : 614216, 614141.

(सन्दर्भ-३८५ सी)

७२

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(अस्थियों में फैला हुआ कैन्सर)
(CA- CERVIX INVOLVEMENT OF BONES)

श्रीमती कमला रिखबचन्द, ४० वर्ष
पत्नी : श्री रिखब चन्द जैन
विपुल टेक्सटाइल्स
जैन मन्दिर के पास
चित्रदुर्ग-५७७५०१

रोग और चिकित्सा का संक्षिप्त वृत्तान्त : श्रीमती कमला ३२ वर्ष की थीं, जब गर्भाशय-सम्बन्धी उपद्रव कुछ उग्र हुए और सन् १६६१ में जाँच से पता चला कि उन्हें

BANGALORE INSTITUTE OF ONCOLOGY
44-45/2, 2nd CROSS, RAJARAM MOHAN ROY EXTENSION.
(OFF. LALBAGH DOUBLE ROAD). BANGALORE - 560 027.

Ref : Case Summary Date : 21/7/95

Mrs Kamala Rekabchand 32/F

Ca Cervix diagnosed in 1991.

Treated with ext RT, I/c RT and hysterectomy

Presented with severe pain in the back and legs in March '95

Received local RT with 75% relief of pain

RT completed on 24/3/95 / 45 Gy/20 f Spine L3-L5, 600 cGy

6 courses of .67 given from 31/3/95 to 21/7/95

(Signature)

DR. K. KELARA

(सन्दर्भ-३८६)

CAMDARC

JUBILEE
INTERNATIONAL
MEDICAL IMAGING
PRIVATE LIMITED
JUBILEE X-RAY INSTITUTE COMPLEX
[illegible]

REPORT

Patient's Name : Mrs.Kamala	Age: 38 years	Sex: F	PID No.
Referred by Dr : K.S.Gopinath		Date : 24.02.1995	
Brief History :	Investigation : ABDOMINO-PELVIC C.T.		

IMPRESSION: C.T.FINDINGS SUGGEST:
1. METASTATIC INVOLVEMENT OF THE BODIES OF L3 AND L4 VERTEBRAE ASSOCIATED WITH RIGHT PARAVERTEBRAL SOFT TISSUE MASS INVOLVING THE RIGHT URETER AND GIVING RISE TO GROSS HYDRONEPHROSIS. THE RIGHT L4 AND L5 NERVE ROOTS ARE ALSO INVOLVED.

IN VIEW OF CONTIGUOUS VERTEBRAL INVOLVEMENT THE POSSIBILITY OF CARIES SPINE HAS TO BE CONSIDERED IN DIFFERENTIAL DIAGNOSIS. (ADVISED C.T. GUIDED BIOPSY).

2. ENLARGED PARAAORTIC LYMPHNODE TO THE LEFT OF AORTA.
3. POST HYSTERECTOMY STATUS.

Radhesh
Dr. RADHESH. S.
M B.B.S.,D.,S.,D M.R D.

(सन्दर्भ-३८७)

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर है। अनुमान था कि रोग अभी अपने प्रारम्भिक चरण में है और समय से प्रभावी चिकित्सा कर देने पर उससे एकबारगी छुटकारा मिल सकता है। रेडियोथेरापी हुई और फिर ऑपरेशन द्वारा गर्भाशय को निकाल दिया गया। इससे कष्ट भी दूर हुए और ऐसा लगा कि रोग को विदाई दी जा चुकी है। तीन वर्ष आराम और लगभग आराम के बीते।

सन् १६६५ के प्रारम्भ में ही कमर का दर्द बढ़कर असह्य हो गया, तब जाँच कराई गयी। वस्तुतः कैन्सर न तो शरीर छोड़कर गया था, न वह बैठा हुआ था। असामान्य कोशिकाओं की नयी फौज खड़ी करके अब वह अस्थियों में उतर आया था। १६ मार्च, १६६५ को श्रीमती कमला चिकित्सा के लिए बंगलोर इन्स्टीट्यूट ऑफ आनकोलॉजी में उपस्थित हुईं। रोग-समस्याओं को ध्यान में रखकर पहले लोकल रेडियोथेरापी दी गयी जो २४.३.६५ को पूरी हुई। इससे दर्द में आराम मिल गया। दिनांक ३१.३.६५ से किमोथेरापी शुरू की गयी,

Abdo pelvic CT scan (Pre RT)
Destruction of L3 & L4 vertebrae
(R) paravertebral soft tissue mass
(R) hydronephrosis and, enlarged (L) para aortic nod.

(सन्दर्भ-३८८)

आपके आशीर्वाद से मेरी शुरू दवाई नियम अनुसार चालु है।
इससे हमें कुछ फर्क या मैसुस हो रहा है। वजन करीब 3-4000- Kg बढ़ा भी है मामुली सुस्ती रहती है।
आपका प्रेमी
रिखबचन्द
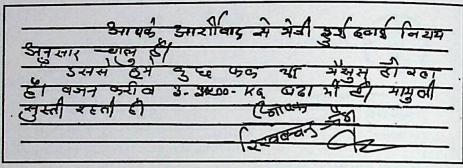
(सन्दर्भ-३८६)

ताकि दूर-दूर तक फैली कैन्सर-कोशिकाओं को नष्ट किया जा सके। किमोथेरापी के छह कोर्स २१.७.६५ तक पूरे हो सके। *(सन्दर्भ-३८६)*

किन्तु रेडियोथेरापी शुरू करने से पूर्व की गयी सी. टी. स्कैन जाँच रिपोर्ट ने चिन्ता उत्पन्न कर दी थी। कैन्सर ने रीढ़ की दो गोटियों को नष्ट कर दिया था, बगल में एक कैन्सरस पिण्ड (मास्स) था, किडनी का कार्य-क्षेत्र भी प्रभावित हो चुका था और शरीर के निचले हिस्से में जानेवाली मुख्य धमनी का क्षेत्र भी इसके प्रभाव में आ चुका था। ये सभी क्षेत्र संवेदनशील थे और यहाँ कैन्सर का साम्राज्य निश्चित रूप से चिन्ता पैदा करने वाला था। *(सन्दर्भ- ३८७ और सन्दर्भ- ३८८)*

किमोथेरापी से पिण्डों का विस्तार संकुचित हुआ। किन्तु यह कोई स्थायी बन्दोबस्त तो था नहीं। इसके बाद जब कैन्सर जंगल की आग की तरह फैलेगा (ऐसा ही होता है), तब क्या

Date. 17.8.95

प्रिय महोदय,

आपका पत्र ता 8th August का लिखा हुआ मिला अभी मेरी तबीयत नीचे मुजब ठीक है।
1) भुख बराबर लगती है। 2) चलने में अभी पहले 80% ठीक है थोड़ा ज्यादा चलने से थकावट आती है।
3) पीठ में दर्द बहुत कम है। 4) घर का कामकाज थोड़ा करती हूँ ज्यादा करने से थकावट आती है
अभी मेरी सब तकलीफ के बारे में आपको पत्र लिखती रहूँगी मेरी स्वास्थ्य की जवाबदारी आपके हाथ में है धन्यवाद

आपका
कमला रीखबचन्द

Date 26.8.95

मेरी तबीयत ठीक है थोड़ी खांसी बहुत आती है बाकी सब ठीक
आपकी दवा से मुझे जीवनदान मिल गया है आगे भी मेरी जीवन यात्रा तुम्हारे साथ है

(सन्दर्भ-३६०)

Date 29.10.95

अब मेरी तबीयत आपकी दवा लेने से बहुत ठीक है और पाँच सात दिन में एक दो बार थोड़ी खुजली आती है काम भी थोड़ा थोड़ा कर लेती हूँ

आप हमारे लिए भगवान बनकर आये हैं खाना बराबर हजम नहीं हो रहा है बाकी मेरा वजन भी पहले से थोड़ा ज्यादा है।

(सन्दर्भ-३६१)

VIPUL TEXTILES

WHOLE-SALE & RETAIL FANCY CLOTH MERCHANTS

New Jain Temple Road :: CHITRADURGA-577 501 :: (Karnataka)

Ref No. ① Date 17 1 96

प्रिय भाई डाक्टर महोदय

बाकी तबीयत मेरी पहले से बहुत अच्छी है आपकी दवा तथा भगवान की दुआ से मेरी जिन्दगी सुधर गई अभी डाक्टर से जाँच करवाना था नहीं जवाब देवें

आपकी बहन

कमला रीखबचन्द

(सन्दर्भ-३६२)

किया जाएगा ! चिकित्सकों ने दबी जबान से कह भी दिया था कि आराम की एक अस्थायी व्यवस्था की जा सकती है, किन्तु जीवन की रक्षा तो ईश्वर के अधीन ही है।

चिन्ता और परेशानी के इसी वातावरण में परिजनों को किसी स्रोत से डी. एस. रिसर्च सेण्टर और 'सर्वपिष्टी' के विषय में जानकारी मिली। शीघ्र ही सम्पर्क किया गया और किमोथेरापी के समानान्तर ही 'सर्वपिष्टी' चलाते जाने का निर्णय लिया गया।

PATIENT	SMT. KAMALA REKHABCHAND		
ID. NO	96/97	DT. OF INVSTGN.	23-06-97
REF DOCTOR	DR. VIDYA DESAI		
SEX F	AGE 40	DATE OF REPORT	06-23-1997
CYTOLOGY			

DIAGNOSTIC CENTRE

NATURE OF SPECIMEN :
Pap smear for cytology.

IMPRESSION :
There is no evidence of dysplastic nor malignant cells.

(DR. SUDHINDRA)
Pathologist

(सन्दर्भ-३६३)

Mrs.Kamala Rekabsnand.

No.CF 7438 | June 23. 1997

Dr.NALINI KILARA.

40 yrs.

Dr.H.V.RAMPRAKASH M.D.,D.M.R.D.
Consultant in Radiology & Imaging.

Mallige Medical Centre

MALLIGE TOTAL MEDICARE

DIAGNOSTIC CENTRE

ABDOMINAL & PELVIC SONOLOGIC STUDY SHOWS:

IMPRESSION : NORMAL ABDOMINAL SONOLOGIC STUDY.

Dr.H.V.RAMPRAKASH M.D.
Sonologist.
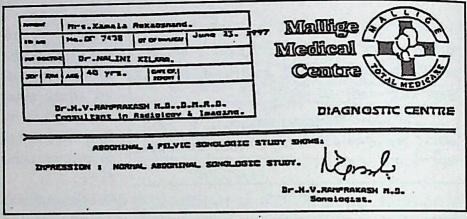
(सन्दर्भ-३६४)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ दिनांक १०.०४.६५

प्रगति-विवरण 'सर्वपिष्टी' का प्रभाव शुरू से ही बहुत उत्साहवर्द्धक रहा। मात्र कुछ ही दिन औषधि चलने के बाद रोगिणी के पति श्री रिखबचन्द जैन ने लिखा ''हमें कुछ फर्क महसूस हो रहा है। वजन भी करीब तीन-साढ़े तीन किलो बढ़ा है। मामूली सुस्ती रहती है।'' *(सन्दर्भ-३८६)*

दिनांक १७.८.६५ और २६.८.६५ की रिपोर्ट्स : पोषक ऊर्जा की खूराकों ने स्वास्थ्य का विकास तो प्रारम्भ किया ही सबसे बड़ी बात थी कि श्रीमती कमला की जीवन के प्रति निराशा छँटने लगी। उनके भीतर आशा और विश्वास का उदय हुआ। दि. १७.८.६५ को उन्होंने आराम की बात लिखी और २६.८.६५ के पत्र में उन्होंने लिखा, ''आपकी दवा से मुझे जीवन-दान मिल गया है।...'' *(सन्दर्भ-३६०)*

दि. २६.१०.६५ की रिपोर्ट : ''अब आपकी दवा लेने से बहुत ठीक है।....काम भी थोड़ा-थोड़ा कर लेती हूँ।...आप हमारे लिए भगवान बनकर आए हैं।....वजन भी पहले से थोड़ा ज्यादा है।'' वैसे सामान्य समस्याएँ तो कुछ थीं। *(सन्दर्भ- ३६१)*

दि. १७.१.६६ की रिपोर्ट : स्वास्थ्य में सुधार, कष्टों के उतार और स्फूर्ति के विकास के साथ ही

Dr.H.V.RAMPRAKASH MD.
D.M.R.D.
Consltant in Radiology
& Imaging

Mallige Medical Centre

3V32, Crescent Road, Bangalore - 560 001
Phone: 2261135 Fax: 080-2265298

Name : Mrs.Kamala Rekabshand.
Age : 40 yrs.

June 23.1997
No:3623

Ref by : Dr.NALINI KILARA.

X-Ray : CHEST PA VIEW.

REPORT

IMPRESSION : NORMAL CHEST RADIOGRAM.

Dr. H.V. RAMPRAKASH M.D.
Radiologist
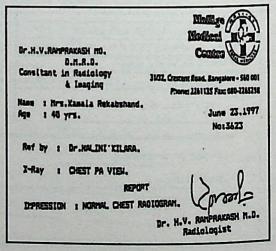
(सन्दर्भ-३६५)

श्रीमती कमला की जिजीविषा और जीवन के प्रति आस्था का और भी विकास होता गया। १७.१.६६ के पत्र में उन्होंने लिखा, " बाकी तबीयत मेरी पहले से बहुत अच्छी है। आपकी दवा तथा भगवान की दया से मेरी जिन्दगी सुधर गयी।..." *(सन्दर्भ-३६२)*

To. D.S. Research Centre
Ref. No. Date 9.9.97
डॉ. साहब
चि. कुशल ... कमला रिखबचन्द का नमस्कार। उसकी तबीयत ठीक है थोड़ी बहुत खुजली रहती है, फिलहाल कोई जाँच (Test) नहीं करवाया है।
धन्यवाद
आपका
Kushal Jain

(सन्दर्भ-३६६)

श्रीमती कमला स्वास्थ्य और प्रसन्नता का प्रायः सक्रिय जीवन व्यतीत करने लगीं। इस दौरान चिकित्सक उनकी स्वास्थ्य-परीक्षा भी करते रहे। प्रायः सब कुछ सामान्य लगता था और चिन्ता की कोई बात दिखायी नहीं देती थी। 'सर्वपिष्टी'-सेवन के दो वर्ष पूर्ण होने लगे। आवश्यक प्रतीत हुआ कि उनकी रोग-स्थिति और स्वास्थ्य की व्यापक वैज्ञानिक जाँच कराकर देख लिया जाय। इस क्रम में जून के अन्तिम सप्ताह में जाँच कराई गयी (दिनांक २३.६.६७)।

साइटोलॉजी जाँच में पाया गया कि मैलिग्नैन्ट सेल्स नहीं है *(सन्दर्भ-३६३)*।

पेट और श्रोणि-प्रदेश की सोनोलॉजिक स्टडी से सबकुछ नॉर्मल पाया गया। *(सन्दर्भ-३६४)*

चेस्ट की एक्स-रे जाँच ने भी सब कुछ नॉर्मल बताया *(सन्दर्भ-३६५)*।

दिनांक ६.६.६७ की रिपोर्ट : श्री रिखबचन्द जैन के पुत्र कुशल जैन ने पत्र द्वारा सूचना दी, "अब तबीयत ठीक है।" *(सन्दर्भ-३६६)*

Ref. No. Date 22.11.97.
TO. S.S. Trivedi
D.S. Research Centre
VARANASI
सेवा में
मेरी तबीयत अभी ठीक है आपकी दवा से और भगवान की दया से मेरा जीवन चल रहा है ज्यादा आपको क्या लिखूँ अभी थोड़ी खाँसी आती है बाकी सब ठीक है अभी कोई डाक्टरी जाँच नहीं करवाई है आपके फोन से कहे मुताबिक
आपकी बेटा
कमला रिखबचन्द

(सन्दर्भ-३६७)

दिनांक २२.११.६७ को कमला रिखबचन्द ने स्वयं पत्र लिखा, "मेरी तबियत अभी ठीक है। आपकी दवा और भगवान की दया से मेरा जीवन चल रहा है। ज्यादा आपको क्या लिखूँ। अभी थोड़ी खाँसी आती है। बाकी सब ठीक है। अभी कोई डॉक्टरी जाँच नहीं करवाई है।" *(सन्दर्भ- ३६७)*

श्रीमती कमला की कथा और एक जारी संघर्ष की कहानी है। यह इतना अवश्य कह देती है कि पोषक ऊर्जा का अनुदान पाकर जीवन उग्रतम कैन्सर को भी रोक सकता है, उसके कब्जे से जमीन वापस ले सकता है और अपने अस्तित्व की गुंजाइश जुटा सकता है। ☐

७३

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. CERVIX)

Dr. SURESH PRASAD SINGH

BHAGALPUR MEDICAL COLLEGE Date 12/1/86 ...198

PATHOLOGICAL SPECIMENS EXAMINATION REPORT

Re. of SMT. KIRAN DEVI

Sent by DR. R.N. JHA F.R.C.O.G.

(Collected/Received On 2.1.86)

Specimen of Tissue

Investigation of desired for Histopathology.

DAI GNOSIS — SQUAMOUS CELL CARCINOMA.

12/1/86

M.D.(Path)

(सन्दर्भ-३६८)

श्रीमती किरण देवी,
२६ वर्ष
ग्राम : खैरा,
जि. : भागलपुर

जाँच : स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा (रिपोर्ट दिनांक १२.०१.८६)। *(सन्दर्भ-३६८)*

रोग का इतिहास

अगस्त, १६८५ से ही रोगिणी अस्वाभाविक रक्त-स्राव, सादा स्राव तथा पेडू और कमर के दर्द से परेशान थीं।

सर्वप्रथम इस परिवर्तन को नारी-धर्म के विचलन के रूप में लिया गया। फिर सामान्य औषधियों द्वारा उपचार की व्यवस्था की गयी। कष्ट काबू में नहीं आ पा रहे थे। रोग की उग्रता देखकर किसी चिकित्सक ने कैन्सर अस्पताल में जाँच कराने की राय दी, किन्तु तबतक देर हो चुकी थी और रोग आगे बढ़ चुका था।

5|5|86

महाशय,

किरणदेवी उम्र-२८ वर्ष जिसको दिनांक १४-३-८६ को गर्भाशय के कैंसर के उपचार हेतु आपके सेन्टर से दवा दी गई है, उस दवा से रोगी में उत्साह-जनक सुधार हुआ है।

रोगी यह महसूस करती है कि कुछ ताकत में वृद्धि हुई है, तथा शरीर में किसी प्रकार का कष्ट नहीं है।

आपका विश्वासी
किशोर प्र० सिंह

(सन्दर्भ-३६६)

दिनांक १२.१.६६ की जाँच से कैन्सर होने की पुष्टि हुई। टाटा मेमोरियल कैन्सर इन्स्टीट्यूट, जमशेदपुर (बिहार) में रेडियोथेरापी का पूरा कोर्स

Prof. R. N. Jha
M.B.B.S. (Pat.) M.S. (Bihar)
F.R.C.O.G. (Lond.)

प्रो. आर. एन. झा
एम.बी.बी.एस. (पटना) एम.एस. (बिहार)
एफ.आर.सी.ओ.जी. (लन्दन)

DATED 24/x/86.

Smt Kiran Devi
Diagnosed Case of Caex.
Had Full Course of Radium at
Tata Cancer Institute Jamshedpur
Pt has no complaint at present.

24/x
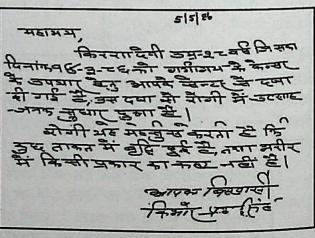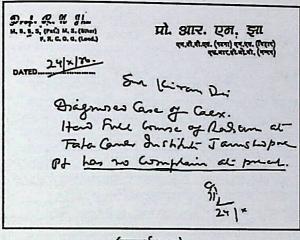
(सन्दर्भ-४००)

दिया गया और आगे किमोथेरापी चलाने का निर्णय लिया गया। परिजनों ने रोगिणी को किमोथेरापी में उतारना उचित नहीं समझा। रेडियोथेरापी से रक्त- स्राव और सादा स्राव तो काबू में आ गया था, किन्तु कमर तथा पेडू के दर्द में आराम नहीं मिला था। चिकित्सा चलाना तो अनिवार्य ही था। अभिभावक श्री के: पी. सिंह को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी थी। उन्होंने 'सर्वपिष्टी' द्वारा चिकित्सा का निर्णय लिया।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १४.०३.८६

'सर्वपिष्टी' के प्रभाव पहले सप्ताह में ही प्रगट होने लगे। कष्ट कम हुए, भूख बढ़ी, रोगिणी शक्ति और स्फूर्ति का अनुभव करने लगीं। बाहर से भी स्वास्थ्य में अच्छा सुधार लक्षित होने लगा।

दिनांक ०५.०५.८६ के पत्र में श्री के. पी. सिंह ने उत्साहजनक सुधार होने, शक्ति में वृद्धि होने तथा किसी प्रकार की तकलीफ शेष नहीं रह जाने का पत्र लिखा। *(सन्दर्भ- ३९९)*

'सर्वपिष्टी' के छह माह पूरे होने के बाद प्रो. आर. एन. झा ने रोगिणी की जाँच करके लिखा कि उस समय कोई शिकायत नहीं रह गयी थी। *(सन्दर्भ-४००)*

भागलपुर
दिनांक 8-11-86

प्रिय महोदय,

आप के द्वारा लिखा गया पत्र करीब दो माह पूर्व में ही मिल गया था, परन्तु कुछ उलझनों के कारण मैं समय पर पत्र नहीं दे सका। इसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

जहाँ तक श्रीमति किरना देवी के स्वास्थ के बारे में यह जानकारी मुझे देना है कि उसे किसी प्रकार की कठिनाई अब तक नहीं है। स्वास सामान्य है, लेकिन उत्तम स्वास्थ भी नहीं है।

वैसे उसे बिमारी संबंधी कुछ भी कठिनाई नहीं है तथा वे अपने को कमजोर भी महसूस नहीं करती तथा घर के सभी काम करती हैं।

आपका शुभेच्छु
कि॰ प्र॰ सिंह

(सन्दर्भ-४०१)

Bhagalpur
Date - 13.11.91

डा० साहब
प्रणाम,

श्री मति किरण देवी जो आपके द्वारा निर्मित एम्ब्रोसिया सर्वपिष्टी का सेवन किया था। उससे अत्यधिक लाभ हुआ। अब किसी प्रकार का रोगिनी को कष्ट नहीं है। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि अब वह रोग है ही नहीं। जहां तक इनके स्वास्थ्य का सवाल है तो शरीर में [illegible] नहीं है [illegible] स्वास्थ्य से थोड़ा कमजोर है। फिर भी घर का काम खुशी-खुशी करती है। इनके [illegible] के

आपका
किशोर प्रसाद सिंह

(सन्दर्भ-४०२)

अब रोगिणी को कैन्सर-मुक्त मानकर औषधि बन्द कर दी गयी। दिनांक ०६.११.९० को श्री के. पी. सिंह ने लिखा, "...किसी प्रकार की कोई कठिनाई अब तक नहीं है। उस बीमारी सम्बन्धी (कैन्सर-सम्बन्धी) कुछ भी कठिनाई नहीं है। ये अपने को कमजोर भी महसूस नहीं करती तथा घर के सारे कार्य करती हैं।" (सन्दर्भ-४०१)

अब प्रायः रोग के रेकरैन्स का भय नहीं रह गया था। श्रीमती किरण देवी को कैन्सर-सम्बन्धी कोई भी शिकायत नहीं प्रगट हुई। शारीरिक विकास में वैसी प्रगति नहीं हो रही थी किन्तु इसके अन्य कारण भी हो सकते थे। दिनांक १३.११.९१ को श्री किशोर प्रसाद सिंह ने सूचना दी। "श्रीमती किरण देवी ने आपके द्वारा एम्ब्रोशिया 'सर्वपिष्टी' का सेवन किया था। उससे

भागलपुर
दिनांक 6-11-90

प्रिय महोदय,

जहाँ तक श्री मति किरण देवी के स्वास्थ के बारे में यह जानकारी मुझे देना है कि उसे किसी प्रकार का कठिनाई अब तक नहीं है। स्वास्थ सामान्य है, लेकिन उत्तम स्वास्थ भी नहीं है।

इनके अच्छी स्वास्थ के लिये निर्देश देने का कष्ट करेंगे। जैसे उस बिमारी संबंधी कुछ भी कठिनाई नहीं है तथा ये अपने को कमजोर भी महसूस नहीं करती तथा घर के सारे कार्य करती हैं।

मैं आप का बहुत आभारी हूँ जो आप मेरे रोगी पर लगातार ध्यान रक्खे हुए हैं और आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आगे भी ध्यान रक्खेंगे।

सधन्यवाद | आपका शुभेच्छु
किशोर प्र० सिंह

(सन्दर्भ-४०३)

साहेबगंज
दिनांक २८।१०।९७

आदरणीय महोदय,

आपका पत्र पाया। यह जानकर बेहद खुशी हुई कि आपका रिसर्च संस्थान अपने रोगी के संबंध में समय-समय पर पत्र के माध्यम से जानकारी रखती है। आपका रोगी श्रीमति किरण देवी पूर्ण रूप से स्वस्थ है, और इन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपका कैंसर रिसर्च संस्थान इसी प्रकार मजबूर, परेशान एवं जीवन से निराश लोगों की जीवन-रक्षा करता रहे।

आपका
किशोर प्रसाद सिंह
साहेबगंज

(सन्दर्भ-४०४)

अत्यधिक लाभ हुआ। अब किसी प्रकार का रोगिणी को कष्ट नहीं है।....." *(सन्दर्भ-४०२)*

एक वर्ष बाद अर्थात् ६.११.६२ को श्री के. पी. सिंह ने समाचार दिया कि रोगिणी को कैन्सर-सम्बन्धी कोई शिकायत नहीं है, वे अपने को कमजोर भी नहीं महसूस करतीं तथा घर के सारे कार्य करती हैं। *(सन्दर्भ-४०३)*

'सर्वपिष्टी' द्वारा चिकित्सा के ग्यारह वर्ष बीत जाने पर श्री किशोर प्रसाद सिंह ने दिनांक २८.१०.६७ के पत्र में लिखा,

"....आपकी रोगी श्रीमती किरण देवी पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, और इन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आपका कैन्सर रिसर्च संस्थान इसी प्रकार मजबूर, परेशान एवं जीवन से निराश लोगों की जीवन-रक्षा करता रहे।" *(सन्दर्भ-४०४)*

❑

अपनी वाटिका में खड़े पालक के एक पौधे पर गौर करें। केवल प्रोटीन, विटामिन, आयरन और पानी आदि के पदार्थगत साँचे में पढ़कर उसे ग्रहण करना ही पर्याप्त नहीं है। वह पौधा अपने अंकुरण-काल से लेकर आज तक जिन-जिन प्राकृतिक परिवर्तनों से गुजरा है, उन सबका सचेतन इतिहास उसकी रचना में अंकित है। उसने प्राकृतिक अनुकूलताओं के दौरान पोषक ऊर्जा का संग्रह किया है, और प्रतिकूलताओं के दौरान अपनी प्रतिरोध-क्षमता का विकास किया है।

आप जब आहार रूप में उसे ग्रहण करते हैं, तो वह आपको पोषक ऊर्जा भी प्रदान करता है और प्रतिकूलताओं से प्रतिरोध करने की क्षमता भी। आहार के रूप में ताजा भोज्य वनस्पतियों का सेवन आपको स्वास्थ्य की समग्रता प्रदान करता है।

७४

अप्रैल १९६४ के अन्त में टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई के डॉ. कुलकर्णी ने खुलकर ही कह दिया, "कैन्सर शरीर में चारो ओर फैल चुका है और हम कुछ भी करने की हालत में नहीं रह गये हैं। जो भी एक-दो महीने जीवित रहें, इन्हें घर ले जाकर रखिये।"

'एक वर्ष बाद (जुलाई १९६५) में जब पुनः जाँच के लिए टाटा हॉस्पीटल रोगिणी को ले गये, तब डॉ. कुलकर्णी रोगिणी की जाँच करके आश्चर्यचकित रह गये। रोगिणी उस समय कैन्सर से पूर्ण मुक्त पायी गयी थी।'

अशोक प्रामाणिक
(श्रीमती बेला प्रामाणिक के पुत्र)

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(वस्ति, श्रोणि तक फैला हुआ)
(CA. CERVIX)
(Fast spread to Pelvis and surrounding areas)

श्रीमती बेला प्रामाणिक, ५६ वर्ष
साउथ रानी तल्ला
पो.- कुल्टी, जि.- वर्धमान

रोग का इतिहास : जून १९६३ में मिनोपाज के बहुत बाद अचानक रक्त-स्राव प्रारम्भ हुआ, जो दो माह तक चलता ही रहा। अगस्त के प्रथम सप्ताह में सैंक्टोरिया अस्पताल के डॉ. पी. के. कर्मकार ने बायाप्सी जाँच कराकर कैन्सर की जानकारी प्राप्त की। (स्लाइड नं.- सी. एक्स २४, दि. १०.८.६४)। *(सन्दर्भ-४०५)*

डॉ. कर्मकार ने अगस्त के अन्तिम सप्ताह में रोगिणी को टाटा मेमोरियल अस्पताल, बम्बई ले जाने की राय दी। उनकी राय थी कि रोग अपनी प्रारम्भिक अवस्था में है और शीघ्रता से सँभाल लेने पर दीर्घ काल के लिए अथवा सदैव के लिए आराम मिलने की गुंजाइश रहेगी।

रोगिणी के पुत्र अशोक प्रामाणिक को बड़ा भारी आश्वासन मिला, जब दि. २.९.६३ को टाटा मेमोरियल अस्पताल के डॉ. जे. एन. कुलकर्णी ने भी कहा कि ऑपरेशन

SANCTORIA HOSPITAL
EASTERN COALFIELDS LIMITED
Pathology Department
SURGICAL PATHOLOGY REPORT

Name of Patient M/O A.K. Paramanik Age........ Sex........
Specimen No.................. Slide No. C024
Gross : 10.8.94
2 cervical smear for evaluation

Pathologist's Report :-
Microscopy : [illegible]

Pathologist.

(सन्दर्भ-४०५)

कर देने से रोगिणी पूर्ण स्वस्थ हो जाएगी। सभी जाँच की तैयारी हुई और १३.६.६३ को ऑपरेशन करके यूटरस निकाल दिया गया। ऑपरेशन के दिन शाम को ही सर्जिकल रिपोर्ट मिली और डॉ. कुलकर्णी ने बताया कि रेडियोथेरापी करनी होगी। वस्ति- प्रदेश में भी ऑपरेशन करना पड़ा था। (टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल केस नं. बी एफ १५१८८, यूनिट डॉ. जे. एन. कुलकर्णी, पैथ नं. २०१७८-बी. एफ)।*(सन्दर्भ-४०६)*

अशोक प्रामाणिक को कुछ-कुछ जानकारी पहले से थी और कुछ उन्होंने सामान्य चिकित्सकों से भी सुन रखा था कि ऑपरेशन के बाद रेडियेशन इसलिए कर दिया जाता है कि अगर कैन्सरस ट्यूमर का कुछ अंश छूट गया हो, अथवा ऑपरेशन के दौरान कुछ कैन्सर-कोशिकाएँ किनारे-किनारे फैल गयी हों, तो उन्हें जलाकर नष्ट कर दिया जाता है। किन्तु उन्हें जब पता चला कि कैन्सर उग्र होकर फैल चुका है और रेडियोथेरापी वस्ति-प्रदेश में होगी, तो फिर चिन्तित होकर रेडियोथेरापी के लिए तैयारी और प्रतीक्षा में जुट गये।

डॉ. कुलकर्णी के रेफरेन्स पर डॉ. एस. के. श्रीवास्तव ने दि. ७.१०.६३ से ११.११.६३ तक रेडियेशन दिया। २५ रेडियेशन हुए और २४ घंटे का एक डीप रेडियेशन। इसके साथ ही एक बार चिकित्सा को विराम देकर रोगिणी को छह माह बाद लाने की हिदायत के साथ अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी। (टाटा मेमोरियल हॉस्पीटल केस नं. बी. एफ. १५१८८ आर. टी. नं. ८०६८)। *(सन्दर्भ-४०७)*

ऑपरेशन और रेडियेशन से रोग का घनत्व तो अवश्य ही कम हुआ था, किन्तु रोगिणी को आराम नहीं मिल पाया था। रक्त-स्राव अवश्य बन्द हो गया था। धीरे-धीरे कमजोरी बढ़ रही थी, नींद नहीं आती थी, पेट में तीव्र यन्त्रणा रहती थी और बायाँ पैर सूजता जा रहा था। इस पैर में भी ऊपर से नीचे तक दर्द रहता था। किसी तरह दिन पूरे हुए और छह माह बाद रोगिणी को टाटा मेमोरियल अस्पताल में उपस्थित किया गया।

६, ७ और ८ मई १६६४ को डॉ. कुलकर्णी ने जाँच की। उन्होंने श्री अशोक प्रामाणिक को बताया ''रोग पूरी तरह रिलैप्स कर गया है। यह जहाँ पहले था वहाँ भी

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Requisition for Surgical Pathology

Name Mrs. Pramanik OUT-PATIENT

CASE No BF15188 Unit JNKulka- IN PATIENT ROOM NO 3 SEP 1993

Age 55 Sex F Community

Duration of illness Ca Cx.

Path. No.

20178 BF

Slides are of sub optimal quality.
However the tissue in the block shows a
poorly differentiated squamous carcinoma

(सन्दर्भ-४०६)

है, नये क्षेत्रों में भी है। किमोथेरापी चलाना आवश्यक है। तब तक आप बाह्य कष्टों के लिए लक्षणगत औषधियाँ चलायें। किमोथेरापी कराने के लिए बम्बई में रुके रहना जरूरी नहीं लगता। कलकत्ता में ही जाँच भी हो सकती है और किमोथेरापी भी वहीं चल सकती है। (टाटा मेमोरियल अस्पताल केस नं. १५१८८, दि. ६/७.५.६४)। *(सन्दर्भ-४०८)*

श्री अशोक प्रामाणिक को समझते देर नहीं लगी कि गाड़ी कहाँ है और किधर जा रही है। उनके मन ने पूछा—क्या ऑपरेशन और रेडियोथेरापी के लिए भी पहली यात्रा के दौरान यही नहीं कहा जा सकता था कि यह सब कलकत्ता में भी हो सकता है ? वह सब भी तो वहाँ होता ही है। डॉ. कुलकर्णी ने खुलकर ही कह दिया, ''कैन्सर शरीर में चारो ओर फैल चुका है और हम कुछ भी करने की हालत में नहीं रह गये हैं। जो भी एक-दो महीने जीवित रहें, इन्हें घर ले जाकर रखिये।''

श्री प्रामाणिक ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को बताया, ''हमारी हालत दिग्भ्रमित जैसी हो गयी। चिकित्सा की सारी तत्परता के बावजूद रोग आँधी की तरह बढ़ता जा रहा है। क्या केमोथेरापी कुछ सकारात्मक समाधान देगी ! फिर रोगिणी की हालत भी तो साफ दिखायी दे रही थी— कैन्सर का उग्र-खतरनाक होकर बढ़ते जाना, रोगिणी की जिन्दगी का कष्टों और यंत्रणाओं में डूबते जाना, स्वास्थ्य का निरन्तर विघटित होते जाना। क्या रोगिणी किमोथेरापी और उसके साइड एफैक्ट को झेल पाएगी ? बस एक ही चिन्ता, एक ही चिन्ता, बार-बार एक ही चर्चा।

''संयोगवश वहीं पर कलकत्ता के ही एक सज्जन ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में बताया और वहीं पर जाने की भी राय दी। मुझे इस सेण्टर के विषय में कोई

R.T.No. 8098
MACHINE Cli-6
TIME 10.05 am

TATA MEMORIAL HOSPITAL, BOMBAY
DEPT. OF RADIATION ONCOLOGY
RADIATION THERAPY PRESCRIPTION

OPD/IP ______ WARD
GEN.

NAME: Mrs. Bela Pramanik Age/Sex 55y F Case No 51F / 1 5 1 1 8 1 8
DIAGNOSIS/HISTOLOGY Ca. Cervix Ib Post-op. Lep-ca. poorly diff.

- Presented c prolo growth over Cervix ~3cm., both fr & para free
- Planned for wertheim's Hyst. ; Expl lap. done c pelvic lymphadenectomy
  Common iliac nodes suspicious at opn, (R) para infiltr. : wertheim's a
  Rt. comm. iliac node 4 negative, Lt. iliac 9 nodes -ve.
  Central disease left

O/E : Large prolo growth ~4cm. involving Cx. mainly to right.
right para involved upto LPW, left medially

RADIATION THERAPY SUMMARY

DATE: FROM 08 / 10 / 93 TO 11 / 10 / 93 SITE Pelvis
FINAL TOTAL DOSE: 5000 cGy, 25 FRACTIONS 035 DAYS
NSD 1518 TDF 82 LQ (BED) Gy
Gap Correction Yes/No Brachytherapy Planned Yes/No Completed Treatment Yes/No

DR. S. K. SHRIVASTAVA
WEEKLY REVIEW
Th wed 9:30 AM - 1:00 PM.
MON Tue 2:00 PM - 5:00 PM.

PROTOCOL RANDOMIZATION
Hand book given
Doctors Signature/Date Date 21/10/93

(सन्दर्भ-४०७)

जानकारी नहीं थी। फिर वापस आने के बाद जब मैंने अपने ऑफिस के एक मित्र से चर्चा की तो उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में बहुत कुछ बताया।"

समय के साथ श्रीमती प्रामाणिक की स्वास्थ्य-समस्याएँ अधिकाधिक पेचीदा होती जा रही थीं। कोलफील्ड के अस्पताल में ही तब तक कष्टों के लिए दवाएँ भी ली जाती रहीं और जाँच भी चलती रही। जाँच से पता चलता था कि रोग बढ़ता ही जा रहा था। यंत्रणा और वेदना तो असह्य थी ही। जाँच प्रायः २७.५.६४ तक पूरी हुई और सभी रिपोर्ट्स के साथ डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया गया। वहाँ जानकारी मिली कि केन्द्र के पास जलीय शोथ (एडेमा) की कोई औषधि नहीं है। *(सन्दर्भ-४०६)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दि. ३०.५.६४।

'सर्वपिष्टी' चलने लगी। धीरे-धीरे सुधार दिखायी पड़ा, किन्तु रोगिणी को अन्य-अन्य रोग हो जाते थे जो कमजोरी दूर नहीं होने देते थे। कभी आमाशय, तो कभी रक्तामाशय, कभी पेशाब के रास्ते से काले रक्त का स्राव, तो कभी पाखाने के रास्ते से। अब नींद अच्छी आने लगी, शरीर में स्फूर्ति भी रहने लगी। रक्तामाशय आदि की

चिकित्सा अंग्रेजी दवाओं से चलती थी। कैन्सर का बढ़ाव प्रत्यक्षतः रुक गया था। सैंक्टोरियम अस्पताल के डॉ. पी. के. कर्मकार ने रक्तामाशयादि उपद्रवों को रोकने के लिए चिकित्सा में कुछ भी उठा नहीं रखा, किन्तु चिकित्सा बेअसर ही रही।

समय-समय पर प्राप्त प्रगति-रिपोर्ट्स के अंश

दि. २३.०२.६६ : " मेरी माँ आपकी औषधि लगभग दो वर्ष से ले रही है। सुफल अवश्य हुआ है।..."

दि. १५.०३.६६ : " बाएँ पैर में जो सूजन थी, वह कुछ कम (मालूम होती है) है। कुछ झिमझिम भाव (दर्द के बदले) रह गया है। पेट का दर्द कम है– कभी-कभार थोड़ा दर्द हो जाता है। पाखाना नियमित होता है।"

दि. १६.०५.६६ : " माँ एक तरह से ठीक ही हैं। पैर के दर्द और सूजन में कमी-बेसी होती रहती है।..."

दि. २८.०६.६६ : "रोगिणी अर्थात मेरी माँ सार्वत्रिक भाव से स्वस्थ हैं। किन्तु पैर की सूजन ऐसी है कि बिना आँख से देखे समझ पाना संभव नहीं है। आपकी औषधि का गुण अतुलनीय है, किन्तु..पैर की इस सूजन के विषय में कोई उपकार नहीं हुआ।

TATA MEMORIAL HOSPITAL

Form No. 4

NAME Mrs Pramanik

4

CASE No. BR-15180

Physician's Follow up Notes — Pain in the upper abd

6/5/99 — Pain & edema of (Lt) Lower limb – 20 days.

O/E → Vault: forming — P/Abd–soft

P/S, V/E → Nodularity at Vault — (Lt) Lower limb

No bleeding

Para–soft

Imp → Locally Controlled

? Regional Lymph

causing Lymphoedema

C/o – (L) Leg oedema

Impression Relapse in (L) iliac nodes.

7/5/99

PS / PV } Cx healthy; no obvious disease in parametrium

adv – Symptomatic Rx

pain relief

(सन्दर्भ-४०८)

EASTERN COALFIELDS LIMITED

Ticket for Outdoor Patients

Name Mrs Bela Paramanik Age 55 Sex F

Where employed A. K. Paramanik Occupation

Disease

20.5.94

Patient presented with pain, oedema left lower limbs.

27 MAY 1996

(सन्दर्भ-४०६)

आपसे अनुरोध है कि इस सम्बन्ध में चिन्तन-मनन करके औषधि दें, तो खूब उपकार होगा।"

दि. २३.१०.९६ "माँ इस समय ठीक ही हैं।...."

दि. ०४.०६.९७ की रिपोर्ट

'सर्वपिष्टी' कैन्सर की महौषधि'

श्रीमती बेला प्रामाणिक की वर्तमान स्वास्थ्य- स्थिति की रिपोर्ट प्रस्तुत करते समय उनके मातृभक्त पुत्र श्री अशोक प्रामाणिक ने उत्साहपूर्वक जो रिपोर्ट पेश की, उसमें उन्होंने लिखा,

"डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इस महान उपलब्धि से केवल मेरी माँ ही उपकृत नहीं हैं, बल्कि वे नौ-दस (अन्य) व्यक्ति भी उपकृत हैं, जिन्हें हमने (इस औषधि का सहारा लेने का) परामर्श दिया था।"

उन्होंने उत्साह के साथ अपनी माँ की सुन्दर स्वास्थ्य-स्थिति की रिपोर्ट विस्तृत रूप में लिख दी है। बात पुनरावृत्ति जैसी लग सकती है, किन्तु उनके उक्त पत्र के अंशों को उद्धृत कर देना आवश्यक प्रतीत होता है। वे अंश हैं, "......चौथी बार जब जाँच के लिए टाटा मेमोरियल (बम्बई) ले जाया गया, तब (डॉ. कुलकर्णी) बोले कि कैन्सर पूरे शरीर में फैल चुका है और हम कुछ भी करने की स्थिति में नहीं हैं। जो भी एक-दो माह जीवित रह सकें, घर ले जाकर रखो।"

उन्होंने आगे लिखा- ''इसी दिशाहीन अवस्था में हम बम्बई से लौटकर दो-एक दिन के बाद ही डी.एस. रिसर्च सेण्टर पहुँचे। इनकी (रिसर्च सेण्टर की) औषधि ने जादू की तरह काम किया। एक वर्ष के बाद जब पुनः जाँच के लिए बम्बई ले जाया गया, तो डॉ. कुलकर्णी जाँच के बाद आश्चर्य चकित रह गये (जुलाई १९९५)। रोगिणी पूर्ण स्वस्थ पायी गयी थीं। ''इस समय शारीरिक स्वास्थ्य में प्रभूत उन्नति हुई है।....इसलिए यह कहने में कोई हिचक नहीं कि डी. एस. रिसर्च सेण्टर का यह एक विराट कृतित्व है। अब तो केवल मेरी माँ ही नहीं, वरन् वे नौ-दस अन्य रोगी भी जिन्हें हमने परामर्श दिया था, उपकृत हैं।'' *(सन्दर्भ- ४१०)*

(सन्दर्भ-४१०)

(सन्दर्भ-४१० बी)

दिनांक ०६.०१.९८ की रिपोर्ट

श्रीमती प्रामाणिक के पुत्र स्वपन प्रामाणिक ने रिपोर्ट दी कि उन्हें सिवा बाएँ पैर की सूजन और हल्के दर्द के, अन्य कोई स्वास्थ्य- समस्या नहीं है। पैरों की जलन और पाखाने से रक्त आने की शिकायत तो लम्बे समय से नहीं है। डॉ. कर्मकार ने उन्हें बताया है कि पैर की सूजन का कारण चिकित्सा के पहले दौर में हुए ऑपरेशन के दौरान हुई गलती है। *(सन्दर्भ- ४१०बी)*

७५

श्रीमती खैरूनिशा के साथ उनके पति डी. एस. रिसर्च सेण्टर आये। उन्होंने प्रोफेसर त्रिवेदी से मजाक करते हुए कहा, "इतनी सुन्दर तो यह कैन्सर होने के पहले कभी नहीं थी, यहाँ तक कि जब मैं इससे शादी करने गया था, तब भी यह इतनी सुन्दर नहीं थी।"

श्रीमती खैरूनिशा को कैन्सर-मुक्त हुए जब वर्षों (बारह वर्षों का समय) बीत गये, दिनांक ७.१०.९७ को श्रीमती खैरुनिशा के पुत्र अबैदुर्रहमान ने प्रोफेसर त्रिवेदी को पत्र लिखकर अपनी माँ के कैन्सर-मुक्त रहने का समाचार दिया, "बड़ी खुशी की बात है कि हमारी माँ अब भी कैन्सर से दूर हैं। कैन्सर सम्बन्धी परेशानी नजर नहीं आ रही है।"

स्तन (दाहिना) का कैन्सर
CA. BREAST (R)

श्रीमती खैरू निशा, ६० वर्ष
ग्राम : बथनाहा, पो. अमौना,
जि. : अररिया (बिहार)

तेरह वर्ष पहले अक्टूबर १९८४ में जब श्रीमती खैरू निशा को 'सर्वपिष्टी' की खूराकें दी गयीं, उस समय की उनकी हालत का हवाला देती है, उनके पति मोहम्मद सईद की रिपोर्ट, "शरीर सूखकर काँटा हो गया था। रोग और दवाओं के असर से शरीर (कोयले जैसा) काला पड़ गया था। दाहिने स्तन के पास एक भयंकर ट्यूमर था, दूसरा था काँख के पास। असह्य दर्द था। दाहिनी बाँह सूजकर बहुत मोटी हो गयी थी। उसमें चेतना नहीं थी। रोगिणी दर्द से कराहती रहती थी। खाना-पीना प्रायः बन्द ही था। पूरा परिवार परेशान और चिन्तित था।"

चिकित्सा विज्ञान संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
Institute of Medical Sciences
B. H. U., Varanasi

विकिरण चिकित्सा केन्द्र
(RADIOTHERAPY DEPARTMENT)

नाम Khairun Nisha ... 583/82
(निदान, Diagnosis) ... Ca. Breast

(सन्दर्भ-४११)

पूर्वोत्तर रेलवे N. E. Railway — बहिरंग रोगी अभिलेख OUT PATIENT RECORD

(सन्दर्भ-४१२)

रोग का इतिहास : दाहिने स्तन में एक गाँठ उभरी थी, जिसे ऑपरेशन द्वारा निकाल दिया गया। कुछ दिनों के बाद ऑपरेशन के स्थान पर एक मुँह बन गया और उसमें से बदबूदार मवाद आने लगा। दवाएँ दी जातीं तो आराम मिलता और दवा बन्द होते ही फिर वही बहाव चालू हो जाता। पूर्वोत्तर रेलवे अस्पताल के डॉ. जी. पी. गुप्ता ने घाव के स्थान पर एक गाँठ नोट की। जाँच होने पर पाया गया कि कैन्सर है। यह बात १९८२ की है। डॉ. गुप्ता ने बी. एच. यू. वाराणसी के कैन्सर अस्पताल में ले जाने की सलाह दी।

पूर्व चिकित्सा

रेडियोथेरापी : काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के कैन्सर अस्पताल में रेडियोथेरापी दी गयी (क्रमांक ५८३/८२)। *(सन्दर्भ-४११)*

रेडियेशन से एक बार आराम मिला, किन्तु कुछ महीनों के बाद दाहिनी बाँह फूलकर मोटी हो गयी और कुछ ही दिनों के बाद स्तन तथा काँख में ट्यूमर उभर आये। पूर्वोत्तर रेलवे अस्पताल में ही किमोथेरापी दी गयी। इससे रोग नियंत्रण में नहीं आया और रोगिणी निढाल होकर चारपाई पर पड़ गयी। *(सन्दर्भ-४१२)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : अक्टूबर १९८४

प्रगति-रिपोर्ट : 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई तब तक स्तन का बड़ा ट्यूमर फटकर बहने लगा था। दर्द और मवाद का बहना तीन सप्ताह तक यथावत रहा। तीन सप्ताह बाद दर्द भी घटा और घाव भी सूखता नजर आने लगा। रोगिणी खाने-पीने और नींद लेने लगी। धीरे-धीरे शरीर का कालापन भी मिटने लगा। दो महीने बाद रोगिणी चलने-फिरने

लगी। 'सर्वपिष्टी' की खूराकें नियमानुसार दी जाती रहीं। तीन महीने बाद घाव का बहना रुक गया और उसका आकार भी घट गया। रोगिणी घर के काम-धाम में रुचि लेने लगीं।

छह महीने बाद तो कैन्सर के चिन्ह भी शेष नहीं रहे। श्रीमती खैरू निशा अब पूर्ण स्वस्थ महिला थीं। दिनांक १२.८.८५ को उन्हें लेकर उनके पति डी. एस. रिसर्च सेण्टर, पूर्णिया आये। उनके सुधरे हुए ओजस्वी स्वास्थ्य की चर्चा करते हुए मोहम्मद सईद ने मजाक किया, ''इतनी स्वस्थ और सुन्दर तो यह कैन्सर होने के पहले कभी नहीं थी, यहाँ तक कि जब मैं इससे शादी करने गया था, तब भी यह इतनी सुन्दर नहीं थी।''

श्रीमती खैरू निशा।
[illegible]
मेरी माता जी जो कि कैन्सर की रोगी थीं तथा जिनका इलाज तीन साल पूर्व डी. एस. रिसर्च सेण्टर पूर्णियाँ से हुआ था। वर्तमान समय में पूर्णतः स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही हैं। [illegible]
मो० खलीलुर्रहमान - ३०।१०।८७।

(सन्दर्भ-४१३)

आठ महीने चला कर औषधि बन्द की गयी थी। किन्तु रोग ने फिर कभी भी सर नहीं उठाया। दाहिनी बाँह की सूजन बहुत धीरे-धीरे घट रही थी। बाँह में चेतना तो लौट आयी थी, किन्तु उसमें काम करने की क्षमता कम थी।

Mirganj Bathnaha
7.10.97
आदरणीय प्रोफेसर साहेब,
प्रणाम।
बड़ी खुशी की बात है, के हमारी माँ अब भी कैन्सर से दूर है कैन्सर सम्बन्धी परेशानी नजर नहीं आ रही है।
आपका
अबेदुर्रहमान

(सन्दर्भ-४१४)

दिनांक ३०.१०.८७ को श्रीमती खैरू निशा के पुत्र मोहम्मद खलीलुर्रहमान ने उनके स्वास्थ्य के विषय में लिखा, ''मेरी माता जी जो कि कैन्सर की रोगी थीं तथा जिनका इलाज तीन साल पूर्व डी. एस. रिसर्च सेण्टर, पूर्णिया से हुआ था, वर्तमान समय में पूर्णतः स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही हैं।'' *(सन्दर्भ-४१३)*

दिनांक ७.१०.९७ को श्रीमती खैरू निशा के पुत्र अबेदुर्रहमान ने पत्र लिखा, जिसमें इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की गयी थी कि उनकी माँ को अब कैन्सर से सम्बन्धित कोई शिकायत नहीं है। *(सन्दर्भ-४१४)* ☐

स्तन कैन्सर
(CA. BREAST)

श्रीमती निर्मला देवी श्रीवास्तव
उम्र : ४५ वर्ष
पत्नी श्री राममूर्ति लाल श्रीवास्तव
ग्राम व पोस्ट : बराली
जिला : गोण्डा (उ. प्र.)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : डॉ. के. एम. वहल, के. जी. मेडिकल कालेज लखनऊ (रिपोर्ट नं एच २९२-९७, दिनांक ०८.०२.९७, *(सन्दर्भ-४१५)*, कपूर सर्जिकल सेण्टर, लखनऊ

Dr. K. M. Wahal
M.D. (Path.) D.Sc. (Med.) F.C.A.P. (U.S.A.)
PROF. OF HISTOPATHOLOGY (Retd.)
K. G. MEDICAL COLLEGE
LUCKNOW

Phones: [269610 / 84247]
CHOWK
LUCKNOW

Report No. H-292-97
Patient Mrs Nirmala Devi (BJ)
Referred by Dr. V. P. Singh M.S
Specimen Breast tissue

PATHOLOGY EXAMINATION REPORT

GROSS :— The piece of breast tissue is irregular in outline. It is mostly firm in consistency and part is soft in consistency. Section has been cut through the middle.

MICROSCOPIC :— Sections shows the tissue infiltrated extensively by small groups, irregular columns or small islands of neoplastic epithelial cells. Latter are apparently pleomorphic and hyperchromatic. Attempt at acini formation is rarely observed. Intervening stroma shows small round cell infiltration.

DIAGNOSIS :— INFILTRATING BREAST CARCINOMA

Dated 4-2-1997

(सन्दर्भ-४१५)

Shivam Pathology Phone : 320339

Dr. Rekha Agarwal
M.D.(Path & Bact.)

B-72 [A], NIRALA NAGAR
LUCKNOW

Name- Mrs. Nirmala devi
Ref. by- Dr.R.C.Kapoor
M.S.
Specimen- Breast(Rt)

Date- 1/10/97

Gross-

Abreast with attached skin & nipple measuring about 12 x 10 x 8.5 cm. Outer surface is smooth. On section there is white firm area of about 4 cm in diameter. Two section from different places have been taken.

Microscopic-

Sections show dilated ducts which are filled with neoplastic epithelial cells that completly plug the lumina. At places central necrosis is also present there. At few places these neoplastic cells extends through the basement membrane and are infiltrating into fibrous stroma in solid nests cells.

Diagnosis-

Infiltrating Ductal Carcinoma Breast(Rt)

(Dr.Rekha Agarwal)

CLINIC HOURS—Morn. 8.00 A.M. to 1.00 P.M Even. 5.00 P.M. to 8.00 P.M.
Clinic will remain Closed on every Sunday evening.

(सन्दर्भ-४१६)

(२५.०६.६७), सरकार डायग्नोस्टिक्स, लखनऊ (२५.०६.६७), शिवम पैथालोजी, लखनऊ (०१.१०.६७)। *(सन्दर्भ-४१६)*

दिनांक १२.०३.६७ को श्रीमती निर्मला देवी के पति श्री राममूर्ति लाल श्रीवास्तव सर्वपिष्टी प्राप्त करने पहुँचे तो उन्होंने रोगिणी के विषय में रिपोर्ट दी, "दाहिने स्तन में करीब ४ माह से गिल्टी के रूप में था। जिला अस्पताल, गोण्डा के डॉ. वी. पी. सिंह ने आपरेशन किया। आपरेशन के चार दिन बाद मांस का टुकड़ा जाँच हेतु लखनऊ भेजा गया। लखनऊ से रिपोर्ट आई कि कैन्सर है। घाव की पूर्ति पूर्ण रूप से अभी नहीं हो पाई है। घाव के अन्दर कभी-कभी चिलकन होती रहती है।

रोगी का नाम ---- निर्मला देवी श्रीवास्तव
पति का नाम ---- राममूर्ति लाल श्रीवास्तव
ग्राम व पो० ---- ग्राम व पो० मरौली जनपद - गोंडा
आयु --- 45 वर्ष

(1) श्रीमान जी आपके यहां का पुराना रोगी है।
(2) श्री मान जी के आदेशानुसार दाहिने स्तन पर जो गिल्टी थी जिसकी दवा आपके यहां से चल रही थी। विगत कुछ महीनों से अक्टूबर 97 से अब तक दवा बन्द थी। क्योंकि आपने उस गिल्टी का आपरेशन कराने हेतु कहा था।
(3) उस गिल्टी का आपरेशन मैंने लखनऊ में करा दिया है तथा घाव भी सूख गयी है। उनके यहां की दवा 'TOMOXIFen Tab चल भी रही है।
(4) आपरेशन के बाद घाव सूखने के बाद आप ने पुनः दवा करने का आदेश दिया था
(5) आपरेशन सम्बन्धी सभी सूचनायें साथ में उपलब्ध है।
(6) श्रीमान जी यह भी बताने का कष्ट करें कि क्या आपके यहां की दवा तथा उपरोक्त टेबलेट दोनो साथ साथ दिया जा सकता है।
(7) दवा 20 दिन की चाहिए।
(8) मरीज की हालत अभी ठीक दिखाई दे रही है।

राममूर्ति लाल श्रीवास्तव
8.4.98

(सन्दर्भ-४१७)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १२.०३.६७ से।

सर्वपिष्टी का सेवन प्रारम्भ करने के बाद दिनांक ०८.०४.६७ को श्री राममूर्ति लाल श्रीवास्तव ने मरीज का हाल लिखकर एक पत्र भेजा जिसमें अन्य बातों के अलावा यह भी लिखा, "...दवा से कुछ लाभ अवश्य मालूम पड़ता है"।

इसके बावजूद रोगिणी को समय-समय पर नयी समस्याओं से जूझना पड़ता था। रोगिणी के पति समस्यायें बताते, सलाह लेते और यह प्रयास रहता कि किसी न किसी तरह रोगिणी के कष्टों को दूर किया जाय। दिनांक ०८.०४.६८ को रोगिणी के पति ने पत्र द्वारा सूचना दी, "...श्रीमान जी के आदेशानुसार दाहिने स्तन पर जो गिल्टी थी, जिसकी दवा आपके यहाँ से चल रही थी। विगत कुछ महीनों से अक्टूबर ६७ से अब तक दवा बन्द थी। क्योंकि आपने उस गिल्टी का आपरेशन कराने हेतु कहा था। उस गिल्टी का आपरेशन मैंने लखनऊ में करा दिया है तथा घाव भी सूख गया है। उनके यहाँ की

✆ 331189, 331190, 325226, 325414

SARKAR DIAGNOSTICS

C - 1093, SECTOR - A, MAHANAGAR, LUCKNOW - 226 006

● WHOLE BODY CT SCAN (1 mm slice & 3D Imaging) ● ULTRASONOGRAPHY (Transvaginal, Transrectal & Soft Tissue High Resolution Ultrasound) ● 2D ECHO WITH COLOUR DOPPLER, PERIPHERAL VASCULAR WITH PW & CW PROBES ● TMT ● 12 CHANNEL DIGITAL HOLTER ● ECG ● ENDOSCOPY (Upper & Lower G.I.) ● MOTORISED 500 mA X- Ray ● COMPUTERISED PATHOLOGY (Semiauto analyser, Elisa Reader, Ion selective Electrolyte analyser)

TIMINGS : 9 a.m. to 8 p.m. SUNDAY 9 a.m. to 4 p.m. AMBULANCE AVAILABLE

ID CODE :: 2060

PATIENTS NAME :: MRS NIRMALA DEVI

REFERRED BY :: DR R C KAPOOR MBBS MS

DATE :: June 20, 1998

ULTRASONOGRAPHY REPORT

ULTRASOUND OF RIGHT BREAST

The right breast was ultrasonographically scanned by high resolution high frequency near focus linear probe with magnification for better tissue details.

Breast soft tissue is not visualised. No residual mass lesion is seen. No calcification is seen. Axilla is normal.

OPINION ::
POST OP NORMAL STUDY. No evidence of residual/recurrence is seen.

Dr (Mrs) Archana Dikshit

Dr. Archana Dikshit
M.B.B.S., DMRE
RADIOLOGIST

Dr. Alok Dikshit
M.B.B.S., M.D.
PATHOLOGIST

Dr. Sanjay Lakhtakia
M.B.B.S., M.D.
ENDOSCOPIST

Dr. Sabya Sachi Sarkar
M.B.B.S., M
RADIOLOGI

(सन्दर्भ-४१८)

दवा टेमाक्सिफेन चल भी रही है। आपरेशन के बाद घाव सूखने के बाद आपने यहाँ से दवा कराने का आदेश दिया था।...मरीज की हालत अभी ठीक दिखाई दे रही है" *(सन्दर्भ-४१७)*।

श्री राममूर्ति लाल श्रीवास्तव को जब लगा कि उनकी पत्नी कैन्सर से मुक्ति पा चुकी हैं तब उन्होंने इसकी पुष्टि के लिए सरकार डायग्नोस्टिक्स, लखनऊ से दिनांक २० जून १९९८ को अल्ट्रासोनोग्राफी भी करायी। रिपोर्ट में आया, 'पोस्ट आप. नार्मल स्टडी : नो एविडेन्स आफ रेजिडुअल/रेकरेन्स इज सीन' *(सन्दर्भ-४१८)*। रिपोर्ट देखकर डॉक्टरों के साथ श्रीवास्तवजी और उनके परिजन भी उत्साहित हो गये। ये सभी लोग जानते थे कि कैन्सर से पीछा छूटना कठिन ही नहीं असम्भव होता है।

शुभ स्थान - बेरौली
दिनांक 4-3-2000

मान्यवर
डॉक्टर साहब,
सादर नमस्कार।
अपरंच समाचार यह है कि आपके [illegible] का दिनांक 2-3-2000 को प्राप्त हुआ। उसमें आपने निर्मला देवी के स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने हेतु लिखा है।
(1) जब आपके कथनानुसार मैंने दाये स्तन की गिल्टी का ऑपरेशन लखनऊ कराया था।
(2) आपरेशन कराने के पूर्व ही मैंने लखनऊ से टेलीफोन द्वारा आपसे सलाह ली थी उसमें आपने सलाह दी थी कि आप ऑपरेशन जिस विधि से डाक्टर करना चाहते है उस विधि से उसे करने दें।
(3) जाँचोपरान्त मरीज के मर्ज रिपोर्ट [illegible] ठीक निकला (मानो [illegible] मर्ज ठीक हो गया) है।
(4) ऑपरेशन कराये हुए करीब 3 वर्ष व्यतीत होने को हो रहा है अभी किसी प्रकार का कोई उपद्रव भगवान व आपकी कृपा से नहीं हुआ है।
अब अतः मेरा मरीज बिल्कुल ठीक व स्वस्थ है।
आपकी दवा मेरे लिये रामबाण साबित हुआ। भगवान आपका यश दिनों दिन बढ़ाता रहे दिन दूना रात चौगुना हो आपकी कीर्ति पूरे दूर दूर तक फैले मेरी यही कामना है।
मैं आप से यही अनुरोध करता हूँ कि आपका स्नेह बराबर बना रहे। इति।

आपका
राममूर्ति लाल श्रीवास्तव
ग्राम व पो० - बेरौली
जनपद - गोण्डा (उ०प्र०)

(सन्दर्भ-४१६)

यह तो तय था कि सर्वपिष्टी से श्रीमती निर्मला देवी को क्रमशः सुधार हो रहा था। श्री राममूर्ति लाल श्रीवास्तव ने दिनांक ०४.०३.२००० को जो पत्र केन्द्र को लिखा उससे स्थिति समझी जा सकती है, "...आपके कथनानुसार मैंने दायें स्तन की गिल्टी का आपरेशन लखनऊ में कराया था। आपरेशन कराने के पूर्व ही मैंने लखनऊ से टेलीफोन द्वारा आपसे सलाह ली थी, उसमें आपने सलाह दी थी कि आप आपरेशन जिस विधि से डॉक्टर करना चाहते हैं, उस विधि से करने दें। दायाँ स्तन पूरा निकाल दिया गया था। जब घाव की पूर्ति हो गयी थी तब फिर आपके पास जाकर दवा लेकर आया था। आपने कहा था कि आपरेशन के बाद दो माह तक दवा आप करलें तो कैन्सर जड़ से समाप्त हो जायेगा। आपरेशन के बाद आपकी तथा आपरेशन करने वाले डॉक्टर की

मान्यवर
डॉक्टर साहब
सादर चरण स्पर्श

सेवा में
सविनय निवेदन है कि आपके शोध संस्थान से
श्रीमती निर्मला देवी श्रीवास्तव W/o राम [illegible] श्रीवास्तव
ग्राम बरौली पो० बरौली जनपद [illegible] का जो इलाज चल रहा था
उस इलाज से मुझे पूर्ण रूपेण लाभ प्राप्त हुआ। कैंसर -
सम्बन्धी किसी भी प्रकार की कोई परेशानी अब तक नहीं
हुई है। एक साल पर डॉक्टर से चेक करवाता हूँ -
परन्तु अब कैंसर नाम का कोई मर्ज शरीर के अन्दर नहीं
है। स्वास्थ्य भी ठीक रहता है किसी प्रकार की कोई परेशानी
नहीं है मैं भगवान से हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूँ कि
ऐसे ही सभी मरीजों को स्वास्थ्य लाभ होता रहे और
आपके शोध संस्थान का नाम रोशन हो। शेष शुभ है।

भवदीय
[illegible]

(सन्दर्भ-४१६+1)

दोनों की दवा साथ-साथ करता रहा। आपरेशन के बाद आपकी दवा ३ माह की, इसके बाद बन्द कर दिया और डॉक्टर साहब ने लखनऊ में ही मरीज के मर्ज की जाँच करवायी। अल्ट्रासाउण्ड, एक्स-रे, खून, पेशाब आदि की जाँच हुई। जाँचोपरान्त मरीज का मर्ज रिपोर्ट द्वारा ठीक निकला (यानी मर्ज ठीक हो गया है)। आपरेशन कराये हुए करीब ३ वर्ष व्यतीत होने को हैं, अभी किसी प्रकार का कोई उपद्रव भगवान की कृपा से नहीं हुआ है।

"अतः अब मेरा मरीज बिल्कुल ठीक व स्वस्थ है। आपकी दवा मेरे लिए रामबाण साबित हुआ..." *(सन्दर्भ-४१६)*

श्रीमती निर्मला देवी ने पूर्ण स्वस्थता के कई वर्ष बिता दिये हैं। उन्हें कैन्सर सम्बन्धी किसी तरह की कोई परेशानी नहीं है। दिनांक १६.०७.२००१ को केन्द्र को भेजे गये पत्र से भी इसी बात की पुष्टि होती है, "...आपके शोध संस्थान से श्रीमती निर्मला देवी श्रीवास्तव का जो इलाज चल रहा था, उस इलाज से मुझे पूर्ण रूपेण लाभ प्राप्त हुआ। कैन्सर सम्बन्धी किसी भी प्रकार की कोई परेशानी अब तक नहीं हुई है। एक साल पर डॉक्टर से चेक करवाता हूँ परन्तु अब कैन्सर नाम का मर्ज शरीर के अन्दर नहीं है। स्वास्थ्य भी ठीक रहता है। किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है। मैं भगवान से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे ही सभी मरीजों को स्वास्थ्य लाभ होता रहे और आपके शोध संस्थान का नाम रोशन हो..."। *(सन्दर्भ-४१६+1)*

७७

हमको आप अमर कर दिये

श्रीमती चन्द्रावती देवी उन भाग्यशाली कैन्सर रोगियों में से हैं जो काल के द्वार से उसे अंगूठा दिखाकर लौट चुकी हैं और वे 'सर्वपिष्टी' की शक्ति को जानती स्वीकारती हैं। उनके एक पत्र की कुछ पंक्तियों से उनकी भावनाओं को समझा जा सकता है। *"...आपका दवा खाने से हमको लगता है कि अब हम मरेंगे ही नहीं, हम तो अमर हो गये। आपका दवा में इतना गुण है कि मरा हुआ आदमी जिन्दा हो जाता है।.... हमको आप अमर कर दिये।"(सन्दर्भ-४२१)*

रीढ़ की अस्थियों तक फैला हुआ (CA. CX, META. BONE) गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर

श्रीमती चन्द्रावती देवी

उम्र : ४८ वर्ष

पता : ग्रा. -कुम्हऊँ, पो. मीर सराय, जि. सासाराम रोहतास (बिहार)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : आई. एम. एस., बी. एच. यू, वाराणसी (दिनांक २०.०३.९५) *(सन्दर्भ- ४२२)*।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के कैन्सर-चिकित्सकों ने जाँच के बाद यह पाया कि उनका गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर रीढ़ की अस्थियों में उतर कर तेजी से उनका क्षरण करने लगा है, और लगा कि शायद रोग अब चिकित्सा की एक नहीं सुनेगा।

श्रीमती चन्द्रावती देवी इन वाक्यों का कुल आशय समझती थीं।

ओम्

कुम्हऊँ

Received 6.4.95

आदरणीय डाक्टर साहब

सादर प्रणाम!

आपका पत्र मिला पढ़कर बहुत खुशी हुई। डाक्टर साहब हमारा तबीयत बहुत अच्छा है। आपका दवा खाने से हमको लगता है कि अब हम मरेंगे ही नहीं हम तो अब अमर हो गए। आपका दवा में इतना गुण है कि मरा हुआ आदमी भी जिन्दा हो जाता है। आप तो भगवान हैं डाक्टर साहब हमको आप अमर कर दिये। हम आपके पास जरूर आएंगे। बनारस आने पर आपका [illegible] डाक्टर साहब। हमारा स्वास्थ्य ठीक है। कोई [illegible] नहीं है।

चन्द्रावती

(सन्दर्भ-४२१)

बहिरंग-पत्र क्रमांक-ख 308013
सर सुन्दरलाल चिकित्सालय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

Clinically ... L5/S1
Minimal spinal degeneration radiologically.
Ref'd to Prof S.K. Gupta Dept of Radiology for expert comment on Xray lumbosacral spine in view of clinical presentation
There is evidence of trabecular disruption (destruction) of S1 on the left side Metastasis
Adv CT for confirmation
20/3/95

(सन्दर्भ-४२२)

उनकी जिन्दगी के सामने एक सपाट रास्ता था, जो अनन्त स्याह भविष्य में ही बिना मुड़े उतरता था। शरीर के किसी भी कोने में, किसी भी कण में, किसी भी अंग अथवा संस्थान में कैन्सर अपने लक्षणों के साथ दिखाई दे, समझने वालों के सामने वह स्याह पगडण्डी ही बिछ जाती है, जो अनन्त स्याह अज्ञात में जा उतरती है। यह तस्वीर सामान्य जिन्दगी भी उकेर लेती है, जैसी तस्वीर न तो कोई किताब खींच सकती है, न कोई विश्वविद्यालय। किन्तु उसी दिन चन्द्रावती देवी को रीता सिंह का स्मरण हो आया, जो रिश्ते में उसकी भतीजी थी और ब्रेन के उग्र-कैन्सर ने उसे चारपाई में बिछा दिया था। अब तो वह पूर्ण स्वस्थ थी और कैन्सर का नामोनिशान नहीं था। चन्द्रावती देवी ने भी वही डगर अपनाई जो संयोग से रीता सिंह के सामने खींची गयी थी-औषधि रूप

चिकित्सा विज्ञान संस्थान
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
MONDAY
Intitute of Medical Sciencces
B. H. U., Varanasi
कृपया
विकिरण चिकित्सा केन्द्र
(RADIOTHERAPY DEPARTMENT)
में जाँच/इलाज के लिये पीछे दर्शाये अनुसार उपस्थित हों
नाम चन्द्रावती देवी क्रमांक 1731/94
निदान (Diagnosis)

(सन्दर्भ-४२३)
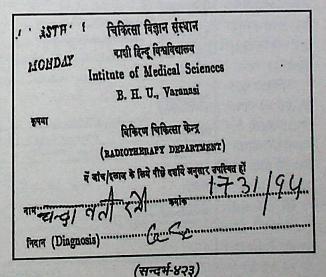
में डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि 'सर्वपिष्टी' का सेवन और बी. एच. यू. में समय-समय पर जाँच। निष्कर्ष भरोसेमन्द लगा और सर्वपिष्टी प्रारम्भ कर दी गई।

इससे पूर्व आई. एम. एस., बी. एच. यू., वाराणसी में रेडियोथेरॉपी की गई थी (क्रमांक १७३१/९४, *(सन्दर्भ-४२३)* और रेडियेशन के दुष्प्रभाव से निम्न उदर प्रदेश में एक बहुत बड़ी दर्दीली गाँठ बन गई थी जिसके लिए बी. एच. यू. से कुछ दवाएँ चलती थीं। डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने परामर्श दिया कि वे दवाएँ कुछ दिन चलायी जायँ और 'सर्वपिष्टी' शीघ्र ही प्रारम्भ कर दी जाय।

'सर्वपिष्टी' चलने लगी। धीरे-धीरे स्वास्थ्य की गिरावट रुकी और शरीर संभलने लगा। भूख, नींद, स्फूर्ति और शक्ति का विकास होने लगा और दर्द एवं पीड़ा भी कम होने लगी। कुछ दिनों के बाद वे सामान्य जीवन व्यतीत करने लगीं और गृहस्थी के कार्यों में भी हाथ बटाने लगीं।

दिनांक १२.१२.९५ की रिपोर्ट, "दवा से काफी फायदा है। गाँठें गल रही हैं। पेट का सूजन भी कम हुआ है। लेकिन पूरी तरह अच्छा नहीं हुआ है। दर्द वगैरह सब ठीक है। लेकिन पूरे शरीर में खुजली होती है।"

दिनांक ३०.०५.९६ को प्राप्त रिपोर्ट कहती है, "हमारी तबीयत बिल्कुल ठीक है। जो गाँठ मेरे पेट में थीं वह अब एक बेर के बराबर (आकार में) रह गई है।"

Dr. Saroj Gupta Dr. Y. N. Gupta
M. D. (Pathology & Bacteriology)
Erstwhile Professor & Head
Department of Pathology
Institute of Medical Sciences
B. H. U., Varanasi
☎ (O) 314204, (R) 311443

S. G. LAB
23, Shoping Comlex Jawahar
Nagar, Varanasi-221005

Patient's Name .... 40 y Age, Sex F Date 11.9.95
Referred by Dr. D. K. Asthana Reference No. 1197/95

FNAC Abd. lump. CYTOLOGY

Pathologist

Y. N. Gupta

Saroj Gupta
11.9.95

(सन्दर्भ-४२४)

श्रीमती चन्द्रावती के भतीजे श्री रमाशंकर सिंह ने दिनांक २४.०६.६७ को एक पत्र लिख कर बताया कि "...मेरी चाचीजी एकदम ठीक हैं। आपकी दवा से उनको बहुत फायदा हुआ। चाची जी की कैन्सर की बीमारी से इतनी पीड़ित थीं कि एलोपैथ के डॉक्टरों से जवाब मिल चुका था। लेकिन आपकी दवा से बिल्कुल ठीक हो गयी हैं। आपके डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इतनी बड़ी देन है कि मेरी चाची आज इतनी बड़ी भयानक बीमारी से बच गयी हैं..."। *(सन्दर्भ-४२४)*

अब सर्वपिष्टी अन्तराल दे-देकर चलायी जाने लगी। रोगिणी पूर्णतः स्वस्थ-सामान्य थी। बी. एच. यू. अस्पताल के कैन्सर चिकित्सकों ने भी देख-जाँचकर बता दिया था कि अब कैन्सर कहीं नहीं है-न तलपेट के क्षेत्र में है, न रीढ़ की अस्थियों में उसका कोई चिह्न है। अन्य रिपोर्ट भी बहुत ही उत्साहबर्द्धक थी। *(सन्दर्भ-४२५)* और आज तो श्रीमती चन्द्रावती इतनी उत्साहित हैं कि कैन्सर द्वारा लिखी गई मृत्यु जहाँ से पोंछी-मिटायी गयी है, वहाँ उन्हें अमरत्व के श्लोक झलकते दीखते हैं।

दिनांक ०६.०४.२००० को श्रीमती चन्द्रावती ने केन्द्र को पत्र लिखा, "डाक्टर साहब, हमारा तबीयत बहुत अच्छा है। आपका दवा खाने से हमको लगता है कि अब हम मरेंगे ही नहीं, हम तो अमर हो गये। आपका दवा में इतना गुण है कि मरा हुआ आदमी जिन्दा हो जाता है।.... हमको आप अमर कर दिये।"

ता: २५,१,९८,

डा. ओंकार प्रकाश

मेरि चाची जी एकदम ठिक हैं आपकी दवा से उनको बहुत फायदा हुआ, चाची जी कैन्सर की बिमारी से इतनी पिड़ित थी, कि एलोपैथ डा. से जवाब मिल चुका था, लेकिन आपकी दवा से बिल्कुल ठिक हो गयी हैं। आपकी डी. एस. रिसर्च सेन्टर की इतनी बड़ी देन है जो की मेरि चाची आज इतनी बड़ी भयानक बिमारी से बच गयी हैं।

इसके लिए आपकी सेन्टर का मैं सदैव आभारी रहुँगी

प्रकाश

श्री रमाँ शंकर सिंह
ग्रा - लुम्हउँ
पो० - [illegible]
जि० - [illegible]

(सन्दर्भ-४२५)

आज श्रीमती चन्द्रावती ने अपनी नयी जिन्दगी को इस अन्दाज से स्वीकार किया है कि उनका विजयोल्लास जीवन की अमरता का आभास पाने लगा है। कैन्सर पर विजय प्राप्त करके पुनर्जीवन प्राप्त करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसा ही अनुभव करता है और कुछ बोल देता है अपने-अपने अन्दाज से। कैन्सर की काली स्याही जहाँ 'मृत्यु' लिख देती है, उसे 'सर्वपिष्टी' जब पोंछ-मिटा देती है, तो पुनर्जन्म के रूप में उपलब्ध जिन्दगी के श्लोक अमृत से लिखे हुए ही झलकते हैं।

७८

स्तन कैंसर (तीव्र मेटास्टेसिस)
(CA. BREAST METASTASIS)

श्रीमती भारती कर्मकार, ४० वर्ष
द्वारा : श्री अरविन्द
नील गगन अपार्टमेन्ट
फ्लैट नं. ३०४, तीसरा तल्ला
बी. डी. २०१, कमल पार्क
कृष्णापुर, कलकत्ता-५६

रोग का इतिहास : शिक्षिका हैं श्रीमती बी. कर्मकार। २० अप्रैल, १९९५ को अचानक दाहिने स्तन में एक लम्प (लम्प) की अनुभूति हुई। शीघ्र ही चिकित्सक को दिखाया गया। उन्होंने जाँच कराने का परामर्श दिया। जाँच से कैंसर की जानकारी मिली (दिनांक १-५-९५)- 'इनफिल्ट्रेटिंग डक्टल कार्सिनोमा, ग्रेड-३'।

श्रीमती कर्मकार स्तब्ध भी हो गईं और दृढ़ होकर सतर्क भी हो गयीं। स्तब्ध इसलिए कि सुना और पढ़ा तो था कि ब्रेस्ट का ट्यूमर महीनों तक एक ही स्थान पर

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र
BHABHA ATOMIC RESEARCH CENTRE
आयुर्विज्ञान प्रभाग
MEDICAL DIVISION
अंशदायी स्वास्थ्य सेवा
CONTRIBUTORY HEALTH SERVICE

REPORT OF OPERATION

Family Name	First Name	Middle Name	Attending Surgeon	Room No.	Regn. No.
Mrs	Bharati		Dr BJS	Date 8/5/95	

Pre-operative Diagnosis: Ca (R) breast c Enlarged Lateral group of Axillary L.N.

Post-operative Diagnosis:

Surgeon: Dr BJS   Assistants: Dr Gandhi, Dr Rizwan

Findings (Including the condition of all organs examined) and Procedures (including incision ligatures sutures drainage, sponge, count and closure)

(सन्दर्भ-४२६)

TATA MEMORIAL HOSPITAL
(TATA MEMORIAL CENTRE)

Dear Dr. Shankar, June 5, 1995

This has reference to Mrs. Karmakar who has undergone modified radical mastectomy under your care at BARC. She has wound gaping with slough. Our radiotherapist says that she needs excision of sluff with secondary suturing following which healing would occur, then she will be taken up for radiotherapy and chemotherapy. Kindly do the needful.

With regards, Yours sincerely,

J. J. VYAS,
MS., FACS., SURGEON

(सन्दर्भ-४२७)

केन्द्रित रहता है और सावधानी पूर्वक उपचार करा लिया जाय, तो उससे स्थायी छुटकारा मिल जाता है, किन्तु यह लम्प तो विचित्र था जो घड़ी की सुई के साथ फैल रहा था। जो भी हो, सतर्क होकर सर्वोत्तम इलाज की व्यवस्था होनी चाहिए। सर्वोत्तम इलाज का अर्थ है समय पर, सही अस्पताल में और कुशल चिकित्सक द्वारा किया गया इलाज।

इलाज का सिलसिला

ऑपरेशन : भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र (मेडिकल डिवीजन), बंबई में डॉ. बी. जे. शंकर, डॉ. गाँधी और डॉ. रिजुवाँ ने सावधानीपूर्वक मेजर ऑपरेशन किया। उन्होंने तीव्र मेटास्टेसिस को प्रत्यक्ष देख लिया। *(सन्दर्भ-४२६)*

सर्जन डॉ. बी. जे. शंकर ने दिनांक २२-५-६५ को इस केस की जटिलता का हवाला देते हुए टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई के डॉ. व्यास से राय माँगी कि आगे क्या किया जाना चाहिए। जाँच-रिपोर्ट से ज्ञात हुआ था कि कैन्सर का ट्यूमर रक्त-नलिकाओं और लिम्फ में भी उतर चुका था और ऑपरेशन के बाद भी अभी किनारे का क्षेत्र ट्यूमर से मुक्त नहीं है। विचार करना था कि क्या रेडियोथेरापी दी जा सकती है। उधर किनारे के क्षेत्र में गलन की स्थिति बनने की संभावना थी।

रेडियोथेरापी अभी संभव नहीं थी : घावों ने बाँध तोड़ दिये थे

दिनांक ५ जून १६६५ को डॉ. जे. जे. व्यास ने डॉ. शंकर को लिखा कि उनके रेडियोथेरापिस्ट के विचार से फिर ऑपरेशन करके मरे हुए तन्तु-जाल और मवाद को साफ करने की जरूरत होगी, तभी घाव भरेगा और तभी उन्हें रेडियोथेरापी और किमोथेरापी की दवा दी जा सकती है। *(सन्दर्भ-४२७)*

Name of Patient : Smt Bharati Karmakar

- - - - - - - - - - - - Now after taking Sarbapisty and all other medicine, such as Cr, APAH and oil to apply in the catching zone in the breast operation-area. Patient is better in all respect. She has got enough energy to do all domestic work and moving long distance by bus & train. all the burning sensation has subsided - Facial apprcance previously was black complextion & now restored the original complextion

[signature]
7/3/96

(सन्दर्भ-४२८)

रेडियोथेरापी : टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई (केस नं. बी. जे. ६५४७) में १२-७-६५ को किमोथेरापी की एक साइकिल पूरी हुई और १४-७-६५ से १६-८-६५ तक कोबाल्ट थेरापी दी गई।

किमोथेरापी : रेडियेशन के बाद किमोथेरापी प्रारम्भ हुई। डॉ. व्यास ने किमोथेरापी की नौ साइकिल चलाने की राय दी थी।

नयी चिकित्सा की तलाश

अबतक किमोथेरापी के साइड एफेक्ट्स व जीवन की प्रतिरोध क्षमता ध्वस्त कर देने के दुष्परिणामों से केवल पश्चिमी जगत ही नहीं, भारत के सुशिक्षित-समझदार लोग भी परिचित हो चुके थे। एक बार तो शरीर में फैलती कैन्सर-कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए किमोथेरापी की सहायता अनिवार्य थी। किन्तु बाद में टूटी हुई प्रतिरक्षा में किमोथेरापी कराना भी संभव नहीं होता और साइड एफेक्ट्स नया संकट खड़ा करते हैं। फिर कैन्सर बढ़ता-फैलता है, तो रोकना संभव ही नहीं हो पाता। तभी डी. एस. रिसर्च सेण्टर की पोषक ऊर्जा से निर्मित औषधियों के विषय में जानकारी मिली।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २७-११-६५

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई तब तक किमोथेरापी की पाँच साइकिल पूरी हो चुकी थी।

प्रगति-रिपोर्ट : 'सर्वपिष्टी' शुरू करने के दो सप्ताह बाद ही यह स्पष्ट होने लगा कि किमोथेरापी की प्रत्येक साइकिल के साथ स्वास्थ्य, शक्ति और प्रतिरोध-क्षमता का दुर्ग जिस गति से ढहता था, उस पर नियंत्रण आ रहा है और ताजगी बनी रहती है।

दिनांक ७-३-६६ की रिपोर्ट : ''सर्वपिष्टी' तथा पोषक ऊर्जा वर्ग की अन्य औषधियों के प्रभाव से स्वास्थ्य में सार्वत्रिक विकास हुआ है। अब तो रोगिणी शक्ति और स्फूर्ति से भरी हुई हैं, सभी घरेलू दायित्वों का निर्वाह क्षमता के साथ कर रही हैं, बसों तथा ट्रेनों से लम्बी यात्राएँ बिना किसी परेशानी के कर लेती हैं। ऑपरेशन के स्थान पर यदा-कदा जो जलन हुआ करती थी, वह भी अब समाप्त हो चुकी है। चेहरे पर पहले जो कालापन आ गया था, इस औषधि के सेवन से समाप्त हो चुका है और चेहरे पर स्वस्थ आभा स्थापित हो गई है। आहार और पाचन पूर्णतः सामान्य है।'' *(सन्दर्भ-४२८)*

Smt Bharati Karmakar
10-2-97
As per direction of Dr. from Tata memorial Hospit to meet him I went to Bombay for check-up. There physically and all report of ECG, U.S.G, X-Ray shown by him found nothing wrong with the patient. So. Dr. has given next check-up date of after 6 months i.e September 1997.

(सन्दर्भ-४२६)

प्रगति रिपोर्ट : दिनांक १०-२-६७

"टाटा मेमोरियल अस्पताल, बंबई ने चेकअप के लिए फरवरी में बुलाया था। हम गये थे। इ. सी. जी., अल्ट्रासोनोग्राफी, एक्स-रे तथा अन्य जाँच रिपोर्टों की गहन समीक्षा के बाद चिकित्सकों ने कहा कि कोई दोष नहीं है। चेकअप के लिए छह महीने बाद फिर बुलाया गया है।" *(सन्दर्भ-४२६)*

दिनांक ८-८-६७ श्री कर्मकार (पति) द्वारा प्रस्तुत

"६-८-६७ को हम रोगिणी को चेकअप के लिए बंबई ले गये थे। डॉ. व्यास ने जाँच करके बताया कि रोगिणी को कोई समस्या नहीं है। उन्होंने छः माह बाद फरवरी में चेकअप के लिए आने को कहा है।

रोगिणी का शरीर मोटा होता जा रहा है। डाक्टर ने मांसाहार बंद करके शाकाहार करने की राय दी। श्रीमती कर्मकार तो अध्यापिका हैं। वे स्कूल नियमित जा रही हैं और घर के सारे काम-काज कर रही हैं। भोजन भी स्वयं पकाती हैं। इस प्रकार वे बिल्कुल ठीक हैं।" *(सन्दर्भ-४३०)*

Name of Patient : Smt Bharati Karmakar.
Patient has been brought to Tata memorial hospita, Bombay on 6-8-97 for the periodic check-up, There Dr. Vyas's opinion is There is as such no problem regarding cancer. Patient found ok, after physical check-up and he advised to come after 6 months i.e Feb'98 for further check-up.
- - - - - - - - - - - - -

30/8/97
A. KARMAKAR
husband of the Patient

(सन्दर्भ-४३०)

७६

अस्थियों तक फैला स्तन कैंसर
(CA. BRESAT)
(Bone Metastatic)

श्रीमती गुरुशरण कौर सोढ़ी, ४५ वर्ष
श्री बी. एस. सोढ़ी
१५/२ ए, राम मोहन दत्ता रोड
कलकत्ता-७०००२०

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : कलकत्ता कमाण्ड हॉस्पीटल डिस्चार्ज स्लिप-No. A 38E/C1 99, दिनांक ५.२.६०)। *(सन्दर्भ-४३१)*

अस्पतालों और चिकित्सकों द्वारा जाँच के उपरान्त तैयार की गई रिपोर्ट का महत्व तो है, किन्तु खतरनाक रोगों के विषय में रोगियों तथा उनके अभिभावकों की अभिव्यक्तियों को अधिक महत्व दिया जाता है। कैन्सर भी उनमें से एक है। अच्छा रहे श्रीमती गुरुशरण कौर सोढ़ी के विषय में भी उनके पति श्री बी. एस. सोढ़ी की जबानी ही सुना जाय। दि. १६-३-६६ को उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को भेजी गई एक विस्तृत रिपोर्ट में लिखा–

"मेरी स्त्री श्रीमती गुरुशरण कौर सोढ़ी के दाहिने वक्ष में सन् १६६० में कैन्सर हुआ था। कमाण्ड हॉस्पीटल, कलकत्ता में ऑपरेशन द्वारा पूरा दाहिना वक्ष निकाल दिया

Smt. Guru Sharan Kaur Sodhi
DISCHARGE SLIP
H&B No A/38E/C1/90 Ward T.P.S Fam
W/E.E.Cf.

Name	Rank	Service No	Service
B.S. SODHI.	Retd. SUB/MAJ.	JC 69409.	Retd.

COUNTERSIGNED A/C EME.

Date & time of Adm.	Date & time of Discharge
15/01/90/1100 hrs.	05-02-90/1800 hrs.

Dr. ... National Code in Command Hospital (EC) 05/2/90 611 (a)

Diagnosis CARCINOMA BREAST (RT) (RADICAL MASTECTOMY)

(सन्दर्भ-४३१)

SOUTHERN X-RAY CLINIC
88/R, HAZRA ROAD, CALCUTTA - 700 026

RADIOLOGIST
Dr. AROON K. CHATTERJEE
M.B.B.S., D.M.R.D., M.D.

Working Hours:
8 A.M. - 12 Noon
4 P.M. - 8 P.M.
(Sunday by appointment)
Phone: 478-8838

X-Ray Examination of the Chest
of
Mrs. G. K. Sodhi. Date 28. 11. 95

Ref. By : Dr. S. C. De, MS.

Skiagram : P.A.V. - No evidence of any parenchymal lesion is seen in the lung-fields.

Both domes of the diaphragm present normal and smooth contours. The angles are clear.

23.11.95
Radiologist.

(सन्दर्भ-४३२)

गया। मिलिटरी अस्पताल में कैन्सर के इलाज की व्यवस्था नहीं होने से हमें चित्तरंजन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता आगे के इलाज के लिए भेज दिया गया। वहाँ मेरी पत्नी को टोमेक्सोफैन नामक दवा दी जाती रही।''

किमोथेरेपिक ड्रग्स के कुप्रभाव से कैन्सर जंगल की आग की तरह फैलता है, कालान्तर में ठीक कुछ वैसा ही इस रोगिणी के साथ भी घटित हुआ। जैसा कि सोढ़ी जी आगे लिखते हैं कि १९९४ आते-आते रोग हड्डियों में फैल गया।

''सन् १९९४ के अक्टूबर महीने में श्रीमती कौर की पीठ की हड्डी में बहुत दर्द शुरू हो गया। कैन्सर हॉस्पीटल ठाकुरपुकुर, कलकत्ता में बोन स्कैनिंग हुई, तो पता चला कि कैन्सर ने पीठ की हड्डी को पकड़ लिया है। यह स्कैन ३१-१०-९४ को हुआ था।''

इसी बिन्दु पर उनको इस केन्द्र के बारे में कहीं से पता चला और किस प्रकार 'सर्वपिष्टी' की सहायता से उनकी पत्नी ने कैन्सर को पछाड़ा, यह एक इतिहास है। इस विजय-अभियान के बारे में श्री सोढ़ी जी पत्र में आगे लिखते हैं-''सौभाग्यवश इसी समय मुझे 'माया' पत्रिका द्वारा डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली। मेरे एक मित्र ने सेण्टर के वाराणसी केन्द्र से सम्पर्क किया, तो पता चला कि केन्द्र की एक यूनिट कलकत्ता में भी है।''

सर्वपिष्टी प्रारम्भ- २२-११-९४

दि. २२-११-९४ से डी. एस. रिसर्च सेण्टर, कलकत्ता की दवा शुरू कर दी गयी। चार सप्ताह के बाद ही राहत महसूस हुई। यह दवा आज भी चलायी जा रही है। अब

[illegible] से D.S. Research Centre
Gwalior में इलाज शुरू किया। चार सप्ताह के बाद ही काफी
राहत महसूस हुई। आज भी मेरी स्त्री का इलाज [illegible] से
रहा है। Medicine [illegible] दी [illegible] है।
भगवान की कृपा तथा आपकी औषधि के चमत्कारिक
असर के कारण आज मेरी स्त्री पूर्ण रूप से ठीक है और घर के
काम काज नॉर्मल कर रही है। मेरी भगवान से प्रार्थना है
कि वह इस औषधि में और भी चमत्कारिक गुण भर दें ताकि
दुखी लोगों के दुख दूर हो सकें। 28-11-95 को X-ray कराया था
Report बिल्कुल ठीक है।

B.S. Sodhi
15/2A. Ram Mohan Dutta Rd.
Calcutta-700020 (WB)
19.3.96.

भवदीय [illegible]
B.S. Sodhi

(सन्दर्भ-४३३)

खूराकें एक-दिन का अन्तर देकर दी जा रही हैं। अपने उक्त पत्र के अंत में उन्होंने लिखा है–

"भगवान की कृपा और इस औषधि के चमत्कारिक असर के कारण आज मेरी स्त्री पूर्ण रूप से ठीक हैं और घर के कामकाज नॉर्मल (ढंग से) कर रही हैं। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि वह इस औषधि में चमत्कारिक गुण भर दें, ताकि दुःखी लोगों के दुःख दूर हो सकें। २८.११.९५ को एक्स-रे कराया गया था। रिपोर्ट बिल्कुल ठीक है।" *(सन्दर्भ-४३२ और सन्दर्भ-४३३)*

Patient, Gursharan Kaur Sodhi

श्रीमान डाक्टर साहिब

मेरी पत्नी का कैंसर का इलाज
गत 6 महीने से आपके यहां चल रहा है। अभी
वह काफी ठीक है। अभी पिछले सप्ताह 6.5.95
को Chittaranjan Cancer Hospital में Check-up
के लिये गई थी वहां डाक्टर ने Check-up के बाद
कहा कि वह ठीक है।

Yours Sincerely
B.S. Sodhi
(Husband)

09-5.95
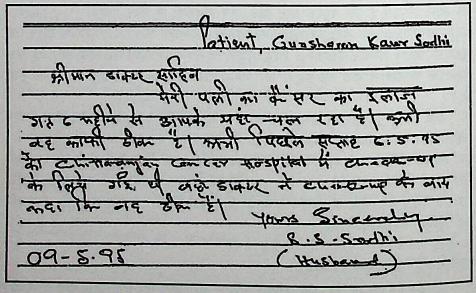
(सन्दर्भ-४३४)

इसके पूर्व श्रीमती गुरुशरण कौर की ६.५.६५ को चितरंजन कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता में भी जाँच कराई गई थी और उन्होंने भी रोगिणी को पूर्ण रूप से ठीक पाया। (सोढ़ी जी का ६.५.६५ का पत्र)।
(सन्दर्भ-४३४)

(सन्दर्भ-४३५)

दिनांक ०६.१०.६७ को श्री बी. एस. सोढ़ी ने केन्द्र को पत्र लिखा- "आपका पत्र मिला। आप हमारा ख्याल रखते हैं, इसके लिए धन्यवाद। गुरुशरण कौर सोढ़ी अब बिल्कुल ठीक है। स्वास्थ्य ठीक है। अब कैंसर की दवा सप्ताह में एक बार खानी पड़ती है।"
(सन्दर्भ- ४३५) ❑

लन्दन के गो-मांस व्यवसायियों ने गायों का वजन बढ़ाने और उन्हें स्वस्थ बनाने के लिए ऐसा प्रोटीन-समृद्ध आहार दिया, जो गायों की प्रकृति से मेल नहीं खाता था। गायें खूब मांसल और व्यवसायियों के लिए लाभदायक तो बन गयीं, किन्तु उस आहार से शाकाहारी गौओं की प्रकृति छिन्न-भिन्न हो गयी। वे पागल हो गयीं और उनका मांस तथा दूध जहरीला बन गया। फिर ऐसी लाखों गायों को काटकर नष्ट करना जरूरी हो गया।

बाजारों में आज मनुष्य के लिए पौष्टिक-सामग्रियों के पैकेटों के अम्बार लग गये हैं। संसार के समझदार लोगों का माथा ठनक गया है कि अगर इन्हें तैयार करने में मानव की प्रकृति का अनुशासन न मानकर केवल पदार्थगत स्वास्थ्य-मानकों का ही ध्यान रखा गया है, तो कहीं धीरे-धीरे ये मानव प्रकृति को रौंद न रहे हों। उनकी राय है कि वैज्ञानिकों को इधर ध्यान देना चाहिए, ताकि मानव के स्वास्थ्य का मोर्चा भी औषधीय मोर्चे की तरह व्यावसायिकता का शिकार न बन जाय।

ड्रगौषधियों द्वारा प्राप्त कृत्रिम निद्रा वस्तुतः चिरनिद्रा (मृत्यु) के मार्ग का ही एक पड़ाव है। यह पड़ाव ड्रगों की सेवन की गयी मात्रा द्वारा तय होता है। छोटी मात्रा कृत्रिम निद्रा तक ले जाती है, उससे बड़ी मात्रा घोर निद्रा तक, और उससे बड़ी मात्रा चिरनिद्रा तक।

स्वाभाविक निद्रा जहाँ जीवन का स्वभाव है, वहीं कृत्रिम निद्रा टुकड़ों में प्राप्त चिरनिद्रा है।

८०

स्तन (बायाँ) का कैन्सर-३बी

मेटास्टेसिस लीवर

CA. BREAST
(LIVER METASTASIS)

श्रीमती पुष्पा गगनेजा, ५५ वर्ष
द्वारा : श्री केवल कृष्ण गगनेजा
लक्ष्मी मेडिकल स्टोर, बाजौरिया रोड
जिला. सहारनपुर।

रोगी और उनके अभिभावक संयम और सहनशीलता के अनुशासन में रहकर चिकित्सा को श्रद्धा से ही देखते हैं। उन्हें रोगी की ओर देखने का अवकाश कम मिलता है।

कम रोगी हैं, जिनकी समझ श्रीमती गगनेजा की भाँति सवाल खड़े कर देती है अथवा बगावत कर बैठती है। वह समझ, जो कहती है कि एक बार ठहरकर सोच-समझ तो लो।

All India Institute of Medical Sciences, New Delhi—110029
DISCHARGE SUMMARY

C. R. No. 922803 Deptt. SURGERY Unit IV D. O. Adm. 10/4/95 D. O. Op. 19/4/95 D. O. D/c 28/4/95

Name Pushpa Gagneja Age 53 Sex F Admitted from OPD/Casualty/Clinic No.

DIAGNOSIS
Ca. (LT) Breast

History and Physical Findings
C/o lump (LT) breast since 20 days. Excision biopsy done in a private hospital. Histopath. show infiltrating duct carcinoma. Pt. post-menopaused - 10 yrs. 2 children. LCB. 22 yrs back. [illegible]
P/A No organomegaly. Local examination shows [illegible]. Nipple present. Residual lump of 7 x 6 cm superolateral to NAC in (LT) breast. There is no fixation on chest wall but fixation to pectoralis major. (LT) axilla shows 4 x 2 cm LN [illegible]. No SCLN. Stage - T4 N2 [illegible] involvement (III B)

Hospital Course including Treatment Given and Operative Finding
Radical mastectomy done on 19/4/95 under G.A.

Signature of Junior Resident [illegible]   Signature of Senior Resident

(सन्दर्भ-४३६)

☎: 64856-
54408;

DHANVANTRI
Diagnostic Research Centre (P) Ltd.
"Sumer Bhawan, Sachcha Park, Meerut-250 001

Name of Patient	Mrs. Pushpa	Age/Sex.	55 Y F	Reg' No.	CT. 13215
Referred Courtesy	DR. V.B. BHATNAGAR.(MS)			Date.	1/5/96

CT SCAN REPORT

Liver - is enlarged.Oval low attenuating (CT value approx.39) nonenhancing lesion seen in right upper lobe region
A similar smaller lesion seen in right lobe inferior portion.
Two small similar coalescing lesion also seen in left lobe region.Biliary channels appear normal.Region of porta hepatis is clear.

IMPRESSION: Findings are suggestive of hepatomegaly with low attenuating lesion in right a lobe as mentioned compatable with metastasis.Suggest FNAC for further evaluatio

NOT FOR MEDICO LEGAL PURPOSE (DR. [illegible] SATI RADIOLOGIST) M.D

Facilities Available : ■ WHOLE BODY CT SCAN ■ ULTRASOUND ■ X-RAYS
■ MAMMOGRAPHY ■ PANORAMIC-X-RAYS EMERGENCY-24 Hours.
● GENERATOR FACILITY AVAILABLE ●

(सन्दर्भ-४३७)

कैन्सर-रोगियों के साथ यह प्रायः देखा जाता है कि चिकित्सा के साथ और अधिक चिकित्सा की जरूरतें बढ़ती जाती हैं, क्योंकि रोग भी बढ़ता जाता है। बढ़ते जाना तो कैन्सर का परिचय ही बन गया है।

श्रीमती गगनेजा ने बगावत कर दी; कैन्सर को नहीं रोका जा सके, उसके दुष्परिणाम को नहीं रोका जा सके, चिकित्सा को रोककर विचार तो किया जा सकता है।

रोग की कथा इस प्रकार चलती है : १६ मार्च १६६५ को बाएँ स्तन में एक गिल्टी होने की जानकारी मिली। बहुत पढ़ा और सुना था कि अगर ब्रेस्ट कैन्सर को पहले चरण में ही उपाय करके समाप्त कर दिया जाय तो कैन्सर हार जाता है और बेफिक्री आ जाती है। फिर देर क्यों? सहारनपुर के ही प्राइवेट अस्पताल में चार ही दिन बाद ऑपरेशन कराकर गिल्टी को निकलवा दिया गया। मन में आश्वस्तता आई कि पुख्ता इन्तजाम हो गया।

किन्तु यह बेफिक्री महीना भी नहीं पूरा कर सकी। कष्ट बढ़े तो ए. आई. आई. एम. एस. नयी दिल्ली पहुँचे। जाँच से पता चला कि मेजर ऑपरेशन करके पूरे ब्रेस्ट के साथ एक्सीलरी ग्लैण्ड को भी साफ करना पड़ेगा। घबराहट हुई, किन्तु मन ने तर्क खड़ा किया कि संभव है चारों ओर कैन्सर रहा हो, जिसे सहारनुपर के सर्जन महोदय पहचान नहीं सके हों। रक्तादि चढ़ाकर टूटे स्वास्थ्य को चिकित्सा के काबिल बनाया गया और दिनांक १६-४-६५ को ऑपरेशन कर दिया गया।*(सन्दर्भ-४३६)*

Diwan Chand Satya Pal Aggarwal
Imaging Research Centre

10-B, Kasturba Gandhi Marg, New Delhi-110001 Phones 3329887, 3322497, 3329336, 3713004 Fax 3713308

Ms. Pushpa Gagneja - 55 Yrs/F 06/05/95

CONCLUSION:

Status post mastectomy shows atleast two hypodense lesions in segments 8, 2/3 of the Liver. These may represent metastatic deposits. There is, however, no mediastinal or retroperitoneal lymph adenopathy. The lung parenchyma and bones under view do not show any obvious deposits.

(DR. RUPAK DUTTA)

(सन्दर्भ-४३८)

एक धक्का-सा लगा : श्रीमती गगनेजा को २८-४-९५ को ए. आई. आई. एम. एम. से डिस्चार्ज किया गया। उस समय जानकारी मिली कि कैन्सर तो ३-बी स्टेज में पहुँच चुका है। अभी तो मेजर ऑपरेशन तथा अन्धाधुन्ध चलाई जानेवाली एण्टीबायोटिक दवाओं के प्रभाव से ही उनका स्वास्थ्य हिल रहा था। ३-बी स्टेज के कैन्सर की जानकारी ने उन्हें धक्का देकर हिला दिया। किन्तु अवकाश कहाँ? अब तो किमोथेरापी की तैयारी करनी थी।

Respected Doctor Saharanpur
12-9-96

इस बार जो liver का ultrasound करवाया था उसकी Report वैसे ही है जैसे कि पहले आती थी, डाक्टर कहते हैं कि ultrasound में पानी के कण हैं जो कि खत्म नहीं होंगे और यह काफी अधिकतर लोगों में पाये जाते हैं वैसे तो उन्हें खूब भूख लगती है तबीयत भी पहले से कुछ ठीक है पर थोड़ी कमजोरी महसूस होती है अब उन्होंने कीमो-थैरेपी बंद कर दी है क्योंकि इससे उन्हें बहुत परेशानी होती है पर अब तो वह सिर्फ आप ही की दवाई नियम से खा रही हैं।

पुष्पा गगनेजा
w/o श्री केवल कृष्ण गगनेजा

(सन्दर्भ-४३९)

अगले धक्के : विचार आया कि क्यों नहीं जाँच को कुछ और भी व्यापक बना लिया जाय। दिनांक १-५-९५ को मेरठ के "धन्वन्तरी डायग्नोस्टिक सेण्टर" (रजिस्ट्रेशन नं. सी. टी. १३२१५) से और ६-५-९५ को दिल्ली पहुँचकर "दीवान चन्द सत्यपाल अग्रवाल इमेजिंग सेण्टर" से सी. टी. स्कैन कराया गया। दोनों ही रिपोर्ट्स में सन्देह व्यक्त किया गया था कि लीवर तक मेटास्टेसिस पहुँच चुकी है। *(सन्दर्भ-४३७ और सन्दर्भ-४३८)*

SATYA X-RAY & ULTRASOUND CLINIC

Clock Tower (Bhagat Singh Marg) Near Taj Hotel, SAHARANPUR-247 001
PHONE : (0132) 745147

February 12. 1997

IMPRESSION:- THE U/S SCAN FAVOURS -

FATTY CHANGES LIVER
WITH ? SMALL HEPATIC CYSTS

DR. A. K. GOEL
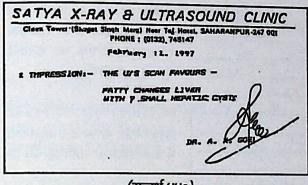
(सन्दर्भ-४४०)

श्रीमती गगनेजा ने विपत्ति को उसके सही रूप में स्वीकार कर लिया। परिस्थिति जो भी हो, उपाय और मुकाबला तो करना ही पड़ता है। चिकित्सकों ने बताया कि इस परिस्थिति के मुकाबल में तो किमोथेरापी ही खड़ी हो सकती है।

'सर्वपिष्टी' प्राप्त करने के समय श्रीमती गगनेजा ने आगे की कहानी बतायी, ''मेरठ में डॉ. भटनागर से किमोथेरापी शुरू हुई। इसके बाद जब फिर से टेस्ट हुए तो लीवर में (तीन के स्थान पर) चार स्पाट आ गये। तब दिसम्बर १९९५ में रेडियोथेरापी (मेडिकल कॉलेज, मेरठ, नं. आर. टी. २३५/९५, दिनांक १२-१२-९५ से १६-१-९६ तक) शुरू हुई, जो २५ दिन चलाकर जनवरी १९९६ में कम्प्लीट हुई। अब फिर से १६ जून, १९९६ से दुबारा किमोथेरापी शुरू हो गयी है, जिसमें से दो इन्जेक्शन लग चुके हैं।''

श्रीमती गगनेजा इलाज के उस रास्ते से हटना चाहती थीं, किन्तु कोई नया आधार ढूँढ़कर उस पर खड़ी हों, इससे पहले उसे आजमाकर देख लेना चाहती थीं।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १२-७-९६ से

प्रगति-विवरण

दिनांक १२-९-९६ : ''इस बार जो लीवर का अल्ट्रा साउण्ड करवाया था, उसकी रिपोर्ट वैसी ही थी, जैसी पहले आयी थी। (मन में आया कि शायद कैन्सर का बढ़ाव रुक गया है।) वैसे भूख तो उन्हें ठीक लगती है। अब उन्होंने किमोथेरापी बन्द कर दी है। बस, आप ही की दवाई विश्वास से खा रही हैं।'' *(सन्दर्भ-४३९)*

२२-१०-९६- ''हम आपसे पिछले ४ महीनों से श्रीमती पी. गगनेजा के लिए दवाई मँगवा रहे हैं। उनकी तबीयत ठीक चल रही है। सिर्फ कमजोरी-सी महसूस होती है।''

३-१२-९६- ''वैसे तो अब उनकी तबीयत पहले से कुछ ठीक है। रिपोर्ट भी ठीक आयी है।''

११-१-९७- ''अब उनकी तबीयत ठीक चल रही है। अल्ट्रासाउण्ड तो अब अगले महीने में ही होगा। उसकी रिपोर्ट तो हम आपको भेजेंगे ही।''

२३-२-९७- ''इस बार की अल्ट्रासाउण्ड तथा ब्लड रिपोर्ट ठीक आयी हैं और उनकी
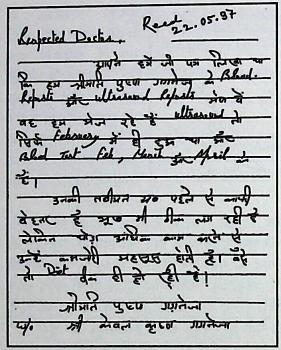
तबीयत भी ठीक है। (सत्या एक्स रे एण्ड अल्ट्रासाउण्ड क्लीनिक, सहारनपुर, दिनांक १२ फरवरी, १९९७)। *(सन्दर्भ-४४०)*

व्याख्या : दिनांक, १२-२-९७ की उक्त रिपोर्ट से स्पष्ट है कि लीवर में अब 'लेजन्स' नहीं रह गये हैं।

२३-४-९७ : "अब उनकी तबीयत बिल्कुल ठीक है और भूख भी ठीक लगती है। इस बार जो भी ब्लड टेस्ट हुए हैं, उनकी रिपोर्ट ठीक आई है। (बी. एस. पी. पी. सेरम अल्फा, फास्फेट, एस. जी. पी. टी, एच बी टेस्ट- त्यागी पैथोलाजी सेण्टर सहारनपुर- १८-४-९७)

Recd 22.05.97

Respected Doctor,

आपने हमें जो पत्र लिखा था कि हम श्रीमति पुष्पा गगनेजा की Blood Reports और ultrasound reports भेज दें वह हम भेज रहे हैं। ultrasound तो सिर्फ February में ही हुआ था और Blood Test Feb, March और April के हैं।

उनकी तबीयत अब पहले से काफी बेहतर है भूख भी ठीक लग रही है लेकिन थोड़ा अधिक काम करने से उन्हें कमजोरी महसूस होती है। वैसे तो Diet ठीक ही ले रही हैं।

श्रीमति पुष्पा गगनेजा
W/o श्री केवल कृष्ण गगनेजा

(सन्दर्भ-४४१)

२२-५-९७ : "श्रीमती पी. देवी की ब्लड-रिपोर्ट, अल्ट्रासाउण्ड रिपोर्ट भेज रहे हैं। अल्ट्रासाउण्ड तो फरवरी १९९७ में हुआ था। तबीयत अब पहले से काफी बेहतर है। भूख भी ठीक लग रही है लेकिन अधिक काम करने पर कमजोरी महसूस होती है, वैसे डाइट ठीक लेती हैं। *(सन्दर्भ-४४१)*

Received 27.10.97

D.S. Research Centre

Respected Doctor,

हम जो आपसे श्रीमति पुष्पा गगनेजा के लिए जो दवाई मंगवा रहे हैं वे कृपया इस बार भी भेज दीजिएगा।

उनकी तबीयत अब ठीक चल रही है

श्रीमति पुष्पा गगनेजा
W/o श्री केवल कृष्ण गगनेजा
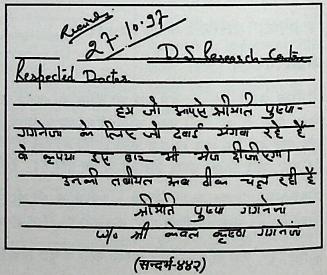
(सन्दर्भ-४४२)

१७-७-९७ "उनकी तबीयत अब बिल्कुल ठीक है।"

२७.१०.९७ को श्रीमती पुष्पा गगनेजा ने केन्द्र को पत्र लिखकर सूचित किया कि मेरी तबीयत अब ठीक चल रही है। *(सन्दर्भ-४४२)* ❑

८१

स्तन (बायाँ) कैन्सर
मेटास्टेसिस, अस्थियों में फैली हुई
(CA. BREAST (Lt.)
BONE METASTASIS

श्रीमती लतीफा आमीर, ५० वर्ष,
द्वारा : मुहम्मद आमीर सोसायन
४२/डी, हाटखोला रोड
ढाका (बंगला देश)

मेटास्टेसिस द्वारा अस्थियों में उतरा हुआ कैन्सर विध्वंसक होता है। यह बड़ी तेजी से अस्थियों में फैलता और उन्हें जर्जर करता जाता है। श्रीमती आमीर की चिकित्सा कैन्सर की इस विस्फोटक स्थिति पर अंकुश की दास्तान है।

जाँच एवं चिकित्सा : दिनांक २-११-९१ को चिकित्सकों ने बाएँ स्तन में कैन्सर होने का अनुमान लगाया। दिनांक २३-११-९१ को ऑपरेशन द्वारा स्तन तथा दो लिम्फनोड्स

HISTOPATHOLOGY REPORT

Name Latifa Amir, Age 50 Sex Female
Sent by Brig. M. Kabir, MBBS. FRCS(I) SP No. S-48/91 Date 23/11/91
Material Breast tissue & 2 lymph nodes Diagnosis Ca-Breast
Brief History Not given

Diagnosis — Scirrhous Carcinoma, Breast with metastasis into the axillary lymph node

(Dr. A. B. Md. Abdus Sattar)
M. B. B. S. (Dac.), M. Phil. Path.
Assoc. Professor of Pathology & Microbiology
Institute of Diseases of the Chest & Hospital, Dacca-12.

Date 26/11/1991

(सन्दर्भ-४४३)

DR. JAHANGIR HOSSAIN BHUIYAN
MBBS (DHAKA), D M R T (D.U) TTRT (CHINA)
Oncologist

Assistant Professor
RADIOTHERAPY & CANCER DEPARTMENT
KHULNA MEDICAL COLLEGE HOSPITAL KHULNA

Mrs. Latifa Amin, 50yr Date: 05 JUL 1997

C/C Mild cough c̄ scanty
Otherwise no complain

O/E BP— 180/100 mmHg.
Anaem ⊖
Neck Node — NAD.
Axilly L. Node — NAD.
Lt Breast — NAD.
Rt Breast — NAD.
Lum — NAD.

4 CA Lt Breast c̄ Met
Last irradiated on 1992 in DMCH · Feb/92
Pt got 6 cycle (CMF) Chemotherapy Completed on — 5.11.92
Suggested by Prof. M.N. Huda.
Simple mastectomy c̄ axillary clearance on Dec/92 in
IPGMR by Prof. C.H. Kabir.
Pt in FU Last FU — Dec/96.
Clinically — NAD.

(सन्दर्भ-४४४)

को निकाल दिया गया। इन्स्टीट्यूट ऑफ न्युक्लियर मेडिसिन (ढाका, बंगलादेश) से कैन्सर का पता चला, जो मेटास्टेटिक बनकर एक्सिला के क्षेत्र को प्रभावित कर चुका था। (एस. पी. नं. एस-४८/६१, दिनांक २३-११-६१/२६-११-६१)। *(सन्दर्भ-४४३)*

GOVERNMENT OF INDIA
REGIONAL RADIATION MEDICINE CENTRE
VARIABLE ENERGY CYCLOTRON CENTRE

Dept.......... Date 30/6/93

Name of the patient LATIFA AMIN
Regn. No. RRMC/93/2045 Bed No.
Organ imaged BONE
Date of Scanning 28/6/93

Report : Radionuclide Scanning of Bone with TC-99M MDP.

Shows areas of abnormally increased concentration of Radionuclide over :-
1) Medial end of right clavicle .
2) L-2 vertebra
3) A small suspicious focus over the sacrum

Both kidneys normally visualised.

Comments: ?? Multiple skeletal secondaries from Carcinoma Breast.

Medical Officer
RRMC

CANCER CENTRE & WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD THAKURPUKUR CALCUTTA

(सन्दर्भ-४४५)

Tele : 62902

NUCLEAR MEDICINE CENTRE

MEDICAL COLLEGE HOSPITAL CAMPUS
G.P.O Box—12
KHULNA 9000, BANGLADESH.

Regd No : 286/07 Date : 14.7.97

Name Mrs. Latifa Amir Age 50 yrs Sex F

Refd. By

USC of Whole Abdomen

Findings of Ultrasonogram :

Liver : Normal in size and uniform in echotexture.

Gall Bladder : Normal in size and appearance. No Stone Shadow or debris seen in the G.B.

Biliary Tree : Not dilated.

Pancreas : Normal in size and appearance.

Spleen : Normal in size and appearance.

Kidneys : Both the Kidneys are normal in size with well defined cortex and medulla, no pelvi-calyceal dilatation is seen.

Uterus : Normal in size, anteverted in position. No focal lesion is seen.

Both tubo-ovarian regions appear to be normal.

U.Bladder : Well filled and well outlines.

Normal Study.

Signature

(सन्दर्भ-४४६)

२०-१-६२ से प्रारम्भ करके २० बार रेडियेशन दिया गया और फिर २६-४-६२ से शुरू करके किमोथेरापी छह साइकिल दी गयी, जो ५-११-६२ को पूरी हुई। प्रो. सी. एच. कबीर ने दिसंबर १६६२ में पुनः ऑपरेशन द्वारा स्तन और एक्सिलरी की सफाई की। (खुलना मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल के विभाग की रिपोर्ट, दिनांक ६-७-६७)। *(सन्दर्भ-४४४)*

मात्र छह महीने ही बीते कि रोगिणी के कष्ट बढ़े और कमजोरी अनुभव होने लगी। कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, कलकत्ता में बोन स्कैन से पता चला कि मेटास्टेसिस अस्थियों में पहुँच गई है और लीवर में भी एक लेजन होने की संभावना प्रगट हुई (रजिस्ट्रेशन नं. आर. आर. एम. सी./ ६३/२०४५, दिनांक २८-६-६३/३०-६-६३)। *(सन्दर्भ-४४५)*।

आवश्यक हो गया कि किमोथेरापी का एक विकल्प चाहिए, जो कैन्सर के तेजी से बढ़ते कदमों को रोके। इसी खोज-तफ्तीश के दौरान डी. एस. रिसर्च सेण्टर की कलकत्ता इकाई के विषय में जानकारी मिली, और 'सर्वपिष्टी' शुरू करने का निर्णय लिया गया।

গরীব নেওয়াজ ক্লিনিক ডায়াগনস্টিক লিঃ
Garib Newaz Clinic Diagnostic Ltd.
(Fully Computensed Diagnostic Centre & General Hospital Complex)
KDA AVENUE, KHULNA. PHONE : PABX-20081-3

X-RAY REPORT

No. R-25 Date 27-7-97
Patient's Name Mrs. Latifa Amir Age 50 yrs Sex F
Referred by Prof./Dr. Jahangir Hossain Bhuiyan - DMCH
Part of X-ray 4/S region B/V.

FINDING

Disc spaces are intact. Osteophyte formation from L3 to L5. Both SI joint show osteoarthritic changes.

(सन्दर्भ-४४७)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ६-८-६३।

प्रगति-विवरण : (प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर)

७-३-६४ "दर्द और जलन नहीं है। भूख सामान्य, पाचन सामान्य, पाखाना-पेशाब सामान्य है।"

व्याख्या : शरीर के किसी नये क्षेत्र में किसी किस्म की परेशानी नहीं उभरी थी। ये लक्षण इस बात का पक्का सबूत देते थे कि कैन्सर के फैलाव पर नियंत्रण लग गया है। कमजोरी का नहीं आना भी यही सूचित करता था। पाचन का व्यवस्थित रहना सूचित करता था कि लीवर स्वस्थ है।

१६-१-६५ : "अन्य कोई शारीरिक परेशानी नहीं है, सिवा इसके कि बाल झड़ रहे हैं। भूख, नींद, पाचन सामान्य है। पाखाना-पेशाब भी सामान्य है। दर्द-जलन नहीं है।"

१६-४-६५ : "दर्द जलन नहीं है। किसी प्रकार की शारीरिक परेशानी नहीं है।"

१२-१०-६६ : "शरीर का वजन १२८.५ पौण्ड। बाल झड़ने के अतिरिक्त कोई भी शारीरिक परेशानी नहीं।"

अब तो (१६६७) साढ़े तीन वर्षों का समय बीत चुका है। श्रीमती आमीर स्वस्थ-सामान्य जीवन व्यतीत कर रही हैं।

नयी जाँच

१४ जुलाई, १६६७ को पूरे पेट-क्षेत्र का अल्ट्रा साउण्ड सब कुछ सामान्य बताता है। (न्युक्लियर मेडिसिन सेण्टर, मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, खुलना, बंगलादेश रजिस्ट्रेशन नं. २८६/०७, दिनांक १४-७-६७)। *(सन्दर्भ-४४६)*

२७ जुलाई, १६६७ की जाँच से अस्थियों में शोथ तो है, किन्तु कैन्सर होने का चिन्ह नहीं है। (गरीब नवाज क्लिनिक डायग्नोस्टिक, खुलना, नं. आर. २५, दिनांक २७-७-६७)। *(सन्दर्भ-४४७)*

PATIENT REPORT.

MRS. LATIFA AMIR

Date - 7.8.97 Date : 17.8.1997

Weight :	: 55 Kgs.
Appetite	: Normal
Digestion	: N8rmal
Sleep	: Normal
Energy	: Normal
Freshness	: Normal
Stool	: Normal
Urine	: Normal
Pain and Burning	: NoPOain & Burning.

17-8-1997

SIG. OF HUSBAND

(सन्दर्भ-४४८)

रोगिणी के पति ने १७-८-६७ को सब कुछ सामान्य बताया है, सिवा बाल झड़ने वाली शिकायत के। (पेशेन्ट रिपोर्ट दिनांक १७-८-६७)। *(सन्दर्भ-४४८)* ❑

उत्तर भारत में कार्तिक शुक्ल छठ को सूर्य-व्रत मनाया जाता है। लोग उपवास करते हैं, ताकि शरीर के संस्थान आहार के पाचन में व्यस्त होने से उपराम पा जायँ। लोग सभी संभव वानस्पतिक आहार-सामग्रियों का संग्रह करते हैं और अन्न से भी विधिपूर्वक भोजन तैयार करते हैं। इन सामग्रियों को पंचमी के अस्त होते तथा षष्ठी के उगते सूर्य के समक्ष पोषक ऊर्जा प्राप्त करने के लिए किसी जलाशय के किनारे रखते हैं। स्नानोपरान्त स्वयं भी भीगे वस्त्र में ही इन किरणों को शरीर पर ग्रहण करते हैं। यह धार्मिक कवच में रखा हुआ स्वास्थ्य के विकास और रोग-मुक्ति का अभियान भी है। इस व्रत का प्रारम्भ बिहार के उस क्षेत्र से हुआ था, जहाँ हजारों वर्ष पूर्व महान् नक्षत्र-विदों की प्रयोगशालाएँ थीं।

८२

मेटास्टेटिक ब्रेस्ट कैन्सर (बायाँ)
(इनवेसिव डक्टल सेल कार्सिनोमा)
CA. BRESAT (L)
Metastatic

श्रीमती इन्द्रा सिंह, ४३ वर्ष
आर- २/६० ,राजनगर
गाजियाबाद -२०१००२

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : डिस्चार्ज कार्ड दि. २१.११.९२, सर गंगाराम अस्पताल, राजेन्द्रनगर, नयी दिल्ली में ऑपरेशन (२०८७६) फिर किमोथेरापी दि. २१.११.९२। *(सन्दर्भ-४४६)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : मार्च १९९३

ऑपरेशन से पूर्ण बाएँ स्तन में एक गाँठ तो नोट की गई थी, किन्तु रोग की प्रकृति के विषय में कम ही सोचा गया था। कैन्सर की प्रकृति मेटास्टेटिक थी, अर्थात् उसे तो एक से दूसरे क्षेत्रों और संस्थानों में बढ़ते जाना था। स्तन का कैन्सर कई बार एकदम

SIR GANGA RAM HOSPITAL, RAJINDER NAGAR, NEW DELHI - 110 060

Name of Patient · Age · Sex · Service Unit · Ward Bed - INDRA SINGH 36Y F/M 20876 UNIT.II

Marital Status · Hosp. Regd. No. · Head of Service · Income

Doctor Incharge Dr. S. A. Gael

DATE OF ADMISSION 15/11/92 DATE OF DISCHARGE 21/11/92

DIAGNOSIS Invasive duct Ca. (Lt.) Breast.

NEXT APPOINTMENT : To attend PVT OPD 6-8 PM 23/11/92

CONDITION AT THE TIME OF LEAVING Satisfactory

Signature

(सन्दर्भ-४४६)

Respected Trivedi ji   Ghaziabad
12/9/93

Regarding patient
Indra Singh, She is apparently normal.
She took chemotherapy only three cycles
Dr Advani of Tata Memorial Institute
Bombay has advised for completion of
remaining three cycles, but Patient is
not ready to go through chemotherapy.
She is depending on your medicines
only. I already informed you that
She gained weight in the past.
Now she is almost normal.

Yours obediently
Tej Bir Singh.

(सन्दर्भ-४५०)

स्थानीय होता है और ऑपरेशन तथा अन्य सामान्य उपचार से वर्षों तक के लिए ठीक हो जाता है। किन्तु यहाँ रोग का स्वभाव वैसा नहीं था। ऑपरेशन के समय तक ही वह काँख की ओर फैल चुका था। उस क्षेत्र से भी सात से दस नोड्स निकालने पड़े थे, जो वस्तुतः कैन्सरस थे। ऑपरेशन के बाद निर्धारित
हुआ कि किमोथेरापी की छह साइकिल चला दी जायँ। किन्तु केवल तीन साइकिल चलते-चलते रोगिणी की हालत इस योग्य नहीं रह गयी कि वह और आगे किमोथेरापी बर्दाश्त कर सके।

इस संदर्भ में श्रीमती इन्द्रा सिंह के पति डॉ. तेजबीर

SHANKAR ULTRASOUND & X-RAY
R-4/2, RAJ NAGAR, GHAZIABAD -201002
Working Hours:8-00 AM to 8-00 PM
Tele.:7 1 4 0 6 7

Name :Mrs.Indra Taj Singh
Date :13/10/94
Ref.by:Self
Time :UU:11:19

X-RAY

X-RAY Shows

Chest-PA View.

Conclusion:Normal study.

Advice :Clinical Correlation.

Dr R.Yadav

(सन्दर्भ-४५१)

INSTITUTE OF NUCLEAR MEDICINE AND ALLIED SCIENCES.
LUCKNOW ROAD, DELHI - 110054

PHONE : 231 86 07

DEPARTMENT OF NUCLEAR MEDICINE

NAME : MRS. INDIRA SINGH AGE & SEX : 42Y/F

REG. No. : NM/1473/94 DATED : 23.12.94

REPORT :

IMPRESSION : NORMAL BONE SCAN.

(सन्दर्भ-४५२)

सिंह ने, जो स्वयं एक योग्य एवं बहुत अनुभवी चिकित्सक हैं, अपने दि. १२.६.६३ के पत्र में केन्द्र को लिखा था, ''रोगिणी सामान्य दिखती हैं। इन्द्रा सिंह ने किमोथेरापी की केवल तीन साइकिल ही ली हैं। टाटा मेमोरियल के डॉ. आडवानी ने शेष तीन साइकिल भी पूरा किये जाने की सलाह दी है, परन्तु वह और किमोथेरापी लेने को तैयार नही हैं। वह केवल आपकी ही दवा पर निर्भर हैं। जैसा कि मैंने पहले भी जानकारी दी थी, उनका वजन भी बढ़ गया है। अब वह लगभग एकदम सामान्य हैं।'' *(सन्दर्भ-४५०)*

मजबूरी थी, अतः उस चिकित्सा से पैर पीछे हटाने पड़े। मार्च १६६३ के प्रथम सप्ताह से 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई थी। कष्ट छँटने लगे और स्वास्थ्य क्रमशः सुधरा।

औषधि चलती रही और कालान्तर में रोगिणी को न तो कोई असुविधा रही और न ही मूल बीमारी का कहीं नामो-निशान रहा। १६६४ के अंत में कराई गई गहन जाँच

SHANKAR ULTRASOUND & X-RAY
R-4/2, RAJ NAGAR, GHAZIABAD -201002
Working Hours: 8-00 AM to 8-00 PM
Tele.: 7 1 4 0 6 :

Name : Mrs. Indra Singh Date : 13/02/96

Ref. by: Dr. Tej Singh DCH Time : 00:01:37

ULTRA SOUND WHOLE ABDOMEN

Sonogram Shows:
Conclusion: Normal morphological study.

Advice : Clinical Correlation.

Dr R. Yadav
(Consultant Radiologist)

(सन्दर्भ-४५३)

SHANKAR ULTRASOUND & X-RAY
R-4/2, RAJ NAGAR, GHAZIABAD -201002
Working Hours:8-00 AM to 8-00 PM
Tele.:7 1 4 0 6 7

Name :Mrs. Indra Singh
Date :13/03/96

Ref.by:Dr.Tej Singh DCH
Time :00:08:58

X-RAY

X-RAY Shows.

Chest-PA View.

Conclusion:Normal study.

Advice :Clinical correlation.

Dr R.Yadav
(Consultant Radiologist)

(सन्दर्भ-४५४)

से पता चला कि कैन्सर अस्थियों में प्रवेश ही नहीं पा सका है, जिसकी डाक्टरों को ऑपरेशन के बाद से ही आशंका थी। ('शंकर अल्ट्रा साउन्ड एन्ड एक्स-रे की दि. १५.१०.६४ की एक्स-रे रिपोर्ट, तथा 'इन्स्टीट्यूट ऑफ न्यूक्लियर मेडिसिन एण्ड एलाईड साईंसेज', दिल्ली की दि. २७.१२.६४ की जाँच रिपोर्ट)।*(सन्दर्भ-४५१ और सन्दर्भ-४५२)*

कैन्सर की विभीषिका से भली-भाँति परिचित डॉ. तेजबीर सिंह, कैन्सर से पूर्ण मुक्त अपनी पत्नी की साल छः महीने बाद जाँच कराते रहते हैं, और केन्द्र को भी उन रिपोर्टों को भेजते रहते हैं। अन्तिम जाँच रिपोर्ट ,फरवरी व मार्च १६६६ की हैं। चेस्ट, रीढ़ की हड्डी, कूल्हे के क्षेत्र आदि की एक्स-रे व अल्ट्रा साउन्ड द्वारा जाँच हुई और सब कुछ नार्मल पाया गया। दि. १३.२.६६ की अल्ट्रा साउन्ड द्वारा मार्फोलोजिकल स्टडी (शंकर अल्ट्रा साउन्ड एन्ड एक्स -रे) और इन्हीं के द्वारा दि. १३.३.६६ की चेस्ट एक्स-रे रिपोर्ट।*(सन्दर्भ-४५३ और सन्दर्भ-४५४)*

श्रीमती इन्द्रा सिंह एकदम सामान्य, स्वस्थ व प्रसन्न हैं। केन्द्र से निरन्तर सम्पर्क बनाये रखती हैं। लम्बे समय से न तो औषधि ले रही हैं, और न ही अब उसकी आवश्यकता अनुभव करती हैं। □

बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध ने दो-दो विश्व युद्ध झेले। युद्ध के मोर्चों पर लाखों लोग मारे गये, लाखों अपाहिज बनाकर छोड़ दिये गये। घबराया हुआ इन्सान चाहता था कि भविष्य में इनकी पुनरावृत्ति न हो। राजनीति के क्षेत्र में एक महान निर्णय लिया गया। तब से मानव-जाति वैसी विभीषिकाओं से सुरक्षित है।

बीसवीं सदी के द्वितीयार्द्ध में चिकित्सा के मोर्चे पर लाखों लोग विषौषधियों के 'साइड एफेक्ट्स' और दुष्प्रभावों से उसी प्रकार मारे गये और अपाहिज जिन्दगी बिताने के लिए छोड़ दिये गये हैं।

दहलीज पर खड़ी इक्कीसवीं सदी पूछ रही है, "मानवता के हित में क्या फिर कोई वैसा ही महान और विवेकपूर्ण निर्णय लिया जा सकेगा ?"

८३

पाइरीफार्म फोसा का कैन्सर
(CA. PYRIFORM FOSSA)

श्री अमलेन्दु भूषण नाथ
उम्र : ५० वर्ष
श्रीनाथ रोड, लाला
पो० लाला जि० कछार
(असम) पिन ७८८१६६

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : क्रिश्चियन मेडिकल कालेज एण्ड हास्पीटल, वेल्लोर (एम. आर. डी. नं ६३०८१५ ए) *(सन्दर्भ-४५५)*

श्री अमलेन्दु भूषण नाथ गले की परेशानी और तीव्र खाँसी से ग्रस्त थे। किसी भी सामान्य औषधि ने आराम नहीं दिया तो सितम्बर में

CHRISTIAN MEDICAL COLLEGE AND HOSPITAL, VELLORE, S. INDIA

CASE SUMMARY & DISCHARGE RECORD

SEX MARITAL STATUS IDU BHUSHAN NATH 50 M HOSPITAL NUMBER
BED MRD.: NO. 630815A IT I RELIGION STATUS

Admitted on: 12.10.87 Discharged on: 15.10.87

Biopsy report: No.12171/87

Impression: Tissue from right pyriform sinus with no evidence of malignancy.

Final Diagnosis: ① Ca Right. Pyriform Sinus. NO RECURRENCE post-RT- No Malignancy.
② Rheumatic Heart Disease c̄ MR & AS

Recommendations:
1. Tab. Metacin 2 prn
2. Tab. MVT 1 od
3. [illegible]

d/swritten by
Dr.Gerlad D. Andrews

DR. R. RAMAN

(सन्दर्भ-४५५)

.RISTIAN MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL
IDA SCUDDER ROAD
POST BOX NO. 3
VELLORE - 632004 S. INDIA.

TELEPHONE : 22102 (10 LINES)
TELEGRAMS : "MISSIONHOS" VELLORE
TELEX : 405 202 CMCH IN

Ref.................

Date..6.7.87.........

MEDICAL REPORT

Mr. Amalendu Bhushan Nath, a case of Ca.(r) Pyriform fossa T3N1No (Biopsy No.5036/87) underwent Radiotherapy with cobalt using two parallel opposed lateral fields to a TD of 65GY to 7/2 in 30 fractions over 6 weeks. Patient tolerated radiation well. Patient has been advised to come for follow up on 7th September 1987.

(Signature)

Medical Superintendent.
Christian Medical College Hospital.
VELLORE-632004.

(सन्दर्भ-४५५ बी)

मेडिकल कालेज के चिकित्सकों ने बायाप्सी जाँच द्वारा उनके पाइरीफार्म फोसा में कैन्सर होने की पुष्टि की और चिकित्सा के लिए क्रिश्चियन मेडिकल कालेज, वेल्लोर जाने की सलाह दी। सी. एम. सी. हास्पीटल में उन्हें रेडियोथेरापी देकर ६/७/८७ को इस हिदायत के साथ घर जाने की इजाजत दी कि वे ७/६/८७ को पुनः जाँच के लिए उपस्थित होंगे। *(सन्दर्भ-४५५ बी)*

संयोग कि वेल्लोर में ही उनकी मुलाकात बिहार की श्रीमती देवरानी देवी और उनके अभिभावक से हुई। वे भी चेकअप के लिए ही वहाँ आये थे। उन्होंने बताया कि "श्रीमती देवरानी देवी के गर्भाशय के उग्र कैन्सर की चिकित्सा वेल्लोर में ही हो रही थी। निराशा की स्थिति में उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि शुरू की और अब तो पूरी तरह रोगमुक्त हैं। इस बार भी चेक अप में सब कुछ ठीक आया है"।

১৭.২.৯৮

প্রিয় মহাশয়,

আপনার পত্রের উত্তর লিখতে দেরী হওয়ার জন্য দুঃখিত। আমার শরীর এখন মোটা-মুটি ভাল। আর দু'মাস পর পর check-up করাচ্ছি। ENT-এর Doctor ঐ রোগটা পান নাই। তবে আমার গলার ঐ জায়গায় বা অন্যান্য জায়গায় কোন কোন সময় চুলকায়। গলা সব-সময়ই শুষ্ক থাকে। আর সবসময়ই কাশি-কাশি থাকে। Doctor কারন হিসাবে বলেছেন যে আমার Heart-এর একটা valve dead থাকার জন্য এরকম হচ্ছে। Heart এর valve টা জন্ম থেকেই dead.

ধন্যবাদ।

Amalendu Bhusan Nath.
(Lala)

(सन्दर्भ-४५६)

इस बात ने श्री नाथ की निराश आत्मा को छू दिया और उन्होंने घर न जाकर सीधे पूर्णिया (बिहार) का रास्ता पकड़ा, जहाँ डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक डॉ. उमाशंकर तिवारी रहते थे।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ८/७/८७ को प्राप्त करके ६/७/८७ से ही 'सर्वपिष्टी'

I will continue your medicine as long as I live.
So I hope you will not stop the medicine
my case. With good regards and thanks —
Amarendra Bhusan Nath
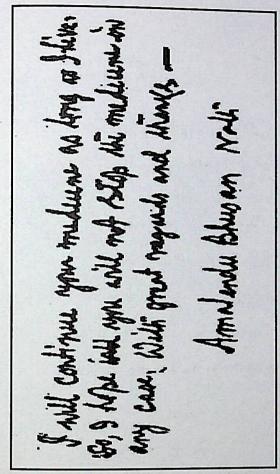
(सन्दर्भ-४५७)

प्रारम्भ कर दी गयी। बहुत कुछ आराम तो रेडियोथेरापी से हो चुका था, किन्तु सर्वपिष्टी ने अपने स्पष्ट सकारात्मक परिणाम दिये। वे स्वस्थ और तरोताजा रहने लगे। खाँसी में सुधार नहीं हो पा रहा था। इसका कारण वे जानते थे। उनके हार्ट का एक वाल्व बचपन से ही छोटा और खराब था। अब वे पुनः वेल्लोर नहीं जाना चाहते थे। सितम्बर की तारीख उन्होंने बिता दी। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के डॉ. तिवारी ने उन्हें लिखा कि वे जाकर चेक अप अवश्य करा लें। इससे तथ्य उभर कर आयेंगे कि कहीं रेकरैन्स हुआ तो नहीं। वैसे विश्वास था कि अब ऐसा होना नहीं चाहिए। एक महीने विलम्ब से १२/१०/८७ को वे वेल्लोर पहुँचे। जाँच की रिपोर्ट उत्साह वर्द्धक थी। अब कैन्सर के चिह्न नहीं थे। हार्ट के रोगी तो वे बचपन से थे।

वेल्लोर से वापस आकर श्री नाथ ने डॉ. तिवारी को लिखा, ''मेरा शारीरिक स्वास्थ्य तो सुधरता जा रहा है, किन्तु खाँसी लगातार बनी हुई है।''

वे घर बैठे-बैठे ही 'सर्वपिष्टी' मंगाते और सेवन करते थे। स्वास्थ्य की बुलन्दी देखकर न तो वे चाहते थे कि औषधि बन्द करें, न उनके परिजन। उनके मन में बैठ गया था कि उन्हें जीवित रहना है और कैन्सर से बचना है तो 'सर्वपिष्टी' लेते ही रहेंगे। जुलाई १९८९ में उन्होंने डॉ. तिवारी को लिखा भी ''मैं आपकी दवा तब तक लेता रहूँगा, जब तक जीवित रहूँगा। किसी भी हालत में बन्द नहीं करूँगा।'' *(सन्दर्भ-४५६)*

बाद में बहुत समझाने-बुझाने पर उन्होंने आश्वस्त होकर 'सर्वपिष्टी' का सेवन बन्द किया। औषधि बन्द करने के लगभग नौ वर्ष बाद दिनांक १६/२/९८ को उन्होंने पत्र लिखा, ''मेरा शरीर अब मोटा मोटी ठीक है। प्रायः दो माह के अन्तराल से चेक अप

Lala
14th May 01

Respected
Sir,
I am glad to inform you that I have now fully cured. But in this Barak Valley Region this disease is increasing at a rapid growth. People of this region is deprived of getting the proper treatment. So it would be kind enough if you open a branch line of your institution in this area.
A lots of thanks for inquiring of me my health.

From
A. B Nath

(सन्दर्भ-४५८)

कराता हूँ। ई. एन. टी. डाक्टर उनमें रोग नहीं पा सके।......." *(सन्दर्भ-४५७)*

दिनांक १४ मई २००१ को श्री नाथ ने केन्द्र को सूचना दी, "...मुझे आपको सूचित करते हुए खुशी हो रही है कि मैं पूरी तरह से कैन्सर-मुक्त हो गया हूँ" *(सन्दर्भ-४५८)*। इसी पत्र में उन्होंने केन्द्र की शाखा अपने क्षेत्र में खोलने का अनुरोध भी किया था क्योंकि वहाँ कैन्सर रोगियों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

८४

गाल का, कनपटी का कैंसर
(CA. CHEEK (Rt.)
(TEMPORO-PARIETAL REGION)
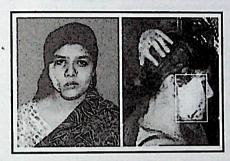
श्रीमती सबीहा शबीर, १६ वर्ष
पत्नी : मो. शबीर
१३१ गोलाम सिवान लेन
रियान स्ट्रीट, कलकत्ता-१६

विचित्र कैंसर-ट्यूमर का इतिहास

३ अप्रैल, १६६६ को ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल, कलकत्ता के कुशल सर्जन एवं आनकॉलोजिस्ट डॉ. शुभांकर देव के सामने युवती सबीहा शबीर दाहिनी कनपटी पर ३ गुणे ३ इंच का कैन्सरस ट्यूमर लेकर डेढ़ वर्षों के अन्तराल के बाद खड़ी हुई। श्रीमती सबीहा शबीर के विचित्र कैन्सर-ट्यूमरों का इतिहास अभी डॉ. देव की स्मृति से मिट नहीं सका था। डेढ़ वर्ष पूर्व यह युवती कनपटी के इसी स्थान पर इतना ही बड़ा ट्यूमर लिये ही अचानक इस अस्पताली चिकित्सा से अदृश्य हो गयी थी। आज उसी रूप में

GARDENREACH NURSING HOME
B-79, IRON GATE ROAD CALCUTTA-700024 Ph.: 49-1720, 49-3226 — B+ve
DISCHARGE CERTIFICATE OF ; — 50 kgs

NAME SABIHA SABIR SEX M/F CAST M AGE 19 yr
w/OF Md Sabir, V-108 Akra Rd, Cal-18.
ADMITTED ON 2/6/94 DISCHARGED ON 10/6/94
ADMITTED UNDER CARE OF Dr Q. H. A. Hannani
DIAGNOSIS & TREATMENT Excision of tumor (Haemangioperi cytoma) Rt Cheek from inside the oral cavity done on 3/6/94
D/E done on 9/6/94
D/P: malignant haemangiopericytoma.
REST: FOR Hb 11g%. 8500 N69 E2 L28 SR 30/60 TO RESUME WORK FROM

(सन्दर्भ-४५६)

Bacts-Clinical Laboratories

NR-3115, 3126,

Ref.No. N/317.I8

MATERIAL Biopsy of growth in oral cavity & necrotic part of tumour — DATE OF RECEIPT 3. 6. 94

NAME OF PATIENT Mrs. Sabiha Sabir — AGE

PHYSICIAN/SURGEON Dr. Q.H.A. Mannan. — DATE OF REPORT 11.6.94

HISTOLOGY

The section shows histological features of necrotic part of a malignant haemangiopericytoma.

Encl. Two slides

BACTS CLINICAL LABORATORIES

(सन्दर्भ-४६०)

पुनः उपस्थित थी। अन्तर यह था कि इस बार श्रीमती शबीर बहुत स्वस्थ होकर आई थीं और उनका ट्यूमर भी दर्दीला नहीं था।

डॉ. देव चिन्तित और परेशान हो उठे थे। उनका अनुभव साफ-साफ बोल रहा था कि अब तक तो कैन्सर ने खोपड़ी की अस्थियों को धुन दिया होगा और ब्रेन में भी अपनी छावनियाँ डाल दी होंगी। श्रीमती शबीर के परिजन ऑपरेशन द्वारा ट्यूमर को निकलवाना चाहते थे। इसलिए उनके पास आये थे। क्या इस स्टेज पर सर्जन के लिए कुछ भी कर पाने की गुंजाइश होगी ? पूछने पर पता चला कि विगत डेढ़ वर्षों में कोई सर्जरी नहीं की गई है।

CANCER CENTRE AND WELFARE HOME

Mahatma Gandhi Road, Thakurpukur Calcutta-700 063

Dial - 77 4433, 77 4444, 77 7170

DISCHARGE CERTIFICATE

Certificate No. 2936

Hosp. Regd. No.

O.R. No. 1944

R.T. No.

Follow up day Tuesday

Under Care of Dr. Arunava Sengupta

This is to certify that Shri Smt. Sabiha Sabir

Age 19 Sex F of

admitted in the hospital from 19/10/94 to 7/11/94

was suffering from Haemangiopericytoma (R) Rt.

and is now discharged with advice

Diagnosis Haemangiopericytoma (R) Rt.

Treatment Neo. exam.

Date 7/11/94

Signature & Designation

(सन्दर्भ-४६१)

Dr. Subhankar Deb
M.B.B.S. (CAL), MS (CAL), ECFMG (U.S.A.)
SURGEON & ONCOLOGIST
DY. VISITING CANCER SURGEON, SVS MARWARI HOSPITAL
EX. CANCER SURGEON OF THAKURPUKUR CANCER HOSPITAL

Continuation of page 1 Mrs. Sabia Sabir F/20 yrs.

A known case of malignant haemangiopericytoma.

X Ray Skull / NAD.

① CT Scan Brain with special emphasis of (Rt). Temporo-parietal area to exclude any dural invasion.

② Punch Biopsy

③ CT Scan chest

④ X-Ray chest

3/4/96.

(सन्दर्भ-४६२ : पिछले पृष्ठ से जारी)

ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल के भूतपूर्व सर्जन डॉ. देव ने रिकार्ड निकाला और अपने लेटर-पैड पर श्रीमती सबीहा शबीर के रोग का संक्षिप्त वृत्तान्त ब्योरेवार लिखना शुरू किया। डॉ. देव के अंग्रेजी नोट के कुछ अंशों का हिन्दी अनुवाद :

"मार्च १९९४ में दाहिने गाल में सूजन देखी गयी थी।"

"प्रारम्भिक बायाप्सी के बाद जून १९९४ में ऑपरेशन कर दिया गया।" (गार्डन रीच नर्सिंग होम, कलकत्ता, डिस्चार्ज सर्टिफिकेट-दिनांक १०-६-९४)। *(सन्दर्भ-४५९)*

"हैमांजियोपेरी साइटोमा मैलिगनेन्ट' निर्धारित (बैकटो क्लिनिकल लेबोरेट्री, द्वारा बायाप्सी जाँच रिपोर्ट दिनांक ११-६-९४-रेफरैन्स नं. ३१७-१८)। *(सन्दर्भ-४६०)*

"ऑपरेशन के मात्र तीन सप्ताह के भीतर उसी क्षेत्र में तथा उसी स्थान पर रोग पुनः उत्पन्न हो गया। रोगी को ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल में प्रस्तुत किया गया। वहाँ परीक्षा की गई और फिर जुलाई १९९४ के अंत में ऑपरेशन कर दिया गया।'

"रोगिणी लगभग छह सप्ताह फिर कुछ ठीक-ठाक रही, जबकि तीसरी बार फिर से उसी स्थान पर और उसी क्षेत्र में रोग पुनः उठ खड़ा हुआ। इस बार अक्टूबर १९९४ में रेडियोथेरापी द्वारा चिकित्सा की गई।" (कैन्सर सेण्टर एण्ड वैलफेयर होम, ठाकुरपुकुर, डिस्चार्ज सर्टिफिकेट, हॉस्पीटल रजि. नं. १९४४ दिनांक ७-११-९४)। *(सन्दर्भ-४६१)*

[illegible]

(सन्दर्भ-४६३)

''इसके परिणामस्वरूप रोगिणी फिर मुश्किल से तीन सप्ताह कुछ ठीक-ठाक रही, फिर दाहिनी कनपटी पर सूजन के साथ अस्पताल में हाजिर हो गयी। फिर रेडियेशन द्वारा चिकित्सा की गयी और एक साइकिल किमोथेरापी (औषधियाँ ज्ञात नहीं) दी गई।

''इसके बाद रोगिणी डेढ़ वर्ष तक कोई आयुर्वेदिक चिकित्सा लेती रही।''

डॉ. देव ने जिन डेढ़ वर्षों में अन्य किसी आयुर्वेदिक औषधि द्वारा चिकित्सा का जो हवाला दिया है, उन वर्षों में श्रीमती सबीहा शबीर, डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि 'सर्वपिष्टी' का सेवन कर रही थीं। इन डेढ़ वर्षों के बीच क्या-क्या हुआ, और आज सबीहा शबीर फिर डॉ. देव के सामने क्यों उपस्थित हुईं, इस वृत्तान्त को वैज्ञानिक निगाहों से देखा जाय। उसके बाद डॉ. देव के नये चिकित्सा-सहयोग का हवाला दिया जायेगा। रोगिणी डेढ़ वर्षों तक 'सर्वपिष्टी' के हवाले थी।*(सन्दर्भ-४६२)*

'सर्वपिष्टी' शुरू की गई : ३०-११-६४

विशेष : कैन्सर-ट्यूमर के कुछ ही दिनों के बाद पुनः-पुनः उभर आने और चिकित्सा से अवकाश के कुछ दिन भी प्राप्त नहीं हो पाने से रोगिणी के परिजन निराश हो गये थे। इसी बीच उन्हें डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी मिली। उन्होंने कनपटी वाले ट्यूमर के लिए अस्पताली चिकित्सा नहीं लेकर 'सर्वपिष्टी' के अन्तर्गत जाना उचित माना। डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने उन्हें एक बार ऑपरेशन कराकर आने की सलाह दी, किन्तु अब वे इसके लिए कत्तई तैयार नहीं थी।

प्रगति का लेखा-जोखा

'सर्वपिष्टी' चलने लगी, किन्तु कनपटी वाले ट्यूमर का आकार न तो घटा, न सीमित हुआ। दर्द था, किन्तु अधिक नहीं। हाँ सामान्य स्वास्थ्य सुधरता जा रहा था और रोगिणी स्वयं को सशक्त बताती थी। शरीर की सभी क्रियाएँ सम पर आ गई थी।

लगभग दो महीने बाद ट्यूमर का बढ़ाव रुक गया। उसके एक महीने बाद वह फट गया। ट्यूमर का निर्माण करने वाली रोग-सामग्री बड़ी तेजी से शरीर से बाहर आ गयी। मात्र दो दिनों में ही कनपटी स्वस्थ और समतल दिखने लगी। लगने लगा कि वहाँ कोई ट्यूमर था ही नहीं।

एक माह तक यह सम की स्थिति कायम रही। स्वास्थ्य यथावत उत्तम ही रहा। एक माह बाद उसी क्षेत्र और स्थान पर एक ट्यूमर पुनः उभरा। धीरे-धीरे बढ़कर तीन महीने बाद ट्यूमर स्वतः ही फिर फूटा और सारी रोग-सामग्री बाहर निकल आयी। कनपटी का क्षेत्र दो दिन बाद ही स्वस्थ-समतल दिखाई देने लगा। 'सर्वपिष्टी' चलती रही।

तीसरी बार कुछ अधिक अन्तराल के बाद फिर ट्यूमर वहीं निकला। इस बार न तो शारीरिक परेशानी थी, न दर्द था। भूख, नींद, स्फूर्ति, शक्ति सब सामान्य थे। डी. एस. रिसर्च सेण्टर की धारणा थी कि इस बार जो भी रोग-सामग्री है, तल पर आ गयी है। परिजनों को राय दी गयी कि इस बार ऑपरेशन कराकर सफाई करा दी जाय। अधिक संभव है कि आगे फिर ट्यूमर नहीं निकलेगा। परिजन ऑपरेशन की दिशा में नहीं जाना चाहते थे, किन्तु बार-बार आग्रह करने पर वे पुनः डॉ. शुभांकर देव के पास ठाकुरपुकुर कैन्सर अस्पताल पहुँचे थे।

पोषक ऊर्जा ने ट्यूमर बनते जाने की प्रवृत्ति मोड़ दी थी

जब ऑपरेशन द्वारा ट्यूमर को बार-बार हटाने का सिलसिला चल रहा था, उस समय ट्यूमर दो दिशाओं में बढ़ रहा था- एक तो गहराई में उतर रहा था, दूसरे नये क्षेत्र की ओर सरक रहा था। 'सर्वपिष्टी' सेवन के दौरान तीन बातें साफ हो गई थीं, १. ट्यूमर किसी नये क्षेत्र की ओर नहीं गया था। २. पोषक ऊर्जा द्वारा स्थापित शरीर-प्रतिरक्षा ने ट्यूमर की सामग्री को बाहर फेंका था। इसका अर्थ था कि कैन्सर की जड़ें गहराई की ओर जाने से रोक दी गयी थीं। ३. विगत डेढ़ वर्षों में केवल दो बार ही ट्यूमर का प्रगट होना सूचित करता था कि ट्यूमर बनाने वाली रोग-सामग्री अब अपने बहुगुणन के लिए वातावरण नहीं पा रही थीं।

इसी आधार पर डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने अनुमान किया था कि यह रोग-सामग्री की अन्तिम किश्त है और कैन्सर की जड़ें उखड़ चुकी हैं। अतः किसी कुशल सर्जन द्वारा इसकी सफाई, ट्यूमरों का सिलसिला और इतिहास समाप्त कर देगी।

डॉ. देव का सहयोग

डॉ. देव इस उलझाव में नहीं जाना चाहते थे कि डेढ़ वर्षों तक आयुर्वेदिक चिकित्सा की ओर रह जाना गलत था अथवा सही। उनके सामने एक आपात चुनौती थी जिस पर अपना कौशल आजमाना था। खोने लायक एक दिन भी नहीं था। उन्होंने लिखा–

[illegible]

6/1/97

(सन्दर्भ-४६४)

१. दाहिनी कनपटी के क्षेत्र में ३ गुणे ३ ईंच का एक ट्यूमर।
२. गाल का क्षेत्र पूर्णतः नीरोग और स्वस्थ।

सुझाव : शीघ्रातिशीघ्र व्यापक जाँच हो। विशेष ध्यान रखा जाय कि ब्रेन का कितना क्षेत्र रोग की गिरफ्त में आ चुका है।

दिनांक ४-४-६६ को ही डंकन गोयनका, कलकत्ता से सी. टी. स्कैन की रिपोर्ट आ गयी (रजि. नं. ११६२७०)। रिपोर्ट देखकर डॉ. देव चकित भी हुए और अतीव प्रसन्न भी। ट्यूमर न तो ब्रेन की ओर गया था, न खोपड़ी की अस्थियों को गिरफ्त में ले सका था। दिनांक १४-४-६६ को उन्होंने ऑपरेशन करके ट्यूमर को हटा दिया।

इस बार की रिपोर्ट के अनुसार कैंसर 'लिपो सारकोमा' था।

सर्वपिष्टी पुनः प्रारम्भ : जाँच-रिपोर्ट देखकर डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक भी प्रसन्न और आश्वस्त हुए। 'सर्वपिष्टी' पुनः चालू कर दी गयी। अब भरोसा हो गया था कि ट्यूमरों के निर्माण का सिलसिला सदा के लिए समाप्त हो चुका था। पोषक ऊर्जा द्वारा कैन्सर के पुनः होने की संभावनाओं का निराकरण करना था।

प्रगति-विवरण : ३१-५-६६ की रिपोर्ट में रोगिणी के पति ने लिखा, "मेरी पत्नी इस समय पूरी तरह ठीक हैं। कोई परेशानी नहीं है। ऑपरेशन के दो माह बीत गये। इन दिनों ५ किलोग्राम वजन भी बढ़ा है। खाना-पीना सब कुछ सामान्य है।*(सन्दर्भ-४६३)*

I was very thankful to D.S. Research Centre for their medicine which give me cure for this typical dissease. Their medicine was really very good. I feel very better to take after the medicine. Now I am a healthy person because of this medicine. I have a new life because of God and this medicine.

Sabiha Sabir
5.9 1997

(सन्दर्भ-४६५)

६-१-६७ की रिपोर्ट : "दस माह बीत गये (ऑपरेशन के)। मुझे कोई असुविधा नहीं है। मैं इस समय बहुत अच्छी हूँ। आपकी औषधि बहुत दिनों से खा रही हूँ, यदि औषधि का अन्तराल बढ़ा दें, तो आपका बहुत उपकार होगा।" *(सन्दर्भ-४६४)*

दस महीने तक ट्यूमर नहीं निकला, इससे स्पष्ट हो गया कि वास्तव में इस रहस्यमय कैन्सर की वह बची- खुची अन्तिम किश्त थी जो अन्तिम बार तल पर आई थी और ऑपरेशन से साफ हो गयी। ऑपरेशन के बाद भी दस महीने औषधि चल चुकी थी। अतः निर्णय लिया गया कि औषधि रोक दी जाय। आशंका का ज्वार भी उतर चुका था।

दिनांक ५-६-६७ को अर्थात ऑपरेशन द्वारा ट्यूमर हटा दिये जाने के लगभग डेढ़ वर्ष बाद (कहाँ तो ट्यूमर अठारह दिनों का अवकाश नहीं देने पर उतारू था, कहाँ अठारह महीने अबाध स्वास्थ्य के बीतने चले) श्रीमती सबीहा शबीर डी. एस. रिसर्च सेण्टर पहुँचीं (औषधि तो बन्द है, अपने स्वास्थ्य का समाचार देने आई थीं)। उन्होंने अपने रोग और इलाज का पूरा वृत्तान्त दो पृष्ठों में स्वयं लिखा। कुछ अंश हिन्दी अनुवाद के साथ उद्धृत हैं।

(श्रीमती सबीहा शबीर ने जो पत्र लिखा वह भाषा की दृष्टि से भले ही साधारण हो परन्तु उस पत्र से जो सन्देश हमें सुनायी देता है, वह साधारण सन्देश नहीं, बल्कि वह सन्देश है, जिसे सुनने के लिए मानव जाति शताब्दियों से लालायित है—कैन्सर से मुक्ति का सन्देश)।

"मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर की आभारी हूँ, जिनकी औषधि ने मुझे इस विलक्षण रोग से मुक्ति दिलाई है। इनकी औषधि वस्तुतः बहुत अच्छी थी। औषधि-सेवन से मुझे बहुत अच्छा अनुभव हुआ। इसी औषधि की देन है कि मैं आज स्वस्थ हूँ। ईश्वर और इस दवा के कारण ही मुझे नया जीवन मिला है।" *(सन्दर्भ-४६५)*

□

फेफड़े का कैन्सर
(CA. LUNG)

वैद्य श्री भूरामल यती

स्वस्तिक सदन,
गंगाशहर रोड, बीकानेर-३३४००१

श्री भूरामल यती स्वयं एक वैद्य हैं। शायद यही कारण है कि श्री यती डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि का सेवन करने के साथ आयुर्वेद की किसी औषधि का सेवन भी करते थे। बीच में उन्हें लगा कि उनकी आयुर्वेद की औषधि से ही कैन्सर ठीक हो जाएगा, परन्तु ज्योंही वे सेण्टर की औषधि का सेवन बन्द करते थे, उनके सामने समस्याएँ आने लगती थीं। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि जब वे सेण्टर और अपनी आयुर्वेद की औषधियों का सेवन साथ-साथ करते थे, तभी उनको सर्वाधिक लाभ प्राप्त होता था। उनके मामले में उनको देखने-जानने वाले डाक्टर भी चकित थे, परन्तु पता नहीं क्यों श्री यती यह निर्णय नहीं ले पा रहे थे कि वे किस औषधि से ठीक हो रहे हैं। अपने एक पत्र में वे लिखते हैं, "... वर्तमान में मेरे डाक्टर मेरा स्वास्थ्य व रोग के संभावित परिणाम को माप कर आश्चर्यचकित हैं, कई तो जो अधिक मुखर हैं, उन्होंने कहा है कि चमत्कार है, इस रोग की
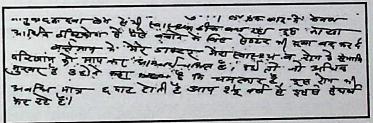
(सन्दर्भ-४६६)

SANTOKBA DURLABHJI MEMORIAL HOSPITAL CUM MEDICAL RESEARCH INSTITUTE
BHAWANI SINGH MARG
JAIPUR-302 015
PHONE : 566251-8

NAME MR.B.M.YATI. 65YRS,MALE.
O.P.D. No. 99/13082.
Date 23.4.99.

REFD.DR.V.D.GARG.

Coin lesion (Rt. upper lobe)
Previously on ATT
Now with pleural effusion.(Right).

FIBROPTIC BRONCHOSCOPY

Vocal cord)
Trachea) Normal.
Carina)
Left bronchial
tree)

Right upper lobe anterior segment blocked with tumour tissue.
Difficult biopsy because of angulation.
B/W for c/s.cytology.biopsy.

(सन्दर्भ-४६७)

अवधि (रोगी के जीने की अवधि) मात्र छह माह होती है, आप ढाई वर्ष से इससे संघर्ष कर रहे हैं..." *(सन्दर्भ-४६९)*। श्री यती के अनुसार वहाँ डाक्टरों के बीच उनके केस की चर्चा होती रहती है।

जाँच एवं चिकित्सा : सन्तोख बा दुर्लभजी मेमोरियल हास्पीटल, जयपुर। ओ पी डी नम्बर : ९९/१३०८२। १६.०१.९९। *(सन्दर्भ-४६७, ४६८)*

सन् १९९२ में दार्जिलिंग में चाय बागान में काम करते हुए रक्त में टी. ई. अधिक

SANTOKHA DURLABHJI MEMORIAL HOSPITAL& JAIPUR   Histopathology/Cytology Report

Name: B M YATI Age :65 Y Sex: M OPD Number: 9913082
Consultant: Dr. G SEN   Date Processed: 24/04/99

Accession Number: 5661/99   Date of Report: 26/04/99

Bronchial Biopsy

The specimen consists of multiple tiny soft tissue pieces together measuring 0.3 x 0.2 x 0.1 cm. Entire taken for embedding.

MICROSCOPIC

Biopsy contains fragments of bronchial mucosa. Presence of moderately differentiated adenocarcinoma is noted. However it cannot be stated if this represents a metastatic or a primary lesion.

Kindly correlate clinically.

BC.Sangal MD   K.Gangwal MSc   P.Aswani MD   S.Gupta MD   AM.Sangal DCP

(सन्दर्भ-४६८)

हो जाने के कारण वापस राजस्थान आना पड़ा। दवा लेने पर समस्या समाप्त हो गयी। १९९४ में सर्दी जुखाम और श्वांस सम्बन्धी समस्या शुरू हो गयी। बम्बई में १५-२० दिन दवा चलाने के बाद बीकानेर आ गया। वहाँ ५-६ महीने विभिन्न दवाओं के साथ टी. बी. की भी दवा चली। दिसम्बर ९८ में भूख की समस्या तथा अनिद्रा के कारण चिकित्सकों ने एक्स-रे कराया। फेफड़े में पानी भरा पाया गया। पानी निकालने के साथ टी. बी. की दवा चलने लगी। इस बीच दो बार ब्रोंकोस्कोपी करायी गयी, सी टी स्केन भी हुआ पर चिकित्सक किसी अन्तिम निर्णय तक नहीं पहुँच सके।
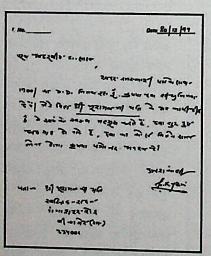
(सन्दर्भ-४६९)

इसी बीच १६ जनवरी १९९९ को सन्तोख बा दुलार भाई मेमोरियल हास्पीटल, जयपुर में बायप्सी कराई गयी जिसकी रिपोर्ट आयी और उसमें लंग्स कैन्सर पाया गया।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक ०१.०५.१९९९ को श्री यती के लिए सर्वपिष्टी प्राप्त की गयी। सर्वपिष्टी सेवन के बाद क्रमशः श्री यती की समस्याएँ समाप्त होने लगीं। श्री यती

Date 18/3/01

(सन्दर्भ-४७०)

स्वयं वैद्य हैं फिर भी उनके बच्चों ने उन्हें बताया नहीं था कि उन्हें कैन्सर हो चुका है। इसके बावजूद वैद्य होने के कारण श्री यती को कुछ-कुछ आशंका हो चली थी। सर्वपिष्टी के सेवन से उनमें जो परिवर्तन आया उसी के चलते वे स्वस्थ और सामान्य जीवन की ओर लौटने लगे।

श्री यती के साथ एक विचित्र बात हो रही थी। वे सर्वपिष्टी के साथ कोई आयुर्वेदिक दवा भी ले रहे थे। वे जब सर्वपिष्टी बन्द करके केवल आयुर्वेदिक दवा लेते, उन्हें तकलीफ शुरू हो जाती। जब वे आयुर्वेदिक दवा बन्द करके केवल सर्वपिष्टी लेते तब भी समस्या खड़ी हो जाती। उन्होंने एक रिपोर्ट में लिखा, ''मैंने मार्च-अप्रैल १९९९ में अपने रोग के बारे में आपको बीकानेर से फैक्स किया था, जिसके आधार पर आपने दवा भेजी। मैंने जनवरी २००० तक आपकी दवा ली और इस अवधि में अपनी आयुर्वेदिक दवा भी बराबर लेता रहा। अपनी दवा जुलाई २००० तक ली, पश्चात् अपनी दवा बन्द कर अगस्त-सितम्बर दो माह आपकी दवा ली। बाद में आपकी दवा बन्द करके अपनी दवा ले रहा हूँ। दवाओं के फेरफार से मैं अनुभव कर रहा हूँ कि जब मैं दोनों दवाएँ साथ-साथ ले रहा था तब अप्रैल ९९ से शक्ति बढ़ी, वजन भी ५६.४ से ६२.४ बढ़ा, अब पुनः वजन कम हुआ व शक्ति भी घटी है। इस कारण मैं पुनः दोनों दवाएँ साथ-साथ लेना चाहता हूँ। प्रारम्भ में दिसम्बर ९८ में फेफड़े में पानी भर जाने के कारण रोग शुरू हुआ था। अब रात में दर्द के अलावा कोई परेशानी नहीं है...''।

दिनांक २२.११.१९९९ को भेजे गये पत्र में श्री यती के पुत्र ने लिखा '' आपकी दवा से काफी आराम है, वजन पहले से २-३ किलो बढ़ा है....दर्द पहले से कम होता है....''।

उनके पुत्र का ही दिनांक २०.१२.१९९९ को पत्र मिला जिसमें उन्होंने सूचित किया था कि ''अब काफी ठीक हैं। वे स्वयं को स्वस्थ महसूस करते हैं...''। *(सन्दर्भ-४६९)* दिनांक १८.०३.०१ को भेजे गये एक पत्र में श्री यती के पुत्र ने पत्र लिखा, ''...पसलियों के पास दर्द पिछले दिनों कुछ कम हुआ था पर पांच-सात दिनों से वापस महसूस होने लगा है, कमजोरी महसूस होती है लेकिन यह लगता है कि आपकी दवा का सहारा तो है ही।...''*(सन्दर्भ-४७०)*

८६

दाँत के खोंड़रे का कैन्सर
(CA.- Alveolus Lower)

श्रीमती पारुल बाला भौमिक, ६६ वर्ष
कलकत्ता-२७

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा :

१. डाक्टर्स त्रिवेदी एण्ड रॉय, ६३ पार्क स्ट्रीट कलकत्ता-७०००१६, दि. २३.१.८८ की बायाप्सी रिपोर्ट (स्लाइड नं. ४१७/८८)। (वेल डिफरैंसियेटेड इन्फिल्ट्रेटिंग स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा)। *(सन्दर्भ-४७१)*

२. साइण्टिफिक क्लीनिकल रिसर्च लेबोरेट्री, कलकत्ता। हिस्टोपैथॉलॉजिकल, रिपोर्ट नं. ५४६/८८, दि. २२.१.८८। 'इन्फिल्ट्रेटिंग माडरेटली डिफरैंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा'। *(सन्दर्भ-४७२)*

कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर में डा. सरोज गुप्ता द्वारा चिकित्सा (८८/८०२ और ५२३/८८) किमोथेरापी दी गयी और फिर २५.३.८८ से २३.४.८८ तक रेडियोथेरापी चली। *(सन्दर्भ-४७३)*

DRS. TRIBEDI & ROY
93, PARK STREET, CAL — 700 016
PHONES : 29-6843, 29-8789, 29-5961

DR. A.R. ROY M.B.PH D. (CAL) D.T.M. & H. (L. POOL) D. PATH (ENG.)
FORMERLY ASST. PROF. OF PATHOLOGY
& ASST. BACTERIOLOGIST TO THE GOVT. OF W. BENGAL
RES : 46-0961

DR. SUBHENDU ROY M.B.B.S. (CAL) M.D. (P.G.I.)
RES : 49 2786

BRANCH :
48A, DIAMOND HARBOUR ROAD,
CAL-700 027 (9 AM — 3 PM)

Date of receipt 19-1-88
Date of report 22-1-88
(Slide No.417/88)

MATERIAL: Biopsy from alveolus

NAME: MS P.B. BHOWMIK

ADDRESS: C.N.M.C.H.

PHYSICIAN: Dr. B.K.Chakraborty

Gross : Small piece of soft tissue.

Microscopical Examination :-

Diagnosis :- Well differentiated infiltrating squamous cell carcinoma (Biopsy from alveolus).

(सन्दर्भ-४७१)

Dr. Subir Kumar Dutta
MBBS, DCP, MD (Path & Bact)
Dr. Subhas Chandra Maitra
MBBS, DCP, MD, PhD (Canada)
Dr. Sunil Kumar Gupta
MBBS, DCP, MD FRCPath. (Eng.)

Scientific Clinical Research Laboratory Pvt. Ltd.
2, RAM CHANDRA DAS ROW
(OFF. 77, DHARMATALA STREET)
CALCUTTA-700013
Phone : 24-1098

Date 22- 1- 1988

REPORT ON THE EXAMINATION OF
Tissue from oral mucosa

Patient's Name Ms P. B. BHOWMIK
Referred by Dr. B.K.Chakraborty.

HISTOPATHOLOGICAL REPORT

Sections show histology of an infiltrating moderately differentiated squamous cell carcinoma.

No.549/88. S.K.Dutta

(सन्दर्भ-४७२)

रोग का इतिहास : दाँत के दर्द को बुढ़ापे के विदा माँगते दाढ़ के सामान्य दर्द के रूप में लेकर कुछ चिकित्सा चली। दर्द और सूजन को देखकर दंत-चिकित्सक को दिखाया गया। औषधियों का कोई असर नहीं होने पर कैन्सर होने का सन्देह हुआ और जाँच प्रारम्भ हुई।

चिकित्सा के प्रयास : जाँच से कैन्सर की पुष्टि हुई। इनवेजिव प्रकृति का कार्सिनोमा था। मेटास्टेसिस तीव्र थी और कैन्सर ने जड़ें जमा ली थीं। ऑपरेशन हुआ किन्तु रोग के प्रसार को ध्यान में रखकर किमोथेरापी और रेडियोथेरापी का सहारा भी शीघ्र ही ले लिया गया। रेडियोथेरापी २३.०४.८८ को पूरी हुई थी। सुशिक्षित परिवार किमोथेरापी के दुष्प्रभावों से भी परिचित था और उसकी सीमाओं से भी। परिवार समझ रहा था कि इस चिकित्सा से कैन्सर-कोशिकाओं का बोझ एक बार हल्का भले ही हो जाय, इस मार्ग में रोग भी जटिल होता जाता है और चिकित्सा भी। चिन्ता थी कि किसी निर्भरणीय चिकित्सा की ओर चला जाय। उसी समय डी. एस. रिसर्च सेण्टर और 'सर्वपिष्टी' के विषय में जानकारी मिली। सोचा जा रहा था कि पारम्परिक चिकित्सा का कोर्स पूरा होने के बाद उधर चला जाय, किन्तु अनुभवी लोगों ने बताया कि इसका कोर्स तो तब भी नहीं पूरा हो पायेगा, जब रोगिणी का स्वास्थ्य इसे झेल पाने की स्थिति में नहीं रह जायेगा।

सम्पर्क करने पर प्रो. त्रिवेदी ने कहा कि 'सर्वपिष्टी' के साथ-साथ किमोथेरापी भी चलायी जा सकती है। पोषक ऊर्जा के प्रभाव से किमोथेरापी के दुष्प्रभाव शान्त होते जायेंगे। किन्तु उन्होंने एक सीमा पर किमोथेरापी रोक देने की सलाह दी। आशंका थी कि पोषक ऊर्जा द्वारा रोगिणी के अच्छे स्वास्थ्य को देखकर एलोपैथ चिकित्सक समझेंगे कि अभी किमोथेरापी झेलने की क्षमता उसकी बरकरार है, आगे-से-आगे कोर्स बढ़ाते जायेंगे।

CARD NO........ Dr. S. K Ghosh.

COBALT-II (from 25.3.88)

CANCER CENTRE
& WELFARE HOME
MAHATMA GANDHI ROAD
THAKURPUKUR - CALCUTTA 700 063
DIAL 77 4433/4444

DEPARTMENT OF RADIATION ONCOLOGY

NAME...... MS P. B. BHOWMIK

REGISTRATION NUMBERS

OPD 88/802	523/88

UNIT

Superficial X ray
Deep X ray
Telecobalt I
Telecobalt II
HDR Brachytherapy
Others

DIAGNOSIS
Ca-(L) lower alveolus (P/O)

REFERRED BY........................

(सन्दर्भ-४७३)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ- ४.५.८८ से।

रेडियोथेरापी का कोर्स पूरा होने के दस-बारह दिनों के बाद ही 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी गयी। एक महीने में लार और थूक की समस्या नियंत्रण में आयी, भूख में सुधार हो गया और २२.६.८८ तक घाव भी भर गया। रोगिणी स्वस्थ अनुभव करने लगीं और वजन भी पहले की अपेक्षा एक किलोग्राम बढ़ गया। सुधार उत्तरोत्तर हुआ और कायम रहा। यदा-कदा कुछ स्वास्थ्य-
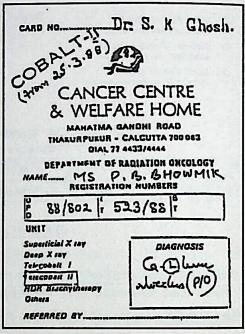
CKHARDT
Medical Centre

REPORT ON : CT SCAN

MS P. B. BHOWMIK — Patient No.: 8081323

Age 70 Yr — Sex: F — Date: 13.08.91

Refrd by - Dr. A. B. CHANDRA — C. T No. 7165

PLAIN & CONTRAST ENHANCED C.T. SCAN OF BASE OF THE SKULL AND FACE INCLUDING PARANASAL SINUSES AND PTERYGOID FOSSAE:

IMPRESSION: Post-operative follow up case of left hemimandiblectomy with superficial neck dissection now showing no evidence of recurrence of mitotic lesion especially at the pterygoid fossa and paranasal sinuses on left side. Note however a mucosal polypus in left maxillary antrum.

(सन्दर्भ-४७४)

প্রিয় মহাশয়,

আপনি পত্রে শ্রীমতী পারুল বালা ভৌমিকের শারীরিক অবস্থা সম্পর্কে জানতে চেয়েছেন। তাঁদের জানাই যে উনি বর্তমানে সম্পূর্ণ সুস্থ আছেন. উনার মুখের যে অংশে রোগ ছিল সেই অংশে কোন সমস্যা নাই. শারীরিক অন্যান্য কিছু সমস্যা আছে যেমন হজম জনিত কিছু সমস্যা আছে। এছাড়া উচ্চ রক্তচাপের জন্য নিয়মিত ঔষধ খেতে হয়। ঘাড়ে spondilitis এর কারণে পুরাতন সমস্যা আছে.

ইতি,

Dated 07.03.95

নমস্কারান্তে
S.S. Bhowmick

(सन्दर्भ-४७५)

समस्याएँ आ जाती थीं। मार्च, १६८६ तक वजन एक किलो और बढ़ा हुआ पाया गया।

इसके बाद स्वास्थ्य की स्थिरता देखकर और यह नोट करके कि 'मेटास्टेसिस' शान्त और समाप्त हो चुकी है, 'सर्वपिष्टी' की खूराकें एक दिन का अन्तराल दे-देकर चलने लगीं। जून-जुलाई १६८६ तक विश्वास हो गया कि अब रोगिणी के शरीर में कैन्सर का कोई लक्षण शेष नहीं रहना चाहिए, तो एक बार जाँच कराकर देख लेने का निश्चय किया गया। वोक हार्ट मेडिकल सेण्टर, कलकत्ता में सी. टी. स्कैन जाँच करायी गयी (सी. टी. नं. ७१६५, दिनांक १३.८.६१)।

रिपोर्ट से प्रगट हुआ कि उस क्षेत्र में कैन्सर का न तो कोई 'मास्स' (पिण्ड) शेष है, न रेकरैन्स का कोई चिन्ह है।*(सन्दर्भ-४७४)*

जब आश्वासन मिल गया कि अब रोगिणी पूर्णतः रोगमुक्त और स्वस्थ हैं, तब 'सर्वपिष्टी' बन्द कर दी गई।

दि. ७.३.६५ को श्रीमती भौमिक के पुत्र महोदय ने पत्र लिखकर उनके स्वास्थ्य का समाचार दिया। पत्रांश का हिन्दी अनुवाद–

"हमारी रोगिणी वर्तमान समय में पूरी तरह स्वस्थ हैं। उनके मुँह का जो भाग रोग-ग्रस्त था, उस भाग में कोई समस्या नहीं है। कुछ अन्य शारीरिक परेशानियाँ हैं, जैसे–पाचन सम्बन्धी समस्या। इसके अलावा उच्च रक्तचाप के लिए दवा रोज खानी पड़ती है। कन्धे पर स्पाण्डेलाइटिस के कारण एक (पुरानी) समस्या है।" *(सन्दर्भ-४७५)*

दिनांक ०८.१२.६७ की रिपोर्ट :

श्रीमती पारुल बाला भौमिक की सबसे छोटी पुत्रवधू कावेरी भौमिक (धर्मपत्नी-श्री पार्थसारथी भौमिक) ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर पर आकर उनके स्वास्थ्य के विषय में रिपोर्ट दी।

(अंग्रेजी में लिखी रिपोर्ट का हिन्दी अनुवाद)- "मेरी सास श्रीमती पारुल बाला भौमिक, उम्र ६७ वर्ष, ऑपरेशन के बाद डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि लेती रहीं। (उनके

8.12.97

Mrs. Parul Bala Bhowmick, my mother-in-law was taking medicine from D.S Research Centre after her operation. (Left lower jaw was operated due to malignancy in metastatic stage in Feb '88) ~~[illegible]~~ We [illegible] gave her allopathic medicine along with the medicine from D.S Research centre. In other words we did not stopped the post operation medicines. Now, my mother-in-law is a normal-aged woman who can do all household light works. Besides that she looks after her grand children

Kaberi Bhowmick
(Wife of Partha Sarathi Bhowmick youngest son of Parul Bala Bhowmick)

(सन्दर्भ-४७६)

निचले बाएँ जबड़े का ऑपरेशन कैन्सर होने के कारण किया गया था और कैन्सर मेटास्टेटिक स्टेज पर पाया गया था)। डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि के साथ-ही-साथ एलोपैथिक दवा, आशय कि ऑपरेशन के बाद दी जाने वाली दवाएँ चलती रहीं।

...अब हमारी सासजी का स्वास्थ्य सामान्य है। एक वयःप्राप्त स्वस्थ महिला की भाँति वे गृहस्थी के हल्के-फुल्के कामों में हिस्सा लेती हैं। इसके अतिरिक्त अपने पोते-पोतियों की देख-सँभाल करती हैं।" *(सन्दर्भ-४७६)*

❑

ड्रग-निर्मित दवाओं के दुष्प्रभावों से संत्रस्त लोग किसी वैकल्पिक चिकित्सा की तलाश में हैं। स्वमूत्र-चिकित्सा एक विकल्प बनती जा रही है और इस अभियान में अब तो लाखों लोग शामिल हो चुके हैं। इसके पक्षधर लोग इस चिकित्सा को कुछ विन्दुओं पर श्रेष्ठ बताते हैं– (१) स्वमूत्र का कोई 'रिएक्शन' और 'साइड एफेक्ट' नहीं है। अर्थात् यह किडनी, लीवर, 'नर्वसिस्टम' आदि को ध्वस्त नहीं करता, जैसा कि औषधीय ड्रग करते हैं। (२) स्वमूत्र-सेवन में मारक-मात्रा वाला खतरा नहीं है, (३) इससे कई रोग दूर होते देखे गये हैं, (४) स्वमूत्र का पान करने अथवा पान करने की सलाह देने के लिए लाइसेन्स की जरूरत नहीं होती।

अभिमन्यु को चक्रव्यूह में केवल दाखिल होने का ज्ञान था, उससे बाहर निकलने का नहीं। आज तो आँकड़े जुटाना मुश्किल है कि कितने लाख अभिमन्यु ड्रग-निर्मित औषधियों के चक्रव्यूह में दाखिल होने के बाद क्रमशः गहराते स्वास्थ्य-संकटों के घेरे में आते जा रहे हैं। गैस्ट्रिक की दवा डायबेटिक बना देती है। उसके लिए ड्रग चला, तो किडनी जवाब दे जाती है। इसे सँभालने की औषधीय कोशिश में हाइपरटेंशन, उच्च रक्तचाप और अनिद्रा की चपेट में आकर 'हार्ट वार्ड' में जाना पड़ता है। नये-नये वार्डों में 'दाखिला-ही-दाखिला' इसलिए है कि इन संकटों से बाहर निकालने वाली औषधियों का विकास नहीं हो पाया है।

८७

गर्भाशय ग्रीवा का कैन्सर
(CA. CX)

श्रीमती देवी पात्रा
उम्र ६०वर्ष
द्वारा श्री नवकुमार पात्रा (पति)
ग्रा० व पो०-जयनगर,
जिला-हाबड़ा (पश्चिम बंगाल)

जाँच : चित्तरंजन कैन्सर हास्पीटल, कलकत्ता (रजि. नं. जी ८७/४६३२. दिनांक ३०.१०.८७। *(सन्दर्भ -४७७)*

पूर्व चिकित्सा-अस्पताल के बोर्ड ने रेडियोथेरॉपी करने का निर्णय लिया और १२.१२.८७ तक रेडियेशन का कोर्स पूरा हो गया।

रोग-उपद्रवों का फिर बढ़ाव : रेडियोथेरॉपी से रक्त-स्राव भी रुक गया था और सादा स्राव भी। किन्तु चार-पाँच माह बाद ही फिर वही परेशानियाँ हो गयीं। कमजोरी बढ़ गयी, भूख मिट गयी, कमर तथा तलपेट और पैरों में दर्द उभर आया। सादा स्राव फिर से चालू हो गया। बीच-बीच में रक्त-स्राव भी हो जाता। अगली अस्पताली चिकित्सा के अन्तर्गत किमोथेरॉपी लेनी थी, किन्तु साहस नहीं हुआ। इसी बीच किसी बंगला पत्रिका के द्वारा डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी हुई। यह रास्ता उचित लगा और तय हुआ कि एक बार आजमाकर देख लिया जाय।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : दिनांक. ६/६/८८.

प्रगति-विवरण :

१. *चार सप्ताह बाद :* रक्त-स्राव बन्द हो गया। सादे स्राव की मात्रा भी कम हुई। बार-बार पेशाब की हाजत होनी रुक गयी। भूख कुछ-कुछ लगने लगी। उदर, तलपेट, कमर और पाँवों

Government of West Bengal
CHITTARANJAN CANCER HOSPITAL
CALCUTTA
Name: Smt. Debi Patra
Regn. No. G/87/4632
Date of 1st attendance: 13/10/87
To ... on 20/10/87 ...
BOARD Ca Cx II + ...
20.10.87

(सन्दर्भ-४७७)

(सन्दर्भ-४७८)

के दर्द की तीव्रता ५० प्रतिशत कम हो गयी।

२. *तीन माह के बाद :* रोगिणी के कष्टों में बहुत कमी आ गयी। सादा स्राव प्रायः विरल हो गया। रक्त का स्राव तो पहले से ही रुक चुका था। भूख-प्यास सामान्य हो गये। स्वास्थ्य में सुधार आया। रोगिणी ने शक्ति और स्फूर्ति का अनुभव किया और गृह-कार्यों में हाथ बटाने लगी। कमर, उदर और पैरों का दर्द नाम मात्र का रह गया।

३. *छः माह बाद :* रक्त-स्राव, सादा स्राव, दर्द एवं जलन तो प्रायः भूल ही गयी। स्वास्थ्य सुधर गया। चेहरे पर नीरोगता और उत्साह की आशा उभर आयी। श्रीमती पात्रा अब घर के काम-काज सक्रियता के साथ देखने-संभालने लगीं। और भी दो माह तक 'सर्वपिष्टी' की खूराकें दी गयीं। आठ माह पूरे होने पर डी. एस. रिर्सच सेण्टर की ओर से परामर्श दिया गया कि रोग सम्भवतः समाप्त हो चुका है, फिर भी एक बार चित्तरंजन कैंसर अस्पताल जाकर जाँच करा लेना उत्तम रहेगा। किन्तु श्रीमती पात्रा अब अस्पताल की ओर जाना ही नहीं चाहती थी, ''मुझे जब कोई तकलीफ है ही नहीं, तो जाँच किस बात की करवाऊँगी।''

वर्तमान हालत : अब तो पूर्ण स्वस्थता और कैंसर से मुक्ति के १२ वर्ष बीत चुके हैं। श्रीमती देवी पात्रा के पति श्री नव कुमार पात्रा ने १२/०३/२००० को पत्र लिखकर डी. एस. रिसर्च सेण्टर को सूचित किया था कि वह स्वस्थ हैं। दिनांक २५.०५.०१ को रोगिणी के पति ने केन्द को पत्र लिखा, ''मेरी पत्नी बिल्कुल स्वस्थ हैं...''। सन्दर्भ -४७९)

(सन्दर्भ-४७९)

८८
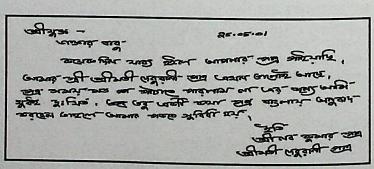
तालु (साफ्ट पेलेट) का कैन्सर
(CA. SOFT PALATE)

श्री निशिकान्त गायेन, ६५ वर्ष,
श्री शृतिकार मोड़
केशवगंज घाटी, पो. राजबाटी
जिला : बर्दवान (पं. बंगाल)

जाँच : पैथोवाइण्ड क्लिनिकल एण्ड रिसर्च लेबोरेटरी, कलकत्ता-४ (रेफ. नं. २२७/एच. पी. २६४, दिनांक १६-४-६४)। हिस्टोपैथोलॉजिकल एक्जामिनेशन, 'वेल डिफरेंशिएटेड स्कवैमस सेल कार्सिनोमा'। *(सन्दर्भ-४८०)*

'सर्वपिष्टी' से पहले रेडियेशन का सुझाव : कुछ खाना तथा निगलना संभव नहीं रह गया था। गले में असह्य दर्द रहता था, सिर बुरी तरह ठनकता रहता था। शरीर कंकाल जैसा हो गया था और नींद नहीं ले पाते थे। उनके परिजनों को समझाया गया कि रोग का बढ़ाव जल्दी ही ऐसी हालत पैदा कर सकता है कि दवा भी न दी जा सके। अतः अच्छा रहे शीघ्र रेडियेशन कराकर ऐसी स्थिति बना ली जाय कि रोगी कुछ तरल, अर्द्धतरल भोजन तथा औषधि ले सके। परिजन इससे सहमत हो गये। फिर 'सर्वपिष्टी' दे दी गयी।

Pathowynd Clinical & Research Laboratory
29A Balaram Ghosh Street Calcutta-700 004
(Near Shyampukur Thana) Entrance : Shyambazar Street

Prof. D. N. Sengupta Prof. S. K. Majumdar
Ref. No. D 227/HP 294 Dt. of receipt 11.4.94 Dt. of report 16.4.94
Name of Patient Nishikanta Gayan. Age XXX 62 Sex M.
Refd. by Doctor A. K. Dandapath.
Material .Granulomatous lesion soft palate.
Nature of Examination : Histopathological examination.

Section shows picture of well differentiated squamous cell carcinoma.

For Pathowynd Clinical & Research Laboratory

(सन्दर्भ-४८०)

DR. S. C. DE

CANCER CENTRE & WELFARE HOME
PROJECT: MAHATMA GANDHI ROAD, THAKURPUKUR
CALCUTTA 700 063, DIAL 77 4433-4444

Sree
Name Nidhi Kanta Gayen
Hm 65
Outdoor Registration no. 95/2523
Indoor Registration no.
Ward
Diagnosis Ca Soft Palate
Attending 29-4-95 Hospital
Date of Admission

(सन्दर्भ-४८१)

रेडियोथेरापी : कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर, कलकत्ता के बोर्ड ने २-५-९४ को रेडियेशन देने का निर्णय लिया (रजि. नं. ९४/२५२३, दिनांक २९-४-९४)। *(सन्दर्भ-४८१ और सन्दर्भ-४८२)*

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक ३-५-९४ से।

प्रगति विवरण : (मरीज श्री गायेन के पुत्र श्री टी. एन. गायेन द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों के आधार पर)।

१४-१-९५ : "गले की सूजन पहले से कम है। कण्ठनली का दर्द कम है। पहले की परेशानियों में उतार है। रेडियेशन के कारण गले में खुश्की रहती है।"

३१-१-९५ : "गले की सूजन और कम। दर्द प्रायः नहीं है। गले की खुश्की कायम है। गाढ़ा लार निकलता रहता है। भूख, नींद, पाचन ठीक है। स्वास्थ्य सुधर रहा है।" *(सन्दर्भ-४८३)*

६-५-९६ : "गला प्रायः स्वाभाविक ढंग से काम करने लगा है। खाने-पीने में अब असुविधा नहीं होती। रेडियेशन विस्तृत क्षेत्र में हुआ था। मसूढ़े और दाँत उससे प्रभावित होकर दर्दीले बन गये हैं। गले की लार-स्रावी ग्रन्थियाँ अभी तक जीवित नहीं हो सकीं। खुश्की बनी ही रहती है, जो एक चम्मच पानी पी लेने पर दूर हो जाती है।" *(सन्दर्भ-४८४)*

Date	Investigation	Treatment	Instruction	Remarks
29/4/94	Ca Soft Palate — Ref to ENT		for advice	
29/4/94	Adv:	BOARD ON MONDAY. 2/5/94		29/4
	BOARD			

(सन्दर्भ-४८२)

Nishi Kanta Gayen 31-1-95

গলার ফুলো আগের তুলনায় কম, ক্যান্সার
নেই। ইদানীং অক্সিজেন(?) রাখলে ফুলো
ভাব থাকে না।
খাবার গিলতে গেলে [illegible] লাগে, ২
চামচ জল খাবার পর ঐ ভাব থাকে না।
গলার ভিতর পুঁজের(?) মত আঠা আঠা লাগে(?)।
আগের তুলনায় স্বাদ এখন বুঝতে পারছেন।
ঘুম ঠিক আছে, শরীর ঠিক আছে।

(सन्दर्भ-४८३)

२७-६-६६ " 'सर्वपिष्टी' निर्देशानुसार अन्तराल के साथ दी जा रही है। कैन्सर के क्षेत्र में कोई परेशानी शेष नहीं है। रेडियेशन से दाँतों, जबड़ों तथा खुश्की की उत्पन्न समस्याएँ बरकरार हैं। नींद, भोजन, पाचन, स्वास्थ्य, शक्ति, स्फूर्ति ठीक है।"

१६-५-६७ : "रोगी को कैन्सर संबन्धी कोई परेशानी नहीं है। दाँतों और मसूढ़ों की समस्या यथावत है। गले में खुश्की कभी-कभी हो जाती है। ये उपद्रव अधिक रेडियेशन के कारण हैं। श्री गायेन भोजन सामान्य तौर से ले लेते हैं। स्वास्थ्य ठीक है।"

- Name - Nishi Kanta Gayen. .

[illegible]

9/5/96

(सन्दर्भ-४८४)

Sri Nishi Kanta Gayen
গলায় বর্তমানে ব্যথা খুব মাঝে মাঝে হয়।
অন্য কোন সমস্যা বর্তমানে দেখা যায় নাই।
বর্তমানে বিশেষ কিছু অসুবিধা হচ্ছে না।
চলা ফেরা এবং ঘুম, খাওয়া ঠিক আছে।
পারিবারিক চিকিৎসক ডাক্তারবাবুর
সাথে যোগাযোগ করা হয়, এবং ডাক্তারের
অনুযায়ী কোন অসুবিধা নাই।
Ashok Gayen
24/10/97

(सन्दर्भ-४८५)

दिनांक २४.१०.९७ को श्री गायेन के पुत्र श्री अशोक गायेन ने रिपोर्ट दी कि गले का दर्द तो बहुत कम हो चुका है। खाना भी पहले से ठीक है। गले में कभी-कभी थोड़ी व्यथा हो जाती है। वर्तमान में कोई समस्या नहीं दिखायी देती, असुविधा भी नहीं है। घूमना-फिरना, नींद व खाना ठीक है।

पारिवारिक चिकित्सक ने जाँच करके बताया कि कोई असुविधा नहीं है। *(सन्दर्भ- ४८५)*

❑

आत्महत्या का इरादा करनेवाले लोग अब जहर की तलाश में भटकते नहीं; सीधे दवाओं की दूकानों पर पहुँच जाते हैं। 'दवा' और 'जहर' को एक साथ बोलने-समझने की परिपाटी पुरानी है। प्राचीन काल से ही लोग जहरीली वनस्पतियों से दुहरा परिचय करते आये हैं, "जहर है, दवाई बनाने के काम आता है।" साँप, गोहरा और षड्विन्दु के जहर में भी औषधीय उपयोगिता बताने का रिवाज है। बाद में भी विषों ने 'दवा' के रूप में ही नाम कमाया—चूहा मारने की दवा, मच्छर मारने की दवा, कीटनाशक दवा...आदि। रासायनिक ड्रगौषधियों के दुष्प्रभावों ने तो दवाओं के विषत्व का डंका बजा दिया। अब तो बात लोक-मानस में गहराई तक बैठ गयी है कि दवा-विक्रेताओं के पास ही मौत के अचूक साधन मिलते हैं।

समझदार और संवदेनशील लोगों ने एक नया नारा दिया है—" 'पहले रोग' से समझौता करके जियो।" उनका कहना है कि आदमी अगर पथ्य, परहेज, संयम और साहस का सहारा लेकर 'पहले रोग' के साथ जीना सीख ले और औषधीय ड्रगों से परहेज रखे, तो वह कई जटिल रोगों, स्वास्थ्य-उपद्रवों और साइड एफेक्ट्स से बच जायेगा तथा अपेक्षाकृत एक अच्छी और दीर्घ जिन्दगी जी सकेगा। आपात् संकट हो, तब की बात अलग है।

कुछ ही वर्ष पहले लोग अपने किसी परिचित को उदास देखकर सलाह देते थे, "कोई दवा क्यों नहीं ले लेते ?" आज ऐसी हालात में लोग सलाह देने लगे हैं, "कोई ऊल-जलूल दवा मत खा लेना।"

८६

> "मैं अब अन्य किसी रोग से मर सकता हूँ, कैन्सर से नहीं मरूँगा। यह मेरा आत्मविश्वास है।"

वेलेक्युला (बायाँ) का कैन्सर
(CA. VALLECULA) (Lt.)

श्री माधवचन्द्र गांगुली, ६५ वर्ष
अलीपुर द्वार, बालूपाड़ा
जिला : जलपाई गुड़ी (प. बंगाल)

CANCER CENTRE & WELFARE HOME
CALCUTTA

Name MADHAB CH. GANGULY
H.M. 57 56/2642
Outdoor Registration no.
Diagnosis Ca Lt Vallecula
Attending 9.8.86
TUESDAY

(सन्दर्भ-४८६)

पूर्व चिकित्सा

कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुर-पुकुर, कलकत्ता-६३, रजि. नं. ५६/२६४२ (१९८६)। *(सन्दर्भ-४८६)*
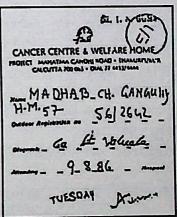
कैन्सर से ग्रस्त हो जाने की तो बात ही और है, इसका आतंक ही इतना भारी है कि जिन्हें यह नहीं हुआ है, वे भी इसके विषय में बोलते समय आवाज थोड़ी धीमी कर लेते हैं, वहीं श्री गांगुली तो कैन्सर से दो-दो हाथ करके लौटे हैं, फिर भी ललकार के लहजे में बोला और लिखा करते हैं, "मैं अब अन्य किसी रोग से मर सकता हूँ, कैन्सर से नहीं मरूँगा। यह मेरा आत्मविश्वास है।"

T. N. Guha

7.9.87

Re. Sri Madhab ch. Ganguli, 58 y

A case of Ca - Vallecula (Lt) ...

O/E. ENT. ... Dental ...

No glo ...

1) Exam. of Blood for TC DC Hb% ...
2) Dental ...

(सन्दर्भ-४८७)
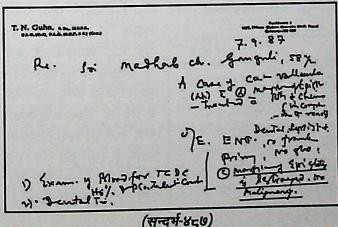
मई १६८६ में सिर के पिछले भाग में गर्दन के ऊपर बाईं ओर एक दर्दीला ट्यूमर निकला। सामान्य उपचार करते रहे। स्थिति ऐसी बनी कि अन्न का एक ग्रास निगलने में कान, कनपटियाँ और अन्न-नली दर्द से फट पड़ते थे भूख नहीं, नींद नहीं, जीभ का स्वाद नहीं। कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर गये, जहाँ रेडियोथेरापी और किमोथेरापी हुई। आराम मिला, लेकिन स्थायी नहीं।

(सन्दर्भ-४८८)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक १८.०१.८७

१८.१.८७ को 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ हुई। दर्द-यंत्रणा का उफान धीरे-धीरे दबने लगा, शरीर में जान आने लगी। एक महीने बाद नाक, कान, गला विशेषज्ञ ने जाँच करके बताया कि अच्छा सुधार है। छह माह बीतते-बीतते सभी परेशानियों से छुटकारा मिल गया। समय-समय पर जाँच कराने के लिए ठाकुरपुकुर चले जाते हैं। सब ठीक पाया जाता है (डॉ. टी. एन. गुहा की दि. ७.६.८७ की जाँच रिपोर्ट)। *(सन्दर्भ-४८७)*

(सन्दर्भ-४८६)

श्री गांगुली ने ८.१२.६२ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखा—

".... अब छः माह के अन्तर से जाँच के लिए कलकत्ता जाता हूँ। हर समय आपकी चर्चा होती है और आपकी बातों का स्मरण रहता है।... आपने मेरी जिन्दगी बचा दी है, इस बात में तो कोई सन्देह नहीं है। जब तक जीवित रहूँगा, आपकी बातें मन में रहेंगी। (मूल बंगला पत्र के अंश)। *(सन्दर्भ- ४८८)*

तीन वर्ष बाद १३.२.६५ को श्री गांगुली ने लिखा, "अब मुझे कोई असुविधा नहीं है।" *(सन्दर्भ-४८६)*

एक दृढ़ व्यक्ति की ललकार

ललकार वाला पत्र श्री गांगुली ने १६८६ में लिखा था। उसका हवाला सदैव प्रासंगिक रहेगा। यह ललकार उन्हें प्रेरणा देगी, जो कैन्सर से आतंकित हो जाते हैं। यह ललकार छह वर्ष बाद सन् १६६५ में भी कायम पाई गयी और एक सचाई बनकर जीवन के अन्त तक कायम पाई जायेगी।

(सन्दर्भ-४६०)

"...आपकी औषधि खा कर ईश्वर की कृपा से अच्छा ही हूँ। इस समय सब तरह से अच्छा हूँ। सब चीज खा सकता हूँ, कोई असुविधा नहीं होती है। शरीर में किसी भी प्रकार की दुर्बलता व कष्ट नहीं है।...और विशेष क्या लिखूँ, आपको मेरा नमस्कार। "...पुनः मेरी पत्नी का कहना है कि उसका परिश्रम सफल रहा। डाक्टर बाबू मुझे स्वस्थ किये.... मैं बच गया हूँ। मैं अब किसी अन्य रोग से मर सकता हूँ, पर कैन्सर से नहीं मरूँगा। यह मेरा आत्म विश्वास है। ईश्वर की दया एवं आप के आशीर्वाद से इस समय मेरा शरीर बहुत सुन्दर है। मैं आपको किस प्रकार यश दूँ, समझ में नहीं आ रहा है।" *(सन्दर्भ-४६०)*

❑

नान-हाजकिन्स लिम्फोमा
(N.H.L.)
अस्थि-क्षय शुरू हो चुका, लीवर और तिल्ली का बढ़ाव

श्री सतीश शंकर मिश्रा
उम्रः ४४ वर्ष
२, लाल कोठी कॉलोनी, पुरदिलपुर
(एम. जी. डिग्री कॉलेज के पास),
गोरखपुर (उ.प्र.)

रोग का इतिहास : दस महीनों से पीठ में दर्द, तीन महीनों से चलने-फिरने में कठिनाई थी, जब जाँच के लिए बढ़े।

जाँच १. मलहोत्रा पैथोलॉजी क्लीनिक (१८/३/९४), सेक्शन नं. २०४३/९४-नॉन हॉजकिन्स लिम्फोमा *(सन्दर्भ-४६१)*।

MEHROTRA PATHOLOGY CLINIC
B-171, Nirala Nagar, Lucknow-226 020
(1954)

CONSULTANT PATHOLOGIST
AND OWNER OF THE CLINIC
Dr. R. M. L. Mehrotra
MD, Ph.D. (London), F.R.C. Path., F.A.M.S.
Retd. Professor & Head of the Department of
Path. & Bact. K. G. Medical College, Lucknow.

Dedicated to the memory of
Smt. Kunti Mehrotra

PATHOLOGISTS :
Dr. (Mrs.) Bandana Mehrotra
M.D (Path. & Bact.)
Dr. (Mrs.) Anita Mehrotra
M.D (Path. & Bact.)
Phone : 71370

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

Patients Name : S.S. Mishra
Referred by : DR. Sanjiv Jha
Specimen : FNAC from abdominal lymph node

Section No.: 2043/94
Received Dt:18/03/94

MICROSCOPIC : Smears stained by H & E and Pap method show rich population of lymphocytes which are slightly larger than normal mature size and has a less condensed chromatin and plenty of light stained cytoplasm. Some of the cells show mild indentation in the nuclei. There is mild anisonucleosis. These cells are intermingled with small mature lymphocytes. A few macrophages with abundant cytoplasm are also present. No Reed Sternberg cells are seen.

COMMENTS : The findings are consistent with Lymphoma most probably Non-Hodgkin's type.

(Anita Mehrotra) (Bandana Mehrotra) (R.M.L.Mehrotra)

DATE :19/03/94

NN

(सन्दर्भ-४६१)

NAME Sh. Satish Shankar AGE & SEX 35 yr M

Mishra S/o Sh REG. NO: 1006/94

Narsingh Pd Mishra

R. T. NO. Th 313/94

ADDRESS Near Mahatma DATE OF REG. 23.5.94

Gandhi Inter DFD. 23.5.94

College Gorakhpur DOD 26.5.95

CONSULTANT DR. A. K. Chaturvedi (M.D)

Dr. A. K. Chaturvedi M.D.

RESIDENT DR. ....

Senior Radiation Oncologist

Hanuman Prasad Poddar Cancer Hospital

DIAGNOSIS .... Bone eroding lesion c collapse of L4

Alha Vatika, Gorakhpur-273000

NHL

and Huge Hepato splenomegaly

(सन्दर्भ-४६२)

२. हनुमान प्रसाद पोद्दार कैन्सर अस्पताल, गोरखपुर (उ.प्र.) रजि. नं. १००६/९४(२३. ०५.१९९४ *(सन्दर्भ-४६२)* रक्ताल्पता, स्प्लीन बहुत बढी हुई, लीवर बढ़ा हुआ। एक्स-रे से अस्थि-क्षय की जानकारी मिली।

पूर्व चिकित्सा : हनुमान प्रसाद पोद्दार कैन्सर अस्पताल में व्यापक चिकित्सा चली। रोगी के शरीर में जगह-जगह गिल्टियाँ थीं। चार-चार सप्ताह के अन्तराल से छः किमोथेरॉपी दी गई, जो दिसम्बर ९४ में पूरी हुई। प्रति माह रक्त-जाँच की रिपोर्ट चिकित्सक देखते रहे। चार महीने तक जब रेकरैन्स नहीं हुआ, तो उन्होंने अनुमान किया कि रोग शायद शरीर में नहीं रह गया है। २६/५/९५ को जाँच और परामर्श के लिए

EXAMINATION OF BLOOD

ERYTHROCYTE -
LEUCOCYTE - 6,900/ C.mm.
PLATELET COUNT - 95,000/ C.mm.
RETICULOCYTE -
DIFF W. B. C. COUNT
POLYMORPH - 51%
LYMPHOCYTE - 44%
EOSINOPHILLS - 05%
MONOCYTES - nil
BASOPHILS - nil
E.S.R. (WINTROBE'S) :
CORRECTED mm/1 hr.
P. C. V. -
HAEMOGLOBIN - 11 Gms./dl.

D. CHAKRABARTY
B.Sc., M.B.B.S. DCP.
(PATHOLOGIST)

Date... 3-8-1995
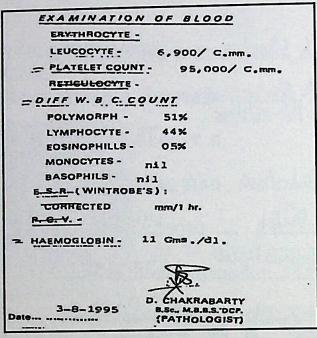
(सन्दर्भ-४६३)

मामला टाटा मेमोरियल अस्पताल बम्बई को भेज दिया गया। बायाप्सी की स्लाइड नहीं होने से वहाँ जाँच नहीं की जा सकी।

किन्तु सितम्बर १९९५ में गले में एक छोटी गाँठ दिखाई पड़ी, जो तेजी से बढ़ने लगी। धीरे-धीरे अनुभव में तीन गाँठें आने लगीं। चिन्ता स्वाभाविक थी। चिकित्सा के दौरान चर्चाओं से जानकारी मिली थी कि अब यदि रोग उभरा तो चिकित्सा कुछ कठिन हो सकती है। श्री मिश्रा किसी वैकल्पिक चिकित्सा की तलाश में थे। इसी उधेड़बुन में डी. एस. रिसर्च सेण्टर के सम्बन्ध में जानकारी मिली।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : १२.०९.९५ से।

सर्वपिष्टी के सेवन से रोगी के सामान्य स्वास्थ्य में सुधार आने लगा। किन्तु गिल्टियों के आकार का बढ़ना नहीं रुका। अक्टूबर पूरा होते-होते स्पष्ट होने लगा कि पोषक ऊर्जा ने नयी गिल्टियों का उभार रोक दिया है। अब श्री मिश्रा को परामर्श दिया गया कि वे चिकित्सकों से प्रार्थना करके केवल रेडियोथेरॉपी द्वारा गिल्टियों को समाप्त करा

... N OF BLOOD

E... -
LEUCOCYTE - 7,900/ C.mm.
PLATELET COUNT - 2,10,000/ C.mm.
RETICULOCYTE -
DIFF W. B. C. COUNT
POLYMORPH - 55%
LYMPHOCYTE - 42%
EOSINOPHILLS - 03%
MONOCYTES - nil
BASOPHILS - nil
E. S. R. (WINTROBE'S) :
CORRECTED mm/1 hr.
P. C. V. -
HAEMOGLOBIN - 14 Gms./dl.

D. CHAKRABARTY
B.Sc., M.B.B.S. DCP.
(PATHOLOGIST)

Date... 5-12-1995

(सन्दर्भ-४६४)

गोरखपुर
...96
आदरणीय डाक्टर साहब
सादर प्रणाम
हमारा स्वास्थ्य ठीक है किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं है। सेवाई के कारण जो ग्लैण्ड्स थे वो भी [illegible] खत्म हो गये।
भवदीय
सतीश शंकर मिश्र
2 लाल कोठी कालोनी
गोरखपुर

(सन्दर्भ-४६५)

लें और किमोथेरॉपी की ओर नहीं बढ़ें। उन्होंने वैसा ही किया, जिससे गिल्टियाँ अदृश्य हो गईं।

'सर्वपिष्टी' का सेवन जारी रहा। छः महीने बाद देखा गया कि अब न तो स्वास्थ्य में कोई परेशानी है, और न ही कोई नयी गिल्टियाँ निकली हैं। उनके ब्लड रिपोर्ट में भी पहले की तुलना में आश्चर्यजनक सुधार देखा गया *(सन्दर्भ-४६३, ४६४)*। श्री मिश्रा को सलाह दी गयी कि वे अब औषधि-सेवन बन्द कर दें। तब से सर्वपिष्टी बन्द है। दिनांक

आदरणीय डा० साहब 25/11/96
आपका पत्र दिनांक 5-11-96 को प्रेषित प्राप्त हुआ, आपके द्वारा रोगियों के विषय में इस तरह की चिन्ता एवं जागरूकता रखने का द्योतक हमारे लिए है। इस विषय में यह कहना है कि मैं बिल्कुल स्वस्थ एवं प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ तथा blood report आपको प्रेषित कर रहा हूँ।
आपसे अनुरोध है कि report का अवलोकन करके मुझे निर्देशित करें कि क्या दवा की आवश्यकता है यदि है तो मैं आकर स्वयं दवा ले [illegible]। कष्ट के लिए क्षमा धन्यवाद।
आपका
सतीश शंकर मिश्र
2-लाल कोठी कालोनी
पुर्दिलपुर
निकट महात्मा गांधी
डिग्री कालेज
गोरखपुर
273001
25/11/96

(सन्दर्भ-४६६)

11.03.2000

सेवा में,

डो० एस० रिसर्च सेण्टर
वाराणसी

आपकी संस्था को बहुत बहुत धन्यवाद।
आपकी संस्था हम लोगों के स्वास्थ्य
के बारे में इतना ख्याल रखती है।
जिसके लिये आपकी संस्था की
जितनी प्रशंसा की जाय कम है।
आगे हम पूर्णतया स्वस्थ हूँ।

सतीश शंकर मिश्र
२, [illegible] कोठी कालोनी
[illegible] गोरखपुर
PH. No 340303

आपका शुभेच्छु
सतीश शंकर मिश्र
गोरखपुर
273001

(सन्दर्भ-४६७)

०६.०४.६६ के अपने पत्र में श्री मिश्रा ने अपने स्वास्थ्य की जानकारी दी, "हमारा स्वास्थ्य ठीक है,किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं है..."। *(सन्दर्भ-४६५)*

सेण्टर की ओर से श्री मिश्रा के स्वास्थ्य की सूचना के लिए भेजे गये पत्र के उत्तर में उन्होंने २५.११.६६ को लिखा, "...आपके संस्थान द्वारा रोगियों के विषय में इस तरह की चिन्ता एवं जागरुकता एक हर्ष का द्योतक हमारे लिए है। इस विषय में यह कहना है कि मैं बिल्कुल स्वस्थ एवं प्रसन्न महसूस कर रहा हूँ..." *(सन्दर्भ-४६६)*।

जुलाई १६६७ में श्री मिश्रा ने सूचित किया कि वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं, जैसे रोग होने से पूर्व थे, और अपना काम उत्साहपूर्वक संभाल रहे हैं।

११/०३/२०००, को श्री मिश्रा ने केन्द्र को पत्र लिखा "आपकी संस्था को बहुत-बहुत धन्यवाद। आपकी संस्था हम लोगों के स्वास्थ्य के बारे में इतना खयाल रखती है। मैं पूर्णतया स्वस्थ हूँ।" *(सन्दर्भ-४६७)*

३१ जुलाई २००१ को श्री मिश्रा सेण्टर के आमंत्रण पर स्वयं वाराणसी पधारे। वे बिल्कुल स्वस्थ और प्रसन्न थे। उन्होंने पुलकित होकर बताया कि बिल्कुल ठीक हैं और उन्हें किसी तरह की कोई दिक्कत नहीं है।

११

अन्ननली का कैन्सर
(CA. OESOPHEGUS)

श्रीमती शान्ति जोशी
उम्र : ६८ वर्ष
द्वारा : श्री अजय कुमार जोशी (आई ए एस)
सचिवालय, उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ-२२६००१

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट एण्ड मेडिकल साइन्सेज, लखनऊ (सी. आर. नम्बर : २०६४०४)

श्रीमती जोशी को एक वर्ष से ६६ से १०० डिग्री तक बुखार बना हुआ था। पेशाब में इन्फेक्शन के कारण एण्टीबायोटिक दवाएँ दी गयीं। बाद में भोजन निगलने में परेशानी होने लगी। बलरामपुर हास्पीटल, लखनऊ में बेरियम टेस्ट कराने पर परिणाम नकारात्मक आया।

२३.०५.१६६७ को इण्डोस्कोपी कराने पर अन्ननली में कैन्सरस ग्रोथ पाया गया। *(सन्दर्भ-४६८)* तीन दिन बाद ही एस. जी. पी. जी. आई. में इण्डोस्कोपी पुनः कराने पर ग्रोथ २५ सेमी से बढ़कर ३० सेमी पाया गया। रिपोर्ट दी गयी " नान- केराटिनाइजिंग स्क्वैमश सेल कार्सिनोमा"। *(सन्दर्भ-४६६)*

श्रीमती जोशी को ११.०६.६७ से २६.०६.६७ के बीच ३३ बार रेडियेशन दिया गया। इसके बाद उन्हें अन्ननली में दर्द की शिकायत बनी रही और हल्का बुखार पाया जाता रहा।

BHAWNA ENDOSCOPY
OESOPHAGO - GASTRO - DUODENOSCOPY EXAMINATION REPORT

NAME- MRS.SHANTI JOSHI. AGE- 68YRS. SEX - FEMALE.
REF.BY- DR.S.S.SHARMA.MD. DATE- 23/5/97

OESOPHAGUS At 25cm from the incisor teeth.there is a polypoid ulcerated growth leading to marked m narrowing of thelumen. Multiple biopsies were taken.

STOMACH Could not be examined.

DUODENUM
1ST PART. :
Could not be examined.
2ND.PART

CONCLUSIONS FINDINGS SUGGESTIVE OF MALIGNANT GROWTH IN OESOPHAGUS WITH STRICTURE.
HISTOLOGY REPORT IS AWAITED.

(ENDOSCOPIST)

ULTRSOUND Facilities are also available.

Bugnlow No. - 4, Shahmeena Road, Chowk, Lucknow - 3 Ph. : 265323
'आस्था' 4/41, Vishal Khand, Gomti Nagar, Lucknow Ph.: 393843

(सन्दर्भ-४६८)

DEPARTMENT OF PATHOLOGY

S.G.P.G.I.M.S, LUCKNOW

NAME :SHANTI DEVI AGE:60yrs. SEX:F
HOSPITAL REGISTRATION NO:209404 :S.G.P.G.I.M.S. WARD:SGE UPD BED:
REFERRED BY :Dr.R.SAXENA PAYMENT:
SPECIMEN :OESOPHAGEAL BX
RECEIVED ON. :26/05/97 LAB NO.:1676/97

PATHOLOGICAL EXAMINATION REPORT

GROSS:

Three FF tissue pieces. All embedded.

MICROSCOPIC:

The oesophageal biopsy displays structure of a tumour composed of lobules of round to polygonal cells displaying nuclear hyperchromatism and pleomorphism and variable amount of cytoplasm. One bit shows loose fascicle of spindle shaped to elongated atypical cells.

DIAGNOSIS : NON-KERATINIZING SQUAMOUS CELL CARCINOMA.

(KAILESH PANDEY)
PATHOLOGIST

(सन्दर्भ-४९९)

इसी दौरान श्री जोशी को डी. एस. रिसर्च सेण्टर के विषय में जानकारी प्राप्त हुई। उन्होंने सेण्टर से 'सर्वपिष्टी' मंगाकर सेवन कराने का निर्णय ले लिया।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : ३०.०८.९७ से। श्रीमती जोशी को सर्वपिष्टी निरंतर

[illegible]

उत्तर प्रदेश शासन
लघु सिंचाई एवं ग्रामीण
अभियंत्रण सेवा विभाग।

लखनऊ: दिनांक: 03 अगस्त, 1998

प्रिय प्रो० त्रिवेदी,

मेरी माता श्रीमती शान्ती जोशी के कैन्सर रोग के उपचार के संबंध में मेरे पत्र दिनांक 4 मार्च, 1998 के क्रम में आपको उनकी अद्यावधिक स्थिति निम्नवत् अवगत कराना है:-

1. दिनांक 27 जुलाई, 1998 को संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ में बेरियम स्वैलो टेस्ट (Barium Swallow Test) में स्थिति सामान्य एवं सन्तोषजनक पायी गयी।
2- वर्तमान में खाना आदि खाने में उन्हें किसी प्रकार कठिनाई नहीं प्रतीत होती है। कमर में हरपीज (Herpies) का इन्फेक्शन, जो लगभग 7 माह पूर्व हुआ था, उसके कारण अभी भी समय-समय पर दर्द होता रहता है।

2- उपरोक्त स्थिति आपके सूचनार्थ एवं रिकार्ड हेतु प्रेषित कर रहा हूँ।

सादर

भवदीय,

(अजय कुमार जोशी)

डा० एस०एन० त्रिवेदी,
डी०एस० कैन्सर रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
147 ए, रवीन्द्रपुरी कालोनी,
लेन नं०-8, वाराणसी-5

(सन्दर्भ-५००)

अजय कुमार जोशी
सांसद
Received 11.6.99

कार्यालय : CH 3002
: 238055
आवास : 391656

अर्द्धशा. प. सं. 33/44-/पी0एस0/एस0एम0आई0
उत्तर प्रदेश शासन
लघु सिंचाई एवं ग्रामीण
अभियंत्रण सेवा विभाग।
लखनऊ : दिनांक : 8 जून, 1999

प्रिय प्रो0 त्रिवेदी,

मेरी माता श्रीमती शान्ती जोशी के कैन्सर रोग के उपचार के संबंध में मेरे पत्र दिनांक 3 अगस्त, 1998 के क्रम में आपको उनकी अद्यावधिक स्थिति निम्नवत् अवगत करानी है:-

1. दिनांक 15 फरवरी, 1999 को संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ में बेरियम स्वेलो टेस्ट(Barium Swallow Test) में स्थिति सामान्य एवं सन्तोषजनक पायी गयी। अगली टेस्ट की तिथि 14-7-1999 को निर्धारित की गई है।

2. वर्तमान में खाना आदि खाने में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई नहीं प्रतीत होती है। कमर में हरपीज(Herpes) का इन्फेक्शन, जो लगभग 1 वर्ष 9 माह पूर्व हुआ था, उसके कारण अभी भी समय-समय पर काफी दर्द रहता है।

3. वर्तमान में आपके द्वारा प्रेषित दवा सप्ताह में दो बार रविवार तथा बुधवार को ले रहीं हैं जो अब समाप्त हो चुकी है।

उपरोक्त स्थिति आपके सूचनार्थ एवं रिकार्ड हेतु प्रेषित कर रहा हूं।

भवदीय,

(अजय कुमार जोशी)

डा0 एस0एस0 त्रिवेदी,
डी0एस0 कैन्सर रिसर्च इन्स्टीट्यूट,
147 ए, रवीन्द्रपुरी कालोनी,
लेन नं0-8, वाराणसी-5

(सन्दर्भ-५०१)

दी जाती रही। सर्वपिष्टी ने उनपर बहुत ही अच्छा प्रभाव दिखाया।

दिनांक ०३.०८.९८ को उनके पुत्र श्री अजय कुमार जोशी ने केन्द्र को पत्र लिखा "...दिनांक २७ जुलाई १९९८ को संजय गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान लखनऊ में वेरियम स्वेलो टेस्ट में स्थिति सामान्य एवं सन्तोषजनक पायी गयी। वर्तमान में खाना आदि खाने में उन्हें किसी प्रकार कठिनाई नहीं प्रतीत होती है...."।*(सन्दर्भ-५००)*

०८ जून १९९९ को भेजे पत्र में श्री जोशी ने अपनी माँ के बारे में यही लिखा कि स्थिति बिल्कुल सामान्य है और किसी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है।*(सन्दर्भ-५०१)*

६२

कण्ठनली (लेरिंग्स) का कैन्सर
(CA. LARYNX)

श्री रियायतुल्ला, ७६ वर्ष
३३४, अनता,
शाहजहाँपुर, उ.प्र.

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : केशलता कैन्सर एण्ड जनरल हॉस्पीटल, बरेली, सी. आर. नं.४७२/६३, बायाप्सी नं. ७५/६३, दि. ३०.०१.६३। *(सन्दर्भ-५०२)*
संजय गांधी पोस्ट ग्रेजुएट इन्स्टीट्यूट, लखनऊ में ८.४.६३ तक रेडियोथेरापी। *(सन्दर्भ-५०३)*

'सर्वपिष्टी' द्वारा चिकित्सा : १६.४.६३ से २५.११.६३ तक।

श्री रियायतुल्ला लगभग तीन महीनों से आवाज के भारीपन तथा खाना निगलने की कठिनाई से पीड़ित थे। कष्ट अधिक बढ़ा, तो केशलता कैन्सर अस्पताल, बरेली में जाँच कराई। कण्ठनली का कैन्सर पाया गया। अस्पताल से सलाह पाकर संजय गांधी

Keshlata Cancer & General Hospital
Dalapeer, Stadium Road, Bareilly-243 122
Histopathology Report

C. R. No. 472/93 Bed No. .... Biopsy No. 75/93
Patient's Name Mr. Riyat Ullah. Age/Sex 76/M Date 30-1-93
D/I Dr. Vipul Kumar MD Specimen from Biopsy from Larynx.
Received on 27-1-93 Reported on 30-1-93

Diagnosis: INVASIVE SQUAMOUS CELL CARCINOMA (Well differentiated).

Dr Sangeeta Gupta
M.D. (Path.)
Pathologist

(सन्दर्भ-५०२)

DR. NARESH BHATIA
M.S. (OTOLARYNGOLOGY),
ASSOCIATE PROFESSOR IN E.N.T.
K. G. MEDICAL COLLEGE

PHONES: 73683, 73363
C-31, SECTOR "C"
TRIANGULAR PARK OPP. POST OFFICE
NIRALA NAGAR, LUCKNOW-226 020

Riyatullah – 76y
c/ Hameed Ahmad 114/1
Nayagaon West Lucknow.
Ref by Dr. Jitendra Saxena MS.
Surgeon.

17-2-93.

(सन्दर्भ-५०३)

अस्पताल, लखनऊ में रेडियोथेरापी ली। वहीं उन्हें डी. एस. रिसर्च सेण्टर की जानकारी मिली।

८ अप्रैल को रेडियोथेरापी का कोर्स पूरा हुआ। अस्पताल भी अधिक उत्साहित नहीं था। छिहत्तर वर्षीय व्यक्ति न तो सर्जरी बर्दाश्त कर सकता था, न किमोथेरापी। अस्पताल से छुट्टी मिली तो हालत और बदतर थी। आवाज पूरी तरह बन्द थी और

तिरसठ हफ्ता ८ अप्रैल से शुरु होकर टाईम को खतम हुआ
डाक्टर साहब नमस्ते
सेवा में निवेदन है
इस हफ्ते में लगभग आधा आवाज निकलने लगा है
खांसी अब पहले से और कम हो गई है बलगम तो कम निकलता है बलगम पतला होता है
मरज भी अब पहले से कुछ घट गई है
रियासतुल्ला

(सन्दर्भ-५०४)

डाक्टर साहब नमस्ते
निवेदन है कि
आप का लिफाफा मिला आपने हमारे स्वास्थ्य
के विषय में पूछा है तो जब से हमने आप
का इलाज छोड़ा है अब तक बिल्कुल ठीक हूँ
वह मर्ज अभी तक नहीं हुआ है।
आपका बहुत बहुत धन्यवाद।
रियायतुल्ला शाहजहाँपुर
24-4-966
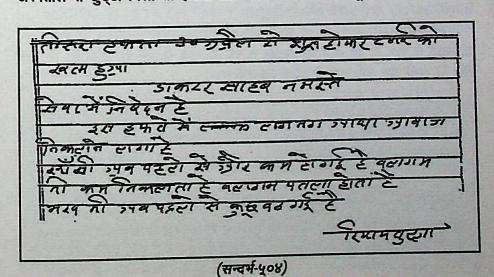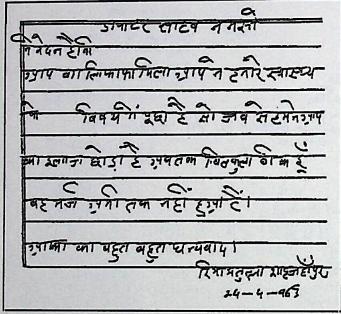
(सन्दर्भ-५०५)

खाने-पीने के अर्थ में भी कोई सुविधा नहीं थी।

१६.४.६३ को 'सर्वपिष्टी' आरम्भ की। औषधि का सुप्रभाव पहले दो सप्ताह में ही प्रगट हो गया। श्री रियायतुल्ला ने केन्द्र को रिपोर्ट दी, "दवा के इस्तेमाल से खाँसी कुछ कम हो गयी है। बलगम कम और पतला निकलता है। हलक में जलन कम है। आवाज अब थोड़ी- थोड़ी निकलने लगी है।"
तीन सप्ताह पूरा होते-होते और भी सुधार हो गया। उन्होंने कुछ कष्टों के साथ आवाज में सुधार और भूख बढ़ जाने की रिपोर्ट दी। *(सन्दर्भ- ५०४)*।

उत्तरोत्तर सुधार होता गया। स्वास्थ्य भी बहुत बेहतर हो गया। दो महीने दवा लेने के बाद व्यवसाय में भी यथाशक्ति भागीदारी निभाने लगे। सात महीने नियमपूर्वक 'सर्वपिष्टी' का सेवन किया। जब कोई असुविधा नहीं रह गई ,तो दवा बन्द कर दी। तब से अब तक कभी कोई कष्ट नहीं हुआ।

श्री रियायतुल्ला ने २४.४.६६ को केन्द्र पर रिपोर्ट भेजी—"...आपने हमारे स्वास्थ्य के विषय में पूछा है, तो आप का इलाज छोड़ने के बाद भी अब हम ठीक हैं। वह मर्ज फिर से अभी तक नहीं हुआ है।..." *(सन्दर्भ-५०५)* ❑

अब तो उन उदाहरणों की भरमार हो गयी है जिनमें लोगों ने ऐसे सामान्य कष्टों के लिये, जो कभी भी जानलेवा नहीं होते, ड्रगौषधियों की अनियमित मात्रा अथवा अतिमात्रा का व्यवहार किया और वे उन दवाओं के ही शिकार हो गये।

चिकित्सा-सेवाओं के साथ शताब्दियाँ गुजारी जा चुकी हैं, चिकित्सा-व्यवसाय के साथ पचास वर्ष भी नहीं चला जा सकेगा। चिकित्सा की सार्थकता सेवा बनने में है, व्यवसाय से समझौता करके वह विनाशक बन गयी है।

६३

गले का कैन्सर
(पायरी फार्म फोसा, ए-इ फोल्ड,
फेल्स कॉर्ड का कैन्सर)

(CA. THROAT) (R)
(PYRIFORM FOSSA,
A-E FOLD & FALS CORD)

श्रीमती कुसुम कपूर, ६६वर्ष
द्वारा : श्री के. एन. कपूर
चार्टेड इन्जिनियर
क्लब रोड
जलपाई गुड़ी (प. बंगाल)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : रजि. नं. बी. एफ. १६३४६, दि. १६.१०.६३। पैथा. नं. २५६६ बी.एफ। पूअरली डिफरैंशियेटेड स्क्वैमस कार्सिनोमा (दाहिना) ऑफ द पायरी फार्म फोसा, ए-इ फोल्ड एण्ड फैल्स कॉर्ड। *(सन्दर्भ-५०६, सन्दर्भ-५०७ और सन्दर्भ-५०८)*

कार्सिनोमा का स्वभाव मेटेस्टेटिक था अर्थात् इसे अविराम एक से दूसरे शरीर-क्षेत्रों और संस्थानों में उतरते जाना था। स्थिति पेचीदी तो थी ही। टाटा मेमोरियल अस्पताल

Microscopical (Brought Forward)

25698 BF

Poorly differentiated squamous carcinoma of the (R) pyriform fossa, A-E fold + false cord which infiltrates the underlying soft tissues deeply. Laryngeal skeleton is not involved.

(सन्दर्भ-५०६)

Physician's Follow up Notes

25/x/93 DL'Scopy I GA:/ ...

findings:

large tumour involving
(1) (R) AE fold.
(2) (R) False Cord/Ventricle.
(3) Medial wall of (R) Pyriform fossa
(4) Coming upto the interarytenoid area.
Base tongue / Vallecula : free.
PC : free

(सन्दर्भ-५०७)

में २७.१०.९३ को सर्जरी द्वारा कण्ठनली (लेरिंग्स) और स्वर-तन्तुओं (वोकल कार्ड) को निकालकर हटा दिया गया। एक गहरा और बड़ा ऑपरेशन करना पड़ा।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : १६.२.९४

'सर्वपिष्टी' का प्रभाव तो सकारात्मक था किन्तु प्रगति की गति धीमी थी। यह चिकित्सा रोगिणी की एक तकलीफ पर नहीं काम करती दिखायी देती थी— वह समस्या थी श्वास की तकलीफ और इसके कारण थकान का भाव था। शेष सर्वत्र प्रगति दिखायी दे रही थी।

दिनांक ३०.१२.९४ को इ. एन. टी. विशेषज्ञ ने व्यापक परीक्षण करके रिपोर्ट दी कि रोगिणी एकदम कैन्सर-मुक्त है। उनके पति श्री के. एन. कपूर ने दिनांक १.२.९५ को रिपोर्ट लिखा। (मूल अंग्रेजी पत्र का हिन्दी अनुवाद)—

BY. 19349: 19.10.93 (Reported by Dr.Kulkarni)
Ba.swallow:-Passage of barium was smooth through the hypopharynx and oesophagus.Prevertebral soft tissue space is within normal limits. However there is a mass seen involving left vallecula epiglottis and right A.E. fold[illegible] right pyriform sinus.
Impression:-Supraglottic mass.more on right side.

(सन्दर्भ-५०८)

No New Problem. ECG. was done on 30.12.94 and ENT specialist was also consulted on 31.12.94. X-Ray of heart as well as blood testing was done, all was found O.K. She is maintaining her weight. Some alopathic medicines in addition had to be taken as per advice of the heart Specialist.

हस्ताक्षर/Signature

दिनांक/Date

1.2.95.

(K.N. Kapoor)

रोगी से सम्बन्ध

Relation with Patient

Husband.

(सन्दर्भ-५०६)

"३०.१२.६४ को इ. सी. जी. की गयी। सीने का एक्स-रे और रक्त-परीक्षा भी हुई। सब कुछ ठीक पाया गया। उनका वजन ठीक-ठीक बरकरार है। हार्ट स्पेशलिस्ट के परामर्श से कुछ एलोपैथिक दवाएँ दी गयीं।" *(सन्दर्भ-५०६)*

स्वास्थ्य-स्थिति को देखकर 'सर्वपिष्टी' वर्ग की औषधियाँ बढ़ते हुए अन्तराल के साथ दी जाने लगीं। दिनांक २३.२.६६ को श्री के. एन. कपूर ने रिपोर्ट दी "कोई समस्या नहीं है" और जानना चाहा कि 'सर्वपिष्टी' का कोर्स कब तक पूरा होगा।

खूराकों के बीच का अन्तराल और भी बढ़ता गया। दिनांक १०.१०.६७ को श्री कपूर ने औषधि की खूराकें बीस दिनों के अन्तराल के साथ दिये जाने का हवाला देते हुए रोगिणी के थोड़े ही कार्य से थक जाने की सूचना के साथ जानना चाहा कि ऑपरेशन के बाद से रोगिणी की जो आवाज चली गयी थी, क्या अपेक्षा की जा सकती है कि वे बोल पाएँगी। *(सन्दर्भ-५१०)*

Name of Patient – Mrs. Kusum Kapoor
C/o K.N. Kapoor, Club Road, Jalpaiguri.

Now she is taking medicine at interval of Twenty (20) days.

She feels exhaustion while doing any work. As the voice box has been removed. So there appears no chance of her speaking in future.

10/10/97

(सन्दर्भ-५१०)

६४

कैन्सर लेरिंक्स, फेरिंक्स और जिह्वामूल
(CA. LARYNX PHARYNX FOSSA , A-E FOLD & FALS CORD)

श्री एस. चक्रवर्ती, ६३ वर्ष,
द्वारा : श्री एच. सी. पाल रामतल्ला,
मास्टर पारा, हट्टन रोड
आसनसोल, बर्दवान (प. बंगाल)

रोग एवं चिकित्सा का संक्षिप्त इतिहास
(रोगी द्वारा प्रस्तुत)

भोजन का ग्रास निगलने में असुविधा शुरू हुई और फिर कठिनाई होने लगी। जब दर्द होने लगा, तो होमियोपैथिक चिकित्सा की शरण ली। कुछ लाभ नहीं प्रतीत हुआ, बल्कि गर्दन में बाईं ओर सूजन बढ़ती दिखाई पड़ी और एक माह के भीतर ही एक इंच व्यास का एक दर्दीला ट्यूमर निकल आया। कष्ट जीभ हिलाने में भी था, गले में भी था।

CANCER CENTRE
& WELFARE HOME

RCS

X-RAY Report

S. Chakraborty — 60 — M — Date 29.10.94

94/6226

DR. J. N. Guha

Ca (L) Laryngo Pharynx — Base of the tongue

15X12— 12X10—
12X12— 10X 8—

1078

S.T.D. (Lat)

Base of the tongue & vallecula are normal.
A large soft tissue mass is seen in laryngopharynx obliterating the laryngeal airway. Pre-vertebral soft tissue is not clearly seen separately from the mass. Cervical vertebrae show gross degenerative change.
Suggestive of malignant mass

31/10

(सन्दर्भ-५११)

1) I am slowly gaining weight of my body.
2) General activity and strength is also improving.
3) At present cough has increased and it is dry may be due to attack of cold
4) Constipation, as it was very hard stool earlier has become softer now-a-days.
5) Hunger and digestion power has also improved.
6) But throat internal remains always dry and partial restriction is there when swallowing food.
7) Submandibular gland as it got expanded initially has become reduced after radiotherapy at Thakurpukur. Cancer Center Calcutta but still it has not come back to normal stage.

Yours S. Chakraborty
25.1.95.

(सन्दर्भ-५१२)

डी. एस. रिसर्च सेण्टर से एक मित्र ने सम्पर्क किया। वहाँ से परामर्श मिला कि किसी कैन्सर अस्पताल में जाँच करा ली जाय और यदि कैन्सर की पुष्टि हो जाय, तो रेडियेशन करा लिया जाय, ताकि कुछ खाने - निगलने तथा दवा लेने में भी सुविधा रहे।

ऐसा ही हुआ। कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम में जाँच हुई और रेडियेशन हुआ। रेडियेशन पूरा होने के एक सप्ताह बाद 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ कर दी गयी।

१. जाँच : बी. आर सिंह हॉस्पीटल, पूर्व रेलवे, कलकत्ता। स्लाइड नं. सी ४६४-४६६/६४, दिनांक २७-१०-६४ 'पूअरली डिफरेंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा'
२. रेडियेशन : कैन्सर सेण्टर एण्ड वेलफेयर होम, ठाकुरपुकुर (रजि. ६४/६७२१, दिनांक २६-१०-६४)।*(सन्दर्भ-५११)*

'सर्वपिष्टी' शुरू हुई : २६-११-६४

समय-समय पर केन्द्र को दिये गये स्वास्थ्य-सम्बन्धी लिखित विवरणों के अनुसार–

२५-०१-६५ : "मेरे शरीर का वजन धीरे-धीरे बढ़ा है।

-सामान्य सक्रियता और शक्ति भी बढ़ी है।

-ठंढ के कारण इन दिनों कफ व सूखी खाँसी बढ़ गयी है।

-भूख व पाचन शक्ति भी बढ़ी है।

ठाकुरपुकुर कैन्सर सेण्टर, कलकत्ता में रेडियेशन के बाद ग्लैण्ड छोटी तो हो गयी, लेकिन पूरी तरह सामान्य स्थिति नहीं आयी।" *(सन्दर्भ-५१२)*

२४-०३-६५ : "वर्तमान समय में मेरे पिताजी स्वस्थ अनुभव कर रहे हैं। ठाकुरपुकुर कैन्सर हॉस्पीटल के डॉक्टरों ने उन्हें अपने काम में लग जाने की सलाह दी है। उन्होंने

After taking medicine his apetite increased. Gradually he could take solid food. His Himoglobin level is increased. At present his Himoglobin is 13.5. He is now feel well. The swealing of his throat has gone. Now he speak well.

Aramitra Chakraborty.
Son of Satyananda Chakraborty.
30/3/66

(सन्दर्भ-५१३)

फैक्ट्री में हल्के काम करने का सुझाव दिया है। उनके अनुसार मेरे पिताजी पूरी तरह स्वस्थ हैं। वर्तमान समय में आपकी राय जानना चाहता हूँ।
''-ए. चक्रवर्ती।

१७-०७-६५ ''मैं आपका पुराना रोगी हूँ। आपके केन्द्र से बीच में दो माह औषधि नहीं ले सका। पुनः पिछले सप्ताह से शुरू किया, सुधार अनुभव कर रहा हूँ। एक सप्ताह पहले कुछ कदम चलने पर ही थकान अनुभव होती थी। अब यह कम हो गयी है। मुझे अच्छी शक्ति मिली है।''

३०-०३-६६ : ''उनका हेमोग्लोबिन स्तर ऊँचा आ गया है। वर्तमान में वह १३.५ है। वे अच्छा अनुभव कर रहे हैं। गले की सूजन समाप्त हो गयी है। अच्छी तरह बोल लेते हैं। जुलाई ६५ में वे पुनः अपनी ड्यूटी पर लग गये तथा सामान्य रूप से अगस्त ६५ में सेवानिवृत्त भी हुए। रोग-संबन्धी कोई बाधा नहीं है। मुँह का सूखापन भी प्रायः समाप्त है।'' ए. चटर्जी *(सन्दर्भ-५१३)*

However later I could appreciate that I should not discontinue my medicine till it is advised by experts of your concern. Hence I have come back to start treatment i.e, taking medicine as per your advice and continue till it is required as per your advice. At present I am ok. except few minor problems as stated below:
I have strong faith in the treatment being carried out in your concern and hope to be out of clutch of the dreadful diseases for ever. I shall be ever thankful to God if my above declaration can come to the improvement of the treatment of so many people suffering from this sort of dreadful disease and build up faith and boost up mentally.

Dated:
The 28th May 1997

Yours faithfully
Satyananda Chakraborty

(सन्दर्भ-५१४)

My condition has improved since I have started back to take medicine after a long gap. Better apetite, better sleep and digestion and I am getting a bit more energy towards my daily activities. Hence I have to continue medicine without any further gap. Please do me a favour to send the medicine as your earliest. Thanking you

[illegible] Chakraborty

30.07.97

(सन्दर्भ-५१५)

२८-५-६७ को श्री चक्रवर्ती ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर को पत्र लिखकर अपनी हालत का विवरण दिया। (अंगेजी पत्र के कुछ अंश अनूदित तथा उद्धृत हैं)–

"...दो वर्ष आपकी औषधि लेकर मैंने अपने को पूर्ण स्वस्थ मान लिया (वैसे हूँ भी)। गृहस्थी की जिम्मेदारियों, सेवा-निवृत्ति और लड़की की शादी ने आर्थिक तनाव पैदा किया और एक बार दवा बन्द कर दी। बाद में समझा कि औषधि तभी बन्द करनी चाहिए जब आपका केन्द्र परामर्श दे। आजकल मैं पूर्णतः ठीक हूँ।...आपके केन्द्र द्वारा चलाई जानेवाली चिकित्सा में मेरा दृढ़ विश्वास हो गया है।"...*(सन्दर्भ-५१४)*

३०-७-६७ का पत्र (हिन्दी अनुवाद)

"लम्बे गैप के बाद दुबारा दवा शुरू की। तबसे स्वास्थ्य में अच्छी प्रगति हो रही है। भूख बढ़ी है, नींद अच्छी आने लगी है, पाचन सुधर गया है। अपने कर्त्तव्यों के निर्वाह के लिए अच्छी शक्ति-स्फूर्ति मिली है।" *(सन्दर्भ-५१५)* ❑

प्रकृति ने प्रत्येक जीवन-इकाई को अपना आहार पहचानने की सचेतन योग्यता दे दी है। जीवन की संरचना से सर्वथा अनुकूलता रखने के कारण प्राकृतिक आहार स्वाद, गन्ध आदि के विचार से आकर्षक होते हैं। प्रत्येक जीव अपने आहार की दिशा में गतिशील है। चींटी गुड़ की तलाश करती है, खटमल का उससे कोई सरोकार नहीं होता। जीवन-चेतना का सन्देश है कि जो आहार नहीं है, उससे समझौता नहीं किया जाय। देखिये वन्य जीवों की ओर...। वे अभोज्यों से समझौता नहीं करते। इसी कारण उन्हें जन्म और मृत्यु के बीच व्याधियों से नहीं जूझना पड़ता।

'पोषक ऊर्जा' प्रकृति का अकाट्य नुस्खा है। इसे ग्रहण करके जीव अपने स्वास्थ्य का विकास करता है, प्रतिकूलताओं का मुकाबला करता है और रोगों को दूर करता है।

६५

कण्ठनली का कैन्सर
(CA. LARYNX)

श्री सुनील चन्द्र बीर, ५६ वर्ष
द्वारा श्री जयन्त कुमार बोस
पो. कमलपुर टाउन, त्रिपुरा (नार्थ)

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : विगत कई महीनों से असुविधाएँ झेलते और सामान्य उपचार करते कोई समाधान नहीं मिला तो श्री बीर ने डॉ. पी. रॉय को दिखाया। उन्होंने कैन्सर की आशंका जाहिर की, तब बायाप्सी जाँच की व्यवस्था हुई। रिपोर्ट में आया–'माडरेटली डिफरैंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा' संजयनाथ पैथॉलॉजिस्ट अगरतल्ला (रे. नं. २५१)। *(सन्दर्भ-५१६)*

रेडियोथेरापी : कैन्सर हॉस्पीटल, अगरतल्ला, त्रिपुरा (ओ.पी.डी. २६/६४), रेडियोथेरापी नं. २२६४। रेडियेशन १७-१-६४ से १६-३-६४ तक। *(सन्दर्भ-५१७ और सन्दर्भ-५१८)*

Duplicate

Dr. Sanjay Nath
MBBS. MD. (Cal.)
(Pathologist, G. B. Hospital)
34. A. A. Road, Agartala
Near Joyguru Pharmacy.

Residence :
Dhaleswar, Road No. 18
Phone—3624
Visiting Hours
Morning : 7-30 A.M. to 9-30 A.M.
Evening : 4-30 P.M. to 7 P.M.
SUNDAY CLOSED

Ref. No. 251
Date 9.3.74

Name Sunil Chandra Bir
Advised by Dr. P. Roy D.L.O; M.S.

REPORT ON THE EXAMINATION OF
Biopsy from laryngeal growth

Section shows moderately diff
squamous cell carcinoma

(सन्दर्भ-५१६)

कष्टों और उलझावों में फर्क नहीं आया

रेडियोथेरापी से खुश्की आनी तो स्वाभाविक थी। कुछ अन्य असुविधाएँ भी रेडियेशन के कारण होती हैं। किन्तु ये असुविधाएँ समय के साथ घटती

जाती हैं। श्री बीर के साथ ऐसा कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। दर्द अभी भी कायम था। निगलने में कठिनाई समाप्त नहीं हुई थी, अथवा यों कहें कि रोगी ऐसा नहीं बताता था कि उसे निगलने में कुछ भी आराम मिला है। भूख समाप्त हो गई थी। नींद नहीं आती थी। चिन्ता का सबसे बड़ा कारण निरन्तर टूटता हुआ स्वास्थ्य था। वे दिन-ब-दिन कमजोर होते जा रहे थे।

बताया गया था कि एक-डेढ़ महीने में आराम मिल जायेगा। जब तीन माह पूरे होने चले, तब परामर्श और अगली चिकित्सा में किसी की रुचि नहीं थी। इन्हीं दिनों उन्हें कई स्थानों से डी. एस. रिसर्च सेण्टर और 'सर्वपिष्टी' के विषय में कुछ विश्वसनीय समाचार मिले।

EXPOSURE RECORD SHEET
CANCER HOSPITAL
AGARTALA, TRIPURA
P.O. KUNJABAN, AGARTALA—799006
DEPARTMENT OF RADIATION ON COLOGY

Name— Sunil Ch. [illegible]

Address— Kamalpur

Registration No.— O. P. D. 2894 R.T. 2294

Diagnosis— Ca [illegible]

Referred by— Dr. K [illegible]

Attending Out-door on—
Monday/Tuesday/Wednesday/Thursday/
Friday/Saturday—

(सन्दर्भ-५१७)

3500 rads
15 F.

RADIATION STARTED ON

EXPOSURE RECORD

No	Date	Sig.	No.	Date	Sig.
1.	17.1.94	[illegible]	16.	28.2.94	[illegible]
2.	18.1.94	[illegible]	17.	1.3.94	[illegible]
3.	19.1.94	[illegible]	18.	2.3.94	[illegible]
4.	20.1.94	[illegible]	19.	3.3.94	[illegible]
5.	21.1.94	[illegible]	20.	4.3.94	[illegible]
6.	24.1.94	[illegible]	21.	7.3.94	[illegible]
7.	25.1.94	[illegible]	22.	8.3.94	[illegible]
8.	27.1.94	[illegible]	23.	12.3.94	[illegible]
9.	28.1.94	[illegible]	24.	15.3.94	[illegible]
10.	31-1-94	[illegible]	25.	17.3.94	
11.	1-2.94	[illegible]	26.		
12.	2.2-94	[illegible]	27.		
13.	3.2-94	[illegible]	28.		
14.	4.2.94	[illegible]	29.		
15.	5.2.94		30		

(सन्दर्भ-५१८)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २०-६-६४ (केन्द्र से दवा १५-६-६४ को प्राप्त की गयी)।

प्रगति विवरण : 'सर्वपिष्टी' ने प्रारम्भ से ही कुछ आश्वस्त करना शुरू किया। शक्ति आयी, स्फूर्ति आयी, धीरे-धीरे कष्ट भी शमित होने लगा। दर्द में लगभग छः सप्ताह बाद आराम मिलना शुरू हुआ। अब खाना निगलने में भी सहूलियत हो गयी।

७-१-६५ की रिपोर्ट

औषधि-सेवन के छः महीने पूरे होने पर श्री बीर ने केन्द्र को पत्र लिखा, "आपकी औषधि के सेवन

To D.S. RESEARCH CENTER.
160, Mahatma Gandhi Road
(2nd Floor)
CALCUTTA - 700007
Date - 7/6/95
Dear Sir, I am yours C.A patient namely Sunil Ch. Bir of Kamalpur Town. Tripura, Dhalai dist. I have used your medicin 3(Three) times. At last I used your medicin month of April, 1995. My effected area is Neck. Before few days I have consult to Dr. Prabir Saha (E.N.T) of Kamalpur Hospital. Dr. P. Saha suggest to me I am fully O.K.

Yours faithfully
Sunil Ch. Bir

(सन्दर्भ-५१६)

के साथ-साथ मैं क्रमशः अच्छा और स्वस्थ अनुभव करता गया। मैंने कमालपुर अस्पताल के इ. एन. टी. विशेषज्ञ (डॉ. प्रवीर साहा) से जाँच कराई। उन्होंने बताया कि अब गले में किसी प्रकार की परेशानी दिखायी नहीं देती।"

एक वर्ष बाद की रिपोर्ट : श्री बीर ने अपने ७-६-९५ के पत्र में लिखा, "कुछ ही दिन पहले कमालपुर अस्पताल के इ. एन. टी. विशेषज्ञ डॉ. प्रवीर साहा को फिर दिखाया था। जाँच के बाद उन्होंने कहा, तुम अब पूरी तरह रोगमुक्त हो।.... इधर कभी-कभी सिर में थोड़ा दर्द हो जा रहा है, और जहाँ कैन्सर था वहाँ कुछ असुविधा-सी लगती है।" (सन्दर्भ-५१६)

DATE - 28-5-96
DEAR Sir, I have received your letter on 29/4/96. I the patient who have been taking treatment under your institution since 2 yrs.
Recently, I have examined by the local doctor (ENT specialist) and he declared that now I am OK. But I would like to inform you that specifically pain occurred in my affected area during the period of Amabaysa, Purnima & Akadhasi
I am awaiting for your next suggestion with very anxiously
Thanking you;
Sri. Sunil Ch. Bir.

(सन्दर्भ-५२०)

लगभग दो वर्ष बाद दिनांक २८-५-९६ की रिपोर्ट :

श्री बीर का पत्र—"इ. एन. टी. स्पेशलिस्ट ने बताया कि सब कुछ ठीक है, किन्तु अमावस्या, पूर्णिमा और एकादशी को मुझे थोड़ी असुविधा होती है।" (सन्दर्भ-५२०) बाद में श्री बीर स्वस्थ और सामान्य जीवन व्यतीत करने लगे। ❑

कैंसर लेरिंजो-फेरिंक्स
(CA. LARYNGO PHARYNX)

श्री पुलिन बिहारी दत्ता, ६७ वर्ष।
माखला, शीतल तल्ला
पो. : माखला, जिला : हुगली (प. बंगाल)

रोग का इतिहास : अप्रैल ६४ से गले की दाहिनी ग्लैण्ड में असुविधा मालूम होने लगी। खास ध्यान नहीं दिया गया। सितंबर '६४ में आवाज बैठ गई, तो होमियोपैथिक इलाज चलाया गया। नवंबर के प्रारम्भ में सर्दी और खाँसी का प्रकोप बढ़ गया। एलोपैथिक दवाएँ भी बेअसर रहीं। नवंबर १२ को साँस लेने-छोड़ने में अवरोध होने लगा। १४ नवंबर को एस. एस. के. एम. अस्पताल कलकत्ता में ट्रेकेस्कोमी करके ट्यूब डाल दी गई, जिससे श्वास में कुछ राहत मिली। बायाप्सी से

CHOWRINGHEE CLINIC AND LABORATORY
1, Suburban Hospital Road,
Calcutta-700 020

Ref. No. C.L.-167/94 Date 22.11.94

REPORT ON HISTOPATHOLOGICAL EXAMINATION

Name SREE PULIN BEHARI DUTTA
Referred by Dr. PROF. S.N.MUKHERJEE M.S: D.L.C.: R.C.S.(ENG)
Material TISSUE FROM VOCAL CORD.

Microscopical Examination :
SECTION SHOWS THE FEATURES OF MODERATELY DIFFERENTIATED SQUAMOUS CELL CARCINOMA.

Final Diagnosis :
MODERATELY DIFFERENTIATED SQUAMOUS CELL CARCINOMA.

Note : Slide Enclosed :
MD -

30.11.94

(सन्दर्भ-५२१)

I wente to Prof. S.N. Mukherjee Ex. Prof. & ENT surgeon of SSKM Hospital for check up who has given his remark as "No residue/no recurrence of 29-11-95 & 9-2-96.

Pulin Behari Basu
24/96

(सन्दर्भ-५२२)

कैन्सर की जानकारी हुई, जो फैलकर लेरिंग्स और फेरिंग्स को घेर चुका था।

जाँच : चौरंगी क्लिनिक एण्ड लैबोरेटरी, कलकत्ता की बायाप्सी (रेफ. नं. सी. एल-१६७/६४, दिनांक ३०-११-६४) की रिपोर्ट से कैन्सर होने की जानकारी मिली।

'माडरेटली डिफरेंशिएटेड स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा' *(सन्दर्भ-५२१)*

चिकित्सा का चुनाव : कैन्सर होने की वैज्ञानिक पुष्टि ने श्री दत्ता, उनके परिजनों तथा मित्रों के मन पर वह प्रभाव छोड़ ही दिया, जो स्वभावतः हुआ करता है। चिकित्सा का आयोजन भी तो करना ही होगा। बात रही चिकित्सा के चयन की। श्री दत्ता को अपने उस भाई की चिकित्सा और यंत्रणा का स्मरण हो आया, जो सन् १९८७ में ब्रेन ट्यूमर से मरा था। वही चित्र परिजनों के मन पर भी था। श्री दत्ता उस प्रकार के चिकित्सा-चक्र पर नहीं चढ़ना चाहते थे। डी. एस. रिसर्च सेण्टर की पोषक ऊर्जा पर आधारित औषधियों के विषय में भी उन्हें कुछ जानकारी थी। डी. एस. रिसर्च सेण्टर से सम्पर्क किया गया। केन्द्र की राय थी कि रेडियोथेरापी चला दी जाय, तब 'सर्वपिष्टी' चलायी जाय।

'सर्वपिष्टी' और टेलिकोबाल्ट थेरापी : एक ही दिन (दिनांक ८-१२-६४) को दोनो शुरू किये गए। श्री दत्ता ने भोर में उठते ही पहली खूराक 'सर्वपिष्टी' की ली फिर दिन में टेलिकोबाल्ट थेरापी शुरू की गयी। श्री दत्ता अस्पताल में भी 'सर्वपिष्टी' अपने पास रखते और उसका नियमित सेवन करते थे।

दिनांक १८-१-६५ को टेलिकोबाल्ट थेरापी पूरी होने पर वे अस्पताल से निकले। तबसे 'सर्वपिष्टी' के नियमित सेवन पर ही निर्भर रहे। एकदम निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार एस. एस. के. एम. अस्पताल चेकअप के लिए जाते रहे। अब भी इसमें किसी प्रकार की लापरवाही नहीं बरतते। प्रारम्भिक महीनों में तो सशंकित भाव से जाते थे कि चेकअप के बाद जाने क्या सुनने को मिलेगा। "ओके। नो ग्रोथ। नो रेकरैन्स।" सुनकर निश्चिन्त हो जाते। अब तो लगता है क़ि जैसे यही सुनने के लिए चेकअप कराना और अस्पताल जाना है। "ओके। नो ग्रोथ। नो रेकरैन्स।" *(सन्दर्भ-५२२)*

'सर्वपिष्टी' की खूराकें सात माह तक तो नियमित चलायी गयीं, फिर २-८-६५ से एक दिन का अन्तराल दिया गया। अन्तराल बढ़ता गया। दिनांक ४-२-६७ को उन्होंने रिपोर्ट की, ''चार दिनों के अन्तराल से औषधि नियमपूर्वक लेता जा रहा हूँ।'' दिनांक ५-६-६७ को उन्होंने लिखा, ''अब तो रिसर्च सेण्टर के परामर्श से सात दिनों के अन्तराल से औषधि का सेवन कर रहा हूँ।''

'सर्वपिष्टी'-सेवन के बाद रोगी की हालत

दिनांक ५.६.६७ को श्री दत्त ने पत्र लिखकर अपने स्वास्थ्य की जानकारी दी—

''मैं अपना भोजन जिसमें उबला चावल, दाल, मछली भी शामिल है, सामान्य ढंग से ग्रहण कर लेता हूँ। चिउड़ा, बिना उबला चावल आदि खाने में रुकावट होती है। पाखाना-पेशाब सामान्य है। सामान्य स्वास्थ्य अच्छा ही कहा जायेगा, किन्तु पूर्ण विकसित नहीं है। खाँसी अभी आती है। अपने उन अवकाशप्राप्त सर्जन महोदय से, जिन्होंने मेरा ऑपरेशन किया था, मिला था, उन्होंने कहा 'नो ग्रोथ, नो रेकरैन्स'। परामर्श और औषधि के लिए धन्यवाद सहित''

सदैव आपका

पु. बि. दत्ता (मूल अंग्रेजी पत्र : सन्दर्भ-५२३)

I am taking my food in a normal way with boiled rice, Dal, Fish with few Chitters. It is causing hindrance in case of unboiled rice (Hard).

The tools and urine are passing normally. General health is somehow good not fully improved. Cough is still exist.

I attended my Previous Surgeon (Retired) who have operated my case who opined that 'NO GROWTH, NO RECURRENCE'.

Thanking you for the advice and medicine prescribed.

Yours ever.

Dated the 5-9-97.

Pulin Behari Dutta

(सन्दर्भ-५२३)

बस एक ही बात अटपटी लगती है

श्री दत्ता रोग से पूर्ण मुक्त हैं, किन्तु उस क्षेत्र में टेलिकोबाल्ट थेरापी का कुछ प्रभाव है। अटपटा लगता है कि गर्दन में वह ट्यूब लगी ही हुई है। उससे साँस नहीं चलती, बोलते समय उसे उंगली से बन्द करने की आवश्यकता नहीं होती। स्वाभाविक ढंग से बोलते हैं। किन्तु चिकित्सकों की राय है कि ट्यूब हटाने के लोभ में उस क्षेत्र को छेड़ा नहीं जाना चाहिए, जो कोबाल्ट थेरापी से प्रभावित है। ☐

१७

ब्रेन कैन्सर
(ME DULLOBLASTOMA)

मास्टर रोहित रावत
उम्र ५ वर्ष
द्वारा पुष्कर सिंह रावत
बी २/१४, जीवन हिन्द
जीवन बीमा निगम कर्मचारी आवास
पालम रोडए सिविल लाइन्स
नागपुर-४४०००१

जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : एम आर आई सेण्टर, नागपुर (१२.०१.६६), एन एम सी इमेजिंग एण्ड डायग्नोस्टिक सेण्टर, नई दिल्ली (लैब नं. एस ६६/१११३, सी आर नं./ओ पी डी नं : ०४१२/६६)

मास्टर रोहित की माँ ने सेण्टर को एक पत्र लिख कर 'सर्वपिष्टी' का सेवन कराने की इच्छा जाहिर की। पत्र में उन्होंने लिखा, ''निरोगधाम पत्रिका के वसन्त ऋतु अंक १६६६ में 'कैन्सर हारने लगा है' के शीर्षक में कैन्सर की पराजयगाथा के अन्तर्गत आपकी चमत्कारी खोज कैन्सर से मुक्त करने के बारे में पढ़कर बड़ी उत्सुकता हुई। मैं बड़ी आशा से अपने पुत्र, जो कि इस बीमारी से पीड़ित है उसका वर्णन नीचे देती हूँ और प्रार्थना करती हूँ कि इस बारे में आप मेरे बच्चे को इस असाध्य रोग से मुक्ति दिलाकर हमारी आशा को पूर्ण करेंगे...''।

''बच्चे को ८-६ जनवरी १६६६ को स्कूल में अचानक चक्कर आने लगे और हाथ-पाँव लड़खड़ाने लगे। आँख से भी कुछ कम दिखाई देने लगा। तुरन्त एम. आर. आई. कराया और मालूम हुआ कि ब्रेन में

DR. VILAS KANIKDALEY — DR. MUKUND VAIDYA

CONSULTANT RADIOLOGIST

MRI CENTRE NAGPUR

NAME : MAST. ROHIT RAWAT — 12.01.99
AGE : 5 YEARS
REF.BY : DR. SHEKHAR LAMDHADE

MRI OF BRAIN

T1,PD and T2 weighted images in axial, saggital and coronal images obtained.

There is a large well defined roundish mass lesion involving the posterior fossa in the midline.
This mass app. measures 5.2 cmX4.9 cm.X5.7 cm.
This mass appears mildly hypointense on T1 and hyperintense on PD and T2 images. This mass is compressing and distorting the lower 4th ventricle.
There is dilatation of both the lateral ventricles, 3rd ventricle and proximal 4th ventricle.
Anterior displacement of the pons by the mass is also noted.
Minimal perilesional oedema is seen.
Periventricular hyperintensities are seen on PD and T2 weighted images (due to transependymal seepage of C.S.F.).
Bilateral maxillary sinusitis noted.

CONCLUSION : Large midline posterior fossa mass lesion producing anterior displacement of the pons and compression of the lower 4th ventricle resulting into obstructive hydrocephalus.
This is most likely to be medulloblastoma.

DR. VILAS KANIKDALEY — DR. MUKUND VAIDYA
DR. M.A. BIVIJI — DR. SHIRISH DHANDE

(सन्दर्भ-५२४)

NMC IMAGING & DIAGNOSTIC CENTRE

(A Division of [illegible])

Vidya Sagar Institute of Mental Health & Neuro Sciences, Nehru Nagar, New Delhi-110 065

Tel. : [illegible]

DEPARTMENT OF LABORATORY MEDICINE

HISTOPATHOLOGY REPORT

Lab No.: [illegible]
Patient's Name: MASTER MOHIT [illegible] — Age: [illegible]
CR No./OPD No.: [illegible] — Sex: Male
Ward/Bed: [illegible]
Referred by: Prof. A.K. BANERJEE, VIMHANS

SPECIMEN:
Tumor tissue, IV ventricle

GROSS DESCRIPTION:
Received in formalin pale grey tissue pieces collectively measuring 3 x 2 x 2 cm. Cut surface is pale gray. Representative sections submitted.

MICROSCOPIC DESCRIPTION:
Sections show a cellular tumor composed of small dark staining round to oval cells having a round to oval, hyperchromatic nucleus. Mitotic figures are easily seen. Few rosettes are also identified. Multiple foci of necrosis are also present. There is no differentiation.

PATHOLOGICAL DIAGNOSIS:
Tumor tissue, IV ventricle: MEDULLOBLASTOMA.

Date reported: Jan 27, 1999

Dr. Praful Khurana, M.D.
Consultant Pathologist

MRI ■ CT-SCAN ■ ULTRASOUND ■ C-ARM with DSA ■ EEG ■ EMG & NERVE CONDUCTION ■ COMPUTERISED LABS

A Centre Committed to Quality

(सन्दर्भ-५२५)

'मेडुलोब्लास्टोमा' ट्यूमर है। इस बारे में डॉक्टर शिरीष डांडे की १२.०१.६६ की रिपोर्ट संलग्न है*(सन्दर्भ-५२४)*

पेसेन्ट को दिल्ली विमहन्स में डॉ. बनर्जी ने ब्रेन का पहला ऑपरेशन करके पानी निकाला। ५ दिन बाद फिर ऑपरेशन करके ट्यूमर निकाला और उसकी बायाप्सी कराई गयी जिससे मालूम हुआ कि कैन्सर है। *(सन्दर्भ-५२५)* ऑपरेशन के बाद बच्चे को नागपुर के मेडिकल कालेज हास्पीटल में रेडियेशन दिया गया। इसके बाद किमोथेरापी के इन्जेक्शन देने का सुझाव है।

"इस रेडियोथेरापी से बच्चे का स्वास्थ्य काफी गिर गया है। वह खाना बिल्कुल नहीं ले रहा है। कोई भी चीज जैसे दूध, फल नहीं ले

VARANASI

D.D. No. 373521
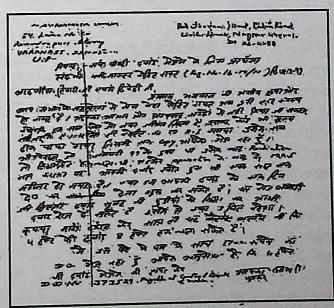
(सन्दर्भ-५२६)

रहा है। अब बुखार भी १०१ तक रहने लगा है और उल्टी भी दिन में एक-दो बार करता है। हाथ-पाँव भी ठीक से नहीं चला सकता है। दवाई जो दिल्ली के डॉ. ने प्रेस्क्राइब की थी वही दे रहे हैं। साथ में होमियोपैथ तथा आयुर्वेद की दवाई भी दे रहे हैं।...."

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : ०८.०३.९९ को डी एस रिसर्च सेण्टर से सर्वपिष्टी प्राप्त करके १०.०३.९९ से प्रारम्भ कर दी गयी।

सर्वपिष्टी के सेवन के एक सप्ताह के बाद ही बच्चे के पिता ने रिपोर्ट दी कि दवा से बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है। सर्वपिष्टी ने श्री रावत को बहुत उत्साहित कर दिया और वे एक नयी आशा के साथ बच्चे को दवा खिलाते रहे।

दिनांक १८.०५.९९ को श्री रावत का एक पत्र सेण्टर को प्राप्त हुआ। पत्र में उन्होंने लिखा, "...मुझे आपको यह बताते हुए अपार हर्ष हो रहा है कि मेरा पुत्र रोहित अब काफी आराम का अनुभव कर रहा है और उसे अब कमजोरी का नामोनिशान नहीं रह गया है। वह अच्छी तरह से खा-पी रहा है। कोबाल्ट थेरापी के दुष्प्रभाव जैसे बुखार, उल्टी आदि अब नहीं रह गए हैं....."।

सर्वपिष्टी चलते हुए जब एक वर्ष से अधिक हो गया तो दिनांक २६.०४.२००० को श्री पुष्कर ने पत्र लिखा "भगवान की असीम कृपा और आप सभी के सहयोग से मेरा बेटा रोहित रावत अब पूरी तरह स्वस्थ हो गया है। आपका आभार और धन्यवाद शब्दों में नहीं किया जा सकता। क्योंकि हम सब को जो नया जीवन मिला है, उसका कोई भी मूल्य नहीं है। परसों ही रोहित का एम आर आई कराया, उसमें सब ठीक पाया

P.S. Rawat
B-2/14 L.I.C. Quarter
Jeevan Hind, Palm Road.
Civil Lines, Nagpur 440001

To, D.S. Research Centre
154, Lane No. 10.
Ravindrapuri, VARANASI

विषय :- रोहित रावत के लिए 'सर्व पिष्टी' दवाई मंगाने के सम्बन्ध में।
संदर्भ :- रजिस्ट्रेशन नं. 16 M.(N) दि 8.3.99

आदरणीय त्रिवेदी श्री [illegible] तिवारी जी
महोदय, निवेदन यह है कि मेरा लड़का अब बिल्कुल ठीक है, व उसे किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है, पिछली बार अप्रैल माह में M.R.I. कराया था, जिसमें भी बिल्कुल clear report आयी थी, तब मैंने आपसे पूछा था, कि क्या दवाई की खुराक अब कम कर सकते हैं, तो आपने जवाब दिया था कि अभी कुछ समय और Continue करें, अभी आप बतायें कि कब तक और [illegible] इसी प्रकार देना है।

मैं यहाँ रु 1700/- का D.D. भेज रहा हूँ। जो कि सेन्ट्रल बैंक, वाराणसी को देय, जिसका नं. 534273 है, कृपया आप चार (4) हफ्ते की दवा भेजने का कष्ट करें।
आपको धन्यवाद

आपका आभारी
Rawat
पुष्कर सिंह रावत

दि 17-8-2000

(सन्दर्भ-५२७)

Dr. VILAS KANIKDALE — [illegible]

Dr. MUKUND VAIDYA — [illegible]

CONSULTANT RADIOLOGIST

78, [illegible] Nagar, [illegible], West High Court Road, Nagpur-440010 (M.S.) [illegible]

NAME : MASTER ROHIT RAWAT — DATE : [illegible]
AGE : [illegible]
REF. BY : [illegible]

MRI OF BRAIN

T1, PD & T2 WEIGHTED IMAGES IN SAGGITAL, AXIAL & CORONAL PLANES OBTAINED.

THIS IS OPERATED CASE OF POSTFOSSA MEDULLOBLASTOMA.
PATIENT HAS RECEIVED RADIATION.
ENDOSCOPIC THIRD VENTRICULOSTOMY DONE.

FOLLOW UP M.R.I. SHOWS GOOD RESOLUTION OF TUMOUR MASS.
RESIDUAL GLIOTIC CHANGES IN AND AROUND VERMIS SEEN.
SMALL PORENCEPHALIC CYST COMMUNICATING WITH POSTERIOR WALL OF 4TH VENTRICLE PRESENT.
SIGNIFICANT REGRESSION OF HYDROCEPHALUS SEEN. HOWEVER, MILD HYDROCEPHALUS IS STILL PRESENT.
SUPRATENTORIAL COMPARTMENT AND BRAIN STEM ARE UNREMARKABLE.
OCCIPITAL MIDLINE CRANIOTOMY NOTED.

IMPRESSION : POSTOPERATIVE STATUS. [illegible]
[illegible]
MILD HYDROCEPHALUS [illegible].

DR. VILAS KANIKDALEY — DR. MUKUND VAIDYA

(सन्दर्भ-५२८)

गया।" *(सन्दर्भ-५२६)* दिनांक १७.०८.२००० के पत्र में भी उन्होंने सूचित किया कि "मेरा लड़का अब बिल्कुल ठीक है व उसे किसी भी प्रकार की कोई परेशानी नहीं है..."। *(सन्दर्भ-५२७)* दिनांक २४.०४.२००० के एम. आर. आई. रिपोर्ट में भी पाया गया कि बीमारी समाप्त है। *(सन्दर्भ-५२८)*

वर्तमान स्थिति : दिनांक ०८.०३.२००१ को श्री पुष्कर ने अपने पत्र में लिखा कि सर्वपिष्टी का सेवन करते दो वर्ष हो चुके हैं और इस दौरान कोई समस्या सामने नहीं आयी। बच्चा अब पूर्ण रूप से स्वस्थ है और अब वे सर्वपिष्टी की आधी खूराक ही दे रहे हैं"। *(सन्दर्भ-५२६)*

Civil Lines, Nagpur. [illegible]

To
D.S. Research Centre.
154. Lane No. 10.
Ravindrapuri Colony;
VARANASI

Sub :- Supply of Medicine (Sarva Pishti) in r/o Master Rohit Rawat for treatment of Cancer.
Ref : (Reg : No 16/[illegible]/N. [illegible] 8-3-99.

Sir,
Kindly refer to the above case in this respect. I [illegible] to state that we have been giving medicine Sarva Pishti to Master Rohit Rawat for the treatment of medulloblastoma (brain tumour) since March 99. He was operated in January [illegible] after that he was given 30 sittings of Radiation up to April. The Dr. had advised for chemotherapy [illegible] go for that. He took [illegible] (M.R.I.) on April [illegible]. That time the report was clear. We gave the copy of the same to you also. Now it is almost two years past [illegible] and he has not any problem since then. Since last month we have started giving him ½ (half) of the quantity of the medicine with consulting your advice. I hope he [illegible] alright.

Hence I am forwarding a D.D. of Rs [illegible] bearing No 68459, payable at Central Bank of India, Rs 185/- for medicine of [illegible] and Rs [illegible] balance of last month. You are requested to supply the medicine urgently on the above mentioned address.

Yours faithfully
[illegible]

Dt : 8.3.2001

(सन्दर्भ-५२६)

पेरोटिड ग्लैण्ड का कैन्सर (बायाँ)
(CA. PAROTID GLAND)

श्री उमानन्द राय, ६४ वर्ष,
४६/६, बालीगंज
कलकत्ता-१६

जाँच : एसेम्बली ऑफ गॉड हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेण्टर, कलकत्ता-१७। (रजि. नं. ४८६६७), नं. ८१३१२, दिनांक ३-६-६४ से ११.६.६४ तक।

हिस्टोपैथालॉजी : "एनाप्लास्टिक कार्सिनोमा ऑफ पेरोटिड ग्लैण्ड"। *(सन्दर्भ-५३०)*

ऑपरेशन : दिनांक ३-६-६४ को उक्त अस्पताल में ही ऑपरेशन, फिर रेडियोथेरापी हुई (डिस्चार्ज सर्टिफिकेट)। *(सन्दर्भ-५३१)*

Assembly of God Hospital & Research Centre
125/1, PARK STREET, CALCUTTA-700 017
8/312/

REPORT ON THE HISTOPATHOLOGY EXAMINATION
2nd floor

Ref. No. 48997
MATERIAL Parotid
NAME OF PATIENT Uma Nanda Ray
DOCTOR D.Mukharjee

DATE OF RECEIPT 3.6.94.
SEX M
AGE 64 yrs
DATE OF REPORT 11.6.94.

Anaplastic carcinoma ofparotid gland.

Dr. K.P.Sengupta.

(सन्दर्भ-५३०)

Assembly of God Hospital & Research Centre
125/1, PARK STREET, CALCUTTA-700 017

MEDICAL CERTIFICATE/DISCHARGE SLIP

This is to certify that MR UMA NANDA RAY
was an Indoor/Outdoor Patient
Reg. No. 48997 under Dr. D. [illegible]
from 1·6·94 and was
discharged on 11·6·94 He/She
was suffering from Left Sided Parotid [illegible]
He/She was operated on 3/6/94.

11/6/94

Medical Officer

(सन्दर्भ-५३१)

'सर्वपिष्टी' की ओर :

ऑपरेशन के पौने चार महीने पूरे होने जा रहे थे, किन्तु रोगी की परेशानियाँ समाप्त होने की ओर न जाकर क्रमशः बढ़ाव और जकड़न की ओर लिये जा रही थीं। गले की आत्यन्तिक खुश्की और लार का नहीं बनना तो रेडियेशन के दुष्प्रभाव के रूप में समझ में आ जाता था। किन्तु कुछ कष्ट थे, जो उलझाव की सूचना दे रहे थे और उनका सही इलाज आवश्यक था। वे थे– भोजन की न रुचि थी, न माँग थी, न जीभ से स्वाद का पता चलता था। गले का दर्द इतना था कि कुछ भी निगल पाना कठिन था। लार का बनना शुरू नहीं हो सका था। रोगी को चक्कर आता रहता था और अर्द्धनिद्रा और तन्द्रा की हालत में ही रात-दिन बीता जा रहा था। रोगी पैरों में तीव्र दर्द की शिकायत करता था। बंगाल का बुद्धिजीवी वर्ग तब तक पोषक ऊर्जा सिद्धान्त और 'सर्वपिष्टी' के विषय में कुछ सोच-समझ चुका था। कुछ लोगों ने सलाह दी कि 'सर्वपिष्टी' अविलम्ब शुरू कर दी जाय।

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : दिनांक २४-६-६४।

प्रगति विवरण : 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के प्रथम चार सप्ताह के अन्दर ही रोगी की समस्याओं में ऐसा उतार आने लगा, जैसे वह पोषक ऊर्जा की खूराकों

12/6/95

1. জিভে স্বাদ আছে,
2. পায়ের ব্যাথা কমে গেছে,
3. জিভে লালা তৈরি হচ্ছে,
4. [illegible]
5. [illegible] নেই,

U. N. Roy

(सन्दर्भ-५३२)

২৯/৭/৬৫

কোন অসুবিধা নেই।
পায়ের ঝিঁ ঝিঁ ভাব কেটে
গেছে।
Urine, Stool ও Normal
আছে।

U.N. Roy

(सन्दर्भ-५३३)

की ही प्रतीक्षा कर रहा हो। भूख लगने लगी और स्वाद लेने की चेतना भी जाग गयी। चक्कर मिट-सा गया और अब रोगी अधिक समय सचेत रहने लगा। नींद सामान्य से कुछ अधिक आती थी, किन्तु हालत को अधबेहोशी नहीं कहा जा सकता था।

१२-६-६५ की रिपोर्ट : "भूख लगती है। पैरों का दर्द कम हो गया। लार बनने लगी है, पेट साफ हो रहा है। रोगी स्वस्थ दिखता और अनुभव करता है।" *(सन्दर्भ-५३२)*

२६-७-६५ की रिपोर्ट : "कोई असुविधा नहीं है। पैरों का सीं-सीं भाव भी समाप्त हो गया।

खान-पान, पाचन, पाखाना-पेशाब और स्वास्थ्य सब कुछ सामान्य है। खाना स्वाभाविक रूप में ले लेते हैं। गले का दर्द और असुविधा समाप्त हो गयी है।" *(सन्दर्भ-५३३)*

२२-१०-६५ : "अब बहुत फ्रेश लगते और अनुभव करते हैं। न कमजोरी है, न चक्कर आते हैं। स्वास्थ्य सामान्य है। *(सन्दर्भ-५३४)*

दिनांक २३-३-६६ की रिपोर्ट : श्री राय की पुत्रवधू तृप्ति रॉय ने दिनांक २३-३-६६ को डी. एस. रिसर्च सेण्टर पर आकर जानकारी दी, "धीरे-धीरे करके उन्होंने अपनी समस्याओं पर विजय प्राप्त कर ली है। अब वे लार कम बनने की शिकायत नहीं

Sh. Uma Nand Roy
22.10.65
১। Stool formation ঠিক আছে
২। থুথুর Saliva secretion
হয় না. ~~[illegible]~~
যে কোন খাবার খেতে
থুথুটা অসুবিধা করে
হয়।
৩। আগের চেয়ে অনেক
Fresh লাগে।
৪। আগে উঠতে গেলে
~~[illegible]~~ মাথা ঘুরত. এখন
হয় না।

Umananda Roy

(सन्दर्भ-५३४)

करते।.....दर्द भी नहीं है। मैं डी. एस. रिसर्च सेण्टर की कृतज्ञ हूँ।" *(सन्दर्भ-५३५)*

दिनांक ४-६-९७ की रिपोर्ट : डी. एस. रिसर्च सेण्टर आकर श्री राय की पुत्र-वधू तृप्ति राय ने बड़े उत्साह के साथ रिपोर्ट दी, "उनके गले में तो किसी प्रकार की कठिनाई है ही नहीं, दर्द भी नहीं है। लार का स्राव पूरी तरह सामान्य हो चुका है। खाना निगलने में कोई असुविधा नहीं है।" *(सन्दर्भ-५३६)*

To
D.S. Research Centre

From.
Sri Umananda Ray
46/9. Ballygunge Place
Calcutta - 19

Dear Sir,
The patient Sri Umananda Ray was suffering from gland cancer i.e. near the parotid gland from the month of June 94'. He has been taking the medicine from the month of September 94' of your centre. At the begining he had slight pain in his throat and cannot swallow any solid food. He had no wish of taking any food. Now slowly he had overcome his problems.
I am thankful to the D.S. Research centre

yours sincerely
Tripti Ray
(Daughter in law of Umananda Ray)
23.03.96

(सन्दर्भ-५३५)

श्री राय के शरीर का जो क्षेत्र कैन्सर से ग्रस्त था, वहाँ के कैन्सर का रेकरैन्स प्रायः उसी क्षेत्र में अथवा आस-पास के क्षेत्र में ही होता है। ऐसा ही कहते हैं, कैन्सर के अनुभवी चिकित्सक। श्री राय इस क्षेत्र में किसी प्रकार की असुविधा अनुभव नहीं करते और उनकी चेतना से अर्द्ध निद्रालुता भी समाप्त है, अतः एक बार यही लगता है कि अब सब कुछ सामान्य है। वे अपनी उम्र, व्यसन और स्वभाव के अनुकूल पूर्ण स्वस्थ भी हैं। अतः निर्णय लिया गया है कि धीरे-धीरे औषधि बन्द की जाय।

4.6.97

Name of the patient - Umananda Ray
He does not have any difficulties about his throat and his secretion of saliva is normal. At He does not have any pain in his throat while swelling any type of food.
Thanking you
Tripti Ray (Daughter-in-law)

(सन्दर्भ-५३६)

६६

थायरायड से शुरू होकर गला, छाती, स्तन तक फैला हुआ कैन्सर
(CA. THYROID METASTASIS THROAT, CHEAST & BREAST)

श्रीमती प्रतिभा रॉय, ६२ वर्ष
द्वारा : श्री प्रमोद कुमार रॉय
ग्राम : बादरा, पो. : जुनबेरिया
जिला : बांकुड़ा(प. बंगाल)

जाँच : डॉ. प्रबीर सूर, बी. एस. मेडिकल कॉलेज हॉस्पीटल, बांकुड़ा- **(A Case of diseminated Adeno Carcinoma)** पाया गया कि मेटेस्टेसिस द्वारा रोग छाती, स्तन, गला तक फैल गया है, दि. १.५.९०। *(सन्दर्भ-५३७)*

साइटोमोरफोलोजी : (Metastasis from follicular CarcinomaThyriod) दि. २.५.९०। बाँकुड़ा डाईग्नोस्टिक सेन्टर, ए केस ऑफ डिस्सेमिनेटिड एडिनो कार्सीनोमा; मैटास्टेसिस फ्राम फैलिक्यूलर कार्सिनोमा थायरायड। *(सन्दर्भ-५३८)*

CHAMBER :
BANKURA NURSING HOME
Patpur, Bankura
Time : 3—4 P.M.
(Except Friday & Sunday)
Phone—887

DR. PRABIR SUR
M.B.B.S., D.M.R.T., D.M.R.D., M.D. (CAL.)
(Consultant Oncologist)
Reader, Dept. of Radiotherapy
B. S MEDICAL COLLEGE & HOSPITAL, BANKURA

CHAMBER :
BANERJEE MEDICAL STORE
Machantala, Bankura.
Time : 4—5 P.M.
(Except Sunday)
Phone—156

Smt. Prativa Ray F 62 yrs 1/5/90

A case disseminated
Adenocarcinoma
— FNAC of Rt. SCFLN shows metastasis
from Adenocarcinoma.

Rx
✓1 Liq Sorbitine

(सन्दर्भ-५३७)

'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ : २४.५.९० से।

थायरॉयड की समस्याओं की चिकित्सा चलते-चलते कैन्सर कब प्रगट हुआ, इसकी ओर शुरू में ध्यान नहीं जा सका। जब कैन्सर ने फैलकर गला, छाती, स्तन, आदि के क्षेत्रों में जड़ें जमा लीं, तब बी. एस. मेडिकल कॉलेज हास्पीटल के डॉ. प्रबीर सूर ने रोगी की विधिवत जाँच कराई। रोग इतना अधिक फैल चुका था और फैलते जाने की उसकी गति इतनी तीव्र थी कि उन्होंने कैन्सर की चिकित्सा हो पाने की संभावना पर सन्देह व्यक्त किया।

रोगिणी को नींद नही आती थी, भूख नहीं लगती थी, दर्द बेहद था। स्वास्थ्य बहुत गिर गया था। किसी स्रोत से डी. एस. रिसर्च सेण्टर की औषधि की जानकारी मिलने पर उसे ही मँगाने की व्यवस्था की गयी।

BANKURA DIAGNOSTIC CENTRE
MACHANTOLA, BANKURA.

Date 2.5.90.

Name Smt. Prativa Ray Age 62

Reff. By Dr. P. Sur.

Investigations. Re F.N.A.

Results. Cytomorphology is consistent with metastasis from follicular Carcinoma - Thyroid.

[signature]
Pathologist

(सन्दर्भ-५३८)

२४.५.९० को 'सर्वपिष्टी' आरम्भ की गयी : तीन-चार दिनों के अन्दर ही दर्द कुछ शान्त हुआ, भूख लगने लगी, पाचन सुधर गया और नींद भी आने लगी। दिन-प्रतिदिन उन्नति होती गई। सामान्य स्वास्थ्य में सुधार हुआ और दो महीने बाद कैन्सर का विस्तार क्षेत्र भी घटने लगा। चार महीने बाद कैन्सर के ट्यूमर जो गले से लेकर छाती और स्तन तक उभर आए थे, अदृश्य हो गये। दो महीने और भी औषधि नियमित रूप से चली और जब रोग का कोई लक्षण शेष नहीं रह गया, तब खूराकें अन्तराल बढ़ाते हुए चार माह और चला दी गयीं। फिर औषधि चलाने की आवश्यकता नहीं समझी गई। *(सन्दर्भ-५३९)*

16.07.90 Smt. Pratibha Ray

9.7.90 - খাওয়া দাওয়া ঘুম ভাল হচ্ছে। পায়খানা হচ্ছে।
10.7.90 - খাওয়া দাওয়া ভাল করছে। ঘুম হচ্ছে। পায়খানা হচ্ছে।
11.7.90 - খিদে আছে। ঘুম হচ্ছে। দুবার পায়খানা হচ্ছে।
12.7.90 - খিদে ভাল নেই। ঘুম হচ্ছে না। পায়খানা হয়েছে।
13.7.90 - খিদে আছে। ঘুম হয়নি। পায়খানা হয়েছে।
14.7.90 - খিদে আছে। ঘুম হয়েছে। পায়খানা হয়েছে।
15.7.90 - খিদে আছে। ঘুম হয়েছে। পায়খানা হয়েছে।
"বেশ ভালই আছে। বাড়ীর কাজ কিছু কিছু করছে। গলার গিলটি [illegible] [illegible]। গলায় এখন কোন কষ্ট নেই।

(सन्दर्भ-५३९)

रोगिणी पूर्णतः स्वस्थ है और उत्साह पूर्ण सामान्य जीवन व्यतीत कर रही है। ६.१.९२ को उनके विषय में श्री प्रदीप कुमार राय ने जो रिपोर्ट दी वह इस प्रकार है—"रोगिणी पूरी तरह भली-चंगी है। न व्यथा है, न यंत्रणा। खाना-पीना, चलना-फिरना सब कुछ

Smt. Pratibha Roy

[illegible]

Pradip Kumar Roy

09. 01. 92

(सन्दर्भ-५४०)

स्वाभाविक है। मुहल्ले के लोग रोगिणी को देखकर कहते हैं कि एक दिन तो लगता था कि अब यह दुनिया में रहेगी ही नहीं; आज जमाई बाबू जैसी लग रही है। ''मूल बंगला पत्र यहाँ दिया जा रहा है। *(सन्दर्भ-५४०)*

विशेष : कैन्सर तो गया ही, श्रीमती प्रतिभा राय की थायरायड की बीमारी भी चली गई। 'सर्वपिष्टी' शुरू करने के बाद थायरायड के लिए कोई दवा नहीं चली। लगता है कि वे थायरायड की रोगिणी ही नहीं थीं। या तो थायरायड में कैन्सर ही था, जो थायरायड की सामान्य चिकित्सा के दौरान बढ़कर दूर-दूर तक फैल गया, अथवा थायरायड की कोई सामान्य शिकायत ही कुचिकित्सा का सहारा

Patient → Prativa Roy.

[illegible] Hospital [illegible] Ray [illegible]

D.S. Research Centre Cal-7. 160: M.G. Road.

[illegible]

D.S. Research Centre [illegible]

24.5.90. 25/6/91. [illegible]

[illegible]

Relation of patient.
She is my aunt.

[illegible signature]

19.3.96

(सन्दर्भ-५४१)

पाकर उग्र कैन्सर के रूप में खड़ी हो गयी। दूसरी बात इसलिए चिन्तन को पकड़ती है कि विष-निर्मित दवाओं का अधिक व्यवहार और एण्टी-बायोटिक दवाओं के प्रहार के कारण संसार क आधे से अधिक रोगी कैन्सर द्वारा पकड़े गये हैं।

Patient Name- প্রতিভা রায়. 4.12.97
Age- 75 Years
i) শরীর দুর্বল বোধ করছেন।
ii) [illegible]
iii) [illegible]
No problem of Patient
Signature.
Vanu Kalpa Sinha

(सन्दर्भ-५४२)

दिनांक १६.०३.६६ की रिपोर्ट : श्री भानुकल्प सिन्हा ने अपनी आण्टी श्रीमती प्रतिभा रॉय के विषय में रिपोर्ट दी कि वर्तमान में रोगिणी पहले की अपेक्षा बहुत अच्छी हैं। सभी कार्य करने में सक्षम हैं।

श्रीमती रॉय के गले में एक गिल्टी रह ही गयी है। उसे रेडियेट कराने की राय न तो उनकी है, न परिजनों की। *(सन्दर्भ-५४१)*

दिनांक ०४.१२.६७ को श्री भानुकल्प सिन्हा ने डी. एस. रिसर्च सेण्टर पर आकर बताया कि रोगिणी अब वृद्धावस्था के कारण कमजोरी अनुभव कर रही हैं। अन्यत्र कहीं कोई कष्ट-असुविधा नहीं है, सिवा गले की उस छोटी गाँठ के, जिसे अब वे रेडियेशन दिलाकर समाप्त करने के प्रति रुचि नहीं रखती हैं। उन्होंने बताया कि इस उम्र के अनुसार सब कुछ मोटा-मोटी ठीक ही है, और रोगिणी अपने सामान्य कार्यों में उसी प्रकार रुचि लेतीं और सक्रिय दिखायी देती हैं। कोई विशेष स्वास्थ्य-समस्या नहीं है। *(सन्दर्भ-५४२)* ❑

खाद के रूप में व्यवहृत रसायनों ने भोज्य वानस्पतिक सम्पदा की जीवनी-शक्ति को इस प्रकार नष्ट कर दिया है कि नयी पीढ़ी के बीजों से निकले अंकुर भी उन्मुक्त प्रकृति का मुकाबला नहीं कर पाते। उनका गुण-धर्म विचलित हो चुका है, जो जन्म से ही रोगाणुओं को निमंत्रण देने लगता है। आहार रूप में उन्हें ग्रहण करने वाले मनुष्य में भी विचलन का वह खतरा आरोपित हो गया है। अगर मनुष्य जल्दी ही अपने आहारों को प्राकृतिक स्वास्थ्य नहीं प्रदान करेगा, तो उसे भी अपने हिलते हुए अस्तित्व की रक्षा के लिए शरीर के भीतर रोग-नाशक रसायन भरवाकर और शरीर पर बाहर से रासायनिक विष-लेप लपेट कर स्वयं को जीवित रखना पड़ेगा और क्रमशः विचलन के गर्त में उतरते जाना पड़ेगा।

फेफड़े का कैन्सर
(CA. LUNG)

श्री मूलचन्द गुप्ता
उम्र : ५६ वर्ष
मड़ियाहूँ, जौनपुर
जाँच एवं पूर्व चिकित्सा : टाटा मेमोरियल हास्पीटल

CONSULTANT RADIOLOGISTS
DR. AVINASH KELKAR
DR. ABHIMANYU KELKAR
DR. MUKUL MUTATKAR
DR. ANURADHA KELKAR

PDS SCAN
POONA DIAGNOSTIC SERVICES

SCAN REPORT

NAME: MR. M.C. GUPTA
REF: DR. A.M. KHOJA

21st Sept.

CT SCAN OF CHEST:
Many thanks for your kind reference.

A clinical history of Ca bronchus left main.

[illegible]

A soft tissue mass is seen at the left hilum. [illegible] Thoracic cage looks normal.

IMPRESSION:

A case of Ca bronchus left main. [illegible] as described above.

DR(MRS) ANURADHA KELKAR
MD
RADIOLOGIST

(सन्दर्भ-५४३)

(केस नं. बी जे १८८३६, २६.१०.९५), मुम्बई, पूना डायग्नोसिस सर्विस, पुणे (४१९८/९५, २१.११.९५)।

श्री मूलचन्द गुप्ता को तरह-तरह की शारीरिक परेशानियों ने घेर रखा था। पारम्परिक चिकित्सा से उन्हें कोई फायदा समझ में नहीं आ रहा था। टाटा मेमोरियल हास्पीटल में जाँच के बाद पता चला कि श्री गुप्ता को फेफड़े का कैन्सर है। अन्य कई जाँच रिपोर्टों ने भी यही प्रमाणित किया कि उन्हें फेफड़े का कैन्सर हो गया है। *(सन्दर्भ-५४३, ५४४, ५४५)* अपने को इस बीमारी से बचाये रखने के लिए श्री गुप्ता जो भी कर सकते थे किया परन्तु बात बनती दिखायी नहीं दे रही थी।
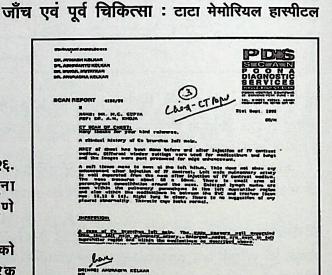
इसी दौरान उन्होंने डी. एस. रिसर्च सेण्टर के बारे में सुना और बिना देर किये वहाँ से २५.११.९५ को दवा मंगा ली।

TATA MEMORIAL HOSPITAL

[illegible]

(सन्दर्भ-५४४)

ATA ME... ULTRA SONO...

Name Mr M.C. Gupta
Age 58 Sex Male Income Rs. Serv./P.M.
Requisition Date 13/x/95
Amount Charged Rs. 150/ 26/10/95 paid
T. M. H. Case No. BJ-18833

OUT PATIENT: Private ☑ Stretcher ☐ Clinic ☐ Ambulatory ☐
IN PATIENT : Wd.
Outside Request No.
Referred by Dr.
Private ☐ Hosp.

Receipt No.
Referred by (Unit Chief)
Relevant Clinical Data — ? Ca (Lt) main Bronchus
No. of 10 x 8" Films
H/O. Previous Treatment
Examination Requested — Ultrasound Liver. Anatomical Site
Appointment on 17/10/95 9³⁰ am a.m./p.m. 4 hrs fasting
Reported by Dr. Date

BJ.18839: 17.10.95 (Reported by Dr.Jog)

USG ABDOMEN: Liver is normal in size, shape and shows homogenous parenchymal echotexture except for a small calcific focus along the posterosuperior aspect of the right lobe. There is no dilatation of the biliary tree. Gall bladder, spleen and pancreas are normal. A 2.5cm simple cortical cyst is noted in the right kidney. The left kidney shows evidence of a tiny anaechoic lesion adjacent to the renal sinus ? parapelvic cyst ? prominent calyx. There is no ascites or retroperitoneal lymphadenopathy.

Impression: Tiny calcified granuloma right lobe of liver with right renal cortical cyst.

(सन्दर्भ-५४५)

सर्वपिष्टी प्रारम्भ : २५.११.९५ से।

सर्वपिष्टी प्रारम्भ करने के बाद से ही श्री मूलचन्द गुप्ता को लाभ समझ में आने लगा। वे क्रमशः समस्याओं से दूर होते रहने की रिपोर्ट करते रहे। श्री गुप्ता को पता था कि फेफड़े के कैन्सर का रोगी बहुत अधिक समय नहीं पाता। पारम्परिक चिकित्सा के विषय में उन्हें पता था कि उसमें समस्याओं से कुछ समय के लिए राहत पाने की व्यवस्था तो हो सकती है परन्तु कैन्सर से और उससे जुड़ी परेशानियों से सदा के लिए

आदरणीय गुरुजी दि 11-5-96
सादर प्रणाम
मुझे बम्बे से आये लगभग दो माह
हो गया चेकअप के लिये दि-10-5-96
को बुलाया गया था पर आपके दवा खाने
से हमें राहत है कोई तकलीफ नहीं है
सिर्फ सुबह शौच के वक्त तकलीफ
होती है आपका दिया हुआ घरेलू
चूर्ण खाता हूं जिससे कुछ राहत है
तथा कभी कभी सीने में दर्द होती
है पर ज्यादा नहीं वैसे खान पान
पहले से काफी सुधार है इसलिये
फिर दवा के लिये आया हूं और
सब ठीक है आप का आशीर्वाद
चाहिये।
आपका
मूलचन्द गुप्ता
[illegible]
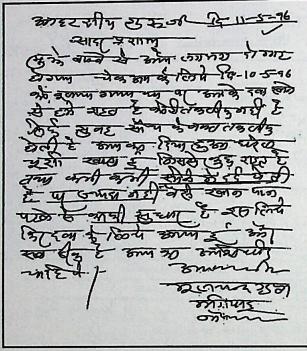
(सन्दर्भ-५४६)

छुटकारा पाना सम्भव नहीं होता। छोटे-मोटे अस्पताल अथवा चिकित्सकों के पास कैन्सर रोगी को राहत देने के लिए भी कोई विशेष व्यवस्था नहीं होती, इसीलिए श्री मूलचन्द गुप्ता बार-बार टाटा मेमोरियल हास्पीटल, बाम्बे जाते और वहीं चेकअप भी कराते और दवाइयों के लिए निर्देश प्राप्त करते।

दिनांक ११.०५.६६ को केन्द्र श्री गुप्ता दवा लेने के लिए केन्द्र पर पधारे। नियमित अनिवार्य रिपोर्ट में उन्होंने लिखा, ''मुझे बाम्बे से आये लगभग दो माह हो गया। चेकअप के लिए दिनांक १०.०५.६६ को बुलाया गया था पर आपके दवा खाने से हमें राहत है, कोई तकलीफ नहीं है, सिर्फ सुबह शौच के वक्त तकलीफ होती है। आपका दिया हुआ घरेलू चूर्ण खाता हूँ जिससे कुछ राहत है तथा कभी-कभी सीने में दर्द होती है पर ज्यादा नहीं। वैसे खान पान पहले से काफी सुधार है, इसलिए फिर दवा के लिए आया हूँ''.....। (सन्दर्भ-५४६)

राम राम
दि 14-2-98
सेवा में गुरुजी प्रणाम
निवेदन है कि मैं अभी [illegible]
बाम्बे से चेकअप करा कर आया हूं
रिपोर्ट बिल्कुल ठीक है [illegible]
[illegible]
सप्ताह की दवा दें [illegible]
इसके बाद मैं आऊंगा [illegible]
[illegible]
आपका
मूलचन्द गुप्ता
[illegible]
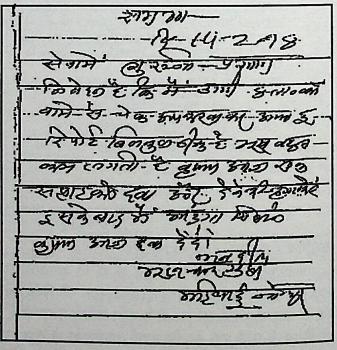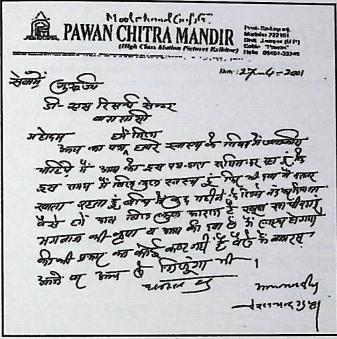
(सन्दर्भ-५४७)

दिनांक १४.०२.९८ को श्री गुप्ता ने पत्र द्वारा केन्द्र को सूचना दी, "...मैं अभी ४ तारीख को बाम्बे से चेकअप कराकर आया हूँ। रिपोर्ट बिल्कुल ठीक है..."।(सन्दर्भ-५४७)

श्री मूलचन्द गुप्ता समय-समय पर केन्द्र को अपने स्वास्थ्य के विषय में सूचित करते रहते हैं। उन्होंने २७.०४.२००१ को भेजे गये अपने पत्र में लिखा है, "...आपको इस पत्र द्वारा सूचित कर रहा हूँ कि इस समय मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ। फिर भी दवा मैं बराबर खाता रहता हूँ। बीच में कुछ महीने के लिए बंद कर दिया था। वैसे हमें अब बिल्कुल आराम है। खूब खा पी रहा हूँ। भगवान की कृपा व आपकी दवा से मैं स्वस्थ हो गया। किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं है..." (सन्दर्भ-५४७)।

Moolchand Gupta

PAWAN CHITRA MANDIR
(High Class Motion Pictures Exhibitor)
Post- Sadarganj, Mariahu 222161, Distt. Jaunpur (U.P.), Cable "Pawan", Hello 05451-33349

Date : 27-4-2001

सेवामें गुरुजी
डी- एस रिसर्च सेन्टर
वाराणसी

महोदय — हमें मिला
आप का पत्र, हमारे स्वास्थ्य के विषय में जानकारी चाहिये थी मैं आप को इस पत्र द्वारा सूचित कर रहा हूं कि इस समय मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं फिर भी दवा मैं बराबर खाता रहता हूं बीच में कुछ महीने के लिये बंद कर दिया था वैसे तो अब बिल्कुल आराम है खूब खा पी रहा हूं भगवान की कृपा व आप की दवा से [illegible] किसी प्रकार का कोई कष्ट नहीं है [illegible]

[illegible]

मूलचन्द गुप्ता

(सन्दर्भ-५४८)

०३.०८.२००१ को श्री गुप्ता स्वयं सेण्टर पर आये। दवा प्राप्त करते समय दिये जाने वाले

PAWAN CHITRA MANDIR
(High Class Motion Pictures Exhibitor)
Post- Sadarganj, Mariahu-222161, Distt.- Jaunpur (U.P.), Cable : "Pawan", Hello : 05451-33349

Date : 3-8-2001

सेवामें गुरुजी
डी- एस- रिसर्च सेन्टर
वाराणसी

महोदय [illegible] 30-31 [illegible] 20 [illegible] 23 [illegible] मेरा स्वास्थ्य ठीक है [illegible] रिपोर्ट ठीक [illegible] बिल्कुल ठीक हो जाऊंगा। शेष [illegible]

[illegible]

मूलचन्द गुप्ता

(सन्दर्भ-५४६)

PAWAN CHITRA MANDIR

(High Class Motion Pictures Exibitor)

Post- Sadarganj,
Mariahu-222161
Distt- Jaunpur (U.P.)
Cable : "Pawan"
Hello : 05451-33349

Date : 17-8-2001

सेवामें गुरुजी

प्रणाम

निवेदन है कि हमें एक सप्ताह का [illegible] कष्ट करें तबियत हमारा बिल्कुल ठीक है बाम्बे चेकअप भी कराये 2 अगस्त को आये दवा इसलिये खा रहा हूं कि फिर कोई तकलीफ न हो।

धन्यवाद

[illegible]

[illegible]

(सन्दर्भ-५५०)

रिपोर्ट में श्री गुप्ता ने लिखा, "...दुख के साथ हमें लिखना पड़ रहा है कि आपके सेण्टर पर हमें आने के लिए ३०-३१ जुलाई को पत्र द्वारा सूचित किया गया था, मगर मैं २० जुलाई को ही बाम्बे टाटा मेमोरियल चला गया था क्योंकि हमारे चेकअप का डेट २३ जुलाई पड़ा था। हमें पहले कोई सूचना नहीं मिली वरना मैं अवश्य इस सेमिनार में भाग लेता तथा उसका फायदा उठाता।....इधर मेरा स्वास्थ्य ठीक है। बाम्बे टाटा में चेकअप हुआ, रिपोर्ट ठीक रहा..." *(सन्दर्भ-५४६)*। दिनांक १७.०८.०१ को श्री गुप्ता ने रिपोर्ट दी, "तबियत हमारा बिल्कुल ठीक है। बाम्बे चेकअप भी कराये। वहाँ से २ अगस्त को आये। दवा इसलिए खा रहा हूँ कि फिर कोई तकलीफ न हो।" *(सन्दर्भ-५५०)*

पारम्परिक चिकित्सा में यह माना जाता है कि यदि कोई कैन्सर रोगी कष्टों के साथ भी लगभग पाँच वर्ष बिता ले तो उसे रोगमुक्त कहा जा सकता है। फिर श्री गुप्ता तो लगभग छह वर्षों से भी अधिक समय हो गया है, अब तो वे कैन्सर सम्बन्धी किसी तरह की समस्या से ग्रस्त नहीं हैं। इसीलिए श्री गुप्ता अपने को पूर्णरूप से कैन्सर से मुक्त मानते हैं।

खण्ड : तीन

- क्या है कैन्सर
- सामान्य कोशिकाएँ बनाम कैन्सर-कोशिकाएँ
- सामान्य कोशिकाओं का जाति-परिवर्तन
- कैन्सर होने के कारण क्या हैं

वैज्ञानिक परीक्षण-योजना

कैन्सर–उन्मूलन के अभूतपूर्ण परिणाम एक बार तो अकल्पित होने के कारण लोगों को अजीब से लगे, किन्तु जब वे आश्वस्त हुए, तबसे उनके चिन्तन ने पोषक उर्जा विज्ञान पर भरोसा करना शुरू कर दिया। जब उन्हें विश्वास हो गया कि सचमुच एक ऐसा विज्ञान आ गया है, जो रोगों की चिकित्सा और उनके उन्मूलन के विज्ञान को यथार्थ में बदल देगा, तबसे रिसर्च सेण्टर पर स्नेहिल दबाव आने लगे कि अन्य औषधियों का भी शीघ्र परीक्षण हो, ताकि चिकित्सा के नये युग को आधार दिया जा सके। डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने निर्णय लिया है कि दिनांक 01.10.2000 से पोषक ऊर्जा वर्ग की कुछ औषधियों को परीक्षण में उतारेगा। परीक्षण केवल सीमित, स्वैच्छिक और अनुसन्धान एवं विज्ञानपरक ही होगा। परीक्षण नीचे दी जा रही औषधियों का किया जायेगा।

1. स्पन्दन हृदय : हृदय के रोगों तथा हृदय रोगों की ओर ले जाने वाली स्वास्थ्य–समस्याओं के निराकरण की पोषक ऊर्जा।

2. नारी ओजस् : नारी-रोगों की स्थायी चिकित्सा, नारी स्वास्थ्य के विकास और नारी संस्थान् को ओजस्वी बनाने वाली पोषक ऊर्जा।

3. मनसा : मानव मन पर जमे चिन्ता, शोक, भय, निराशा, तनाव आदि के दुष्प्रभावों को धोकर जीवन को स्वस्थ निद्रा, उल्लासपूर्ण सक्रियता और संकल्पों पर आस्था प्रदान करने वाली पोषक ऊर्जा।

4. पाचन ओजस् : पाचन संस्थान् को स्वस्थ, ओजस्वी और व्यवस्थित बनाकर इस संस्थान के छोटे-बड़े रोगों को दूर करने वाली पोषक ऊर्जा।

5. स्नायु ओजस् : तनावों के भार तथा ड्रग-निर्मित औषधियों के दुर्व्यवहार से अस्वस्थ, तनावपूर्ण और अस्तव्यस्त बने स्नायु-तंत्र को स्वस्थ एवं ओजस् प्रदान करके रोगमुक्त बनाने वाली पोषक ऊर्जा। यह साईटिका रोग का भी उन्मूलन करती है।

6. श्वास ओजस् : दमा, ब्रोंकाइटिस तथा श्वसन संस्थान के अन्य रोगों की उन्मूलक पोषक ऊर्जा।

7. कण्ठ ओजस् : पर्यावरण के प्रदूषण तथा ड्रग-निर्मित औषधियों के दुष्प्रभावों से विचलित, अस्वस्थ और समस्याग्रस्त बने कण्ठ प्रदेश, स्वर-यंत्र, अन्ननली आदि की बीमारियों को दूर करनेवाली पोषक ऊर्जा।

8. प्रतिरक्षक : जीवन की रोग-प्रतिरोधक शक्ति ही रोगों से रक्षा करती है, उसी के पास रोग उन्मूलन की क्षमता और विवेक है। पोषक ऊर्जा ही एकमात्र ऐसा माध्यम है जो इस क्षमता का विकास कर सकती है, उसे नया जीवन प्रदान कर सकती है। एड्स का मुकाबला करना हो अथवा सामान्य रोगों का, इस प्रतिरोध क्षमता को सुदृढ़ बनाकर ही जीवन की रक्षा की जा सकती है। 'प्रतिरक्षक' पोषक ऊर्जा का एंक भरोसेमन्द रोग-प्रतिरोधक विकास है।

–डी. एस. रिसर्च सेण्टर

क्या है कैन्सर

जरूरत है पारदर्शी समझ की

आँधी को सबने देखा है, हालाँकि सचाई यह है कि आँधी दिखायी नहीं देती। आँधी के आते ही धूल उड़ने लगती है, पेड़ हिलने लगते हैं, कई बार पेड़ों की डालें टूटकर गिर जाती हैं, तालाबों और नदियों का पानी उछाल मारने लगता है। वस्तुतः धूल, पेड़ और पानी आदि में से कोई भी आँधी नहीं है, सब मिलकर भी आँधी नहीं हैं। इनमें से किसी के द्वारा आँधी को उद्धृत नहीं किया जा सकता। आँधी तो है—तीव्र वेगवाली हवा। आँधी उथल-पुथल पैदा कर देती है, किन्तु उथल-पुथल आँधी नहीं है। आँधी को जानने के लिए पारदर्शी समझ चाहिए। वह समझ, जो इस उथल-पुथल के पीछे खड़ी अदृश्य आँधी को जान सके। प्रायः वैसी ही समझ चाहिए कैन्सर को जानने के लिए। कैन्सर को हजारों वर्षों तक भोगा गया है, उसका जुल्म सहन किया गया है। नंगी आँखों से कैन्सर-रोगियों को देखा गया है और यंत्र-नेत्रों से भी। उसे समझने के लिए सैकड़ों वर्षों से लक्षण एकत्र किए गये हैं। ये लक्षण कैन्सर के हैं, किन्तु ये लक्षण ही कैन्सर नहीं हैं। लक्षणों को ही कैन्सर मान लेने से चिकित्सा भी लक्षणों तक ही सीमित रह गयी है। समझ जब तक इस दुविधा को पार नहीं करेगी, तब तक चिकित्सा भी उसके पार नहीं जा सकती। अतः जरूरत है पारदर्शी समझ की। चिकित्सा की बेड़ियाँ तोड़ने के लिए भी पारदर्शी समझ चाहिए। कैन्सर के इर्द-गिर्द गलतफहमियों का ढेर लग गया है। जो कैन्सर नहीं है, उसे भी कैन्सर मान लिया गया है। कैन्सर की समझ तक जाने के लिए आवश्यक है कि इन गलतफहमियों को बरकाकर अलग हटा दिया जाय, ताकि परदे के आरपार देखा जा सके। इन गलतफहमियों के दो वर्ग हैं। एक वर्ग में वे हैं, जिन्हें आम लोग तो कैन्सर कहते हैं, लेकिन चिकित्सक नहीं कहते। दूसरे वर्ग में वे हैं, जो कैन्सर-अस्पतालों से वैज्ञानिकता की मुहर लगाकर उपस्थित हैं। कुछ झीने परदे हैं, तो कुछ मोटी परतें हैं।

गलतफहमियों के झीने परदे के आर-पार

१. कैन्सर छुआछूत का रोग नहीं है, अर्थात बाह्य शारीरिक सम्पर्क अथवा पास में रहने-बैठने से इसका संक्रमण नहीं होता।

२. कैन्सर वंशगत रोग नहीं है। जिन मातृक तथा पितृक कोशिकाओं के संयोग से सन्तान का शरीर-धारण होता है, वे कोशिकाएँ कभी कैन्सर-कोशिकाएँ नहीं बनतीं।

इसलिए यह सम्भव नहीं है कि माता अथवा पिता, अथवा माता और पिता दोनों के ही कैन्सरग्रस्त होने पर उनकी सन्तान को उनकी ओर से कैन्सर मिल जाय।

३. सामान्य शरीर का कोई घाव या फोड़ा बढ़कर कैन्सर नहीं बन जाता। अधिक समय बाद भी यह कैन्सरस नहीं बनेगा। कैन्सर तो तब बनेगा, जब वहाँ कैन्सर की असामान्य कोशिकाओं का जन्म होगा। सड़न अथवा गलन की क्रिया कैन्सरीय ग्रोथ तक पहुँचा दे यह आवश्यक नहीं है। हाँ, अगर उस घाव अथवा सड़न की कुचिकित्सा हो अथवा उसके पड़े रहने से कैन्सर-कोशिका के जन्म की परिस्थिति पैदा हो जाय, तब बात दूसरी है। कैन्सर न तो सूजन है, न सड़न, यह तो ग्रोथ है।

४. कैन्सर न तो स्वयं कोई बैक्टीरिया, वायरस अथवा जीवाणु है, न कोई खास बैक्टीरिया, वायरस अथवा जीवाणु इसके जन्म के लिए उत्तरदायी है। कैन्सर के बिगड़े हुए घाव में कई बार कीड़े पैदा हो जाते हैं। उन्हें कैन्सर के कीड़े नहीं समझना चाहिए। मांस के सड़ने से ये कीड़े पैदा हो जाते हैं। कैन्सर न हो तब भी मांस के सड़ने पर ये कीड़े पैदा हो जाते हैं।

और अब गलतफहमी की मोटी परत भी हटा दें

न तो कैन्सर-कोशिकाएँ कैन्सर हैं, न कैन्सरीय ट्यूमर कैन्सर हैं

सामान्य जानकारी प्राप्त करना और स्वीकार करना कुछ सरल है। किन्तु जब यह स्वीकारने की बारी आती है कि कैन्सर-कोशिकाएँ भी कैन्सर नहीं हैं और कैन्सरीय ट्यूमर भी कैन्सर नहीं हैं, तो बात समझ के लिए सुपाच्य नहीं रह जाती। भाषा तो साफ कहती है कि कैन्सर-कोशिकाएँ कैन्सर की कोशिकाएँ हैं और कैन्सरीय ट्यूमर कैन्सर के ट्यूमर हैं, फिर भी कैन्सर चूँकि एक अदृश्य सत्ता है, अतः बात समझ की पकड़ से जल्दी ही छूट भी सकती है।

वैज्ञानिक गलतफहमी की पुख्ता दीवारें

१. हम अपनी आँखों से अर्बुदों को देखते हैं। उन्हें ही दिखाकर कहा जाता है कि 'कैन्सर हो गया है', अतः हम समझ बैठते हैं कि ये कैन्सरीय अर्बुद, घाव अथवा ट्यूमर ही कैन्सर हैं।

२. वैज्ञानिक जाँच के दौरान भी इन अर्बुदों के स्वभाव की ही परीक्षा होती है, तथा शरीर में कैन्सर-कोशिकाओं की उपस्थिति का ही पता लगाया जाता है। इनकी उपस्थिति की जब पुष्टि हो जाती है, तो रिपोर्ट बोल देती है कि कैन्सर हो गया है। जब इन कोशिकाओं को देखकर ही कैन्सर हो जाने की घोषणा की जाय, तो स्वाभाविक है कि सामान्य लोग इन कैन्सर-कोशिकाओं को ही कैन्सर समझ लें। ऐसा होता रहा है, और इस भ्रम को कायम रहने का वैज्ञानिक समर्थन-सा मिलता

रहा है। हम समझ बैठते हैं कि जाँच कैन्सर की ही हुई है, जबकि जाँच कैन्सर-कोशिकाओं की हुई रहती है।

३. कैन्सर-अस्पतालों में चिकित्सा के दौरान इन कैन्सरीय कोशिकाओं और अर्बुदों के ही नियंत्रण, उन्मूलन और घटाव के उपाय किये जाते हैं। जाँच करके इन्हीं की उत्पत्ति, घटाव और बढ़ाव को बताने का रिवाज है, जिससे पता चलता है कि कैन्सर की स्थिति क्या है। इससे ऐसा मान बैठने का मौका मिल जाता है कि कैन्सर की चिकित्सा हो रही है।

४. कैन्सर के विषय में शोध-अनुसन्धान करने वाले सर्वोच्च वैज्ञानिक कहते हैं कि अभी कैन्सर को समझा नहीं जा सका है, उसके रहस्य की गुत्थी सुलझ नहीं पायी है। किन्तु कोशिका-चिकित्सकों को 'कैन्सर विशेषज्ञ' कह देने का एक रिवाज सा है। यह तो साफ है कि जबतक कैन्सर को जान नहीं लिया जाता, उसके विशेषज्ञ होने का कोई तुक नहीं है। वस्तुतः ये चिकित्सक वर्तमान कैन्सर-चिकित्सा, कैन्सर-कोशिकाओं अथवा कैन्सरीय अर्बुदों के विशेषज्ञ होते हैं।

कैन्सर-विशेषज्ञ की उपस्थिति तो सूचित कर देती है कि कैन्सर को न केवल जान लिया गया है, बल्कि उसे विशेष तौर पर समझा जा चुका है। एक दृष्टान्त द्वारा स्पष्ट करें। डायबेटीज के रोगी के रक्त में शर्करा अगर अतिरिक्त होती है, तो उसे निरस्त करके रोगी को आराम पहुँचाया जाता है और उसके जीवन की रक्षा की जाती है। किन्तु वह शर्करा ही डायबेटीज नहीं है। अतः शर्करा का इलाज डायबेटीज का इलाज नहीं है। किन्तु कहने का रिवाज है कि डायबेटीज का इलाज चल रहा है।

कैन्सर का रेकरैन्स नहीं होता

चिकित्सा के दौरान कैन्सर के रेकरैन्स की बात की जाती है। यही कहने का रिवाज है और सैकड़ों वर्षों तक यह कायम रह सकता है। इस रिवाज से विरोध नहीं होना चाहिए। किन्तु इसके आर-पार बारीकी से देखकर यह बात समझ के दायरे में ले ली जानी चाहिए कि कैन्सर का रेकरैन्स नहीं होता। रेकरैन्स होता है कैन्सर-कोशिकाओं अथवा ट्यूमरों का।

कैन्सर और उसके स्टेज

१. कोशिकाओं और ट्यूमरों का कोई स्टेज नहीं होता

कैन्सर-कोशिकाएँ अमर होती हैं और ग्रोथ, अर्बुद आदि उन्हीं के संघ हैं। यहाँ भी कोशिकाओं का ही विचार होगा। जहाँ अमरत्व है, वहाँ शरीर अथवा संरचना को लेकर बचपन, युवावस्था अथवा वृद्धावस्था की चर्चा नहीं की जा सकती है। अवस्थाएँ तो उनकी होती हैं, जो मरणधर्मी होते हैं। अतः इन कोशिकाओं तथा इनके संघों को लेकर स्टेज की चर्चा नहीं की जा सकती। वे तो तबतक सशक्त रहेंगी और बढ़ेंगी, जबतक उन्हें उपयुक्त आहार और वातावरण मिलता रहेगा।

२. 'स्टेज' चिकित्सकीय उपायों के विचार से बाँटे गये हैं

परम्परागत चिकित्सा के पास कैन्सर-कोशिकाओं के नियंत्रण और विनाश के लिए कुछ उपाय हैं। इन्हें मोटा-मोटी तीन प्रकारों—सर्जरी, रेडियेशन और किमोथेरापी में विभाजित किया गया है। चिकित्सा-सम्बन्धी सुविधा और समझ के लिए स्टेज बाँटे गये हैं, जिनसे यह तय होता है कि कौन-सा उपाय अथवा कौन-से उपाय किस हालत में लागू किये जा सकते हैं, अथवा हालत ऐसी हो गयी है कि कोई भी उपाय लागू करना असम्भव है। चिकित्सा की एक सामान्य समझ के लिए इन स्टेजों की चर्चा की जाती है।

३. 'स्टेज' वस्तुतः जीवनी-शक्ति अथवा प्रतिरोध-क्षमता की गिरावट के होते हैं

कैन्सर को संघातक रोग इसलिए माना जाता है कि वह शरीर की जीवनी-शक्ति और प्रतिरोध-क्षमता को बढ़ते क्रम में तोड़ता चला जाता है। जबतक प्रतिरोध-क्षमता सुदृढ़ होती रहती है, शरीर की सामान्य कोशिकाएँ कैन्सर-कोशिकाओं का सरल आहार नहीं बन पातीं। जब शरीर के विभिन्न अंगों और संस्थानों की सामान्य कोशिकाओं का विचलन बढ़ जाता है, तो कैन्सर तेजी से फैल जाता है और उसके फैलते जाने का वातावरण तैयार हो जाता है। सामान्य कोशिकाओं के इस विचलन के बढ़ाव अर्थात् प्रतिरोध-क्षमता के ह्रास से ही कैन्सर का स्टेज बढ़ता जाता है।

चयोपचय का विचलन ही कैन्सर है, अतः यह विचलन जितना ही अधिक और व्यापक होगा, कैन्सर उतने ही बढ़े हुए स्टेज का होगा।

४. कैन्सर-कोशिकाओं के घटने से कैन्सर का स्टेज नहीं घटता

परम्परागत चिकित्सा के दौरान कैन्सर-कोशिकाओं को शरीर से बाहर निकालकर, जलाकर अथवा विषों के प्रयोग द्वारा मारकर उनकी संख्या घटा दी जाती है। ऐसा करने से उनका घनत्व कम हो जाता है, किन्तु इससे कैन्सर के स्टेज में गिरावट नहीं आ जाती। स्टेज का सम्बन्ध कैन्सर-कोशिकाओं की संख़्या अथवा घनत्व से नहीं है। स्टेज को तो सामान्य कोशिकाओं के विचलन से आँका जाना चाहिए। चलती ट्रेन में बैठकर बाहर का दृश्य देखनेवाला व्यक्ति कई बार समझ बैठता है कि ट्रेन का परिवेश ही पीछे की ओर दौड़ रहा है। ट्रेन के अन्दर से बाहर देखें, या चलती ट्रेन को बाहर से देखें—गणित के विचार से दोनों ही सही दिखायी दे जाते हैं। कैन्सर के क्षेत्र में भी कुछ ऐसा ही है।

५. कैन्सर का स्टेज घट सकता है, वह निर्मूल भी हो सकता है

अबतक यही सुनने में आया है कि चिकित्सात्मक उपायों की लाख कोशिश के बावजूद कैन्सर का स्टेज बढ़ता ही जाता है। दूसरे स्टेज का क्रमशः तीसरे और चौथे में पहुँच जाना देखा जाता है, किन्तु चिकित्सा के साथ स्टेज के उतरते जाने, अर्थात्

चौथे से तीसरे और फिर दूसरे में आने की बात नहीं देखी जाती। इसका कारण स्पष्ट रूप से यह है कि कैन्सर अभी समझ के दायरे में नहीं आ पाया, उसकी चिकित्सा शुरू नहीं की जा सकी। कैन्सर की चिकित्सा होगी, तो स्टेज अवश्य नीचे आयेगा। चिकित्सा के अन्तर्गत औषधि के रूप में ड्रगों (विषों) का प्रयोग किया जाता है, जो अपने संसर्ग से चयोपचय का विचलन बढ़ाते हैं। विचलन के बढ़ने से कैन्सर बढ़ता है। कई बार ऐसी चर्चाएँ तैर आती हैं कि कैन्सर को निर्मूल करने के उपाय विज्ञान के हाथ आने लगे हैं। किन्तु विज्ञान जबतक औषधीय साधनों के रूप में ड्रगों का ही व्यवहार करेगा, ऐसी चर्चाएँ मात्र आश्वासन ही बनी रहेंगी।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने पोषक ऊर्जा के सहारे कैन्सर की चिकित्सा की शुरुआत की। इस प्रकार की अनेक संभावनाएँ हो सकती हैं। डी. एस. रिसर्च सेण्टर का यह लघु प्रयास संभावना की एक दिशा में किया गया प्रयास है। यहाँ कैन्सर के स्टेज घटने और उसके पूरी तरह निर्मूल हो जाने के परिणाम भी आये हैं। अतः विचलन को घटाकर कैन्सर को घटाने और कैन्सर को घटाकर उसके स्टेज को घटाने के परिणाम जुटाना असंभव नहीं रह गया है।

❑

सामान्य कोशिकाएँ बनाम कैन्सर-कोशिकाएँ

शरीर के स्तर पर तो सामान्य कोशिकाओं से कैन्सर-कोशिकाओं की फौज ही लड़ती है। इन कोशिकाओं के विषय में भी कुछ सामान्य जानकारी अपेक्षित है। वैसे, विज्ञान ने तो इनके रेशे-रेशे का अध्ययन कर रखा है।

१. कैन्सर-कोशिकाएँ अमर होती हैं

आहार और सुरक्षा का वातावरण मिले, तो जीवित कोशिकाएँ विकसित होकर विभाजित होती जाती हैं। यह उनकी संख्या-वृद्धि का विज्ञान है। एक कोशिका विकसित होकर दो में; फिर दो, चार में विभाजित होती जाती हैं। किन्तु प्रत्येक विभाजन के बाद कोशिकाओं की विभाजन-क्षमता घट जाती है। आगे आने वाली हर कोशिका-पीढ़ी अपनी पूर्वज कोशिकाओं की अपेक्षा बूढ़ी होती है। उसमें विभाजन की क्षमता कम होती जाती है। एक स्थिति आती है जब इनकी संरचना-शक्ति बहुत क्षीण हो जाती है और बूढ़ी कोशिकाएँ विभाजन के दौरान ही बिखरकर मर जाती हैं। शिशुओं के शरीर की कोशिकाएँ जहाँ सशक्त और ओजस्वी होती हैं, वहीं वृद्ध शरीरों की कोशिकाएँ रुक्ष और कमजोर होती हैं। जब कोशिकाओं की विभाजन-क्षमता समाप्त हो जाती है, तो शरीर की मृत्यु हो जाती है। यह बात सभी शरीर-धारियों पर लागू होती है, मानव-शरीर की सामान्य कोशिकाओं पर भी।

किन्तु कैन्सर-कोशिकाएँ इसका अपवाद हैं। विभाजित होते समय उनकी विभाजित होते जाने की क्षमता का ह्रास नहीं होता। अगर आहार और सुरक्षा का वातावरण मिलता रहे, तो प्रत्येक कोशिका अनन्त काल तक चिर युवा रहकर विभाजित होती जा सकती है। चेतना के इस परिदृश्य में समय कोई हस्तक्षेप नहीं डालता, उम्र का हिसाब नहीं चलता। विभाजन-क्षमता के विचार से इनकी 'दादा पीढ़ी' उतनी ही युवा होती है, जितनी 'पोता पीढ़ी'। न कोई दादा है, न पोता—कम से कम उम्र के विचार से। प्रत्येक कोशिश उतनी ही जगमग। कैन्सर-कोशिका एक चेतन प्रक्रिया है, और यह प्रक्रिया परिवर्तन से अछूती रह जाती है।

कैन्सर के विरुद्ध लड़ाई का मोर्चा इसलिए भी बहुत दुरूह हो जाता है कि यहाँ मरणधर्मा मानवीय कोशिकाओं को चिरयुवा कैन्सर-कोशिकाओं से लड़ना पड़ता है। इतना ही नहीं, बल्कि सामान्य कोशिकाएँ अपनी रचना में एक विचलन तथा रुग्णता

लेकर खड़ी होती हैं। उनकी अधिक चेष्टा अपने बिखराव को समेटने में लग जाती है। और इधर विज्ञान है, जिसने कमर कस रखी है कि वह विजय का सेहरा चिरयुवा अमर कोशिकाओं के सिर से उतार कर विचलित और मरणधर्मा कोशिकाओं के सिर पर बाँध देगा। कैन्सर पर विजय एक ऐसी ही सफलता तो होगी !

२. कैन्सर-कोशिकाएँ आत्म-बलिदान नहीं जानतीं

जीवित रहने की इच्छा (जिजीविषा) जीवन की प्रत्येक इकाई में होती है। यह इच्छा कोशिकाओं के स्तर पर भी कायम रहती है। शारीरिक विकास के दौरान कई स्तरों पर कोशिकाओं की बढ़ती हुई फौज आत्म-बलिदान करती है। एक उदाहरण लें। जब मानव-शरीर में हाथ विकसित होते हैं, उस समय अगर बलिदान का नियंत्रण नहीं लगे, तो मानव हाथ सैकड़ों मीटर लम्बे हो सकते हैं। किन्तु यह नियंत्रण लगता है, और इसके लिए आगे बढ़ती कोशिकाओं की फौज को आत्म-बलिदान करना पड़ता है। यह बात प्रायः सभी शरीरधारी प्राणियों पर लागू होती है।

किन्तु कैन्सर-कोशिकाएँ यहाँ भी अपवाद हैं। वे आत्म-बलिदान नहीं जानतीं। वे शरीर और संस्थानों के विकास में भागीदारी नहीं करतीं। यह तो मुक्त कोशिकाओं की खाओ-बढ़ो वाली फौज होती है। कैन्सर का ट्यूमर कोशिकाओं का संघ होता है, यह कोशिकाओं द्वारा निर्मित शरीर नहीं होता। शरीर होता, तो आधा ट्यूमर कटते ही शेष शरीर मर जाता, और तब लड़ाई में चिकित्सा को थोड़ा बल मिलता। शरीर में संस्थानों और प्रक्रियाओं का पारस्परिक विस्तार होता है। कैन्सर-कोशिकाएँ, केवल कैन्सर-कोशिकाएँ हैं। वे किसी शरीर के भाग नहीं, बल्कि अदृश्य कैन्सर के दृश्य उत्पाद हैं।

कुछ वैज्ञानिक इस गहन विचार के साथ प्रयोगशालाओं में जुटे हुए हैं कि कोई ऐसी तकनीक ढूँढ़ी जाय, जो कैन्सर-कोशिकाओं को आत्म-बलिदान के लिए प्रेरित करे। अगर ऐसा हो जाय, तो कैन्सर-चिकित्सा में एक क्रान्ति आ जायेगी। किन्तु ऐसा हो पाना संभव इसलिए नहीं लगता कि जिन कोशिकाओं का लक्ष्य शरीरों और संस्थानों का निर्माण नहीं है, वे आत्म-बलिदान की प्रेरणा नहीं ग्रहण कर सकतीं। क्या होगा, भविष्य बताएगा।

३. सामान्य कोशिकाएँ कैन्सर-कोशिकाओं का आहार हैं

कैन्सर-कोशिकाओं और सामान्य कोशिकाओं के बीच की लड़ाई भक्षक और भक्ष्य के बीच की लड़ाई है। विज्ञान के समक्ष चुनौती है कि वह इस द्वन्द्व-युद्ध में आहार को जिता दे और भक्षक को हरा दे।

प्रकृति की शाश्वत व्यवस्था है कि आहार से (अन्न से) ही जीव उत्पन्न होता है। जो आहार है, वही जीव का पोषक है। आहार ही शरीर के भीतर से बाहर तक सर्वोच्च सुरक्षा-कवच है। यह दृष्टि प्राचीन भारत के ऋषियों को प्राप्त थी। गीता में भगवान कृष्ण

ने 'अन्न' अर्थात् 'आहार' को जीवों का पिता और जन्मदाता कहा है-'अन्नाद् भवन्ति भूतानि'। उपनिषदों में भी यह बात कही गयी है- 'अन्नं हि भूतानां ज्येष्ठम्'।

कैन्सर-कोशिकाओं का जन्म मानव-शरीर की विचलित सामान्य कोशिकाओं से होता है। अतः विचलित सामान्य कोशिकाएँ ही उनके आहार (अथवा 'अन्न') का स्रोत हैं, और वे ही उनका सुरक्षा-कवच भी हैं। कैन्सर-कोशिकाओं का निवास जबतक विचलित सामान्य कोशिकाओं के बीच ही रहेगा, तबतक न तो उन्हें पोषक के अभाव के संकट से जूझना पड़ेगा, न उनका सुरक्षा-कवच कमजोर होगा। कोई कैन्सर-कोशिका यदि दुर्बल होगी, तो आहार उसे परिपुष्ट बना देगा, अगर यह घायल भी हो, तो आहार का सुरक्षा-कवच उस घाव को भर देगा, कैन्सर-कोशिकाएँ तो बल्कि पोषण और सुरक्षा-व्यवस्था के समुद्र में बसी हुई हैं।

देखें, लड़ाई का परिदृश्य। कैन्सर-कोशिकाओं के इर्द-गिर्द विचलित सामान्य कोशिकाओं का अथोर भंडार पड़ा है। सामान्य कोशिकाओं का विचलित कोशिका-द्रव्य लूट-छीनकर वे पुष्ट होती जाती हैं और अपनी संख्या बढ़ाती चली जाती हैं। भक्षकों की बढ़ती संख्या सामान्य कोशिकाओं का कोशिका-द्रव्य लूटने-छीनने में व्यस्त होती जाती है। उधर सामान्य कोशिकाएँ अपने विचलन के कारण डगमगाती रहती हैं। फिर वे बढ़ती तादाद में भक्षक-कोशिकाओं का आहार बनती जाती हैं, उनके संस्थान छिन्न-भिन्न होने लगते हैं। शरीर-व्यवस्था का तीव्र और पीड़ामय विघटन निरंतर बढ़ता जाता है।

चिकित्सा के अन्तर्गत भक्षक-कोशिकाओं की संख्या अगर घटती है, तो सामान्य कोशिकाओं को भी चैन मिलता है और शरीर-व्यवस्था को भी कुछ आराम मिल जाता है।

❑

सामान्य कोशिकाओं का जाति-परिवर्तन

यात्रा : सामान्य से कैन्सर-कोशिका तक की

कैन्सर-कोशिका का जन्म ही कैन्सर का जन्म नहीं है। कैन्सर पैदा हो जाता है, फिर उसके कारण कैन्सर-कोशिका का जन्म होता है। कैन्सर-कोशिका का जन्म कैन्सर के हो जाने का प्रमाण है। देखा जाय कि एक सामान्य कोशिका किस प्रकार कैन्सर-कोशिका में रूपान्तरित हो जाती है।

स्वस्थ कोशिका

स्वस्थ कोशिका वह होती है जिसके केन्द्रक, कोशिका-द्रव्य और सशक्त चयोपचय के बीच पूर्ण एकलयता हो, समग्र अनुशासन हो। स्वस्थ कोशिका का चयोपचय ऐसे सचेतन कोशिका-द्रव्य का निर्माण और संकलन करता है, जो उसकी केन्द्रीय व्यवस्था के लिए एकदम अनुकूल होता है। अगर कोशिका-द्रव्य का कोई अणु गुण-स्तर पर थोड़ा भी शिथिल होता है, तो सशक्त चयोपचय उसे कम जटिल अणुओं में तोड़कर व्यवस्था से बाहर निकाल देता है।

अस्वस्थ कोशिका

जिस कोशिका का चयोपचय अपने गुण-धर्म से विचलित हो जाता है, वह अस्वस्थ कोशिका कही जाती है। विचलित चयोपचय विचलित कोशिका-द्रव्य का निर्माण और संग्रह करने लगता है तथा शिथिल गुण-स्तर वाले अणुओं को न्यायपूर्वक कोशिका-व्यवस्था से बाहर नहीं निकाल पाता। ऐसी कोशिका को एक तनाव से गुजरना पड़ता है और वहाँ असन्तुलन स्थापित हो जाता है। उसके अस्तित्व और विकास के संघर्ष में एक आन्तरिक उलझाव आ जाता है। आन्तरिक रचना में स्थापित विचलन और असंतुलन को ही कोशिका की अस्वस्थता कहा जाता है।

स्वास्थ्य का ताखा (NICHE, निके)

जितनी जीव-जातियाँ हैं, उतने ही स्तर की कोशिकाएँ होती हैं। यह भेद केन्द्रीय संरचना और कोशिका-द्रव्य से लेकर चयोपचय तक व्यक्त रहता है। विज्ञान की भाषा में इन भिन्न-भिन्न स्थितियों को सृष्टि की दीवार में पृथक-पृथक निर्मित ताखों से प्रगट

किया जाता है। जबतक कोई जीवन-व्यवस्था गुण-धर्म के विचार से अपने ताखे में पूरी तरह व्यवस्थित रहती है, तबतक वह स्वस्थ और सुरक्षित रहती है। अगर उसमें विचलन आ जाय, तो उसका अस्तित्व अरक्षित हो जाता है। एक ओर उसके भीतर अपने ताखे में वापस आने का अन्तःसंघर्ष चलने लगता है, तो दूसरी ओर बाह्य आक्रमणों की परिस्थिति का निर्माण हो जाता है।

कोशिका का विभाजन अथवा संख्या-वृद्धि

आहार से प्राप्त सचेतन अणुओं को चयोपचय उस केन्द्रीय व्यवस्था के अनुकूल ढालता है, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। एक स्वस्थ-सशक्त चयोपचय कोशिका-द्रव्य की मात्रा निरन्तर बढ़ाता जाता है और उसके गुण को भी कायम रखता है। इस कोशिका-द्रव्य से पोषण पाकर केन्द्रक भी समृद्ध होता जाता है, और फिर एक से दो केन्द्रकों में विभाजित हो जाता है। जब कोशिका-द्रव्य की मात्रा इतनी हो जाती है, जो दो कोशिकाओं के निर्माण के लिए पर्याप्त हो, तो वह कोशिका दो कोशिकाओं में विभाजित हो जाती है। ये दो नयी कोशिकाएँ केन्द्रीय व्यवस्था, कोशिका-द्रव्य और चयोपचय की दृष्टि से एक समान होती हैं और विभाजित होने वाली पूर्वज कोशिका के भी समरूप होती हैं। कोशिकाओं की वृद्धि का यही तरीका है।

विचलित कोशिका, विचलित कोशिकाओं में ही विभाजित होती जाती है

देखें, किस प्रकार की कोशिकाओं को विचलित कोशिका कहा जाता है। विचलन चयोपचय के विचलन से शुरू होता है, और चयोपचय के विचलन पर ही कायम रहता है। यह विचलित चयोपचय विचलित कोशिका-द्रव्य का निर्माण करता है और कोशिका-द्रव्य के गुण को न्यायपूर्वक कायम नहीं रख पाता। उधर कोशिका-द्रव्य और चयोपचय के विचलन के बावजूद केन्द्रक की संरचना यथावत कायम रहती है। अब केन्द्रक के चारो ओर ऐसा कोशिका-द्रव्य खड़ा हो जाता है, जो न तो उसके लिए एकदम अनुकूल पोषक होता है, न अनुकूल सुरक्षा-कवच। इस प्रकार कोशिका की संरचना में एक आन्तरिक तनाव स्थापित हो जाता है।

आगे, यह विचलित कोशिका जब एक से दो में विभाजित होती है, तो वे दोनों कोशिकाएँ भी विचलित रहती हैं। इस प्रकार विचलन धाराबद्ध हो जाता है और शरीर-व्यवस्था विचलित कोशिकाओं से भरती जाती है। अविचलित केन्द्रक विचलित चयोपचय में फँसा रहता है, और अन्तःसंघर्ष सर्वत्र कायम रहता है।

विभाजन के दौरान कोशिका की मृत्यु

विचलन और असंतुलन अधिक रहने पर विभाजन के दौरान कोशिका बिखर जाती है। केन्द्रीय व्यवस्था, कोशिका-द्रव्य और चयोपचय की एकलयता के अभाव में कोशिका संघटित नहीं रह पाती, अतः बिखराव आ जाता है। तब कोशिका की मृत्यु हो जाती है।

अगर यह विचलन बहुतेरी कोशिकाओं के साथ हो, तो कोशिकाओं का तनाव भी बढ़ता जाता है और उनकी मृत्यु भी तेजी से होने लगती है। इससे स्वास्थ्य के क्षरण की गति तीव्र हो जाती है।

केन्द्रीय संरचना स्वयं को कायम रखना चाहती है

केन्द्रीय व्यवस्था अर्थात् केन्द्रक की संरचना भरसक अपना गुण-धर्म और संघटनात्मक ढाँचा कायम रखने का प्रयास करती है। वह चयोपचय को अनुशासन में लाने के लिए व्यग्र रहती है और उसे व्यवस्थित करने की पूरी कोशिश करती है। वह अपने को तो भरसक कायम रखती है, किन्तु पोषण और सुरक्षा के दुर्ग और चयोपचय को बदल डालने का कोई उपाय उसके पास नहीं होता। यह निर्भरता ही उसकी परवशता है।

अति विचलन और कैन्सर-कोशिका का जन्म

कभी-कभी एक विलक्षण घटना घटित हो जाती है, जब केन्द्रीय व्यवस्था विवश होकर अपना संरचनात्मक ढाँचा बदल लेती है। उसमें ऐसा बदलाव आ जाता है, जिसके लिए विचलित कोशिका-द्रव्य ही एकदम अनुकूल आहार और सुरक्षा-कवच होता है, और मानवीय कोशिका का विचलित चयोपचय ही इस नयी रचना का आदर्श और अनुकूल चयोपचय होता है। यह नयी कोशिका सामान्य मानवीय कोशिकाओं की तुलना में असामान्य होती है, किन्तु अपने आप में पूर्ण स्वस्थ, सशक्त और सामान्य कोशिका होती है। सामान्य कोशिकाओं का विचलित चयोपचय इसका अनुकूल चयोपचय होता है और विचलित कोशिका-द्रव्य इसके लिए पूर्ण अनुकूल कोशिका-द्रव्य होता है। यही नवजात कोशिका कैन्सर-कोशिका होती है, और यही है सामान्य जीवन-व्यवस्था में कैन्सर-कोशिका का जन्म।

कोशिका (अर्थात् जीवन की इकाई) कोई भी हो, उसे अपनी अस्तित्व-रक्षा और संख्या-वृद्धि के लिए आहार की आवश्यकता होती है। जिस शरीर की सामान्य कोशिकाएँ विचलित हो गयी रहती हैं, वह कैन्सर-कोशिकाओं को जीवित रहने और संख्या में बढ़ने का वातावरण प्रदान करता है। शरीर का विचलित चयोपचय जहाँ सामान्य कोशिकाओं को अस्वस्थ और तनावग्रस्त बनाये रहता है, वहीं कैन्सर-कोशिकाओं के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है। इसी प्रकार सामान्य कोशिकाओं का विचलित कोशिका-द्रव्य कैन्सर-कोशिकाओं के लिए आहार-भंडार का काम करता है। कैन्सर-कोशिकाएँ सामान्य कोशिकाओं में संग्रहीत विचलित कोशिका-द्रव्य लूट-झपटकर खाने और अपनी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ाने लगती हैं। सामान्य कोशिकाओं का विचलित चयोपचय कैन्सर-कोशिका के चयोपचय के पक्ष में कार्य करने लगता है, और उस विचलन के कारण उन सामान्य कोशिकाओं का सन्तुलन नष्ट करने लगता है, जिनके अभिभावक बने रहने का दायित्व उसके ऊपर था। यह विचलित चयोपचय कैन्सर-कोशिकाओं के विकास और बढ़ाव के लिए सीढ़ी का काम करने लगता है। इस प्रकार शरीर का दुर्ग

कैन्सर-कोशिकाओं के लिए सुविधादायक और सामान्य कोशिकाओं के लिए संकट पैदा करने वाला बन जाता है। सामान्य कोशिकाओं का विचलित चयोपचय कैन्सर-कोशिकाओं के बढ़ाव के लिए सहयोगी सीढ़ी का काम करने लगता है।

सामान्य कोशिका के चयोपचय का अति विचलन ही कैन्सर है

सामान्य कोशिकाओं का विचलन ही कैन्सर-कोशिका को जन्म देता है, वही उन्हें पोषण देकर बढ़ाता है। अगर विचलन नहीं रहे, तो कैन्सर-कोशिका का न तो जन्म संभव होगा, न उसे बढ़ने का वातावरण मिलेगा। अतः यह अति विचलन ही कैन्सर है। जब कभी कैन्सर के उन्मूलन का प्रश्न खड़ा होगा, चयोपचय के इस विचलन को ही समाप्त करना होगा। विचलन का बढ़ना ही कैन्सर का बढ़ना और उसका कम होना ही कैन्सर का शमित होना है।

विचलन चयोपचय से आरम्भ होता है

चयोपचय ही जीवन संघर्ष की ऊर्जा-धारा है। वही अन्य चयोपचयों से संघर्ष करके उन्हें तोड़कर उनका कोशिका-द्रव्य प्राप्त करता, फिर उसे अपनी केन्द्रीय व्यवस्था के अनुकूल स्तर के सचेतन अणुओं में ढालकर कोशिका-द्रव्य का निर्माण करता है। बाह्य वातावरण से उसी का सम्पर्क तथा संघर्ष होता है। इस सम्पर्क और संघर्ष में ही उसके विचलित हो जाने की संभावनाएँ रहती हैं।

केन्द्रीय व्यवस्था इतनी सुरक्षित रहती है कि बाहरी वातावरण से उसका सम्पर्क नहीं होता। उसके सम्पर्क में कोई प्रतिकूलता केवल तभी आ सकती है, जब चयोपचय अपनी शिथिलता के कारण, उसे वहाँ पहुँचने दे। इसी प्रकार सुरक्षित है कोशिका-द्रव्य। उसमें विचलन केवल तभी आ सकता है, जब चयोपचय या तो विचलित अणुओं का निर्माण करने लगे, अथवा कोशिका-द्रव्य के विचलित अणुओं को तोड़-छाँटकर वहाँ से बाहर नहीं निकाल सके।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि विचलन चयोपचय से ही प्रारम्भ हो सकता है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने कोशिका के संरचनात्मक बदलाव के कारणों की तलाश जीन्स के धरातल पर की। वहाँ कुछ पाया नहीं जा सका। वास्तविकता यह है कि संरचनात्मक दबाव बुनियादी रूप से चयोपचय के विचलन के दबाव के कारण ही संभव होता है।

विचलन के दूर हो जाने की और कैन्सर पर विजय की पूर्ण संभावनाएँ हैं

चयोपचय को विचलन से मुक्त किया जा सकता है। विचलित होने का यह अर्थ नहीं है कि वह पूरी तरह रूपान्तरित होकर किसी अन्य जीवन-व्यवस्था का चयोपचय बन गया है। विचलन दूर होने की संभावनाएँ प्रबल इसलिए हैं कि—

१. चयोपचय हमारा अपना चयोपचय है, और विचलन उसको प्रिय नहीं होता। वह अपनी पूर्व स्थिति में आकर उस केन्द्रक के एकदम अनुकूल बनने की चेष्टा में लगा

रहता है, जिसका वह प्रतिनिधि है। विचलन उसकी अपनी बेचैनी है, जिसे वह झाड़ देने की चेष्टा करता रहता है। अतः अगर उसे सहयोग मिले, तो अपनी पूर्वस्थिति में आने में उसे सफलता मिल सकती है।

२. कोशिका की केन्द्रीय व्यवस्था कोई बदलाव स्वीकार नहीं करना चाहती। वह अपने को यथावत कायम रखना चाहती है। अगर चयोपचय का विचलन दूर होने लगे, तो केन्द्रीय व्यवस्था का बढ़ता हुआ बल उसे प्राप्त होने लगेगा। जबतक केन्द्रीय संरचना नहीं बदले, चयोपचय का मूल स्वभाव ही उसका अपना स्वभाव होता है।
३. विचलन दूर करते रहना चयोपचय का स्वभाव है। बाह्य पदार्थों तथा चयोपचयों से संपर्क के दौरान उसमें थोड़ा-बहुत विचलन आता ही रहता है, और वह विचलन निरन्तर दूर भी होता रहता है। अतः विचलन के कम या अधिक होने से चयोपचय का मूल स्वभाव नहीं बदल जाता। वह उसी केन्द्रक का एक रोगी प्रतिनिधि होता है।
४. केन्द्रीय संरचना के बदल जाने और उसके कैन्सर-कोशिका का केन्द्रक बन जाने पर चयोपचय का रूपान्तरण हो जाता है। वह अब कैन्सर-कोशिका का सामान्य चयोपचय बन जाता है। उसे रूपान्तरित करके पुनः मानव-कोशिका के सामान्य चयोपचय के रूप में नहीं लाया जा सकता।
५. विचलित कोशिका-द्रव्य ही कैन्सर-कोशिकाओं का अनुकूल आहार है। विचलन दूर करके कैन्सर को समाधान दिया जा सकता है, साथ ही कोशिका-द्रव्य का विचलन भी समाप्त किया जा सकता है। इस प्रकार कैन्सर-कोशिकाओं के समक्ष अनुकूल आहार प्राप्त होने का संकट खड़ा किया जा सकता है।

स्वास्थ्य के विकास, रोगों के प्रतिषेध और रोगों की चिकित्सा का साधन एक ही वर्ग का होगा

चयोपचय का विचलन ही रोग है और रोगों के बाह्य संवाहक भी विचलित चयोपचय में ही अपना निवास बनाते हैं। एक स्वस्थ चयोपचय अपनी व्यवस्था में अन्य किसी चयोपचय की उपस्थिति स्वीकार नहीं करता। अतः चयोपचय का विचलन दूर होने से जहाँ स्वास्थ्य का विकास होता है और वह सन्तुलित रहता है, वहीं रोगों के प्रतिषेध का सबल दुर्ग भी निर्मित हो जाता है। रोग-उन्मूलन की बात भी इसी पंक्ति में खड़े होकर की जा सकती है।

❑

कैन्सर होने के कारण क्या हैं

गहरे धुन्ध से ढकी झाड़ियों में ही आज तक छिपा रह गया कैन्सर। भोगा रोज गया, जाना कभी नहीं जा सका। जीन्स की गहराइयों तक उत्खनन कर डालनेवाले वैज्ञानिक और अन्धकार का गणित जानने वाले कम्प्यूटर भी यह पता नहीं लगा सके कि यह है क्या। यह बताना कि कैन्सर है क्या, विज्ञान की शुद्ध जिम्मेदारी है, अतः वहाँ कोई कुछ लिखने-बोलने की हिम्मत नहीं जुटा सका। पट्ट साफ-सपाट पड़ा किसी दिन की प्रतीक्षा कर रहा है। कैन्सर की आक्रामकता समय के साथ ज्यों-ज्यों बढ़ रही है, आतंकित आदमी दो मोर्चों पर बड़ी तत्परता से जुटता जा रहा है। वहाँ के सावधानी-पट्टों पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, और रोज कुछ-न-कुछ लिखा जा रहा है।

पहला मोर्चा है अपनी अनुभूतियों की तलाशी लेते रहने और सतर्क रहने का, कि शरीर में कहीं कुछ कैन्सर-जैसा घटित तो नहीं हो रहा है ! सतर्क रहना है कि ज्यों ही ऐसी शंका हो, तत्काल जाँच कराई जाय और बिना देर किये चिकित्सा शुरू करा दी जाय। लेकिन सावधानी-पट्ट पर इतनी बातें लिख दी जाती हैं कि पढ़ने वाला यही प्रभाव ग्रहण करता है कि कैन्सर-अस्पताल में खाली बेड का पता लगाकर भर्ती हो जाना ही उसके लिए अब एकमात्र रास्ता रह गया है। चिकित्सकों का कहना है कि देरी करने से चिकित्सा शुरू करने का सही मुहूर्त हाथ से निकल जाता है।

दूसरा मोर्चा है, कैन्सर होने के कारणों के विषय में जानकारी एकत्र करने का। धुन्ध से ढकी हुई कोई भी झाड़ी ऐसी नहीं है, जहाँ से वह झपटकर इन्सान को नहीं उठा ले गया हो। संयम और परहेज वाली झाड़ियाँ भी अपवाद नहीं रह गयी हैं। किसी भी झाड़ी-क्षेत्र के लिए घोषित नहीं किया जा सका कि वही कैन्सर का क्षेत्र है। पत्रों में, पत्रिकाओं में, किताबों में और सभाओं में कारणों के नये-नये वृत्तान्त प्रकाशित होते रहते हैं। चिन्तकों और स्वास्थ्यविदों ने जगहों को चिन्हित करने के लिए निर्देश-बल्लियाँ बना दी हैं। उनकी संख्या बड़ी है और बढ़ती ही जा रही है। अगर कोई व्यक्ति ये सभी बल्लियाँ खड़ी करके कैन्सर से बचाव के रास्ते ढूँढ़े, तो जिन्दगी का रास्ता बेहद तंग और दमघोटू हो जाएगा। बल्लियों को गाड़कर उनके बीच से निकलने की अपेक्षा उसे स्वयं को कैन्सर के सामने खुला छोड़ देना ही उचित लगेगा। वह भी क्या करे, "इससे भी कैन्सर होने का खतरा है, उससे भी है, और उससे भी है ही...।"

तम्बाकू : बदनाम अपराधी नम्बर एक

अनुभवों ने बताया है कि तम्बाकू का सेवन अन्य स्वास्थ्य-उपद्रव पैदा करने के साथ ही कैन्सर-कारक भी होता है। एक समय था, जब इसे ही कैन्सर का एकमात्र वाहक और कारण समझा जाता था। स्वाभाविक था कि इसके सेवन पर नियंत्रण की माँग हो। शहरों में लोग पट्टियाँ लेकर घूमते पाये जाते थे, "कैन्सर से बचना है, तो तम्बाकू से बचो।" चिकित्सा के लिए कैन्सर-वार्ड में भर्ती करने से पूर्व हर रोगी के, यहाँ तक कि शिशुओं के विषय में भी इकतरफा जानकारी ली जाती थी कि उन्होंने बीड़ी-सिगरेट, खैनी-जर्दा, दारू-शराब का सेवन किया है क्या ? और अगर किया है, तो कितने समय तक और किस मात्रा में ?

यह बात तब की है, जब "डाक्टर ने कहा है" की धूम थी। डाक्टर ने जो कहा, उसके सामने धर्म-ग्रन्थों के कथन को भी कच्चा माना जाता था। चिकित्सा तब व्यवसाय पर सवारी करती दिखायी नहीं देती थी, अतः चिकित्सकों और दवाओं को रोग-कारकों की परेड में शामिल नहीं किया गया था। उस समय ड्रगौषधियों को सात्विक वरदान माना जाता था और उनकी पैकिंग के चमकदार पहनावे भी उनकी रोग-कारकता तथा साइड एफेक्ट्स पर ध्यान नहीं टिकने देते थे। वह समय था, जब स्वास्थ्य-चिन्तन व्यसनों और जीवन-शैलियों में ही सभी रोगों की कारकता ढूँढ़ा करता था। इसीलिए तम्बाकू के कान जोर लगाकर पकड़े गये थे और आँकड़ों के आधार पर वैज्ञानिकता खड़ी होती थी। अब तो तम्बाकू अकेला अपराधी नहीं, बल्कि एक कतार में खड़ा है और उस कतार में वह पिछड़ा हुआ दिखायी देता है।

तम्बाकू भी रोग-कारक और कैन्सर-कारक है। रक्त के वैज्ञानिक परीक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि तम्बाकू-सेवन करनेवालों का सी. इ. ए. सामान्य से कुछ अधिक होता है। कैन्सर-रोगियों का सी. इ. ए. जितना ऊँचा रहता है, तम्बाकू-सेवन करनेवालों का रहता तो उससे बहुत नीचे है, किन्तु झुकाव तो उधर का रहता ही है।

दूसरी बात है कि भारत जैसे देशों में जहाँ तम्बाकू विभिन्न रूपों में सेवन किया जाता है, मुँह-क्षेत्र के पुरुष कैन्सर-रोगी बहुत हैं। उधर पश्चिमी देशों में सिगरेट पीने पर नियंत्रण करने से फेफड़े के कैन्सर का होना नियंत्रित भी हुआ है।

कारणों की समीक्षा में डी. एस. रिसर्च सेण्टर की नीति

डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने कैन्सर के कारणों की समीक्षा के लिए एक व्यापक और निष्पक्ष नीति तैयार की है। शायद यह एक ही अनुसन्धान केन्द्र है, जहाँ इस बात की भी जानकारी ली जाती है कि कैन्सर होने से पहले रोगी को कौन-सा छोटा-बड़ा रोग हुआ था, और उसके लिए किस प्रकार की कितनी चिकित्सा ली गयी थी। अन्न, जल, साग-सब्जी, फल-फूल तथा परिवेश के प्रदूषण-सम्बन्धी जानकारी भी प्राप्त की जाती है। तम्बाकू आदि व्यसनों के विषय में भी तहकीकात की जाती है।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर का विशेष दायित्व

आज डी. एस. रिसर्च सेण्टर कैन्सर की बुनियादी चिकित्सा के सैकड़ों परिणाम के साथ दुनिया के सामने उपस्थित हो रहा है। यह एक अपूर्व और ऐतिहासिक बात है, अतः डी. एस. रिसर्च सेण्टर का दायित्व है कि कैन्सर के कारणों के विषय में भी अपनी राय अवश्य प्रस्तुत करे। यह अपने आप में ही स्थापना नहीं बन सके, तो भी एक निष्पक्ष और गहरे अध्ययन की परम्परा तो बन ही जाएगी।

कारणों की एकमुश्त व्याख्या

कैन्सर को अगर समझ लिया गया, अगर उसे परिभाषित कर लिया गया और औषधीय चिकित्सा द्वारा उसे दूर कर देने के परिणाम सामने आ गये, तो निश्चित ही उसके होने के कारणों की सही व्याख्या प्रस्तुत करने की स्थिति बन गयी है। डी़ एस. रिसर्च सेण्टर ने स्वास्थ्य के चयोपचय का विचलन दूर किया, और कैन्सर दूर हो गया। विचलन ज्यों-ज्यों बढ़ता है, कैन्सर की सम्भावना उतनी ही बढ़ती है। अतः जो बातें चयोपचय का विचलन बढ़ाती हैं, वे ही अनिवार्यतः कैन्सर उत्पन्न करने की कारण हैं।

कैन्सर का सबसे बड़ा कारण

रासायनिक ड्रगौषधियों द्वारा कुचिकित्सा और अतिचिकित्सा

आज रोगों तथा उनसे उत्पन्न खतरों से बचाव के लिए प्रचलित चिकित्सा की शरण में जाने के अतिरिक्त अन्य कोई निर्भरणीय उपाय नहीं है। इस बात से इन्कार करने का भी कोई सवाल खड़ा नहीं होता कि चिकित्सा ने विज्ञान की उस गहराई तक पहुँचकर अपना आधार स्थापित किया है, जहाँ तक इससे पूर्व कभी बढ़ा नहीं गया था। आधुनिक औषधीय चिकित्सा की कमियों और कमजोरियों को उजागर करना इस विज्ञान की निरर्थक आलोचना नहीं है। अपनी स्थिति की निष्पक्ष वैज्ञानिक समीक्षा आवश्यक और उचित होती है।

वर्तमान औषधियाँ ड्रगों से बनती हैं। ड्रगों का स्वभाव है कि जीवित शरीर में प्रयुक्त होने पर ये रोग उत्पन्न करते हैं, आयुष्य घटाते हैं और स्वास्थ्य की प्रतिरक्षा-व्यवस्था को तोड़ते हैं। यह बात प्रत्येक ड्रग की छोटी-से-छोटी खूराक-मात्रा पर भी लागू होती है। अगली बात है कि ड्रगों द्वारा रोगों को दूर नहीं किया जा सकता। इनका प्रयोग शरीर की बिगड़ती हुई केमिस्ट्री को व्यवस्थित करके कष्ट, पीड़ा और जीवन पर उपस्थित खतरे को टाल भर देता है। इनकी उपयोगिता के दो आधार हैं—एक तो यह कि ये अस्थायी तौर पर रोगी को उस कष्ट और पीड़ा से दूर कर लेते हैं, जिनसे कुछ समय के लिए ही सही, राहत पाने के लिए रोगी छटपटाता रहता है, और दूसरे कि शरीर- व्यवस्था में रोग के कारण बिगड़ी हुई केमिस्ट्री का ये अस्थायी समाधान दे देते हैं।

किन्तु यह केमिस्ट्री का अन्धा उपयोग है, जो जैव पदार्थों को भी जड़ पदार्थ की तरह देखता-पढ़ता है, और प्रत्यक्षतः जैव प्रक्रिया को ध्वस्त कर देता है। ड्रगौषधियों की दुधारी तलवार से बचाव के लिए जो सावधानियाँ आवश्यक हैं, वे हैं—

१. इनका प्रयोग आवश्यकता होने पर ही किया जाय।
२. सटीक औषधियों का चुनाव कर लिया जाय, ताकि उनकी निष्फल मात्रा शरीर में नहीं जाए, क्योंकि ड्रग अपने दुष्प्रभाव अंकित करने से तो चूक नहीं सकते।
३. इनका प्रयोग सीमित मात्रा में किया जाय।
४. इनका प्रयोग ऐसी व्यवस्था के साथ किया जाय जिससे साइड एफेक्ट्स नियंत्रित रहें।
५. औषधियों के प्रयोग से स्वास्थ्य में जो विचलन आता है, उसे तत्काल ही दूर करते जाने के उपाय ढूँढ़े जायँ।

कैन्सर का एक और बड़ा कारण : कुचिकित्सा

चयोपचय का घोर विचलन कैन्सर की बुनियाद है, अतः इस विचलन का बढ़ना अन्य रोगों के साथ ही कैन्सर होने की दिशा में बढ़ाव है। जबसे चिकित्सा-विज्ञान ने ड्रग-निर्मित औषधियों के दुष्प्रभावों की ओर विशेष ध्यान दिया, कुछ चौंकानेवाले और खतरनाक नतीजे सामने आ गये। यह प्रगट हो गया कि आज का आदमी रोगों के खतरों से उतनी तबाही नहीं झेल रहा है, जितनी ड्रगौषधियों के साइड एफेक्ट्स से। साइड एफेक्ट्स के अन्तर्गत रोगों का जटिल बन जाना, नयी स्वास्थ्य-समस्याएँ उत्पन्न हो जाना, शरीर के जीवन्त अंगों तथा संस्थानों का कमजोर हो जाना और उनकी पूर्ण मृत्यु तक का होना, तथा कैन्सर की स्थिति का उत्पन्न हो जाना भी है।

अब यह तथ्य सामने आ गया है कि भारत जैसे कम साधन वाले देशों में जितने लोग कैन्सर से ग्रस्त हैं, उनमें से आधे को कैन्सर केवल एण्टीबायोटिक दवाओं के अवैज्ञानिक सेवन से हुआ है।

'सर्वपिष्टी' के परीक्षण के दौरान डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने कुछ जानकारी हासिल की है। इनकी व्यापक वैज्ञानिक छानबीन आवश्यक है। यहाँ कुछ तथ्य प्रस्तुत कर दिये जा रहे हैं, ताकि इनकी रोशनी में सावधानी रखी जा सके।

१. लीवर का कैन्सर

कुछ वर्ष पूर्व तक भारत में लीवर कैन्सर के कम रोगी पाये जाते थे। अब तो इनकी संख्या बहुत बढ़ गयी है। इसके अन्य कारण भी हो सकते हैं, किन्तु एक बात अधिक देखी गयी है—लोगों के सामान्य ज्वर, बुखार अथवा अन्य उपद्रवों के शमन के लिए तीव्र ड्रगौषधियों का व्यवहार किया गया, जिससे उन्हें लीवर का कैन्सर हो गया।

२. एक्यूट ल्यूकेमिया और एप्लास्टिक एनीमिया

सामान्य ज्वर, बुखार अथवा चर्म रोगों की तीव्र ड्रगों द्वारा चिकित्सा के परिणामस्वरूप इस प्राणघातक रोग के उत्पन्न होने के उदाहरण सामने आये हैं।

३. फेफड़ों का कैन्सर

श्वसन-संस्थान के कष्टों को बिना वैज्ञानिक जाँच के टी. बी. मानकर, टी. बी. की दवाओं का व्यवहार कर देना फेफड़े के कैन्सर का नम्बर एक कारण है।

४. गर्भाशय ग्रीवा तथा नारी-संस्थानों के कैन्सर

यह एक ज्ञात तथ्य है कि ड्रगौषधियों द्वारा नारी-रोगों को दूर नहीं किया जा सकता। रोगिणी के ऐसे उपद्रवों की अतिचिकित्सा तथा कुचिकित्सा से गर्भाशय, गर्भाशय-ग्रीवा तथा अन्य नारी-संस्थानों के कैन्सर हो जाते हैं। मासिक-स्राव कोई रक्त-स्राव नहीं है। मासिक दोषों के शमन के लिए रक्त-स्राव की चिकित्सा का सहारा ले लेना हमारी मजबूरी हो सकती है, किन्तु यह घोर अन्याय भी है। इधर फैशन और कृत्रिम साधनों का प्रयोग भी कैन्सर का कारण बन रहा है।

५. गाल ब्लैडर और लीवर का कैन्सर

ऐसे बहुतेरे मामले आते हैं, जिनमें गाल ब्लैडर की पथरी का ऑपरेशन किया जाता है, और पूरी जाँच से पाया जाता है कि वहाँ कैन्सर का कोई चिन्ह नहीं है। किन्तु कुछ ही दिनों या महीनों के बाद वह व्यक्ति लीवर-कैन्सर का रोगी बना पाया जाता है। लगता है कि ऑपरेशन के दौरान और फिर उसका घाव भरने के लिए प्रयोग में लाये गये तीव्र औषधीय विषों ने ही यहाँ कैन्सर के उत्पन्न होने में प्रमुख भूमिका निभायी है।

६. अस्थि का कैन्सर

अस्थि में आयी चोट की उचित चिकित्सा तब पूरी घोषित होनी चाहिए, जब जाँच-रपटों से एकदम स्पष्ट हो जाय कि चोट का दुष्प्रभाव निर्मूल हो चुका है। इस विन्दु पर चूक हो जाने से अस्थि का कैन्सर होना पाया गया है। वस्तुतः चोटों के गहरे दुष्प्रभावों को एलोपैथिक दवाओं से दूर करना असम्भव है, क्योंकि ये विष शरीर की ऊपरी व्यवस्था में ही उपद्रव और प्रतिक्रिया उत्पन्न कर पाते हैं। देशी चिकित्सा और होमियोपैथी इनके शमन में सक्षम हो सकती हैं। किन्तु जहाँ एक ओर देशी चिकित्सा को विज्ञान के दर्जे तक उठने नहीं दिया गया है, वहीं आदमी का मनोविज्ञान इलाज में कम-से-कम समय नष्ट करना चाहता है। उधर होमियोपैथिक चिन्तन इतना गहरा है कि हर जगह कुशल होमियोपैथ उपलब्ध नहीं हो पाते।

७. यौन-रोगों की गलत और अधूरी चिकित्सा

यौन-रोगों (गर्मी, सूजाक आदि) की जड़ें बहुत गहरी होती हैं। ऊपरी चिकित्सा से ऐसा मालूम होता है कि व्यक्ति रोग-मुक्त हो गया, किन्तु गहरे स्तर पर एक संघर्ष और रोग-तत्व कायम रह जाता है। इससे स्वास्थ्य में स्थायी विचलन स्थापित हो जाता है। कहा जाता है कि गर्मी-सूजाक का रोगी अन्य किसी रोग से नहीं, बल्कि इसी रोग से मरता है। आशय यह है कि गहराई में बैठी हुई यह अव्यवस्था अनेक रोगों का कारण बनकर उन्हें जन्म देती है। लगता है कि रोगी अन्य किसी व्याधि से ग्रस्त है, जबकि वह यौन रोग का ही रूपान्तरण होता है।

८. विकिरण

विकिरण कैन्सर पैदा करने में प्रामाणिक कारण सिद्ध हुआ है। एक ही शरीर-क्षेत्र का कई बार लगातार एक्स-रे कराना भी कैन्सर पैदा कर सकता है। अतः विकिरण से चलने वाली जाँच और चिकित्सा दोनों के ही मोर्चों पर संयम बरतने की आवश्यकता है।

९. भोज्यों का विचलन

रासायनिक खादों, सुरक्षा के लिए छिड़के गये कीटनाशकों, फिर कीड़ों से बचाव के लिए भोज्यों को रासायनिक विषों के कवच में रखना तथा बाजार के लिए पैक करते समय खाद्यों को रक्षक-रसायनों से संवृत्त बनाये रखना—ये ऐसे कारण हैं, जो भोज्य पदार्थों को उस गुण-धर्म से विचलित करके ला खड़ा करते हैं, जिससे प्रकृति ने उन्हें मानवीय आहार के अनुकूल बना रखा था। भोज्यों का गुण-स्वभाव बदल गया है। पहले जहाँ वे पोषण देते थे, अब चयोपचय को रसायनों से संघर्ष में झोंक देते हैं। ये भोज्य भी विचलन को निरन्तर बढ़ाते जा रहे हैं। इस विषत्व के शिकार आज अन्न, फल, सब्जी, शाक आदि सभी हो चुके हैं।

१०. मानवीय भोज्यों का विचलन

मनुष्य अपने आहार के रूप में जिन अनाजों, फलों, शाक-सब्जियों का व्यवहार करता है, उनकी आन्तरिक संरचना अनेक कारणों से बदल चुकी है। उनके गुण और स्वभाव में विचलन आ गया है, उनकी संरचना की केमिस्ट्री बदल गयी है। अब वे वही नहीं रह गये हैं, जिन्हें प्रकृति ने मानव के सहज आहार के रूप में प्रस्तुत किया था। वे पूर्णतः अनुकूल भोज्य नहीं रह गये हैं। यह बात अन्य भोज्यों पर भी प्रायः लागू है।

विचलित भोज्य-सामग्री एक ओर चयोपचय में विचलन स्थापित करती है, दूसरी ओर उसे एक अतिरिक्त संघर्ष में उतार देती है। चयोपचय विचलनकारी रसायनों से पूरी छुट्टी नहीं दिला पाता और वे जीवन की आन्तरिक व्यवस्था तक पहुँचकर एक स्थायी अन्तःसंघर्ष की स्थापना कर देते हैं।

इस सन्दर्भ में इन विन्दुओं पर विचार किया जा सकता है

(क) पौधों के शरीर के अध्ययन से पता चला है कि उनके शरीर में यूरिया आदि खाद चयोपचय को धोखा देकर, अपने ही रासायनिक रूप में उनके शरीर में छा गये हैं। वे बीजों तक पहुँच जा रहे हैं, और फिर मानव-शरीर तक।

सजग संस्थानों द्वारा परिशुद्ध होकर शिशुओं का मातृ-दुग्ध जैसा पवित्र आहार तैयार होता है। भारतीय वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि खेतों की जमीन से प्रस्थान करनेवाला यूरिया मातृ-दुग्ध तक में व्याप्त होता जा रहा है।

(ख) फसल को बचाने के लिए जो कीटनाशक रसायन छिड़के जाते हैं, वे भी भोज्यों की रचना में शामिल पाये जा रहे हैं।

(ग) पैदावार की सुरक्षा के लिए कीटनाशकों का जो कवच बाँधा जाता है, वह भी भोज्यों की केमिस्ट्री का अंग बन रहा है।

(घ) बाजार के लिए पैक करते समय भोज्य सामग्रियों को जिन रसायनों से संरक्षित किया जाता है, वे सामग्रियों को तो सड़ने से बचाते हैं, किन्तु मानवीय भोज्यता को नष्ट भी करते हैं।

रोज का देखा हुआ यथार्थ है कि रासायनिक विषों के बल पर सुरक्षित रखे गये बीजों से उगाई गई फसल पर कीटाणु और रोगाणु टूट पड़ते हैं। पहले ऐसा नहीं देखा जाता था कि फसल उगी और उसे बचाव के लिए कीटनाशकों की जरूरत पड़ गयी। बीजों और उससे उगे पौधों का विचलन उनकी कमजोरी बनकर उनके जीवन का शत्रु बन गया है। प्रश्न है कि उनसे प्राप्त की गयी ऊर्जा, मानव-स्वास्थ्य की रक्षा किस प्रकार कर पायेगी ? वे तो स्वयं ही अपने ताखे (NICHE) से बाहर आ गये हैं। इन भोज्यों के प्रयोग के कारण मानव-स्वास्थ्य भी अपने ताखे से बाहर झूल रहा है, अतः स्वाभाविक है कि प्रतिकूलताएँ उन्हें खतरे में ला खड़ा करें।

११. भोज्य पदार्थों का संकरत्व

कृषि-संस्कृति बहुत तेजी से संकरत्व की ओर बढ़ते वेग से दौड़ती जा रही है। वैज्ञानिक मेण्डल ने स्वयं ही निरूपित किया था कि कुछ ही पीढ़ियों के बाद मिश्रत्व अथवा संकरत्व अपनी पूर्व जातियों में स्थापित हो जाता है। इसका स्पष्ट आशय है कि संकर बीजों में स्थिरता नहीं है, बल्कि उनमें विभाजित हो जाने का एक तीव्र अन्तःसंघर्ष स्थापित है। सोचने की बात है कि जो भोज्य स्वयं ही अपने अन्तःसंघर्ष में उलझे हैं, स्थिर नहीं हैं, वे स्थिर मानव-स्वास्थ्य का माध्यम कैसे बन पायेंगे ? मानव जाति को ऊपरी तौर पर भले ही लगता हो कि वह अपनी प्राकृतिक आहार-सामग्रियों द्वारा पोषित है, किन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी स्पष्ट उल्लेख है कि सात्विक स्वास्थ्य के लिए 'स्थिर' आहार ही अनुकूल है।

१२. प्रदूषण

नानाविध प्रदूषण मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और स्नायविक संरचना को विचलन की दिशा में दौड़ा रहा है। वायुमण्डल प्रदूषण से बोझिल है, ध्वनि का प्रदूषण अतिरिक्त दबाव कायम किये हुए है। मन का तनाव दिनचर्या बन गया है। फैशन में दौड़ते लोगों के चमड़े पर सुगन्धित रासायनिक विषों का पहरा बैठ रहा है। आहार रासायनिक विषों के कन्धे पर बैठा है। दवाएँ विषत्व की रही-सही कसर पूरी कर रही हैं, ये भी अन्य रोगों और स्वास्थ्य-उपद्रवों की बुनियाद रख रही हैं, जो कुचिकित्सा और अतिचिकित्सा का सहयोग पाकर जीवन को कैन्सर तथा अन्य महारोगों की ओर मोड़ दे रही है।

कारणों की समीक्षा

संयम और परहेज अब व्यक्ति के अपने हाथ में नहीं रह गये हैं। अनेक विन्दुओं का समाधान सामाजिक चेतना और सामाजिक जागरण से ही संभव हो पाएगा। जीवन-शैली (स्वास्थ्य और पोषण) का गियर बाजार के हाथों में है और ड्रगों पर सवार चिकित्सा भी एक आकर्षक व्यवसाय बन चुकी है। अतः रोगों पर नियंत्रण के लिए सामाजिक चेतना के उत्थान की प्रतीक्षा करनी होगी। पहले समाज का मन शान्त और सात्विक बनेगा, तब उस चेतना को स्थान मिल सकेगा।

❑

खण्ड : चार

- डी. एस. रिसर्च सेण्टर : एक संक्षिप्त परिचय
- औषधीय चिकित्सा स्वयं ही विचलित हो गई थी
- धरातल की तलाश और केन्द्र की स्थापना
- अभियान और उपलब्धियाँ

डी. एस. रिसर्च सेण्टर
एक संक्षिप्त परिचय : विज्ञापन नही

किसी गतिमान संस्था का परिचय गतिशीलता का वर्णन है, ठहराव की व्याख्या नहीं। ठहराव की व्याख्या का मोह मन को व्यक्ति-केन्द्रित, वस्तु-केन्द्रित तथा स्थूल के प्रति मुग्ध बना देता है। डी. एस. रिसर्च सेण्टर भी एक अभियान है, एक यात्रा है। यात्रा भी कैसी ? इसके वैज्ञानिकों के पास यात्रा का अधिकार-पत्र नहीं था, रोड ही नहीं, तो रोड-परमिट कौन देता ? न ही यात्रा का कोई निर्धारित मार्ग था। इतिहास मौन था कि ऐसे कँटीले झाड़-झंखाड़ों में शोध के लिए कोई उतरा भी था या नहीं।

इस संस्था के साथ सहयोगी जत्था था परिजनों का, जिसमें सीना और कद मापनेवाले फीतों के बीच से निकाले गये लोग नहीं थे। उन्हें इतना ही पता था कि जोखिमभरे बेतरतीब बीहड़ में उतरना है।

बढ़ते हैं गतिमयता के दृश्यांकन में।

वैज्ञानिक शोध और अनुसन्धान के कार्य किसी भवन के शिलान्यास अथवा उपकरणों के संकलन-संग्रह से प्रारम्भ नहीं होते। ये तो स्थूल साधन हैं, जिनकी आवश्यकता बाद में होती है। अनुसन्धान का प्रारम्भ वस्तुतः वैज्ञानिक मन के वैचारिक धरातल पर होता है। मन के सामने यदि प्रकृति के घटना-प्रवाह में किसी नये तारतम्य की झलक मिल जाती है, तो वैज्ञानिक मन स्वभावतः ही प्रकृति को अधिक निकटता से देखने लगता है। पहले 'ऐसा ही है क्या ?' की झलक मिलती है, फिर धीरे-धीरे यह झलक ही 'आभास' अथवा 'अवधारणा' का आकार ग्रहण कर लेती है। ऐसी अवधारणाओं के साथ प्रारम्भ हो जाती है सचेतन यात्रा। कोई आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति अपनी अवधारणा के बीज रोपकर अनुसन्धान प्रारम्भ ही कर दे, अथवा कि जो लोग वैज्ञानिक अनुसन्धान में नहीं लगे हैं, वे अवधारणाओं से शून्य हैं, अथवा कि कोई भी वैज्ञानिक मन अपनी समस्त अवधारणाओं पर अनुसन्धान कर ही ले। मानव-चेतना पर अवधारणाएँ तब भी थीं, जब विज्ञान की धारा का जन्म नहीं हुआ था।

अनुसन्धान की सफलता का भी यह आशय नहीं है कि प्रकृति में कुछ नया घटित होने लगा है। प्रकृति में न तो किसी अवास्तविक को अप्राकृतिक ढंग से जोड़ा जा सकता है, न प्रकृति कभी ऐसी झपकी लेती है, जब झटके के साथ उसमें से कुछ घटा दिया जाय। विज्ञान ने जो कुछ उपलब्धि की, वह सब कुछ प्रकृति में सदा से उपस्थित है। वैज्ञानिक तो अपनी अवधारणा पर प्रयोग करता है, अर्थात् प्रकृति के धारा-प्रवाह से ही कुछ बटोरकर अपनी प्रयोगशाला (कोई भवन नहीं) में लाता है और बार-बार प्रयोग करके एक तादात्म्य बिठाता है, जिसका लक्ष्य आश्वस्त होना होता है कि उसकी अवधारणा प्रकृति का अविकल प्रतिबिम्ब है। जब बार-बार के प्रयोगों से इस बात की पुष्टि हो जाती है कि प्रकृति उस विन्दु पर वैसी ही लहरें उत्पन्न करती चलती है, तो अनुसन्धान पूरा हो जाता है, अर्थात् मनुष्य की समझ प्रकृति से समझौता कर लेती है। विज्ञान का विकास सही अर्थों में प्रकृति के साथ मानव-चेतना की साझेदारी का ही विकास है।

अनुसन्धान की योजना एक मुश्त नहीं बनती

अनुसन्धान की योजना एक-एक कदम की ही बन पाती है। एक कदम सही रख लिया जाय, तो उसका शोध किया जाता है, और फिर अगला कदम रखने की जमीन तलाशी जाती है। इसे प्रकृति के साथ सादृश्य अथवा असादृश्य का मूल्यांकन कहा जा सकता है। हर कदम के साथ साधनों और उपकरणों के विषय में निर्णय लेना पड़ता है। ये उपकरण सही भी साबित हो सकते हैं, गलत भी। सही वे बन जाते हैं, जो प्राकृतिक रहते हैं; विफल वे रह जाते हैं, जो प्राकृतिक नहीं होते अथवा जिन्हें प्राकृतिक ढंग से व्यवस्थित नहीं किया गया होता है। अवधारणा और प्राकृतिक सत्य के बीच मेल बिठानेवाले उपकरण मनमाने ढंग से नहीं ढाले अथवा जुटाये जा सकते। इस प्रकार समझ के धरातल पर प्रकृति और जीवन के अधिक समीप बैठा व्यक्ति ही वैज्ञानिक होता है। आज विज्ञान के क्षेत्र में बहुत अच्छी प्रगति हुई है– इसका आशय इतना ही है कि आदमी की समझ प्रकृति-धारा के कुछ अधिक समीप आ गयी है। प्रकृति उतनी ही और वैसी ही है, जैसी थी, हम समझ के धरातल पर उसके निकट पहुँचकर उसके प्रवाह में सक्रिय रूप से शामिल होने लगे हैं।

त्रिवेदी-बन्धुओं की अवधारणा

यहाँ अवधारणा के केवल उतने अंश का प्रसंग प्रस्तुत है, जितने तक इस पुस्तक के प्रयोजन पहुँचते हैं।

त्रिवेदी-बन्धुओं को चिन्तन और जीवन का ऐसा परिवेश मिला, जिसने उनके स्वभाव को अनुसन्धान के योग्य तराश दिया। वे प्रकृति की गहराइयों में उतरकर अपने अध्ययन और चिन्तन का मेल बिठाया करते थे। जीवन-धारा उन्हें प्रेरित करती रही कि आधुनिक विज्ञान जहाँ पहुँच चुका है, उससे आगे बढ़ने का मार्ग भी प्रकृति देगी। उनकी

रुचि का विषय था सृष्टि-प्रवाह। वही सवाल, जो जीवन के प्रति सावचेत सभी लोगों को एकबार छूता अथवा जिन्दगी भर छूता ही रहता है। उन्हें सचेतन रसायन (कांशस केमिस्ट्री) और 'पोषक ऊर्जा' का आभास मिला था। ऐसे आभास को ही वैज्ञानिक शब्दावली में अवधारणा (हाइपॉथेसिस) कहा जाता है। यह अवधारणा कि पदार्थों के रासायनिक सम्बन्धों में एक नयी दिशा का जन्म ही जीवन-सृष्टि है। एक विन्दु है, जहाँ चेतना इन सम्बन्धों में सक्रिय और नियामक भूमिका अदा करने लगती है। वही है सृष्टि के उद्गम का विन्दु (उसे समय का विन्दु भी कहा जा सकता है, दिशा का विन्दु भी)। वस्तुतः काल और दिशा दोनो ही मात्र विन्दुस्वरूप ही हैं। एक है 'अब', दूसरा है 'यहाँ'। शेष है स्मृति और आभास। समय अथवा दिशा के इस विन्दु से ही एक निरन्तरता और एकलयता आ जाती है, जो सृष्टि के प्रवाह के रूप में प्रगट है। जड़ता मानव-मन को समीपी, सीमित और परिचित प्रतीत होती है, जबकि अनन्त चेतना मन का विषय बन ही नहीं पाती। जीवन-धारा के पास ही इंगित करने की सामर्थ्य होती है।

'सचेतन रसायन' अथवा 'कांशस केमिस्ट्री' की दिशा में

इस गहन वैज्ञानिक विषय के विवेचन के लिए 'सचेतन रसायन' पर लिखी जाने वाली पुस्तक की प्रतीक्षा करना उचित रहेगा। यहाँ डी. एस. रिसर्च सेण्टर के सामान्य परिचय का प्रसंग है, अतः इन गहन विषयों के संक्षिप्त हवाले तक ही सीमित रहना उचित रहेगा।

विज्ञान ने पदार्थों के पारस्परिक रासायनिक सम्बन्धों का अध्ययन अबतक तीन वर्गों में किया है।

१. उन पदार्थों का अध्ययन, जिनकी जीवन-प्रक्रिया में कोई सीधी साझेदारी नहीं है। वे जड़ पदार्थ हैं और उनके पारस्परिक सम्वन्धों की व्याख्या इनआर्गेनिक केमिस्ट्री के अन्तर्गत की जाती है।
२. वे पदार्थ जो शरीर-निर्माण की प्रक्रिया में साझेदारी करते हैं। इनका अध्ययन आर्गेनिक केमिस्ट्री के अन्तर्गत किया जाता है।
३. इन दो के अतिरिक्त जीवित शरीरों में सम्मिलित पदार्थों के बीच के रासायनिक सम्बन्धों की व्याख्या बायोकेमिस्ट्री में की जाती है। इन तीनों ही वर्गों में पदार्थों को प्रधानता देकर उनका अध्ययन किया जाता है।

पदार्थत्व और प्रक्रिया : 'अणु' और 'अन्न'

पदार्थों के जो 'अणु' जीवित शरीर-धारा में सम्मिलित हैं, उनमें प्रधानता पदार्थत्व की नहीं, बल्कि जीवन-प्रक्रिया की रहती है। बायोकेमिस्ट्री ने पदार्थ और प्रक्रिया दोनों को अपने अध्ययन का विषय तो अवश्य बनाया है, किन्तु वहाँ अध्ययन दो दिशाओं में विभाजित है।

१. वहाँ प्रक्रिया में शामिल पदार्थ में प्रक्रिया को नहीं, बल्कि पदार्थ को महत्व दिया जाता है।
२. बायोकेमिस्ट्री के अध्ययन के पीछे सर्वत्र ही इस वैज्ञानिक अवधारणा की गूँज है कि जीवित पदार्थ जड़ पदार्थ की ही एक उच्चतर और विकसित अवस्था है। विज्ञान मानता है कि जड़ पदार्थ ही विकास करके सचेतन हो जाता है।

ऐसी अवस्था में अध्ययन को जड़ पदार्थ और जड़ अणुओं पर ही केन्द्रित रखना उचित लगा होगा। अतः निष्कर्ष निकाल लिया गया है कि जड़ और चेतन पदार्थों के बीच विकास की अवस्था ही अध्ययन का विषय है। आज के वैज्ञानिक प्रयोग भी इसी अवधारणा की छाया में काम करके जीवन-विकास का वैज्ञानिक अध्ययन पूरा करने की चेष्टाएँ हैं। किसी प्रयोग-धारा को गलत नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसे एक-न-एक दिन एक निष्कर्ष तक पहुँचना होता है। निष्कर्ष सकारात्मक हो अथवा नकारात्मक, एक वैज्ञानिक तथ्य तक तो पहुँचेगा ही। यह बेचैनी नहीं होनी चाहिए कि हमारी विचार-धारा से उसका मेल बैठता है अथवा नहीं। निष्कर्ष की ओर बढ़ती निष्पक्ष चेष्टाओं को अवैज्ञानिक नहीं कहा जा सकता। 'हाँ' का निष्कर्ष भी उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना 'नहीं' का। मूल्यवान तो निष्कर्ष होता है। एक वैज्ञानिक बीस दिशाओं में प्रयोग करके अगर वांछित नतीजे पर नहीं पहुँचता, तब भी यह महती उपलब्धि आ जाती है कि नतीजे के लिए भविष्य में उन बीस दिशाओं में चलने की आवश्यकता नहीं है।

त्रिवेदी-बन्धुओं की अवधारणा आधुनिक विज्ञान की अवधारणा से पृथक और संभवतः बहुत आगे है। आगे का अर्थ है कि आधुनिक विज्ञान अपनी गति और दिशा में चलते-चलते संभवतः उस दिशा में बढ़ने की प्रेरणा, जिधर ये वैज्ञानिक बढ़ रहे हैं, अभी अनेक वर्षों के बाद प्राप्त करता। इसका यह अर्थ नहीं लिया जा सकता कि अभी इनका कार्य विज्ञान की कार्य-धारा के विपरीत खड़ा है। एक साथ कई शोध-दिशाओं में चलना तो विज्ञान का धर्म ही है। त्रिवेदी-बन्धुओं ने एक नयी कार्य-दिशा अपनाई है। उनकी अवधारणा अनन्त ब्रह्माण्ड-व्यापी चेतना से सृष्टि का उद्‌गम स्वीकार करती है। जिन्हें जड़ पदार्थ कहा जाता है, वे भी वस्तुतः उस चेतना की ही जड़ अवस्था का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वस्तुतः चेतना से पृथक और कुछ भी नहीं है। वैज्ञानिक अध्ययन तो मानव की मनश्चेतना के आधार पर खड़े होकर किया जाता है, जहाँ से सब कुछ वस्तुपरक बन जाता है। अतः समग्र अनुभूतियों को तीन वर्गों अथवा चरणों में रखकर देखना सुविधापूर्ण रहेगा।

१. जड़ पदार्थ (इस दार्शनिक अथवा अवधारणात्मक विवाद से अलग हटकर कि जड़ से चेतना का विकास हुआ अथवा जड़त्व अनन्त-असीम चेतना की ही एक स्थिति है)।
२. जड़ पर अभिव्यक्त चेतन अर्थात् 'प्रक्रिया' रूप में दिखाई देता चेतन।
३. अनन्तव्यापी चेतना, जो स्वयं में भी असीम-अछोर, अगम्य और सर्वशक्तिमान है। यद्यपि सचेतन केमिस्ट्री में भी नियमबद्धता के दर्शन हो सकते हैं, किन्तु तथ्य यही

है कि वह नियामक, जिसने मन को भी अभिव्यक्ति दी है, मन के वस्तुपरक अध्ययन का विषय नहीं बन सकता। वह नियामक है और 'सर्व समर्थ' है। यहाँ सर्व (सब) भी एक मानसिक और गणितीय इकाई है। अनन्त चेतन तो असीम है। वह 'सर्व' से ऊपर है, पूर्ण से ऊपर है, अर्थात् मनश्चेतना से ऊपर है।

किसी परिस्थिति-विशेष में अनन्त ब्रह्माण्डव्यापी चेतना जड़ पदार्थों की केमिस्ट्री में साझेदारी कर लेती है, अर्थात् चेतना उसमें अभिव्यक्त हो जाती है। चेतना की साझेदारी से जड़त्वप्रधान अणु सचेतन हो जाते हैं, और उनपर अब चेतना का अंकुश हो जाता है। अब केमिस्ट्री सचेतन हो जाती है। सचेतन अणु अब सचेतन केमिस्ट्री में साझेदारी के लिए नया संघटन और नयी संरचना धारण करने लगते हैं। इस सचेतन केमिस्ट्री की ओर जड़ अणु ही रूपान्तरित होकर प्रस्थान करते हैं, अतः वहाँ भी जड़त्व की स्थिति साधन रूप में कायम रहती है। जहाँ तक सचेतन-धारा का क्षेत्र है, वहाँ तक अब रासायनिक संयोग-विच्छेद के नियम उसी रूप में लागू नहीं हो पाते, जिस रूप में जड़ केमिस्ट्री पर लागू होते थे। कांशस केमिस्ट्री के पास अपनी दिशा, अपना निर्णय और अपना विवेक होता है। वह जड़ केमिस्ट्री को अपने निर्देशन में चलाने लगती है। उस परिस्थिति के बनते ही जड़ केमिस्ट्री का सचेतन हो उठना नितान्त प्राकृतिक और शाश्वत है।

चेतना-वेष्टित अणुओं को 'अन्न' कहा जाता है

प्राचीन भारत के ऋषि वैज्ञानिकों ने सृष्टि की सचेतन केमिस्ट्री में भागीदारी के लिए प्रस्तुत सचेतन अणुओं को 'अन्न' नाम दिया था। प्राचीन भारतीय ऋषि-वाङ्मय के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सृष्टि के उद्‌भव, विकास तथा प्रवाह को उन्होंने अपने प्रायोगिक विज्ञान का प्रत्यक्ष विषय बना लिया था। उस विज्ञान के लिए उनकी सुपरिभाषित शब्दावलियाँ थीं। 'ऋषि वैज्ञानिक' अपनी प्रयोगशालाओं (आश्रमों) में जिन सत्यों का आविष्कार करते थे, 'मुनि वैज्ञानिक' जीवन के व्यापक धरातल पर उनका परीक्षण करते और परिणाम संकलित करते थे। काल-धारा में स्थापित साक्ष्य-दीपों से यह भी प्रगट होता है कि 'असुर' लोग इस अभियान को ही अपने हिंसक आक्रमणों का लक्ष्य बनाते थे। लगता है कि काल-क्रम में जब इन प्रयोगशालाओं का संचालन असंभव हो गया, तब इस ज्ञान को बड़ी कुशलता और परिश्रम के साथ स्मृति, साधना और जीवन-शैली में छिपा दिया गया, ताकि अनुकूल समय आने पर इन बीजों के बल पर ही पुनः अभियान प्रारम्भ किये जा सकें। किन्तु ऐसा अवसर नहीं आ सका और ये बीज नयी जमीन पर नये रूप में उगकर विकसित हो गये। काल-योजना ने उस भारत को अबतक नहीं उगने दिया, जो वास्तविक भारत था।

यहाँ इन प्रसंगों को विस्तार देना विषयान्तर और भटकाव माना जा सकता है। इनकी समुचित व्याख्या के लिये प्रस्तावित वैज्ञानिक ग्रंथों 'सचेतन केमिस्ट्री' और 'पोषक ऊर्जा' के प्रकाशन तक प्रतीक्षा करना ही उचित रहेगा। यहाँ इतना ही कहना

पर्याप्त होगा कि अक्षर ब्रह्म, क्षर भाव, स्वभाव, यज्ञ, अध्यात्म, अधियज्ञ, अधिदैव, अधिभूत, उद्‌भव, अन्न, नित्य, अनित्य आदि उस वैज्ञानिक अभियान की शब्दावलियाँ थीं, जिन्होंने आज स्थानान्तरित अर्थ ग्रहण कर लिया है। इसी प्रकार दीप, अक्षत, पल्लव, दूर्वा, अश्वत्थ, तुलसी, हल्दी आदि उस वैज्ञानिक अभियान के ही उपादान थे, जो जीवन-शैलियों में दौड़ते-दौड़ते मात्र परम्परा में ही सिमटकर रह गये हैं।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों की 'सचेतन केमिस्ट्री' तथा 'पोषक ऊर्जा' सम्बन्धी अवधारणाओं से परिचय के लिए कम-से-कम एक शब्द 'अन्न' को तो व्याख्याओं से उठाकर प्रायोगिक-व्यावहारिक धरातल पर लाना ही पड़ेगा। काल-क्रम में 'अन्न' भी हमारे सामने अपनी वैज्ञानिक महिमा खोकर कभी खलिहानों में अपना अर्थ तलाशता दिखाई देता है, कभी थाली में परोसी गयी आहार-सामाग्री के अर्थ में सिमटकर बैठा दिखाई दे जाता है।

त्रिवेदी-बन्धुओं ने पोषक ऊर्जा विज्ञान के लिए 'अन्न' के स्थान पर किसी नये शब्द की रचना नहीं करके इसके उसी आशय को स्वीकार किया, जो ऋषियों के सृष्टि-विज्ञान में स्थापित था।

जड़ पदार्थों की रसायन-धारा में जो स्थान जड़ पदार्थों के 'अणुओं' का है, सचेतन रसायन में वही स्थान 'अन्न' का है। अन्न सचेतन केमिस्ट्री की पहली इकाई है। चेतना को धारण करने योग्य बनने में एक अणु को कुछ अधिक जटिल संरचना स्वीकार करनी पड़ती है। अन्न वह सचेतन अणु है, जिसके पास अपना विवेक होता है, अपनी कार्य-दिशा होती है, अपना संकल्प होता है। जड़ अणुओं में अपनी जड़-स्थिति कायम रखने के लिए जहाँ एक ठहराव का आग्रह होता है, वहीं अन्न में, अपनी सचेतनता कायम रखने, विकास करने और जड़त्त्व पर अपना नियंत्रण स्थापित रखने का सचेतन संकल्प होता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि जड़ अणुओं में जो जड़त्व का आग्रह होता है, उसकी अपेक्षा सचेतनता के कारण 'अन्न' का संकल्प बहुत अधिक क्षमतावान होता है। 'अन्न' के पीछे अनन्त, असीम तथा सर्वशक्तिमान सचेतन सत्ता का समर्थन खड़ा रहता है, जबकि जड़ अणु में केवल अपने आपमें व्यक्त जड़त्व का ही आग्रह होता है।

अन्न की प्रबल विकास-प्रक्रिया के सामने जड़ अणु कमजोर तो अवश्य रहता है, किन्तु अन्नत्व को उस जड़ अणु पर ही आरूढ़ अभिव्यक्ति स्वीकारनी पड़ती है, अतः उस अन्न में वह असीम क्षमता नहीं व्यक्त हो पाती जो ब्रह्माण्डीय सचेतनता की पहचान है, क्योंकि अन्न को जड़ अणुओं के सघन परिवेश और घेरे के बीच रहना पड़ता है, जिससे 'अन्नत्व' में एक क्षरण भाव भी कार्य करता है। 'अन्नों' की संख्या भी तभी बढ़ेगी जब चेतना जड़ अणुओं पर अपने को अधिक-से-अधिक व्यक्त करे। अतः अन्न को सृजन, पालन और क्षरण के तनाव से होकर गुजरना पड़ता है। बाह्य प्रकृति से संघर्ष करते-करते अन्न में एक सचेतन प्रतिरोध-क्षमता का भी विकास हो जाता है। इस प्रतिरोध-क्षमता के आन्तरिक और बाह्य कवच में बैठकर ही अन्न अपने सचेतन संकल्प को कायम रखता है और सचेतन विकास की बुनियाद भरता है।

चयोपचय (मेटाबोलिज्म) का विकास और पोषण-धारा

'अन्न' की सचेतनता को सुस्थिर रखने के लिए ब्रह्माण्डव्यापी अक्षर सचेतन एक कदम आगे की सचेतनता को जन्म देता है। यह सूक्ष्म सचेतन धारा 'चयोपचय' अथवा मेटाबोलिज्म है। इसी का जन्म प्राणियों की विकास-प्रक्रिया का प्रारम्भ है, और यह सचेतन धारा जीवन की प्रत्येक इकाई में सजग रूप से क्रियाशील रहती है। 'अन्नाणुओं' को सचेतन रूप से संघबद्ध करके यही चयोपचय शरीर का निर्माण करता है। प्राणी एककोशीय हो अथवा बहुकोशीय, उसकी समग्रता का प्रतिनिधित्व चयोपचय ही करता है। वस्तुतः इसी का जन्म शरीरधारी प्राणी का जन्म, इसी का स्वास्थ्य शरीर का स्वास्थ्य, इसी की रुग्णता शरीर की रुग्णता, इसी की जीर्णता शरीर की जीर्णता और इसी की मृत्यु शरीर की मृत्यु है। जन्म, रोग, स्वास्थ्य, जीर्णता और मृत्यु 'प्रक्रिया' में व्यक्त होते हैं, 'पदार्थ' में नहीं।

शरीर-सृष्टि की आदि इकाई 'कोशिका' है। एककोशीय प्राणी प्रथम शरीरधारी हैं। इनमें चयोपचय तो व्यक्त रहता है, किन्तु अभी संस्थानों और अंग-उपांगों का विकास नहीं हुआ रहता। शरीरधारी प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से हुई, आज भी सृष्टि का वही विधान है। प्राचीन भारतीय ऋषि-वैज्ञानिकों ने इसीलिए अन्न को भूत प्राणियों का जन्मदाता, पिता और ज्येष्ठ कहा है। चयोपचय से ही 'स्व-भाव' की अभिव्यक्ति होती है।

अतः रोग-चिकित्सा और स्वास्थ्य-व्यवस्था का मूल कार्य-क्षेत्र चयोपचय ही है। अगर यह अविचल रूप में अपने ताखे में व्यवस्थित रहे, तो अनेक रोगों के जन्म की स्थिति का निर्माण ही असम्भव होगा और अनेक रोगकारक जीवाणुओं-दण्डाणुओं का शरीर में आश्रय पाना कठिन हो जायेगा। स्वस्थ चयोपचय ही स्वास्थ्य की प्रतिरोध-क्षमता भी है।

चयोपचय की अभिव्यक्ति जीवित शरीर की जिन प्रक्रियाओं में होती है, वे हैं– चय, उपचय और अपचय। चय के अन्तर्गत चयोपचय आहार-सामग्री से अपने सर्वथा अनुकूल 'अन्नाणुओं' का चयन करता है। उपचय के अन्तर्गत इन अन्नाणुओं को चयोपचय अपने अनुकूल अन्नाणुओं में विकसित करता है, और अपचय के अन्तर्गत अपना ओजस् खोकर निस्तेज हुए अन्नाणुओं को शरीर-व्यवस्था से बाहर उत्सर्जित करता है।

इस प्रकार चल पड़ती है पोषक ऊर्जा की धारा शरीर-यात्रा के अन्त तक के लिए।

❑

औषधीय चिकित्सा स्वयं ही विचलित हो गई थी

खड़े हो जाइये सजग और एकाग्र भाव से कहीं भी, जहाँ अचेतन केमिस्ट्री सचेतन बन रही हो। अपनी ओर से कोई निष्कर्ष मत थोपिये। यही एकाग्र दृष्टि है वैज्ञानिक की। खेत में, तालाब के किनारे तो क्या, अपने घर के किसी गमले के पास भी खड़े हो सकते हैं, जिसमें कोई पौधा उगा हो। रहिए एकाग्र, भीतर से बाहर तक। एकाग्र होना कठिन तो अवश्य है, किन्तु सजगता से यह सम्भव हो जायेगा। प्रयत्नसाध्य तो है ही एकाग्रता। एकाग्रता का आशय चिन्तन का बिखराव रोकने से है। आप एक फूल देखते हैं और लगता है कि आप एकाग्र भाव से फूल को देख रहे हैं। किन्तु आपकी स्मृतियाँ आपके चिन्तन को एकाग्र नहीं रहने देतीं– ऐसा फूल या इससे भिन्न फूल एक बार किसी वाटिका में देखा था, फूल-मार्केट में देखा था, आदि-आदि। अनेक फूल खड़े हो जाते हैं भीतर। यह इस फूल को एकाग्र भाव से देखना नहीं हुआ। सामने एक ही फूल नहीं रह गया, अनेक की कतार खड़ी हो गयी। शायद सामने वाले फूल को स्मृति वाले फूलों ने ढक लिया है। अगर सामने वह दिखाई देने लगे, जो वास्तव में सामने उपस्थित नहीं है, तो दृष्टि वैज्ञानिक नहीं बन सकी।

गमले की मिट्टी में हलचल है। जड़ अणुओं पर चेतना उतर रही है, केमिस्ट्री सचेतन हो रही है, 'अणु' 'अन्न' में रूपान्तरित हो रहे हैं। अनन्त, असीम, अचिन्त्य चेतना से एक बारीक डोर (चेतना की डोर) समा रही है जड़ अणुओं में। बड़ा विराट विन्दु है यह। यहीं एकाग्र भाव से खड़े होते थे प्राचीन भारत के ऋषि वैज्ञानिक। यहीं स्थित होकर उन्होंने असीम-अनन्त की ओर उतरने की पगडण्डियाँ भी तलाशी थीं। वह थी चेतना से साक्षात्कार की दिशा। यहीं से उस चेतना को जीवन-धारा की बुनियाद भरते (केमिस्ट्री को अचेतन से सचेतन बनते) देखा था। यहीं बैठकर उन्होंने अनन्त चेतना के जीवन में अवतरण की संभावनाएँ खोजी थीं। साक्षात्कार का चरम विन्दु है यह।

गमले के पास भी मत जाइये। आ जाइये अपनी निजी प्रयोगशाला में। आश्विन की दुर्गापूजा। दुर्गा चेतना के अवतरण की देवी हैं। आपने देखा होगा 'नवरात्रि' की जीवन्तता को। सर्वत्र सूक्ष्म जीवों को शरीर धारण करते देखा होगा। बिछ जाती हैं जिन्दगी की सम्भावनाएँ, जल से थल तक। जीवन-इकाइयों की भरमार हो जाती है। पूरा वायुमण्डल, सारी धरती उड़ते-चलते सूक्ष्म जीवों से भर जाती है। सर्वोच्च घड़ी होती है (भारतीय प्राकृतिक परिवेश में) केमिस्ट्री के सचेतन बनने और सूक्ष्म फफूँदों

और प्राणियों के सृजन की। आप भी दुर्गा-प्रतिमा के सामने बालू की वेदी बनाते हैं, उसमें जौ के बीज डाल देते हैं, जल-भरा कलश रख देते हैं, ताकि जल के रिसाव से वेदी भी आर्द्र रहे, वायुमण्डल भी। साक्षी के रूप में खड़ा रहता है अखण्ड दीप। घृत-दीप और दूर्वा साक्षी भी हैं, भागीदार भी। अखण्ड सुगन्धि का आयोजन है। 'सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं'—पोषक ऊर्जा को जीवन्त बनानेवाली सुगन्धि। देखिये क्या घटित हो रहा है बालू के भीतर। जौ का बीज चेतना को बटोरकर उगता है। कलश के इर्द-गिर्द 'विजया' खड़ी हो जाती है। ऋषि वैज्ञानिकों की प्रयोगशाला का एक पौधा खड़ा है, पूजा-मण्डप में। बस देखना है एकाग्र भाव से, सजग भाव से। केमिस्ट्री का अचेतन से सचेतन बनना; अन्न का उद्‌भव, जीवन का विकास, पोषक ऊर्जा की धारा का प्रवाह।

एकाग्र भाव से देखना है इस धारा को। अन्न का रूप भी बदलता है, वह क्षरित भी हो जाता है। शरीरों का सृजन होता है, उनकी मृत्यु भी हो जाती है। किन्तु आप देखिये चेतना के उस प्रवाह को। चेतना नहीं मरती। प्रवाह नहीं मरता। जबतक परिस्थितियाँ पूरी तरह प्रतिकूल नहीं होंगी, प्रवाह नहीं मरेगा। चेतना तो अमर और असीम है। जन्म और मृत्यु की चिन्ता छोड़िये। देखिये उस सूत्र को। चेतना के सूत्र को। जीवन की अभिव्यक्तियाँ वैसी ही हैं जैसे सूत्र में कोई गाँठ बँध जाय। गाँठें बँधती रहती हैं, खुलती रहती हैं। डोरी सूक्ष्म है, अतः गाँठें भी सूक्ष्म हैं। फिर, गाँठें स्थूल में दिखायी देती हैं। सूक्ष्म में सचेतन पर 'दृष्टि' बनती है, फिर प्राणिशरीर में स्थूल रूप में आँख की गाँठ दिखाई देती है। बस इसी प्रकार इनका बँधना-बिखरना भी देखिये और देखिये चेतना की उस अविच्छिन्न धारा को भी। केवल लहरों और तरंगों को नहीं, जल-धारा की निरन्तरता को भी देखिये। गंगा को देख रहे हैं तो यमुना को देखना रोक दीजिये। उस सूत्र से दृष्टि को विचलित मत होने दीजिये। ऋषि वैज्ञानिकों ने इसी रूप में देखा और समझा था, "सूत्रे मणिगणा इव"।

एकलयता, एक ही दिशा, एक ही प्रवाह-धारा

एक ही धारा पोषक ऊर्जा की, सचेतन ऊर्जा की। एकलयता है उसमें। एक ही दिशा है—अचेतन केमिस्ट्री को सचेतन केमिस्ट्री बनाते जाने की। चयोपचय जन्म लेते हैं, शरीर निर्मित होते हैं, व्यक्त चेतना एक दूरी तय कर लेती है। अन्न ढलते जाते हैं, चयोपचय उन्हें सँभालकर संस्कारित करते, उठाते और स्थापित करते जाते हैं। इस उठाव के साथ क्षरण का भी सिलसिला है, स्थापित रहने के लिए भी ऊर्जा का क्षरण होता है। चेतन प्रवाह अपने ठहराव के नये-नये पड़ाव स्थापित करता जाता है, नयी-नयी जीव-जातियों का उद्‌भव और विकास होता जाता है। प्रत्येक जीव-जाति का अपना एक स्तर है, उसका एक सुनिश्चित अन्न है, उस अन्न के संस्कार, शरीर के निर्माण और धारण की एक अपनी प्रक्रिया है। फिर, शरीरों से शरीरों का सृजन। चेतना ने जीव-जातियों (स्पीशीज) के रूप में लाखों ठहराव स्थापित कर दिये हैं। ये चेतना के सृजित पड़ाव हैं। इस प्रकार अस्तित्व में आया है यह विविध-विचित्र जगत। भारतीय

ऋषि वैज्ञानिकों के गणित ने बताया कि चौरासी लाख योनियाँ मौजूद हैं। आधुनिक विज्ञान निश्चित संख्या पर मौन है। उसका गणित कहता है कि सृष्टि में एक करोड़ तीन लाख योनियाँ संभव हैं।

चेतना असीम और अनन्त है, अतः चेष्टाएँ भी असीम और असंख्य ही प्रतीत होती हैं। भीतर से बाहर तक सचेतन तैयारी है; प्रतिरोध की तैयारी, प्रतिरक्षा की तैयारी, प्रतिकूल से बचाव की तैयारी, प्रतिक्रिया द्वारा प्रतिकूल को छाँटकर अलग करते जाने की तैयारी, अनुकूल पोषण जुटाकर स्थिर और गतिमान होते जाने की तैयारी। संभावनाएँ असीम प्रतीत होती हैं। चेतना की अनेक अभिव्यक्तियाँ हैं। मन उनमें से एक है। विविधता है, किन्तु बिखराव नहीं है। अनन्तता है, किन्तु अनुशासनहीनता नहीं है। अनुशासन है, अतः मन की चेतना के लिए बैठने की जगह है। मन सचेतन केमिस्ट्री के अनुशासन को पकड़ सकता है। यहाँ भी एक विज्ञान खड़ा कर लेने की संभावनाएँ हैं। मन और बुद्धि की चेतनाएँ इस चेतन यात्रा के सीमित उपादान हैं। मन का स्वभाव है विज्ञान खड़ा करने का, नियमों-उपनियमों को पढ़ और गढ़ लेने का, उनसे तालमेल बिठा लेने का। यह तभी हो पाता है, जब अनुशासन की बैठकी मिले।

अध्ययन का यही आधार बनाया है डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों ने। चेतन-धारा और चेतना की तरंगों को एक नये कोण पर समझने का प्रयास किया है। यही आधार है 'सचेतन केमिस्ट्री' और 'पोषक ऊर्जा विज्ञान' का। अध्ययन का क्षेत्र है यह। विज्ञान के अभ्युदय का क्षेत्र है।

इस सचेतन प्रवाह की अपनी वाणी है, अपनी भाषा है

जीवन-प्रवाह चेतना का प्रवाह है, जो एक ओर असीम चेतन से जुड़ा है, दूसरी ओर जड़ समझे जानेवाले पदार्थ पर खड़ा है। यह अनन्त चेतना और पदार्थत्व की क्रीड़ा-भूमि है। सचेतन केमिस्ट्री को सचेतन पोषक ऊर्जा का अनुदान चाहिए। अनुदान रुके, तो केमिस्ट्री रुक जायेगी। जीवित शरीर की चेतना स्पष्ट संकेत देती है कि उसके आहार में सन्निहित पोषक ऊर्जा ही उसे चाहिए। जिस अन्न से उसके जीवित शरीर और चयोपचय का विकास हुआ है, उन्हीं अन्न-स्रोतों की ऊर्जा उसकी एकान्त माँग है। कोई समझौता-भाव नहीं। केवल सचेतन 'अन्न' होना ही पर्याप्त नहीं है, निर्माण वाली बात सर्वोपरि है। 'अन्न' के वे कोष सहज आहार हैं, जिनकी भूमिका थी निर्माण में। ध्यान रहे कि निर्माण सूक्ष्म पर हुआ था, फिर स्थूल पर उसकी अभिव्यक्ति हुई। जो सूक्ष्म पर घटित हो जाता है, वही स्थूल पर अभिव्यक्त दीखता है। निर्माण सूक्ष्म पर हुआ, चिकित्सा भी सूक्ष्म पर ही होगी। चिकित्सा का बल चेतना का नियामक बल ही होगा। रोग 'अन्न' पर प्रगट हुआ, चिकित्सा भी अन्न की होगी। 'अन्नाणु' ही चयोपचय के अनुकूल और सचेतन केमिस्ट्री में सहायक होते हैं।

इससे पृथक वाले 'अन्नों' के लिए जीवन में प्रतिक्रिया और परहेज का भाव है। वे उस पृथक जीव-जाति के पोषक हैं, जिसके निर्माण में उनकी भूमिका है। जड़ अणुओं

से भी परहेज का ही भाव है। इनका संसर्ग चयोपचय को अनावश्यक संघर्ष में उलझाता, उसकी शक्ति तोड़ता और उसे विचलित करता है। जीव-चेतना के पास परख और बरकाव का विवेक है। उसमें पोषक ऊर्जा के उस कोष के प्रति आकर्षण है, जिसे उसके वर्तमान चयोपचय से अपने चयोपचय में सरलता से उतारा जा सकता है। आहार का चयोपचय पोषक ऊर्जा को ढोकर जीव के चयोपचय तक पहुँचा देता है। यह आदान-प्रदान सामान्य चेष्टा से ही संभव हो जाता है। जहाँ अन्न चयोपचय को प्रतिकूल संघर्ष में डाले, उसे विचलित कर दे, वह विष अथवा उपविष है, पायजन अथवा ड्रग है। मारक हो, तो विष है। मारने की प्रवृत्ति हो, तो उपविष है। धारा की एक ही दिशा है पोषक ऊर्जा, पोषक ऊर्जा का आदान-प्रदान, स्वस्थ चयोपचय, स्वस्थ सेचतन केमिस्ट्री। अनुकूल पोषक ऊर्जा ही स्वास्थ्य देगी। वही विचलन दूर करेगी। वही स्वास्थ्य का माध्यम है, वही चिकित्सा का माध्यम है। केवल वही चिकित्सा का अविकल माध्यम है—सात्विक आहार-वर्ग से प्राप्त पोषक ऊर्जा।

रोग क्या है

कोई जीव-इकाई रुग्ण है, व्यक्ति रुग्ण है (जीव-विज्ञान की इकाई रूप में जो जीव-इकाई है, समाज विज्ञान की वही इकाई व्यक्ति है)। कौन रुग्ण है उसमें? क्या रुग्ण है उसमें? निश्चित है कि पदार्थ नहीं रुग्ण है; पदार्थ रुग्ण नहीं होता। प्रक्रिया रुग्ण है, प्रक्रिया का सूत्रधार चयोपचय रुग्ण है। प्रक्रिया का अवरोध प्रक्रिया के अनुकूल उपादानों से टूटेगा। पदार्थ के उपादानों से उसे तोड़ा ही नहीं जा सकता। चयोपचय का विचलन, उसकी प्रक्रिया में स्थापित अवरोध ही रोग है। चयोपचय विचलन से समझौता नहीं करता है। वह हल्के विचलनों से स्वयं को शीघ्र ही मुक्त कर लेता है। विचलन भारी हो, तो चयोपचय इस संकट को तोड़ नहीं पाता। सुसाध्य और असाध्य रोगों के बीच चयोपचय और जीवन-प्रक्रिया में स्थापित विचलन की डिग्री का अन्तर है। सुसाध्य वह है, जिससे चयोपचय अपनी सामान्य चेष्टाओं द्वारा स्वयं को मुक्त कर लेगा। असाध्य वह है, जिसके दबाव से चयोपचय को अवांछित विचलन के दबाव में जीना पड़ता है। विचलित चयोपचय विचलित पदार्थों का उत्पादन करने लगता है और अवांछित पदार्थों को जीवन-प्रक्रिया से बाहर निकालने में असमर्थ होता जाता है। प्रक्रिया में एक तनाव आने लगता है और सचेतन केमिस्ट्री की स्थापित डगर भ्रमित होने लगती है।

न्यायपूर्ण कदम है चिकित्सा

चिकित्सा का लक्ष्य है चयोपचय के विचलन को, जीवन-प्रक्रिया के अवरोध को समाप्त करके चयोपचय और जीवन-प्रक्रिया को उनके मुक्त प्रशस्त धरातल पर ला देना। अर्थात् चिकित्सा का लक्ष्य है जीवन-प्रक्रिया को स्वस्थ बना देना।

चिकित्सकीय न्याय की पहली शर्त : ड्रगों से बचाव

यहाँ प्रसंग केवल औषधीय चिकित्सा का है, चिकित्सा की अन्य शाखाओं की चर्चा नहीं की जायेगी। औषधीय माध्यम के रूप में प्रयुक्त किये जाने वाले पदार्थों की प्रकृति का अध्ययन करने के बाद ही, उन्हें शरीर-प्रक्रिया में उतरने तथा रुग्ण-विचलित चयोपचय के संसर्ग में आने की अनुमति दी जानी चाहिए। यदि कोई प्रतिकूल और जटिल जीवन-प्रक्रिया औषधि रूप में शरीर में उतारी जायेगी, तो वह पहले से ही अवरोध झेलती प्रक्रिया पर एक नयी प्रतिकूलता थोप देगी। यही हालत होगी विचलित चयोपचय की, उसका विचलन और भी बढ़ जायेगा। अतः चिकित्सा को ऐसे प्रयोगों से दूर रहना चाहिए। चिकित्सकीय न्याय का तकाजा है कि कम-से-कम ऐसा मत करो।

इसके साथ ही, सहज भोज्यों में सम्मिलित पोषक ऊर्जा वहाँ पहुँचायी जानी चाहिए। इससे जीवन-प्रक्रिया और चयोपचय को नैसर्गिक शक्ति का अनुदान मिल जायेगा। किन्तु यह कार्य समझ के लिए जितना सुपाच्य लगता है, व्यवहार में इसके सामने उतनी ही निष्ठुर चुनौती है।

विचलित (रुग्ण) चयोपचय स्वयं स्वास्थ्य-समस्याएँ खड़ी करने लगता है

स्वास्थ्य की सामान्य स्थिति में तो मनुष्य अपना आहार ग्रहण कर लेता है, जिसमें उसका अनुकूल अन्न रहता है। चयोपचय अन्न का चयन करता और उन्हें अपना संस्कार देकर, उनकी संरचनात्मक और सचेतनात्मक रचना को अपने अनुरूप ढालकर जीवन-प्रक्रिया में शामिल कर लेता है। किन्तु रुग्णावस्था का चयोपचय तो विचलित होता है। वह अपने सहज अन्न को भी अनुकूल संस्कार और संरचना नहीं प्रदान करता। उसके विचलित हाथों का सृजन भी विचलित हो जाता है। साँचा विकृत है, तो सारी निर्मितियाँ विकृत ही होंगी। विचलित चयोपचय शरीर-प्रक्रिया में विचलित अन्नों को उतारना प्रारम्भ कर देता है। इससे जीवन-प्रक्रिया प्रतिकूलताओं से और भी बोझिल होती जाती है, अवरोध बढ़ने लगते हैं और शरीर कष्टदायक स्थिति में पहुँचता जाता है। चिकित्सकीय चेतना के समक्ष कुछ उलझी हुई चुनौतियाँ थीं, जैसे—

१. रोग को कैसे दूर किया जाय, अर्थात् किस उपाय द्वारा चयोपचय का विचलन समाप्त किया जाय और जीवन-प्रक्रिया में स्थापित अवरोधों को छाँटा जाय ? यह कार्य केवल पोषक ऊर्जा द्वारा ही संभव था और पथ्य-परहेज की सात्विक जीवन-शैली सार्वत्रिक सफलता नहीं दे पाती थी। दूसरी ओर विचलन का तीव्र और बढ़ता दबाव प्रायः सात्विक जीवन-शैली की धीमी सकारात्मकता को अपने मार्ग में ठहरने नहीं देता था।

२. अगर रोग नहीं भी दूर हो सके, तो विचलन के कारण जीवन-प्रक्रिया पर बढ़ते रोग-उत्पाद के दबाव को कम करके रोगी के जीवन को प्रतिकूल लक्षणों और कष्टों के चंगुल से कैसे बचाया जाय। प्रतिकूल लक्षण जीवनी-शक्ति की वह

प्रतिक्रिया है, जिसे अवांछित रोग-उत्पाद से स्वयं को मुक्त करने के लिए वह प्रगट करती है। यहीं जन्म हुआ चिकित्सा के विष-सिद्धान्त का। बस, इतने मात्र के लिए ही विषों से अस्थायी समझौता स्वीकार किया गया।

रोग-चिकित्सा असम्भव लगी

यह स्पष्ट हो गया कि पथ्य और परहेज का विज्ञान—उसकी उपयोगिता चाहे जितनी भी हो—रोगों के उन्मूलन का प्रभावशाली साधन नहीं दे सकता। रोग-चिकित्सा का वज्र-कपाट खोल पाने के साधनों की दिशा में बढ़ने का कोई रास्ता नहीं मिला। अतः मोह छोड़कर रोग-उत्पादों को नकेल लगाने की दिशा में सोचा जाने लगा। प्रारम्भ में यह बोध नहीं हो सका कि विष-सिद्धान्त इतना नशीला होगा और मानव को दुर्गति के महागर्त तक घसीटता चला जायेगा।

रोग-उत्पादों और रोग-लक्षणों से जूझने की तैयारी

चिकित्सा के विष-सिद्धान्त की स्थापना

हजारों वर्ष पूर्व मानव को अपनी दिनचर्याओं से ही संकेत मिल चुके थे कि कई विष-उपविष (ड्रग) पदार्थ रोग-उत्पादों को रासायनिक तौर पर पोंछने के उपादान थे। उनके द्वारा रोग-उत्पाद निरस्त भी हो जाते थे और यदि पूरी तरह निरस्त न हो सकें तब भी उनका दबाव कुछ कम हो जाता था। फलस्वरूप जीवन-प्रक्रिया कुछ सुगमता अनुभव करने लगती थी, जिससे रोगी भी राहत महसूस करने लगता था। यद्यपि यह राहत कायम नहीं रह पाती थी, क्योंकि मूल रोग के कायम रह जाने से रोग-उत्पादों का दबाव फिर कायम हो जाया करता था। यह भी स्पष्ट हो रहा था कि प्रयोग में लाये जाने वाले ये ड्रग जीवन-प्रक्रिया को थकाते, उलझाते और तोड़ते भी थे। किन्तु अस्थायी राहत भी मूल्यवान ही लगती थी। उसका पलड़ा प्रत्यक्षतः भारी लगता था। एक यात्रा प्रारम्भ कर दी गयी। ऐसे अनुभवों को संग्रहीत किया गया। एक रेखा-सी खिंच गयी चिन्तन के सामने कि ड्रग पदार्थ रोग-उत्पादों को कम करते रहने के व्यवस्थित साधन बन सकते हैं। वानस्पतिक तथा जैविक विषों की उपादेयता की व्यापक छानबीन की जाने लगी। अलग-अलग गुण-धर्म वाले रोग-उत्पादों के सामने उनके कारगर जवाबी ड्रग खड़े किये जाने लगे। एक अभियान चला और चिकित्सा का विष-सिद्धान्त खड़ा हो गया। नुस्खाबन्दी चल पड़ी।

यह क्या ? स्वस्थ को भोजन और रोगी को जहर !

बात तब भी प्रकृति-विरुद्ध लगी थी। मावन-मेधा ने सिद्धान्त को नकार दिया था। विष-सिद्धान्त की जन्मस्थली भारत था। यह बात तब की है, जब भगवान धन्वन्तरि अभी औषधियों का अमृत-कलश लेकर नहीं पहुँचे थे और आयुर्वेद की व्यापक पहुँच सामने

नहीं आई थी। बाद में भी उस अमृतवाले कलश का कहीं पता नहीं चला। न जाने कौन उठा ले गया उसे। मेधावी मनीषी चरक ने संहिता का गहन कार्य किया, किन्तु उनके संग्रह में भी वानस्पतिक विषों-उपविषों की ही प्रधानता रही—चिरायता, भटकँटैया, जवासा, नीम, गिलोय, धतूरा आदि। उनके यात्रा-वृत्तान्त में उस अमृत-कलश से साक्षात्कार का उल्लेख नहीं है। बात प्रधानता की है। वैसे, मनीषी चरक ने कुछ भोज्यों और भोज्य-सामग्रियों के व्यवहार का उल्लेख भी किया है।

शुरू-शुरू में, चिकित्सा के लिए विषों का प्रयोग करने वाले लोग अशुभ और प्रकृति-विरोधी माने जाते थे। उन्हें अनिष्ट के संवाहक के रूप में देखा जाता था। मानव-मेधा विषों से समझौते की शैली को किसी भी रूप में स्वीकार नहीं कर पाती थी। सैकड़ों वर्षों तक इस सिद्धान्त को उपेक्षा और भटकाव झेलना पड़ा। हालाँकि आदिम जीवन से ही अनुभव था कि 'काँटे से काँटा' निकाला जाता है, प्राचीनकाल से ही किसी के जीवन में आयी प्रेत-बाधा दूर करने के लिए एक मनोवैज्ञानिक वातावरण बनाने का रिवाज था। 'गुनी' लोग 'ब्रह्म-पिशाच' का सुमिरन करते और बताते थे कि रोगी में जब ब्रह्म-पिशाच उतारा जायेगा, तो वह प्रेत को देह से निकाल भगाएगा। लेकिन इन मजबूत तर्कों के बावजूद लोग देह-धारा में व्यापक विष-प्रयोग की अनुमति नहीं दे पाते थे। आगे चलकर इस विज्ञान ने राज्य की ओर से सम्मान और अनुमति-पत्र का जुगाड़ बिठाया। जब आश्वासन मिल गया कि ये अनुमति-पत्र धारण करनेवाले लोग राज्य की निगाह से बाहर नहीं हैं, तो धीरे-धीरे इन्हें सम्मान और स्थान मिलने लगा। उधर विज्ञान भी अधिक व्यापक, सुग्राह्य और विनम्र बना। प्रयोग में लाने से पूर्व विषों का शोधन किया जाने लगा। उससे बहुत अपेक्षा की जाने लगी। अगर प्रेत भगाने के लिए ब्रह्मपिशाच मंजूर है, तो रोग-उत्पादों के खिलाफ औषधीय विषों को भी मंजूर किया जाने लगा। सिद्ध और सुसंस्कृत ब्रह्मपिशाच अगर सुग्राह्य हो जाता है, तो शोधित विषों में भी सुग्राह्यता की संभावना रह सकती है। हाँ, एक बात थी। चिकित्सा में सेवा-भावना थी, मंगल-कामना थी। उसमें अभी न व्यावसायिक घात-प्रतिघात आये थे, न जल्दीबाजी थी।

श्रीमद्भागवत महापुराण जैसे धार्मिक ग्रन्थ को भी विष-चिकित्सा के न्याय पक्ष पर बोलना पड़ा था—आमयोयश्चभूतानां जायते येनसुव्रत। तदेवह्यामयं द्रव्यं न पुनाति चिकित्सकार ? (जिस विष के शरीर में स्थापित होने से रोग उत्पन्न होता है, क्या उसे ही चिकित्सकीय व्यवहार में नहीं लाया जाता ?)।

उल्टी दिशा में हजारों वर्ष दौड़ने का कीर्तिमान

मेडिकल साइन्स, अर्थात् साइन्स ऑफ मेडिसिन्स अर्थात् औषधीय चिकित्सा-विज्ञान संभवतः मानव-सभ्यता का आदि विज्ञान है। सबसे पहले आया, अतः सबसे प्राचीन है। इसे अन्य विज्ञानों का पिता भी नहीं कहा जा सकता, माँ भी नहीं। अन्य विज्ञानों की नस्लें अलग हैं। उम्र और प्राचीनता के नाते चिकित्सा के मोर्चे पर औषधीयता का ही बोलबाला है। नाम इसी का चलता है। तथ्य यह है कि स्वास्थ्य और चिकित्सा के मोर्चे

पर खड़ी समस्त विधाओं और तैयारियों को 'मेडिकल' (दवा-सम्बन्धी) समझ लेने की परिपाटी बन गयी है, जबकि मोर्चा सँभालनेवाले विज्ञानों में 'मेडिकल' सर्वाधिक दयनीय है।

सर्जरी एक समुन्नत चिकित्सा-विज्ञान है। वह मेडिसिन (औषधि) की जाति में नहीं आता, लेकिन उसके विकास को मेडिकल साइन्स की उपलब्धि बोला जाता है। जाँच के सभी भौतिक उपकरण (थर्मामीटर से लेकर, स्कैन-व्यवस्था तक) भौतिक विज्ञान (फिजिक्स) की देन हैं। 'मेडिकल साइन्स' का इनसे दूर का रिश्ता भी नहीं है। रासायनिक जाँच के ज्ञान-उपादान रसायन विज्ञान से आकर शामिल हुए हैं। शरीर-रचना और क्रिया-प्रणाली पर बहुत गहन कार्य हो चुका है। तो क्या ये मेडिकल साइन्स हैं ? मेडिकल साइन्स का काम था रोग-उन्मूलक दवाएँ देना। वहाँ पर इनका योगदान नगण्य है। कैन्सर-अस्पतालों में रेडियम और कोबाल्ट थेरापी के लिए उपकरण हैं, किन्तु वे औषधि-वर्ग में नहीं आते। इस प्रकार गठित हुआ है औषधि-विज्ञान अर्थात् मेडिकल साइन्स का जुलूस, जिसमें रोग-उन्मूलन की दिशा में औषधि विज्ञान की प्रायः कोई सकारात्मक भूमिका नहीं है, और नकारात्मक भूमिका असंदिग्ध है। अन्य विज्ञानों की आड़ में बैठने से विषत्व और निष्फलता भी छिपती है और 'मेडिकल साइन्स' को अपनी झोली में श्रेय बटोरने का अनधिकृत मौका भी मिल जाता है।

सबके बावजूद औषधि-विज्ञान अब भी अपने विष-सिद्धान्त पर ही खड़ा है। रोग-उन्मूलन की प्रकृति से तालमेल बिठाने का अवकाश भी वह नहीं जुटा सका। अधूरी और उल्टी दिशा में चलते जाने का एक कसा-कसाया सिद्धान्त है उसके पास। समय के साथ वह वानस्पतिक से चलकर जैविक, फिर खनिज और फिर घोर रासायनिक विषों की आजमाइश करता रहा। उसका मोर्चा अब शरीर के रोग-उत्पादों और रोग-लक्षणों तक ही सीमित नहीं है। अब तो वह परिवेश और वायुमण्डल के रोग-कारकों को ध्वस्त करने के लिए चल पड़ा है। नये-नये विष-मार्ग खुलते जा रहे हैं। बेमिसाल भटकाव है– उल्टी दिशा में हजारों वर्ष चलते-दौड़ते जाना।

नकारात्मकता (नेगेटिविटी) और 'एण्टी' का विज्ञान है यह। अर्थात् उल्टी दिशा में दौड़ है उसकी। हजारों वर्षों तक चल चुकी है दौड़, अब भी चल रही है। भविष्य भी उसी का रहेगा, अगर कोई सकारात्मक विज्ञान नहीं आयेगा अथवा अगर मानव की समझ उससे भागकर अलग नहीं खड़ी हो जायेगी। रोगों से बचाव तो आम जन नहीं कर सकते। किन्तु 'विषौषधियों' से अलग तो रहा जा सकता है। मानव-चेतना ऐसा ही निर्णय लेने पर विवश होगी। दुनिया के समझदार लोग 'पहले रोग से समझौता करके जीने' की आवाज दे रहे हैं। आम लोगों में भी जल्दी ही भगदड़ मच सकती है। अब तो चिकित्सक भी दवाओं के विषय में बोलने लगे हैं, "यही दवा लीजिए। इसके साइड एफेक्ट कम हैं अर्थात् यह कम रोगकारक है।"

❑

धरातल की तलाश और केन्द्र की स्थापना

सकारात्मक असन्तोष ही प्रेरणा बना

डी.एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों डॉ. उमाशंकर तिवारी और प्रो. शिवाशंकर त्रिवेदी के मन में परम्परागत चिकित्सा और उसके विष-सिद्धान्त के प्रति तीव्र असन्तोष था। असन्तोष सकारात्मक था, चिड़चिड़ापन नहीं, जो उपद्रव में तब्दील हो, और फिर बुझ जाय। असन्तोष 'कुछ होना चाहिए' से शुरू होकर 'वैज्ञानिकों को कुछ करना चाहिए' तक आया, और धीरे-धीरे उसने एक सकारात्मक संकल्प का आकार ले लिया, 'हमें कुछ करना होगा'।

चिकित्सा को बेड़ी-मुक्त करना पहली जरूरत

परम्परागत चिकित्सा का विष-सिद्धान्त अपने आपमें एक क्रमशः कसती हुई बेड़ी है। इस चिकित्सा को ज्यों-ज्यों प्रगति का अवसर मिला, विषत्व की प्रकृति के कारण वह जोखिमपूर्ण और खतरनाक होती गयी। जबतक विष-निर्भरता की बेड़ी नहीं खोली जायेगी, चिकित्सा रोग-मुक्ति का माध्यम नहीं बन सकेगी। विषों के प्रयोग की विधि और उनकी वर्दी का ही बदलाव पर्याप्त नहीं है, बदलाव चाहिए स्वभाव की गहराई तक। परम्परागत दिशा से अब कोई आशा नहीं है। 'नाग' का विकल्प 'साँप' कोई समाधान नहीं है। अनुसन्धान के लिए नयी दिशा तलाशनी होगी। कुछ मिलना होता, तो लाखों प्रतिभाओं का सैकड़ों वर्षों का अनवरत निष्ठापूर्ण योगदान निरर्थक नहीं हो जाता। अतः विकल्प की तलाश नहीं करनी है—सही चिकित्सा-सरणि की तलाश करनी है।

पोषक ऊर्जा विज्ञान के प्रेरणा-पुरुष

परिवेश ने व्यावहारिक प्रेरणा दी

विज्ञान जब पहले-पहल मानव-जीवन में शामिल हुआ, उस समय न वैज्ञानिक दस्तावेज थे, न पोथियाँ थीं। विज्ञान तो वस्तुतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण है। पोथियाँ और पाठ्यक्रम तो विद्वान तैयार कर सकते हैं। विज्ञान का हर विद्वान वैज्ञानिक नहीं बन जाता। वैज्ञानिक दृष्टिकोण हो, तो वैज्ञानिक परिवेश काम कर जाता है और विज्ञान एक कदम आगे बढ़ सकता है।

त्रिवेदी-बन्धुओं के चिन्तन का व्यावहारिक विकास खेतों-खलिहानों, पशु-पक्षियों, बाग-बगीचों तथा नदी-नालों की गतिमयता के बीच हुआ था। वहाँ जीवन के समक्ष उपस्थित समस्याओं और उनके निराकरण के दृश्य खुलकर कुछ बोल जाते थे।

१. कृषक लोग मक्का, बाजरा, ज्वार, टंगुनी आदि के पुष्ट बीज हिफाजत से रखते थे, ताकि घुन और रोग-कीट उन्हें नष्ट न कर दें। उनकी बालियाँ उन्हीं के प्राकृतिक आवरण में सुरक्षित रख दी जाती थीं। उसी आवरण में, जिसमें प्रकृति ने उन्हें हिफाजत से प्रस्तुत किया था। बालियों का कवच ही दानों को रोगों से बचाता और स्वस्थ रखता था।

२. अनाजों को जमीन में गाड़ते समय किसान उन्हें उन्हीं के भूसे में दबाकर ही सुरक्षित करते थे। वे स्वास्थ्य के पक्ष में लड़ते थे, कीड़ों के खिलाफ नहीं।

३. घरेलू जानवरों के घाव होने और उनमें कीड़े पड़ने पर लोग बर्रे, गेहूँ, जौ आदि का कड़ुआ तेल घावों पर लगाते थे। कीड़े मारने के लोभ से वे विषों का प्रयोग नहीं करते थे।

त्रिवेदी बन्धुओं को उनके पिता श्री मुखराम तिवारी ने ही इसका आशय समझाया था,"चमड़े पर चमड़े की, कपड़े पर कपड़े की और धातु पर धातु की चिप्पी ही काम आती है। कपड़े पर न तो टिन का पैबन्द लगेगा, न जूते पर कपड़े की चिप्पी। शरीर का निर्माण जिस अन्न से होता है, उसकी सही चिकित्सा भी उसी अन्न से होगी।"

४. पिताजी ने समझाया था कि स्वस्थ बीजों में घुन नहीं लगते। घुन बाहर से नहीं आते, बल्कि अपरिपक्व बीजों में घुन स्वतः पैदा हो जाते हैं। इसी क्रम में उन्होंने समझाया था कि गूलर के फल में जो नन्हे-नन्हे कीड़े होते हैं, वे बाहर से नहीं आते, बल्कि गूलर के फल में ही पैदा होते हैं। वस्तुतः कमजोर बीज ही कीट बन जाते हैं। बीज तैयार करने की प्रक्रिया ही रुग्ण होकर जीव तैयार कर देती है। इसीलिए देखा जाता है कि गूलर का फल कहीं भी हो, कीट एक जैसे पैदा होते हैं।

५. वन्य जीव अपना प्राकृतिक आहार ही ग्रहण करते हैं। वे अपने अभोज्य से समझौता नहीं करते। इसलिए उनका शरीर रोगों का शिकार नहीं होता। रोग का कारण परिवेश में उपस्थित रोगाणु हो सकते हैं, किन्तु वे उस शरीर पर आक्रमण नहीं करते, जो अपने प्राकृतिक आहार-धर्म का पालन करते हैं।

६. पिताजी ने ही समझाया था कि जहाँ बीज बनने की प्रक्रिया नहीं होती, वहाँ जीव बनने का सिलसिला भी नहीं होता। केले के फलों में बीज नहीं होते, अतः वहाँ बीज बनने-वाली प्रक्रिया नहीं होती। इसलिए इन फलों में कीड़े नहीं पैदा होते। जिन फलों में बीज होते हैं, उनमें बीज बननेवाली प्रक्रिया होती है, अतः उनमें कीड़े पैदा हो जाते हैं। वह प्रक्रिया ही स्वस्थ रहने पर बीज बनाती है और अस्वस्थ होने पर कीड़े पैदा कर देती है।

पिताजी ने विज्ञान की पढ़ाई तो नहीं की थी, किन्तु उनका दृष्टिकोण वैज्ञानिक था। अपने अनुभवों से समझ का तालमेल बिठाना उनका स्वभाव था। स्व-भाव था, अतः अपने लिए ही कुछ निष्कर्ष तक पहुँचना जरूरी हो जाता था। उनके पास इस प्रकार के निष्कर्षों की एक थाती थी। इसके विषय में वे भाषण नहीं करते थे। किशोरावस्था में ही उमाशंकर तिवारी और शिवाशंकर त्रिवेदी के मन इन निष्कर्षों के साथ जीवन की जमीन ढूँढ़ना शुरू कर देते थे। पिताजी को न तो वैज्ञानिक शब्दावलियों से कोई सरोकार था, न ही वे ऐसा सोचते थे कि निष्कर्षों के ये बीज किसी दिन वैज्ञानिक शोध का उत्साह जुटा देंगे और वे विज्ञान के एक नये क्षितिज के प्रेरणा-पुरुष बन जाएँगे।

अपनी अवधारणा को बार-बार सँजोते-सँभालते वैज्ञानिकों ने कई वर्ष बेचैनी के निकाले। व्यावहारिक धरातल पर शोध-अनुसंधान प्रारम्भ करने का वातावरण नहीं जुटता था। जीवन-संघर्ष से अवकाश कम मिलता था। वे किसी प्रयोगशाला से जुड़े भी नहीं थे।

तात्कालिक पृष्ठभूमि : दयाशंकर तिवारी का आकस्मिक निधन

१९६५ के प्रारम्भ में ही परिवार पर शोक की एक आँधी टूट पड़ी—अचानक, अप्रत्याशित। वैज्ञानिक बन्धुओं के अनुज दयाशंकर तिवारी सैनिक-सेवा में थे। दिल्ली में नियुक्त थे। ६.१.६५ की शाम को मिलिटरी अस्पताल, कैण्ट दिल्ली में आकस्मिक संगीन रोग-स्थिति में भर्ती किये गये। इससे पूर्व कोई रोग नहीं था, पूर्ण स्वस्थ थे। बड़े भाई प्रोफेसर त्रिवेदी ११.१.६५ को दिल्ली पहुँच चुके थे। इससे पहले कि यह निर्धारित हो सके कि रोग क्या है, दि. १५.१.६५ को सबेरे ही श्री तिवारी का स्वर्गवास हो गया। सेवा-सँभाल में निष्ठापूर्वक समर्पित चिकित्सा-व्यवस्था को रोग की सही जाँच का भी अवसर नहीं मिला। पता नहीं चल सका कि जीवन के विध्वंस पर तुली हुई रोग-स्थिति क्या है। हर क्षण आपात संकटों का था।

इस आकस्मिक झटके ने परिवार के जीवन को धकेलकर शोक और चिन्ता के गर्त में ला पटका। माँ बहोरनी देवी ने परिवार को भावात्मक एकलयता की जो बुनियाद दी थी, वह तो कायम रह गयी, किन्तु पूरा मीनार ही शोक के बोझ से झुक गया।

पारिवारिक संस्थान

आज के डी. एस. रिसर्च सेण्टर के समर्पित कार्यकर्ता डॉ. एस. पी. सिंह बताते हैं, "मुझे इस परिवार के साथ चार-पाँच वर्षों तक अन्तरंग सदस्य के रूप में रहने का सौभाग्य मिला है। कोई यह कल्पना भी नहीं कर सकता कि आज के जगत में ऐसा भी कोई परिवार हो सकता है। जीवन्त तन्तुओं और अगाध प्रेम-समर्पण से जुड़े परिजनों के मन में कहीं भी एक-दूसरे के प्रति उलाहने की कोई हल्की लहर उठते भी मैंने नहीं देखी। आत्मीयता, पवित्रता और सबकुछ मानवता के लिए समर्पित करके खड़े बेदाग लोगों का यह पारिवारिक संगठन अद्वितीय और अनूठा है। लोग स्वयं को डी. एस.

रिसर्च सेण्टर मानते हैं। व्यक्तिपरक अहंभाव तो जैसे है ही नहीं। और तो और, इस परिवार से अन्य परिवारों के भी जो लोग जुड़े हैं, उन्हें बाहर से आनेवाला व्यक्ति महीनों बाद भी इस परिवार से अलग करके नहीं देख पाता। भेद का भाव तो यहाँ है ही नहीं। एक व्यक्ति की एक नस दुखने लगे, तो सभी सदस्यों का अस्तित्व ही दर्दीला हो जाता है।...तन-मन और धन—सही रूप में डी. एस. रिसर्च सेण्टर के माध्यम से मानवता के लिए समर्पित। इतना मधुर व्यवहार, इतना शालीन आचरण, इतना सादा और संयमपूर्ण जीवन ! कोई चर्चा करे, तो लगेगा कि कल्पना का ठाट खड़ा करके कविता बोल रहा है। सबकुछ अपूर्व और दुर्लभ-सा। किसी को भी नाम नहीं चाहिए, यश नहीं चाहिए। कमजोरी कहें, तो एक ही है कि सभी लोग इस भारत देश पर गर्व करना चाहते हैं। भारत के वर्तमान से मर्माहत हैं, किन्तु जानते हैं कि भारत मरा नहीं है। कभी लगता है कि प्राचीन भारत का एक ओजस्वी प्रतीक अविकृत रूप में शेष रह गया है, तो कभी लगता है कि यह परिवार भारत के भविष्य के लिये सुरक्षित रखा हुआ बीज है।...''

यह परिवार की बड़ाई के लिए नहीं लिखा गया। पाठक के मन में इस पारिवारिक संस्थान का चित्र रहेगा, तभी वह यह समझ सकता है कि एक सामान्य पारिवारिक संगठन अनुसन्धान-अभियान के वेग को किस बल पर झेल सका। इतना ही नहीं, हो सकता है कहीं अन्यत्र भी 'सही अर्थों में सही' कर जाने का संकल्प ऐसे ही वातावरण में अंकुरित हो जाय, तो यह मिसाल स्वयं ही मशाल का काम कर जायेगी। गर्वोक्ति नहीं मानें, तो वस्तुतः भारत देश की जीवनी-शक्ति केवल ऐसी ही है। यही एक देश है जहाँ सत्ता का ग्लैमर ओढ़कर सही अर्थों में सही कर पाना भले ही संभव न हो, ऋषित्व में ढलकर संसार क़ी रोग-समष्टि को सार्थक चुनौती दी जा सकती है, और कैन्सर जैसे कोरे और क्रूर आतंक को खरल-इमामदस्तों के सहारे पछाड़कर दिखाया जा सकता है। भारत वहाँ बैठा है, जहाँ अचेतन केमिस्ट्री सचेतन बनती है। सचेतन को अचेतन बनाने वाली ठगनी माई का तामझाम अवान्तर है, भारत की पहचान नहीं। अतः परिवार की इस संक्षिप्त छवि को भारत की एक संक्षिप्त क्षमता के रूप में देखा जाना चाहिए।

भारतीय प्राण-शक्ति में एक स्पन्दन हुआ और डी. एस. रिसर्च सेण्टर अस्तित्व में आया

भारतीय परम्परा में प्रचलित है कि शोक की दवा युद्ध है। युद्ध का अर्थ है एक बड़ा संकल्प। बेझिझक, विराट संकल्प और सजग विवेक के साथ आगे बढ़ने का मोर्चा स्थापित कर देना ही युद्ध है। अभिमन्यु की हत्या के शोक से उबारने के लिए भगवान कृष्ण ने अर्जुन को जयद्रथ-वध के लिये तैयार किया था। हिंसा का उद्रेक युद्ध का सार्वत्रिक और सार्वकालिक अर्थ नहीं है। यहाँ तो सचेतन रसायन और पोषक ऊर्जा विज्ञान के उद्‌घाटन का संकल्प आया, और शोक का परिदृश्य ही बदल गया।

भगवान बुद्ध ने कभी 'सनातन धर्म' कहकर एक जीवन-निष्कर्ष प्रस्तुत किया था—न हि वैरेण वैरः शम्यन्ति कदाचन, अवैरेण च शम्यन्तीह एष धर्मः सनातनः (वैर से वैर को

कदापि नहीं शान्त किया जा सकता। निर्वैरता से वैर की समाप्ति होती है, धर्म की सनातनता यही है)।

बुद्ध का यह सन्देश डी. एस. रिसर्च सेण्टर के अभियान का प्रेरक तो नहीं था, किन्तु यह एक जीवन्त प्रसंग तो है ही, एक सशक्त गवाही तो है ही। विष के खिलाफ विष उतारने वाले चिकित्सा-सिद्धान्त से हटकर स्वास्थ्य के पक्ष में खड़े होने का प्रसंग है। विष-सिद्धान्त वैर से वैर की अनन्त लड़ाई का सिद्धान्त है। सर्वथा नकारात्मक। पोषक ऊर्जा का संघर्ष सकारात्मक है। एक संघर्ष है स्वास्थ्य के पक्ष में, सचेतन केमिस्ट्री के पक्ष में, जो परोक्ष भाव से रोगों के विरुद्ध संघर्ष बन जाता है, रोग-उत्पादों तथा रोग-लक्षणों के विरुद्ध संघर्ष बन जाता है, और उसी परोक्षभाव से विष-सिद्धान्त के रूप में चलती लड़ाई के विरुद्ध भी संघर्ष बन जाता है। प्रत्यक्ष संघर्ष जीवन-धारा के पक्ष में; परोक्ष संघर्ष जीवन-विरोधी-धारा के विरुद्ध।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की स्थापना

स्थापना	:	सन् १६६५
स्थान :		पूर्णिया (बिहार)
अभियान प्रारम्भ	:	सन् १६६६
स्मृति	:	स्व. दयाशंकर तिवारी (डी. एस.)
अभिभावकत्व और संरक्षण	:	श्रीमती बहोरनी देवी (माँ)। पिताजी का सन् १६५७ में ही स्वर्गवास हो चुका था।
शोध-संस्थान	:	श्रीमती बहोरनी देवी का पारिवारिक संस्थान।
वैज्ञानिकद्वय	:	डॉ. उमाशंकर तिवारी और प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी (सगे भाई)

माँ को तो यह कार्य इतना पवित्र मालूम होता था कि वे कोई हिसाब नहीं करती थीं। अपने पुत्रों की प्रतिभा, निष्ठा और योग्यता पर उन्हें भरोसा था। विश्वास था कि किसी परिणाम तक अवश्य पहुँचा जायेगा। सबकी हिम्मत बँधी रहे, इसलिए वे अनुसन्धान कार्यों को देखतीं, उनमें रुचि लेतीं और प्रोत्साहन के नाते केन्द्र में प्रायः उपस्थित भी रहतीं। सन् १६७६ में उनका स्वर्गवास भी पूर्णिया की अनुसन्धानशाला में ही हुआ। कभी अनुसन्धान के लिए अधिक धन की आवश्यकता होती तो वे कहतीं, "तुम लोगों को ईश्वर की ओर से निरन्तर अनुदान मिल रहा है। मन और शरीर में शक्ति है। खटो, संग्रह करो, फिर लगाओ।" उन्हीं की प्रेरणा आज इस परिवार की संस्कृति बनकर खड़ी है। किशोर, युवक और वृद्ध सभी लोग पन्द्रह-सोलह घण्टे तो रोज खटते ही हैं। इस कर्म-चक्र पर आसन जमा पाने का मौका न तो पर्वों को मिला, न उत्सवों और समारोहों को।

माँ के समय ही घर रिसर्च सेण्टर हो गया और रिसर्च सेण्टर ही घर हो गया।

परिवार के आवास की एक इंच भी भूमि नहीं, जो रिसर्च के काम नहीं आती है। सैनिक-छावनी जैसी जिन्दगी। कर्मशाला ही विश्रामशाला। आज भी यह बरका पाना कठिन है कि कौन-सा साधन परिजनों का है, और कौन-सा रिसर्च सेण्टर का। अनूठी है जिन्दगी। सभी समर्पित। कहीं भी अपने-अपने पक्ष में संग्रह का भाव नहीं।

अनुसन्धान-साधन का प्राण-स्रोत : डी. एस. रिसर्च सेण्टर के मुख्य साधन-स्रोत रहे हैं—संकल्प, समर्पण-भाव, रचनात्मक संगठन, कठिनाइयाँ झेलने की क्षमता आदि। यदि इन वास्तविक और जीवन्त स्रोतों को साधन नहीं माना जाएगा, तो डी. एस. रिसर्च सेण्टर के आधार को शायद अनुभव ही नहीं किया जा सकेगा। अर्थ अनिवार्य साधन तो है, किन्तु महान कार्य का सर्वोच्च साधन नहीं है। बात सन् १९७८ की है। दुर्ग जिले के डौंडी लोहारा कस्बे में रहकर वैज्ञानिक प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी दुर्ग, राजनांद गाँव, दल्ली राजहरा, भिलाई, रायपुर आदि के ग्राम्यांचलों और वनांचलों में मानवीय भोज्यों का अध्ययन-संकलन कर रहे थे। किसी मित्र ने पूछ दिया था, "कहाँ है आपका रिसर्च सेण्टर ?" प्रोफेसर त्रिवेदी ने अपने सिर की ओर संकेत करके कहा, "यहीं है। वैज्ञानिक अनुसन्धान के सभी केन्द्र यहीं होते हैं।" उत्तर सुनकर मित्र बहुत प्रसन्न हुए, किन्तु अगला प्रश्न करने से नहीं चूके, "इतने बड़े अभियान के लिए साधनों का स्रोत कौन-सा है ?" प्रोफेसर त्रिवेदी ने सधा हुआ उत्तर दिया, और यह उत्तर भी लगभग वैसा ही था, "पूरा पारिवारिक संस्थान एकलय होकर जुट गया है।"

परम्परा से अलग खड़े होकर चिन्तन का जोखिम उठानेवालों के पास दृष्टिकोण की एक मौलिक थाती होती है। वे परम्परागत तरीके से भिन्न सोचा करते हैं। भिन्न होने का अर्थ परम्पराओं की नोचा-चोथी नहीं है। मानव की रचना-शक्ति का पहला आधार विवेक होता है।

बड़ा संकल्प प्रशंसनीय हो सकता है, किन्तु उसे व्यवहार में उतारना एक जोखिम-भरी चुनौती है। आखिर एक पारिवारिक संस्थान इतनी बड़ी चुनौती के सामने कबतक खड़ा रह सकेगा ! उत्साह जितना भी हो, क्षमता तो अत्यन्त सीमित थी।

केन्द्र की सन्जीदा एवं अनुशासित प्रवृत्तियों का गहन अध्ययन करके सन् १९८४ में हिन्दी के प्रसिद्ध साप्ताहिक 'रविवार' ने लिखा था "मानव जाति की रोगमुक्ति का सन्देश जरूरी नहीं कि गगनचुम्बी अट्टालिकाओं में स्थित करोड़ों की लागत से बनी प्रयोगशाला में ही जन्म ले।... कोई पक्की इमारत नहीं और न प्रयोगशाला का आतंक पैदा करने की कोई कोशिश। फूस की झोपड़ियों और खपरैल के छज्जोंवाले कुटीरों में ही शोध का यह प्रयोग चल रहा है। यह पूरी तरह से एक पारिवारिक संस्थान है, जिसका नेतृत्व बलिया (उत्तर प्रदेश) में जनमे डॉक्टर उमाशंकर तिवारी और प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी करते हैं। प्रोफेसर त्रिवेदी से मिलते ही उनकी प्रतिभा और बौद्धिक शक्ति का कायल होना पड़ता है। डॉक्टर तिवारी भी प्रबुद्ध, संस्कारशील एवं मौलिक सोच के व्यक्ति हैं।"

पोषक ऊर्जा और सचेतन केमिस्ट्री का दर्शन

रिसर्च का कार्य प्रारम्भ हुआ। जगत और जीवन का तात्विक निरीक्षण चलने लगा। ऋषियों और वैज्ञानिकों की स्थापनाओं का गहन अध्ययन चलता रहा। शुरू में समग्र जगत ही प्रयोगशाला था। चर्चाएँ-परिचर्चाएँ चलतीं। प्रयोग किये जाते थे, किन्तु उन्हें स्पष्ट दिशा देने में सफलता नहीं मिल पाती थी। आखिर वह तो करना नहीं था, जिसे बार-बार करके वैज्ञानिक नेत्रों से पढ़ा जा चुका था। धीरे-धीरे एक सम्भावना ने आशान्वित करना शुरू किया। लगने लगा— वह मार्ग अवश्य मिलेगा, जिसकी पहले कभी तलाश नहीं की गयी थी। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिक अपने कर्मक्षेत्र में डटे हुए थे— कर्मक्षेत्र से साधन कमाना और पूरा समय तथा समग्र चिन्तन उस विन्दु की खोज में लगाना, जहाँ से व्यवहार में उतरने के सोपान संभव थे।

क्रिया प्रकृति की जागृतावस्था है, और सम्भावना उसकी सुप्तावस्था है। प्रयोगशाला तो एक केन्द्रक मात्र है, जहाँ मानव का मन प्राकृतिक घटनाओं को समझता, व्याख्या देता और उन्हें जीवन की विराट धारा में अपनी धारा से संयुक्त करता है।

धीरे-धीरे समझ का तालमेल बैठ गया, उस तल से जहाँ से अचेतन रासायनिक क्रियाएँ सजग, सचेतन होकर आत्मव्यवस्था की ओर करवट लेती हैं। क्या होता है यहाँ? अनन्त ब्रह्माण्ड 'चिति' अर्थात् 'चेतना' से ओतप्रोत है। ब्रह्माण्ड अर्थात् अनन्त चेतना। जड़ सत्ता और जड़ केमिस्ट्री का अस्तित्व कब और क्यों संभव हुआ, इस दार्शनिक विषय को यहाँ नहीं छेड़ेंगे। जड़ सत्ता अपनी रासायनिक-भौतिक क्रियाओं में लीन रहती है। एक परिस्थिति बनती है, जब रासायनिक क्रियाओं के साथ अनन्त चेतना की भागीदारी हो जाती है। फिर क्रियाएँ सचेतन हो उठती हैं। उनकी अपनी दिशा होती है, अपना सचेतन निर्णय होता है। चेतना के संसर्ग में हुआ पदार्थ जड़-प्रधान नहीं रहकर प्रक्रिया-प्रधान हो उठता है। उठाव-गिराव का एक सिलसिला प्रारम्भ होता है— जड़ और चेतन केमिस्ट्री के बीच। सचेतन केमिस्ट्री धीरे-धीरे अपनी जगह बनाती है। इस केमिस्ट्री की आधार-सामग्री सचेतन ऊर्जा से आविष्ट होती है। यही पोषक ऊर्जा है। पोषक ऊर्जा से आविष्ट सचेतन पदार्थ को भारतीय ऋषियों ने 'अन्न' कहा है। यह पदार्थ कभी किसी का पोषक नहीं होता। पोषक तो तब कहा जायेगा जब जीवन का उद्भव हो जायेगा।

पोषकों के अनेक प्रकार हैं और अनेक स्तर भी। एक दिशा तो मिली कि अचेतन केमिस्ट्री सचेतन बन गयी। केमिस्ट्री की दो धाराएँ प्रवाहित होने लगीं। अभी यह स्पष्ट नहीं होता कि केमिस्ट्री का सचेतन हो जाना ही उसका लक्ष्य और उसकी दिशा है, अथवा उस पर चेतना का और भी अव्यक्त दबाव है, जो उसे दिशा दे रहा है। अभी तो बस 'अन्न' का एक भण्डार उठ खड़ा हुआ है— सचेतन केमिस्ट्री से परिपूरित, पोषक ऊर्जा से सप्राण। 'अन्न' मतलब जैव सामग्री। प्राणिजीवन की दिशा में बढ़ने की तैयारी।

वही पदार्थ, जिस पर अबतक अचेतन केमिस्ट्री कार्य करती थी, सचेतन हो उठा है। किन्तु अचेतन ने पीछा नहीं छोड़ा है, पदार्थ से उसका भी तो प्राकृतिक सम्बन्ध है। एक विपरीतता का संघर्ष दिखाई दे रहा है, सचेतन बनने का और अचेतन केमिस्ट्री के बोझ से ढह जाने का।

यहाँ यह तथ्य भी उजागर हो जाता है कि चयोपचय का उद्‌भव अथवा जन्म ही जीव का जन्म है, वही जीव-सृष्टि की योजना भी है और कार्य भी, उसी की क्षीणता अथवा रुग्णता जीवन की रुग्णता है, उसी की मृत्यु जीवन की मृत्यु है। कोशिका की समग्र निर्मिति, मेटाबोलिज्म अर्थात् चयोपचय की निर्मिति है। कोशिका-केन्द्रक इस सचेतन चयोपचय की निर्मितियाँ हैं। केन्द्रक की समग्र संरचना उसी नियामकता का परिचय है। जीन्स की व्यवस्था उसकी अपनी व्यवस्था है। उनका निर्माण करना, उन्हें पोषण प्रदान करना, उनके बहुगुणन की व्यवस्था करना, सबकुछ चयोपचय का कार्य है अथवा सबकुछ चयोपचय ही है। कोशिका की पदार्थगत सत्ता उसका अपना सोपान है, जिस पर होकर वह सृष्टि-यात्रा में भागीदारी करता है।

वर्तमान विज्ञान ने कोशिका की केन्द्रीय व्यवस्था की सक्रियता देखकर तथा सृष्टि-पथ पर उसे प्रेरक एवं दौड़ती मशाल जैसी भूमिका में देखकर अनुमान लगाया है कि केन्द्रीय व्यवस्था ही योजना है और चयोपचय उसकी इच्छा से विकसित, उसीके द्वारा अनुशासित और उसीके निर्देशन पर कदम उठाने-गिरानेवाली प्रक्रिया है। किन्तु यह तथ्य नहीं लगता। वस्तुतः एक ही चयोपचय कहीं चय, उपचय, और अपचय में विभाजित-सा दिखता है, कहीं पोषण और सुरक्षा-व्यवस्था सँभालता दिखाई देता है और उधर केन्द्रीय चरित्र को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। आधुनिक वैज्ञानिक पदार्थ और ऊर्जा से ही अपनी प्रयोगशाला की समझ तैयार करता है, अतः उसका दृष्टिकोण अपनी स्थिति में ठीक ही है। वह तो चय, उपचय और अपचय को घटित होते देखकर मेटाबोलिज्म को स्वीकृति दे देता है, यही बहुत है। वस्तुतः मेटाबोलिज्म उसके प्रयोग-क्षेत्र में नहीं आ पाता।

❑

अभियान और उपलब्धियाँ

चयोपचय और पोषक ऊर्जा का चिकित्सा-सिद्धान्त

चयोपचय की गंगा के किनारे एक बार फिर एकाग्र भाव से खड़े हो जायँ, प्रकृति आपके सामने सृष्टि का सरल-सपाट रहस्य खोलकर रख देगी। जितना सरल, उतना ही गहन और गहरा। उलझाव कहीं भी नहीं, क्योंकि उलझाव से होकर सृष्टि का संकल्प नहीं निकलता। उलझाव सृष्टि के स्वभाव-विरुद्ध है। वह उलझाव को तोड़ती है। यह उसका स्व-भाव है।

१. चयोपचय सृष्टि की सर्वाधिक सचेतन और विवेक-समृद्ध प्रक्रिया है।

(अ) चयोपचय का उस अन्न अर्थात् पोषक ऊर्जा से सीधा तादात्म्य सदैव कायम रहता है, जिसके प्रभाव से उसकी अभिव्यक्ति हुई है। इस तादात्म्य के कारण ही प्रत्येक जीव अपने आहार को अपनी चेतना द्वारा पहचान लेता है। जीवन की प्रत्येक इकाई अपने आहार की दिशा में ही गतिशील है। चींटी गुड़ की ओर दौड़ जाती है, खटमल उधर मुँह भी नहीं करता।

(आ) चयोपचय का सात्विक आहार वही है, जिससे उसका उद्‌भव हुआ है। सात्विकता ही स्वास्थ्य है।

(इ) चयोपचय की जितनी सजगता 'चय' के विन्दु पर होती है, उतनी ही उपचय के धरातल पर भी, जहाँ प्राप्त पोषक को ऊर्जा द्वारा आविष्ट करके जटिल यौगिकों का निर्माण होता है। चयोपचय ही अपने सजग निर्देशन में समग्र जीवन-व्यवस्था के अनुरूप जटिल यौगिकों का निर्माण करता है।

(ई) अपचय के अन्तर्गत उतनी ही सचेतन सजगता और विवेक के साथ उस पदार्थ को—जिससे पोषक ऊर्जा वसूल कर ली गयी है और जो अब जीवन-व्यवस्था के लिए अनुकूल नही रह गया है—शरीर से बाहर विसर्जित कर दिया जाता है।

२. चयोपचय जीवित शरीर के भीतर किसी ड्रग पदार्थ (विष अथवा उपविष) को नहीं रहने देता, क्योंकि ये जीवन के लिए सदैव घातक हैं। ड्रग पदार्थ जीवन की सजग क्रिया को क्षति पहुँचाते हैं। अतः चयोपचय प्रतिक्रिया द्वारा इन्हें शरीर-व्यवस्था से बाहर निकाल फेंकने की सतत चेष्टा करता है।

३. चयोपचय प्राकृतिक आहार-सामग्रियों को भी अपनी व्यवस्था से होकर ही स्वीकार करता है, मुँह में आहार प्राप्त करना और उसे पाचन संस्थान से गुजारना। इस दौरान केवल छँटनी ही नहीं होती, बल्कि जो पदार्थ स्वीकार किया जाता है, वह चयोपचय द्वारा संस्कारित होकर 'अपना' भी बना लिया जाता है।
४. 'अन्न' अगर किसी अन्य चयोपचय व्यवस्था से जुड़े हुए हैं, तो हमारा चयोपचय एक संघर्ष द्वारा पोषक ऊर्जा और पोषक अन्न को उस पदार्थ के चरित्र से अलग करता है, फिर उसे अपने अनुकूल विकसित करता है।
५. चयोपचय अपनी सचेतनता और अपने स्वरूप में किसी भी प्रकार का परिवर्तन स्वीकार नहीं करता। इसी विन्दु पर वह जीवन की प्रतिरक्षा अथवा प्रतिरोध-क्षमता के रूप में दिखाई देता है।
६. बाह्य प्रभावों के अनवरत सम्पर्क और संघर्ष के दौरान चयोपचय में भी विचलन आ जाता है। वह अपनी पूर्व स्थिति में आने के लिए सतत चेष्टा करता है। यह विचलन ही रोग है और चयोपचय का अपनी सात्विक स्थिति में आने के लिए संघर्ष करना ही चिकित्सा की संभावना की सूचना देता है।
७. जीव-सृष्टि का सम्पूर्ण आयोजन ही पोषक ऊर्जा और सचेतन रसायन का आयोजन है। पोषक ऊर्जा में ही स्वास्थ्य का विकास, अस्तित्व का धारण, प्रतिकूलता का प्रतिरोध, और रोग की चिकित्सा की ऊर्जा भी सन्निहित है।
८. शरीर के बाहर खुलने वाले द्वारों पर पोषक ऊर्जा और पोषक पदार्थों से निर्मित पदार्थों का ही सुरक्षा-प्रबन्ध है, जैसे आँख का पानी, मुँह का लार आदि।
९. शरीर-व्यवस्था में 'एण्टी बाडीज' से लेकर चिकित्सा और प्रतिरक्षा का जो भी विवेक है और जो भी त्वरा और संयम है, उसके पीछे उस जीव की सचेतन केमिस्ट्री और पोषक ऊर्जा की भूमिका है। यही सृष्टि और प्रकृति का मार्ग है। अतः चिकित्सा का सम्पूर्ण लक्ष्य जीव की स्वस्थ सचेतन केमिस्ट्री की समृद्धि में योगदान करना ही होना चाहिए। यह सटीक, सही, सचेतन और प्राकृतिक चिकित्सा की सर्वोच्च सहायता होगी।
१०. यह झलक जाता है कि पोषक ऊर्जा द्वारा अगर चयोपचय का विचलन समाप्त कर दिया जाय, तो अधिकांश रोग समूल समाप्त हो जाएँगे और रोगों से बचाव की स्थिति भी बन जायेगी।
११. रोग-प्रतिषेध और रोग-चिकित्सा एक ही रास्ते के दो पड़ाव हैं।

सही चिकित्सा सकारात्मकता का विज्ञान है

चिकित्सा सकारात्मक होनी चाहिए। सही चिकित्सा वह है जो स्वास्थ्य की सात्विकता के दुर्ग को दृढ़ बनाकर निश्चिन्तता की स्थिति में पहुँचा दे। कमजोर दुर्ग को और अधिक कमजोर बनाकर उसकी सुरक्षा का अनुदान जुटाने के लिए बाह्य जगत में कूद

पड़ना और वहाँ उन शत्रुओं को नष्ट करने की कोशिश में लग जाना, जो दुर्ग की कमजोरी के शत्रु होते हैं, अव्यावहारिक है। प्रकृति की मुक्त जीवन-व्यवस्था पुकार कर कह रही है कि दुर्ग अगर सुदृढ़ हो, तो कहीं भी कोई उसका शत्रु नहीं है। दुर्ग कमजोर हो, तो पूरी प्रकृति और सृजन का उद्देश्य ही उसका शत्रु है।

बौद्धिक छावनी : त्रिवेणी के तट पर

पड़ाव तय हो गया। पोषक ऊर्जा, सचेतन रसायन और चयोपचय की त्रिवेणी के तट पर बौद्धिक कार्यशाला स्थापित हुई। यह भी तय हो गया कि मानवीय भोज्यों पर कार्य होगा। लक्ष्य होगा चयोपचय के विचलन को दूर करना। विश्वास हो गया कि इससे स्वास्थ्य सुदृढ़ होगा और रोग दूर होने लगेंगे। चयोपचय का विचलन ही तो रोगों के जन्म और उनकी स्थिरता की बुनियाद है। कुल मिलाकर विचलन ही तो रोग है। संभव है कुछ रोगों की पड़ावबन्दी तोड़ने के लिए और भी उपाय करने पड़ें।

रोग-काल में भी व्यक्ति आहार तो ग्रहण करता ही है। फिर आहार-सामग्रियों में सन्निहित पोषक ऊर्जा उसके चयोपचय का विचलन ही क्यों नहीं समाप्त कर देती ? यह एक स्वाभाविक-सा प्रश्न है। समझने की बात यह है कि वह भोज्य ऊर्जा किसी-न-किसी चयोपचय के स्तर पर आबद्ध है। उसे मुक्त करके अपने स्तर पर खींचना चयोपचय का कार्य है। भोज्यों की अन्य चयोपचयों से प्रतिबद्धता तो हमारे चयोपचय से संघर्ष में उतरती है। वह उसका अनुगमन नहीं करती। अगर अनुगमन करती, तो चयोपचय को सीधे बल प्रदान करती। उधर हमारा अपना चयोपचय स्वयं विचलित होता है। इस अवस्था में संघर्ष करके जो पोषक ऊर्जा वह प्राप्त करता है, वह स्वयं भी विचलित होती है। वह अविचलित चयोपचय की उपार्जना नहीं है, अतः उसे अविचलन में वापसी की प्रेरणा नहीं देती। इसीलिए आहार में सन्निहित पोषक ऊर्जा हमारे लिए सात्विक ऊर्जा नहीं बन पाती।

चयोपचय का कार्य प्रयोगशाला के जिम्मे

रोगी तो चयोपचय है। वह स्वयं ही विचलित है। वह विचलित पोषक ऊर्जा ग्रहण करता है। उस चयोपचय के भरोसे चिकित्सा कैसे होगी ? प्रकृति ने चयोपचय के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग और साधन नहीं दिया है।

एक चुनौती आयी और सारा बौद्धिक अभियान जैसे अपनी जगह पर ही ठिठक गया। लगा कि अब आगे रास्ता बन्द है। लगा कि अवधारणाएँ उसी प्रकार बेठनबन्द हो जायेंगी, जैसे दार्शनिक विचार और कल्पना-केन्द्रित कविताएँ। वे विचार, जो सुन्दर और लुभावने हो सकते हैं, किन्तु जीवन उन पर पाँव रखकर खड़ा नहीं हो सकता। गणित का वह समीकरण, जो सोलह आने सही और सवा सोलह आने अव्यावहारिक है।

किन्तु डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों का संकल्प बोल उठा कि प्रकृति में कहीं-न-कहीं कोई मार्ग अवश्य होगा। सृष्टि के विराट आयोजन में संभावनाओं के

आयोजन अवश्य होंगे। कमर कसी जाय और चला जाय प्रकृति के सृजन-केन्द्र पर। फिर बैठें उस विन्दु पर, जहाँ अचेतन केमिस्ट्री सचेतन होती है, जहाँ चयोपचय की अदृश्य चेतना प्रतीक्षा में खड़ी रहती है। सृष्टि की प्रयोगशाला उत्तर और दिशा अवश्य देगी।

यहाँ पूरा यात्रा-वृत्तान्त प्रस्तुत करना इष्ट नहीं है। इतनी सूचना ही पर्याप्त है कि उस विधि का विकास कच्चे-पक्के रूप में पूरा कर लिया गया, जिससे भोज्य पोषकों में सन्निहित पोषक ऊर्जा को प्रायः उसी रूप में चयोपचय प्राप्त करता है। एक-दो-चार पचास, सौ और उससे भी अधिक प्रयोग किये गये। हर प्रयोग एक कमी का अहसास करा देते अर्थात् उस कमी अथवा कमजोरी को दूर कर लेने की हिदायत दे देते। अन्ततः एक लाइन मिली और पोषक ऊर्जा वर्ग की औषधियाँ प्रभावी ढंग से कार्य करने लगीं। भोज्यों के विभिन्न वर्गों से औषधियाँ विकसित करने और उन्हें परीक्षा में उतारने का कार्य चल पड़ा।

कठिनाइयाँ, चुनौतियाँ और ठहराव

भोज्यों का बिखराव : अभोज्यता, औषधीयता और विषत्व की ओर

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वैज्ञानिकों को चाहिए थी विशुद्ध पोषक ऊर्जा। विशुद्ध ऊर्जा प्राप्त होती ताजा सहज भोज्यों से। किन्तु प्रकृति के परिवर्तन-चक्र पर रखा हुआ भोज्य स्थिर नहीं रह पाता था। सात्विक आहार वह है जो स्थिर रहे। भारी कठिनाई और चुनौती थी। एक उदाहरण लें, आम के एक फल का। आम का ताजा पका फल मानव का सहज भोज्य है। किन्तु उसे यदि चार-पाँच दिनों तक कहीं रख दिया जाय, तो वह सड़ जाता है, अभोज्य हो जाता है। चार-पाँच दिनों में अभोज्यता प्रत्यक्ष हो गयी। किन्तु यह कार्य अचानक नहीं हुआ। क्षण-प्रतिक्षण भोज्यता का ह्रास हुआ, अभोज्यता का विकास हुआ। सवाल था कि इस क्षरण को रोककर उस आम से पोषक ऊर्जा कैसे प्राप्त की जाय। थोड़ा भी सड़े, तो आम विशुद्ध भोज्य नहीं रह जायेगा। आयुर्वेदिक आसवों की तैयारी के लिए अंगूर को सड़ा लिया जाता है, जामुन को सड़ा लिया जाता है। जब ये अभोज्य होकर उपविष बनते हैं, तब औषधि तैयार करने योग्य बनते हैं।

वैज्ञानिकों को इस विन्दु पर बहुत ठहराव झेलना पड़ा। लम्बे समय बाद उन्होंने 'भोज्यान्तरण' की पद्धति का विकास किया। भोज्य पदार्थों को भोज्यता के धरातल पर ही सरकाते रहने की प्रक्रिया विकसित की गयी। इससे थोड़ा ठहराव मिला। किन्तु यह प्रक्रिया भी बहुत समय नहीं देती थी। भोज्यता स्थिर नहीं रह पाती थी। इतिहास कहीं मददगार नहीं बन पाता था। कहीं भी तीव्र परिवर्तन पर अंकुश लगाकर उसे खड़ा कर देने के हवाले नहीं मिल रहे थे।

प्रक्रिया ही गतिशील बनायी गई : धीरे-धीरे ठहराव पर लाने की थोड़ी व्यवस्था हो पायी—भोज्यान्तरण वाली। किन्तु यहाँ भी विशेष अवकाश नहीं मिल पाता था।

अन्ततः तय हुआ कि भोज्य पदार्थ जहाँ से संकलित किये जायँ, संरक्षण की पहली प्रक्रिया वहीं पूरी कर ली जाय। आगे की प्रक्रियाएँ पूर्णिया की प्रयोगशाला में पूरी की जाती थीं। केन्द्र द्वारा प्रस्तावित पुस्तक 'फार्माकोपिया' में विधियों के विस्तृत हवाले दिये जाएँगे।

अब पारिवारिक संस्थान के सदस्य गतिशील बने। वे अवकाश के समय सुविधानुसार विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में पहुँचकर भोज्यों से परिचय करते, प्रथम परीक्षण प्रक्रिया द्वारा उन्हें स्थिर बनाते और फिर प्रयोगशाला तक पहुँचाने-पहुँचवाने की व्यवस्था करते।

संकलन साप्ताहिक होने लगा : आहार-सामग्रियाँ (वानस्पतिक) केवल पेट भरने का साधन ही नहीं बनतीं; उन्हें आहार-रूप में ग्रहण करने पर वे प्राकृतिक परिवर्तनों को झेल पाने की क्षमता भी प्रदान करती हैं। अतः आवश्यक लगा कि संग्रह दैनिक हो। किन्तु साधनों तथा सहकर्मियों की सीमा के कारण यह संभव नहीं हो पाया। साप्ताहिक संकलन और संग्रह चलने लगा।

संकलन : एक कठिन कार्य : जटिलता, व्यस्तता और खर्च का स्वरूप समझने के लिए एक छोटा-सा उदाहरण लें। प्रयोगशाला के लिए माँ का दूध चाहिए था—मात्र दो तोला। शर्त थी कि शिशु की उम्र चालीस और साठ दिनों के बीच की हो और वह पूर्ण स्वस्थ हो। माँ हो, जो पूर्ण स्वस्थ हो, व्यसनों से मुक्त हो और विगत दो वर्षों में उसने किसी ड्रगौषधि का सेवन नहीं किया हो। वैसी माँ का पता लगाना। पता लगा भी तो शर्म-संकोचवश कोई प्रस्तावित करनेवाला नहीं मिलता था। प्रस्ताव रखा भी जाय, तो माँ को टोना और अमंगल का भय दबा लेता था। दो तोला दूध प्राप्त करने के लिए उस समय लगभग एक हजार रुपये खर्च करने पड़े। फिर संकलन स्रोत नियमित बने और खर्च का दबाव घटा।

कुछ भोज्यों की खेती-बागवानी होती है। उन्हें खेतों और झाड़ियों से एकत्र करना सरल है। किन्तु कुछ ऐसे भोज्य हैं, जो मानवीय आहार तो हैं, उनकी खेती-बागवानी नहीं होती। वे आपके पड़ोस में भी हैं, पहाड़ियों और घाटियों में भी हैं, रेगिस्तानों में भी हैं। वर्षों लगे तो १६२१ भोज्यों का संकलन हो सका और समय-समय पर उनका संकलन करते रहने की व्यवस्था हो पाई। कई संकलन मासिक होते, कई साप्ताहिक, कई दैनिक।

माँ की दृढ़ता : दौड़-भागकर जो भी कमाई की जाती, आय-स्रोतों से जो भी प्राप्त होता, सब धुआँ की तरह उड़ जाता, संकलन और प्रयोग-परीक्षण के अभियानों को लगा कि त्याग और समर्पण का उत्साह शिथिल हो जायेगा। जब कोई प्रत्यक्ष उपलब्धि नहीं हो, तो बिखराव अपरिहार्य-सा लगने लगता है। वैज्ञानिकों ने पारिवारिक संस्थान के सदस्यों का मन टटोला, वहाँ कच्चापन नहीं था। माँ ने सबको सँभाला, "तुम्हारा कार्य

सही है, पवित्र है। सही कार्य करने का मौका भगवान सबको नहीं देता। घबराओ मत। संग्रहीत सम्पत्ति द्वारा मैं सब सँभालती रहूँगी। चिन्ता मत करो।'' माँ के प्रोत्साहन से केन्द्र में जीवन आ गया। उनके आशीष का बड़ा भरोसा था।

बोतलों में संग्रहीत होने लगी पोषकता : कुछ ही वर्षों में पोषक संकलनों की शीशियों-बोतलों का ढेर लग गया। प्रयोगशाला का कार्य भी बढ़ता गया। स्पष्ट लगता था कि मंजिल की दूरी घट रही है। धीरे-धीरे परीक्षण-कार्य शुरू हुआ। परिणामों ने उत्साह बढ़ाया। पोषक ऊर्जा की औषधियाँ निरापद सिद्ध हो रही थीं और जीवनी-शक्ति के विकास के प्रत्यक्ष परिणाम दे रही थीं। रोगों के उन्मूलन की संभावनाएँ भी प्रत्यक्ष होती जा रही थीं।

हाँक लगायी गयी : परिणामों ने प्रोत्साहित किया और प्रोफेसर त्रिवेदी ने चिकित्सा-क्षेत्र के लोगों तथा संस्थाओं से सम्पर्क करके सन्देश दिया और कोशिश शुरू की कि सामंजस्य बिठाकर कार्य को पारस्परिक सहयोग के आधार पर आगे बढ़ाया जाय। किन्तु तालमेल नहीं बैठ सका। विष-सिद्धान्त वालों को पोषक ऊर्जा की औषधीयता पर विश्वास नहीं होता था।

कैन्सर की चुनौती स्वीकार कर ली गयी : त्रिवेदी बन्धुओं को विश्वास था कि पोषक ऊर्जा द्वारा कैन्सर पर विजय पायी जा सकती है। बात साधनों और उपकरणों की कमी की तो आयी, किन्तु संकल्प के द्वारा ही आगे बढ़ने का फैसला लिया गया। सिल-लोढ़ों, खरल-इमामदस्तों तथा शीशियों-बोतलों ने मोर्चा सँभाल लिया। बिना अति संवेदनशील उपकरणों के काम कठिन लग रहा था, किन्तु कोई उपाय नहीं था। एक विश्वास उठ खड़ा हुआ था कि अगर कैन्सर पर विजय के सामान्य और गिने-चुने परिणाम भी आ गये, तो चिकित्सा-जगत इस नवोदित विज्ञान की आवाज सुन लेगा।

आय से काम नहीं चला, आय-स्रोत टूटकर अभियान में गलने लगे

पोषक ऊर्जा की रोग-उन्मूलक सामर्थ्य का प्रत्यक्ष संकेत तो मिल चुका था, अब विश्वास हो चला था कि कैन्सर पर भी विजय अवश्य मिलेगी। अबतक की सारी कमाई तो शीशियों-बोतलों में बन्द हो चुकी थी। माँ के पास जो कुछ संचित था, उसे भी लगाकर वे दुनिया से जा चुकी थीं।

चारा क्या था ? आय-स्रोत बिकने लगे और प्राप्त साधनों के बल पर अतिरिक्त बोझ बर्दाश्त किया जाने लगा। हिन्दी साप्ताहिक 'वल्गा' की प्रवृत्ति बन्द हुई और साधन अनुसंधान में खपा दिये गये। त्रिवेदी मुद्रणालय का कार्य रुक गया और उसकी पूँजी तथा साधन-भण्डार खपा दिये गये। 'सृजन-चेतना' प्रकाशन गृह की समस्त पूँजी रिसर्च अभियान की ओर मोड़ दी गयी।

किन्तु वैज्ञानिकों तथा पारिवारिक संस्थान का मन नहीं टूटा और समय आया, जब कैन्सर की औषधि 'एम्ब्रोशिया सर्वपिष्टी' परीक्षण के लिए मैदान में उतार दी गयी। उत्साहवर्द्धक परिणामों ने आश्वस्त किया। अन्य औषधियों का परीक्षण भी चलता रहा। १९६६ से जो कुछ संचित था (शीशियों-बोतलों में) खपने लगा।

१९८८ के भूकम्प ने कमर तोड़ दी : प्रकृति के अप्रत्याशित प्रकोप के लिए तैयारी हो कहाँ पाती है। १९८८ में मुँह-अँधेरे ही उत्तर बिहार और दक्षिण नेपाल का क्षेत्र भूकम्प से हिल उठा। डी. एस. रिसर्च सेण्टर के औषधि-भण्डार में रेकों को सजाकर रखी बोतलें टूट गयी थीं और उनकी संचित सामग्री बह गयी थी। पारिवारिक संस्थान की छाती दहल गयी। क्षति केवल लाखों रुपयों की वस्तुओं की नहीं थी। समय आयेगा और इसकी व्याख्याएँ बताएँगी कि वस्तुतः एक इतिहास मटियामेट हो गया था, जिसकी पूर्ति न तो मनुष्य के हाथ में है, न समय के।

द्वार जो खुल चुके हैं

परीक्षण एक सिद्धान्त का हुआ है, किसी फार्मूले का नहीं

डी. एस. रिसर्च सेण्टर ने १६२१ मानवीय भोज्य पदार्थों का संकलन करके, उनसे पोषक ऊर्जा प्राप्त करके, मानव-स्वास्थ्य के निर्माण, स्वास्थ्य-समस्याओं के निराकरण तथा रोगों के उन्मूलन की दिशा में उस ऊर्जा का परीक्षण किया है। भोज्य पदार्थों को अलग-अलग वर्गों-उपवर्गों में विभाजित करके अलग-अलग वर्गों को परीक्षण में उतारा गया, और परिणाम-संकलन का कार्य किया गया। उपवर्गों के निर्माण में चिन्तन और अनुभव के आधार पर अवयवों को शामिल किया जाता रहा, उन्हें हटाया जाता रहा, उनका अनुपात बदला जाता रहा।

'सर्वपिष्टी' का बार-बार उल्लेख आया है, कैन्सर-रोगियों की औषधि के रूप में। जो लोग इस औषधि को अपने रोगियों के लिये ले गये, उन्हें अनुभव है कि उन्हें अलग-अलग दिनों के लिए, नम्बर लगाकर अलग-अलग खूराकें दी गयी हैं। शुरू-शुरू में प्रति सप्ताह एक खूराक दवा दी जाती थी। उपवर्गों की उपयोगिता के आधार पर उन्हें एक साइकिल में १६८+१६८ = ३३६ खूराकें दी जाने लगीं। १६८+१६८+१६८ = ५०४ खूराकें भी चलीं, जो २४ सप्ताहों में पूरी होती थीं। रोगियों की समस्याओं की रिपोर्ट देखकर पोषक ऊर्जा की अतिरिक्त खूराकें भी दी जाती रहीं।

इस प्रकार यहाँ किसी औषधीय सूत्र (फार्मूले) का नहीं, बल्कि पोषक ऊर्जा के सिद्धान्त का परीक्षण हुआ है। 'सर्वपिष्टी' भी कोई औषधीय सूत्र नहीं, बल्कि पोषक ऊर्जा वर्ग की औषधियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो कुल १६२१ मानवीय भोज्यों के विस्तार से छाँट-छाँटकर विकसित पोषक ऊर्जा है।

सर्वपिष्टी

सर्वपिष्टी सेवन विधि

◆◆ आपको जो औषधियाँ दी जाती हैं उनमें प्रति सप्ताह एक पैकेट "सर्वपिष्टी" का सेवन करना होता है। "सर्वपिष्टी" के A और B पैकेट होते हैं। हर पैकेट में एक से सात नम्बर की पुड़िया होती है, जिसे प्रति दिन एक पुड़िया के हिसाब से सेवन करना होता है। पैकेट A की सात पुड़िया को सात दिन में खाने के बाद पैकेट B खोलें। पैकेट B की सात पुड़िया सात दिन में खाने के बाद फिर पैकेट A खोलें। यानी पैकेट A, फिर पैकेट B, पुनः पैकेट A और फिर पैकेट B..... इसी तरह चलाना है।

◆◆ खूराक ग्रहण करने से पहले मुँह साफ सादे पानी से धो लें और जीभ भी साफ कर लें, फिर जिस पुड़िया की बारी हो, उसकी खूराक मात्रा जीभ पर रखकर धीरे–धीरे चूसते हुए ले लें और ऊपर से एक–दो घूँट सादा पानी पी लें। खूराक लेने के बाद एक घण्टे तक कुछ खायें–पिएँ नहीं। आवश्यक होने पर पानी पी सकते हैं। इस प्रकार दवा लेने में कोई असुविधा हो, तो इसे स्वच्छ सादे पानी में घोलकर भी ले सकते हैं।

◆◆ पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए खूराक की आधी मात्रा ही पर्याप्त है। वैसे पोषक ऊर्जा की औषधि की अधिक मात्रा भी किसी प्रकार की हानि नहीं करती।

◆◆ सेण्टर की औषधि किसी प्रकार का दुष्प्रभाव नहीं डालती।

शीशियों की दवा प्रयोग करने की विधि

शीशियों पर चिपकाए गए स्टिकर पर जो समय दिया गया हो, उसी समय औषधि का सेवन करें। शीशियों पर लिखा रहता है–'चार चम्मच का एक खूराक' लें। छोटे–छोटे प्लास्टिक के चम्मच साथ में दिये रहते हैं। निर्देशानुसार चार चम्मच औषधि का तात्पर्य प्लास्टिक के चम्मचों से चार बार भरपूर मात्रा में निकाली गयी औषधि से होता है। देखा यह गया है कि कुछ लोग साथ में दिये गये इन छोटे चम्मचों के मुँह के बराबर खूराक लेते हैं, जिससे एक शीशी में दवा बची रह जाती है, इसलिए खूराक ऐसी होनी चाहिए कि एक शीशी चौदह दिनों में समाप्त हो जाय। इसके लिए जरूरी हो तो साथ में दिये गये चम्मचों से पाँच चम्मच, छह चम्मच या अधिक भी लिया जा सकता है। यदि किसी कारणवश किसी शीशी पर औषधि लेने का समय न दिया गया हो, तो आप समय का निर्धारण करके स्वयं उस समय औषधि ले सकते हैं। इतना ध्यान रखना आवश्यक होता है कि औषधियों के दो खूराकों के सेवन के समय में आधे घंटे का अन्तर अवश्य होना चाहिए। सुबह 'सर्वपिष्टी' को खाने के कम से कम एक घंटे बाद तक कोई अन्य खाद्य पदार्थ का सेवन न करें।

सावधानियाँ

◆◆ डी. एस. रिसर्च सेण्टर एक वैज्ञानिक प्रयोगशाला है–नर्सिंग होम या अस्पताल नहीं। इस कारण यहाँ डॉक्टर नहीं बैठते और जाँच अथवा रोगियों को भर्ती करने की कोई व्यवस्था नहीं है। यहाँ से औषधि प्रारम्भ करने वालों को यह सेण्टर पहले से किसी तरह के परिणाम की गारण्टी नहीं देता।

◆◆ डी. एस. रिसर्च सेण्टर द्वारा आविष्कृत 'सर्वपिष्टी' ने कैन्सर दूर करने के प्रभावशाली परिणाम दिये हैं। कैन्सर के अतिरिक्त अन्य परेशानियों के लिए किसी अच्छे डाक्टर अथवा अस्पताल की सहायता लेकर अपना कष्ट दूर करा लेना चाहिए। अन्य कष्टों के लिए किसी भी पैथी की औषधि लीं जा सकती है।

◆◆ कैन्सर के कारण यदि शरीर के किसी भी हिस्से में घाव बन गया हो, तो अस्पताल अथवा चिकित्सक की सहायता लेकर घाव की सफाई और मलहम–पट्टी अवश्य कराना चाहिए। कैन्सर रोगी प्रायः भयंकर दर्द की शिकायत करते हैं। सेण्टर के पास बहुत तेज दर्द की कोई तात्कालिक औषधि नहीं है। दर्दनिवारक दवाएँ स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं, इसीलिए दर्द की कम से कम दवा लेनी चाहिए। दर्द जब बर्दाश्त के बाहर हो जाय तभी कोई दर्द की दवा का प्रयोग करना उचित होता है। इसके लिए हमेशा किसी डाक्टर अथवा अस्पताल की मदद ले लेनी चाहिए।

◆◆ अत्यन्त कमजोरी की हालत में डॉक्टरों की राय लेकर कमजोरी दूर कराने की व्यवस्था करा लेनी चाहिए।

◆◆ यदि अन्ननली के कैन्सर का रोगी तरल भोजन भी लेने की हालत में न हो तो किसी कुशल सर्जन से फीडिंग पाइप लगवा लेनी चाहिए। इस पाइप के द्वारा रोगी को भोजन पेट में पहुँचाया जा सकता है। सर्वपिष्टी और अन्य औषधियाँ पानी में घोलकर इसी पाइप के द्वारा दी जा सकती हैं।

◆◆ गले के कैन्सर के रोगियों को कई बार श्वाँस अवरुद्ध होने लगती है। ऐसी दशा में किसी कुशल सर्जन से श्वाँस–नली लगवा लेनी चाहिए।

◆◆ असामान्य और विकट परिस्थितियों में रोगी के परिजनों को धीरज से काम लेना चाहिए। रोगी के आस–पास निराशापूर्ण वातावरण न बनाकर उत्साह तथा मनोबल बढ़ाने वाला वातावरण बनाए रखना चाहिए।

◆◆ औषधि सेवन करने के दौरान रोगी के स्वास्थ्य सम्बन्धी सूचनाएँ अथवा तुलनात्मक सुधार की जानकारियाँ प्रति सप्ताह पत्र द्वारा दें। इस तरह की सूचनाएँ फोन से अथवा मौखिक न दें। आप द्वारा दी गयी रिपोर्ट के आधार पर औषधियों और उनके समय में परिवर्तन किया जा सकता है। जब भी सेण्टर को पत्र लिखें या ड्राफ्ट भेजें, मरीज का नाम और सेण्टर में रजिस्ट्रेशन के समय लिखा गया पता अवश्य दें।

◆◆ औषधि शुरू करने के बाद मरीज के परिजनों द्वारा लाभ दिखायी देने के बावजूद जब तक यह पूरी तरह आश्वस्त नहीं हो लिया जाता कि मरीज पूरी तरह कैन्सर से मुक्त हो गया है, औषधि बन्द नहीं करनी चाहिए। मरीज कैन्सर से पूरी तरह मुक्त हो चुका है, यह जानने के लिए मरीज के स्वस्थ अनुभव करने के साथ ही कैन्सर हास्पीटल से जाँच करा लेनी चाहिए। जिन कैन्सर रोगियों को 'सर्वपिष्टी' से लाभ होना समझ में आता है उन्हें बिना सेण्टर की सलाह के औषधि बन्द करना ठीक नहीं होता।

यदि किसी कारणवश सेण्टर की औषधि को दो–चार दिन बन्द करना पड़े तो आगे से उसी क्रम में औषधि शुरू कर देनी चाहिए, जहाँ से औषधि का प्रयोग बन्द किया गया हो।

◆◆ यदि किसी को यह समझ में आ रहा हो कि सेण्टर की औषधि से निश्चित रूप से मरीज को लाभ नहीं हो रहा है तो वह औषधि का सेवन बन्द कर सकता है।

पथ्यापथ्य

कैन्सर रोगियों को बाजार की तली–भुनी अथवा डिब्बाबन्द खाद्य वस्तुओं का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए। फलों का सेवन भी कच्ची हालत में करने से पेट में गैस बनती है और अन्य परेशानियाँ खड़ी हो जाती हैं। ऐसी स्थिति में फलों का सूप बनाकर पीने से अच्छा रहता है। सामान्यतः हल्का–सुपाच्य भोजन ही बेहतर रहता है।

कंठ, आहार नली, मुंह, स्वर यंत्र, जीभ, नाक और थायरायड आदि के कैन्सर के लिए

पथ्य : सुपाच्य, स्निग्ध भोजन, (चिकना–आसानी से निगला जाने वाला), सब्जियों, फलों का सूप चीनी मिलाकर या बिल्कुल कम नमक मिलाकर। कुछ भी खिलाने के बाद पानी अवश्य पिलायें।

परहेज : दूध और दूध से बनी चीजें, खैनी, बीड़ी, सिगरेट, सुपारी, पान, अधिक ठण्डी या गरम वस्तुएँ जैसे नींबू प्याज आदि, ऐसा भोजन जिसका कण मुँह में फँसने की उम्मीद हो (सुपारी, पान पराग आदि)।

मुँह के क्षेत्र और आहारनली के कैन्सर रोगियों को तरल भोजन देना उचित रहता है। कण्ठ अथवा आहारनली के कैन्सर रोगियों के लिए भोजन ग्रहण करना बहुत मुश्किल होता है। कण्ठावरोध के कारण भोज्य पदार्थ गले में अटकने लगता है, उल्टी भी हो जाती है। तरल भोजन देने से कुछ राहत रहती है। गला पूरी तरह बन्द हो जाने की स्थिति में अस्पताल अथवा चिकित्सक की मदद से फीडिंग पाइप लगवा लेनी चाहिए। उस फीडिंग पाइप के जरिये ही पानी में घोलकर औषधि देनी चाहिए। कण्ठावरोध के कारण गले से रक्त भी आ सकता है। अधिक कष्ट होने पर चिकित्सक अथवा अस्पताल की मदद लें।

यकृत (लीवर), पैंक्रियाज, गाल ब्लैडर, सी बी डी से जुड़े कैन्सर रोगियों के लिए-

पथ्य : रोटी, मूंग की दाल की पतली खिचड़ी, फलों, सब्जियों का सूप, आसानी से पचने वाले अन्न।

परहेज : दूध और दूध से निर्मित वस्तुएँ, मांस–मछली, अन्डा, तेल–घी और उनमें तली वस्तुएँ, गरिष्ठ भोजन, खटाई, चटनी, अचार, मसाला।

लीवर, गाल ब्लैडर, पैंक्रियाज, सी. बी. डी. और स्प्लीन आदि के कैन्सर रोगियों के सामने पाचन सम्बन्धी समस्याएँ, उल्टी होना, पीलिया हो जाना, दर्द होना आदि समस्याएँ आती रहती हैं। इन रोगियों की पीलिया आब्स्ट्रक्शन के कारण होती है, इसलिए पीलिया की दवा इस पर काम नहीं करती। पीलिया की अधिकता के दौरान बाईपास सर्जरी कराकर एक ट्यूब लगाकर पित्त को बाहर निकालने की व्यवस्था कर दी जाती है। इससे पीलिया में राहत मिल जाती है। लीवर कैन्सर के रोगी के शरीर का तापमान प्रायः दोपहर से आधी रात तक अधिक हो जाता है। सौ डिग्री से ऊपर तापमान होने पर ही बुखार की दवा लेनी चाहिए। जब रोग पर काबू पाने की स्थिति बनती है तब पीलिया और तापमान

की अधिकता से भी राहत मिल जाती है। अधिक समस्या होने पर किसी अच्छे चिकित्सक अथवा अस्पताल की सहायता ले लेनी चाहिए।

पेट के रोगों, कोलोन, रेक्टम, आँत, ऐनल-कैनल कैन्सर के लिए-

पथ्य : हल्का–ताजा भोजन, भली प्रकार पका अन्न, बिना मसाले की सब्जी, उबाले आटे की रोटी, चावल को खूब गलाकर बनायी गयी खिचड़ी, मूंग की दाल, फलों–सब्जियों का सूप। ऐसे रोगियों को (लंग्स कैन्सर के रोगी को छोड़कर) सुबह–शाम टहलना फायदेमन्द।

परहेज : दूध और दूध से बनी चीजें, घी–तेल में तली वस्तुएँ, अधपका अन्न, बासी भोजन, अधिक गरम या अधिक ठंडा भोजन या पेय पदार्थ, सड़े हुए फल–सब्जी खटाई, अधिक नींबू, मिर्च–मसाला।

ब्रेन (एस्ट्रोसाइटोमा को छोड़कर), ब्रेस्ट, यूट्रस तथा सर्विक्स

पथ्य : हल्का–ताजा भोजन, भली प्रकार पका अन्न, बिना मसाले की सब्जी, रोटी, चावल, खिचड़ी, मूंग की दाल, फलों–सब्जियों का सूप, दूध।

परहेज : मांस–मछली, अन्डा, तेल–घी और उनमें तली वस्तुएँ, गरिष्ठ भोजन, खटाई, चटनी, अचार, मसाला।

ब्रेन कैन्सर के रोगियों को प्रायः उल्टी होने, स्मृति भ्रम होने और शरीर के निचले अंगों के पैरालाइज होने की शिकायत हो जाती है। आमतौर पर इन समस्याओं का कोई फौरी समाधान नहीं हो पाता। फिर भी इन्हें किसी अच्छे चिकित्सक की देखरेख में रखना चाहिए।

रक्त कैंसर तथा हाजकिन्स डिजीज-

पथ्य : हल्का पौष्टिक भोजन, अधिक मात्रा में अन्न, सब्जी आदि कम, रोटी, चावल, दाल, दूध, छेना।

परहेज : अधिक साग–सब्जी, पानी से निकला या पानी में पैदा होने वाला फल (मखाना, सिंघाड़ा आदि) या सब्जी, नम हवा, गीले नम मकान में रहना, नदी–तालाब में स्नान, वर्षा में भींगना, अधिक व्यायाम, तेज धूप में बाहर निकलना, शरीर के किसी भाग पर मलहम आदि लगाना।

ए. एम. एल. और ए. एल. एल. कैन्सर रोगियों के सामने अचानक आपात स्थिति आ सकती है इसलिए इन्हें किसी अच्छे अस्पताल के आसपास रखना चाहिए। जब भी कोई आपात स्थिति आ जाय तुरन्त किसी अस्पताल की मदद लेनी चाहिए। सेण्टर की औषधि का सेवन करने के साथ ही साथ ब्लड काउण्ट सही रखने के लिए भी डाक्टर अथवा अस्पताल की सहायता लेते रहना चाहिए।

सी. एल. एल. और सी. एम. एल. के रोगियों को चाहिए कि सेण्टर की औषधि का प्रयोग तो करें ही, साथ में जब डब्लू. बी. सी. काउण्ट साठ हजार से ऊपर जाने लगे तो हायड्रिया अथवा मेलेरान टेबलेट का प्रयोग प्रारम्भ करें। काउण्ट जब बीस हजार से नीचे आने लगे तब इस टेबलेट का प्रयोग बन्द कर दें। इस तरह की प्रक्रिया अपनाने से आगे चलकर

अंग्रेजी दवा की निर्भरता से बचा जा सकता है।

ब्लड कैन्सर के रोगियों को अक्सर शरीर में दर्द, सूजन, कमजोरी, मुँह से खून आना जैसी समस्याएँ आती रहती हैं। ऐसी स्थिति में बिना हिचकिचाए किसी अस्पताल अथवा चिकित्सक की मदद ले लेना चाहिए।

लंग्स कैन्सर

पथ्य : हल्का पौष्टिक भोजन, अधिक मात्रा में अन्न, कम मात्रा में सब्जी, रोटी, चावल; दाल, दूध, छेना।

परहेज : घी–दही, ठंडी वस्तुएँ, चावल, मिर्च–मशाला आदि।

लंग्स कैन्सर के रोगी को सीने में दर्द, खाँसी, साँस फूलना, कफ आदि की समस्याएँ आ सकती हैं। लंग्स में पानी भी भर सकता है। विशेष परेशानी में कुशल चिकित्सक अथवा अस्पताल की मदद लें।

मूत्र-यंत्र के रोग, यूरीनरी ब्लैडर-

पथ्य : रोटी, दूध–मक्खन, साग–सब्जी, फल, नियमित टहलना, गतिशील रहना, प्यास लगने पर ही जल ग्रहण, अधिक या कम जल नहीं पीना, छेना।

परहेज : चीनी, आलू, चावल, गुड़, जमीन के नीचे तैयार होने वाली सब्जियाँ, वे सभी वस्तुएँ जिनमें अत्यधिक मिठास हो।

एस्ट्रोसाइटोमा, प्रोस्टेट, ओवरी, सारकोमा(हड्डी), मल्टिपल माइलोमा तथा हड्डी और हड्डी से जुड़े कैन्सर के रोगियों के लिए

दूध एवं दूध से बनी चीजें न दें। हल्का–ताजा भोजन, भली प्रकार पका अन्न, बिना मसाले की सब्जी, मिश्री, रोटी, चावल, खिचड़ी, मूंग की दाल, फलों–सब्जियों का सूप आदि दें। ज्यादा श्रम और चलने फिरने से ऐसे रोगियों को बचाएँ।

हड्डियों के कैन्सर रोगियों को प्रायः दर्द का सामना करना पड़ता है। दर्द अत्यधिक होने पर ही दर्द निवारक दवाएँ लेनी चाहिए। हड्डी के कैन्सर के कारण रोगी की हड्डियाँ बहुत कमजोर हो जाती हैं। इसलिए ऐसे रोगी को ज्यादा चलने–फिरने से रोकना चाहिए।

घाव और ट्यूमर के कारण परेशानी

जब किसी रोगी को कैन्सर के कारण कहीं घाव हो जाय अथवा ट्यूमर हो जाय, तो उससे सम्बन्धित परेशानी के लिए डाक्टर अथवा अस्पताल की मदद ले लेनी चाहिए। ध्यान देने की बात यह है कि सेण्टर की औषधि कैन्सर पर नियंत्रण तो करती है परन्तु ट्यूमर अथवा घाव कैन्सर नहीं होते, कैन्सर के उत्पाद होते हैं। इसलिए ट्यूमर और घाव से सम्बन्धित परेशानी के लिए तुरन्त चिकित्सकीय सहायता ले लेनी चाहिए।

शरीर के विभिन्न हिस्सों में पानी भर जाना

लंग्स, लीवर, पेट आदि के कैन्सर रोगियों को अक्सर पानी भर जाने की शिकायत मिलती है। यह पानी साधारण पानी नहीं होता, बल्कि शरीर की कोशिकाओं द्वारा छोड़ा गया पानी होता है। इसकी अधिकता कई तरह की समस्याएँ खड़ी कर देती है। ऐसी स्थिति में पानी निकलवाने के लिए किसी कुशल चिकित्सक अथवा अस्पताल की मदद लेनी चाहिए। यह

पानी जब निकाला जाता है तो रोगी भयंकर कमजोरी का अनुभव करता है। इसलिए पानी निकलवाने के बाद कमजोरी दूर कराने की भी व्यवस्था करते रहना चाहिए।

कैन्सर रोगी और उनके परिजन इस बात का ध्यान रखें की सेण्टर किसी तरह का शर्तिया इलाज नहीं करता। अपने लम्बे शोध के दौरान परीक्षण में 'सर्वपिष्टी' ने हजारों कैन्सर रोगियों को स्वस्थ और सामान्य जीवन में लौटा दिया है। इसी आधार पर हम 'सर्वपिष्टी' को परीक्षण के तौर पर देते हैं। इसीलिए हम किसी को भी यह विश्वास के साथ नहीं बता सकते कि प्रारम्भ करने के बाद 'सर्वपिष्टी' कितने दिन में अपना प्रभाव दिखायेगी। हम यह भी नहीं बता सकते कि किसी रोगी को दवा प्रारम्भ करने के बाद किन–किन कष्टों से मुक्ति मिल जायेगी। ऐसा भी हो सकता है कि 'सर्वपिष्टी' प्रारम्भ करने के बावजूद कैन्सर रोगी के कष्टों में बढ़ोतरी हो। इसका यह तात्पर्य नहीं होता कि 'सर्वपिष्टी' अपना काम नहीं कर रही है। 'सर्वपिष्टी' कष्टों के निवारण के लिए नहीं बल्कि कैन्सर को जड़ से समाप्त करने के लिए होती है। इस प्रक्रिया में एक लम्बा समय लग सकता है। यह समय छह महीने से एक वर्ष या उससे भी अधिक का हो सकता है। बेहतर होता है कि कष्टों के निवारण के लिए किसी अच्छे चिकित्सक की सहायता लेते रहें और कैन्सर के लिए 'सर्वपिष्टी' चलाते रहें।

कैन्सर रोगी और उनके परिजनों को चाहिए कि सेण्टर द्वारा प्रदान की गयी पुस्तक 'कैन्सर हारने लगा है' का अध्ययन अवश्य करें। इससे एक तो कैन्सर रोगी में आत्मविश्वास बढ़ता है, दूसरे उसे और उसके परिजनों को यह आशा बन जाती है कि रोगी को कैन्सर से मुक्ति मिल जायेगी। यह आशा एक प्रकार की प्रभावशाली औषधि से भी अधिक कारगर साबित होती है।

प्रायः रोगी किमोथेरापी के विषय में पूछताछ करते हैं। सेण्टर किसी को भी इस विषय में अन्तिम फैसला नहीं सुनाता। सेण्टर के परीक्षण के दौरान यह पाया गया है कि किमोथेरापी जिन–जिन रोगियों को दी जाती है, उनमें कैन्सर का प्रसार और अधिक गति से होता है। यही नहीं कहीं–कहीं तो किमोथेरापी तुरत–फुरत अपना दुष्प्रभाव दिखा देती है और रोगी पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कहीं भी और कभी भी यह नहीं पाया गया है कि किमोथेरापी ने किसी को कैन्सर से मुक्त कर दिया हो। इस विषय में 'कैन्सर हारने लगा है' पुस्तक के पृष्ठ २४७ पर दिया गया एक उद्धरण देखा जा सकता है जिसमें अमेरिका के एक प्रसिद्ध चिकित्सक ने किमोथेरापी के विषय में टिप्पणी की है। इसलिए किमोथेरापी लेने–न लेने का फैसला हम रोगी और उनके परिजनों पर छोड़ देते हैं। हम केवल उसके दुष्प्रभावों की जानकारी दे देते हैं अथवा किमोथेरापी के साथ दिये जाने वाले लिट्रेचर को पढ़ लेने की सलाह दे देते हैं।

सर्वपिष्टी मंगाने की विधि

डी. एस. रिसर्च सेण्टर इस औषधि का उत्पादन खुले बाजार के लिए नहीं करता, अतः यह केवल इस केन्द्र की दो इकाइयों से ही उपलब्ध होती हैं। रिसर्च सेण्टर एक शोध संस्थान है, अतः यहाँ रोगियों के आवास और स्वास्थ्य–परीक्षण की सुविधाएँ नहीं हैं।

औषधि प्राप्त करने के लिए रोगी/रोगिणी के नाम का पंजीयन आवश्यक होता है। **पंजीयन-शुल्क** पहली बार औषधि प्राप्त करते समय देना होता है। औषधि के अनुसंधान एवं विकास लागत मूल्य के अलावा अन्य कोई शुल्क नहीं लिया जाता। पंजीयन के लिए रोग की शुरुआत से लेकर अबतक समय–समय पर किये गये वैज्ञानिक स्वास्थ्य–परीक्षणों की रिपोर्टों की एक–एक फोटोस्टेट प्रति, रोगी/रोगिणी को अबतक दी गई चिकित्सा के इतिहास और वर्तमान हालत का एक लिखित विवरण प्रस्तुत करना होता है। रोगी को आवक्ष चित्र के साथ फार्म भरना पड़ता है।

औषधि अनुसन्धान एवं विकास लागत पर दी जाती है। यह लागत स्थिर नहीं है। समय–समय पर लागत का आकलन करके अनुदान–राशि निश्चित की जाती है।

केन्द्र की इकाइयों से कम दूरी के रोगियों के लिए एक बार में दो सप्ताह के लिए और दूर के रोगियों के लिए एक बार में अधिक से अधिक चार सप्ताह की औषधि दी जाती है। यह व्यवस्था औषधि का सीमित उत्पादन हो पाने के कारण की गयी है।

लोगों को यात्रा की असुविधा तथा अनावश्यक खर्च से बचाने के उद्देश्य से औषधि प्राप्त करने की सीधी व्यवस्था है। जिस कैन्सर रोगी को औषधि देना शुरू कर दिया गया है उसे चाहिए कि आगे की औषधि डाक और कोरियर द्वारा मंगवाने के लिए आदेश तभी दे दिये जायँ, जब पास में कम से कम उतने दिनो के लिए औषधि रहे, जितने दिन केन्द्र तक आदेश पहुँचने और फिर आपके पास औषधि पहुँचने में लगें। प्रारम्भ करने के बाद औषधि की नियमितता और क्रम नहीं टूटना चाहिए।

सेण्टर से कोरियर अथवा डाक द्वारा औषधि मंगाने के लिए बैंक ड्राफ्ट 'डी. एस. रिसर्च सेण्टर, वाराणसी' के नाम से भेज दें। दवा भेजते समय सेण्टर की ओर से हिन्दी, बंगला अथवा अंग्रेजी में से कोई एक पुस्तक पहली बार निःशुल्क दी जाती है। यह पुस्तक हिन्दी में 'कैन्सर हारने लगा है' नाम से ५४४ पृष्ठों की अंग्रेजी में 'कैन्सर इज क्योरेबल नाऊ ५६५ पृष्ठों की तथा बंगला में 'कैन्सर पराजित आज' ५८० पृष्ठों की प्रकाशित की गयी है। यह पुस्तक पढ़ने से कैन्सर–रोगी जीवन के प्रति आशान्वित रहेगा और उसे यह विश्वास हो जाएगा कि कैन्सर दूर किया जा सकता है। सेण्टर को ज्यों ही ड्राफ्ट मिलेगा, तत्काल कोरियर या डाक से मरीज की औषधि भेज दी जाएगी। दवा शीघ्र मँगाने के लिए रिपोर्ट्स के साथ ही ड्राफ्ट भी कोरियर से भेज दें।

यह ध्यान रखें कि बाहर कैन्सर की औषधि भेजने का सबसे प्रभावशाली साधन 'ब्लू डार्ट' कोरियर सेवा है। इसलिए सबसे बेहतर यही रहेगा कि आप ऐसा पता लिखवायें, जहाँ यह कोरियर सेवा उपलब्ध हो। ऐसा न होने पर ही औषधि मंगाने का अन्य माध्यम चुनें।

यदि अब भी आप को किसी तरह की जानकारी करनी हो, तो प्रातः साढ़े नौ से साढ़े बारह और दोपहर साढ़े तीन से साढ़े छह बजे तक (रविवार छोड़कर) फोन से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

औषधि को धूल, धूप, धुवाँ, नमी और रासायनिक ड्रगों के सम्पर्क से बचाकर रखें। ऐसे किसी सम्पर्क से औषधि का प्रभाव संदिग्ध हो जाता है, अतः यदि भूलवश ऐसा संसर्ग हो जाय, तो उस औषधि को छोड़कर ताजा औषधि प्राप्त करके ग्रहण की जानी चाहिए।

सेण्टर से बाहर जा चुकी औषधि, चाहे वह किसी व्यक्ति द्वारा ले जायी गयी हो अथवा डाक अथवा कोरियर से भेजी गयी हो, किसी भी हालत में सेण्टर वापस नहीं लेता। इसलिए औषधि प्राप्त करने से पूर्व ही इस पर विचार कर लेना चाहिए। यह सेण्टर किसी को चिकित्सकीय प्रमाण पत्र भी नहीं देता क्योंकि यहाँ कोई चिकित्सक इस शोध कार्य में सहयोग नहीं करता न कोई चिकित्सक अथवा चिकित्साधिकारी यहाँ बैठते हैं।

डी. एस. रिसर्च सेण्टर की इकाइयों के पते :-

वाराणसी कार्यालय :
१४७ ए, गली संख्या-८, रवीन्द्रपुरी कालोनी, वाराणसी-२२१००५
फोन : ०५४२-२७६०६९८, ३१५३६५, फैक्स : ०५४२-२७६०६७

कोलकाता कार्यालय :
१६०, एम. जी. रोड, पहला तत्ला, कोलकाता--७
फोन नं. : ०३३-२३०५३७८, फैक्स : २३०७२६२

फरीदाबाद कार्यालय : (केवल जानकारी प्राप्त करने के लिए)
२८१, सेक्टर १६, बड़खल मोड़ के पास,
राधाकृष्ण मंदिर के सामने, फरीदाबाद--१२१ ००२

डी. एस. रिसर्च सेण्टर के वेबसाइट पर जाने के लिए
www.cancercurative.org का प्रयोग करें
तथा ई मेल का पता है dsvaranasi@yahoo.co.in

अब कैन्सर न तो रहस्य है; न दर्दभरी मौत की अजेय प्रक्रिया

अनुसन्धान-यात्रा के दौरान 'पोषक ऊर्जा विज्ञान' की एक भरोसेमन्द मशाल उपलब्ध हो गयी। परीक्षण हुए, तो रोग-उन्मूलन के स्वच्छ परिणाम सामने आने लगे। उत्साहित होकर हमने हाँक लगानी शुरू की, ताकि उपलब्धि का सन्देश जन-जन तक पहुँचाकर इस नये विज्ञान के विकास का वातावरण बनाया जा सके। किन्तु हाँक बेअसर रही।

तभी दीख गया सामने खड़ा कैन्सर का क्रूर-अलंघ्य पहाड़। हमारा विश्वास बोल रहा था कि पोषक ऊर्जा के सहारे उस पर विजय पायी जा सकती है। लगा कि इस पहाड़ के शि[illegible] सफलता की कुछ प्रज्ज्वलित मशालें रख दी जायेंगी, तो सन्देश दूर-दूर तक विश[illegible] पहुँच जायेगा। चुनौती स्वीकार करके पोषक ऊर्जा को कैन्सर के मुकाबले में खड़ा किया। [illegible] इतिहास में पहली बार जगमगा रही हैं कैन्सर-विजय की सैकड़ों प्रज्ज्वलित मशालें।

पोषक ऊर्जा मानव-स्वास्थ्य की संभावनाओं का अजस्र स्रोत है।

- डॉक्टर उमाशंकर तिवारी
- प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी

डॉक्टर उमाशंकर तिवारी

प्रोफेसर शिवाशंकर त्रिवेदी

सचेतन प्रकाशन, द्वारा : डी. एस. रिसर्च सेण्टर, १६०, महात्मा गाँधी रोड, कलकत्ता-७
ISBN 81-900702-0-11